

प्रवच सम्पादक :

श्रीचन्द रामपुरिया,

निदेशक

आगम और साहित्य प्रकाशन

(जैन विश्व भारती)

वार्षिक सहायक

श्री रामलाल हंसराज गोलछा

विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :

विक्रम संवत् २०३१

कार्तिक कृष्णा १३

(२५०० वा निर्वाग दिवस)

पृष्ठांक १ ६२५

मूल्य ५०/

मूद्रक —

एस. नारायण एण्ड संस (प्रिन्टिंग प्रेस)

५११७/१८, पहाडी घोरड, दिल्ली-६

ANGA SUTTĀNI

III

NAYĀDHAMMAKAHĀO . UWĀSAGADASĀO .
ANTAGADADASĀO . ANUTTAROWAWĀIYADASAO .
PANHAWAGARANAIN . VIVĀGASUYĀM .

(Original text Critically edited)

Vācānā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN (Rajasthan)

Managing Editor

Shreechand Rampuria

Director :

Āgama and Sahitya Publication Dept.

JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance

Sri Ramlal Hansraj Golchha

Biratnagar (Nepal)

V S. 2031

Kārtic Kṛishnā 13

2500th Nirvana Day

Pages 925

Rs. 80/-

Printers :

S Narayan & Sons (Printing Press)

7117/18, Pahari Dhiraj,

Delhi-6

समर्पण

पुट्टो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पट्ट,
होकर भी आगम-प्रधान था ।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से ।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं ।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।
श्रुत-सद्‌ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से ।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल सघ में मेरे मन में ।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से ।



अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुञ्ज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। सकल्प फलवान् बना और वैसे ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में सलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में सविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह सविभाग इस प्रकार है—

संपादक :	सहयोगी .	मुनि नथमल
पाठ-संशोधन :	”	मुनि दुलहराज
	”	मुनि सुदर्शन
	”	मुनि मधुकर
	”	मुनि हीरालाल

सविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

ग्रन्थानुक्रम

१. प्रकाशकीय	६
२. सम्पादकीय	१३
३. भूमिका (हिन्दी)	२१
४. भूमिका (अंग्रेजी)	३१
५. विषयानुक्रम	४१
६. सकेत निर्देशिका	५५
७. नायाधम्मकहाओ	१
८. उवासगदसाओ	३६४
९. अतगडदसाओ	५३६
१०. अणुत्तरोववाह्यदसाओ	६११
११. पण्हावागरणाह	६३५
१२. विवागसुयं	७१४

परिशिष्ट

१. संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल
२. पूरक पाठ
३. शुद्धिपत्रम्

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री वम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुंचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी राका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को वम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम सस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर में ही क्यों न स्थापित की जाये? दोनों सस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड (सरदारशहर) को वम्बई बुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गईं और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक वार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' सस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्द्रजी चोपडा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आद्या सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड दिल्ली से हम लोगों के साथ हुए। श्री राकाजी वम्बई से पहुंचे। सरदारशहर में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगडजी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री सतगण व साध्वियों के वृन्द सहित कर्नाटक में नदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच में पैर थामे और मुझ से कहा "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड भी थे। (सरदार-शहर) प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाड़ी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जगमगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर काँच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तेरापथी महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

मैं उसका सयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहा महासभा के सभापति श्री हनुमान-मलजी बेंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नहीं किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो सयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य स० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ में लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। स० २०१३ में लाडनूं में आचार्यश्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—“ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।” आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

- १ आगम-सुत्त ग्रन्थमाला मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।
२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।
- ३ आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला आगमो के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।
- ४ आगम-कथा ग्रन्थमाला . आगमो से सम्बन्धित कथाओं का सकलन और अनुवाद।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला . आगमो का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रन्थमाला में—(१) दसवेआलिय तह उत्तरज्भयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्भयण, (४) उववाइय और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइय एव सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्व) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दसवेआलिय एव (२) उत्तरज्भयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायाग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रन्थमाला में दो ग्रन्थ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक . एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रथमाला मे कोई ग्रथ प्रकाशित नही हुआ ।

पाँचवी ग्रथमाला मे दो ग्रथ निकल चुके हैं (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. २) ।

उक्त प्रकाशन-कार्य मे सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एव कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बडा अनुदान महासभा को रहा । अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एव उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति मे प्राप्त हुआ था । भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानो मे ज्यो-के-त्यो गूँज रहे हैं—
“वन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य मे जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार है, उनकी वरावरी कौन कर सकेगा ?” उन्ही तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा ।

कार्य के द्वितीय चरण मे श्री रामलालजी हसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया ।

आचार्यश्री की वाचना मे सम्पादित आगमो के सग्रह और मुद्रण का कार्य अब 'जैन विश्व भारती' के अचल से हो रहा है । प्रथम प्रकाशन के रूप मे ११ अगो को तीन खण्डो मे 'अगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड मे आचार, सूत्रकृत, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अग है ।

दूसरे खण्ड मे भगवती—पाँचवाँ अग है ।

तीसरे खण्ड मे ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अग है ।

इस तरह ग्यारह अगो का तीन खण्डो मे प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रथमाला' की योजना को बहुत आगे बढा देता है ।

ठाणाग सानुवाद सस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम=अनुसन्धान ग्रथमाला के तीसरे ग्रथ के रूप मे प्रस्तुत होगा ।

केवल हिन्दी अनुवाद के सस्करण के रूप मे 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है, जो एक नई योजना के रूप मे है । इसमे सभी आगमो का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है ।

दशवैकालिक एव उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटको के रूप मे दिया जा रहा है ।

'जैन विश्व भारती' की इस अग एव अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने मे जिन महानुभावो के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हे संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है ।

मुद्रण-कार्य मे एस० नारायण एण्ड सस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने मे श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध मे श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य सघ के सचालको तथा कार्यकर्त्ताओं को भी नहीं भूल सकता। उन्होंने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करने मे सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य सघ के प्रबन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग मे सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

‘जैन विश्व भारती’ के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पतरायजी भूतोडिया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त वन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हसरराजजी गोनछा मे उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए सस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

मन् १९७३ मे मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था मे लगा। आचार्यश्री यात्रा मे थे। दिल्ली मे मुद्रण की व्यवस्था वैठाई गई। कार्यारम्भ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था मे विलव होने से कार्य मे द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय मे इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम सपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा सपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री मुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा डुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम मे ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर सस्करण ‘जैन विश्व भारती’ के प्रारम्भिक उपहार के रूप मे उस समय जनता के कर-कमलो में आ रहे हैं, जबकि जगत्त्वद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, असारी रोड

२१, दरियागज

दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया

निदेशक

आगम और साहित्य प्रकाशन

जैन विश्व-भारती

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रों के मौलिक विभाग दो हैं—अग-प्रविष्ट और अग-वाह्य। अग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य शिष्य गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते हैं। उनकी संख्या वारह है—१. आचाराग २. सूत्रकृताग ३. स्थानाग ४. समवायाग ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति ६. ज्ञाताधर्मकथा ७. उपासकदशा ८. अतकृतदशा ९. अनुत्तरोपपातिकदमा १०. प्रश्नव्याकरण ११. विपाकश्रुत १२. दृष्टिवाद। वारहवा अग अभी प्राप्त नहीं है। शेष ग्यारह अग तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग में चार अग हैं—१. आचाराग २. सूत्रकृताग ३. स्थानाग और ४. समवायाग, दूसरे भाग में केवल व्याख्याप्रज्ञप्ति और तीसरे भाग में शेष छह अग।

प्रस्तुत भाग अग साहित्य का तीसरा भाग है। इसमें नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइ और विवागसुय—इन ६ अगों का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ में सक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इसके साथ सम्बद्ध नहीं है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागों की परिकल्पना है। उसके अनुसार चौथे भाग में ग्यारह अगों की भूमिका और पाचवे भाग में उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

हम पाठ-संशोधन की स्वीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नहीं चलते, किन्तु अर्थ-मीमांसा, पूर्वापरप्रमग, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रों के पाठ तथा वृत्तिगत व्याख्या को ध्यान में रखकर मूलपाठ का निर्धारण करते हैं। लेखनकार्य में कुछ त्रुटियाँ हुई हैं। कुछ त्रुटियाँ मौलिक सिद्धान्त में सम्बद्ध हैं। वे कब हुईं यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। पाठ के संक्षेप या विस्तार करने में हुई हैं, यह संभावना की जा सकती है। 'नायाधम्मकहाओ' १।५।५६ में वारह व्रत और पांच महाव्रतों का उल्लेख है। स्थानाग ४।१३६, उत्तराव्ययन २३।२३-२८ के अनुसार यह पाठ शुद्ध नहीं है। वार्ड्स तीर्थंकरों के युग में चातुर्यामि धर्म होता है, पांच महाव्रत और द्वादशव्रत रूप धर्म नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि अगार-विनय और अनगार-विनय का पाठ ओवाइय सूत्र के अगारधर्म और अनगारधर्म के आधार पर पूरा किया गया है। इसलिए जो वर्णन वहाँ था वह यहाँ आ गया। हमने इस पाठ की पूर्ति रायपसेणडय सूत्र के आधार

पर की है, देखें—नायाधम्मकहाओ पृष्ठ १२२ का सातवा पाद-टिप्पण । इस प्रकार के आलोच्य पाठ नायाधम्मकहाओ १।१२।३६, १।१६।२१, १।१६।४६ में भी मिलता है । प्रश्नव्याकरण सूत्र १०।४ में 'कायवर' पाठ मिलता है । वृत्तिकार ने इसका अर्थ 'काचवर'—प्रधान काच दिया है, किन्तु यह पाठ शुद्ध नहीं है । लिपि-दोष के कारण मूलपाठ विकृत हो गया । निगीथाध्ययनके ग्यारहवें उद्देशक (सूत्र १) में 'कायपायाणिवा और वडरपायाणिवा' दो स्वतन्त्र पाठ हैं । वहा भी पात्र का प्रकरण है और यहा भी पात्र का प्रकरण है । काँचपात्र और वज्रपात्र—दोनों मुनि के लिए निषिद्ध हैं । इस आधार पर यहा भी 'वर' के स्थान पर 'वडर' पाठ का स्वीकार औचित्यपूर्ण है । लिपिकाल में इस प्रकार का वर्ण-विपर्यय अन्यत्र भी हुआ है । 'जात' के स्थान पर 'जाव' तथा 'पचकमण' के स्थान पर 'एवकमण' पाठ मिलता है । पाठ-संशोधन में इस प्रकार के अनेक विचित्र पाठ मिलते हैं । उनका निर्धारण विभिन्न स्रोतों से किया जाता है ।

प्रतिपरिचय

१. नायाधम्मकहाओ—

क ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मूलपाठ—

यह प्रति जेसलमेर भंडार से प्राप्त है । यह अनुमानत वारहवीं शताब्दी की है ।

ख नायाधम्मकहाओ (पचपाठी) मूल पाठ वृत्ति सहित—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारगहर की है । पत्र के चारों ओर हासियों (Margin) में वृत्ति लिखी हुई है । इसके पत्र १८६ तथा पृष्ठ ३७२ हैं । प्रत्येक पत्र १० $\frac{३}{४}$ इंच लम्बा तथा ४ $\frac{१}{४}$ इंच चौड़ा है । पत्र में मूलपाठ की १ से १३ तक पक्तियाँ हैं । प्रत्येक पक्ति में ३२ से ३८ तक अक्षर हैं । प्रति स्पष्ट और कलात्मक है । बीच में तथा इयर-उवर वापिकाएँ हैं । यह अनुमानत १४-१५ शताब्दी की होनी चाहिए । प्रति के अंत में टीकाकार द्वारा उद्धृत प्रशस्ति के ११ श्लोक हैं । उनमें अन्तिम श्लोक यह है—

एकादशसु गतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमाना ।

अणहिलपाटकनगरे भाद्रवद्वितीया पञ्जुसणसिद्धय ॥१॥

समाप्तेय ज्ञाताधर्मप्रदेशटीकेति ॥छ॥ ४२५५ ग्रथाग्र ॥ वृत्ति । एव सूत्र
वृत्ति ६७५५ ग्रथाग्र ॥१॥छ॥

ग. नायाधम्मकहाओ (मूलपाठ)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारगहर की है । इसके पत्र ११० तथा पृष्ठ २२० हैं । प्रत्येक पत्र १० $\frac{३}{४}$ इंच लम्बा तथा ४ $\frac{१}{४}$ इंच चौड़ा है । प्रत्येक पत्र में १५ पक्तियाँ हैं और प्रत्येक पक्ति में ४८ से ५३ तक अक्षर हैं । प्रति जीर्ण-सी है । बीच में बावड़ी है ।

लिपि सवत् १५५४ है। अंतिम प्रशस्ति मे लिखा है—सवत् १५५४ वर्षे प्रथम श्रावण वदि २ रवौ। श्री श्री श्री शीरोही नगरे। राया राउ श्रीजगमालराज्ये ॥ श्रीत पागच्छे गच्छनायकश्रीसुमतिसाधसूरि। तत्पट्टे श्रीहेमविमलसूरिराज्ये। महोपाध्याय श्रीअनत-हसगणीना उपदेशेन ॥ साह श्री सूरालिखापित ॥ जोसी पोपालिखित ॥ भ्राति उज्ज्वल सजुक्त धीया लिखापित ॥छा॥छा॥१ ॥ इसके आगे १२ श्लोक लिखे हुए हैं।

घ टव्वा

यह प्रति १२वे अध्ययन से आगे काम मे ली गई है।

२. उवासगदसाओ—

क उवासगदसाओ—मूल पाठ (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट)—

इसकी पत्र सख्या २० व पृष्ठ ४० है। पत्र क्रमाक सख्या १८२ से २०२ तक है। फोटो प्रिंट पत्र संख्या ६ है व एक पत्र मे ८ पृष्ठो का फोटो है। इसकी लम्बाई १४ इंच, चौडाई ३ इंच है। प्रत्येक पत्र मे ४ से ६ तक पक्तिया व प्रत्येक पक्ति मे ४५ के करीव अक्षर हैं।

प्रति के अन्त मे 'ग्रन्थ ८१२' इतना ही लिखा हुआ है। सवत् वगैरह नही है पर विपाक सूत्र पत्र सख्या २८५ मे लिपि सवत् ११८६ है। अत उसके आधार पर यह ११८६ मे पहले की ही मालूम पडती है।

ख. उवासगदसाओ—टव्वेयुक्त पाठ (हस्तलिखित)—

यह प्रति गर्धैया पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र ३६ तथा पृष्ठ ७२ हैं। प्रत्येक पत्र मे पाठ की आठ पक्तिया व प्रत्येक पक्ति मे करीव ५२ अक्षर हैं। पाठ के नीचे राजस्थानी मे अर्थ लिखा हुआ है। प्रत्येक पृष्ठ १० इंच लम्बा व ४ १/४ इंच चौडा है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्न प्रशस्ति है—

सवत् १७७८ वर्षे मिति माघमासे कृष्णपक्षे पचमीतिथौ बुधवारे मुनिना सिवेना-लेखि स्ववाचनाय श्रीमत्फतेपुरमव्ये श्रीरन्तु कल्याणमस्तु लेखकपाठकयो. श्री।

३. अंतगडदसाओ—

क ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र सख्या २०३ से २२२ तक। विपाक सूत्र के अत मे (पत्र सख्या २८५ मे) लिपि सवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अत क्रमानुसार पत्रो से यह प्रति भी ११८६ से पहले की होनी चाहिए।

ख हस्तलिखित—गर्धैया पुस्तकालय, सरदाशहर से प्राप्त तीन सूत्रो की सयुक्त प्रति (उवासगदशा, अंतगड, अणुत्तरोववाइय) परिचय—देखें अणुत्तरोववाइय 'ख' प्रति—लेखन सवत् १४६५ है।

ग हस्तलिखित—गर्धैया पुस्तकालय, सरदारगहर से प्राप्त ।

यह प्रति पचपाठी है । इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं । प्रत्येक पृष्ठ में १३ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति में ४२ से ४५ तक अक्षर हैं । प्रति की लम्बाई १० $\frac{3}{4}$ इंच तथा चौड़ाई ४ $\frac{3}{4}$ इंच है । अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं । प्रति 'तकार' प्रधान तथा अपठित होने के कारण कही-कही अशुद्धिया भी हैं । प्रति के अंत में लेखन सवत् नहीं है । केवल इतना लिखा है—॥छ॥ अथाग्र ८६० ॥०॥ ॥०॥ पुण्यत्नमूरीणा ॥

घ यह प्रति गर्धैया पुस्तकालय सरदारगहर से प्राप्त है । इसके पत्र २० हैं । प्रत्येक पत्र में पाठ की पाच पक्तिया हैं । प्रत्येक पक्ति के बीच में टक्का लिखा हुआ है । प्रति सुन्दर लिखी हुई है । पत्र की लम्बाई १० इंच व चौ० ४ $\frac{5}{8}$ इंच है । प्रति के अंत में तीन दोहे लिखे हुए हैं ।

थली हमारी देश है, रिणी हमारो ग्राम ।
गोत्र वंश है माहात्मा, गणेश हमारो नाम ॥१॥
गणेश हमारा है पिता, मैं सुत मुन्नीलाल ।
बडो गच्छ है खरत्तरो, उजियागर पोसाल ॥२॥
वीकानेर ब्रतमान है, राजपुताना नाम ।
जगलघर वादस्या, गगार्सिहजी नाम ॥३॥
श्रीरस्तु ॥छ॥ कल्याणमस्तु ॥छ॥

४. अणुत्तरोववाइयदसाओ—

क ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) । पत्र सख्या २२३ से २२८ तक । विपाक सूत्र पत्र सख्या २८५ में लिपि सवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है । अंत क्रमानुसार यह प्रति ११८६ से पहले की है ।

ख गर्धैया पुस्तकालय, सरदारगहर से प्राप्त तीन सूत्रों की (उपासकदगा, अन्तकृत और अनुत्तरोपपातिक) मयुक्त प्रति है । इसके पत्र १५ तथा पृष्ठ ३० हैं । प्रत्येक पत्र १३ $\frac{1}{2}$ इंच लम्बा तथा ५ $\frac{1}{2}$ इंच करीब चौड़ा है । प्रत्येक पत्र में २३ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति में करीब ८२ अक्षर हैं । प्रति पठित तथा स्पष्ट लिखी हुई है । प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है । उसके अनुसार यह प्रति १४६५ की लिखी हुई है —

ऊकेशवगो जयति प्रगसापद सुपर्वा बलिदत्तगोभ ।
आगाभिधा तत्र नमस्ति आखा पात्रावली वारितलोकतापा ॥१॥
मुस्ताफलतुला विभ्रत् सद्वृत्त. सुगुणास्पदं ।
तम्या श्रीशालभद्राख्य. सम्यग्रुचिरजायत ॥२॥

तदन्वयस्याभरण वभूव वागाभिधानः सुविशुद्धबुद्धि ।
 विवेकसत्सागतिलोचनाभ्या दृष्ट्वा सुमार्गं य उरीचकार ॥३॥
 तदगजन्माजनि वाहडाख्य सद्धर्मकर्माजिनवद्धकक्ष ।
 वक्षो यदीय गुरुदेवभक्तिरलचकाराब्जमिवालिराजी ॥४॥
 क्रमेण तदवशविशालकेतु कर्माविध श्रावकपुगवोभूत् ।
 चित्रं कलावानपि य प्रकाम वृषप्रमोदार्षणहेतुरुच्चै ॥५॥
 तदगभूरभूत्साधु महणो द्रुहिणोपम ।
 राजहसगति शश्वच्चतुराननता दधत् ॥६॥
 तस्यार्हदह्लियुगलाब्जमधुव्रतस्य यात्रादिभूरिसुकृतोच्चयकारकस्य ।
 आसीदसामयशस किल मान्हणाद्या देविप्रिया प्रणयिनी गिरिजेव शभो ॥७॥
 तत्कुक्षिप्रभावभुवुरभितोप्युद्योतयत कुल,
 चत्वारस्तनया नयार्जितधना नाम्यर्थेना भीरव ।
 आद्यस्तत्र कुमारपाल इति विख्यात परो वर्द्धन-
 स्तार्त्तीयस्त्रिभुवाभिधस्तदपरो गेलाह्लयोमा भुवि ॥८॥
 चत्वारोपि व्यधुरधरिता मर्त्यघात्रीरुहस्ते,
 स्वौदार्येणातनुधनभृतो वाघवा धर्मकर्म ।
 अन्योन्य स्पर्द्धयेव प्रतिदिनमनयास्तेषु गेलाख्य भार्या,
 गगा देवीति गंगावदमलहृदयास्तीह जैनाह्लिलीना ॥९॥
 तत्कुक्षिभू श्रावक ऊदराज, आधो द्वितीय किल वूट नामा ।
 द्वावप्यभूता गुरुदेवभक्तौ मदोदरी नाम सुता तथास्ति ॥१०॥
 ऊदाख्यस्य सभरीति माऊ वूटस्य च प्रिया ।
 आसधरो मडनश्च तयो पुत्रौ यथाक्रमम् ॥११॥
 अमुना परिवारेण, सारेण सहिता शुभा ।
 गगादेवी गुरोर्वक्त्रादुपदेशामृत पपौ ॥१२॥
 आवाल्याद्धर्मकर्माणि तत्वान्यसौ निरतर ।
 एकादशागमूत्राणि लेखयामास हर्षत ॥१३॥
 विजयिनि खरतरगच्छे जिनभद्रसूरिसाम्राज्ये ।
 गुणं निधिं 'वाद्धीदु' मिते विक्रमभूपाद् व्रजति वर्षे ॥१४॥
 गगादेवी सुतोपेता, लेखयित्वागपुस्तक ।
 दत्तेस्म श्रीतपोरलोपाध्यायेभ्य प्रमोदत ॥१५॥

॥छ॥ श्री. ॥

ग हस्तलिखित प्रति गवैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त । इसके पत्र ६ तथा पृष्ठ १८ हैं । प्रत्येक पत्र मे ११ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ३५ से ४० तक अक्षर हैं । प्रति

की लम्बाई १० $\frac{1}{4}$ इंच तथा चौड़ाई ४ $\frac{1}{4}$ इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति शुद्ध 'तथा 'त' प्रधान है। अतः मे लेखन-सवत् तथा लिपिकर्ता का नाम नहीं है केवल निम्नोक्त वाक्य है—

॥छ्॥ अणुत्तरोववाइयदशाग नवम अग समत्त छ्॥ श्री. श्री श्री श्री श्री श्री.
छ् छ प्रति का अनुमानित समय १६०० है। •

५. पण्हावागरणाई—

क ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मूलपाठ—

पत्र सख्या २२८ से २५६ •

ख पचपाठी। हस्तलिखित अनुमानित सवत् १२वीं सदी का उत्तरार्ध।

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ६८ हैं। प्रत्येक पत्र १० × ४ $\frac{1}{4}$ इंच है। मूलपाठ की पक्तिया १ से १२ तथा पक्ति में लगभग २३ से ३५ अक्षर हैं। चारों ओर वृत्ति तथा बीच में वावड़ी है। अन्तिम प्रगस्ति की जगह—
ग्रथाग्र १२५० शुभ भवतु कल्याणमस्तु ॥ लिखा है। लेखन कर्ता तथा लिपि-सवत् का उल्लेख नहीं है किन्तु अनुमानत यह प्रति १३वीं शताब्दी की होनी चाहिए। •

ग त्रिपाठी (हस्तलिखित)—

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर में प्राप्त। इसके पत्र १११ हैं। प्रत्येक पत्र १० × ४ $\frac{1}{4}$ इंच है। मूल पाठ की पक्तिया १ से ८ तथा प्रत्येक पक्ति में ३६ से ४६ तक लगभग अक्षर हैं। ऊपर नीचे दोनों तरफ वृत्ति तथा बीच में कलात्मक वावड़ी है। प्रति के उत्तरार्ध के बीच बीच के कई पन्ने लुप्त हैं। अतः मे सिर्फ ग्रथाग्र १२५० ॥छ्॥ श्री ॥ छ्॥०॥ लिखा है। लिपि सवत् अनुमानत १६वीं शताब्दी होना चाहिए। •

घ मूलपाठ (सचित्र)—

पूनमचद दुवोडिया, छापार द्वारा प्राप्त। इसके पत्र २७ हैं। प्रत्येक पत्र १२ × ५ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति में ५१ से ६० तक अक्षर हैं। बीच में वावड़ी है तथा प्रथम दो पत्रों में सुनहरी कार्य किए हुए भगवान् महावीर और गौतम स्वामी के चित्र हैं। लेखन सवत् नहीं है पर यह प्रति अनुमानत. १५७० के लगभग की होनी चाहिए। अशुद्धि बहुत है। •

च मूलपाठ तथा टट्टा की प्रति—

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। पत्र सख्या ८३।

द यह प्रति वर्तमान में जैन विश्व भारती, लाडनू में है। इसके पत्र १०३ तथा पृष्ठ २०६

है। बालाबबोध पचपाठी। पक्तिया नीचे में १ ऊपर में ११ तक हैं। अक्षर २८ से ३५ तक हैं। लेखन सवत् १६६७। लेखक सुदर्शन। प्रति काफी शुद्ध है।

६ विवागसुयं—

क मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट) २६० से २८५ तक। (मूलपाठ) पक्तिया ५ से ६ तक। कुछ पक्तिया अधूरी तथा कुछ अस्पष्ट हैं। प्रति प्रायः शुद्ध है। लेखन सवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ सोमवार। पुष्पिका काफी लम्बी है पर अस्पष्ट है। प्रति की लम्बाई १४ इंच तथा चौड़ाई ११ इंच है और तीन कोष्ठको में लिखी हुई है।

ख. मूलपाठ—

यह प्रति गद्यया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ३२ तथा पृष्ठ ६४ हैं। पत्रों की लम्बाई १० इंच तथा चौड़ाई ४ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। कही-कही भाषा का अर्थ लिखा हुआ है। प्रति प्रायः शुद्ध है। अन्तिम प्रशस्ति में लिखा है—

शुभ भवतु लेखकपाठकयो ॥ सवत् १६३३ वर्षे आसो वदि ८ रवि लिखित ।छ्।।

ग. मूलपाठ—

यह प्रति हनूतमलजी भागीलालजी वेंगानी वीदासर से प्राप्त हुई। इसके पत्र ३५ तथा पृष्ठ ७० हैं। प्रत्येक पत्र ११ इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १२ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति में ४५ से ४६ तक अक्षर हैं। प्रति अशुद्धि बहुल है। अन्तिम प्रशस्ति में—

एक्कारसय अग समत्त ॥ ग्रथाग्र १२१६ ॥ टीका ६०० एतस्या ॥ लिपि सवत् नहीं है, पर पत्रों की जीर्णता तथा अक्षरों की लिखावट से यह प्रति करीब ४०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए।

वृ एम० सी मोदी तथा वी० जी० चोकसी द्वारा सम्पादित तथा गुर्जरग्रथरत्न कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण १९३५, 'विवागसुय'।

सहयोगानुसूति

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी हैं। देवद्विगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी।

आचार्यश्री तुलसी ने मुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसन्धान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छी है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-सबल पाँ और अधिक भारी बनूँ।

प्रस्तुत पाठ के सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि बालचन्द्रजी, इस कार्य में क्वचित् सलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि दुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलाल (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योगका मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्द्रजी गोठी को इस अवसर पर विन्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य में सलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-सकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अगमुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व-भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द्र जी सेठिया, 'जैन विश्व-भारती' तथा 'आदर्श साहित्य सघ' के कार्यकर्त्तियों ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता में कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उत्तरेख व्यवहारपूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत विहार

नई दिल्ली

२५.०० वा निर्वाण दिवस।

मुनि नथमल

भूमिका नायाधम्मकहाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का छठा अंग है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम 'नाया' और दूसरे श्रुतस्कन्ध का नाम 'धम्मकहाओ' है। दोनों श्रुतस्कन्धों का एकीकरण करने पर प्रस्तुत आगम का नाम 'नायाधम्मकहाओ' बनता है। 'नाया' (ज्ञात) का अर्थ उदाहरण और 'धम्मकहाओ' का अर्थ धर्म-आख्यायिका है। प्रस्तुत आगम में चरित और कल्पित—दोनों प्रकार के दृष्टान्त और कथाएँ हैं।^१

जयधवला में प्रस्तुत आगम का नाम 'नाहधम्मकहा' (नाथधर्मकथा) मिलता है। नाथ का अर्थ है स्वामी। नाथधर्मकथा अर्थात् तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित धर्मकथा। कुछ संस्कृत ग्रन्थों में प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' उपलब्ध होता है। आचार्य अकलक ने प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' बतलाया है।^२ आचार्य मलयगिरि और अभयदेवसूरि ने उदाहरण-प्रधान धर्मकथा को ज्ञाताधर्मकथा कहा है। उनके अनुसार प्रथम अध्ययन में 'ज्ञात' और दूसरे अध्ययन में 'धर्म-कथाएँ' हैं। दोनों ने ही ज्ञात पद के दीर्घीकरण का उल्लेख किया है।^३

श्वेताम्बर साहित्य में भगवान् महावीर के वश का नाम 'ज्ञात' और दिगम्बर साहित्य में 'नाथ' बतलाया गया है। इस आधार पर कुछ विद्वानों ने प्रस्तुत आगम के नाम के साथ भगवान् महावीर का सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न किया है। उनके अनुसार 'ज्ञातृधर्मकथा' या 'नाथधर्मकथा'

१ समवाओ, पद्दण्णगसमवाओ, सूत्र ६४।

२. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७२. ज्ञातृधर्मकथा।

३ (क) नदीवृत्ति, पत्र २३०, ३१ ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा, अथवा ज्ञातानि—ज्ञाताध्ययनानि प्रथमश्रुतस्कन्धे, धर्मकथा द्वितीयश्रुतस्कन्धे यासु ग्रन्थपद्धतिषु (ता) ज्ञाताधर्मकथा पृषोदरादित्वात्पूर्वपदस्य दीर्घान्तता।

(ख) समवायागवृत्ति, पत्र १०८. ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा, दीर्घत्व संज्ञात्वाद् अथवा प्रथमश्रुतस्कन्धो ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि, द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथा।

का अर्थ है—भगवान् महावीर की धर्मकथा^१। वेवर के अनुसार जिस ग्रथ में ज्ञातृवर्गी महावीर के लिए कथाएँ हो उसका नाम 'नायाधम्मकहा'^२ है^३। किन्तु समवायाग और नदी में जो अर्गों का विवरण प्राप्त है उसके आधार पर 'नायाधम्मकहा' का 'ज्ञातृवर्गी महावीर की धर्मकथा'—यह अर्थ सगत नहीं लगता। वहाँ बतलाया गया है कि ज्ञाताधर्मकथा में ज्ञाता (उदाहरणभूत व्यक्तियों) के नगर, उद्यान आदि का निरूपण किया गया है^४। प्रस्तुत आगम के प्रथम अध्ययन का नाम भी 'उत्क्खत्तणाए' (उत्क्षिप्त ज्ञात) है। इसके आधार पर 'नाय' शब्द का अर्थ 'उदाहरण' ही सगत प्रतीत होता है।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम के दृष्टान्तों और कथाओं के माध्यम से अहिंसा, अम्बाद, श्रद्धा, उन्द्रिय-विजय आदि आध्यात्मिक तत्त्वों का अत्यन्त सरस शैली में निरूपण किया गया है। कथावस्तु के माय वर्णन की विशेषता भी है। प्रथम अध्ययन को पढ़ते समय कादम्बरी जैसे गद्य काव्यों की स्मृति हो आती है। नवे अध्ययन में समुद्र में डूबती हुई नौका का वर्णन बहुत मजीब और रोमाचक है। चारहवें अध्ययन में कलुषित जल को निर्मल बनाने की पद्धति वर्तमान जल-शोधन की पद्धति की याद दिलाती है। इस पद्धति के द्वारा पुद्गल द्रव्य की परिवर्तनशीलता का प्रतिपादन किया गया है।

मुख्य उदाहरणों और कथाओं के साथ कुछ अवान्तर कथाएँ भी उपलब्ध होती हैं। आठवें अध्ययन में कूप-मडूक की कथा बहुत ही सरस शैली में उल्लिखित है। परिव्राजिका चोखा जितशत्रु के पास जाती है। जितशत्रु उसे पूछता है—'तुम बहुत घूमती हो, क्या तुमने मेरे जैसा अन्त पुर कही देखा है?' चोखा ने मुस्कान भरते हुए कहा—'तुम कूप-मडूक जैसे हो।'

'वह कूप-मडूक कौन है?' जितशत्रु ने पूछा।

चोखा ने कहा—'कूप में एक मेढक था। वह वही जन्मा, वही बड़ा। उसने कोई दूसरा कूप, तालाब और जलाशय नहीं देखा। वह अपने कूप को ही सब कुछ मानता था। एक दिन एक समुद्री मेढक उस कूप में आ गया। कूप-मडूक ने कहा—तुम कौन हो? कहा में आए हो? उसने कहा—मैं समुद्र का मेढक हूँ, वही से आया हूँ। कूप-मडूक ने पूछा—वह समुद्र कितना बड़ा है? समुद्री मेढक ने कहा—वह बहुत बड़ा है। कूप-मडूक ने अपने पैर से रेखा खींचकर कहा—क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेढक ने कहा—इससे बहुत बड़ा है। कूप-मडूक ने कूप के पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक फुदक कर कहा—क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेढक ने कहा—इससे भी बहुत बड़ा है। कूप-मडूक इस पर विश्वास नहीं कर सका। इसने कूप के सिवाय कुछ देखा ही नहीं था^५।

इस प्रकार नाना कथाओं, अवान्तर-कथाओं, वर्णनों, प्रसंगों और गन्द-प्रयोगों की दृष्टि से प्रस्तुत आगम बहुत महत्वपूर्ण है। इसका विश्व के विभिन्न कथा-ग्रन्थों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर कुछ नए तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं।

१ जैन साहित्य का इतिहास, पूर्व-पीठिका, पृष्ठ ६६०।

२ Stories From the Dharma of NAYA, ६० ए० जि० १६, पृष्ठ ६६।

३ (क) समवायो, पड़ण्णगसमवायो, सूत्र ६४।

(ख) नदी, सूत्र ८५।

४ नायाधम्मकहाओ ८।१५४, पृ० १८६, १८७।

उवासगदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का सातवा अंग है। इसमें दस उपासको का जीवन वर्णित है इसलिए इसका नाम 'उवासगदसाओ' है। श्रमण-परम्परा में श्रमणों की उपासना करने वाले गृहस्थों को श्रमणोपासक या उपासक कहा गया है। भगवान् महावीर के अनेक उपासक थे। उनमें से दस मुख्य उपासको का वर्णन करने वाले दस अध्यायन इसमें सकलित हैं।

विषय-वस्तु—

भगवान् महावीर ने मुनि-धर्म और उपासक धर्म—इस द्विविध धर्म का उपदेश दिया था। मुनि-के लिए पांच महाव्रतों का विधान किया और उपासक के लिए वारह व्रतों का। प्रथम अध्यायन में उन वारह व्रतों का विशद वर्णन मिलता है। श्रमणोपासक आनन्द भगवान् महावीर के पास उनकी दीक्षा लेता है। व्रतों की यह सूची धार्मिक या नैतिक जीवन की प्रशस्त आचार-सहिता है। इसकी आज भी उतनी ही उपयोगिता है जितनी ढाई हजार वर्ष पहले थी। मनुष्य स्वभाव की दुर्बलता जब तक बनी रहेगी तब तक उसकी उपयोगिता समाप्त नहीं होगी।

मुनि का आचार-धर्म अनेक आगमों में मिलता है, किन्तु गृहस्थ का आचार-धर्म मुख्यतः इसी आगम में मिलता है। इसलिए आचार-शास्त्र में इसका मुख्य स्थान है। इसकी रचना का मुख्य प्रयोजन ही गृहस्थ के आचार का वर्णन करना है। प्रसंगवश इसमें नियतिवाद के पक्ष-विपक्ष की सुन्दर चर्चा हुई है। उपासको की धार्मिक कसौटी की घटनाएँ भी मिलती हैं। भगवान् महावीर उपासको की साधना का कितना ध्यान रखते थे और उन्हें समय-समय पर कैसे प्रोत्साहित करते थे यह भी जानने को मिलता है।

जयध्वला के अनुसार प्रस्तुत आगम उपासको के ग्यारह प्रकार के धर्म का वर्णन करता है। उपासक-धर्म के ग्यारह अंग ये हैं—दर्शन, व्रत, सामायिक, पीषघोषवास, सच्चित्तविरति, रात्रि-भोजन विरति, ब्रह्मचर्य, आरभविरति, अनुमति विरति और उद्दिष्ट विरति। आनन्द आदि श्रावकों ने उक्त ग्यारह प्रतिमाओं का आचरण किया था। व्रतों की आराधना स्वतन्त्र रूप में भी की जाती है और प्रतिमाओं के पालन के समय भी की जाती है। व्रत और प्रतिमा—ये दो पद्धतियाँ हैं। समवायाग और नन्दी सूत्र में व्रत और प्रतिमा दोनों का उल्लेख है। जयध्वला में केवल प्रतिमाओं का उल्लेख है।

अंतगडदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का आठवा अंग है। इसमें जन्म-मरण की परम्परा का अंत करने वाले व्यक्तियों का वर्णन है, तथा इसके दस अध्ययन हैं इसलिए इसका नाम 'अंतगडदसाओ' है। समवायाग में इसके दस अध्ययन और सात वर्ग बतलाए गए हैं^१। नदी सूत्र में इसके अध्ययनों का कोई उल्लेख नहीं है, केवल आठ वर्गों का उल्लेख है^२। अभयदेवसूरि ने दोनों में सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन हैं इस अपेक्षा से समवायाग सूत्र में दस अध्ययन और अन्य वर्गों की अपेक्षा से सात वर्ग बतलाए गए हैं। नन्दी सूत्र में अध्ययनों का उल्लेख किए बिना केवल आठ वर्ग बतलाए गए हैं^३। किन्तु इस सामञ्जस्य का अंत तक निर्वाह हो नहीं सकता, क्योंकि समवायाग में प्रस्तुत आगम के शिक्षा-काल (उद्देशन-काल) दस बतलाए गए हैं। नदीसूत्र में उनकी संख्या आठ है। अभयदेवसूरि ने लिखा है कि उद्देशनकालों के अन्तर का आशय हमें ज्ञात नहीं^४। नदीसूत्र के चूर्णिकार श्री जिनदास महत्तर और वृत्तिकार श्री हरिभद्रसूरि ने भी यह लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन होने के कारण प्रस्तुत आगम का नाम 'अंतगडदसाओ' है^५। चूर्णिकार ने दसा का अर्थ अवस्था भी किया है^६।

प्रस्तुत आगम का वर्णन करने वाली तीन परम्पराएँ हैं—एक समवायाग की, दूसरी तत्त्वार्थवार्तिक आदि की और तीसरी नदी की।

प्रथम परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन हैं। इसकी पुष्टि स्थानाग सूत्र से होती है। स्थानाग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन और उनके नाम निर्दिष्ट हैं, जैसे—नमि, मातग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, जमाली, भगाली, किकप, चिल्वक और फाल अवडपुत्र^७। तत्त्वार्थवार्तिक में कुछ पाठ-भेद के साथ ये दस नाम मिलते हैं, जैसे—नमि, मातग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, यमलीक, वलीक, कवल, पाल और अवण्ठपुत्र^८। समवायाग में दस अध्ययनों का उल्लेख है, किन्तु उनके नाम निर्दिष्ट नहीं हैं। तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रत्येक

१ समवायो, पद्मणगसमवायो, सूत्र ६६ दस अज्जयणा सत्त वग्गा ।

२ नदी, सूत्र ८८ अट्ठ वग्गा ।

३ समवायागवृत्ति, पत्र ११२ दस अज्जयण त्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते, नन्धा तथैव व्याख्यातत्वात्, यच्चेह पठ्यते 'सत्त वग्ग' त्ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया, यतोऽप्यष्ट वर्गा, नन्धामपि तथा पठितत्वात् ।

४ समवायागवृत्ति, पत्र ११२ ततो भणित—अट्ठ उद्देशनकाला इत्यादि, इह च दश उद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छाम ।

५ (क) नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ . पढमवग्गे दस अज्जयण त्ति तस्सकखतो अतकडदस त्ति ।

(ख) नन्दीसूत्र, वृत्तिसहित पृ० ८३ प्रथमवर्गे दशाध्ययनानि इति तत्सङ्ख्यया अन्तकृद्दशा इति ।

६. नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : दस त्ति—अवत्या ।

७ ठाण, १०।११३ ।

८. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३ ।

तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अतकृत केवलियों का वर्णन है^१। जयधवला में भी तत्त्वार्थ-वार्तिक के वर्णन का समर्थन मिलता है^२। नदी सूत्र में दस अध्ययनों का उल्लेख और नाम निर्देश दोनों नहीं हैं। इस आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि समवायाग और तत्त्वार्थवार्तिक में प्राचीन परम्परा सुरक्षित है और नदी सूत्र में प्रस्तुत आगम के वर्तमान स्वरूप का वर्णन है। वर्तमान में उपलब्ध आठ वर्गों में प्रथम वर्ग के दस अध्ययन हैं, किन्तु इनके नाम उक्त नामों से सर्वथा भिन्न हैं, जैसे—गौतमसमुद्र, सागर, गम्भीर, स्तिमित, अचल, कापिल्य, अक्षोभ, प्रसेनजित, और विष्णु। अभयदेवसूरि ने स्थानाग वृत्ति में इसे वाचनान्तर माना है^३। इससे स्पष्ट होता है कि नदी में जिस वाचना का वर्णन है वह समवायाग में वर्णित वाचना से भिन्न है।

‘अतगड’ शब्द के दो संस्कृत रूप प्राप्त होते हैं—अतकृत और अतकृत्। अर्थ की दृष्टि से दोनों में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु ‘गड’ का ‘कृत’ रूप छाया की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है।

विषय-वस्तु—

वासुदेव कृष्ण और उनके परिवार के सम्बन्ध में इस आगम में विशद जानकारी मिलती है। वासुदेवकृष्ण के छोटे भाई गजसुकुमाल की दीक्षा और उनकी साधना का वर्णन बहुत ही रोमांचकारी है।

छठे वर्ग में अर्जुनमालाकार की घटना उल्लिखित है। एक आकस्मिक घटना ने उसे हत्यारा बना दिया और एक प्रसंग ने उसे साधु बना दिया। परिस्थिति और वातावरण से मनुष्य वनता-विगडता है—इसे स्वीकार न करें फिर भी यह स्वीकार किया जा सकता है कि मनुष्य के वनने-विगडने में वे निमित्त बनते हैं।

अतिमुक्तक मुनि के अध्ययन में आन्तरिक साधना का महत्व समझा जा सकता है। समग्र आगम में तपस्या ही तपस्या दृष्टिगोचर होती है। ध्यान के उल्लेख नगण्य हैं। भगवान् महावीर ने उपवास और ध्यान—दोनों को स्थान दिया था। तपस्या के वर्गीकरण में उपवास बाह्य तप और ध्यान आन्तरिक तप है। भगवान् महावीर ने अपने साधना-काल में उपवास और ध्यान—दोनों का प्रयोग किया था। यह अनुसन्धेय है कि प्रस्तुत आगम में केवल उपवास पर ही इतना बल क्यों दिया गया? विस्मृति और नव-निर्माण की शृंखला में वचा हुआ प्रस्तुत आगम अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण और अनुसन्धेय है।

१ तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३ । इत्येते दश वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे । एवमूपभादीना त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निजित्य कृत्स्नकर्मक्षयादन्तकृत दश अस्या वर्ण्यन्ते इति अन्तकृद्दशा ।

२ कसायपाह्वड भाग १ पृ० १३० अतयददसा णाम अग चउन्विहोवसग्गे दारुणे सहिऊण पाडिहेर लद्धूण णिव्वाण गदे सुदसणादि-दस-दस-साहू तित्थं पडि वण्णेदि ।

३ स्थानागवृत्ति पत्र ४८३ ।...ततो वाचनान्तरापेक्षाणीमानीति सम्भाषयाम ।

अणुत्तरोववाइयदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का नवा अग है। इसमें अनुत्तर नामक स्वर्ग-समूह में उत्पन्न होने वाले मुनियों से सम्बन्धित दस अध्ययन हैं, इसलिए इसका नाम 'अणुत्तरोववाइयदसाओ' है। नदी सूत्र में केवल तीन वर्गों का उल्लेख है^१। स्थानाग में केवल दस अध्ययनों का उल्लेख है^२। राजवार्तिक के अनुसार इसमें प्रत्येक तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अनुत्तरोपपातिक मुनियों का वर्णन है^३। समवायाग में दस अध्ययन और तीन वर्ग—दोनों का उल्लेख है^४। उसमें दस अध्ययनों के नाम उल्लिखित नहीं हैं। स्थानाग और तत्त्वार्थवार्तिक के अनुमार उनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) स्थानाग के अनुसार—

ऋषिदास, धन्य, सुनक्षत्र, कार्तिक, स्वस्थान, शालिभद्र, आनन्द, तेतली, दशार्णभद्र और अतिमुक्त^५।

(२) राजवार्तिक के अनुसार—

ऋषिदास, वान्य, सुनक्षत्र, कार्तिक, नन्द, नन्दन, शालिभद्र, अभय, वारिषेण और चिलातपुत्र^६।

उक्त दस मुनि भगवान् महावीर के शासन में हुए थे—यह तत्त्वार्थवार्तिककार का मत है। धवला में कार्तिक के स्थान पर कार्तिकेय और नद के स्थान पर आनन्द मिलता है^७।

प्रस्तुत आगम का जो स्वरूप उपलब्ध है वह स्थानाग और समवायाग की वाचना से भिन्न है। अभयदेवसूरि ने इसे वाचनान्तर बतलाया है^८। उपलब्ध वाचना के तृतीय वर्ग में धन्य,

१ नदी, सूत्र ८६ तिष्णि वर्गा ।

२ ठाण १०।११४

३ (क) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३ ।

इत्येते दश वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे । एवमृपभादीना त्रयोविंशतेस्तीर्थेऽन्वयेऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निजित्य विजयाद्यनुत्तरेऽप्युत्पन्ना इत्येवमनुत्तरोपपादिक दशास्या वर्ष्यन्त इत्यनुत्तरोपपादिकदशा ।

(ख) कसायपाद्दृष्ट भाग १, पृ० १३० ।

अणुत्तरोववादियदसा णाम अग चउव्विहोवसग्गे दारुणे सहियूण चउवीसण्ह तित्ययराण तित्येसु अणुत्तर-विमाण गदे दस दस मुणिवसहे वण्णेदि ।

४ समवाओ, पद्दण्णगसमवाओ ६७ ।

दस अज्झयणा तिष्णि वर्गा ।

५ ठाण १०।११४ ।

६ तत्त्वार्थवार्तिक १।२० पृ० ७३ ।

७ पद्दखण्डागम १।१।२ ।

८ स्थानागवृत्ति पत्र ४८३

तदेवमिहापि वाचनान्तरापेक्षयाऽध्ययनविभाग उक्तो न पुनरुपलभ्यमानवाचनापेक्षयेति ।

सुनक्षत्र और ऋषिदास—ये तीन अध्ययन प्राप्त है। प्रथम वर्ग में वारिषेण और अभय—ये दो अध्ययन प्राप्त हैं, अन्य अध्ययन प्राप्त नहीं हैं।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम में अनेक राजकुमारों तथा अन्य व्यक्तियों के वैभवपूर्ण और तपोमय जीवन का सुन्दर वर्णन है। धन्य अनगर के तपोमय जीवन और तप से कृश बने हुए शरीर का जो वर्णन है वह साहित्य और तप दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

पण्हावागरणाइं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का दसवा अंग है। समवायाग सूत्र और नदी में इसका नाम 'पण्हावागरणाइं' मिलता है^१। स्थानाग में इसका नाम 'पण्हावागरणदसाओ' है^२। समवायाग में 'पण्हावागरणदसासु'—यह पाठ भी उपलब्ध है। इससे जाना जाता है कि समवायाग के अनुसार स्थानाग-निर्दिष्ट नाम भी सम्मत है। जयधवला में 'पण्हावायरण' और तत्त्वार्थवार्तिक में 'प्रश्नव्याकरणम्' नाम मिलता है^३।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय-वस्तु के बारे में विभिन्न मत प्राप्त होते हैं। स्थानाग में इसके दस अध्ययन बतलाए गए हैं—उपमा, सख्या, ऋषि-भाषित, आचार्य-भाषित, महावीर-भाषित, क्षौमक प्रश्न, कोमल प्रश्न, आदर्श प्रश्न, अगुष्ठ प्रश्न और बाहु प्रश्न^४। इनमें वर्णित विषय का सकेत अध्ययन के नामों से मिलता है।

समवायाग और नदी के अनुसार प्रस्तुत आगम में नाना प्रकार के प्रश्नों, विद्याओं और दिव्य-सवादों का वर्णन है^५। नदी में इसके पैतालिस अध्ययनों का उल्लेख है। स्थानाग से उसकी

१ (क) समवाओ, पङ्णगसमवाओ सूत्र ६८ ।

(ख) नदी, सूत्र ६० ।

२ ठाण १०।११० ।

३ (क) कसायपाहुड, भाग १ पृष्ठ १३१ पण्हावायरण नाम अंग ।

(ख) तत्त्वार्थवार्तिक १।२० प्रश्नव्याकरणम् ।

४ ठाण १०।११६

पण्हावागरणदसाण दस अक्षयणा पण्णत्ता, त जहा—उवमा सखा, इसिभासियाइ, आयरियभासियाइ, महावीरभासियाइ, खोमगपसिणाइ, कोमलपसिणाइ, अद्दागपसिणाइ, अगुठुपसिणाइ बाहुपसिणाइं ।

५ (क) समवाओ, पङ्णगसमवाओ सूत्र ६८

पण्हावागरणेसु अट्ठत्तर पसिणसय अट्ठत्तर अपसिणसय अट्ठत्तर पसिणापसिणय विज्जाइमया, नागसुवण्णेहिं सिद्धिं दिव्वा सवाया आधविज्जति ।

(ख) नदी, सूत्र ६० ।

कोई मगति नहीं हैं। समवायाग मे इसके अध्ययनो का उल्लेख नहीं है, किन्तु उसके 'पण्हावागरण-दसासु' इस आलापक (पैराग्राफ) के वर्णन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता हैं कि समवायाग मे प्रस्तुत आगम के दस अध्ययनो की परम्परा स्वीकृत है। उक्त आलापक मे बतलाया गया है कि प्रश्नव्याकरणदसा मे प्रत्येक बुद्ध भाषित, आचार्य भाषित, वीरमहर्षि भाषित, आदर्ग प्रश्न, अगुण्ठ प्रश्न, वाहु प्रश्न, असि प्रश्न, मणि प्रश्न, क्षौम प्रश्न, आदित्य प्रश्न आदि-आदि प्रश्न वर्णित हैं। इन नामो की स्थानाग मे निर्दिष्ट दस अध्ययन के नामो के साथ तुलना की जा सकती है। यद्यपि उद्देगनकाल पेंतालिस बतलाए गए हैं फिर भी अध्ययनो की सख्या का स्पष्ट निर्णय नहीं किया जा सकता। गभीर विषय वाले अध्ययन की शिक्षा अनेक दिनो तक दी जा सकती है।

तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम मे अनेक आक्षेप और विक्षेप के द्वारा हेतु और नय से आश्रित प्रश्नो का उत्तर दिया गया है, लौकिक और वैदिक अर्थो का निर्णय किया गया है^१।

जयघवला के अनुसार प्रस्तुत आगम आक्षेपणी, विक्षेपणी, सवेजनी और निर्वेदनी—इन चारो कथाओ तथा प्रश्न के आधार पर नष्ट, मुष्टि, चिन्ता, लाभ, अलाभ, सुख, दुख, जीवन और मरण वा वर्णन करता है^२।

उक्त ग्रथो मे प्रस्तुत आगम का जो विषय वर्णित है वह आज उपलब्ध नहीं हैं। आज जो उपलब्ध है उसमे पाच आश्रवो (हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह) तथा पांच संवरो (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का वर्णन है। नदी मे उसका कोई उल्लेख नहीं है। समवायाग मे आचार्य भाषित आदि अध्ययनो का उल्लेख है तथा जयघवला मे आक्षेपणी आदि चारो कथाओ का उल्लेख है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम का उपलब्ध विषय भी प्रश्नो के साथ रहा हो, बाद मे प्रश्न आदि विद्याओ की विस्मृति हो जाने पर वह भाग प्रस्तुत आगम के रूप मे बचा हो। यह अनुमान भी किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम के प्राचीन स्वरूप के विच्छिन्न हो जाने पर किसी आचार्य के द्वारा नए रूप से रचना की गई हो। नदी मे प्रस्तुत आगम की जिस वाचना का विवरण है, उसमे आश्रवो और संवरो का वर्णन नहीं है, किन्तु नदी चूर्णि मे उनका उल्लेख मिलता है^३। यह संभव है कि चूर्णिकार ने उपलब्ध आकार के आधार पर उनका उल्लेख किया है।

१. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३, ७४.

आक्षेपविक्षेपहेतुनयाश्रितानां प्रश्नानां व्याकरणं प्रश्नव्याकरणम् । तस्मिंल्लौकिकवैदिकानामर्थानां निर्णयः ।
= समायपाठ, भाग १, पृ० १३१, १३२.

पण्हावायरणं पाग अग अक्षेवणी-विक्षेवणी-सवेयणी-निव्वेयणीणामाग्नो चउव्विह क्हाओ पण्हादो णट्ट-मुट्ठि-
पिना-माहानाह-नुयदुक्क-ओवियमरणणि च वर्णेदि ।

३. नदी सूत्र, चूर्णि सहित पृ० ६६ ।

विवागसुयं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का ग्यारहवा अंग है। इसमें सुकृत और दुष्कृत कर्मों के विपाक का वर्णन किया गया है, इसलिए इसका नाम 'विवागसुय' है^१। स्थानाग में इसका नाम 'कम्म विवागदसा' है^२।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के दो विभाग हैं—दुःख विपाक और सुख विपाक। प्रथम विभाग में दुष्कर्म करने वाले व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों का वर्णन है। उक्त प्रसंगों को पढ़ने पर लगता है कि कुछ व्यक्ति हर युग में होते हैं। वे अपनी क्रूर मनोवृत्ति के कारण भयकर अपराध भी करते हैं। दुष्कर्म व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थितियों को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह भी जानने को मिलता है। दूसरे विभाग में सुकृत करने वाले व्यक्तियों के जीवन-प्रसंग हैं। जैसे क्रूर कर्म करने वाले व्यक्ति हर युग में मिलते हैं वैसे ही उपशान्त मनोवृत्ति वाले लोग भी हर युग में मिलते हैं। अच्छाई और बुराई का योग आकस्मिक नहीं है।

स्थानाग सूत्र में कर्म विपाक के दस अध्ययन वतलाए गए हैं—मृगापुत्र, गोत्रास, अड, शकट, माहन, नन्दीषेण, शौरिक, उदुम्बर, सहसोदाह-आमरक और कुमार लिच्छवी^३। ये नाम किसी दूसरी वाचना के हैं।

उपसंहार

अग सूत्रों के विवरण और उपलब्ध स्वरूप में पूर्ण सवादिता नहीं है। इस आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि अग सूत्रों का उपलब्ध स्वरूप केवल प्राचीन नहीं है, प्राचीन और अर्वाचीन दोनों संस्करणों का सम्मिश्रण है। इस विषय का अनुसन्धान बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकता है कि अग सूत्रों के उपलब्ध स्वरूप में कितना प्राचीन भाग है और कितना अर्वाचीन तथा किस आचार्य ने कब उसकी रचना की। भाषा, प्रतिपाद्य, विषय और प्रतिपादन शैली के आधार पर यह अनुसन्धान किया जा सकता है। यद्यपि यह कार्य बहुत ही श्रम, साध्य है, पर असंभव नहीं है।

१ (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ६६।

(ख) नदी, सूत्र ६१।

(ग) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०।

(घ) कसायपाहुड, भाग १ पृ० १३२।

२ ढाण १०।११०।

३ ढाण १०।१११।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमो के पाठ-सशोधन मे अनेक मुनियो का योग रहा है । उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो ।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है । अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुर्लभ होता । इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है । सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्हस्य पकड़ने मे इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है । विनय-शीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति मे बड़ा सहयोग दिया है । यह वृत्ति इनकी वचन से ही है । जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता हो पाई है । इनकी कार्य-क्षमता और कर्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है ।

मैंने अपने सघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियो के बल-वृत्ते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है । अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियो के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस वृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा ।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है ।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१

२५.००वा निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Preface

NĀYĀ DHAMMAKAHĀO

The title

The present Āgama is the sixth Anga of Dwādaśāṅgī. It has two Śrutaskandhas. The first is called as 'NĀYĀ' and the second as 'DHAMMAKAHĀO'. On combining both the Śrutaskandhas, the present Āgama has the title as 'NĀYĀDHAMMAKAHĀO'. 'NĀYĀ' (Jnāta) means examples and 'DHAMMAKAHĀO' means religious fables. The present Āgama has both of historical illustrations and imaginary fables.¹

In the Jayadhawalā the title of this Āgama is found as 'Nāhadhāmmakahā' (Nāhadharma-kathā). 'Nātha' means the Lord 'Nāhadhamma-kahā' i.e, the dharmakathā expounded by the Tīrthankara. In some Sanskrit works the title of this Āgama is given as 'Jnātrīdharmakathā'. Āchārya Akalanka too has given the title of this Āgama as 'Jnātadharmakathā'². Āchārya Malayagiri and Abhayadeva Sūri give the title of 'Jnātadharmakathā'. It is a treatise mainly containing illustrative religious stories. According to them, the first Śrutaskandha has illustrations and the second Śrutaskandha has religious stories. Both of them mention the lengthening of the word 'Jnāta'³.

The family name of lord Mahāvīra has been given as 'Jnāta' and 'Nātha' in the Śwetamber and Dīgamber literature respectively. On this basis, some scholars have tried to relate this Āgama with lord Mahāvīra⁴. They hold that 'Jnātadharmakathā' or 'Nātha-dharmakathā' means the 'Dharmakathā by lord Mahāvīra'. Weber says that the work having fables pertaining to the religion of Jnātrīwanśī Mahāvīra, is titled as 'NĀYĀDHAMMAKAHĀ'⁵. But, on the account found in the Samwāyāṅga and the Nandī, the meaning

1 Sāmawao, painnagasamawao, Sutra 94

2 Tatwartha Vartika, 1/20

3 (a) Nandivritti, pages 230-31

(b) Samawayanga Vritti, page 108.

4 Jain sahitya ka Pīthas, Purwa-Pithika, page 660

5 Stories from the Dharma of NAYA, I A, Vol 19, page 66

'Dharmakathā of Jnātrīwansī Mahāvīra' does not seem to be appropriate. It has been told there that in the 'Jnātadharmakathā', the cities and gardens etc of the 'Jnātas' (the persons cited) have been described¹ The title of the first Adhyayana of this Āgama is 'Ukkhittanāye' (Utkshiptajnāta). On this basis also, the word 'Nātha' seems to go with the meaning as an 'illustration' only.

The content

The spiritual elements such as non-voilence, palate contral, faith, restraint of senses etc. have been expounded in an excellent style through the illustrations and fables in the present Āgama Besides that of a plot, it has the elegance of description also. While going through the first Adhyayana, we have the reminiscense of the poetical prose-work such as the Kādambari. In the ninth Adhyayana, the description of the boat sinking in the sea, is very lively and horripilating In the twelfth Adhyayana, the process of purifying water reminds us of the modern method The changability of the Pudgala substance has been expounded by this illustration.

Along with the main illustrations and fables, some subsidiary fables are also found. In the eighth Adhyayana the fable of a well-frog has been recorded in an excellent style. Parivrājikā Chokha goes to Jitaśatru Jitaśatru enquires of her—You wander a lot. Have you ever seen a harem like that of mine? With a smile Chokha said—You are like a Kūpa-Mandūka.

Who is that Kūpa Mandūka ?

Chokha said—There was a frog in a well He was born and brought up there. He considered his well everything One day an ocean-frog came down in that well The well-frog said to him—Who are you ? He answered—I am a frog from the ocean I have came from there The well-frog asked him—How big is the ocean ? The ocean-frog said—It is very big The well-frog, drawing a boundry with his foot, asked him—Is the ocean as big as this ? The ocean-frog answered—Far more greater than this The well-frog had a jump, from the eastern to the western end of the well, and said—Is the ocean so big ? The ocean-frog answered—It is far more bigger than this too. The well-frog could not believe it as it had never seen any thing except the well².

1. (a) Samwao painnagasamawao, Sutra 94

(b) Nandi, Sutra 85.

2 Nayadhammakābhao, 8/154, pages 186-87.

In this way, from the view point of various fables, insertions, illustrations, descriptions, anecdotes and word-usages, this Āgama has a great value. A comparative study of it with that of the different fable-works found the world over may well give some new facts

UWĀSAGADASĀO

The title

The present Āgama is the seventh Anga of the Dwādaśāṅgī. It has the biographies of ten Upāsakas (lay devotees), therefore, it is called as 'Upāsagadasāo'. In the Śramanū order the laymen serving the Śramanas are called Śramanopāsakas or Upāsakas. Lord Mahāvira had large number of Upāsakas. It comprises of ten 'Adhyayanas' depicting the life of ten principal Upāsakas.

The Content

Lord Mahāvira has given twofold code of conduct, such as laws of conduct for Munis and laws of conduct for Upāsakas. Five Mahāvratas (great vows) were postulated for a Muni and twelve Vratas (vows) for a Upāsaka. Śramanopāsaka Anand was consecrated and initiated to his cult by him. The list of the Vratas is an excellent code of conduct pertaining to religious or ethical life. Even today, it has the same utility as it had 2500 years ago. As long as the weakness of human nature is there, its utility will always exist.

The code of conduct for Munis is found in many Āgamas but the code of conduct for laymen is found in this Āgama only. It has, therefore, its own place in the codes of conduct. The object of its composition is only to put forth the code of conduct for a layman. Incidentally, Niyatīwāda has also been discussed nicely with its arguments for and against. Incidents, proving the religious touch-stone for the Upāsakas, are also found. It also throws light on the fact as to how lord Mahāvira took care of the accomplishment of the Upāsakas, and encouraged them to higher spiritual life from time to time.

According to the Jayadhawalā the present Āgama narrates eleven-fold practices of the 'Upāsakas'. They are—Darśan, Vrat, Sāmayika, Pauṣadhopawā, Sacitta-Virati, Ratri-Bhojan-Virati, Brahmaçarya, Ārambha-Virati, Parigraha-virati, Anumāti-Virati, and Uddiṣṭa Virati¹. The Śrāwakas, beginning from

1, Kasyapahuda, part i, pages 129-30,

Ananda, had practised above said eleven Pratimās. The Vratas are practised indenpedently, and at the time of fulfilment of Pratimās also. These Vratās and Pratimās are the two religious codes for an Upāsaka. In the Samawāyānga and the Nandi Sūtra, Vratā and Pratimā both are mentioned. The Jayadhawalā gives an account of Pratimās only.

ANTAGADADASĀO

The title

The present Āgama is the eighth of the Dwādasāngī. The illustrious ones who put an end to the cycle of death and birth, have been narrated in it, and it has ten Adhyayanās. Hence the title 'Antagadadasāo'. The Samwāyānga tells us that it contained ten Adhyayanās and seven Vargas¹. The Nandi Sūtra says nothing about its Adhyayanās and only eight Vargas have been accounted for and in it². Sri Abhayadeva Sūri has tried to find consistency in these both. He tells us that the first Varga has ten Adhyayanās, therefore the Samawāyānga Sūtra mentions ten Adhyayanās and seven Vargas only. The Nandi Sūtra gives eight Vargas only with no mention of Adhyayanās³. But this consistency cannot be maintained to the end, because the Samawāyānga gives us ten Śiksha-kālas (Uddeśan kālas) of this Āgama and the Nandi Sūtra gives only eight. Sri Abhayadeva Sūri admits that he does not understand the purpose behind the difference in the number of the Uddeśan-kālas⁴. The Chūrnikār of the Nandisūtra, Sri Jinadas Mahattar and the Vrittikār, Śri Haribhadra Sūri also write that the present Āgama is given the title 'Antagadadasāo' as it has ten Adhyayanās in the first Varga⁵. The Chūrnikār takes the meaning of 'Daśā' as 'Awasthā' (condition) also⁶.

Three traditions are found to narrate the present Āgama. firstly, that of the samawāyānga, secondly, that of the Tatwārtha Vārtika, and thirdly, that of the Nandi Sūtra

-
1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 96
 2. Nandi Sutra, 88
 3. Samwayanga Vritti, page 112
 4. Samawayanga Vritti, page 112
 5. (a) Nandi with Churni, page 68
(b) Nandi with Vritti, page 83.
 6. Nandi with the Churni; page 68. Dasatti Awastha

According to the first tradition, the present Āgama has ten Adhyayanas. The Sthānānga Sūtra supports it. The Sthānānga mentions the ten Adhyayanas and their headings, such as Namī, Mātanga, Somīla, Ramagupta, Sudarśana, Jamālī, Bhagālī, Kīmkāṣa, Ālāwaka, Pāla, and the Ambaṣṭhaputtra¹ These headings are found in the Tatwārthavartika also with some variance, such as, Namī, Mātang, Somīla, Ramaguptā, Sudarśana, Yamalīka, Kambala, Pāla and Ambasthaputtra Samawayānga mentions ten adhyayanas without giving their names. The present Āgama gives an account of the Antakṛita Kewalis, in groups of ten contemporaries of each Tīrthankara.² The Jayadhawala, too, supports this statement of the Tatwārthavartika. In the Nandī-sūtra mention is found neither of the ten Adhyayanas nor of their headings. On this basis, it can be inferred that the Samawayānga and the Tatwārthavartika maintain the old tradition and the Nandī-sūtra gives the Āgama in the form found at present. There are ten Adhyayanas of the first Varga out of the eight Vargas found at present, but their headings altogether differ from the above-said headings, i.e., Gautama, Samudra, Sāgara, Gambhīra, Stanita, Acala Kāmpilya, Akṣetra, Prasenjit and Viṣṇu. In the 'Sthānāngavṛitti' Śrī Abhaya-deva Suri acknowledges it as a variant 'Vācānā'³. This shows that the 'Vācānā' of the 'Nandī' is different from the 'Vācānā' found in the 'Samawayānga'

The word 'Antagaḍa' has two Sanskrit forms—Antakṛita and Antakṛit. Both have the same sense but 'gāda' goes more with the Sanskrit version 'Kṛita' so far as morphology is concerned.

The Content

This Āgama gives an excellent account of Vāsudeva Kṛiṣṇa and his family. The Dīkṣā (initiation) and accomplishment of Gajasukamāla, the younger brother of Vāsudeva Kṛiṣṇa has been horripilatingly narrated.

In the sixth Varga, is found an account of the incident occurred with Arjuna, the gardener. An accident turned him to be a murderer and the other association made him a saint. It may not be admitted that a man changes with the circumstances and atmosphere, but, even then, it may be accepted that they are the cause of the rise and fall of a man.

-
1. Tatwārthavartika 1/20
 2. Tatwārthavartika 1/20
 3. Sīhany Vṛitti

By the Adhyayana of Atimuktaka Muni, the value of spiritual accomplishment can be well understood. Fasting alone is seen in this Āgama through out. The narrations of meditations are scanty. Lord Mahavīra had laid stress upon both—the fast and the meditation. In the classification of penance, fast is the outer penance and meditation is the inner one. Lord Mahavira in his penance-period, had observed both, fast and meditation. It is worth investigating why this Āgama lays so much stress on fasting only. This Āgama, a remanent in the succession of oblivion and reproduction, is valuable and worthy of research work from many points of view.

ANUTTAROWAWĀIYA-DASĀO

The title

This Āgama is the ninth Anga of the Dwādaśaṅgī. As it contains ten Adhyayanās regarding the Munis born in the Anuttara Swarga class, its title is given as 'Anuttarowawāiya-Dasāo'. The Nandi Sūtra mentions only three Vargas¹. The Sthānānga quotes only ten Adhyayanās². According to the Rajavārttika groups of ten Anuttaropapātika Munis, contemporaries of each Tīrthanker, have been narrated in it³. The Samawāyānga mentions the ten Adhyayanās and the three Vargas too⁴. But the headings of the ten Adhyayanās have not been given in it. According to the Sthānānga and the Tattwārthavārttika they read as, Rīśidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Swasthan, Śālībhadrā, Ānanda, Tetali, Dasārnabhadrā and Atimukta⁵, and as Rīśidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Nandanandana, Śātībhadrā, Abhaya, Wāriṣena, and Cīlapputra respectively. The above said Munis were the contemporaries of Lord Mahāvīra, such is the opinion of the author of the Tattwārthavārttika⁶. In the Dhawalā we find Kārtikeya instead of Kārttika and Ānand instead of Nanda⁷.

The present form of the Āgama is different from the 'Vaśna' of the Sthānānga and the Samawāyānga. Abhayadeva Sūrī holds that it is a different 'Vaśna'. In the form of the Āgama, that is available, three Adhyayanās, such

1 Nandi, Sutra, 89

2 Thanam, 10/114

3 Tattawarth varttikas 1/20, Kasayapahuda I, page 130

4 Samawao, painnagasamawao, Sutra 97.

5 Thanam 10/114

6 Tattwārthvarttika 1/20

7. Satkhundagama 1/1/2

as Dhanya, Sunakshtra and Rīsīdasa, are found. In the first Varga, only two Adhyayanas, named as Wārisṛena and Abhaya, are seen.

The contents

This Āgama beautifully narrates the luxury and ascetic lives of many princes. The narration of the ascetic life of Dhanya Anagāra and his body emaciated due to the penance is noteworthy both from the literary and spiritual viewpoints.

PANHĀWĀGARANĀIN

The title

The present Āgama is the tenth Anga of the Dwādaśāṅgī. Its title has been mentioned as 'Panhāwāgaranāin' in the Samawāyāṅga Sūtra and the Nandī¹. Its name is found as 'Panhāwāgaradasāo'² in the Sthānāṅga and the same reads as 'Panhāwāgaranadasāsu' in the Samawāyāṅga. It is, therefore, inferred that the title mentioned in the Sthānāṅga is also in concurrence with the Samawāyāṅga. The Jayadhawalā and the Tattwārthavarttika note it as Panhāwāyarana or Praśna-Vyākaranā³.

The Contents

Opinions differ regarding the contents of the present Āgama. The Sthānāṅga cites its ten Adhyayanas, such as, Upamā, Samkhyā, Rīṣibhāṣita, Ācāryabhāṣitā, Mahāvira-bhāṣitā, Ksaumaka-Praśna, Komala-Praśna, Ādarśa-Praśna, Angustha-Praśna and Bāhu-Praśna⁴. The headings of the Adhyayanas indicate well the contents they have.

According to the Samawāyāṅga and the Nandī, the present Āgama has various types of queries, sciences (vidyās) and the dialogues of the Devas dealt with⁵.

The Nandī notes fortyfive Adhyayanas of it, which do not accord with the Sthānāṅga. The Samawāyāṅga makes no mention of its Adhyayanas.

-
- 1 (a) Samawao pānnagasamawao, Sutra 98
(b) Nandī, Sutra 90.
 - 2 Thanam, 10/110
 3. (a) Kasayapahuda pt I, page 131.
(b) Tatwārthavarttika 1/20
 - 4 Thanam 10/116
 - 5 (a) Samawao, pānnagasamawao, Sutra 98
(b) Nandī, Sutra, 90.

But, from its 'Panhāwāgaranadasāsu' paragraph, it may be inferred that the Samawāyānga accepts the traditional ten Adhyayanās of the present Āgama. The said paragraph tells us that Pratyeka Buddhābhāsita, Ācārya-bhāsita, Vīramaharsī-Bhāsita, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praśna, Bāhu-Praśna, Asī-Praśna, Mani-Praśna, Kṣauma-Praśna, Āditya-Praśna etc have been dealt with in the 'Praśna-Vyākaraṇa-Dasā'. These headings can well be compared with those of ten Adhyayanās mentioned in the Sthānānga. Though the Uddesana-Kālas have been mentioned as fortyfive, the exact number of the Adhyayanās cannot be decided definitely. The teaching of the Adhyayana on a deep topic could be spread over for many days.

According to the Tattwārthavārttika many queries have been expounded in this Āgama, depending on cause and inference by 'Ākṣepa' and 'Vikṣepa'. Also the Laukika (secular) and Vedic Arthas have been ascertained in it ¹

The Jayadhawalā notes that this Āgama narrates the Nasta, Muṣṭi, Ācintā, Lābha, Alābha, Sukha, Dukkha, Jīvan and Marana with the help of the four kinds of fables, i.e. Ākṣepanī, Prakṣepanī, Samvejanī, and Nirvedanī, as well as purporting a query ²

The contents of the Āgama, as mentioned in the said works, is not found today. What is found covers the five Āśrawas (Hinsā, Asatya, Ācārya, Ābrahmaçārya and Paṇigraha) and the five Samwaras (Ahimsa, Satya, Acaurya, Brhmacārya, and Aparigraha) only. The Nandī does not make mention of it at all. The Samawāyānga mentions the Adhyayanās beginning from Ācārya-Bhāsita, while the Jayadhawala gives an account of the four kinds of fables beginning from Ākṣepanī. It may be inferred that the known contents of the Āgama formerly were in the form of the queries and subsequently, the learning of query etc being lost, the remanent part formed the present Āgama. It is also likely that the old form of the present Āgama being lost, some Ācārya composed it a fresh. The 'Vacna' of this Āgama given in the Nandī, does not narrate the Āśrawas and the Samwaras, but the Ācūrnī of the Nandī does it ³. Likely it is that the Ācūrnīkāra did it on the basis of the present form of the Āgama.

1 Tattwārthavārttika 1/20

2 Kaśyapahuda part I, page 131

3 Nandī Sūtra with the Ācūrnī on page 12

VIVĀGASUYAM

The title

The present Āgama is the 11th Anga of the Dwādaśāṅgī. The Vipāka (fruit) of the Sukṛita and Duṣkṛita deeds has been dealt with in it, therefore the title 'Vivāgasuyam'¹ The Sthānāṅga gives its title as 'Kāmma Vivāgadasā'²

The Contents

This Āgama has two divisions, i.e. the Dukha Vipāka and the Sukha Vipāka. The first division contains the topics on the lives of the individuals doing bad deeds. On going through the said contents, it appears that, in every age, there are some individuals who commit horrible crimes on account of their cruel mentality. It is also gathered how the criminal deeds affect their physical and mental states. The second division has the life-contents of those individuals who perform good deeds. As the committant of cruel deeds are found in every age, so are the persons having the tranquil mentality. Conjunction of goodness and badness is not without cause.

Conclusion

The Sthānāṅga Sūtra enumerates ten Adhyayanas of the Karma-Vipāka such as, Mrigāputra, Gotrāsa, Anda, Sakata, Māhan, Nandīsenā, Śaurika, Udumbara, Sahasoddāha-Āmaraka, and Kumar Licchavī. These headings have been taken from some other 'Vācna'.

The account of the Anga-Sūtras and the peculiar form they are presently found in are not fully harmonic. On this basis, it may be inferred that the obtained form of the Āgama Sūtras is not ancient only, but is a mixture of the editions of old and new, both. This will form an important subject of investigation as to how much of the present form of the Anga-Sūtra is ancient and how much modern, as well as who of the Ācāryas composed it and when. The language, the subject-matter and the style of ascertainment will surely form the basis of investigation. This is of course, highly toilsome, but not impossible.

-
1. (a) Samawao, paṇṇagasamawao, Sutra 99
 (b) Nandī Sutra 91.
 (c) Tattawarthavarttika 1/20
 (d) Kasayapahuda, Pt I, page 132,
 2. Thanam 10/110

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni. I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed.

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali. Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment. Otherwise, it would not have been an easy job. On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end. On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions. His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality. The above qualities are seen in him since his early age. Right from the time when he joined the Sangha I have been an observer of these qualities of his, which have so developed. His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction.

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Āgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centenary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

Anuvrata Vihar

Delhi

Āchārya Tulasi

विसयाणुक्कम

नायाधम्मकहाओ

पढमं अज्झयणं

सू० १-२१३

पृ० १-७३

उक्खेव-पद १, मेहस्स नगरपरिवारादि-वण्णग-पद ११, धारिणीए सुमिणदसण-पद १८, सेणियस्स सुमिणनिवेदण-पद १९, सेणियस्स सुमिणमहिम-निदसण-पद २०, धारिणीए सुमिणजागरिया-पद २१, सुमिणपाठग-निमतण-पद २२, सेणियस्स सुमिणफल-पुच्छा-पद २७, सुमिणफलकहण-पद २९, सुमिणपाठम-विसज्जण-पद ३०, सेणियस्स सुमिणपससा-पद ३१, धारिणीए दोहल-पद ३२, धारिणीए चिंता-पद ३४, पडिचारियाण चिंताकारण-पुच्छा-पद ५३, पडिचारियाण सेणियस्स निवेदण-पद ३९, सेणियस्स चिंताकारण-पुच्छा-पद ४०, धारिणीए चिंताकारणनिवेदण-पद ४५, सेणियस्स आसासण-पद ४६, अभयकुमारस्स सेणिय पइ चिंताकारणपुच्छा-पद ४७, सेणियस्स चिंताकारणनिवेदण-पद ४९, अभयस्स आसासण-पद ५०, अभयस्स देवाराहण-पद ५२, देवागमण-पद ५४, देवस्स अकालमेह-विउव्वण-पद ५९, धारिणीए दोहद-पूरण-पद ६०, अभएण देवस्स पडिविसज्जण-पद ७०, धारिणीए गव्वभरिया-पद ७२, मेहस्स जम्म-वद्धावण-पद ७३, मेहस्स जम्मस्सवकरण-पद ७६, मेहस्स नामादिसक्कार (सक्कार) करण-पद ८१, मेहस्स लालणपालण-पद ८२, मेहस्स कलागहण-पद ८४, मेहस्स पाणिगहण-पद ८९, पीइदाण-पद ९१, महावीरसमवसरण-पद ९४, मेहस्स जिन्नासा-पद ९५, कच्चुइज्जपुरिसस्स निवेदण-पद ९७, मेहस्स भगवओ समीवे गमण-पद ९८, धम्मदेसणा-पद १००, मेहस्स पव्वज्जासकप्प-पद १०१, मेहस्स अम्मापिऊण निवेदण-पद १०२, धारिणीए सोगाकुलदसा-पद १०५, धारिणीए मेहस्स य परिसवाद-पद १०६, मेहस्स एगदिवसरज्ज-पद ११४, मेहस्स निक्खमण-पाओग-उव्वरण-पद १२१, कासवेण मेहस्स अगकेसकप्पण-पद १२४, मेहस्स अलकरण-पद १२८, मेहस्स अभिनिक्खमणमहुस्सव-पद १२९, सिस्सभिक्खादाण-पद १४५, मेहस्स पव्वज्जागहण-पद १४९, मेहस्स मणो-सकिलेस-पद १५२, मेहस्स सवोघ-पद १५५, भगवया मुभेरुप्पम-भवनिरुव्वण-पद १५६, भगवया मेरुप्पम-भवनिरुव्वण-पद १६३, मेरुप्पमेण मडलनिम्माण-पद १७४, दव्वग्गिभीतसावयाण मडलपवेस-पद १७८, मेरुधमस्स पादुक्खेव-पदं-१८०, तीय सदब्भे वट्टमाण-तितिवखोवदेस-पद १८८, मेहस्स जाइसरण-पद १९०, मेहस्स समप्पणपुव्व पुणो पव्वज्जा-पद १९१, मेहस्स निगगठचरिया-पद १९४, मेहस्स

भिक्षुपडिमा-पद १६६, मेहस्स गुणरयणसवच्छर-पद १६६, मेहस्स सरीरदसा-पद २०२, मेहस्स विपुलपव्वए अणसण-पद २०३, मेहस्स समाहिमरण-पद २०८, थरेहि मेहस्स आयाणभडसमप्पण-पद २०९, गोयमपुच्छाए भगवओ उत्तर-पद २१०, निक्खेव-पद २१३ ।

द्वीयं अज्झयणं

सू० १-७७

पृ० ७४—६२

उक्खेव-पद १, घणसत्थवाह-पद ७, विजयतक्कर-पद ११, भद्दाए सत्ताणमणोरह-पद १२, भद्दाए देवदिन्न-पुत्तपसव-पद १६, देवदिन्नस्स कीडा-पद २५, देवदिन्नस्स अपहार-पद २८, देवदिन्नस्स गवेसणा-पद २९, विजयतक्करस्स निग्गह-पद ३३, देवदिन्नस्स नीहरण-पद ३४, घणस्स निग्गह-पद ३५, घणस्स घराओ आहाराणयण-पद ३७, विजयतक्करेण सविभाग-मग्गण-पद ३९, घणस्स तन्निसेध-पद ४०, आवाधितस्स घणस्स विजयतक्करावेक्खा-पद ४३, विजयतक्करेण तन्निसेध-पद ४५, धणेण पुणो कथिते विजएण सविभागमग्गण-पद ४७, घणेण विजयस्स सविभागदाण-पद ५२, पथगस्स भद्दाए माटोव तन्निवेदण-पद ५५, भद्दाए कोव-पद ५७, घणस्स चारमुत्ति-पद ५८, घणस्स सम्माण-पद ५९, भद्दाए कोवोव-समपुव्व सम्माण-पद ६१, विजय-णायस्स निगमण-पद ६७, घण-णायस्स निगमण-पद ६९, निक्खेव-पद ७७ ।

तच्चं अज्झयणं

सू० १-३५

पृ० ६३—१०२

उक्खेव-पद १, मयूरीअड-पद ५, सत्थवाहदारग-पद ६, देवदत्ता गणिया-पद ८, सत्थवाह-दारगाण उज्जाणकीडा-पद ९, सत्थवाहदारगेहि मयूरी अडगाणयण-पद १७, सागरदत्त-पुत्तस्स सदेहेण अडयविणास-पद २१, जिणदत्तपुत्तस्स सद्दाए मयूर-लद्धि-पद २५, निक्खेव-पद ३५ ।

चउत्थं अज्झयणं

सू० १-२३

पृ० १०३—१०८

उक्खेव-पद १, पावसियालग-पद ६, कुम्भ-पद ७, पावसियालगाण आहारगवेसण-पद ८, कुम्माण साहरण-पद १०, अगुत्तकुम्मस्स मच्चु-पद १३, गुत्तकुम्मस्स सोक्ख-पद १६, निक्खेव-पद २३ ।

पंचमं अज्झयणं

सू० १-१३०

पृ० १०९—१३६

उक्खेव-पद १, थावच्चापुत्त-पद ७, अरिट्ठेनेमि-समवसरण-पद १०, कण्हस्स पज्जुवासणा-पद १२, थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जासकप्प-पद १८, कण्हस्स थावच्चापुत्तस्स यपरिसवाद-पद २२, कण्हस्स जोगक्खेम-घोसणा-पद २६, थावच्चापुत्तस्स अभिनिक्खमण-पद २७, सिस्सभिक्ष्वा-दाण-पद ३०, थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जागहण-पद ३४, थावच्चापुत्तस्स अणगारचरिया-पद ३५, थावच्चापुत्तस्स जणवयविहार-पद ३६, सेलगराय-पद ४२, सेलगस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद

४५, सेलगस्स समणोवासयचरिया-पद ४७, सुदसणसेट्ठि-पद ५१, सुयपरिव्वायग-पद ५२, सोयमूलयधम्म-पद ५५, सुदसणस्स सोयमूलय-धम्मपडिवत्ति-पद ५६, थावच्चापुत्तस्स सुदसणेण मवाद-पद ५८, सुदसणस्स विणयमूलय-धम्मपडिवत्ति-पद ६२, सुएण सुदसणस्स पडिसवोघ-पयत्त-पद ६५, सुयस्स थावच्चापुत्तेण सवाद-पद ७०, सरिसवयाण भक्खाभक्ख-पद ७३, कुलत्थाण भक्खाभक्ख-पद, ७४, मासाण भक्खाभक्ख-पद ७५, अत्थित्त-पण्ह-पद ७६, सुयस्स परिव्वायगसहस्सेण पव्वज्जा-पद ७७, सुयस्स जणवयविहार-पद ८१, थावच्चापुत्तस्स परिनिव्वाण-पद ८३, सेलगस्स अभिनिक्खमणामिप्पाय-पद ८५, महुयस्स रायाभिसेय-पद ९२, सेलयस्स निक्खमणाभिसेय-पद ९६, सेलगस्स पव्वज्जा-पद ९९, सेलगस्स अणगारचरिया-पद १००, सुयस्स परिनिव्वाण-पद १०२, सेलगस्स रोगातक-पद १०६, सेलगस्स तिगिच्छा-पद ११०, सेलगस्स पमत्तविहार-पद ११७, साहूहि सेलगस्स परिच्चाय-पद ११८, पथगस्स चाउम्मासिय-खामणा-पद ११९, सेलगस्स कोव-पद १२२, सेलगस्स अब्भुज्जयविहार-पद १२४, निक्खेव-पद १३० ।

छट्ठं अज्झयणं

सू० १-५

पृ० १४०-१४२

उक्खेव-पद १, गरुयत्त-लहुयत्त-पद ४, निक्खेव-पद ५

सत्तमं अज्झयणं

सू० १-४४

पृ० १४३-१५४

उक्खेव-पद १, वणसत्थवाह-पद ३, घणस्स परिक्खापयोग-पद ६ परिक्खापरिणाम-पद २२, निक्खेव-पद ४४ ।

अट्ठमं अज्झयणं

सू० १-२३६

पृ० १५५-२०३

उक्खेव-पद १, वल-राय-पद २, महव्वलराय-पद ९, महव्वलादीण पव्वज्जा-पद १६, महव्वलस्स तवविसय-माया-पद १८, महव्वलादीण विविहतवचरण-पद १९, समाहिमरण-पद २६, पच्चायाति-पद २७, मल्लिस्स मोहणघर-निम्माण-पद ४०, पडिवुद्धिराय-पद ४३, चदच्छाय-राय-पद ६४, रुप्पि-राय-पद ९०, सख-राय-पद १०१, अदीणसत्तु-राय-पद ११४, जियसत्तु-राय-पद १३८, दूयाण सदेम-निवेदण-पद १५७, कुभएण दूयाण असक्कार-पद १५९, जियसत्तुपामोक्खाण कुभएण जुज्झ-पद १६१, मल्लीए चिताहेउ-पुच्छा-पद १६९, कुभगस्स चिताहेउ-कहण-पद १७२, मल्लीए उवायनिरुवण-पद १७३, मल्लीए जियसत्तु-पामोक्खाण सवोह-पद १७५, जियसत्तुपामोक्खाण जाइसरण-पद १८१, मल्लीए पव्वज्जा-पद १८२, मल्लिस्स केवलणाण-पद २२५, जियसत्तुपामोक्खाण पव्वज्जा-पद २२७, मल्लिस्स सिस्ससपदा-पद २३० मल्लिस्स निव्वाण-पद २३५, निक्खेव-पद ३३६ ।

नवमं अज्झयणं

सू० १-६४

पृ० २०४-२२०

उक्खेव-पद १, मागदिय-दारगाण समुद्दजत्ता-पद ४, नावा भग-पद ९, रयणदीव-पद ११, रयणदीवदेवया-पद १६, रयणदीवदेवयाए मागदिय-पुत्ताण निहेस-पद १९, मागदियपुत्ताण

वणमडगमण-पद २१, सेलगजक्व-पद २६, रयणदीवदेवया-उवसग्ग-पद ३७, जिणरक्खि-
यविवत्ति-पद ४१, जिणपालियस्स चपागमण-पद ४५, निक्खेव-पद ५४ । •

दसमं अज्झयणं

सू० १-६

पृ० २२१-२२३

उक्खेव-पद १, परिहायमाण-पद २, परिवड्ढमाण-पद ४, निक्खेव-पद ६ । •

एक्कारसमं अज्झयणं

सू० १-१०

पृ० २२४-२२६

उक्खेव-पद १, देसविराहय-पद २, देसाराहय-पद ४, सव्वविराहय-पद ६, सव्वाराहय-पद
निक्खेव-पद १० । •

वारसमं अज्झयणं

सू० १८४६

पृ० २२७-२३६

उक्खेव-पद १, फरिहोदग-पद ३, जियसत्तुणा पाणभोयणपससा-पद ४, सुवुद्धिस्स उवेहा-पदं,
६, जियसत्तुणा फरिहोदगस्स गरहा-पद ११, सुवुद्धिस्स उवेहा-पद १५, जियसत्तुस्स विरोध-
पद १८, सुवुद्धिणा जलसोधण-पद १९, सुवुद्धिणा जलपेसण-पद २०, जियसत्तुणा उदगर-
यणपससा-पद २१, जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा-पद २४, सुवुद्धिस्स उत्तर-पद २७,
जियसत्तुणा जलसोधण-पद ३०, जियसत्तुस्स जिण्णासा-पद ३१, सुवुद्धिस्स उत्तर-पद ३२,
जियसत्तुस्स समणोवासयत्त-पद ३४, पव्वज्जा-पद ३८, निक्खेव-पदं ४९ । •

तेरमर्मा अज्झयणं

सू० १-४५

पृ० २३७-२४७

उक्खेव-पद १, गोयमस्स पुच्छा-पद ४, भगवओ उत्तरे ददुदुरदेवस्स नदभव-पद ७, नदस्स
धम्मपडिवत्ति-पद ९, मिच्छत्तपडिवत्ति-पद १३, पोक्खरिणी-निम्माण-पद १५, वणसड-पद
१८, चित्तसभा-पद २०, महाणमसाला-पद २१, तिगिच्छियसाला-पद २२, अलकारिय-
सभा-पद २३, नदम्म पससा-पद २४, नदस्स रोगुप्पत्ति-पद २८, तिगिच्छा-पद २९,
भगवओ उत्तरे ददुदुरदेवस्स ददुदुरभव-पद ३२, ददुदुरस्स जाइसरण-पद ३५, भगवओ
रायगिहे समवसरण-पद ३७, ददुदुरस्स समवसरण पइ गमण-पद ३९, ददुदुरस्स मच्चु-
पद ४१, निक्खेव-पद ४५ । •

चोद्धसमं अज्झयणं

सू० १-८६

पृ० २४८-२६५

उक्खेव-पद १, पोट्टिलाए कीडा-पद ८, तेयलिपुत्तस्स आसत्ति-पद ९, पोट्टिलाए वरण-पद १२
पोट्टिलाए विवाह-पद १८, कणगरहस्त रज्जासत्ति-पद २१, पडमावईए अमच्चेणमतणा-
पद २२, अवच्च परिवत्तण-पद २४, दारियाए मयकिच्च-पद ३१, अमच्चपुत्तस्स उस्सव-पद
३३, पोट्टिलाए अप्पियत्त-पद ३६, पोट्टिलाए दाणसाला-पद ३८, अज्जा-सघाडगस्स
भिक्खायारियागमण-पदं ४०, पोट्टिलाए अमच्चपसायोवाय-पुच्छा-पद ४३, अज्जा-सघाड-
गम्म उत्तर-पदं ४४, पोट्टिलाए सावया-पद ४५, पोट्टिलाए पव्वज्जा-पद ५०, कणगरहस्त

मच्चु-पद ५५, कणगज्भयन्स रायाभिसेय-पद ५७, तेयलिपुत्तस्स सम्माण-पद ६०, पोट्टिनदेवेण तेयलिपुत्तस्स संबोह-पद ६२, तेयलिपुत्तस्स मरणचेट्ठा-पद ७२, तेयलिपुत्तरस विम्हयकरण-पद ७७, पोट्टिलदेवस्स सवाद-पदं ७८, तेयलिपुत्तस्स जाईसरणपुव्व पव्वज्जा-पद ८१, केवलणाण-पदं ८३, कणगज्भयन्स मावगवम्म-पद ८५, तेयलिपुत्तस्स सिद्धि-पदं ८८, निक्खेव-पद ८९ ।

पण्णरसमं अज्भयणं

सू० १-२२

पृ० २६६-१७१

उक्खेव-पद १, घणस्स घोषणा पद ६, घणस्स निहेस-पद ११, निहेसपालणस्स निगमण-पद १३, निहेसाऽपालणम्स निगमण-पदं १५, घणस्स अहिच्छत्ताऽगमण-पद १७, घणस्स पव्वज्जा-पद २०, निक्खेव-पद २२ ।

सोलसमं अज्भयणं

सू० १-३२७

पृ० २७२-३३५

उक्खेव पद १, नागसिरी-कहाणग-पद ४, नागसिरीए तित्तालाउय-उवक्खण-पद ६, घम्म-रुइस्स तित्तालाउय-दाण-पद ११, तित्तालाउय-परिठ्ठावण-पद १६, अहिंसट्ठु तित्तालाउय-भक्खण-पद १९, घम्मरुइस्स समाहिमरण-पद, २०, साहूहि घम्मरुइस्स गवेसण-पद २२, साहूहि घम्मरुइस्स समाहिमरण-निवेदण-पद २३, घम्मरुइस्स सइसभा-पद २४, नागसिरीए गरिहापद २५, नागसिरीए गिहनिव्वासण-पद २८, नागसिरीए भवभमण-पद ३०, सूमालिया-कहाणगपद ३२, सूमालियाए सागरेण सद्धि विवाह-पद ३७, सागरस्स पलायण-पद ५२, सूमालियाए चित्ता-पद ६२, सागरदत्तेण जिणदत्तस्स उवालभ-पद ६७, सागरस्स पुणोगमण-व्वुदास-पद ६८, सूमालियाए दमणेण सद्धि पुणव्विवाह-पद ७०, दमगस्स पलायण-पद ८०, सूमालियाए पुणोचित्ता-पद ८७, सूमालियाए दाणसाला-पद ९२, अज्जा-सघाडगम्स भिक्खारियागमण-पद ९४, सूमालियाए सागरपसायोवाय-पुच्छा-पद ९७, अज्जा-सघाडगम्स उत्तर-पद ९८, सूमालियाए साविया-पद-९९, सूमालियाए पव्वज्जा-पद १०४, सूमालियाए आतावणा-पद १०६, सूमालियाए नियाण-पद १०९, सूमालियाए वाउमियत्त-पद ११४, सूमायालिए पुढोविहार-पद ११८, दोवई-कहाणग-पद, १२०, दोवईए सयवर-सकप्प-पद, १३१, वारवईए दूयपेसण- पद १३२, कण्हस्स पत्याण-पद १३६, हत्थिणाउरे दूयपेसण-पद १४२, दूयपेसण-पद १४५, रायसहस्साण पत्याण-पद १४६, दुवयस्स आतित्थ-पद १४७, दोवईए सयवर-पद १५३, दोवईए पडव-वरण-पद १६४, पाणिग्गहण-पद १६७, पडुरायस्स निमतण-पद १७०, पडुरायस्स आतित्थ-पद १७२, कल्लाणकार-पद १८१, नारदस्स आगमण-पद १८४, नारदस्स अवरकका-गमण-पद १९१, दोवईए साहरण-पद २०१, दोवईए चित्ता-पद २०७, पडमनाभस्स आसासण-पद २०८, दोवईए गवेसणा-पद २१२, दोवईए उवलद्धि-पद २२६, सपडवस्स कण्हस्स पयाण-पद २३३, कण्हस्स देवाराघण-पद २३७, कण्हस्स मग्गजायणा-पद २३९, कण्हेण दूयपेसण-पद, २४३, पडमनाभेण दूयस्स अवमाण-पद २४५, दूयस्स पुणो आगमण-पदं २४६, पडमनाभस्स पडवेहि जुद्ध-पद २४७, पडवाण पराजय-पद २५२,

कण्हेण पराजय-हेउ-कहणपुव्व जुज्झ-पद २५४, पउमनाभस्स पलायण-पद २६०, कण्हस्स नरसिहरूव-पद २६१ पउमनाभस्स सरण-पद २६३, सदोवई-पडवरस कण्हस्स पच्चावट्टण-पद २६६, वामुदेव-जुयलस्स सखसट्ठेण मिलण-पद २६८, कविलेण पउमनाभस्स निव्वासण-पद २७८, अपरिक्खणीयपरिक्खा-पद २८१, कण्हेण पडवाण निव्वासण-पद २८६, पडुमहुरा-निव्सेण-पद ३०३, पडुसेण जम्म-पद ३०४, पडवाण दोवईए य पव्वज्जा-पद ३१०, अरिट्टेनेमिस्स निव्वाण-पद ३१८, पडवाण निव्वाण-पद ३२३, दोवईए देवत्त-पद ३२५, निक्खेव-पद ३२७ ।

सत्तरसमं अज्झयण

सू० १-३७

पृ० ३३६-३४६

उक्खेव-पद १, कालियदीव-जत्ता-पद ५, कालियदीवे आस-पेच्चण-पद १४, सजत्तियाण पुणरागमण-पद १६, आसाण आणयण-पद १७, अमुच्छिय-आसाण सायत्त-विहार-पद २४, निगमण-पद २५, मुच्छिय-आसाण परायत्त-पद २६, निगमण-पद ३६ ।

अट्ठारसमं अज्झयणं

सू० १-६२

पृ० ३४७-३५८

उक्खेव-पद १, चिलाय-दासचेडस्स विग्गह-पद ६, चिलायस्स गिहाओ निक्कासण-पद १०, चिलायस्स दुव्वसण-पवत्ति-पद १६, चोरपल्ली-पदं १८, चिलायस्स चोरपल्ली-गमण-पद २३, विजयस्स मच्चु-पद २६, चिलायस्स चोरसेणावइत्त-पद २८, चिलायस्स घणस्स गिहे चोरिय-पद ३३, नगरगुत्तिएहि चोरनिग्गह-पद ३६, चिलायस्स चोरपल्लीतो पलायण-पद ४४, निगमण-पद ४८, घणस्स ससुमाकए कदण-पद ४९, घणेण अडवि-लघणट्ट सुया-मससोणियाहार-पद ५१, निगमण-पद ६० ।

एगूणवीसइमं अज्झयणं

सू० १-४६

पृ० ३५९-३६७

उक्खेव-पद १, कडरीयस्स पव्वज्जा-पद ८, कडरीयस्स वेयणा-पद २०, कडरीयस्स तिगिच्छा-पद २२, कडरीयस्स पमत्त-विहार-पद २७, पुडरीएण पडिवोह-पद २९, कडरी-यस्स पव्वज्जा-परिच्चाय-पद ३२, पुडरीयस्स पव्वज्जा-पद ३८, कडरीयस्स मच्चु-पद ३९, निगमण-पद ४२, पुडरीयस्स आराहणा-पद ४३, निगमण-पद ४७, निक्खेव-पद ४८,

बीओ सुयक्खंधो

पढमो वगो

१-५ अज्झयणाणि

सू० १-६३

पृ० ३६८-३८०

उक्खेव-पद १, कालीदेवी-पद १०, कालीए भगवओ वदण-पदं ११, गोयमस्स पसिण-पद १३, भगवओ उत्तरे काली-पद १५, कालीए पव्वज्जा-पद १९, कालीए वाउसियत्त-पद ३४, कालीए पुढो विहार-पद ३८, कालीए मच्चु-पद ३९, निक्खेव-पद ४५ । २-५ अज्झयणाणि

उवासगदसाओ

पढम अज्भयणं

सू० १-८६

पृ० ३६५-४२०

उक्खेव-पद १, आणदगाहावइ-पद ८, महावीर-समवसरण-पद १७, आणदस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद २३, अतियार-पद ३१, आणद-अभिग्गह-पद ४५, सिवणदाए वदणठु-गमण-पद ४६, सिवणदाए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद ५१, गोयम-पुच्छा-पद ५३, भगवओ जणवय-विहार-पद ५४, आणदस्स समणोवासग-चरिया-पद ५५, सिवणदाए समणोवासिय-चरिया-पद, ५६, आणदस्स घम्मजागरिया-पद ५७, आणदस्स उवासगपडिगा-पडिवत्ति-पद ६१, आणदस्स अणसण-पद ६५, आणदस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पद ६६, गोयमस्स आगमण-पद ६७, आणद-गोयम-सवाद-पद ७६, भगवओ उत्तर-पद ८१, गोयमस्स खामणा-पद ८२, भगवओ जणवयविहार-पद ८३, आणदस्स समाहिमरण-पद ८४, निक्खेव-पद ८६ ।

वीयं अज्भयणं

सू० १-५७

पृ० ४२१-४३६

उक्खेव-पद १, कामदेवगाहावइ-पद २, महावीर-समवसरण-पद ७, कामदेवस्य गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद १३, भगवओ जणवयविहार-पद १५, कामदेवस्य समणोवासयग-चरिया-पद १६, भद्दाए समणोवासिय-चरिया-पद १७, कामदेवस्स घम्मजागरिया-पद १८, काम-देवस्स पिसायरूव-कय-उवसग्ग-पद २०, कामदेवस्स हत्थिरूव-कय-उवसग्ग-पद २८, कामदेवस्स सप्परूव-कय-उवसग्ग-पद ३४, देवरूव-विउव्वण-पद ४०, कामदेवस्स पडिमा-पारण-पाद ४१, कामदेवस्स भगवओ पज्जुवासणा-पद ४२, भगवया कामदेवस्स उवसग्ग-वागरण-पद ४५, भगवया कामदेवस्स पससा-पद ४६, कामदेवस्स पडिगमण-पद ४८, भग-वओ जणवयविहार-पद ४९, कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पद ५०, कामदेवस्स अणसग्ग-पद ५४, कामदेवस्स समाहिमरण-पद ५५, निक्खेव-पद ५७ ।

तइयं अज्भयणं

सू० १-५३

पृ० ४४०-४५३

उक्खेव-पद १, चुलणीपियगाहावइ-पद २, महावीर-समवसरण-पद ७ चुलणीपियस्स गिहि-धम्म-पडिवत्ति-पद १३, भगवओ जणवयविहार-पद १५, चुलणीपियस्स समणोवासग-चरिया-पद १६, सामाए समणोवासिय-चरिया-पद १७, चुलणीपियस्स घम्मजागरिया-पद १८, चुलणीपियस्स देव-कय-उवसग्ग-पद २०, °जेठुपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणी-यसपुत्त ३३, °भद्दासत्थवाही ३६, चुलणीपियस्स कोलाहल-पद ४२, भद्दाए पसिण-पद ४३, चुलणीपियस्स उत्तर-पद ४४, पायच्छित्त-पद ४५, चुलणीपियस्स उवासगपडिमा-पद ४७, चुलणीपियस्स अणसण-पद ५१, चुलणीपियस्स समाहिमरण-पद ५२, निक्खेव-पद ५३ ।

चउत्थं अज्भयणं

सू० १-५३

पृ० ४५४-४६६

उक्खेव-पद १, सुरादेवगाहावइ-पद २, महावीर-समवसरण-पद ७, सुरादेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद १३, भगवओ जणवयविहार-पद १५, सुरादेवस्स समणोवासग-चरिया-पद १६,

धन्नाए समणोवासिय-चरिया-पद १७, सुरादेवस्स धम्मजागरिया-पद १८, सुरादेवस्स देव-
कय-उवसग्ग-पद २०, °जेठुपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त ३३, °सोलस-
रोगायक ३६, सुरादेवस्स कोलाहल-पद ४२, धन्नाए पसिण-पद ४३, सुरादेवस्स उत्तर-पद
४४, पायच्छित्त-पद ४५, सुरादेवस्स उवासगपडिमा-पद ४७, सुरादेवस्स अणमण-पद ५१,
सुरादेवस्स समाहिमरण-पद ५२, निक्खेव-पद ५३ ।

पंचमं अज्झयणं

सू० १-५४

पृ० ४६७-४१६

उक्खेव-पद १, चुल्लसययगाहावइ-पद २, महावीर-समवसरण-पद ७, चुल्लसययस्स गिहि-
धम्म-पडिवत्ति-पद १३, भगवओ जणवयविहार-पद १५, चुल्लसयतस्स समणोवासग-चरिया-
पद १६, बहुलाए समणोवासिय-चरिया-पद १७, चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पद १८,
चुल्लसयगस्स देव-कय-उवसग्ग-पद २०, °जेठुपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त
३३, °हिरण्णकोडीविप्पकिरण ३६, चुल्लसययस्स कोलाहल-पद ४२, बहुलाए पसिण-पद
४३, चुल्लसयगस्स उत्तर-पद ४४, पायच्छित्त-पद ४५, चुल्लसयगस्स उवासगपडिमा-पद ४७,
चुल्लसयगस्स अणमण-पद ५१, चुल्लसययस्स समाहिमरण-पद ५२, निक्खेव-पद ५४ ।

छट्ठं अज्झयणं

सू० १-४२

पृ० ४८०-४८६

उक्खेव-पद १, कुडकोलियगाहावइ-पद २, महावीर समवसरण-पद ७, कुडकोलियस्स
गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद १३, भगवओ जणवयविहार-पद १५, कुडकोलियस्स समणोवासग-
चरिया-पद १६, पूमाए समणोवासिय-चरिया-पद १७, देवेण नियतिवाद-समत्थण-पद १८,
कुडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पद २१, देवेण नियतिवाद-समत्थण-पद २२, कुडको-
लिएण नियतिवाद-निरसण-पद २३, देवस्स पडिगमण-पद २४, महावीर-समवसरण-पद
२५, महावीरेण पुव्ववुत्त-परूवण-पद २६, महावीरेण कुडकोलियस्स पससा-पद २६,
भगवओ जणवयविहार-पद ३२, कुडकोलियस्स धम्मजागरिया-पद ३३, कुडकोलियस्स
उवासगपडिमा-पद ३५, कुडकोलियस्स अणमण-पद ३६, कुडकोलियस्स समाहिमरण-पद
४०, निक्खेव-पद ४२ ।

सत्तमं अज्झयणं

सू० १-८६

पृ० ४९०-५१३

उक्खेव-पद १, सद्दालपुत्त-पद २, सद्दालपुत्तस्स देवसदेस-पद ८, सद्दालपुत्तस्स सकप्प-पदं
११, महावीर-समवसरण-पद १२, महावीरस्स देवसदेस-विरूवण-पद १७, सद्दालपुत्तस्स
निवेदण-पद १८, महावीरेण सद्दालपुत्त-सवोधण-पद १९, सद्दालपुत्तस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-
पद २८, अग्गिमित्ताए वदणठ्ठ-गमण-पद ३३, अग्गिमित्ताए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद ३७,
भगवओ जणवयविहार-पद ३६, सद्दालपुत्तस्स समणोवासगचरिया-पद ४०, अग्गिमित्ताए
समणोवासियचरिया-पद ४१, गोसालस्स आगमण-पद ४२, गोसालेण महावीरस्स गुण-
कित्तण-पद ४४, विवाद-पट्टवणा-पसिण-पद ५०, सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया-पद ५४,

सदालपुत्तस्स देवरुव-कय-उवसग्ग-पद ५६, °जेट्टुपुत्त ५७, °मज्झिमपुत्त ६३, °कणीय-
सपुत्त ६६, °अग्गिमित्ताभारिया ७५, सदालपुत्तस्स कोलाहल-पद ७८, अग्गिमित्ताए
पसिण-पद ७६, सदालपुत्तस्स उत्तर-पद ८०, पायच्छित्त-पद, ८१, सदालपुत्तस्स उवासग-
पडिमा-पद ८३, सदालपुत्तस्स अणसण-पद ८७, सदालपुत्तस्स समाहिमरण-पद ८८,
निकखेव-पद ८९ ।

अट्ठमं अज्झयं

सू० १-५४

पृ० ५१४-५२६

उक्खेव-पदं १, महासतयगाहावड-पद २, महावीर-समवसरण-पद ८, महासतयस्स गिहि-
धम्म-पडिवत्ति-पदं १४, महासतयस्स समणोवासग-चरिया-पद १६, भगवओ जणवयविहार-
पद १७, रेवतीए चिंता-पद १८, रेवतीए सवत्ती-उद्वण-पद १९, रेवतीए मसमज्जासायण-
पद २०, अमाघाय-पद २१, महासतगस्स धम्मजागरिया-पद २५, महासतगस्स अणुकूल-
उवसग्ग-पद २७, महासतगस्स उवासगपडिमा-पद ३२, महासतगस्स अणसण-पद ३६,
महासतगस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पद ३७, महासतगस्स पुणरवि अणुकूल-उवसग्ग-पद ३८,
महासतगस्स विक्खेव-पद ४१, महावीर-समवसरण-पद ४४, महासतगस्स अतिए गोतम-
पेसण-पद ४६, गोतमस्स आगमण-पद ४७, महासतगस्स वदण-पद ४८, महावीरुत्तस्स
कहण-पद ४९, महासतगस्स पायच्छित्त-पद ५०, गोयमस्स पडिणिक्वमण-पद ५१, भगवओ
जणवयविहार-पद ५२, महासतगस्स अणसण-पद ५३, निकखेव-पद ५४ ।

नवमं अज्झयणं

सू० १-२७

पृ० ५२७-५३१

उक्खेव-पद १, नदिणीपियगाहावड-पद २, महावीर-समवसरण-पद ७, नदिणीपियस्स
गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद १३, भगवओ जणवयविहार-पद १५, नदिणीपियस्स समणोवासग-
चरिया-पद १६, अस्सिणीए समणोवासिय-चरिया-पद १७, नदणीपियस्स धम्मजागरिया-
पद १८, नदिणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं २०, नदिणीपियस्स अणसण-पद २४, नदिणी-
पियस्स समाहिमरण-पद २५, निकखेव-पद २७ ।

दसमं अज्झयणं

सू० १-२७

पृ० ५३२-५३७

उक्खेव-पद १, लेइयापितागाहावड-पद २, महावीर-समवसरण-पद ७, लेतियापियस्स
गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद १३, भगवओ जणवयविहार-पद १५, लेतियापियस्स समणोवासग-
चरिया-पद १६, फग्गुणीए समणोवासिय-चरिया-पद १७, लेतियापियस्स धम्मजागरिया-
पद १८, लेतियापियस्स उवासगपडिमा-पद २०, लेतियापियस्स अणसण-पद २४,
लेतियापियस्स समाहिमरण-पद २५, निकखेव-पद २७ ।

अंतगडदसाओ

पढमो वग्गो

सू० १-२६

पृ० ५४१-५४५

उक्खेव-पद १, गोयम-पद ८, निकखेव-पद २५, समुदादि-पद २६ ।

द्विओ वग्गो

सू० १-३

पृ० ५४५

उक्खेव-पद १, अक्खोभादि-पद ३ ।

तइओ वग्गो

सू० १-११८

पृ० ५४६-५६६

उक्खेव-पद १, अणीयसादि-पद ४, सारण-पद १६, उक्खेव-पद १७, छण्ह अणगारारणं तव-सकप्प-पद १९, छण्ह पि देवईए गिहे पवेस-पद २२, देवईए पुणरागमणसंका-पद २६, सकासमाधाण-पद ३०, पुत्त-वोह-पद ३१, देवईए हरिस-पद ४२, देवईए पुत्ताभिलासा-पद ४३, कण्हस्स चिंताकारणपुच्छा-पद ४४, देवईए चिंताकारणनिवेदण-पद ४६, कण्हस्स देवाराहण-पद ४७, कण्हेण देवईए आसासण-पद ५१, गयसुकुममालस्य जम्म-पद ५२, सोमिलघूयाए कण्णतेउर-पक्खेव-पद ५५, घम्मदेसणा-पद ६२, गयसुकुमालस्स पव्वज्जासकप्प-पद ६३, गयसुकुमालस्स अम्मापिऊण निवेदण-पद ६४, देवईए सोगाकुलदसा-पद ६७, देवईए गयसुकुमालस्स य परिसवाद-पद ६८, गयसुकुमालस्स एकदिवस-रज्ज-पद ७७, गयसुकुमालस्स पव्वज्जा-पद ८४, गयसुकुमालस्स महापडिमा-पद ८८, सोमिलकय-उवसग्ग-पद ८९, गयसुकुमालस्स सिद्धि-पद ९०, कण्हेण वुड्ढस्स साहिज्जकरण-पद ९४, कण्हस्स गयसुकुमाल-दसणाभिलासा-पद ९८, गयसुकुमालस्स सिद्धि-सूयणा-पद ९९, सोमिलस्स अकालमच्चू-पद १०८, निक्खेव-पद १११, उक्खेव-पद ११२, सुमुहादि-पद ११३ ।

चउत्थो वग्गो

सू० १-७

पृ० ५७०, ५७१

उक्खेव-पद १, जालिपभित्ति-पद ४, निक्खेव-पद ७ ।

पंचसो वग्गो

सू० १-४३

पृ० ५७२-५७८

उक्खेव-पद १, पउमावई-पद ४, गोरिपभित्ति-पद ३३, मूलसिरी-मूलदत्ता-पद ३६ ।

छट्ठो वग्गो

सू० १-१०२

पृ० ५७८-५९३

१, २ अज्जभयणाणि

उक्खेव-पद १, मकाइ-किंकम-पद ४, अज्जुण-मालागार-पद १०, अज्जुणस्स जक्खपज्जु-वासणा-पद १६, गोठ्ठीए अणाचार-पद १७, अज्जुणस्स पडिसोध-पद २५, रायगिहे आतक-पद २८, भगवओ समवसरण-पद ३३, सुदसणस्स वदणट्ठं गमण-पद ३५, सुदसणस्स अज्जु-णकय-उवसग्ग-पद ४०, उवसग्गनिवारण-पद ४३, सुदसणस्स अज्जुणस्स य भगवओ पज्जुवासणा-पद ४६, अज्जुणस्स पव्वज्जा-पद ५१, अज्जुणअणगारस्स तित्तिक्खा-पद ५३, अज्जुणअणगारस्स सिद्धि-पद ५९, कासवादि-पद ६०, अडमुत्त कुमार-पद ७१, गोयमस्स भिक्खायरिया-पद ७५, गोयम-अडमुत्तकुमार-सवाद-पद ७७, अडमुत्तकुमारस्स पव्वज्जा-पद ८५, अलक्क-पद ९७, निक्खेव-पद १०२ ।

सत्तमो वरगो

सू० १-७

पृ० ५६४

उक्खेव-पद १, नदादि-पद ४ ।

अट्ठमो वरगो

सू० १-३८

पृ० ५४६-६१२

उक्खेव-पद १, कालीए रयणावलितव-पद ४, सुकालीए कणगावलितव-पद १८, महाकालीए खुड्ढागसीहनिककीलियतव-पद २१, कण्हाए महालयसीहनिककीलियतव-पद २२, सुकण्हाए भिक्खुपडिमा-पद २३, महाकण्हाए खुड्ढागसव्वओभट्ट-पद २७, वीरकण्हाए महालयसव्वओ-भट्टपडिमा-पद २९, रामकण्हाए भट्टोत्तरपडिमा-पद ३०, पिउसेणकण्हाए मुत्तावलितव-पद ३१, महासेणकण्हाए आयविलवड्ढमाणतव-पद ३२, निक्खेव-पद ३८, परिसेसो ।

अणुत्तरोववाइयदसाओ

पढमो वरगो

सू० १-१६

पृ० ६१३-६१६

उक्खेव-पद १, जालि-पद ६, निक्खेव-पद १४, मयालिपभित्ति-पद १५, निक्खेव-पद १६ ।

दोच्चो वरगो

सू० १-६

पृ० ६१७-६१८

उक्खेव-पद १, दीहसेणादि-पद ४, निक्खेव-पद ६ ।

तच्चो वरगो

सू० १-७५

पृ० ६१९-६३३

उक्खेव-पद १, वण्णस्स गिहवास-पद ४, वण्णस्स पव्वज्जा-पद १०, वण्णस्स तवचरिया-पद २२, वण्णस्स तवजणियसरीरलावण्ण-पद ३१, मेणियस्स महादुक्करकारय-पुच्छा-पद ५३, भगवओ उत्तर-पद ५७, सेणिएण वण्णस्स थवणा-पद ५८, वण्णस्स सव्वट्टसिद्ध-गमण-पद ५९, निक्खेव-पद ६३, सुणक्खत्त-पद ६४, इसिदासादि-पद ७४, निक्खेव-पद ७५, परिसेसो ।

पण्हावागरणांइं

पढमं अज्जभयणं

सू० १-४०

पृ० ६३५-६५०

उक्खेव-पद १, पाणवहस्स सरूव-पद २, पाणवहस्स तीसनाम-पद ३, पाणवहस्स पगार-पद ४, पाणवहस्स कारण-पद ११, पाणवहस्स कत्तार-पद २०, पाणवहस्स फलविवाग-पद २३, निगमण-पद ४० ।

द्वीयं अज्जभयणं

सू० १-१९

पृ० ६५१-६५६

उक्खेव-पद १, अलियवयणस्स तीसनाम-पद २, अलियवयणस्स पगार-पद ३, अलिय-वयणस्स फलविवाग-पद १५, निगमण-पद १९ ।

तद्वयं अज्भयणं

सू० १-२६

पृ० ६५७-६६७

उक्त्वेव-पद १, अदिण्णादाणस्स तीसनाम-पद २, चोरिय-चोरपगार-पद ३, रण्णो परघण-हरण-पद ४, घणत्थ जुद्ध-पद ५, लूटाक-पद ६, सामुद्दियचोर-पद ७, दारुणचोर-पद ८, अदिण्णादाणस्स फलविवाग-पद ९, निगमण-पद २६ ।

चउत्थं अज्भयणं

सू० १-१५

पृ० ६६८-६७७

उक्त्वेव-पद १, अवभस्स तीसनाम-पद २, सुरगणस्स अवभ-पद ३, चक्कवट्टिस्स अवभ-पद ४, बलदेव-वासुदेवस्स अवभ-पद ५, मडलिय-नरवरेदस्स अवभ-पद ६ जुगलियाण लावण्णनिरुवणपुरस्सर अवभ-पद ७, जुगलिणीण लावण्णनिरुवणपुरस्सर अवभ-पद ८, अवभस्स फलविवाग-पद ९, निगमण-पद १५ ।

पंचमं अज्भयणं

सू० १-१०

पृ० ६७८-६८२

उक्त्वेव-पद १, परिग्गहस्स तीसनाम-पद २, देवाण परिग्गह-पद ३, मणुस्साण परिग्गह-पद ४, परिग्गहत्थ सिक्खा-पद ५, परिग्गहीण पवित्ति-पद ६, परिग्गहस्स फलविवाग-पद ८, निगमण-पद १० ।

छट्ठं अज्भयणं

सू० १-२५

पृ० ६८३-६८८

उक्त्वेव-पद १, अहिंसा-पज्जवताम-पद ३, अहिंसा-धुइ-पद ४, अहिंसा-माहप्प-पद ६, उच्छग्वेसणा-पद ७, अहिंसाए पचभावणा-पद १६, निगमण-पद २२ ।

सत्तमं अज्भयणं

सू० १-२५

पृ० ६८९-६९३

उक्त्वेव-पद १, सच्चस्स माहप्प-पद २, सच्चस्स धुइ-पद १०, सावज्जसच्च-पद १२, अणवज्जसच्च-पद १४, सच्चस्स पचभावणा-पद १६, निगमण-पद २२ ।

अट्ठमं अज्भयणं

सू० १-१७

पृ० ६९४-६९७

उक्त्वेव-पद १, अदत्तस्स अग्गहण-पद २, अदत्तादाणवेरमणस्स अजोग्गता-पद ५, अदत्तादाणवेरमणस्स जोग्गता-पद ६, अदत्तादणवेरमणस्स पचभावणा-पद ८, निगमण-पद १४ ।

नवमं अज्भयणं

सू० १-१५

पृ० ६९८-७०३

उक्त्वेव-पद १, वभचेरमाहप्प-पद २, वभचेरथिरीकरण-पद ४, वभचेरस्स पचभावणा-पद ६, निगमण-पद १२ ।

दसमं अज्भयणं

सू० १-२३

पृ० १००४-७१३

उक्त्वेव-पद १, अकप्पदव्वजाय-पद ३, असण्णिहि-पद ६, अकप्पभोयण-पद ७, कप्पभोयण-

पद ८, रोगायके वि असण्णिहि-पद ९, उवगरणघारणविहि-पद १०, समणस्स सरूवनिरू-
वण-पद ११. अपरिग्गहस्स पचभावणा-पदं १३, निगमण-पद १६, परिसेसो । •

विवागसुयं पढमो सुयक्कंधो

पढमं अज्झयणं

सू० १-७१

पृ० ७१७-७३१

उक्खेव-पद १, मियापुत्तवण्णग-पद ९, गोयमस्स जाडअधपुरिसविसए पुच्छा-पद १६,
भगवया मियापुत्तरूव-निरूवण-पद २६, गोयमस्स मियापुत्तदसण-पदं २७, गोयमेण मिया-
पुत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पद ४१, मियापुत्तस्स एक्काइभव-वण्णग-पदं ४३, मियापुत्तस्य
वत्तमाणभव-वण्णग-पद ५८, मियापुत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पद ७०, निक्खेव-पद ७१ । •

बीयं अज्झणं

सू० १-७४

पृ० ७३२-७४३

उक्खेव-पद १, गोयमेण उज्झयस्स पुव्वभवपुच्छा-पद १२, उज्झयस्स गोत्तासभव-वण्णग-
पद १७, उज्झयस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पद ४३, उज्झयस्स आगामिभव-वण्णग-पद ६६,
निक्खेव-पद ७४ । •

तइयं अज्झयणं

सू० १-६६

प० ७४५ से ७५६

उक्केव-पद १, गोयमेण अभग्गसेणस्स पुव्वभवपुच्छा-पद १३, अभग्गसेणस्स नित्तयभव-
वण्णग-पद १७, अभग्गसेणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पद २३, अभग्गसेणस्स आगामिभव-
वण्णग-पद ६५, निक्खेव-पद ६६ । •

चउत्थं अज्झयणं

सू० १-४०

पृ० ७५७ से ७६२

उक्खेव-पद १, सगडस्स पुव्वभवपुच्छा-पद १२, सगडस्स छन्नियभव-वण्णग-पद १३,
सगडस्स वत्तमाणभव वण्णग-पद १८, सगडस्स आगामिभव-वण्णग-पद ३२,
निक्खेव-पद ४० । •

पंचमं अज्झयणं

सू० १-३०

पृ० ७६३ से ७६६

उक्खेव-पद १ गोयमेण वहस्सइदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पद १०, वहस्सइदत्तस्स महेसरदत्त-
भव-वण्णग-पद ११, वहस्सइदत्तस्स वत्तमाणभव वण्णग-पद १७, वहस्सइदत्तस्स आगामि-
भव-वण्णग-पद २९, निक्खेव-पद ३० । •

छट्ठं अज्झयणं

सू० १- ३८

पृ० ७६७-७७३

उक्खेव-पद १, गोयमेण नदिवद्वणस्स पुव्वभवपुच्छा-पद ७, नदिवद्वणस्स दुज्जोहणभव-
वण्णग-पद ९, नदिवद्वणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पद २५ नदिवद्वणस्स आगामिभव-
वण्णग-पद ३७. निक्खेव-पद ३८ । •

सत्तमं अज्भयणं

सू० १-३६

पृ० ७७४ से ७८२

उक्खेव-पद १, गोयमेण उवरदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पद ७, उवरदत्तस्स घणंतरिभव-वण्णग-पद १३, उवरदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पद १८, उवरदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पद ३८, निक्खेव-पद ३६ ।

अट्ठमं अज्भयणं

सू० १-२८

पृष्ठ ७८२-७८७

उक्खेव-पद १, सोरियदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पद ८, सोरियदत्तस्स सिरीयभव-वण्णग पद ६, सोरियदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पद १४, सोरियदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पद २७, निक्खेव-पद २८ ।

नवमं अज्भयणं

सू० १-६०

पृ० ७८८-७९७

उक्खेव-पद १, देवदत्ताए पुव्वभवपुच्छा-पद ६, देवदत्ताए सीहसेणभव-वण्णग-पद ७, देवदत्ताए वत्तमाणभव-वण्णग-पद ३०, देवदत्ताए आगामिभव-वण्णग-पद ५६, निक्खेव-पद ६०

दसमं अज्भयणं

सू० १-२०

पृ० ७९८-८०१

उक्खेव-पद १, अज्जूए पुव्वभवपुच्छा-पद ४, अज्जूए पुढविसिरीभववण्णग-पद ५, अज्जूए वत्तमाणभव-वण्णग-पद ६, अज्जूएआगामिभव-वण्णग-पद १६, निक्खेव-पद २० ।

बीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्भयणं

सू० १-३७

८०२-८०६

उक्खेव-पद १, सुवाहुकुमार-पद ४, सुवाहुस्स पुव्वभवपुच्छा-पद १५, सुवाहुस्स सुमूहभव-वण्णग-पद १६, सुवाहुकुमारस्स पव्वज्जा-पद ३१, सुवाहुकुमारस्स आगामिभव-वण्णग-पद ३५, निक्खेव-पद ३७,

२-१० अज्भयणाणि ।

पृ० ८१०-८१३

संकेत निर्देशिका

- ० ये दोनो विन्दु पाठपूर्ति के द्योतक है। पाठपूर्ति के प्रारम्भ मे भरा विन्दु [•] और उसके समापन मे रिक्त विन्दु [०] रखा गया है। देखें—पृष्ठ २ सू ६।
 - [?] कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिन्ह [?] अदशों मे अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें—पृष्ठ ३. सूत्र ७।
 - ' ये दो या इससे अधिक शब्दो के स्थान मे पाठान्तर होने का सूचक है। देखें पृष्ठ २ सू० ४। 'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण मे उसके पूर्ति स्थल का निर्देश है। देखें—पृष्ठ १ टिप्पण ३ और पृष्ठ ३ सूत्र ८।
 - X क्राश [X] पाठ न होने का द्योतक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण ४।
 - ० पाठ के पूर्व या अन्त मे खाली विन्दु [०] अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखें—पृ० ३ सूत्र ७ टिप्पण ५।
- 'जहा' 'तहेव' आदि पर टिप्पण मे दिए गए सूत्राक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ ३०१ सूत्र ७ तथा पृष्ठ ३७८ सूत्र ५०।
- क, ख, ग, घ, च, छ, व, देखें—सम्पादकीय मे 'प्रति-परिचय' शीर्षक।
- 'व्या० वि' व्याकरण विमर्ग। देखें—पृष्ठ ३६६ टिप्पण १।
- 'क्व' क्वचित् प्रयुक्तादर्श।
- स० पा० सक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखें—पृष्ठ ५ टिप्पण १।
- वृपा वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखें—पृष्ठ १० टिप्पण ३।
- वृ वृत्ति का सूचक है। देखें—पृष्ठ ६ टिप्पण १७।
- पू० पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्। देखें—पृष्ठ ५२६ टिप्पण १।
- अ० अतगडदसाओ।
- अ० अणुत्तरोववाड्यदसाओ। सूय० सूयगडो।
- उवा० उवासगदसाओ। जवू० जवूदीवपण्णत्ति।
- ओ० ओवाइय।
- ना० नायाघम्मकहाओ।
- भ०, भग०, भगवई।
- राय० रायपसेणइय।
- पण्हा० पण्हावागरणाइ।
- वि० विवागसूय।

नायाधम्मकहाओ

पढमं अज्जभयणं

उक्खित्तणाए

उक्खेव-पदं

१. तेण कालेण तेणं समएण चपा नाम नयरी होत्था—वण्णओ^१ ॥
२. तीसे ण चपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नाम चेइए^२ होत्था—वण्णओ^१ ॥
३. तत्थ ण चपाए नयरीए कोणिए नाम राया होत्था—वण्णओ^१ ॥
४. तेण कालेण तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्जसुहम्मे नाम थेरे जातिसपण्णे कुलसपण्णे वल-रुव-विणय-नाण-दसण-चरित्त^३-लाघव-सपण्णे ओयसी तेयसी वच्चसी जससी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे 'जिइदिए^४ जियनिद्दे^५' जियपरीसहे जीवियास^६-मरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे एव—करण-चरण-निग्गह-निच्छय-अज्जव-मद्दव-लाघव-खति-गुत्ति-मुत्ति-विज्जा-मत-वभ^७-वेय-नय-नियम-सच्च-सोय-नाण-दसण-चरित्तप्पहाणे ओराले^८ घोरे घोरव्वए^९ घोरतवस्सी घोरवभचेरवासी उच्छूढसरीरे सक्खित्त-विउल-तेयलेस्से चोद्दसपुव्वी^{१०} चउनाणोवगए पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुडे पुव्वानुपुव्वि चरमाणे गमाणुगाम दूइज्जमाणे^{११} सुहसुहेण विहरमाणे

१. ओ० सू० १ ।

२. चेतिए (क, ख, ग) ।

३. ओ० सू० २-१३ ।

४. ओ० सू० १४ ।

५. चरित्त लज्जा (राय० सू० ६८६) ।

६. जियइदिए (ख) ।

७. जियनिद्दे जिंतिदिए (राय० सू० ६८६) ।

८. जीवियासा (ग, घ) ।

९. वभचेर (ख, घ) । वृत्तो 'ब्रह्म' पदमेवव्याख्यातमस्ति, यथा—ब्रह्म—ब्रह्मचर्यं सर्वमेव वा कुशलानुष्ठानम् । कासुचित् प्रतिपु 'वभचेर' इति मूलपाठरूपेण परिवर्तितमभूत् ।

१०. उराले (ख, घ) ।

११. घोरगुणे (राय० सू० ६८६) ।

१२. चोदस० (ख), चउद्दस० (ग) ।

१३. दूतिज्ज० (ख, ग) ।

‘जेणेव चपा नयरी’, जेणेव पुण्णभद्दे चेतिए’^१ तेणामेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता अहापडिरुवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे
विहरति ॥

५. ‘तए ण’^२ चपाए नयरीए परिसा निग्गया’ । धम्मो कहिओ । परिसा जामेव
दिसि पाउब्भूया, तामेव दिसि पडिगया ॥
६. तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अतेवासी अज्जजवू
नाम अणगारे कासव’ गोत्तेण सत्तुस्सेहे’ •समचउरस-सठाण-सठिए वइररिसह-
णाराय-सघयणे कणग-पुलग-निघस-पम्ह-गोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे
उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवभचेरवासी उच्छूढसरीरे सखित्त-विउल-
तेयलेस्से° अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामते उड्ढजाणू अहोसिरे भाणकोट्टो-
वगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
७. तए ण से अज्जजवूनामे अणगारे जायसड्ढे जायससए’ जायकोउहल्ले
‘सजायसड्ढे संजायससए सजायकोउहल्ले
उप्पणसड्ढे उप्पणससए उप्पणकोउहल्ले’^३
समुप्पणसड्ढे समुप्पणससए समुप्पणकोउहल्ले’ उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणामेव
अज्जसुहम्मे थेरे, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ‘अज्जसुहम्मे थेरे’^४° तिकखुत्तो
‘आयाहिण-पयाहिण’^५ करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता अज्ज-

१. नगरी (ग) ।

२. क्वचिद् ‘राजगृहे गुणसिलके’ इति दृश्यते
स चापपाठ इति मन्यते (वृ) ।

३. तेण कालेण (ख), तेण (घ) ।

४. निग्गया । कोणितो निग्गतो (ग), निग्गया ।
कोणिओ निग्गओ (घ) । वृत्तौ—परिषत्-
कूणिकराजादिको लोको निर्गता—नि सूता—
एव व्याख्यातमस्ति । अनेन ‘परिसा
निग्गया’ इत्येव मूलपाठः सभाव्यते ।
‘कोणिओ निग्गओ’ इति व्याख्याशो मूल-
पाठत्वेन परिवर्तितो भूत् । उपास रुदशासु
(१।१६) राजनिर्गमस्य स्वतत्र सूत्रमपि
दृश्यते ।

५. विभक्तिरहित पदम् । काश्यपो गोत्रेण इति
वृत्तिः ।

६. स० पा०—सत्तुस्सेहे जाव अज्जमुहम्मस्स ।

७. °ससते (ख, ग) ।

८. औपपातिक (८३) सूत्रे क्रमभेदो विद्यते,
यथा—जायसड्ढे° उप्पणसड्ढे° सजाय-
मड्ढे° समुप्पणसड्ढे° ।

९. °कोउहल्ले (ख) ।

१०. अज्जसुहम्म थेर (वृपा) । औपपातिक
(८३) सूत्रे तथा रायपमेणइय (१०)
सूत्रेपि एतत्सदृशप्रकरणे ‘समण भगव
महावीर’ इति द्वितीयान्तपद लभ्यते ।
अत्र सप्तम्यन्तपद लभ्यते । वृत्तिकृता
एतदेव प्रमाणीकृतम्—‘अज्जसुहम्मे थेरे’
इत्यत्र षष्ठ्यर्थे सप्तमी (वृ) ।

११. आताहिणपदाहिण (ग), आयाहिण (घ) ।

सुहम्मस्स थेरस्स नच्चासण्णे नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे पजलिउडे विणएण पज्जुवासमाणे एव वयासी^१—जइ^२ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण 'आडगरेण तित्थगरेण सहसंबुद्धेण^३ लोगनाहेण लोगपईवेण लोगपज्जोयगरेण अभयदएण सरणदएण चक्खुदएणं मग्गदएण घम्मदएण घम्मदेसएण घम्मनायगेण^४ घम्मवरचाउरतचक्कवट्टिणा^५ अप्पडिहयवरनाण-दसणघरेण जिणेण जाणएण^६ बुद्धेणं वोहएणं मुत्तेण मोयगेण तिण्णेण तारएण सिवमयलमरुयमणतमक्खयमव्वावाहमपुणरावत्तयं^७ सासय ठाणमुवगएण^८ [सिद्धिगइनामधेज्ज ठाणं संपत्तेण ?]^९ पंचमस्स अगस्स^{१०} अयमट्टे पणत्ते, छट्टस्स ण 'भते । अंगस्स'^{११} नायाघम्मकहाण के अट्टे पणत्ते ?

८ जंबु त्ति अज्जसुहम्मे थेरे अज्जजव्वनाम अणगार एवं वयासी— एवं खलुजव्व ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^{१२} सपत्तेण छट्टस्स अगस्स दो सुयक्खधा पणत्ता, त जहा—नायाणि य घम्मकहाओ य ॥

९ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव^{१३} सपत्तेण छट्टस्स अगस्स दो सुयक्खधा पणत्ता, त जहा—नायाणि य घम्मकहाओ य । पढमस्स ण भते ! सुयक्खंधस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव^{१४} सपत्तेण नायाण कइ अञ्जयणा पणत्ता ?

१० एवं खलु जव्व ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव^{१५} सपत्तेण नायाण एगूणवीसं अञ्जयणा पणत्ता, त जहा—

१ वदासी (ग, वृ) ।

२ जति (ख, ग) ।

३. मइ^० (ख), मय^० (घ) ।

४ × (ख, घ) ।

५. ^०वट्टीण (ख, ग, घ) । अत्र प्रकरणासगत्या तृतीयान्त पद युज्यते । समवायागे (सू० २) इत्यमेव विद्यते । क्वचित् प्रयुक्तासु प्रस्तुत-सूत्रस्य प्रतिष्वपि तृतीयान्त पदं प्राप्यते । तेन तदेव मूले स्वीकृतम् ।

६ जावएण (ख, घ) ।

७ ^०मरुत्त ^०वत्तिय (ख, घ); ^०मरुत्त^० (ग) ।

८. अत्र चिन्हाकितपाठ औपपातिकादिसूत्रेभ्यो भिन्नो वर्तते । एन० वी० वैद्य सपादित— 'नायाघम्मकहाओ' पाठे विज्ञेयणानि

अधिकानि लभ्यन्ते, किन्तु अस्माक पाठ-शोवार्थं प्रयुक्तासु प्रतिषु तानि न सन्ति । द्रष्टव्यं—औपपानिकसूत्रस्य तृतीय परि-शिष्टम् ।

९ अष्टमे सूत्रे 'जाव सपत्तेण' सक्षिप्त-पाठो लभ्यते । अत्र च 'सामय ठाणमुवगएण' इति पाठोस्ति । अस्य अग्रिमपाठेन सगति-र्नास्ति, औपपातिक (२१) सूत्रे 'सिद्धिगइ-नामधेज्ज ठाण सपत्ताण' इति पाठो विद्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

१०. अगस्स विवाहपण्णत्तीए (घ) ।

११ अगस्स भते । (ख, घ) ।

१२, १३, १४, १५. ना० १।१।७ ।

संगहणी-गाहा

१. उक्खित्तणाए २. संघाडे, ३. अंडे ४. कुम्मे य ५. सेलगे ।
 ६. तुवे य ७. रोहिणी ८. मल्ली, ९. मायदी १०. 'चदिमा ड' य ॥ १॥
 ११. दावद्दवे १२. उदगणाए, १३. मडुक्के^१ १४. तेयली वि य ।
 १५. नदीफले १६. अवरकका^२ १७. आइण्णे^३ १८. सुसुमा ड य ॥ २॥
 १९. अवरे य पुडरीए, नाए एगूणवीसमे^४ ॥

मेहस्स नगरपरिवारादि-वण्णग-पदं

- ११ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव^५ सपत्तेणं नायाणं एगूणवीस
 अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—उक्खित्तणाए जाव^६ पुडरीए त्ति य । पढमस्स णं
 भते ! अज्झयणस्स के अट्टे पण्णत्ते ?
 १२ एव खलु जवू ! नेण कालेण तेण समएणं इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे
 दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नाम नयरे होत्था—वण्णओ^७ ॥
 १३ गुणसिलए चेतिए—वण्णओ^८ ॥
 १४ तत्थ ण रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था—महताहिमवत्त-महत-मलय-
 मदर-महिदसारे वण्णओ^९ ॥
 १५ तस्स ण सेणियस्स रण्णो नदा नाम देवी होत्था—सूमालपाणिपाया^{१०} वण्णओ^{११} ॥
 १६ तस्स ण सेणियस्स पुत्ते नदाए देवीए अत्तए अभए नाम कुमारे होत्था—अहीण^{१२}
 •पडिपुण्ण^{१३}-पंचिदियसरीरे लक्खण-वजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाण-
 पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरगे ससिसोमाकारे कत्ते पियदंसणे^{१४} सुह्वे, साम-
 दड-भेय-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नय-विहण्णू^{१५}, 'ईहा-वूह'^{१६}-मग्गण-गवेसण-
 अत्थसत्थ-मइविसारए, उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मयाए^{१७} पारिणामियाए—
 चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, सेणियस्स रण्णो वहूसु कज्जेसु य^{१८} [कारणेसु य ?]

- १ चदमाई (घ) ।
 २ मडुक्के (ख) ।
 ३ अमर^० (घ) ।
 ४ आत्तिण्णे (ख, ग) ।
 ५. ^०वीसडमे (ग) ।
 ६ ना० १।१।७ ।
 ७ ना० १।१।१० ।
 ८ ओ० सू० १ ।
 ९. ओ० सू० २-१३ ।
 १०. ओ० सू० १४ ।
 ११. नुकुमाल^० (घ) ।
 १२ ओ० सू० १५ ।

- १३ स० पा०—अहीण जाव मुह्वे ।
 १४. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'पडिपुण्ण' पद व्याख्यात
 नास्ति ।
 १५. विहिज्जा (ख) ।
 १६. ईहापूह (ग); ईहापोह (घ) ।
 १७ कम्मइयाए (ख, घ), कम्मियाए (ग) ।
 १८ अतोन्तर उपासकदशासु (१।१३) राय-
 पसेणइय (६७५) सूत्रे 'कारणेसु य' इति
 पाठो विद्यते । प्रस्तुतसूत्रस्य पचमाध्ययने
 (६०) सूत्रेपि कज्जेसु य कारणेसु य इति
 पाठो लभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

कुडुवेसु य मतेसु य गुज्जेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाण आहारे आलवण चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलवणभूए चक्खुभूए, सव्वकज्जेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए विइण्णवियारे रज्जघुरचित्तए यावि होत्था, सेणियस्स रण्णो रज्ज च रट्ट च कोस च कोट्टागार च बलं च वाहण च पुर च अतेउर च सयमेव समुपेक्खमाणे-समुपेक्खमाणे विहरइ ॥

१७. तस्स ण सेणियस्स रण्णो धारिणी नाम देवी होत्था—●सुकुमाल-पाणिपाया अहीण^१-पचेदियसरीरा लक्खण-वज्जण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण^२-सुजाय-सव्वगसुदरगी ससिसोमाकार-कत-पियदसणा सुरूवा करयल-‘परिमित-तिव-लिय’^३ वलियमज्झा ‘कोमुइ-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण-सोमवयणा कुडलुल्लि-हिय-गडलेहा’^४ सिंगारागार-चारुवेसा सगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-सलाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, सेणियस्स रण्णो इट्ठा कता पिया मणुण्णा नामधेज्जा^५ वेसासिया सम्मया बहुमया अणुमया भडकरडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसगोविया चेलपेडा इव सुसपरिगिहीया रयणकरंडगो विव सुसारक्खिया, मा ण सीय मा ण उण्ह मा ण दसा मा ण मसगा मा ण वाला मा ण चोरा मा ण वाइय-पित्तिय-सिभिय-सन्निवाइय^६ विविहा रोगायका फुसतु त्ति कट्टु सेणिएण रण्णा सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ पच्चणुभवमाणी ° विहरइ ॥

धारिणीए सुमिणदंसण-पदं

१८ तए ण सा धारिणी देवी अण्णदा कदाइ तसि तारिसगसि—छक्कट्टग-लट्टमट्ट-

- १ स० पा०—होत्था जाव सेणियस्स रण्णो इट्ठा जाव विहरइ ।
२. अहीण-पडिपुण्ण (ओ० सू० १५) ।
३. प्पमाण-पडिपुण्ण (ओ० सू० १५) ।
४. परिमिय-पसत्थ-तिवली (ओ० सू० १५) ।
५. कुडलुल्लिहिय गंडलेहा कोमुइ-रयणियर ° सोमवयणा (ओ० सू० १५) ।
६. आगमेपु वहुपु स्थानेषु ‘मणुण्णा मणामा’ इति पाठरचनादृश्यते । द्रष्टव्यम्—१।१४।४३ । क्वचिद् ‘वेज्जा’ इति पाठो लभ्यते । द्रष्टव्यम्—विवागसुय १।१।५६ । प्रस्तुतपाठ वृत्त्या पूरितोस्ति, तत्र ‘नामधेज्जा’ इति पाठ.

उल्लिखितोस्ति । विपाकश्रुतस्य सदर्थे असावपि पाठ समीचीन प्रतिभाति । प्रस्तुतागमे (१।१।१०६) एव ‘थेज्जे’ इति पाठो लभ्यते । ओवाइय (१।१७) सूत्रे शरीरवर्णनप्रसङ्गे ‘पेज्ज’ इति पाठोऽस्ति । एव विभिन्नस्थलेषु पाठावलोकनेन एतत् सुनिश्चित भवति यत् लिपिकरणकाले पाठ-परिवर्तन जातम् । ‘वेज्ज थेज्ज’ इतिपाठा-पेक्षया ‘नामधेज्जा’ इति पाठ अर्थदृष्ट्या अधिक संगच्छते ।

७. विभक्तिरहित पदम् ।

संठिय-खभुगय-पवरवर-सालभंजिय-उज्जलमणिकणगरयणश्रुभिय-विडकजालइ-
चदनिज्जहतरकणयालिचदसालियाविभक्तिकलिए 'सरसच्छवाळवल-वण्णरइए'^१
वाहिरओ दूमिय-घट्ट-मट्टे अविभतरओ पसत्त-सुविलिहिय'-चित्तकम्मे नाणा-
विह-पचवण्ण-मणिरयण'-कोट्टिमतले पउमलया-फुल्लवल्लि-वरपुप्फजाइ-
उल्लोय-चित्तिय-तले वदणं - वरकणगकलससुणिम्मिय- पडिपूजिय'- सरसपउम-
सोहनदारभाए पयरग'-लवत-मणिमुत्तदाम-मुविरइयवाग्गोहे सुगव'-वरकुसुम-
मउय-पम्हलसयणोवयार-मणहिययनिव्वुइयरे कप्पूर- लवग-मलय-चदण-
कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-वूव -डज्जंत-सुरभि-मघमघत '- गंधुद्धुयाभिरामे'
सुगंधवर [गध ?] गधिए गधवट्टिभूए मणिकिरण-पणासियधयारे किवहुणा ?
जुइगुणेहि मुरवरविमाण-विडवियवरघरए", तसि तारिसंगसि सयणिज्जंसि—
सालिगणवट्टिए उभओ विव्वोयणे दुहओ उण्णए 'मज्जे णय गभीरे'^२
गगापुलिणवालय-उहालसालिसए ओयविय-खोम-दुगुल्लपट्ट'^३-पडिच्छयणे अत्थरय-
मलय-नवतय-कुसत्त-लिव'^४-सीहकेसरपच्चुत्थिए'^५ सुविरइययत्ताणे रत्तंसुयसंवुए
मुरम्मे आइणग-रुय'^६-वूर'^६-नवणीय-तुल्लफासे पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि
मुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी 'एग मह सत्तुस्सेह रययकूड-सन्निहं
नहयलसि सोम सोमागार लीलायंतं जंभायमाण मुहमतिगयं गय पासित्ता
ण पडिवुद्धा'^७ ।

१. सरसच्छवाळवल ° (घ), कश्चित्पुनरेव सभा- ६. गध ° (ख घ) ।
वितमिदम्—सरसच्छवाळवलरत्तरए (वृ) । १०. वेलववर ° (ग, घ) ।
२. सर्वासु प्रतिपु 'सुवि' इति पठ्यमानमस्ति । ११ मज्जेण व गभीरे (वृपा) ।
वृत्ता 'शुचि—पवित्र' इति व्याख्यातमस्ति । १२ खोमदुगुल ° (घ) ।
प्राचीनलिप्या चकारवकारयो प्रायः १३ लिव्व (ख, ग) ।
सादृश्येनात्र वर्णविपर्ययो जात । वृत्तिकारेण १४. °पच्चुत्थिए (ख), °पच्चुत्थिए (क्व०) ।
तथैव व्याख्यात । १५ स्य (ख) ।
३. मणिरत्तण (ग) । १६ पूर (ख) ।
४. चदण (ख, घ); अत्र वकारस्थाने चकारो १७ वाचनान्तरे त्वेवं दृश्यते—जाव सीहं सुविणे
जात । पासित्ता ण पडिवुद्धा । यावत्करणात् इद
५. पडिपूजिय (ख, ग, घ, वृपा) । द्रष्टव्यम्—एग च ण महत्तं पंडुर घवल
६. पयरग (ग, घ), एकस्मिन् वृत्त्यादर्शे सेय सखउल-विमलदहि-घणागोखीर-फेण-
'प्रतरकाणि', अपरस्मिच्च 'प्रवरकाणि' रयणिकरपगासं [अथवा—हार-रजत-
इति नम्कृतरूप लभ्यते । खीरसागर-दगरय- महासेल - पंडुरतरोरु- रम-
७. मुगधि (वृ) । णिज्ज-दरिसणिज्ज] थिर-लट्ट-पउट्ट-पीवर-
८. °मघित (ग), °मघत (घ) ।

सेणियस्स सुमिणनिवेदण-पदं

१६ तए ण सा धारिणी, देवी, अयमेयारूव उराल कल्लाणं सिव धण्णं मगल्ल सस्सिरीय महासुमिण पासित्ता ण पडिबुद्धा समाणो हट्टुट्टु'-चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया^२ हरिसवस-विसप्पमाणहियया 'धाराहय-कलवपुप्फग पिव समूससिय-रोमकूवा'^३ त सुमिण ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ उट्टेइ, उट्टेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अतुरियमचवलमसभताए अविल-वियाए रायहससरिसीए गईए जेणामेव से सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणिय राय ताहि इट्ठाहि कताहि पियारिहि मणुन्नाहि मणामाहि उरालाहि कल्लाणाहि सिवाहि धण्णाहि मगल्लाहि सस्सिरीयाहि हिययगमणि-ज्जाहि हिययपल्हायणिज्जाहि मिय-महुर-रिभिय-गभीर-सस्सिरीयाहि गिराहि सलवमाणी-सलवमाणी पडिवोहेइ, पडिवोहेत्ता सेणिएण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणा-मणिकणगरयणभत्तिचित्तसि भद्दासणसि निसीयइ, निसिइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अज्जलि कट्टु सेणिय राय एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! अज्ज तसि तारिसगसि सयणिज्जसि सालिगणवट्टिए जाव' नियगवयणमइवयत'^४ गयं सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा—त एयस्स ण देवाणुप्पिया ! उरालस्स'^५

मुसिलिट्टु-विसिट्टु-तिक्खदाढाविडवियमुह परि-
कम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोहतलद्धउट्ट
रत्तुप्पलपत्तमउयं-सुकुमालतालुनिल्लालियग-
जीह महुगुलियभिसत पिगलच्छ मूसागयपवर-
कणयतावियआवत्तायत - वट्ट - तडियविमल-
सरिम्नयण [अत्र 'वट्ट तड्ड' इत्येतावदेव
पुस्तके दृष्ट सभावनया तु 'वृत्ततदित' इति
व्याख्यातम् । पाठातरेण तु—वट्ट-पडिपुन्-
पसत्थ-निद्ध-महुगुलिय पिगलच्छ] विसाल-
पीवरभमरोरु-पडिपुन्निविमलखध [अथवा—
पडिपुण्ण-सुजायखध] मिट्टुविसदसुहम-
लक्खण-पसत्थ-वित्थिन्न-केसरसड [अथवा—
निम्मलवरकेसरधर] ऊसिय-मुनिम्मिय-
सुजाय अप्फोडियलगूलं सोम सोमागार
लीलायत जभायमाण गगनतलाओ ओवयमाण
सीह अभिमुह मुहे पविसमाण पासित्ता
ण पडिबुद्धा (वृ) ।

१. हट्टुट्टु (ख), हट्टातुट्टा (घ), वृत्तौ 'हृष्ट-
तुष्टा—अत्यर्थं तुष्टा अथवा हृष्टा—विस्मिता,
तुष्टा—तोषवती' इति व्याख्यातमस्ति किन्तु
औपपातिकाद्यागमेषु 'हट्टुट्टु-चित्तमाणदिया'
इति सयुक्त. पाठो लभ्यते । अत्रापि तथैव
गृहीतः ।

२. °सिया (ख, ग, घ) ।

३. एतद् विशेषण वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

४. ना० १।१।१८ ।

५. एष पाठो यत्र समर्पितोस्ति तत्र
(१।१।१८) 'मुहमतिगय' इति पाठो विद्यते,
अत्रापि तथैव युज्यते किन्तु सर्वास्वपि
प्रतिपु 'नियगवयणमइवयत' इति पाठो
लभ्यते । नानयो. कश्चिदर्थभेदः तेनासावेव
पाठ स्वीकृत. ।

६. स० पा०—उरालस्स क सि घ म जाव
सुमिणस्स ।

•कल्लाणस्स सिवस्स घण्णस्स मगल्लस्स सस्सिरीयस्स ° सुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

सेणियस्स सुमिणमहिम-निदंसण-पदं

२० तए ण से सेणिए राया धारिणीए देवीए अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ट-°चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण ° हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चुचुमालइयतणू ऊसवियरोमकूवे त सुमिण ओगिण्हइ^१, ओगिण्हत्ता ईह पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविण्ण मइपुव्वएणं वुद्धिविण्णायणेण तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गह करेइ, करेत्ता धारिणिं देवि ताहि जाव^२ हिययपल्हायणिज्जाहि मिय-महुर-रिभिय-गभीर-सस्सिरीयाहि वग्गूहि^३ अणुवूहमाणे-अणुवूहमाणे एव वयासी—उराले ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । कल्लाणे ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे घण्णे मगल्ले सस्सिरीए ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय^४-कल्लाण-मगल्लकारेण ण तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे । अत्थलाभो ते^५ देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो ते देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो ते देवाणुप्पिए ! भोग-सोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए !

एव खलु तुम देवाणुप्पिए ! नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाय अद्धट्टमाण राइदियाण वीइक्कताण अम्ह कुलकेउ कुलदीव^६ कुलपव्वय कुलवडिसय^७ कुलतिलक कुलकित्तिकर कुलवित्तिकर^८ कुलनदिकर कुलजसकर कुलाधार कुलपायव कुलविवद्धणकर सुकुमालपाणिपाय जाव^९ सुरूव दारय पयाहिसि । से वि य ण दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णय^{१०}-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणप्पत्ते सूरे वीरे विक्कते^{११} वित्थिण्ण-विपुल-वलवाहणे रज्जवई^{१२} राया भविस्सइ ।

त उराले ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे^{१३} । •कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे घण्णे मगल्ले सस्सिरीए ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । °

१. म० पा०—हट्टतुट्ट जाव हियए ।

२. चचु० (ख, घ) ।

३. ओगिण्हत्ति २ (ख) ।

४. ना० १।१।१६ ।

५. १।१।१६ सूत्रे अत्र 'गिराहि' पाठो विद्यते ।

६. दीहाउ (ख) ।

७. X (ग, घ) सर्वत्र ।

८. कुलहेउ (वृषा) ।

९. °वडसय (ख) ।

१०. नासौपाठ वृत्तिसम्मतः, यथा—क्वच्चिद् वृत्तिकरमित्यपि दृश्यते ।

११. ओ० सू० १४३ ।

१२. विण्णाय (क, ख, घ) ।

१३. वित्तिककते (क), वियक्कत (ख) ।

१४. रज्जयती (क) ।

१५. स० पा०—दिट्ठे जाव आरोग्ग ।

आरोग्ग-तुट्टि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवि । सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्ठु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेइ ।

घारिणीए सुमिणजागरिया-पदं

२१. तए ण सा घारिणी देवी सेणिएण रण्णा एवं वुत्ता समाणी हट्टुत्तु-चित्तमाणदिया जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयल-परिग्गहियं'•सिरसावत्त मत्थए° अर्जलि कट्ठु एव वयासी—एवमेय देवाणुप्पिया । तहमेय देवाणुप्पिया । अवितहमेय देवाणुप्पिया ! असदिद्धमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया । इच्छियपडिच्छियमेय देवाणुप्पिया । सच्चे णं एसमट्ठे ज तुब्भे वयह त्ति कट्ठु त सुमिण सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सेणिएण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिकणगरयण-भत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयसि सयणिज्जसि निसीयइ, निसीइत्ता एव वयासी— 'मा मे' से उत्तमे पहाणे मगल्ले सुमिणे अण्णेहि पावमुमिणेहि पडिहम्मिहित्ति कट्ठु देवय-गुरुजणसवद्धाहि' पसत्थाहि धम्मियाहि कहाहि सुमिणजागरिय पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

सुमिणपाठग-निमतण-पद

२२ तए ण से' सेणिए राया पच्चूसकालसमयसि कोडुवियपुरिसे' सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । वाहिरिय उवट्ठाणसाल अज्ज 'सविसेस परमरम्म'° गवोदगसित्त-सुइय'-सम्मज्जिओवलित्त पचवण्ण-सरससुरभि'-मुक्क-पुप्फपुजोवयारकलियं कालागरु-पवरकुदुरुक्क - तुरुक्क-धूव-डज्जत-सुरभि'°-मघमघेत-गधुद्धयाभिराम सुगधवर(गध ?)गधिय'' गधवट्ठिभूय करेह, कारवेह य, एयमाणत्तिय'' पच्चप्पिणह ॥

१. ना० १।१।१६ ।

८. सुइ (क); सुइय (घ) ।

२. स० पा०—करयलपरिग्गहिय जाव अर्जलि ।

९. °सुरभिकुसुम (क) ।

३ इमे (ख) ।

१०. × (ख, ग, घ) ।

४ °सवुद्धाहि (ख) ।

११. सुयव° (क); १।१।७६ सूत्रे पूरितपाठे

५. × (क, ख, ग) ।

'गध' शब्दोविद्यते । औपपातिकस्य ५५

६ कोटुविय° (क) ।

सूत्रेपि स लभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

७ सविसेस° (क), सविसेसे° (ख), सविसेस-

१२. एव° (क, ख, ग, घ) ।

परम° (ग) ।

२३. तए ण ते कोडुवियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्टुत्तु-
•चित्तमाणदिया पीडमणा परममोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया
तमाणत्तिय ° पच्चप्पिणत्ति ॥

२४. तए ण से सेणिए राया कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-
म्मिलियम्मि अहपडुरे पभाए रत्तासोगप्पगाम-किमुय-मुयमुह-गुजद्ध-वधुजीवग-
पारावयचलणनयण - परहुयसुरत्तलोयण-जासुमणकुमुम-जलियजलण-त्तवणिज्ज-
कलस-हिगुलयनिगर-रूवाडरेगरेहत-सस्सिरीए दिवायरे अहकमेण उदिए तस्स
'दिणकर-करपरपरोयारपरद्धमि' अवयारे वालातव - कुंकुमेण 'खच्चित्त्व'
जीवलोए लोयण-विसयाणुयास-विगसंत-विसददंसियम्मि लोए कमलागर-
सडवोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सयणिज्जाओ
उट्टेड, उट्टेत्ता जेणेव अट्टणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसाल
अणुपविसइ ।

अणेगवायाम-जोग-वग्गण-वामट्टण-मल्लजुद्धकरणेहि सते परिस्सते सयपागसह-
स्सपागेहि मुगधवरतेल्लमादिएहि पीणणिज्जेहि दीवणिज्जेहि दप्पणिज्जेहि
मयणिज्जेहि विहणिज्जेहि सव्विदियगायपल्हायणिज्जेहि अब्भंगेहि अब्भगिए
समाणे, तेल्लचम्मसि पडिपुण्ण-पाणिपाय-सुकुमालकोमलतलेहि पुरिसेहि छेएहि
दक्खेहि पट्टेहि कुसलेहि मेहावीहि निउणेहि निउणसिप्पोवगएहि जियपरिस्स-
मेहि अब्भगण-परिमट्टणुव्वलण-करणगुणनिम्माएहि, अट्टिमुहाए मंससुहाए
तयामुहाए रोमसुहाए-चउव्विहाए सवाहणाए संवाहिए समाणे अवगयपरिस्समे
नरिदे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमड, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समत्तजाला-
भिरामे विचित्त-मणि-रयण-कोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमडवसि नाणामणि-
रयण-भत्तिचित्तसि ण्हाणपीढसि सुहनिसण्णे सुहोदएहि 'गंधोदएहि पुप्फोदएहि'°

१. स० पा०—हट्टुत्तु जाव पच्चप्पिणत्ति ।

२. अहपडुरे (क, ख), अहा० (ग) ।

३. दिनकरपरपरोयारपरद्धमि (क, ख, ग, घ,
वृपा) ।

४. वालायव (क्वचित्) ।

५. खइय व्व (त्त), खच्चियमि (घ) ।

६. °तास (क, ख), °वास (घ) ।

७. जोग (क, ख, ग, घ) । प्रयुक्तानु सर्वास्वपि
प्रतिपु 'जोग' इति पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्तौ

'योग्या' इति व्याख्यातमस्ति तथा औप-
पातिक (६३) सूत्रे 'जोग' इति पाठोऽस्ति ।
असौ च ममीचीनः तेन मूले स्वीकृतः ।

८. अब्भगिएहि (ख) ।

९. समत (वृ), समत्त, समुत्त (वृपा) ।

१०. पुप्फोदएहि गंधोदएहि (क, ख, ग, घ) ।
वृत्तौ पूर्वं गंधोदकं ततश्च पुष्पोदकं व्याख्यात-
मस्ति । औपपातिक (६३) सूत्रे पि एष
एव क्रमो दृश्यते ।

सुद्धोदएहि य पुणो पुणो कल्लाणग^१-पवर-मज्जणविहीए मज्जिए तत्थ कोउय-
सएहि वहुविहेहि कल्लाणग^२-पवर-मज्जणावसाणे पम्हल-सुकुमाल-गधकासाड-
लूहियगे अहय-सुमहग्घ-दूसरयण-सुसवुए सरस-सुरभि-गोसीस-चदणाणुलित्त-
गत्ते सुइमाला-वण्णगविलेवणे आविद्ध-मणिसुवण्णे कप्पिय-हारद्धहार-तिसरय-
पालव-पलवमाण-कडिमुत्त-सुकयसोहे पिणद्धगेवेज्ज-अगुलेज्जग-ललियगय-
ललियकयाभरणे^३ नाणामणि-कडग-तुडिय-थभियभुए अहियरूवसस्सिरीए
कुडलुज्जोइयाणणे मउड-दित्तसिए हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे 'मुद्धिया-पिंगल-
गुलीए पालव-पलवमाण-सुकय-पडउत्तरिज्जे'^४ नाणामणिकणगरयण-विमल^५-
महरिह-निउणोविय-मिसिमिसित^६-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-सठिय-पसत्थ-
आविद्ध-वीरवलए, कि वहुणा ? कप्परुक्खए चेव सुअलकिय^७-विभूसिए नरिदे
सकोरेटमल्लदामेण^८ छत्तेण धरिज्जमाणेण चउचामरवालवीइयगे मगल-जय-
सट्ठ-कयालोए^९ 'अणेगणनायग-दडनायग-राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-
मत्ति-महामत्ति-गणग - दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमट्ट-नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-
सत्थवाह-द्वय-सधियालसद्धि सपरिवुडे धवलमहामेहणिग्गए विव गहगण-दिप्पत-
रिक्खतारागणाण मज्जे ससि व्व पियदसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्ख-
मइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव'^{१०} वाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

२५. तए ण से सेणिए राया अप्पणो अदूरसामते उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भट्टा-
सणाइ—सेयवत्थ-पच्चुत्थुयाइ^{११} सिद्धत्थय^{१२}-मगलोवयार-कय^{१३}-सत्तिकम्माइ—
रयावेइ, रयावेत्ता नाणामणिरतणमडिय अहियपेच्छणिज्जरूव महग्घवरपट्टणु-
गय सण्ह-वहुभत्तिसय-चित्तठाण ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-

१ कल्लाण (ग) ।

२. कल्लाण (क, ख, ग) ।

३ कयाभरणे (ग) ।

४. मुद्धिया-पिंगलगुलीए पालव-पलवमाण-
सुकय-पडउत्तरिज्जे (क, ख, ग) ।

५ ° कणागरयण (क, ग) ।

६ मिसिमिसित (क, घ) ।

७. अलकिय (क, ख, घ) ।

८. सकोरिट ° (घ) ।

९. अत्र औपपातिकस्य पाठक्रमो अस्माद् भिन्नो
वर्तते । अर्थसमीक्षया सचाधिक. सगतोप्य-

स्ति—'कयालोए मज्जणघराओ पडिणि-
क्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अणेगणनायग-
दडनायग-राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-
इवभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-द्वय-सधियाल-
सद्धि सपरिवुडे धवल-महामेहणिग्गए इव
गहगण दिप्पत-रिक्ख-तारागणाण मज्जे
ससि व्व पियदसणे नरवइ जेणेव (ओ० सू०
६३) ।

१०. पच्चत्थुयाइ (क); पच्चत्थुयाइ (ग) ।

११. सिद्धत्थय (क, ख, ग) ।

१२. कत्त (ग) ।

किन्नर^१-रुह सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिच्चित्त मुखच्चियवरकणग-
पवरपेरतदेसभाग अत्तिभतरिय जवणिय अछावेड, अंछावेत्ता अत्थरग-मउअ-
मसूरग^२-उत्थइयं घवलवत्थ-पच्चुत्थुय^३ विसिट्ठअगसुहफासय^४ मुमउय धारिणीए
देवीए भद्दासण रयावेड, रयावेत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एवं वयासी
— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्टगमहानिमित्तसुत्तत्थपाढए विविहसन्थकुन्ने
सुमिणपाढए सद्दावेह, सद्दावेत्ता एयमाणतिय खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥

२६ तए ण ते कोडुवियपुरिसा सेणिएण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्टुट्टु-चित्तमाणदिया
जाव^५ हरिसवस-विसप्पमाणहियया^६ करयल-परिगहिय दसणहं सिरसावत्तं
मत्थए अर्जलि कट्टु एव देवो ! तह त्ति आणाए विणएण वयण पडिमुणेंति,
सेणियस्स रण्णो अतियाओ पडिनिक्खमति,^७ रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण
जेणेव सुमिणपाढगगिहाणि तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सुमिणपाढए
सद्दावेति ॥

सेणियस्स सुमिणफल-पुच्छा-पदं

२७ तए ण ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रण्णो कोडुवियपुरिसेहि सद्दाविया समाणा
हट्टुट्टु-चित्तमाणदिया जाव^८ हरिसवस-विसप्पमाणहियया ण्हाया कयवलिकम्मा^९
•कय-कोउय-मगल^{१०}-पायच्छित्ता अप्पमहसघाभरणालकियसरीरा 'हरियालिय-
सिद्धत्थय-कयमुद्धाणा'^{११} सएहि-सएहि गेहेहितो^{१२} पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता
रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण जेणेव सेणियस्स भवणवडेसगदुवारे, तेणेव
उवागच्छति, उवागच्छित्ता एगयओ मिलति^{१३}, मिलित्ता सेणियस्स रण्णो
भवणवडेसगदुवारेण अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्टाण-
साला, जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सेणिय रायं
जएण विजएण वद्धावेति, सेणिएण रण्णा अच्चिय-वदिय-पूइय-माणिय^{१४}-
सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेय-पत्तेय पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयति ॥

२८ तए ण से सेणिए राया जवणियतरिय धारिणि देवि ठवेड, ठवेत्ता पुप्फफल-
पडिपुण्हत्थे परेण विणएण ते सुमिणपाढए एव वयासी—एवं खलु

१. किन्नर (ख, ग) ।

२. °मसूर (क, ख, ग, घ) ।

३. पच्चत्थुय (क), पच्चत्थिय (घ) ।

४. विसिट्ठ^० (क, ख, घ) ।

५. °मुत्तयधारण (ख) ।

६. ना० १।१।१६ ।

७. हयहियया (क) ।

८. °निक्खमति, २ त्ता (ग, घ) ।

९. ना० १।१।१६ ।

१०. स० पा० — कयवलिकम्मा जाव पायच्छित्ता ।

११. सिद्धत्थय-हरियालिया कयमगलमुद्धाणा
(वृषा) ।

१२. गिहेहितो (क) ।

१३. मेलायति (क); मिलायति (ख, घ) ।

१४. माणिय-पूइय (क, ग), पूइय (ख, घ) ।

देवाणुप्पिया । धारिणी देवी अञ्ज तसि तारिसगसि सयणिज्जंसि जाव' महामुमिण पासित्ता ण पडिवुद्धा । तं एयस्स ण देवाणुप्पिया ! उरालस्स जाव' सस्सिरीयस्स महामुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? ॥

सुमिणफल-कहण-पद

२६. तए ण ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रण्णो अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठु-चित्तमाणदिया जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियया त सुमिण सम्म 'ओगिण्हति ओगिण्हत्ता' ईह अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता अण्णमण्णेण सद्धि 'सचालेति, सचालेत्ता' तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा 'पुच्छियट्ठा गहियट्ठा' विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा सेणियस्स रण्णो पुरओ सुमिणसत्थाइ उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एव वयासी—एव खलु अम्ह सामी । सुमिणसत्थसि वायालोस सुमिणा, तीस महामुमिणा—वावत्तारि सव्वसुमिणा दिट्ठा ।

तत्थ ण सामी । अरहतमायरो वा चक्कवट्ठिमायरो वा अरहतसि वा चक्क-वट्ठिसि वा गवभ वक्कममाणसि एएसि तीसाए महामुमिणाण इमे चोद्दसह महामुमिणे पासित्ता ण पडिवुज्झति, त जहा—

सगहणी-गाहा—

१ गय २.वसह' ३ सीह ४ अभिसेय ५ दाम ६ ससि ७ दिणयर ८.भय ९. कुभ ।
१०. पडमसर ११ सागर १२ विमाणभवण १३ रयणुच्चय १४ सिहि च ॥
वासुदेवमायरो वा वासुदेवसि गवभं वक्कममाणसि एएसि चोद्दसह महामुमिणाण अण्णयरे सत्त महामुमिणे पासित्ता ण पडिवुज्झति ।
वलदेवमायरो वा वलदेवसि गवभ वक्कममाणसि एएसि चोद्दसह महामुमिणाण अण्णयरे चत्तारि महामुमिणे पासित्ता ण पडिवुज्झति ।
मडलियमायरो वा मडलियंसि गवभ वक्कममाणसि एएसि चोद्दसह महामुमिणाण अण्णयर महामुमिण पासित्ता ण पडिवुज्झति ।
इमे य सामी ! धारिणीए देवीए एगे महामुमिणे दिट्ठे, त उराले ण सामी ।
धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव' आरोग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मगल्लकारेण ण सामी । धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे । 'अत्थलाभो सामी ! पुत्तलाभो सामी ! रज्जलाभो सामी ! भोगलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामी' । एव

१. ना० १।१।१८, १९ ।

२, ३ ना० १।१।१९ ।

४ परिगिण्हति २ (ख) ।

५ सवाएति २ ता (क), वोलेंति २ (ख) ।

६ गहियट्ठा पुच्छियट्ठा (क, घ) ।

७. उसम (क, ख) ।

८. ना० १।१।२० ।

९ अत्र विशतितम सूत्रमनुसृत्य पाठ म्बीकृत ,

खलु सामी ! धारिणी देवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण जाव' दारगं पयाहिइ । से वि य ण दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णय'-परिणयमित्ते जोव्वणग-मणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कते वित्थिण्ण-विपुल-वलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा ।

त उराले ण सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव' आरोग्ग-तुट्ठि'-दीहा-उय-कल्लाण-मगल्लकारए ण सामी ! धारणीए देवीए सुमिणे ° दिट्ठे त्ति कट्ठु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेति ॥

सुमिणपाढग-विसज्जण-पदं

३० तए ण से सेणिए राया तेसि सुमिणपाढगाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठु-चित्तमाणदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियाए करयल'°परिणगहिय दसणह सिरसावत्तं मत्थए अजलि कट्ठु ° एव वयासी—एवमेय देवाणुप्पिया ! जाव' ज ण तुव्भे वयह त्ति कट्ठु तं सुमिण सम्म पडिच्छइ', ते सुमिणपाढए विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गघ-मल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुल जीवियारिह पीत्तिदाण दलयति', दलइत्ता पडिविसज्जेइ ॥

सेणियस्स सुमिणपसंसा-पद

३१ तए ण से सेणिए राया सीहासणाओ अवभुट्ठेइ, अवभुट्ठेत्ता जेणेव धारिणी देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता 'धारिणि देवि'° एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! सुमिणसत्थसि वायालीसं सुमिणा'° तीस महासुमिणा—वावत्तारि सव्वसुमिणा दिट्ठा जाव' त उराले ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । कल्लाणे ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे घण्णे मगल्ले सस्सिरीए ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण- मगल्ल-कारए ण तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्ठु ° भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेइ ॥

प्रतिषु चात्र पाठस्य क्रमविपर्ययो दृश्यते—
अत्यलाभो सामी । सोक्खलाभो सामी ।
भोगलाभो सामी । पुत्तलाभो रज्जलाभो
(क, ख, ग, घ) ।

१ ना० १।१।२० ।

२ विण्णाय (वृ), विण्णय (वृपा) ।

३ ना० १।१।२० ।

४ म० पा०—आरोग्ग-तुट्ठि जाव दिट्ठे ।

५. ना० १।१।१६ ।

६ स० पा०—करयल जाव एव ।

७ ना० १।१।२१ ।

८ सपडिच्छइ (ग, व) ।

९ दलइ (क) ।

१०. धारणी देवी (क); धारणीए देवीए (ख, ग),
धारणी देवी (घ) ।

११. स० पा०—सुमिणा जाव भुज्जो २ अणु-
वूहति ।

१२. ना० १।१।२६ ।

धारिणीए दोहल-पदं

३२. तए णं सा धारिणी देवी सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणदिया जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियया त सुमिण सम्म पडिच्छति, जेणेव सए वासघरे तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा' °कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ता विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी° विहरइ ॥

३३ तए ण तीसे धारिणीए देवीए दोसु मासेसु वीइक्कतेसु तइए मासे वट्टमाणे तस्स गवभस्स दोहलकालसमयसि अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउवभवित्था —

धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, सपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ,
कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ,
कयलक्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयविह्वाओ ण ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे
णं तासि माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ ण मेहेसु अब्भुग्गएसु अब्भुज्जएसु
अब्भुण्णएसु अब्भुट्ठिएसु सगज्जिएसु सविज्जुएसु सफुसिएसु सथणिएसु'
घतघोय-रुप्पपट्ट-अक-संख-चद-कुद-सालिपिट्ठरासिसमप्पभेसु चिकुर-हरियाल-
भेय-चपग-सण-कोरेट-सरिसव'-पउमरयसमप्पभेसु लक्खारस-सरस-रत्तकिसुय-
जासुमण-रत्तवधुजीवग-जातिहिगुलय'-सरस - कुकुम-उरवभससरुहिर - इदगोवग-
समप्पभेसु' वरहिण-नील-गुलिय'-सुगचासपिच्छ-भिगपत्त-सासग'-नीलुप्पलनियर-
नवसिरीसकुसुम - नवसद्वलसमप्पभेसु जच्चजण-भिगभेय-रिट्ठग-भमरावलि-
गवलगुलिय-कज्जलसमप्पभेसु फुरत-विज्जुय-सगज्जिएसु वायवस-विपुलगगण-
चवलपरिसविकरेसु, निम्मल-वरवारिधारा-पयलिय-पयडमारुयसमाहय-
समोत्थरत-उवरिउवरितुरियवास पवासिएसु,
धारा-पहकर-निवाय-निव्वाविय' मेइणितले हरियगगणकंचुए पल्लविय'° पायव-

१. ना० १।१।१६ ।

२. स० पा०—कयवलिकम्मा जाव विपुलाइ जाव विहरइ ॥

३. सथणिज्जेसु (क) ।

४. सरिसय (ख), सरिस (घ), वाचनान्तरे— 'सण' स्थाने 'कचण' 'सरिसव' स्थाने 'सरिस' ति पठ्यते (वृ) ।

५. हिगुलिय (ग, घ) ।

६. इदगोवसम° (क) ।

७. गुलिया (ख, घ) ।

८. सामग (क, ख), साम (वृपा) ।

९. निर्वापितशब्दाच्च सप्तम्येकवचनलोपो दृश्य (वृ) ।

१०. इद समस्तपदं स्यादपि तथापि वृत्तिकृता 'पल्लविय' पद स्वतरूपेण व्याख्यातम्— इह सप्तमीवहुवचनलोपो दृश्य, तत. पल्लवितेषु (वृ) ।

गणेषु वल्लिवियाणेषु' पसरिएसु उन्नएसु' सोभग्गमुवगाएसु' वेभारगिरि-
 प्पवाय-तड-कडगविमुक्केसु उज्जरेसु, तुरियपहाविय-पल्लोट्टफेणाउलं सकलुस
 जल वहतीसु गिरिनदीसु सज्जज्जुण-नीव-कुडय-कदल-सिलिव'-कलिएनु
 उववणेषु,
 मेहरसिय - हट्टतुट्टचिट्टिय - हरिसवसपमुक्ककठकेकारव मुयतेसु वरहिणेषु'
 उउवस'-मयजणिय-तरुणसहयरि-पणच्चिएसु नवसुरभि-सिलिव-कुडय-कदल-
 कलव-गघट्टणिं मुयतेसु उववणेषु ।
 परहुय-रुय-रिभिय-सकुलेसु उट्टाडत-रत्तइंदगोवय-थोवय-कारुण्णविलविएमु
 ओणयतणमडिएसु ददुदुरपयपिएसु सर्पिडिय-दरिय-भमर-महुयरिपहकर-
 परिलित-मत्त-छप्पय-कुसुमासवलोल-महुर-गुजतदेसभाएसु उववणेषु ।
 परिसामिय'-चद-सूर-गहगण-पणट्टनक्खत्ततारगपहे' इदाउह-वट्ट-चिवपट्टम्मि'
 अवरतले उड्डीणवलागपति'^१-सोभतमेहवदे कारडग-चक्कवाय-कलहस-उस्सुयकरे
 सपत्ते पाउसम्मि काले ण्हायाओ'' कयवलिकम्माओ कय-कोउय-मगल-पायच्छि-
 ताओ 'किं ते?'^२ 'वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रडय-ओविय''-कडग-^३'खुडुय'-
 विचित्तवरवलयथभियभुयाओ कुडलउज्जोवियाणणाओ''^४ रयणभूसियगीओ,
 नासा''^५-नीसासवाय-वोज्ज चक्खुहर वण्णफरिससजुत्त हयलालापेलवाइरेय

- १ °सु (क, ख), अन्यत्रापि यत्र क्वचित् [भ० ६।१४४ सूत्रम्य पादटिप्पण] असौ
 एतत् दृश्यते । पाठ व्याख्यादृष्ट्या सरलोम्ति ।
 २ पाठान्तरे - नगेषु पर्वतेषु नदेषु वा ह्रदेषु १३ उचिय (ग, घ) । वृत्तिकारेणापि 'उचिय'
 (वृ) । पद व्याख्यातमस्ति—उचितानि योग्यानि
 ३ सोहग्ग° (क) । (वृ) । किन्तु अत्र 'ओविय' पद समीचीन-
 ४ सिलिद्ध (ख, ग) । मस्ति । सभवतो लिपिदोषेण परिवर्तन
 ५. वरिहणेषु (क) । जातम् । २४ सूत्रे 'ओविय' इति पाठो
 ६. उदु° (ख), उहु° (ग, घ) । लभ्यते । तत्र वृत्तिकारेण 'ओविय' ति
 ७ परिसामिय (क, ग, घ, वृपा) । परिकर्मितानि इति' व्याख्या कृतास्ति । अत्र
 ८ °तारागपहे (क), °तारागणपहे (ग) । वृत्तिकारेण 'उचिय' पाठो लब्ध. तेन तथा
 ९. °पट्टसि (ख, घ) । व्याख्यात ।
 १०. °वलागवति (ख) । १४. खदुय (घ), खडुय (घ) ।
 ११ किंभूता अम्मयाओ इत्याह—ण्हायाओ १५ खडुय- एगावलि- कठमुरज- तिसरय-वरवलय-
 इत्यादि (वृ) । हेमसुत्त-कुडलुज्जोवियाणणाओ (वृपा) ।
 १२. किन्तो (क); किन्ने (ग), किं रो (घ) । १६. नास (क) ।
 किं तत् 'यत् करोति' इति शेष । किं च

धवलकणय-खचियंतकम्मं आगासफलिह-सरिसप्पभं अंसुयं पवर' परिहियाओ, दुगुलसुकुमालउत्तरिज्जाओ' 'सव्वोउय-सुरभिकुसुम-पवरमल्लसोभियसिराओ'^१ कालागरुधूवधूवियाओ सिरी-समाणवेसाओ, सेयणय^२-गधहत्थिरयण दुरूढाओ समाणीओ, सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण 'चदप्पभवइरवेरुलिय-विमलदंड-सखकुद-दगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगास-चउचामरवालवीजियं-गीओ'^३ सेणिएण रण्णा सद्धि हत्थिखधवरगएण पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगच्छमाणीओ चाउरगिणीए सेणाए-महया हयाणीएणं गयाणीएणं रहाणीएण पायत्ताणीएणं-सव्विड्डीए^४ सव्वज्जुईए^५ •सव्ववलेण सव्वसमुदएण सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसभमेणं सव्वपुप्फगधमल्लालंकारेण सव्वतुडिय-सद्-सण्णिणाएण महया डड्डीए महया जुईए महया वलेण महया समुदएण महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएण सख-पणव-पडह-भेरि-भल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइग-दुदुहि^६ -निग्घोसनाइयरवेण रायगिह नयर सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु आसित्तसित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्त^७ •पचवण्ण-सरस-मुरभि-मुक्क-पुप्फपुजोवयारकलिय कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्जभक्त-सुरभि-मघमघेत-गधुद्धयाभिरामं^८ सुगधवर (गध ?) गधिय^९ गधवट्टिभूय अवलोएमाणीओ नागरजणेण अभिनदिज्जमाणीओ^{१०} गुच्छ-लया-रुक्ख-गुम्म-वल्लि-गुच्छोच्छाइय सुरम्म वेभारगिरिकडग^{११}-पायमूल सव्वओ समता 'आहिडमाणीओ-आहिडमाणीओ दोहल^{१२} विणिति^{१३} ।

तं जड ण अहमवि मेहेसु अब्भुगएसु जाव दोहल विणिज्जामि^{१४} ॥

१. प्रवरमिहानुस्वारलोपोदृश्य (वृ) । 'ग' प्रती 'पवर' इति पाठोऽपि लभ्यते ।
२. दुगुल्ल^० (क) ।
३. पाठान्तरे—सर्वतुं कमुुरभिकुसुमं सुरचिता. प्रलम्बा शोभमाना. कान्ता चित्रा माला यासा तास्तथा । एवमन्यान्वपिपदानि बहुवचनानि सस्करणीयानि । इह वर्णके वृहत्तरो वाचनाभेद (वृ) ।
४. सेयणय (ख) ।
५. अयमेवार्थो वाचनान्तरे इत्थमधीत — सेयवरचामराहि उद्धुवमाणीहि-उद्धुवमाणीहि (वृ) ।
६. सव्व^० (ख) ।
७. स० पा०—सव्वजुईए जाव निग्घोसनाइयरवेण ।
८. स० पा०—सामज्जिओवलित्त जाव सुगधवरगधिय ।
९. १।१।७६ सूत्रे, वृत्ते. पूरितपाठे 'गध' शब्दो विद्यते । औपपातिकस्य ५५ सूत्रेपि स लभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।
१०. अभिनदिज्जमाणीओ २ (क) ।
११. वेभार^० (ख, ग) ।
१२. डोहल (क, घ) ।
१३. विणएति (क), विणियति (घ) ।
१४. वृत्तिकारस्य सम्मुखे सम्मता आदर्शा आसन्तेषु 'समता आहेडज्ज' इत्येतावानेव पाठ आसीत् । अग्निमस्य पाठस्य वृत्तिकृता

धारिणीए चिता-पदं

३४ तए ण सा धारिणी देवी तसि दोहलसि अविणिज्जमाणसि असपत्तदोहला असपुण्णदोहला असम्माणियदोहला सुक्का भुक्खा निम्मसा ओलुग्गा ओलुग्ग-सरीरा पमइलदुव्वला किलता ओमथियवयण-नयणकमला पडुइयमुही करयल-मलिय व्व चपगमाला नित्तेया दीणविवणवयणा जहोचिय-पुप्फ-गंध-मल्लाल-कार-हारं^१ अणभिलसमाणी किड्डारमणकिरियं^२ परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणंदा भूमिगयद्वितीया ओहयमणसकप्पा^३ •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्जाणोव-गया^४ भियाइ ॥

पडिचारियाण चिताकारणपुच्छा-पदं

- ३५ तए णं तीसे धारिणीए देवीए अगपडिचारियाओ अविभतरियाओ दासचेडियाओ^५ धारिणि देवि ओलुग्ग^६ भियायमाणिं^७ पासति, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं^८ तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव भियायसि ?
- ३६ तए ण सा धारिणी देवी ताहि अगपडिचारियाहि अविभतरियाहि दासचेडि-याहि^९ य एव वुत्ता समाणी ताओ दासचेडियाओ^{१०} नो आढाइ नो परियाणइ^{११}, 'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी'^{१२} तुसिणीया संचिट्टइ^{१३} ॥
- ३७ तए ण ताओ अगपडिचारियाओ अविभतरियाओ दासचेडियाओ धारिणि देवि दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—किण्ण तुमे^{१४} देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्ग-सरीरा जाव^{१५} भियायसि ?
३८. तए णं सा धारिणी देवी ताहि अगपडिचारियाहि^{१६} अविभतरियाहि दासचेडि-

वाचनान्तरत्वेन उल्लेख. कृत, तस्य सगतत्वमपि प्रदर्शितम्—आहेडज्ज त्ति आहिडते । अनेन चैव मुक्तव्यतिकरमाजा नामान्येन स्त्रीणा प्रणमाद्वारेणात्मविपयेऽकालमेघदोहदो धारिण्या प्रादुरभूत् इत्युक्तम् । वाचनान्तरे तु—ओलोयमाणीओ २ आहिडे-माणोओ २ डोहल विणिगति । त जइ ण अहमवि मेहेसु अम्भुगएनु जाव डोहल विणिज्जामि । संगतश्चाय पाठ इति (वृ) ।

१. मल्लालकाराहार (क, ख, ग) ।
२. कीडा (क, ख, घ) ।
३. स० पा०—ओहयमणसकप्पा जाव भियाइ ।
४. चेडीओ (क, ग) ।

५. ना० १।१।३४ ।

६. अत्र पाठसक्षेपकरणे सुक्ख भुक्ख निम्मस इति विज्ञेयणत्रयी न विवक्षितास्ति । एवमग्रेपि ।

७. किं न (क); किं ण (ख); किण्ह (ग) ।

८. °चेडीहि (ख, ग) ।

९. चेडियाओ (ख, ग) ।

१०. परियाणाइ (ग), परियाणेत्ति (घ) ।

११. °माणा अपरियाणमाणा (ख, घ) ।

१२. चिट्टइ (क) ।

१३. तुमं (क, ग) ।

१४. ना० १।१।३४ ।

१५. °परियारियाहि (क) ।

याहिं दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणइ, अणाढाय-
माणी अपरियाणमाणी तुसिणीया सच्चिदुइ ॥

पडिचारियाणं सेणियस्स निवेदण-पदं

३६ तए ण ताओ अंगपडिचारियाओ अंभितरियाओ दासचेडियाओ धारिणीए
देवोए अणाढाइज्जमाणोओ अपरिजाणिज्जमाणोओ तहेव सभताओ समाणीओ
धारिणीए देवीए अतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सेणिए
राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता करयलपरिग्गहिय^१ •दसणह सिरसावत्त
मत्थए अजलि^२ कट्टु जएणं विजएण वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एव
खलु सामी । किंपि अज्ज धारिणी देवी ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव^३ अट्टुज्झा-
णोवगया भियायइ ॥

सेणियस्स चिंताकारणपुच्छा-पदं

- ४० तए ण से सेणिए राया तासि अंगपडिचारियाण अतिए एयमट्टु सोच्चा निसम्म
तहेव सभते समाणे सिग्घ तुरियं चवल वेइय^४ 'जेणेव धारिणी देवी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छत्ता' धारिणि देवि ओलुग्ग ओलुग्गसरीर जाव^५ अट्टुज्झा-
णोवगय भियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किण्ण तुम देवाणुप्पिए ।
ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टुज्झाणोवगया भियायसि ?
- ४१ तए ण सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एव वुत्ता समाणी नो आढाइ नो
परियाणइ जाव^६ तुसिणीया सच्चिदुइ ॥
- ४२ तए ण से सेणिए राया धारिणि देवि दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—किण्ण
तुम देवाणुप्पिए । ओलुग्गा ओल्लुगसरीरा जाव^७ अट्टुज्झाणोवगया भियाससि ?
- ४३ तए ण सा धारिणी देवी सेणिएण रण्णा दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ता समाणी
नो आढाइ नो परियाणइ^८ तुसिणीया सच्चिदुइ ॥
४४. तए ण से सेणिए राया धारिणि देवि सवह-साविय करेइ, करेत्ता एव वयासी—
किण्णं देवाणुप्पिए^९ ! अहमेयस्स अट्टुस्स अणरिहे सवणयाए ? तो^{१०} ण तुम
मम अयमेयारूव मणोमाणसियं दुक्ख रहस्सीकरेसि ॥

१. स० पा०—करयलपरिग्गहिय जाव कट्टु ।

६. ना० १।१।३६ ।

२. ना० १।१।३४ ।

७. ना० १।१।३४ ।

३. चेइय (क, ख, ग, घ) ।

८. पू०—ना० १।१।३६ ।

४. जेणेव धारिणी देवी तेणेव पहारेत्थ गमणाए
तएण सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी
तेणेव उवागच्छइ २ (ग, वूपा) ।

९. किण्हकिण्णमिति वा पाठ (वृ) ।

१०. तुम देवाणु^० (क, घ) । अत्र 'तुम' अना-
वश्यको विद्यते ।

५. ना० १।१।३४ ।

११. ता (घ) ।

घारिणीए चिंताकारणनिवेदन-पदं

४५ तए ण सा घारिणी देवी सेणिएण रण्णा सवह-साविथा समाणी सेणिय राय एव वयासी—एव खलु सामी । मम तस्स उरालस्स जाव' महासुमिणस्स तिण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अयमेयारूवे' अकालमेहेसु दोहले पाउवभूए— धण्णओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव' वेभारगिरि-कडग'-पायमूल सव्वओ समता आहिडमाणीओ-आहिडमाणीओ' दोहल विणिति । त जइ ण अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव' दोहल विणेज्जामि । 'तए णं अह' सामी । अयमेयारूवसि अकालदोहलसि अविणिज्जमाणसि ओलुग्गा जाव' अट्टज्झाणोवगया भियामि ॥

सेणियस्स आसासण-पद

४६ तए ण से सेणिए राया घारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म घारिणिं देवि एव वयासी—मा ण तुम देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा जाव' अट्टज्झाणोवगया भियाहि । अह ण तह' करिस्सामि'' जहा ण तुव्वभ अयमेयारूवस्स अकाल-दोहलस्स मणोरहसपत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु घारिणिं देवि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुन्नाहि मणामाहि वग्गूहि समासासेइ, समासासेत्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे घारिणीए देवीए एयं अकालदोहल बहूहि आएहि य उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य—'चउव्विहाहि बुद्धीहि'' अणुचितेमाणे-अणुचितेमाणे तस्स दोहलस्स आय वा उवाय वा 'ठिइ वा उप्पत्ति वा'' अविदमाणे ओहयमणसकप्पे जाव'' भियायइ ॥

अभयकुमारस्स सेणियं पइ चिंताकारणपुच्छा-पदं

४७. तयाणतर च ण अभए'' कुमारे 'ण्हाए कयवलिकम्मे'' •कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते° सव्वालकारविभूसिए पायवदए पहारेत्थ गमणाए ॥

१ ना० १।१।१६ ।

२ अतमेया० (ग) ।

३ ना० १।१।३३ ।

४. वेव्वमार० (ख, ग) ।

५ द्रष्टव्य १।१।३३ सूत्रस्यासी पाठ ।

६ ना० १।१।३३ ।

७. तए ण ह (क); तते ण ह (ख), तेणा ह (घ) ।

८, ९ ना० १।१।३४ ।

१० तहा (घ) ।

११. घत्तीहामि (वृ), करिस्सामि (वृपा) ।

१२ चउव्विहाए बुद्धीए (ग) ।

१३ उप्पत्ति वा ठिइ वा (क); उप्पत्ति वा (वृपा) ।

१४. ना० १।१।३४ ।

१५. अभय (क, ग, घ) ।

१६. स० पा०—कयवलिकम्मे जाव सव्वालकार० ।

४८ तए णं से अभए कुमारे^१ जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणिय राय ओह्यमणसकप्प जाव^२ भियायमाण पासइ, पासित्ता अयमेयारूवे अज्भत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अण्णया^३ मम सेणिए राया एज्जमाण पासइ, पासित्ता आढाइ परियाणइ सक्कारेइ सम्माणेइ [इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुन्नाहि मणामाहि ओरालाहि वग्गूहि ?] आलवइ सलवइ अद्धासणेण^४ उवनिमतेइ मत्थयसि अग्घाइ । इयाणि मम सेणिए राया नो आढाइ नो परियाणइ नो सक्कारेइ नो सम्माणेइ नो इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुन्नाहि मणामाहि ओरालाहि वग्गूहि आलवइ सलवइ नो अद्धासणेण उवनिमतेइ नो मत्थयसि अग्घाइ^५, कि पि ओह्यमणसकप्पे जाव^६ भियायइ । त भवियव्व ण एत्थ कारणेण । त सेय खलु मम सेणिय राय एयमट्ठ पुच्छित्तए— एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणामेव^७ सेणिए राया तेणामेव^८ उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अज्जलि कट्ठु जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण ताओ ! अण्णया ममं एज्जमाण पासित्ता आढाइ परियाणह^९ 'सक्कारेह सम्माणेह'^{१०} आलवह सलवह अद्धासणेण उवनिमतेह^{११} मत्थयसि अग्घायह^{१२} । इयाणि ताओ ! तुब्भे मम नो आढाइ जाव 'नो मत्थयसि अग्घायह'^{१३} कि पि ओह्यमणसकप्पा जाव भियायइ । त भवियव्व ण ताओ ! एत्थ कारणेण । तओ तुब्भे मम ताओ ! एय कारण अग्गूहमाणा^{१४} असकमाणा अनिह्वमाणा अपच्छाएमाणा जहाभूतमवितहमसदिद्ध एयमट्ठ आइक्खइ । तए णह तस्स कारणस्स अतगमण गमिस्सामि ॥

सेणियस्स चित्ताकारणनिवेदन-पद

४९ तए ण से सेणिए राया अभएण कुमारेण एव वुत्ते समाणे अभय कुमार एव वयासी—एव खलु पुत्ता ! तव चुल्लमाजयाए^{१५} धारिणीदेवीए तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु अइक्कतेसु तइयमासे वट्टमाणे दोहलकालसमयसि अयमेयारूवे

१. × (घ) ।

२. ना० १।१।३४ ।

३. अण्णया य (क), अण्णतो (घ) ।

४. आसणेण (क, ख, ग) । नोयुक्तपुनरावर्तने 'अद्धासणेण' पाठोस्ति, अत्रापि तथैव युज्यते ।

५. अग्घायइ (क, ख, ग) ।

६. ना० १।१।३४ ।

७. जेणेव (घ) ।

८. तेणेव (घ) ।

९. स० पा०—परियाणह जाव मत्थयसि

१०. पू०—अस्य सूत्रस्य पूर्वभाग ।

११. अग्घायह आसणेण उवनिमतेह (क, घ) ।

१२. नो आसणेण उवनिमतेह (क, ख, ग, घ) ।

१३. अग्गूहमाणा (ख, ग, घ) ।

१४. तुल्ल० (ग) ।

दोहले पाउब्भवित्था—घण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ तहेव निरवसेसं भाणियव्व जाव^१ वेभारगिरिकडग-पायमूल सव्वओ समंता आहिडमाणीओ-आहिड-माणीओ दोहल विणिति । त जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव दोहल विणिज्जामि ।

तए ण अह पुत्ता धारिणीए देवीए तस्स अकालदोहलस्स व्हाहि आएहि य उवाएहि य जाव^२ उप्पत्ति अविदमाणे ओहयमणसकप्पे जाव^३ भियामि, तुम आगय पि न याणामि । त एतेण कारणेण अह पुत्ता । ओहयमणसकप्पे जाव भियामि ॥

अभयस्स आसासण-पद

५० तए ण से अभए कुमारे सेणियस्स रण्णो अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ट-चित्तमाणदिए जाव^४ हरिसवस-विसप्पमाणहियए सेणिय राय एव वयासी—मा ण तुब्भे ताओ ! ओहयमणसकप्पा जाव^५ भियायह । अहं ण तहां करिस्सामि जहा ण मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसपत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु सेणिय राय ताहि इट्ठाहि^६ •कताहि पियाहि मणुन्नाहि मणामाहि वग्गूहि^७ समासासेइ ॥

५१ तए ण से सेणिए राया अभएण कुमारेण एव वुत्ते समाणे हट्ट तुट्ट-चित्तमाणदिए जाव^८ हरिसवस-विसप्पमाणहियए अभय कुमार सक्कारेइ समाणेइ, पडिविसज्जेइ ॥

अभयस्स देवाराहण-पदं

५२. तए णं से 'अभए कुमारे' 'सक्कारिए सम्माणिए'^९ पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रण्णो अतियाओ पडिनिक्खमड, पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सए भवणे, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे निसण्णे ॥

५३ तए णं तस्स अभयस्स^{१०} कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए^{११} •चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^{१२} समुप्पज्जित्था—नो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएण मम

१ ना० १।१।३३ ।

२ ना० १।१।४६ ।

३ ना० १।१।३४ ।

४ ना० १।१।१६ ।

५. तोह्य^० (क) ।

६ ना० १।१।३४ ।

७. स० पा०—इट्ठाहि जाव समासासेइ ।

८. ना० १।१।१६ ।

९. अभयकुमारे (ख, ग, घ) ।

१० सक्कारिय^० (क), सक्कारिय सम्माणिय (ख, ग) ।

११. अभय (ख, ग, घ) ।

१२. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

चुल्लमाउयाए^१ धारिणीए देवीए अकालदोहलमणोरहसपत्ति करित्तए, नन्नत्थ^२ दिव्वेण उवाएण । अत्थि ण मज्झ^३ सोहम्मकप्पवासी पुव्वसगइए देवे महिड्ढीए^४ •महज्जुइए महापरक्कमे महाजसे महव्वले महाणुभावे^० महासोक्खे^५ । तं सेयं खलु मम पोसहसालाए पोसहियस्स बभचारिस्स^६ उम्मुक्कमणिसुवण्णस्स ववगयमालावण्णगविलेवणस्स निक्खित्तसत्थमुसलस्स एगस्स अवीयस्स दब्भ-सथारोवगयस्स अट्टमभत्त पगिण्हित्ता^७ पुव्वसगइय देव मणसीकरेमाणस्स विहरित्तए ।

तए ण पुव्वसगइए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूव अकाल-मेहेसु दोहल विणेहित्ति—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव पोसहसाला तेणामेव^८ उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता^९ दब्भसथारग दुरुहइ, दुरुहित्ता अट्टमभत्त^{१०} पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बभचारो जाव पुव्वसगइय देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे^{११} चिट्ठइ ॥

देवागमण-पदं

५४. तए ण तस्स अभयकुमारस्स अट्टमभत्ते परिणममाणे पुव्वसगइयस्स देवस्स आसण चलइ ।
५५. तए ण से पुव्वसगइए सोहम्मकप्पवासी देवे आसण चलय पासइ, पासित्ता ओहि पउजइ ।
५६. तए ण तस्स पुव्वसंगइयस्स देवस्स अयमेयारूवे अज्भत्थिए^{१२} •चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^० समुप्पज्जित्था—एव खलु मम पुव्वसगइए जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नयरे पोसहसालाए पोसहिए अभए नाम कुमारे अट्टमभत्तं पगिण्हित्ता ण मम मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ । त सेयं खलु मम अभयस्स कुमारस्स अतिए पाउव्वभित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण

१. तुल्ल ° (ग) प्राय सर्वत्र ।

२. ण अण्णत्थ (क) ।

३. मम (घ) ।

४. स० पा०—महिड्ढीए जाव महासोक्खे ।

५. महसोक्खे (क, ख) ।

६. बभयारिस्स (घ) ।

७. परिगिण्हित्ता (क, घ) ।

८. तेणेव (घ) ।

९. पडिलेहेत्ता दब्भसथारयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता (ख, घ), अत्र उपासकदशाया. प्रथमाध्ययने (६०) सूत्रे एव पाठो विद्यते—दब्भसथारयं सथरेइ, सथरेत्ता ° ।

१०. अट्टम ° (ख) ।

११. × (क, ख, घ) ।

१२. स० पा०—अज्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

समोहणइ^१, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं^२ निसिरइ, तं जहा—रयणाण वडराण^३ वेरुलियाण लोहियक्खाण मसारगल्लाण हसगवभाण पुलगाण सोगधियाण जोईरसाण अकाण अंजणाणं रययाणं जायरूवाणं अंजणपुलगाण फलिहाण रिट्ठाण अहावायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परिगिण्हइ, परिगिण्हित्ता अभयकुमारमणुकपमाणे देवे 'पुव्वभवजणिय-नेह-पीइ-बहुमाणजायसोगे'^४ तओ विमाणवरपुडरीयाओ रयणुत्तमाओ 'घरणियल-गमण-तुरिय-सजणिय-गमणपयारो'^५ 'वाघुण्णिय-विमल-कणग-पयरग-वडिसगमउडुक्क-डाडोवदसणिज्जो अणेगमणि-कणगरयणपहकरपरिमडिय-भत्तिचित्त-विणि-उत्तग-मणुगुणजणियहरिसो पिखोलमाणवरललियकुडलुज्जलिय-वयणगुणजणिय-सोम्मरूवो'^६ उदिओ विव कोमुदीनिसाए सणिच्छरगारकुज्जलियमज्झभागत्थो नयणाणदो सरयचदो दिव्वोसहिपज्जलुज्जलियदसणाभिरामो उदुलच्छिसमत्त-जायसोहो पइट्ठगघुद्धयाभिरामो मेरू विव नगवरो विगुव्वियविचित्तवेसो दीवसमुद्दाण असखपरिमाणनामधेज्जाण मज्झकारेण वीइवयमाणो उज्जोयतो^७ पभाए विमलाए जीवलोय रायगिहं पुरवरं च अभयस्स पास ओवयइ दिव्व-रूवधारी ।

५७ तए ण से देवे अंतलिकखपडिवण्णे दसद्धवण्णाइ सखिखिणियाइं पवर वत्थाइं परिहिए^८ अभयं कुमार एव वयासी—अहं ण देवाणुप्पिया ! पुव्वसंगइए

१. समोहणति (क, ख, घ) ।

२. दड उड्ठ (ग) ।

३. वयराण (ग, घ) ।

४. रयणाण (ग, घ) इत्यपपाठ ।

५. वाचनान्तरे—पूर्वभवजनितस्नेहप्रीतिबहुमान-जनितयोभ (वृ) ।

६. वाचनान्तरे—घरणीतलगमनसजनितमन प्रचार (वृ) ।

७. ०मोमरूवो (ख, घ), वाचनान्तरे पुनरेव विशेषणत्रय दृश्यते—वाघुन्निय-विमलकणग-पयरग-वडेसगपकपमाण - चललोल - ललिय-पग्निवमाण-नर-मगर-तुरग-मुहसय-विणिग्ग-ओग्गिण्ण - पवरमोत्तियविरायमाणमउडुक्क-टावडोवदरिमणिज्जो अणेगमणिकणगरयण-पहकरपरिमडिय-भाग भत्तिचित्त-विणिउत्तग-मणुगुणजणिय-पिखोलमाणवरललियकुडलुज्ज-

लियअहियआभरणजणियसोभे गयजलमल-विमलदंसणविरायमाणरूवे (वृ) ।

८. उज्जोवेतो (क, ग) ।

९. 'परिहिए' इतिपाठानन्तर आदर्शेषु एक्को ताव एसो गमो । अन्नो वि गमो' इत्युल्लेखोस्ति । तदनन्तरं द्वितीयो गमः साक्षाल्लिखितोस्ति, तेनादर्शेषु गमद्वयस्य सम्मिश्रण जातम् । वृत्तावपि अस्य सूचना लभ्यते, यथा—एकस्तावदेव गम. पाठोन्यो पि द्वितीयो गमो वाचनाविशेष. पुस्तकान्तरेषु दृश्यते । अस्योल्लेखस्यानुसारेण द्वितीयगमस्य पाठ इत्थं भवति—“तएण से देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चडाए सीहाए उद्धुयाए जयणाए छेयाए दिव्वाए देवगईए जेणामेव जंचुद्दीवे दीवे भारहे वासे जेणामेव दाहिण्हडभरहे

सोहम्मकप्पवासी देवे महिड्डीए^१ जं णं तुमं पोसहसालाए अट्टमभत्तं पगिण्हित्ता^२ ण मम मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठसि, त एस ण देवाणुप्पिया । अह इह ह्वमागए । सदिसाहि^३ ण देवाणुप्पिया । किं करेमि ? किं दलयामि^४ ? किं पयच्छामि ? किं वा ते हियइच्छियं^५ ?

५८. तए ण से अभए कुमारे त पुव्वसगइय देव अतलिक्खपडिवण्ण पासित्ता हट्टतुट्ठे पोसह पारेइ, पारेत्ता करयल^६ •परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए^७ अजलिं कट्टु एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालदोहले पाउव्वभूए—धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ तहेव पुव्वगमेण जाव^८ वेभारगिरिकडग-पायमूल सव्वओ समता आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहल विणिति । त जइ ण अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव^९ दोहल विणेज्जामि—त ण तुम देवाणुप्पिया । मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूव अकालदोहलं विणेहि ॥

देवस्स अकालमेहविउव्वण-पदं

५९ तए ण से देवे अभएण कुमारेण एव वुत्ते समाणे हट्टतुट्ठे अभय कुमार एव वयासी—

तुम ण देवाणुप्पिया । सुनिव्वुय-वीसत्थे अच्छाहिं । अह ण तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूव अकालदोहलं^{१०} विणेमि ति कट्टु अभयस्स कुमारस्स अतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उत्तरपुरत्थिमे ण वेभार-पव्वए वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता सखेज्जाइ जोयणाइ दड निसिरइ^{११} जाव^{१२} दोच्चपि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता खिप्पा-मेव सगज्जिय सविज्जुय सफुसिय पचवण्णमेहनिणाओवसोहिय दिव्व पाउससिरि विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणामेव^{१३} अभए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

रायगिहे नयरे पोसहसाला अभयकुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अत-लिक्खपडिवन्ने दसद्ववण्णाइं सखिखिणियाइ पवर वत्थाइ परिहिए” ।

वृत्तिकारेण द्वितीयगमविषये एका सूचनापि दत्तास्ति—अय द्वितीयो गमो जीवाभिगम-सूत्रवृत्त्यनुमारेण लिखित (वृ) ।

१. महिड्डीए (ख, घ), पू०—ना० १।१।३३ ।

२ सगिण्हित्ता (क, ख, ग) ।

३ सदिसहा (क); सदिसह (घ) ।

४. दलामि (ख, ग, घ) ।

५ हिय^० (ग) ।

६. स० पा०—करयल अजलिं ।

७,८. ना० १।१।३३ ।

९. अत्थाहि (ग, घ) ।

१०. जावदोहल (क) ।

११ निसरति (ख, ग, घ) ।

१२. ना० १।१।५६ ।

१३. जेणेव (ख, ग, घ) ।

अभयं कुमारं एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया । मए तव पियट्टयाए
'सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया'^१ दिव्वा पाउससिरी विउव्विया, त विणेऊ णं
देवाणुप्पिया । तव चुल्लमाउया धारिणी देवी अयमेयारूव अकालदोहल ॥

धारिणीए दोहद-पूरण पद

- ६० तए ण से अभए कुमारे तस्स पुव्वसगइयस्स 'सोहम्मकप्पवासिस्स देवस्स'^२
अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म हट्टुट्टे सयाओ भवणाओ पडिनिक्खमइ, पडि-
निक्खमित्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'^३
•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए^० अर्जलि कट्टु एव वयासी—एवं खलु ताओ !
मम पुव्वसगइएण सोहम्मकप्पवासिणा देवेण खिप्पामेव सगज्जिया सविज्जुया
(सफुसिया ?) पचवण्णमेहनिणाओवसोभिया दिव्वा पाउससिरी विउव्विया ।
त विणेऊ ण मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं ॥
- ६१ तए ण से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म
हट्टुट्टे^४ कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो !
देवाणुप्पिया । रायगिह नगर सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-
पहेसु आसित्तसित्त-सुइय-समज्जिओवलित्त जाव^५ सुगधवर [गध ?] गधिय
गधवट्टिभूय करेह य कारवेह य, एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥
- ६२ तए ण ते कोडुवियपुरिसा^६ •सेणिएण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्टुट्टु-चित्त-
माणदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया तमाण-
त्तिय^० पच्चप्पिणंति ॥
६३. तए ण से सेणिए राया दोच्चंपि कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । हय-गय-रह-पवरजोह^७-कलियं चाउरगिणि सेणं
सन्नाहेह, सेयणय च गधहत्थि परिकप्पेह । तेवि तहेव करेत्ति जाव पच्च-
प्पिणत्ति ॥
- ६४ तए ण से सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

१ मगज्जिय सफुसिय सविज्जुया (क, ख, ग,
घ), पूर्वपक्तो 'सफुसिय' अतिम पदमस्ति
अत्र च 'सविज्जुया' इत्यतिमं पदम् । कय-
मसोविपर्ययो जात इति न निश्चयपूर्वक
वक्तु शक्यते ।

२ देवस्स सोहम्मकप्पवासिस्स (क, ख, ग, घ) ।

३. स० पा०—करयल अर्जलि ।

४ हट्टुट्टु (क, ग, घ) ।

५. ना० १।१।३३ ।

६. स० पा०—कोडुवियपुरिसा जाव पच्चप्पि-
णत्ति ।

७ जोहपवर (क, ख, ग, घ) । अष्टमाध्यय-
नरय १६१ सूत्रानुसारेण असौ पाठ.
परिवर्तित ।

८. सेन्न (क, ख, ग, घ) ।

धारिणि देवि एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए । सगज्जिया' •सविज्जुया सफुसिया दिव्वा° पाउससिरी पाउव्भूया । त ण तुम देवाणुप्पिए । एय अकाल-दोहल विणेहि ॥

६५. तए ण सा धारिणी देवी सेणिएण रण्णा एव वुत्ता समाणी हट्टुट्टा जेणामेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघर अणुप्पविसई, अणुप्प-विसित्ता अतो अतेउरसि ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ता 'कि ते' वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रइय-ओविय-कडग-खुड्डय-विचित्त वरवलयथभियभुया जाव' 'आगास-फालिय-समप्पभ' असुय नियत्था', सेयणय गधहत्थि दुरूढा समाणी अमय-महिय-फेणपुज-सन्निगासाहि सेयचामरवाल-वीयणीहि वीइज्जमाणी-वीइज्जमाणी सपत्थिया ॥

६६. तए ण से सेणिए राया ण्हाए कयवलिकम्मे' •कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते अप्पमह्गघाभरणालकिय° सरीरे हत्थिखधवरगए सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण चउचामराहि वीइज्जमाणे धारिणि देवि पिट्टुओ अणुगच्छइ ॥

६७. तए ण सा धारिणी देवी सेणिएण रण्णा हत्थिखधवरगएण पिट्टुओ-पिट्टुओ समणुगम्ममाण-मग्गा ह्य-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा महया भड-चडगर-वदपरिक्खित्ता सव्विड्डीए सव्वज्जुईए जाव' दूट्टुभिनिग्घोसनाइयरवेण रायगिहे नयरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर'- •चउम्मुह°-महापहपहेसु नागरजणेण अभिनदिज्जमाणी-अभिनदिज्जमाणी जेणामेव 'वेभारगिरि-पव्वए' तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेभारगिरि-कडग-तडपायमूले आरामेसु य 'उज्जाणेषु य'° काणणेषु य वणेषु य वणसडेसु य 'रुव्वेसु य'° 'गुच्छेसु य'° गुम्मेसु य लयासु य वल्लीसु य कदरासु य दरीसु य चुढीसु'° य जूहेसु'° य कच्छेसु य नदीसु य सगमेसु य 'विवरएसु य'° अच्छमाणी'°

१. स० पा०—सगज्जिया जाव पाउससिरी ।

२. किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः ।

३. ना० १।१।३३ ।

४. सप्पभ ° फलिय ° (क), ° फलिहसप्पभ (ख), ° फालिय सप्पभ (ग), ° फालिह-सप्पभ (घ), ° फलिह-सरिसप्पभ (१।१।३३)

५. नियच्छा (क, ग) ।

६. सं० पा०—कयवलिकम्मे जाव सरीरे ।

७. ना० १।१।३३ ।

८. स० पा०—चच्चर जाव महापहपहेसु ।

९. वेभार ° (ख, ग), विभार ° (घ) ।

१०. × (ख, ग) ।

११. × (ख) ।

१२. गच्छेसु य (ख); × (ग) ।

१३. चुट्टिसु (क); वान्हिसु (ख), चोड्डीसु (ग, घ) ।

१४. दहेसु (ख, ग, घ, वृपा) ।

१५. × (क), विरयत्तेसु य (ख), विरयत्तेसु य (ग), विरयत्तेसु य (घ) ।

१६. अत्थमाणी (ख) ।

य पेच्छमाणी य मज्जमाणी य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य पल्लवाणि य
गिण्हमाणी य माणेमाणी य अग्घायमाणी^१ य परिभुजेमाणी^२ य परिभाएमाणी
य वेभारगिरिपायमूले 'दोहल विणेमाणी'^३ सव्वओ समता आहिंडइ ॥

६८ तए ण सा धारिणी देवी सम्माणियदोहला^४ विणीयदोहला सपुण्णदोहला^५
सपत्तदोहला^६ जाया यावि होत्था ॥

६९ तए ण सा धारिणी देवी सेयणयगधहत्थि दुरूढा^७ समाणी सेणिएण हत्थिखध-
वरगएण पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगम्ममाण-मग्गा ह्य-गय^८-●रह-पवरजोहकलियाए
चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा महया भड-चडगर-वदपरिक्खत्ता
सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए जाव^९ दुदुभिनिग्घोसनाइय^{१०}-रवेण जेणेव रायगिहे नयरे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता रायगिह नयरं मज्जमज्जेण जेणामेव सए
भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता विउलाइ माणुस्सगाइं भोगभोगाइ^{११}
●पच्चणुभवमाणी^{१२} विहरइ ॥

अभएण देवस्स पडिसिज्जण-पदं

७० तए ण से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता
पुव्वसगइय देव सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिसिज्जेइ ॥

७१ तए ण से देवे सगज्जिय [सविज्जुय सफुसिय ?] पचवण्णमेहोवसोहिय दिव्व
पाउससिंरि पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता जामेव दिंसि^{१३} पाउवभूए तामेव दिंसि^{१४}
पडिगाए ॥

धारिणीए गव्वभच्चरिया-पदं

७२ तए ण सा धारिणी देवी तसि अकालदोहलसि विणीयसि सम्माणियदोहला
तस्स गव्वभस्स अणुकपणट्ठाए^{१५} जय चिट्ठइ जय आसयइ^{१६} जय सुवइ, आहार पि

१ × (क), आग्घाएमाणी (ख) ।

५ सपन्नडोहला (घ) ।

२. परिभुजमाणी (ख, ग) ।

६ सपन्नडोहला (क, ख) ।

३ विणेमाणी (क, ख, ग), डोहल विणेमाणी
(घ), वृत्तिकारेणापि 'दोहल' इति पाठो
मूलतया नैव व्याख्यात ।

७ दुरूढा (क) ।

८ स० पा०—ह्यगय जाव रवेण ।

९. ना० १।१।३३ ।

यथा—विणेमाणी त्ति—डोहल विनयती
(वृ) ।

१० स० पा०—भोगभोगाइ जाव विहरइ ।

११. दिस (क, घ) ।

४. १।१।३३ सूत्रानुसारेण 'सम्माणियदोहला'
इति पाठो युज्यते, यद्यपि प्रयुक्तादर्शेषु
नोपलभ्यते । क्वचित्प्रयुक्तेषु
आदर्शेषु लभ्यते ।

१२. दिस (क, घ) ।

१३. ०ट्ठयाए (क) ।

१४. आसति (घ) ।

य णं आहारेमाणी—नाइत्तित्तं नाइकडुयं नाइकसायं नाइअंवलं नाइमहुरं, जं तस्स गवभस्स हिय मिय पत्थयं देसे य काले य आहार आहारेमाणी, नाइचित्त नाइसोय नाइमोह नाइभय नाइपरित्तास' ववगयचित्ता-सोय-मोह-भय-परित्तासा उडु'-भज्जमाण'-सुहेहि भोयण-च्छायण-गध-मल्लालकारेहि त' गवभ सुहसुहेण परिवहइ ॥

मेहस्स जम्म-वद्धावण-पदं

७३ तए ण सा धारिणी देवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अद्धट्टमाण' य' राइदियाण वीइक्कताण अद्धरत्तकालसमयसि' सुकुमालपाणिपाय जाव' सव्वगसुदर दारग पयाया ॥

७४ तए ण ताओ अगपडियारियाओ धारिणि देवि नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाणं जाव' सव्वगसुदर दारग पयाय पासति, पासित्ता सिग्घ तुरिय चवल वेइय'^{१०} जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सेणिय राय जएण विज-एण वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थाए अजलि कट्टु एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । धारिणी देवी नवण्ह मासाण बहुपडि-पुण्णाण जाव सव्वंगसुदर दारग पयाया । त ण अम्हे देवाणुप्पियाण पिय निवेएमो, पिय भे'^{११} भवउ ॥

७५. तए ण से सेणिए राया तासि अगपडियारियाण अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म हट्टुट्टे ताओ अगपडियारियाओ महुरेहि वयणेहि विउलेण य पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ, मत्थयघोयाओ'^{१२} करेइ, पुत्ताणुपुत्तिय वित्ति कप्पेइ, कप्पेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

मेहस्स जम्मस्सवकरण-पदं

६७ तए ण से सेणिए राया [पच्चूसकालसमयसि'^{१३} ?] कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । रायगिह नगर आसिय'^{१४}-
•सम्मज्जिओवलित्त सिघाडग-तिय - चउक्क-चच्चर - चउम्मुह- महापहपहेसु आसित्त-सित्त-सुइ-सम्मट्ट-रत्थतरावण-वीहिय मंचाइमचकलिय णाणाविहराग-

१. × (क, ख, ग) ।

२. उडु (ग) ।

३. भयमाण (क, ख, घ) ।

४. × (क) ।

५. अद्धट्टु ° (ग) ।

६. × (ख, ग) ।

७. अद्धरत्त° (ख) । द. ओ० सू० १४३ । १४. स० पा०—आसिय जाव परिगीय ।

८. ना० १।१।७३ ।

१०. चेतिय (क, ग, घ) ।

११. ते (क, ख, ग, घ) ।

१२. मत्थाघोयाओ (क, ग) ।

१३. क्वचित् प्रयुक्तादर्शेषु कोष्ठकवर्तिपाठो लभ्यते तथा १।१।२२ सूत्रेपि विद्यते, तेनात्र स्वीकृत ।

ऊसिय-ज्झय-पडागाइपडाग-मडिय लाउल्लोडय-महिय गोसीस-सरस-रत्त-
चदण-दहर-दिण्णपचगुलितल उवचियचदणकलसं चदणघड-सुकय-तोरण-
पडिदुवारदेसभाय आसत्तोसत्तविउल-वट्ट-वग्घारिय-मल्लदाम-कलाव पचवण्ण-
सरस-सुरभिमुक्क-पुप्फपूजोवयार-कलिय कालागुरु-पवर-कुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-
डज्झत-मघमघेत-गधुद्धुयाभिराम सुगधवरगधगधिय गधवट्टिभूयं नड-णटग-
जल्ल-मल्ल-मुट्टिय-वेलवग-कहकहग-पवग-लासग-आडक्खग-लख-मख- तूणइल्ल-
तुववीणिय-अणेगतालायर°परिगीय करेह, कारवेह य, चारगपरिसोहण^१ करेह,
करेत्ता माणुम्माणवद्धण करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह^२ ॥

७७ •तए ण ते कोडुवियपुरिसा सेणिएण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्टतुट्ट-चित्त-
माणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया तमाण-
त्तिय° पच्चप्पिणत्ति ॥

७८ तए ण से सेणिए राया अट्टारससेणि-प्पसेणीओ सद्दावेड, सद्दावेत्ता एव वयासी—
गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । रायगिहे नगरे अग्गिभतरवाहिरिए उस्सुक^३
उक्कर अभडप्पवेस अदडिम-कुदडिमं अधरिम अधारणिज्जं अणुद्धयमुइंग
अमिलायमल्लदाम गणियावरनाडइज्जकलिय अणेगतालायराणुच्चरिय पमुइय-
पक्कीलियाभिराम जहारिह 'ठिइवडिय दसदेवसिय'^४ करेह, कारवेह य,
एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

७९ तेवि तहेव^५ करेत्ति, तहेव पच्चप्पिणत्ति ॥

८० तए ण से सेणिए राया वाहिरियाए उवट्टाणसालाए सीहासणवरगए पुरत्थाभि-
मुहे सण्णिसण्णे 'सतिएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य दाएहि दलय-
माणे दलयमाणे'^६ पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे एव च ण विहरइ ॥

मेहस्स नामादिसक्कार (सस्कार) करण-पदं

८१ तए ण तस्स अम्मापियरो 'पढमे दिवसे ठित्तिपडियं' करेत्ति, वित्तिए दिवसे

१ चारगारसोहण (क), चारगसोहण (ख, घ);
चारगारपरिमोहण (ग) एकस्मिन् हस्त-
लिखितवृत्त्यादर्शे 'चारगपरिशोधन' इति
व्याख्यातमस्ति अत्रस्मिञ्च 'चारगारशोधन'
इति लभ्यते ।

२ स० पा०—पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणत्ति ।

३ उस्सुक (क, ग, घ) ।

४. ठिइवडियं (वृ), वाचनान्तरे—दसदिवसिय
ठिइपडियं ।

५. × (ख, ग, घ) ।

६. सएहि साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य
दाएहि भागेहि° (क), °जाएहि दाएहि
भागेहि° (ख, घ), °दलयमाणे २ (ग),
वाचनान्तरे—अत्तिकांश्च इत्यादि यागान्—
देवपूजा, दायान्—दानानि, भागान्—लब्ध-
द्रव्यविभागान् इति (वृ) ।

७ जायकम्म (क, ख, ग, घ, वृ.), निरयाव-
लियाओ १।१।६० 'ठित्तिपडिय च जहा
मेहस्स' इति सकेतितमस्ति, तस्याधारेणासौ
पाठ स्वीकृत ।

जागरियं करेति, तत्तिए दिवसे चंदसूरदसणियं^१ करेति, एवामेव 'निवत्ते असुइजायकम्मकरणे'^२ सपत्ते वारसाहे^३ विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण बल च बह्वे गणनायग^४-दडनायग-राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-मति-महामति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्-नगर-निगम-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-सधिवाले^० आमतेति । तत्रो पच्छा ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउय^५-मगल-पायच्छित्ता^० सव्वालकारविभूसिया^६ महइमहालयसि भोयणमडवसि त विपुल असण पाण खाइम साइम मित्त-नाइ^७-नियग-सयण-सवधि-परियणेहि बलेण च बहूहि गणनायग-दडनायग-राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-मति-महामति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड - पीढमद् - नगर-निगम-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाह दूय-सधिवालेहि^० सद्धि आसाएमाणा 'विसाएमाणा परिभाएमाणा'^८ परिभुजेमाणा एवं च णं विहरति । जिमियभुत्तुत्तरागयावि य ण समाणा आयता चोक्खा परमसुइभूया त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण बल च बह्वे गणनायग जाव सधिवाले विपुलेण पुप्फ-गध-मल्लालकारेण सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं वयासी—

जम्हा ण अम्ह इमस्स दारगस्स गव्भत्थस्स चेव समाणस्स अकालमेहेसु दोहले पाउव्भूए, त होऊ ण अम्ह दारए मेहे नामेण । तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूव गोण्ण गुणनिप्फण्ण नामधेज्ज करेति मेहे इ ॥

१ पाठान्तरे तु—प्रथमदिवसे स्थितिपतिता, तृतीये चन्द्रसूरदर्शनिका, षष्ठे जागरिका (वृ) ।

२ निव्वत्ते सुइ^० (क, ख, ग, वृपा), निव्वत्ते अमुइ^० (घ) । वृत्तिकृता 'निवृत्ते—अतिक्रान्ते अशुचीना जातकम्मकरणे' इतिव्याख्यातम्, तेन तदनुसारी पाठ 'निवत्ते असुइजायकम्मकरणे' इत्येवरूप. स्यात् । यत्र 'सुइजाय^०' इति पाठ. सम्मतस्तत्रैव 'निव्वत्ते' इति पाठ सङ्गच्छेत् ।

३ वारसाहदिवसे (क, ख, ग, घ) । वृत्तिकारेण—'वारसाहदिवसे' इति पाठ विकल्प-द्वयेन व्याख्यात, यथा—वारसाहदिवसे ति—द्वादशाख्ये दिवसे इत्यर्थ । अथवा

द्वादशानामह्ना समाहारो द्वादशाह, तस्य दिवसो येन पूर्यते (वृ) । यद्यपि वृत्तिकारेण 'वारसाहदिवसे' इति पाठो व्याख्यातस्तथा-प्यस्माभि 'वारसाहे' इतिपाठ स्वीकृत, एतदर्थं द्रष्टव्यम्—ओवाइय (१४४) सूत्रस्य वारसाहे' पदस्य पादटिप्पणम् ।

४. स० पा० — गणनायग जाव आमतेति ।

५ स० पा०—कयकोउय जाव सव्वालकार-विभूसिया ।

६ सव्वालकारभूसिया (क, ख, ग) ।

७. स० पा०—मित्त-नाइ-गणनायग जाव सद्धि ।

८. पडिलाहेमाणा (क), × (ग) ।

मेहस्स लालणपालण-पद

८२ तए ण से मेहे कुमारे पचघाईपरिग्गहिए, [त जहा—खीरघाईए मज्जणघाईए कीलावणघाईए मडणघाईए अकघाईए]' अण्णाहि य वहूहि—खुज्जाहि चिला-ईहिं' वामणीहिं वडभीहिं वव्वरीहिं वउसीहिं' जोणियाहिं पल्हवियाहिं ईसिणि-याहिं थारुणिगियाहिं' लासियाहिं लउसियाहिं दामिलीहिं सिंहलीहिं आरवीहिं पुलिदीहिं पक्कणीहिं वहलीहिं मुरुडीहिं' सबरीहिं पारसीहिं'^{१०}—नानादेसीहिं' विदेसपरिमडियाहिं इगिय-चित्तिय-पत्थिय-वियाणियाहिं सदेस-नेवत्थ-गहिय-वेसाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं', चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-कचुइज्ज-महयरग'^{११}-वद-परिक्खत्ते हत्थाओ हत्थ साहरिज्जमाणे'^{१२} अकाओ अक परि-भुज्जमाणे परिगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे'^{१३} रम्मसि मणिकोट्टिमत्तलसि परिगिज्जमाणे'^{१४} निव्वाय-निव्वाघायंसि गिरिकदरमल्लीणे व चंपगपायवे मुहसुहेण वड्ढइ'^{१५} ॥

८३ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेण'^{१६} नामकरण च पजेमणग'^{१७} च पचंकमणग च चोलोवणय च महया-महया इड्ढी-सक्कार-समुदएण करेसु ॥

मेहस्स कलागहण-पदं

८४ तए णं त मेह कुमार अम्मापियरो साइरेगट्टुवासजायग चेव'^{१८} सोहणसि तिहि-करण-मुहुत्तसि कलायरियस्स उवणेति ॥

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते । ११ साहिज्जमाणे (ख, ग, घ) ।
 २ चिलाइयाहिं (क, ख, ग, घ, रायपसेणइय सू० ८०४) । १२. अतोअ्रे वृत्तौ पाठान्तरस्योल्लेखो विद्यते—
 उवनच्चिज्जमाणे २ उवगाइज्जमाणे २
 उवलालिज्जमाणे २ उवगूहिज्जमाणे २
 अवयासिज्जमाणे २ परिवदिज्जमाणे २
 ३ पउसियाहिं (ओ० सू० ७०) । परिचुविज्जमाणे २ । द्रष्टव्यम्—(ओवाइय-
 ४ इसिणियाहिं (क, ख, ग) । सूत्रस्य परिशिष्ट पृ० १५१); रायपसेणइय
 सूत्र ८०४ ।
 ५. थारुइणियाहिं (ओ० सू० ७०) ।
 ६. मुरु डीहिं (ओ० सू० ७०), मुरुडीहिं (राय० सू० ८०४) ।
 ७ वामणि [वावणि (ख, ग)] वडभिव्वरि- १३. परिगिज्जमाणे २ (क, ग) ।
 वउसिजोणियपल्हविइसिणिथारुणिगिलासिय- १४. वद्धति (घ) ।
 लउसियदमिलिसिंहलिआरविपुलिदिपक्कणि- १५. अणुपुव्वि (ख) ।
 वहलिमुरडिसवरिपारसीहिं (क, ख, ग, घ) । १६ एवं जेमण च एव चकमणग च (ख, ग) ।
 ८ नानादेसी (क, ख, ग) । १७. अतोअ्रे 'गव्भट्टमे वासे' इति पाठो विद्यते,
 ९. युक्त इति गम्यते (वृ) । किन्तु एतत् पाठान्तर प्रतीयते । 'साइरेगट्टु-
 १०. महत्तरग (घ) ।

८५ तए णं से कलायरिए मेहं कुमार लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-
पज्जवसाणाओ वावत्तरि कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ
सिक्खावेइ, त जहा—

१ लेह २ गणिय ३ रुव ४ नट्टं ५. गीय ६ वाइय ७ सरगय ८. पोक्खर-
गय ९ समताल १० जूय^१ ११ जणवाय १२. पासय १३ अट्टावय
१४ पोरेकव्व १५. दगमट्टियं १६ अण्णविहिं १७ पाणविहिं १८
वत्थविहिं १९ विलेवणविहिं २० सयणविहिं २१ अज्ज २२. पहेलिय
२३. मागहिय २४ गाह २५ गीइयं २६ सिलोय २७ हिरण्णजुत्ति
२८ सुवण्णजुत्ति २९. चुण्णजुत्ति^२ ३०. आभरणविहिं ३१. तरुणीपडिकम्म
३२. इत्थिलक्खण ३३ पुरिसलक्खण ३४. हयलक्खणं ३५ गयलक्खण
३६ गोणलक्खण ३७ कुक्कुडलक्खण ३८. छत्तलक्खण ३९. दडलक्खण
४० असिलक्खण ४१ मणिलक्खण ४२. कागणिलक्खण^३ ४३. वत्थुविज्ज^४
४४ खघारमाण^५ ४५ नगरमाण^६ ४६ वूह ४७ पडिवूह ४८. चार
४९. पडिचार ५० चक्कवूह ५१ गरुलवूह ५२ सगडवूह ५३ जुद्ध ५४.
निजुद्ध ५५ जुद्धाइजुद्ध ५६ अट्टिजुद्ध ५७ मुट्टिजुद्ध ५८ वाहुजुद्ध ५९
लयाजुद्ध ६० ईसत्थ ६१ छरुप्पवाय ६२. घणुवेय^७ ६३ हिरण्णपाग
६४ सुवण्णपाग ६५ वट्टेखेड्ड^८ ६६ सुत्तखेड्ड ६७ नालियाखेड्ड ६८ पत्तच्छेज्ज
६९. कडच्छेज्ज ७० सज्जीव ७१ निज्जीव ७२ सउणरुत्तं ति ॥

८६ तए ण से कलायरिए मेह कुमार लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जव-
साणाओ वावत्तरि कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खा-
वेइ, सेहावेत्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिऊण उवणेइ ॥

८७ तए ण मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो त कलायरिय महुरेहि वयणेहि 'विउलेण
य'^९ वत्थ-गध-मल्लालकारेण सक्कारेति^{१०} सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता
विउल जीवियारिह पीइदाण दलयति, दलइत्ता पडिविसज्जेति ॥

८८ तए ण से मेहे कुमारे वावत्तरि-कलापडिए नवगसुत्तपडिवोहिए अट्टारस-

वासजायग, इति पाठस्यानन्तरमसौ पाठो ४. वत्थुविज्ज (क, ग) ।
नावश्यकः प्रतिभाति । ओवाइय (१४५), ५. °मारण (क) ।
रायपसेणइय (८०५) सूत्रयोरपि स्वीकृतपाठ ६. °मावण (ख) ।
उपलभ्यते । ७. घणुवेय (ख, ग) ।

१. तूत (ग) ।

२. तुण्णाजुत्ति (ख) ।

३. कागिणी° (ग) ।

८. वेट्टेखेड्ड (क) ।

९. विउलेण (ख, घ) ।

१०. हक्कारेति (ख) ।

विहिप्पगारदेसीभासाविसारए^१ गीयरई गधव्वनट्टकुसले ह्यजोही गयजोही रहजोही वाहुजोही वाहुप्पमद्दी अलभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाए यावि होत्था ॥

मेहस्स पाणिग्गहण-पदं

८६ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमार वावत्तरि-कलापंडियं जाव^२ वियालचारि^३ जाय पासति, पासित्ता अट्टपासायवडिसए कारेति— अठ्ठभुग्गयमूसिय^४ पहसिए विव मणि-कणग-रयण-भत्तिचित्ते वाउद्धय-विजय-वेजयती-पडाग-छत्ताइच्छत्तकलिए तुगे गगणतलमभिलघमाणसिहरे जालतर-रयण^५ पजरुम्मिलिए^६ व्व मणिकणगथूभियाए वियसिय-सयवत्त-पुडरीए तिलयरयणद्धचदच्चिए^७ नाणामणिमयदामालकिए अतो वहि च सण्हे तवणिज्ज-रुइल^८-वालुया-पत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए^९ •दरिसणिज्जे अभिरूवे ° पडिरूवे ।

एग च ण मह भवण कारेति—अणेगखभसयसन्निविट्ट लीलद्वियसालभंजियाग अठ्ठभुग्गयसुकयवइरवेइयातोरण^{१०}-वररइयसालभजिय^{११}-सुसिलिट्ट - विसिट्ट-लट्ट-सठिय-पसत्थ-वेरुलियखभ-नाणामणिकणगरयण-खचियउज्जल वहुसम-सुविभत्त-निचियरमणिज्जभूमिभाग ईहामिय^{१२}-•उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुह-सरभ-चमर-कुजर-वणलय-पउमलय °-भत्तिचित्त खभुग्गयवयरवेइ-यापरिगयाभिराम विज्जाहर-जमल-जुयल-जतजुत्त पिव अच्चीसहस्समालणीय^{१३} रूवगसहस्सकलिय भिसमाण^{१४} भिठिभसमाण चक्खुल्लोयणलेस^{१५} सुहफास सस्सिरीयरूव कचणमणिरयणथूभियाग नाणाविह-पचवण्ण-घटापडाग-परिमडि-

- | | |
|---|---|
| १. अट्टारसविह ^० (ख), अट्टारसदेसीभासा ^० (वृपा), °चदचित्ता (राय० सू० १३७) । | |
| (ओ० सू० १४८), अट्टारसविहदेसिप्पगार-भासा ^० (गय० सू० ८०६) । अष्टादश-विधे प्रकारा प्रवृत्तिप्रकारा अष्टादशभिर्वा विधिभिर्भेद प्रचार प्रवृत्तिर्यम्या (वृ) । | ८ रुइर (ग) । |
| २ ना० १।१।८८ । | ९. स० पा०—पासाईए जाव पडिरूवे । |
| ३ वियालचारी (क) । | १०. °वतिरवेत्तिया ^० (ग); °वरवइरवेइया (राय० सू० १७) । |
| ४ अत्र च द्वितीयावहुवचनलोपो दृश्य (वृ) । | ११ सालभजिया (क, ख, घ) । |
| ५ द्वितीयावहुवचनलोपो दृश्य (वृ) । | १२ स० पा०—ईहामिय जाव भत्तिचित्त । |
| ६ पजरुम्मिल्लिय (ख, ग) । | १३. °मीण (क, ख, ग) । |
| ७. °यदच्चिए (क, ख, ग); °चदचित्ते | १४. °मालिणीय (ख) । |
| | १५ °लेस्स (क, ग) । |

- यग्गसिहरं धवल-मिरिचिकवय विणिम्मुयतं लाउल्लोइयमहियं जावं^१ गधवट्टिभूय पासाईय दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूव ॥

६०. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमार सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि सरिसियाण सरिव्वयाण सरित्तयाण सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाण सरिसएहिं तो रायकुलेहिं तो आणिल्लियाण^३ पसाहणट्टग-अविहववहु^३-ओवयण-मगलमुजपिएहिं अट्टहिं रायवरकन्नाहिं सद्धि एगदिवसेण पाणिं गिण्हारिविसु ॥

पीइदाण-पदं

६१ तए ण तस्स मेहस्स अम्मापियरो इम एयारूवं पीइदाणं दलयति—अट्ट हिरण्ण-कोडीओ अट्ट सुवण्णकोडीओ गाहाणुसारेण भाणियव्व जावं^४ पेसणकारियाओ,

१. ना० १।१।७६ ।

३ अविधव^० (क) ।

२. आणतिल्लियाणं (क), आणियल्लियाण (ग) । ४ मूलपाठे यासा गाथाना समर्पणमस्ति ता वृत्त्यनुसारेणेमा —

- १ अट्टहिरण्णसुवण्णय-कोडीओ मउड-कुडलाहारा ।
अट्टद्धहार-एक्कावलीओ मुत्तावली अट्ट ॥
- २ कणगावलि-रयणावलि-कडगजुगा तुडिय-खोम-जुगा ।
वडजुग-पट्टजुगाइ-दुकुल्लजुगलाय अट्टट्टा ॥
- ३ सिरि-हिरि-विइ-कित्तीओ वुट्ठी लच्छी य होति अट्टट्टा ।
नदा भद्दा य तला य भय-वय नाडाइ आसे य ॥
४. हत्थी जाणा जुग्गा, सीया तह सदमाणि-गिल्लीओ ।
यिल्ली य वियडजाणा, रह-गामा दास-दासीओ ॥
वाचनान्तरे—रथानन्तरमइवा हस्तिनश्चाधीयन्ते (वृ) ।
- ५ किंकर-कचुइ-मयहर-वरिसधर-तिविह दीव-थाले य ।
पाई-थासग - पल्लग-कइविय - अवएडय - अवक्का ॥
- ६ पावीढाभिमिय-करोडियाओ पल्लकए य पडिसिज्जा ।
हसाईहिं विसिट्टा, आसण-भेया उ अट्टट्ट ॥
- ७ हसे कोंचे गरुडे, उण्णय-पणए य दीह-भद्दे य ।
पक्खे मयरे पउमे, होइ दिमासोत्थि एक्कारे ॥
- ८ तेल्ले कोट्ट-समुग्गा, पत्ते चोए तगर एला य ।
हरियाले हिंगुलए, मणोसिला सासवसमुग्गे ॥
९. खुज्जा-चिलाइ-वामणि-वडभीओ वव्वरि-वउसियाओ ।
जोणिय-पल्हवियाओ, इसिणीया थारुइणिया य ॥

अण्ण च विपुलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-
सार-सावएज्ज अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकाम दाउ पकामं
भोत्तु पकाम परिभाएउ^१ ॥

६२ तए ण से मेहे कुमारे एगमेगाए भारियाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, जाव^२
एगमेग पेसणकारिं दलयइ, अण्ण च विउल धण-कणग^३-^०रयण-मणि-मोत्तिय-
सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार-सावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ
कुलवसाओ पकाम दाउ पकाम भोत्तु पकाम^० परिभाएउ दलयइ ॥

६३ तए ण से मेहे कुमारे उप्प पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइगमत्थएहिं वरतरुणि-
सपउत्तेहिं वत्तीसइवद्धएहिं नाडएहिं 'उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे'^४ उवलालि-
ज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे [इट्टे]^५ सट्ट-फरिस-रस-रूव-गधे विउले माणुस्सए
कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

महावीरसमवसरण-पदं

६४ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुर्व्वि चरमाणे गामाणु-
गाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए^६
•तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हत्ता सजमेण
तवसा अप्पाण भावेमाणे^० विहरइ ॥

१० लासिय-लउसिय-दमिणी, सीहलि तह आरवी पुलिदी य ।

पक्कणि-वहलि-मुरु डी, सवरीओ पारसीओ य ॥

११ छत्तधरा चेडीओ, चामरधर-तालयटयधरीओ ।

सकरोडियाधरीओ, खीराई पच घाईओ ॥

१२. अट्टगमदियाओ, उम्मद्विग-ण्हविग-मडियाओ य ।

वण्णय-चुण्णय-पीसिय-कीलाकारी य दवगारी ॥

१३ उत्थावियाओ तह णाडइल्ल-कोडुविणी-महाणसिणी ।

भडारी अब्भ (उक्क) धारिणि, पुप्फधरि पाणियधरी य ॥

१४. वलिकारि य सेज्जाकारियाओ अब्भतरीओ वाहरिया ।

पडिहारी मालारी, पेसणकारीओ अट्टु ॥

भगवती (११।१५६) सूत्रे क्वचित् केचित् पाठभेदा अपि लभ्यते ।

१. भाएउ (उ, ग) ।

२. ना० १।१।६१ ।

३. स० पा०—धण-कणग जाव परिभाएउ^१ ।

४. °वद्धेहिं (क), वत्तीसनिवद्धेहिं (ग) ।

५. उवणच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे (राय०
सू० ७१०) ।

६. एतत् पद रायपसेणइय (७१०) सूत्रे
विद्यते, अत्रापि युज्यते ।

७. स० पा०—चेइए जाव विहरइ ।

मेहस्स जिन्नामा-पदं

६५. तए ण रायगिहे नयरे सिंघाडग-^१तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु^०-
महया जणसद्दे इ वा जाव^३ वहवे उग्गा भोगा [०]^२ रायगिहस्स नगरस्स मज्झ-
मज्झेण एगदिसि एगाभिमुहा निग्गच्छति । इम च ण मेहे कुमारे उप्पि
पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुइगमत्थएहि जाव^३ माणुस्सए कामभोगे भुजमाणे
रायमग्ग च 'ओलोएमाणे-ओलोएमाणे'^५ एव च ण विहरइ ॥
६६. तए ण से मेहे कुमारे ते वहवे उग्गे भोगे जाव^३ एगदिसाभिमुहे निग्गच्छमाणे
पासइ, पासित्ता कचुइज्जपुरिस^७ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—किण्ण^८ भो
देवाणुप्पिया । अज्ज रायगिहे नगरे इदमहे इ वा खदमहे इ वा एव—
रुद्ध-सिव-वेसमण-नाग-जवख-भूय-नई- तलाय-रुक्ख - चेइय - पव्वयमहे इ वा
उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा ? जओ ण वहवे उग्गा भोगा जाव एगदिसि
एगाभिमुहा निग्गच्छति ॥

कंचुइज्जपुरिसस्स निवेदण-पद

६७. तए ण से कचुइज्जपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स गहियागमणपवित्तीए
मेह कुमारं एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया । अज्ज रायगिहे नयरे इदमहे
इ वा जाव^३ गिरिजत्ता इ वा ज ण एए उग्गा भोगा जाव^३ एगदिसि एगाभिमुहा
निग्गच्छति । एवं खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव महावीरे आइगरे तित्थगरे^९
इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इह चैव रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए
अहापडिरुव^{१०} ओग्गह ओगिण्हत्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे^०
विहरइ ॥

मेहस्स भगवओ समीवे गमण-पदं

- ६८ तए ण से मेहे कुमारे कचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म
हट्टुट्टे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणु-
प्पिया । चाउग्घट आसरह जुत्तामेव उवट्टवेह ।
तहत्ति उवणेति ॥

१ सं० पा०—सिंघाडग जाव महया ।

२. ओ० सू० ५२ ।

३. जाव (क, ख, ग, घ) ।

४. ना० १।१।६३ ।

५ उवनोएमाणे २ (ग) ।

६. ओ० सू० ५२ ।

७ कचुइ-पुरिस (राय० सू० ६८८) ।

८. किं ण (क, ख) ।

९ ना० १।१।६६ ।

१०. ओ० सू० ५२ ।

११. तित्थकरे (ख) ।

१२. स० पा०—अहापडिरुव जाव विहरइ ।

६६ तए ण से मेहे ण्हाए जाव' सव्वालकारविभूसिए चाउग्घटं आसरहं दुरूढे समाणे सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण महया भड-चडगरं-वंद-परियाल-सपरिवुडे रायगिहस्स नयरस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स छत्ताइच्छत्त पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जभए य देवे ओवय-माणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता चाउग्घटाओ आसरहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समण भगव महावीर पच्चविहेण अभिगमेण अभिगच्छइ ।

[त जहा—१. सच्चित्ताण दव्वाण विउसरणयाए' २ अचित्ताण दव्वाण अविउसरणयाए ३. एगसाडियं-उत्तरासगकरणेण ४ चक्खुफासे अजलिपग्ग-हेण ५ मणसो एगत्तीकरणेण']^६ । जेणामेव समणे भगव महावीरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे पजलिउडे अभिमुहे विणएणं पज्जुवासइ ॥

धम्मदेसणा-पदं

१०० तए ण समणे भगव महावीरे मेहस्स कुमारस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्त धम्ममाइक्खइ—
जह जीवा वज्झति, मुच्चति जहा य सकिलिस्सति । धम्मकहा भाणियव्वा जाव' परिसा पडिगया ॥

मेहस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं

१०१ तए ण से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—
सद्धामि ण भते ! निग्गथ पावयण ।
पत्तियामि' ●ण भते ! निग्गथ पावयण ।
रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण ।^०
अट्ठभुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयणं ।

१. ना० १।१।८१ ।

२. चउगर-रह-पहकर (राय० सू० ६८३) ।

३. त्रियोमरणयाए (वृपा) ।

४. एगल्लमटिय (क) ।

५. एगत्तिभावेण (क, वृपा) ।

६. असी कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते ।

७. ओ० सू० ७१-७६ ।

८. स० पा०—एवं पत्तियामि ण रोएमि ण ।

एयमेय भते । तहमेय भते । अविहमेय भते । इच्छियमेयं भते । पडिच्छिय-
मेय भते । इच्छिय-पडिच्छियमेय भते । से 'जहेय तुब्भे वयह'^१ । नवरि^२
देवाणुप्पिया । अम्मापियरो आपुच्छामि । तत्रो पच्छा मुडे भवित्ता ण
अगाराओ अणगारिय पव्वइस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवघ करेहि' ॥

मेहस्स अम्मापिऊणं निवेदण-पदं

१०२ तए ण से मेहे कुमारे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदिता नमसित्ता
जेणामेव चाउग्घटे आसरहे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घट
आसरह दुरुहइ, महया भड-चडगर-पहकरेण रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण
जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घटाओ आसरहाओ
पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेइ, करेत्ता एव वयासी—एव खलु अम्म-
याओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं निसते, से वि य मे
धम्मं इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥

१०३ तए ण तस्स मेहस्स अम्मापियरो एव वयासी—धन्तोसि तुम जाया । सपुण्णो
सि तुम जाया ।

कयत्थो सि तुमं जाया ! कयलक्खणो सि तुम जाया ।

जन्न तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं निसते, से वि य ते
धम्मं इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥

१०४ तए ण से मेहे कुमारे अम्मापियरो दोच्चपि^३ एवं वयासी—एव खलु अम्म-
याओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं निसते, से वि य मे
धम्मं इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि
अवभणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता णं
अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ॥

धारिणीए सोगाकुलदसा-पद

१०५ तए ण सा धारिणी देवी त अणिट्ठ अकंत अप्पियं अमणुण्ण अमणाम असुय-

१ जहेव त तुब्भे वयह ज (क, ख, ग, घ),
असौ पाठ सर्वासु प्रतिपु विद्यते, तथाप्यत्र
'उपासकदशा' (७।३७) नुसारी पाठ स्वी-
कृत । आदर्शगतपाठापेक्षया तत्रस्थपाठ
समीचीन. प्रतिभाति । प्रस्तुतादर्शेषु

लिपिदोषेण परिवर्तनस्य सभावना स्यादिति
नासौ स्वीकारोन्वयात्त्व भजते ।

२. नवर (घ) ।

३. × (क, ख, ग) ।

४. दोच्चपि तच्चपि (ख, घ) ।

पुव्वं फरुस^१ गिर सोच्चा निसम्म इमेण एयारूवेणं मणोमाणसिएणं महया पुत्तदुक्खेण अभिभूया समाणी सेयागयरोमकूवपगलत-च्चिलिणगाया^२ सोयभर-पवेवियगी नित्तेया दीण-विमण-वयणा करयलमलिय व्व कमलमाला तक्खणओ-लुग्गदुव्वलसरीर-लावणसुन्न-निच्छाय-गयसिरीया पसिठिलभूसण-पडंतखुम्मिय-सच्चुणियधवलवलय^३-पवभट्टउत्तरिज्जा सूमाल^४-विकिण्ण-केसहत्था मुच्छावस-नट्टचेय-गरुई^५ परसुनियत्त व्व चपगलया निव्वत्तमहे व्व^६ इंदलट्टी विमुक्क-सधिवधणा कोट्टिमत्तलसि सव्वगेहि धसत्ति पडिया ॥

धारिणीए मेहस्स य परिसंवाद-पदं

१०६ तए ण सा धारिणी देवी ससभमोवत्तियाए तुरिय कचणभिगारमुहविणिग्गय-सीयलजलविमलधाराए परिसिचमाण^१-निव्वावियगायलट्टी उक्खेवय^२-तालविट-वीयणग-जणियवाएण सफुसिएण अतेउर-परिजणेण^३ आसासिया समाणी मुत्ता-वलि-सन्निगास-पवडत^४-असुधाराहि सिचमाणी पओहरे, कलुण-विमण-दीणा रोयमाणी कदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलवमाणी मेह कुमार एव वयासी—

तुम सि ण जाया ! अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे^५ वेसा-सिए सम्मए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सा-सिए^६ 'हियय-णदि-जणणे'^७ 'उवरपुप्फ व'^८ दुल्लहे सवणयाए, किमगपुण पासण-याए ? नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओग सहित्तए । त भुजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वय जीवामो । तओ पच्छा अम्हेहि कालगएहि परिणयवए वड्ढिय-कुलवसततु-कज्जम्मि निरावयक्खे^९ समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइस्ससि ॥

१ परुम (क) ।

२. विलीण^० (क, ख, ग, घ) ।

३. ^०खुण्णिय^० (भ० ६।१६८) ।

४ मुकुमान (क, घ) ।

५ गुरुड (ग) ।

६. व (ग) ।

७. परिसिचमाणा (घ) ।

८. उक्खेवण (क, ख) ।

९. परिणयेण (ख, ग, घ) ।

१०. पडत (क) ।

११ धिज्जे (ग); वेज्जे (घ); पेज्जे (ओ० सू० ११७) ।

१२. ^०उस्सासए (क, ख, ग); वाचनान्तरे— जीविउस्सविए (वृ) ।

१३. हिययाणदजणणे (क, ख, वृ), एकस्यां हस्त-लिखितवृत्तावपि 'हृदयनदिजनन.' इति लिखितमस्ति ।

१४. ^०पुप्फमिव (ख) ।

१५. निरवयक्खे (घ) ।

१०७. तए ण से मेहे कुमारे अम्मापिळ्ळहि एव वुत्ते समाणे अम्मापियरो एव वयासी—
तहेव ण तं अम्मो । जहेव ण तुब्भे ममं एव वयह—“तुम सि ण जाया । अम्ह
एगे पुत्ते •इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए
अणुमए भडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासिए हियय-णदि-जणणे
उवरपुप्फ व दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? नो खलु जाया ।
अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पअयोग सहित्तए । त भुजाहि ताव जाया । विपुले
माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वय जीवामो । तत्रो पच्छा, अम्हेहि कालगएहि
परिणयवए वड्ढिय-कुलवसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे^१ समणस्स भगवअो महा-
वीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराअो अणगारियं० पव्वइस्ससि ।”
एव खलु अम्मयाअो । माणुस्सए भवे अधुवे अणितिए^२ असासए वसणसअोवद्द-
वाभिभूते विज्जुलयाचचले अणिच्चे जलवुवुयसमाणे कुसग्गजलविदुसन्निभे
सभ्वभरागसरिसे सुविणदसणोवमे^३ सडण-पडण-विद्धसण-धम्मे पच्छा पुर च
ण अवस्सविप्पजहणिज्जे । से के ण जाणइ अम्मयाअो । के पुंवि गमणाए के
पच्छा गमणाए ? त इच्छामि ण अम्मयाअो । तुब्भेहि अरुभणुणाए समाणे
समणस्स^४ •भगवअो महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता ण अगाराअो अणगारियं०
पव्वइत्तए ॥

१०८ तए ण त मेह कुमार अम्मापियरो एव वयासी—‘इमाअो ते जाया । सरिसि-
याअो सरित्तयाअो सरिव्वयाअो सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाअो
सरिसेहितो रायकुलेहितो आणिल्लियाअो^५ भारियाअो^६ । त भुजाहि ण जाया ।
एयाहि सद्धि विउले माणुस्सए कामभोगे । पच्छा^७ भुत्तभोगे समणस्स^४ •भगवअो
महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराअो अणगारियं० पव्वइस्ससि ॥

१. स० पा०—त चेव जाव निरावयक्खे समणस्स
जाव पव्वइस्ससि ।

२. निरवक्खे (क, ग); निरावेक्खे (ख), निर-
वयक्खे (घ) ।

३ अणिए (क), अणितिते (ग), अणियए
(घ, वृ) ।

४. सुविणयदसं (क), सुविणगदसं (घ) ।

५ स० पा०—समणस्स जाव पव्वइत्तए ।

६ आणिल्लियाओ (ख), आणियल्लियाओ
(ग, घ) ।

७. वाचनान्तरे मेघकुमारभार्यावर्णकमेवमुप-
लभ्यते—

इमाओ ते जाया विपुलकुलवालियाओ कला-
कुसल-सव्वकाललालिय-सुहोइयाओ मद्दवगुण-
जुत्त-निउणविणओवयार-पडिय-वियक्खणाओ
मजुलमियमहुरभणिय-हसिय-विपेक्खिय-गइ-
विलास-चेट्टियविसारयाओ अविक्कलकुलसील-
सालिणीओ विसुद्ध कुलवंससताणततुवद्धण-
पगव्वभवप्पभावणीओ मणोणुकूलहियय-
इच्छियाओ अट्ट तुज्ज गुणवल्लहाओ भज्जाओ
उत्तमाओ णिच्च भावाणुरत्तसव्वगसुदरीओ
(वृ) ।

८. तओ पच्छा (क, घ), पच्छा तु (ख) ।

९. स० पा०—समणस्स जाव पव्वइस्ससि ।

१०९. तए ण से मेहे कुमारे अम्मापियर एव वयासी—तहेव ण त अम्मयाओ ! जं ण तुब्भे मम एव वयह—“इमाओ ते जाया ! सरिसियाओ” “सरित्तयाओ सरिक्वयाओ सरिसलावण्ण-रुव-जोव्वण-गुणोववेयाओ सरिसेहितो रायकुलेहितो आणिल्लियाओ भारियाओ । त भुजाहि ण जाया ! एयाहि सद्धि विउले माणुस्सए कामभोगे । पच्छा भुत्तभोगे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।”
एव खलु अम्मयाओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुई^१ वतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा ‘दुरुय-उस्सास’^२ नीसासा दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-वहुपडिपुण्णा उच्चार-पासवण-खेल^३-सिंघाणग-वत-पित्त-सुक्क-सोणियसभवा अधुवा अणित्तिया^४ असासया सडण-पडण-विद्धसणधम्मा पच्छा पुर च ण अवस्स-विप्पजहणिज्जा ।
से के ण जाणइ अम्मयाओ^५ ! के पुंवि गमणाए के पच्छा गमणाए ? त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तइ ॥
११०. तए ण त मेह कुमारं अम्मापियरो एव वयासी—इमे यं ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुवहू हिरण्णे य सुवण्णे य कसे य दूसे य मणि-मोत्तिय^६-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसार^७-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पगाम दाउ पगाम भोत्तु पगाम परिभाएउ । त अणुहोही^८ ताव^९ जाया । विपुल माणुस्सग इड्ढिसक्कारसमुदय । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे

१. वयहा (ग) ।

२. म० पा०—मरिसियाओ जाव समणस्स पव्वइग्गमि ।

३ असुइ (ख, घ), असुती (ग), अतोअे सर्वा-म्वपि प्रतिपु ‘असासया’ इति पाठो विद्यते किन्तु वृत्तौ नास्ति स व्याख्यात तथा प्रस्तुतपाठक्रम एव ‘अणित्तिया असासया’ इति पाठो विद्यते, तेन नासावत्र गृहीतः ।

४ दुरुस्सास (क, ख, ग, घ) एतत् पदमत्र वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् । अष्टमाध्ययनस्य १८० मूत्रग्य वृत्तौ व्याख्यातमस्ति, यथा—दुरूपा विरूपा उच्चवासनि ग्वासा यस्य (वृ) । तदाघारेणासां पाठ न्वीकृतः ।

५. मुखसुखोच्चारणार्थं ‘दुरुव’ शब्दस्य ‘दुरुय’ मिति रूप कृत सभाव्यते, अथवा दुरूपार्थवाची देगीगन्दोसी स्यात् ? वृत्तौ ‘दुरुय’ शब्दस्य ‘दुरूप’ इत्यर्थोस्ति कृतः ।

६. खेल जल्ल (घ) ।

७ अणियता (ग) ।

८. स० पा०—अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए ।

९. त (क, ख, ग) ।

१० मोत्तिए य (ख) ।

११. ततसार (घ) ।

१२ अणुहोहि ति (ख, घ), अणुहोहि (ग)

१३ ताव जाव (ख) ।

समणस्स भगवओ महावीरस्स^१ •अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय ° पव्वइस्ससि ॥

१११ तए ण से मेहे कुमारे अम्मापियर^२ एव वयासी— तहेव ण त अम्मयाओ ! ज ण तुब्भे मम एव वयह—“इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग’-•पिउपज्जयागए सुवहू हिरण्णे य मुवण्णे य कसे य दूसे य मणि-भोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पगाम दाउ पगाम भोत्तु पगाम परिभाएउ । त अणुहोही ताव जाया ! विपुल माणुस्सग इड्ढि-सक्कारसमुदय । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय ° पव्वइस्ससि ।”

एव खलु अम्मयाओ ! हिरण्णे य जाव सावएज्जे य अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए^३ मच्चुसाहिए, अग्गिसामण्णे^४ •चोरसामण्णे रायसामण्णे दाइयसामण्णे ° मच्चुसामण्णे सडण-पडण-विद्धसणधम्मे पच्छा पुर च ण अवस्सविप्पजहणज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के^५ •पुव्वि गमणाए के पच्छा ° गमणाए ? त इच्छामि ण^६ •अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुणाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता ण अगाराओ अण-गारिय ° पव्वइत्तए ॥

११२. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे नो सचाएति मेह कुमार वहूहि विसयाणुलोमाहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहि सजमभउव्वेयकारियाहि पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एव वयासी-एस ण जाया ! निग्गये पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवल्लिए पडिपुण्णे नेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्ख-प्पहीणमग्गे, अहीव एगतदिट्ठिए^७, खुरो इव एगतधाराए^८, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्धो इव भुयाहि दुत्तरे, तिक्ख कमियव्व^९, गरुअ लवेयव्व, असिधारव्वय^{१०} चरियव्वं । नो^{११} खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गथाण आहाकम्मिए वा

१ स० पा०—महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि ।

२. अम्मापियरो (क, ख, ग, घ) ।

३ स० पा०—पज्जग जाव तओ पच्छा अणु-भूयकल्लाणे पव्वइस्ससि ।

४. दाविय ° (क) ।

५. स० पा०—अग्गिसामण्णे जाव मच्चुसामण्णे ।

६ स० पा०—के जाव गमणाए ।

७. स० पा०—त इच्छामि ण जाव पव्वइत्तए ।

८. एगतदिट्ठिए (घ) ।

९. एगधाराए (वृ), एगंतधाराए (वृपा) ।

१० चकमियव्व (क) ।

११. असिधारव्वय (क, ग, घ) ।

१२. नो य (ख, घ) ।

उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भक्खभत्ते वा कतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कदभोयणे वा फलभोयणे वा वीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुम च ण जाया । सुहसमुच्चिए^१ नो चेव ण दुहसमुच्चिए^२, नाल सीय नाल उण्ह नाल खुह नाल पिवास नाल वाइय-पित्तिय-सिभिय-सन्निवाइए^३ विविहे रोगा-यके, उच्चावए गामकटए, वावीस परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्म अहियासित्तए । भुजाहि ताव जाया । माणुस्सए कामभोगे । तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स^४ •भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय^५ ° पव्वइ-स्ससि ॥

११३ तए ण से मेहे कुमारे अम्मापिऊहि एव वुत्ते समाणे अम्मापियरं एव वयासी— तहेव ण त अम्मयाओ^६ । ज ण तुब्भे मम एव वयह—“एस ण जाया । निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे^६ •केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धि-मग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगत-दिट्ठिए, खुरो इव एगतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्धो इव भुयाहि दुत्तरे, तिक्ख कमियव्व, गरुअ लवेयव्व, असिधारव्वय चरियव्व । नो खलु कप्पइ जाया । समाणाण निग्गथाण आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भक्खभत्ते वा कतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाण-भत्ते वा मूलभोयणे वा कदभोयणे वा फलभोयणे वा वीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुम च ण जाया । सुहसमुच्चिए नो चेव ण दुहसमुच्चिए, नाल सीय नाल उण्ह नाल खुह नाल पिवास नाल वाइय-पित्तिय-सिभिय-सन्निवाइए विविहे रोगा-यके, उच्चावए गामकटए वावीस परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्म अहियासित्तए । भुजाहि ताव जाया । माणुस्सए कामभोगे । तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय^५ ° पव्वइस्ससि ।” एव खलु अम्मयाओ । निग्गथे पावयणे कीवाण कायराण कापुरिसाण इहलोग-पडिवद्धाण परलोगनिप्पिवासाण दुरणुचरे पाययजणस्स, नो चेव ण धीरस्स^७ । निच्छियववसियस्स एत्थ किं दुक्कर करणयाए ?

१. °नमुच्चिए (क, ग) ।

२. °समुच्चिए (घ) ।

३. सन्निवाइय (ख, ग, घ) ।

४. स० पा०—समणस्स जाव पव्वइस्ससि ।

५. अम्मताओ (च, ग) ।

६. स० पा०—अणुत्तरे पुणरवि त चेव जाव तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ जाव पव्वइस्ससि ।

७. वीरस्स (ख, ग) ।

तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ^१
 •महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय ° पव्वइत्तए ॥

मेहस्स एगदिवसरज्ज-पद

११४. तए णं तं मेह कुमार अम्मापियरो जाहे नो सचाएति व्हूहिं विसयाणुलोमाहि
 य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णव-
 णाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे
 अकामकाइ चेव मेह कुमार एव वयासी—इच्छामो ताव जाया ! एगदिवसमवि
 ते रायसिरि पासित्तए ॥

११५. तए ण से मेहे कुमारे अम्मापियरमणुवत्तमाणे^२ तुसिणीए सच्चिट्ठइ ॥

११६. तए ण से सेणिए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
 खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स महत्थ महग्घ महरिह विउल
 रायाभिसेय उवट्ठवेहे^३ ॥

११७. तए ण ते कोडुवियपुरिसा^४ •मेहस्स कुमारस्स महत्थ महग्घ महरिह विउल
 रायाभिसेय ° उवट्ठवेति ॥

११८. तए ण से सेणिए राया व्हूहिं गणनायगेहि य जाव^५ सधिवालेहि य सद्धि
 सपरिवुडे मेह कुमार अट्ठसएण सोवण्णियाणं कलसाण एव—रुप्पमयाण
 कलसाण मणिमयाण कलसाण सुवण्णरुप्पमयाण कलसाण, सुवण्णमणिमयाण
 कलसाण रुप्पमणिमयाण कलसाण सुवण्णरुप्पमणिमयाण कलसाण, भोमेज्जाण
 कलसाणं सव्वोदएहि सव्वमट्ठियाहिं सव्वपुप्फेहि सव्वगघेहि सव्वमल्लेहि
 सव्वोसहीहिं^६ सिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए सव्ववलेण जाव^७ दुदुभि-
 निग्घोस-णाइयरवेण महया-महया रायाभिसेएण अभिसिचइ, अभिसिचित्ता
 करयल^८ परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अर्जलि^९ कट्ठु एव वयासी—
 'जय-जय नदा ! जय-जय भद्दा !

जय-जय नदा ! भद्दे ते^{१०} अजिय जिणाहि, जियं पालयाहि^{११}, जियमज्जे वसाहि,
 [अजिय जिणाहि सत्तुपक्ख, जिय च पालेहि मित्तपक्ख^{१२},]^{१३} •इदो इव देवाण

१. स० पा०—भगवओ जाव पव्वइत्तए ।

२. °मणुयत्तमाणे (क) ।

३. उवट्ठवेहे (ख) ।

४. स० पा०—कोडुवियपुरिसा जाव ते वि
 त्तेव ।

५. ना० १।१।२४ ।

६. सव्वोसहिं (क, ख), सव्वोसहिं (ग, घ) ।

७. ना० १।१।३३ ।

८. सं० पा०—करयल जाव कट्ठु ।

९. जय-जय णदा ! जय-जय भद्दा ! भद्दे,
 (ओ० सू० ६८) ।

१०. पालेहिं (क) ।

११. सं० पा०—मित्तपक्ख जाव भरहो ।

१२. कोष्ठकवर्तिवाक्यद्वय सर्वापु प्रतिपु लभ्यते,

चमरो इव असुराण धरणो इव नागाणं चंदो इव ताराणं ° भरहो इव मणुयाणं
 रायगिहस्स नगरस्स अन्नेसि च वहूण गामागर-नगर'-•खेड-कव्वड-दोणमुह-
 मडव-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-सण्णिवेसाण आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त
 भट्टित्त महत्तरगत आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-
 गीय-वाइय - तती-तल - ताल-तुडिय - घण-मुइग-पडुप्पवाइयरवेण विउलाइ
 भोगभोगाइ भुजमाणे ° विहराहि त्ति कट्टु जय-जय-सद्द पउजति ॥

११६. तए ण से मेहे राया जाए—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिदसारे जाव^३
 रज्ज पसासेमाणे विहरइ ॥

१२०. तए ण तस्स मेहस्स रण्णो [त मेह रायं ?] अम्मापियरो एवं वयासी—भण
 जाया ! किं दलयामो^४ ? किं पयच्छामो^५ ? किं वा ते हियइच्छिए^६ सामत्थे ?

मेहस्स निक्खमणपाओग-उवगरण-पदं

१२१. तए ण से मेहे राया^७ अम्मापियरो एव वयासी—इच्छामि णं अम्मयाओ !
 कुत्तियावणाओ रयहरण पडिग्गह^८ च आणिय, कासवय च सदाविय^९ ॥

१२२. तए ण से सेणिए राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी— गच्छह
 ण तुव्भे देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइ गहाय दोहि सय-
 सहस्सेहि कुत्तियावणाओ रयहरण पडिग्गह^८ च उवणेह, सयसहस्सेण कासवय
 सदावेह ॥

१२३. तए ण ते कोडुवियपुरिसा सेणिएण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्टुट्टा सिरि-
 घराओ तिण्णि सयसहस्साइ गहाय कुत्तियावणाओ दोहि सयसहस्सेहि रयहरण
 पडिग्गह च उवणेति, सयसहस्सेण कासवय सदावेति ॥

कासवेण मेहस्स अगकेसकप्पण-पद

१२४. तए णं से कासवए तेहि कोडुवियपुरिसेहि सदाविए समाणे हट्टुट्टु-चित्तमाणदिए
 जाव^३ हरिसवसविसप्पमाणहियए ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-

तथापि पुनरुक्त व्याख्यारूप प्रतीयते ।

वृत्तावपि नैनद् व्याख्यानमस्ति । 'ओवाइय'
 (६८) सूत्रे पि नैतल्लभ्यते । तेन नाम्माभि-
 मूर्त्तनपाठम्पेण न्वीकृत ।

१. स० पा०—नगर जाव मण्णिवेसाण आहे-
 वच्च जाव विहराहि ।

२. ओ० सू० १४ ।

३. दलामो (क) ।

४. हिययइच्छिए (क), हियपयच्छिए (ख) ।

५. कुमारो (क, ख, ग) ।

६. पडिग्गहण (ख) ।

७. सदाविउं (क), सदावेउ (ख, ग); सदावित्तए
 (घ), वृत्तौ—'शब्दित—आकारितम्' इति
 व्याख्यातं विद्यते । 'आनीतमिच्छामि' तथैव
 'शब्दितमिच्छामि' इति उपयुक्तोक्ति सम्बन्ध.,
 तस्मात् 'सदाविय' इति वृत्त्यनुसारी पाठ.
 स्वीकृत. ।

८. पडिग्गहणं (ख) ।

९. ना० १।१।१६ ।

पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइ पवर' परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणिय राय करयलपरिग्गहिय सिरसावत्तं मत्थए अर्जलि कट्टु एव वयासी—सदिसह ण देवाणुप्पिया । जं मए करणिज्ज ॥

१२५ तए ण से सेणिए राया कासवय एव वयासी—गच्छाहि ण तुब्भे देवाणुप्पिया । सुरभिणा गधोदएण निक्के^३ हत्थपाए पक्खालेहि, सेयाए चउप्फलाए' पोत्तीए मुह वधित्ता मेहस्स कुमारस्स चउरगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि ॥

१२६ तए ण से कासवए सेणिएण रण्णा एव वुत्ते समाणे हट्टुट्टु-चित्तमाणदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियए' •करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अर्जलि कट्टु एवं सामि । त्ति आणाए विणएण वयणं^० पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गधोदएण [निक्के ?] हत्थपाए पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सुद्धवत्थेण मुह वधइ, वधित्ता परेण जत्तेण मेहस्स कुमारस्स चउरगुलवज्जे निक्खमण-पाउग्गे अग्गकेसे कप्पेति ॥

१२७ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स माया महरिहेण हसलक्खणेण पडसाडएण अग्गकेसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुरभिणा गधोदएण पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सरसेण गोसीसचदणेण चच्चाओ दलयइ, दलडत्ता सेयाए पोत्तीए वधइ, वधित्ता रयणसमुग्गयसि पक्खवइ, यजूसाए पक्खवइ, हार-वारिधार'-सिदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइ असूइ विणिम्मयुयमाणी-विणिम्मयुयमाणी, रोयमाणी-रोयमाणी, कदमाणी-कदमाणी, विलवमाणी-विलवमाणी एव वयासी—एस ण अम्ह मेहस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य—अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइ त्ति कट्टु उस्सीसामूले ठवेइ ॥

मेहस्स अलंकरण-पद

१२८. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो उत्तरावक्कमण सीहासण रयावेति, मेह कुमार दोच्च पि तच्च पि सेयापीएहि' कलसेहिं ण्हावेति, ण्हावेत्ता पम्हलसूमालाए गधकासाइयाए गायाइ लूहेति, लूहेत्ता सरसेण गोसीसचदणेणं

१. विभक्तिरहित पदम् ।

२. निक्के ति सर्वथा विगतमलान् (वृ) ।

३. चउप्फालाए (क्व०) अट्टपडलाए (भ० ६।१८६) ।

४. ना० १।१।१६ ।

५. स० पा०—हियए जाव पडिसुणोइ ।

६. वारिधारा (ग) ।

७. सेयाणीएहिं (ग, घ); अत्र लिपिकरणे 'पकारो' णकाररूपेण परिवर्तितोभूत् अथवा 'सेकानीत' इत्यर्थस्य परिकल्पनाया 'सेयाणी-एहिं' इत्यपि पाठ शुद्धस्यात् ।

गायाइ अणुलिपति, अणुलिपित्ता नासा-नीसासवाय-वोज्झ^१ •वरणगरपट्टणु-
गय कुसलणरपससित अस्सलालापेजवं छेयायरियकणगखचियतकम्म^० हस-
लक्खण पडसाडग नियसेति, हारं पिणद्धेति, अद्धहार पिणद्धेति, एव—एगावलि
मुत्तावलि कणगावलि रयणावलि पालवं पायपलव कडगाइ^२ तुडिगाइ^३
केऊराइ अगयाइ दसमुद्दियाणंतय कडिसुत्तय कुडलाइ चूडामणि रयणुकड
मउड—पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता^४ गथिम-वेढिम-पूरिम-सघाइमेण^५—चउव्विहेण
मल्लेण कप्परुक्खग पिव अलकिय-विभूसिय करेति ॥

मेहस्स अभिनिक्खमणमहस्सव-पदं

- १२६ तए ण से सेणिए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखभसय-सण्णिविट्ठु लीलद्विय-सालभजियागं
ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर - विहग-वालग-किन्नर-रु - सरभ-चमर-कुंजर-
वणलय-पडमलय-भत्तिचित्तं घटावलि-महुर-मणहरसरं सुभ-कत-दरिसणिज्जं
निउणोविय-मिसिमिसंत-मणिरयणघटियाजालपरिक्खित्त अठ्ठुग्गय-वइरवेइया-
परिगयाभिरामं विज्जाहरजमल-जतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीय^६ रुवग-
सहस्सकलिय भिसमाण^७ भिठिभसमाणं चक्खुल्लोयणलेस्स सुहफास सस्सिरीयरुवं
सिग्घ तुरियं चवल वेइय पुरिससहस्सवाहिणीयं सीय उवट्टवेह ॥
- १३० तए ण ते कोडुवियपुरिसा हट्टुट्टा अणेगखभसय-सण्णिविट्ठु जाव^८ सीयं
उवट्टवेति ॥
१३१. तए ण से मेहे कुमारे सीय दुरुहड, दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे
सण्णिसण्णे ॥
- १३२ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाया कयवलिकम्मा जाव^९ अप्पमहग्घा-

१ म० पा०—नासानीसासवायवोज्झ जाव हस-
लक्खण ।

२ एतत् पदं वृत्ती नाम्ति व्याख्यातम् ।

३ × (ख, ग) ।

४. पिणद्धेत्ता दिव्व मुमणदाम पिणद्धति,
दहरमलयमुगघिए गवे पिणद्धेति । तए ण
तं मेह कुमार (क, ख, ग), 'घ' प्रति विहाय
नर्वांमु प्रतिपु पाठान्तररूपेणोद्धृतः पाठो
लभ्यते । 'घ' प्रती एव पाठोस्ति—'दिव्व
मुमणदाम पिणद्धेति । तते ण त मेहं कुमारं
गथिम^० । फिन्तु भगवत्या (६।२३)

आचारचूलायां (१५।२८) च असौ पाठः
अतीव व्यवस्थितरूपेण प्राप्तोस्ति, अत-
तयोराधारेण अत्रापि पाठ स्वीकृत । अनेन
प्रस्तुतसूत्रे जातस्य पाठमिश्रणस्य परिहार-
सहजमेव जात. ।

५. सजोडमेण (ख) ।

६. °मालिणीय (क, ख, ग) ।

७ मिसमीण (ख, ग) ।

८. ना० १।१।२६ ।

९. ना० १। १।१।२७ ।

भरणालकियसरीरा सीयं दुरुहड, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स दाहिणपासे भद्दा-
सणसि^१ निसीयइ ॥

१३३. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अवधाई रयहरण च पडिग्गह च गहाय सीय
दुरुहड, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स वामपासे भद्दासणसि निसीयइ ॥

१३४. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा
सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्टिय-विलास - सलावुल्लाव - निउणजुत्तोवयारकुसला
आमेलगजमलजुयल-वट्टिय-अभुण्णय-पीण-रइय-सठिय-पओहरा हिम-रयय-
कुट्टेदुपगास सकोरेटमल्लदाम धवल आयवत्त गहाय सलील ओहारेमाणी-
ओहारेमाणी चिट्ठइ ॥

१३५. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ^२ सगय-
गय-हसिय-भणिय-चेट्टिय-विलास-सलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार^३ कुसलाओ सीयं
दुरुहति, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स उभओ पास^४ नाणामणि-कणग-रयण-
महरिहतवणिज्जुज्जल-विचित्तदडाओ चिल्लियाओ सुहुमवरदीहवालाओ सख-
कूद-दगरय-अमयमहियफेणपुज-सण्णिगासाओ चामराओ गहाय सलील ओहारे-
माणीओ-ओहारेमाणीओ चिट्ठति ॥

१३६. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारा^५-गारचारुवेसा सगय-
गय-हमिय-भणिय-चेट्टिय-विलास-सलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार^६ कुसला सीयं
दुरुहड, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुरओ पुरत्थिमे ण चदप्पभवइर-वेरुलिय-
विमलदड तालियट गहाय चिट्ठइ ॥

१३७. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी^७ सिंगारागारचारुवेसा सगय-
गय-हसिय-भणिय-चेट्टिय-विलास-सलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार^८ कुसला सीय
दुरुहड, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणे^९ ण सेय रययामय विमलसलिल-
पुण्ण मत्तगयमहामुहाकितिसमाण भिगार गहाय चिट्ठइ ॥

१३८. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं
वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयाण सरित्तयाणं सरिक्कयाण
एगाभरण-गहिय-निज्जोयाणं कोडुवियवरतरुणाण सहस्स सद्दावेह^{१०} ॥

१. भद्दासणम्मि (ख), भद्दासणे (ग) ।

२. सं० पा०—सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुस-
लाओ ।

३. पासि (ख) ।

४. सं० पा०—सिंगारा जाव कुसला ।

५. सं० पा०—वरतरुणी जाव मुक्खा (क, ख,

ग, घ) अत्र पूर्वसूत्रक्रमेण 'जाव कुसला'
इति युज्यते, कथमिद परिवर्तन जातमिति
ज्ञातु न शक्यते ।

६. दक्खिणे (ग) ।

७. सं० पा०—सद्दावेह जाव सद्दावेत्ति ।

१३६. *तए णं ते कोडुंवियपुरिसा सरिसयाणं सरित्तयाण सरिव्वयाण एगाभरण-
गहिय-निज्जोयाण कोडुवियवरतरुणाण सहस्सं^० सदावेति ॥
- १४० तए ण ते कोडुवियवरतरुणपुरिसा सेणियस्स रण्णो कोडुवियपुरिसेहि सदाविया
समाणा हट्ठा ण्हाया जाव^१ [सव्वालकारविभूसिया ?^२] एगाभरण-गहिय-
णिज्जोया जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सेणिय
राय एव वयासी—सदिसह ण देवाणुप्पिया । ज ण अम्हेहि करणिज्ज ॥
- १४१ तए ण से सेणिए राया त कोडुवियवरतरुणसहस्स एव वयासी—गच्छह ण
तुब्भे देवाणुप्पिया । मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीय^३ सीय परिवहेह ॥
- १४२ तए ण त कोडुवियवरतरुणसहस्स सेणिएण रण्णा एव वुत्त सत हट्ठ मेहस्स
कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीय सीय परिवहइ ॥
१४३. तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीय^४ सीय दुरूढस्स समाणस्स इमे
अट्ठमगलया तप्पढमयाए पुरओ अहाणुपुव्वीए^५ सपत्थिया, त जहा—सोवत्थिय^६-
सिरिवच्छ - नदियावत्त - वद्धमाणग-भद्दासण - कलस-मच्छ-दप्पणया जाव^७

१. ना० १।१।८१ ।

२ अत्र जाव शब्दम्याग्रिमो पाठो नास्ति सूचित ,
किन्तु प्रसगानुसारेण पूर्तिकृत एव पाठो
युज्यते ।

३ ०वाहिणी (ग, घ) ।

४ ०वाहिणी (ख), वाहिणी (ग) ।

५ आणुपुव्वीए (घ) ।

६ सोत्थिय (ग) ।

७. (१) तयाणतर च ण पुण्णकलसोभगार
दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दसण-रइय-
आ नोयदरिसणिज्जा वाउद्धयविजयवेजयती
य ऊमिया गणतलमणुलिहती पुरओ अहाणु-
पुव्वीए सपट्ठिया ।

(२) तयाणतर च ण वेरुलियभिसतविमलदड
पलवकोरेट मल्लदामोवसोहिय चदमडलनिभ
निमल आत्रवत्तं पवर मीहासण च मणिरयण-
पायवीट सपाउयाजुयममाउत्त वहुकिकर-
कम्मकर-पुरिम-पावत्त-परिक्खित्त पुरओ
अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय ।

(३) तयाणतर च ण वहवे लट्ठिग्गाहा कुत-
ग्गाहा चावग्गाहा चामरग्गाहा, पोत्थयग्गाहा
फलग्गाहा पीढयग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा
हडप्पग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

(४) तयाणतर च ण वहवे दडिणो मुडिणो
छिहडिणो पिच्छिणो हासकरा डमरकरा
चाडुकरा कीडता य वायंता य गायता य
नच्चता य हसता य सोहता य साविता य
रक्खता य आलोय च करेमाणा जयसद् च
पउजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

(५) तयाणतर च ण जच्चाण तरमल्लिहाय-
णाण थासग-अहिलाण-चामर-गड-परिमडिय-
कडीण किंकरवरतरुणपरिग्गहियाण अट्ठसय
वरतुरगाण पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठियं ।

(६) तयाणतर च ण ईसीदताण ईसीमत्ताणं
ईसीतुगाण ईसीउच्छगविसाल-ववलदताण
कचणकोसी-पविट्टदताण कचण-मणिरयण-
भूसियाण वरपुरिसारोहगसपउत्ताण अट्ठसय

वह्वे अत्थत्थिया' •कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किञ्चिसिया कारोडिया कारवाहिया सखिया चक्किया नगलिया मुहमगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खडियगणा ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि मणाभिरामाहि हिययगमणिज्जाहि वग्गुहि जयविजयमगलसएहि° अणवरय अभिनंदता य अभियुणता य एव वयासी—जय-जय नदा ! जय-जय भदा !

जय-जय नदा ! भद् ते । अजिय जिणाहि इदियाइ, जिय च पालेहि समण-धम्म, जियविग्घो वि य वसाहि त देव । सिद्धिमज्जे, निहणाहि रागदोसमल्ले तवेण धिड-धणिय-वद्धकच्छो, मदाहि य अट्टकम्मसत्तू भाणेण उत्तमेण सुक्केण अप्पमत्तो, पावय वित्तिमिरमणुत्तरं केवल नाण, गच्छ य मोक्ख परम पर्यं

गयाण पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय ।

(७) तयाणतर च ण सच्छत्ताणं सज्भयाण सघटाण मपडागाण सत्तोरणवराण सणदि-घोमाण मखिखिणी-जाल-परिक्खित्ताणं हेमव-चित्त-तिणिम-कणग-णिज्जुत्त-दारयाण कालायस-सुकण्णेमि-जतकम्माण सुसिलिट्ठ-वत्तमडल-वुराण आइण्णवरतुरगसुस-पत्ताण कुसलनरच्छेयसारहिमुमयगहियाण वत्तीसतोण-परिमडियाण सककड-वडेसगाण सचावसर-गहरणावरणभरिय - जुद्धसज्जाण अट्टसय रहाण पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय ।

(८) तयाणतर च ण अमि-मत्ति-कुत-तोमर-सूल-लउल-भिडिमाल-घणु-याणिसज्ज पायत्ता-णीय पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय ।

(९) तए ण से मेहे कुमारे हारोत्यय-सुकय-रइय-वच्छे कुडलुज्जोडयाणणे मउडदित्त-सिरए अब्भहिय रायतेयलच्छीए दिप्पमाणे सक्कोरेंटमल्लदामेण छत्तेण घरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणीहि-उद्धुव्वमा-णीहि हयगयपवरवरजोहकलियाए चाउरंगि-णीए मेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव गुणसिनए चेइए, तेणेव पहारेत्य गमणाए ।

(१०) तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरओ मह आसा आमवरा उभओ पासि पागा

णागधरा (नागवरा—वृषा) पिट्ठओ रह-सवेल्लि (रहसगेल्लि-वृषा) ।

(११) तए ण से मेहे कुमारे अब्भुग्गयभिगारे पग्गहियतालियटे ऊसवियसेयच्छत्ते पवीजिय-वालवीयणीए सच्चिड्डीए सव्वजुत्तीए सव्व-वलेण सव्वसमुदएण सव्वादरेण सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसभमेण सव्वपुप्फगव-मल्लालकारेण सव्वतुडिय-सद्-सण्णिणाएण महया डड्डीए महया जुईए महया वलेण महया समुदएण महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएण सख-पणव-पडह-भेरि-भल्लरि खरमुहि-हुड्ढक-मुरय-मुइग-दुदुहि - णिग्घोस-णाइयरवेण रायगिहस्स नगरस्स मज्जमज्जेण निग्गच्छइ ।

(१२) तए ण तस्स मेहकुमारस्स रायगिहस्स नगरस्स मज्जमज्जेण निग्गच्छमाणस्स वह्वे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया** । उपरिलिखित पाठो वृत्ते समुद्धृतोऽस्ति । औपपातिकस्य ६४-६८ सूत्रेषु असौ पाठ किञ्चिच्छब्दभेदेन सहोपलभ्यते ।

१ स० पा०—अत्थत्थिया जाव ताहि इट्ठाहि जाव अणवग्गय ।

२. वलिक (ग, वृषा); एकस्या वृत्तिप्रती 'पलिक' इत्यपि लभ्यते ।

सासय च अयल, 'हता परीसहचमूण', अभीओ परीसहोवसग्गाण, धम्मे ते अविग्घं भवउ त्ति कट्टु पुणो-पुणो मगल-जयसद् पउजति ॥

१४४ तए ण से मेहे कुमारे रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

सिस्सभिव्ख दाण-पद

१४५ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमार पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगव महावीरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्वुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! मेहे कुमारे अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते' *पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए वहुमए अणुमए भडकरडग-समाणे रयणे रयणभूए° जीवियऊसासए हिययणदिजणए उवरपुप्फ पिव दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पकरणे नोवलिप्पइ जलरणे, एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेमु सवड्ढिए नोवलिप्पइ कामरणे नोवलिप्पइ भोगरणे । एस ण देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गे भीए जम्मण'-जर-मरणेण, इच्छइ देवाणु-प्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए । अम्हे ण देवाणु-प्पियाण सिस्सभिव्ख' दलयामो । पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिव्ख ॥

१४६ तए ण समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊहि एव वुत्ते समाणे एयमट्टु सम्म पडिसुणेइ ॥

१४७ तए ण से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ' उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, सयमेव आभरण-मल्लालकार ओमुयइ ॥

१४८ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स माया हसलक्खणेण पडसाडएण' आभरण-मल्लालकार पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाड असूणि विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी रोयमाणी-रोयमाणी कद-माणी-कदमाणी विलवमाणी-विलवमाणी एव वयासी—जडयव्वं जाया !

१. हत्वा परीमह-चमू—परीपहसैन्यम् ।

णमित्यनकारे अथवा कथभूत त्वम्, हता—

विनाशक परीपह-चमूनाम् (वृ) ।

२. पच्चोरुभइ (न, ग) ।

३. स० पा० — ज्ञे जाव जीवियऊसासए ।

४. सवुड्ढे (ख, ग) ।

५. जम्म (ख, ग) ।

६. सीमभिव्ख (क) ।

७. X (क, ग, घ) ।

८. पडग० (ख) ।

घडियव्वं जाया । परक्कमियव्वं जाया । अस्सि च णं अट्टे नो पमाएयव्वं ।
अम्हपि णं एसेव मग्गे भवउ त्ति कट्टु मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समण
भगव महावीरं वदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउव्वभूया
तामेव दिस पडिगया ॥

मेहस्स पव्वज्जागहण-पदं

१४६ तए ण से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठिय लोयं करेइ, करेत्ता जेणामेव समणे
भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता
एव वयासी—आलित्ते ण भते । लोए, पलित्ते ण भते । लोए, आलित्त पलित्ते
ण भते ! लोए जराए मरणेण य ।

से जहानामए केइ गाहावई अगारसि भियायमाणसि जे तत्थ भंडे भवइ
अप्पभारे^१ मोल्लगरुए त गहाय आयाए एगत अवक्कमइ—एस मे नित्थारिए
समाणे 'पच्छा पुरा य'^२ लोए हियाए सुहाए खमाए^३ निस्सेसाए आणुगामियत्ताए
भविस्सइ । एवामेव मम वि एगे आयाभडे इट्टे कते पिए मणुण्णे मणामे । एस
मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सइ । त इच्छामि ण देवाणुप्पिएहिं
सयमेव पव्वाविय सयमेव मुडाविय सयमेव सेहावियं सयमेव सिक्खाविय
सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय^४ धम्ममा-
इक्खिय ॥

१५० तए ण समणे भगवं महावीर मेह कुमार सयमेव पव्वावेइ सयमेव^५ •मुडावेइ
सयमेव सेहावेइ सयमेव सिक्खावेइ सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-
करण-जायामायावत्तिय ° धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया ! गतव्व, एव
चिट्ठियव्व, एव निसीयव्व, एवं तुयट्ठियव्व, एव भुजियव्व, एव भासियव्व,
एव उट्टाए उट्टाय^६ पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्वं, अस्सि
च ण अट्टे नो पमाएयव्व ॥

१५१ तए ण से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए इम एयारुव धम्मिय
उवएस सम्म पडिवज्जइ—तमाणए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ^७, •तह निसीयइ तह
तुयट्ठइ, तह भुजइ, तह भासइ, तह ° उट्टाए उट्टाय^८ पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं
सत्तेहिं सजमेण सजमइ ॥

१. अप्पसार (वृपा) ।

२. पच्छाउरस्स (वृपा)

३. खेमाए (क्व०) ।

४. °उत्तिय (क, ख, ग, घ) ।

५. स० पा०—सयमेव ° आयार जाव
धम्ममाइक्खइ ।

६. °उट्टाए (ग), उत्थाय उत्थाय (वृ) ।

७. स० पा०—चिट्ठइ जाव उट्टाए ।

८. उट्टाए (क) ।

मेहस्स मणो-संकिलेस-पदं

- १५२ जद्विस' च ण मेहे कुमारे' मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए, तस्स णं दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयसि' समणाण निग्गथाणं अहाराइणियाए' सेज्जा सथारएसु विभज्जमाणेसु मेहकुमारस्स' दारमूले' सेज्जा-सथारए जाए यावि होत्था ॥
- १५३ तए ण समणा निग्गथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि वायणाए पुच्छणाए परियट्टणाए धम्माणुजोगचिताए य उच्चारस्स वा' पासवणस्स वा' अइग्गच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया मेह कुमार हत्थेहिं सघट्टेति °अप्पेगइया पाएहिं सघट्टेति अप्पेगइया सीसे सघट्टेति अप्पेगइया पोट्टे सघट्टेति अप्पेगइया कायसि सघट्टेति° अप्पेगइया ओलडेति अप्पेगइया पोलडेति अप्पेगइया पाय-रय-रेणु-गुडिय करेति । एमहालियं° च रयणि° मेहे कुमारे नो सचाएइ खणमवि अच्छि° निमीलित्तए ॥
- १५४ तए ण तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए' °चित्थिए पत्थिए मणो-गए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु अह सेणियस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए मेहे' °इट्टे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासए हियय-णदि-जणणे उवर-पुप्फ व दुल्लहे° सवणयाए' । त जया ण अह अगारमज्झावसामि' तया ण मम समणा निग्गथा आढायति परियाणति'° सक्कारेति सम्माणेति, अट्टाइ हेऊइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ'° आइक्खति, इट्टाहिं कताहि वग्गूहि आल-वेति सलवेति । जप्पभिइ च ण अह मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए, तप्पभिइ च ण मम समणा निग्गथा नो आढायति' °नो परियाणति नो सक्का-रेति नो सम्माणेति नो अट्टाइ हेऊइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ आइक्खति,

१ जं दिवस (घ) ।

२ अणगारे (क) ।

३ पुव्वा° (क, ग, घ) ।

४ आहारातिणियाए (ख, ग) ।

५ मेहस्स अणगारस्स (क) सर्वत्र ।

६ वारमूले (क, ख) ।

७, ८ य (क, ख, ग, घ) । १८६ सूत्रस्य
आधारेण अत्र 'वा' इति पाठो गृहीत ।

९ स० पा०—एव पाएहिं सीसे पोट्टे
कायसि ।

१० एवमहा° (क, घ), एयमहा° (ग) ।

११ रयणी (क, घ) ।

१२ अच्छी (ख) ।

१३ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

१४ स० पा०—मेहे जाव सवणयाए ।

१५ समणयाए (क, ख, ग) ।

१६ °मज्झवसामि (क), °मज्झेवसामि (ग);
अगारमज्झे आवसामि (वृषा) ।

१७. परिजाणति (ग) ।

१८ वाकरणाइ (क, ख, ग) ।

१९ स० पा०—आढायति जाव सलवेति ।

नो इट्ठाहिं कताहि वग्गूहिं आलवेति ° सलवेति । अदुत्तर च ण मम समणा निग्गथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि वायणाए पुच्छणाए °परियट्टणाए घम्माणुजोगर्चिताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइग्गच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया हत्थेहि सघट्टेति अप्पेगइया पाएहिं सघट्टेति अप्पेगइया सीसे सघट्टेति अप्पेगइया पोट्टे सघट्टेति अप्पेगइया कायसि सघट्टेति अप्पेगइया ओलडेति अप्पेगइया पोलडेति अप्पेगइया पाय-रय-रेणु-गुडिय करेति ° । एमहालिय च ण रत्ति अह नो सचाएमि अर्च्छि निमिल्लावेत्तए ° [निमीलित्तए ?] । त सेय खलु मज्झ^१ कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव^२ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते समण भगव महावीर आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्झावसित्तए^३ त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट-माणसगए निरयपडिखुविय च ण त रयणिं खवेइ^४, खवेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए जाव^५ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव^६ उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ जाव^७ पज्जुवासइ ॥

मेहस्स संबोध-पदं

१५५ तए ण मेहा ! इ समणे भगव महावीरे मेह कुमार एव वयासी—से नूण तुम^{१०} मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि समणेहिं निग्गथेहि वायणाए पुच्छणाए °परियट्टणाए घम्माणुजोगर्चिताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइग्गच्छमाणेहि य निग्गच्छमाणेहि य अप्पेगइएहिं हत्थेहिं सघट्टिए अप्पेगइएहि पाएहिं सघट्टिए अप्पेगइएहिं सीसे सघट्टिए अप्पेगइएहिं पोट्टे सघट्टिए अप्पेगइएहिं कायसि सघट्टिए अप्पेगइएहिं ओलडिए अप्पेगइएहिं पोलडिए अप्पेगइएहिं पाय-रय-रेणु-गुडिए कए । ° एमहालिय च ण राइ तुम नो सचाएसि मुहुत्तमवि अर्च्छि निमिल्लावेत्तए । तए ण तुज्झ^{१३} मेहा ! इमेयारूवे अज्झत्थिए^{१४} °चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे ° समुप्पज्जित्था—जया ण अह अगारमज्झावसामि तथा ण मम

- | | |
|--|--|
| १. स० पा०—पुच्छणाए जाव एमहालिय । | ७ ना० १ १।२४ । |
| २ १५३ सूत्रे 'निमिलित्तए' इति पाठोस्ति । | ८ तेणामेव (ग) । |
| अत्र तच्चुत्थार्येऽपि 'निमिल्लावेत्तए' इति | ९ राय० सू० ६० । |
| पाठ कथं जात ? | १० तुमे (ग) । |
| ३. मम (ग) । | ११ स० पा०—पुच्छणाए जाव एमहालिय । |
| ४ ना० १।१।२४ । | १२ तुव्व (क), तुव्वे (ख, घ) । |
| ५. °मज्झे वसित्तए (क) । | १३ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था । |
| ६ वेदेति (घ) । | |

समणा निग्गथा आढायति' •परियाणति सक्कारेति सम्माणेति अट्टाड् हेऊडं पसिणाड कारणाड वागरणाड आइक्खति, इट्टाहि कताहि वग्गूहि आलवेति सलवेति ° । जप्पभिइ च ण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वयामि तप्पभिइ च ण मम समणा निग्गथा नो आढायति जाव' मलवेति । अट्टुत्तर च ण मम समणा निग्गथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अप्पेगडया जाव' पाय-रय-रेणु-गुडिय करेति । त सेय खलु मम कल्ल पालप्पभायाए रयणाए जाव' उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्मिम्मि दिणयरं तेयसा जलते समणं भगव महावीर आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्जे आवसित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेसि, सपेहेत्ता अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट-माणमगए' •निरयपडिक्खिय च ण त° रयणि खवेसि, खवेत्ता जेणामेव अह तेणामेव हव्वमागए ।

से नूण मेहा ! एस 'अत्थे समत्थे ।

हता अत्थे समत्थे" ॥

भगवया सुमेरूपभ-भवनिरुवण-पदं

१५६ एव खलु मेहा ! तुम इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयड्ढगिरिपायमूले वणयरंहे निव्वत्तियनामधेज्जे सेए सख-उज्जल-विमल-निम्मल-दहिघण-गोखीर-फेण-रयणियरप्पयासे सत्तुस्सेहे नवायए दसपरिणाहे सत्तगपइट्टिए 'सोम-सम्मिए'° सुरूवे' पुरओ उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्टओ वराहे अइयाकुच्छीं अच्छिद्-कुच्छी अलवकुच्छी पलवलवोदराहरकरे" वणुपट्टागिति-विसिट्टपुट्टे अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिय-पीवर-गत्तावरे" अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-सुचारु-कुम्मचलणे पडुर"°-मुविसुद्ध-निद्ध-निरुवहय-विसतिनहे छट्टे सुमेरूपभे नाम हत्थिराया होत्था ॥

१५७ तत्थ ण तुम मेहा ! वूर्हीहि हत्थीहि य हत्थिणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि

१ स० पा०—आढायति ° ।

२ ना० १।१।१५४ ।

३. ना० १।१।१५३ ।

४ ना० १।१।२४ ।

५ स पा०—अट्टदुहट्टवसट्टमाणमगए जाव रयणि ।

६ अट्टे समट्टे हता अट्टे समट्टे [क्वचित्] ।

७ समे सुसठिए (वृ), सोम-सम्मिए (वृपा) ।

८ वृत्तौ नास्ति व्याख्यात. ।

९ अतिया ° (ग, घ) ।

१० अलव° (वृ), पलव° (वृपा) ।

११ अतोत्रे वृत्तौ वाचनान्तरस्य निर्देशोस्ति—अभ्युद्गत-मुकुल-मल्लिका-धवलदन्त, आनामित-चाप-ललित-सवेल्लिताग्रगुडः । उपाशक-दशाया—(२।२८) मिद विशेषणद्वय मूलपाठे विद्यते—अवभुगय - मउल-मल्लिया- विमल-धवलदत्त ° आणामिय-चाव-ललिय-सवेल्लिय-गसोड ।

१२. पडर (क, च) ।

य कलभएहि य कलभियाहि य सद्धि संपरिवुडे हत्थिसहस्सनायए देसए पागट्टी पट्टवए जूह्वई वदपरिवड्ढए^१, अण्णेसि च वहूण एकल्लाण^२ हत्थिकलभाण आहेवच्च^३ •पोरेवच्चं सामित्त भटित्तं महत्तरगत आणा-ईसर-सेणावच्च कारे-माणे पालेमाणे^४ विहरसि ॥

१५८ तए ण तुम मेहा ! निच्चप्पमत्ते सइ पललिए कदप्परई मोहणसीले 'अवितण्हे कामभोगतिसिए'^५ वहूहि हत्थीहि य^६ •हत्थिणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि य कलभएहि य कलभियाहि य सद्धि^७ सपरिवुडे वेयड्ढगिरिपायमूले गिरीसु य दरीसु य कुहरेसु य कदरासु य उज्झरेसु य निज्झरेसु य वियरएसु^८ य गड्ढासु य पल्ललेसु य चिल्ललेसु य कडगेसु य कडयपल्ललेसु य तडीसु य विय-डीसु य टकेसु य कूडेसु य सिहरेसु य पव्भारेसु य मचेसु य मालेसु य काण्णेसु य वण्णेसु य वणसडेसु य वणराईसु य नदीसु य नदीकच्छेसु य जहेसु य सगमेसु य वावीसु य पोक्खरणीसु^९ य दीहियासु य गुजालियासु य सरेसु य सरपतियासु य सरसरपतियासु य वणयरेहि दिन्नवियारे वहूहि हत्थीहि य जाव^{१०} सद्धि सपरिवुडे वहुविहतरुपल्लव^{११}-पउरपाणियतणे^{१२} निव्वभए निरुव्विग्गे सुहसुहेण विहरसि ॥

१५९ तए ण तुम मेहा-अण्णया^{१३} कयाइ पाउस-वरिसारत्त-सरद^{१४}-हेमत-वसतेसु कमेण पचसु उऊसु समइक्कतेसु गिम्हकालसमयसि जेट्टामूले मासे पायव-घससमुट्टिएण सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुय-सजोगदीविएण महाभयकरेण^{१५} हुयवहेण वणदव-जाल^{१६}-सपलित्तेसु वणतेसु धूमाउलासु दिसासु महावाय-वेगेण सघट्टिएसु छिण्णजालेसु आवयमाणेसु पोत्ल्लरुक्खेसु अतो-अतो भियायमाणेसु मय-कुहिय-विणट्ट-किमिय^{१७}-कद्दम-नईवियरगजभीणपाणीयतेसु वणतेसु भिगारक-दीणकदिय-रवेसु 'खरफरुस-अणिट्ट-रिट्ट-वाहित्त-विट्टुमग्गेसु'^{१८} दुमेसु तण्हावस-मुक्कपक्ख-पायडियजिव्वभतालुय^{१९}-असपुडियतुड-पक्खिस्सघेसु ससतेसु गिम्हुम्ह^{२०}-

१. परियट्टए (क) ।

२. कल्लाण (ग) ।

३. स० पा०—आहेवच्च जाव विहरसि ।

४. अवितण्हकामतिसिए (क), अवितण्हकामभोगे (ग) ।

५. स० पा०—हत्थीहि य जाव संपरिवुडे ।

६. वियरेसु (ख, ग, घ) ।

७. पुक्खरिणीसु (क) ।

८. ना० १।१।१५७ ।

९. °पल्लवे (क) ।

१०. पाणियतले (क, ग, घ) ।

११. अन्नता (ख) ।

१२. सरय (ख, ग, घ) ।

१३. महाभयकरेण (क, ख, घ) ।

१४. जाला (ख) ।

१५. किमि (वृ), किमिय (वृपा) ।

१६. खरफरुस-रिट्ट-वाहित्त-विट्टुमग्गेसु (वृपा) ।

१७. पर्याडिय ° (घ) ।

१८. गिम्हुम्ह (ख); गिम्ह (घ) ।

उण्हवाय-खरफरुसचडमारुय-सुक्कतणपत्तकयवग्वाउलि-भमनदित्तमभनसावया-उल-मिगतण्हावद्धिचिधपट्टेसु गिरिवरेसु सवट्टइएसु^१ तत्थ-मिय-ससय^२-सरीसि-वेसु^३ अवदालियवयणविवर-निल्लालियग्गजीहे महत्तुवडय-पुण्णकण्णे सक्कुचिय-थोर-पीवर-करे ऊसिय-नगूले पीणाइय^४-विरसरडिय-सट्टेण फोडयतेव अवरतल, पायदहरएण कपयतेव मेडणितल, विणिम्मयमाणे य सीयर^५, सव्वओ समता वल्लिवियाणाइ छिदमाणे, रुक्खसहस्साड तत्थ सुवहूणि नोल्लयते^६, दिणट्टरट्टुव्व नरवरिदे, वायाइट्टेव्व पोए, मडलवाएव्व परिव्वभमने, अभिक्खण-अभिक्खण लिडनियर पमुचमाणे-पमुचमाणे वहूहि हत्थीहि य जाव^७ सट्टि दिसोदिसि विप्पलाइत्था ॥

१६० तत्थ ण तुम मेहा । जुण्णे जरा-जज्जरिय-दंहे आउरे भुभिए^८ पिवासिए दुव्वले किलते नट्टुसुइए मूढदिसाए सयाओ जूहाओ विप्पहूणे^९ वणदवजालापरट्टे^{१०} उण्हेण य तण्हाए य छुहाए य परव्वभाहए समाणे भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे सजायभए सव्वओ समता आघावमाणे परिधावमाणे एग च ण महं सर अप्पोदग^{११} पकवहुल अत्तित्थेण^{१२} पाणियपाए ओडण्णे ।

तत्थ ण तुम मेहा ! तीरमडगए पाणिय असपत्ते अतरा चेव सेयसि विसण्णे । तत्थ ण तुम मेहा ! पाणिय पाडस्सामि त्ति कट्टु हत्थ पसारेसि । से वि य ते हत्थे उदग न पावड । तए ण तुम मेहा ! पुणरवि काय पच्चुट्टरिस्सामि त्ति कट्टु वलियतराय पकसि खुत्ते ॥

१६१ तए ण तुम मेहा ! अण्णया कयाइ एगे चिरनिज्जूढए गयवरजुवाणए सगाओ जूहाओ कर-चरण-दत्त-मुसलप्पहारेहि विप्परट्टे समाणे त चेव महद्दह पाणी-यपाए समोयरड । तए ण से कलभए तुम पासड, पासित्ता त पुव्ववेर सुमरइ, सुमरित्ता आसुरत्ते^{१३} रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे जेणेव तुम तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता तुम तिक्खेहि दत्तमुसलेहि तिक्खुत्तो पिट्टुओ 'उट्टु-

१. सवट्टुएमु (ग) ।

२ पसय (ख, ग, घ, वृ), अनुयोगद्वारवृत्ती पाठान्तररूपेण 'पसय' शब्दः प्राप्यते—पमयन्तु—आटविको द्विखुर चतुष्पदविशेष । प्रस्तुतसूत्रम्य वृत्तावपि इत्थमेव व्याख्यात-मस्ति—प्रसयाश्चाटव्यचतुष्पदविशेषा ।

३ मिरीमवेमु (ख, ग) ।

४ पिणाइय (ख), पेणाइय (ग) ।

५. सीइरं (क), सीयार (क्व०) ।

६. नोल्लवते (ग) ।

७ ना० १।१।१५७ ।

८. उभुसिए (क, घ), जुजिए (ग), 'भुसिय' वुमुधितमित्थय्यं (अतगडवृत्ति ३।८) ।

९ विप्पहीणे (क) ।

१० ०वरट्टे (क), ०परट्टे (ख) ।

११. अप्पोयय (ख) ।

१२. अत्तित्थण (ख, ग) ।

१३ आसुरत्ते (क, ख) ।

भड, उट्टुभित्ता^१ पुव्व^२ वेरं निज्जाएइ, निज्जाएत्ता हट्टुट्टे पाणीय 'पिवड, पिवित्ता^३ जामेव दिंसि पाउव्वभूए तामेव दिंसि पडिगए ॥

१६२. तए ण तव मेहा । सरीरगसि वेयणा पाउव्वभित्था—उज्जला विउला^४ कक्खडा^५ •पगाढा चडा दुक्खा^६ दुरहियासा । पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाह-वक्कतीए यावि विहरित्था ।

भगवया मेरूपभ-भवनिरुवण-पद

१६३. तए णं तुम मेहा । त उज्जलं^७ •विउल कक्खड पगाढ चड दुक्ख^८ दुरहियास सत्तराइदिय वेयण वेदेसि, सवीस वाससय परमाउय पालइत्ता अट्ट-‘दुहट्ट-वसट्टे’^९ कालमासे काल किच्चा इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे गगाए महानईए दाहिणे कूले विभगिरिपायमूले एगेण मत्तवरगधहत्थिणा एगाए गयवरकरेणूए कुच्चिसि गयकलभए जणिए ॥

१६४ तए ण सा गयकलभिया नवण्ह मासाण वसतमाससि^{१०} तुम पयाया ॥

१६५ तए ण तुम मेहा । गव्वभासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभए यावि होत्था—रत्तुप्पल-रत्तसूमालए जासुमणाऽरत्तपालियत्तयं-लक्खारस-सरसकुकुम-सभ्रभरागवण्णे^{११}, इट्टे नियगस्स जूह्वडणो^{१२}, गणियारं-कणेरु^{१३}-कोत्थ-हत्थी अणेगहत्थिसयसपरिवुडे रम्मेषु गिरिकाणणेषु सुहसुहेण विहरसि ॥

१६६. तए ण तुम मेहा ! उम्मुक्कवालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते जूह्वइणा कालधम्मणा सजुत्तेण त जूह्व सयमेव पडिवज्जसि ॥

१६७ तए ण तुम मेहा । वणयरेहिं निव्वत्तियनामधेज्जे^{१४} •सत्तुस्सेहे नवायए दसपरि-णाहे सत्तगपडट्टिए सोम-सम्मिए सुखवे पुरओ उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्टओ वराहे अइयाकुच्छी अच्चिद्धकुच्छी अलवकुच्छी पलवलवोदराहरकरे धणुपट्टागिति-विसिट्टुपुट्टं अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिय-पीवर-गत्तावरे अल्लीण-

१. उट्टुभइ २ (क) ।

२ पुव्व (ख, घ) ।

३ पियइ २ (क, ख, घ) ।

४. तिउला विउला (ख), तिउला (वृपा) ।

५ स० पा०—कक्खडा जाव दुरहियासा ।

६ स० पा०—उज्जल जाव दुरहियास ।

७ वसट्ट-दुहट्टे (क, ख, ग, वृ) ।

८. °मासम्मि (क), °मामे (ग) ।

९ पालियात्तय (क, घ), पारिजत्तय (क्व०) ।

१०. °सभ्रराग° (क) ।

११ °वइणा (ग) ।

१२. गणियायार (घ) ।

१३. करेणु (घ) ।

१४ स० पा०—निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चाउदते । इह यावत् करणेन यद्यपि समग्र. पूर्वोक्तो हस्तिवर्णक सूचितस्तथापि श्वेततावर्जो द्रष्टव्यः, इह रक्तस्य तस्य वर्णितत्वात् । अतएवाग्रे सत्तुस्सेहे इत्यादिक-मतिदेश वक्ष्यति (वृ) ।

गिम्हकालसमयसि जेट्टामूले मासे पायव-धंससमुट्टिण्ण' जाव' मवट्टुडगमु
मियपमुपखिसरीसिवेमु' दिसोदिंसि विप्पलायमाणेमु तेहि व्हहि हत्थीहि य'
सद्धि जेणेव से मडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

यत् पुन 'तए ण तुम मेहा अण्णगा कयाइ
कमेण पचमु' इत्यादि दृश्यते, तद् गमान्तर
मन्यामहे (वृ)

आदर्शेषु गमद्वय लिखितमस्ति । द्वितीयो
गम पूर्ववति १५६ सूत्रस्य वर्णनेन सादृश्य
गच्छति, तेन तस्यैव मूले सन्निवेश कृत ।
प्रथमो गम इत्यमस्ति—

अह मेहा । तुम गइवभावम्मि वट्टमाणो
कमेण नलिणिवणविहवणकरे हेमते कुद-
लोद्ध-उद्धत-तुसारपउरम्मि अइवकते,
अहिणवगिम्हसमयसि पत्ते वियट्टमाणो वणेमु
'वणकरेणु - विविह - दिन्नकयपसव - घाओ'^१
उउयकुमुम^२-चामरा^३-कण्णपूर-परिमडियाभि-
रामो मयवस-विगसत-कडतड-किलिन्न-
गघमदवारिणा सुरभिजणियगवो करेणुपरि-
वारिओ उउसमत्त^४-जणियसोहो काले
दिणयरकरपयडे परिसोसिय-तरुवरसिहर^५-
भीमतरदसणिज्जे भिगार-रवत-भेरवरवे
नाणाविहपत्त-कट्ट-तण-कयवरुद्धुत-पइमारुया-
इद्ध-नहयल-पट्टुममाणे^६ वाउलि-दारुणतरे
तण्हावस - दोस - दूसिय^७-भमत-विविहसावय-

समाउने भीमदग्मिणिज्जे' वट्टते दाम्मग्मि-
गिम्हे मारुयवम - पमन् - पत्तय्यि - वियभिण्ण
अट्टमहिय-भीमभेरव-रवप्पगारेण मइपारा-
पडिय-सित्त-उट्टायमाण-घगघनेन - सट्टुडगण'
दित्ततर-मफुल्लिणेणं धूममानाउनेण
मावयमयतकरणेण वणदवेण जानानोविय'^{१०}-
निरुद्धधूमवकारभीओ वायवालोय^{११}-
महततुवइय-पुण्ण-कण्णो 'आकुचिय-थोर-
पीवरकरो भयवम-भयत-दित्तनयणो'^{१२} वेणेण
महामेहो व्व वाय-णोल्लिय-महल्लम्वो
जेण कवो नेण^{१३} पुरा दवग्गि-भयभीयहियएण
अवगयतणप्पएमक्खो रुक्खोहेमो दवग्गि-
मताणकारणट्टा^{१४} 'तेहि व्हहि हत्थीहि य
मिद्धि'^{१५} जेणेव मडवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।
एक्को ताव एम गमो ।

१ सघस ० (क, ख, घ) ।

२ ना० १।१।१५६ ।

३ १५६ सूत्रे इत्य पाठरचनास्ति—तस्य-मिय-
ससय-सरीसिवेसु ।

४ पू०—ना० १।१।१५७ ।

१ वणरेणुविविहदिन्नकयपसुघाओ (वृपा) ।

२ तुम कुमुम (घ), कुमुम (वृ), उउयकुमुम (वृपा) ।

३ चामर (क्व०) ।

४ ०मय (क) ।

५ ०सिरिहर (घ, वृ) ।

६, दुमगणे (वृपा) ।

७ दोसिय (वृ) ।

८ ०दसणिजे (ख) ।

९ सट्टुडगण (वृपा) ।

१० जालानेविय (वृ) ।

११ आयवाले (वृ), आयवालोय (वृपा) ।

१२ आकुचियथोरपीवरकराभयसव्वदिसिभयतदित्तनयणो
(वृपा) ।

१३. ते (क, ख, घ) ।

१४ कारणत्या (क, ग, घ) ।

१५ एतावान् पाठ ख, ग, घ, प्रतिपु नास्ति, केवल 'क'
प्रतावेव विद्यते, वृत्त्यनुमोदितोस्ति तेनात्माभि-
स्वीकृत ।

तत्थ ण अण्णे वहवे सीहा य वग्घा य विगा य दीविया य अच्छा य तरच्छा य परासरा' य सियाला य विराला य सुणहा य कोला य ससा य कोकतिया य चित्ता य' चिल्लला' य पुव्वपविट्ठा अग्गिभयविट्ठया' एगयत्रो विलधम्मेणं चिट्ठति ॥

१७६ तए ण तुमं मेहा । जेणेव से मडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तेहि वहुहि सीहेहि य जाव' चिल्ललेहि य एगयत्रो विलधम्मेण चिट्ठसि ॥

मेरुप्पभस्स पादुक्खेव-पद

१८० तए ण तुमे' मेहा । पाएण गत्त कडूइस्सामी' ति कट्ठु पाए उक्खित्ते' । तसि च ण अतरसि अण्णेहि वलवतेहि सत्तेहि पणोलिज्जमाणे'-पणोलिज्जमाणे ससए अणुप्पविट्ठे ॥

१८१ तए ण तुमे'' मेहा । गाय कडूइत्ता'' पुणरवि पाय पडिनिक्खेविस्सामि'' ति कट्ठु त ससय अणुपविट्ठु पाससि, पासित्ता पाणाणुकपयाए'' भूयाणुकपयाए जीवाणुकपयाए सत्ताणुकपयाए से पाए अतरा'' चैव सधारिए, नो चैव ण निखित्ते ॥

१८२ तए ण तुम मेहा । ताए पाणाणुकपयाए'' °भूयाणुकपयाए जीवाणुकपयाए ° सत्ताणुकपयाए ससारे परित्तीकए, माणुस्साउए निवद्धे ॥

१८३ तए ण से वणदवे अड्ढाइज्जाइ राइदियाइ त वण भामेइ, भामेत्ता निट्ठिए उवरए उवसते विज्झाए यावि होत्था ॥

१. पारासरा (घ) ।

२. य चित्तलगा य (ख, ग), य चित्तला य (घ) ।

३. चिल्लाला (क) । एतेपा मध्येऽधिकृत-वाचनाया कानिचिन्न दृश्यन्ते ।

४. °भयाभिदुट्ठया (क, ख, घ) ।

५. ना० १।१।१७८ ।

६. तुम (क, ख, ग, घ) ।

७. कडुइ° (ख) ।

८. अणुक्खित्ते (क, ग, घ) ।

९. पणोल्लिज्ज° (क, ग) ।

१०. तुम (क, ख, ग, घ) ।

११. कडुइत्ता (क ख) ।

१२. निक्खमिस्सामि (क), निक्खमिस्सामि (ख, ग, घ) ।

१३. °कपाए (ग) ।

१४. अतरे (ग) ।

१५. स० पा०—पाणाणुकपयाए जाव सत्ताणुकपयाए ।

पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-सुचारु-कुम्मचलणे पडुर-मुविसुद्ध-निद्ध-निरुवहय-विसतिनहे० चउदते मेरुप्पभे हत्थिरयणे होत्था^१ । तत्थ ण तुम मेहा । सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्च^२ •पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे० अभिरमेत्था ॥

- १६८ तए ण तुम मेहा । अण्णया कयाइ गिम्हकालसमयसि जेट्टामूले [मासे पायव-घससमुट्टिएण सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुय-सजोगदीविएण महाभयकरेण हुयवहेण ?]^३ वणदव-जाला-पलित्तेसु वणतेसु धूमाउलासु दिसासु जाव^४ मडलवाएव्व परिव्वभमते भीए तत्थे^५ •तसिए उव्विग्गे० सजायभए व्हूहिं हत्थीहि य^६ •हत्थिणियाहि य लोट्टिएहि य लोट्टियाहि य कलभएहि य कलभियाहि य सद्धि सपरिवुडे सव्वओ समता दिसोदिसि विप्पलाइत्था ॥
- १६९ तए ण तव मेहा । त वणदव पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए^७ •चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे० समुप्पज्जित्था—कहि ण मन्ने मए अयमेयारूवे अग्गिसभमे^८ अणूभूयपुव्वे ?
- १७० तए ण तव मेहा । लेस्साहि विसुज्झमाणीहि अज्झवसाणेण सोहणेण सुभेण परिणामेण तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहा-पूह-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स सन्निपुव्वे जाईसरणे समुप्पज्जित्था ॥
- १७१ तए ण तुम मेहा । एयमट्ट सम्मं अभिसमेसि—एव खलु मया^९ अईए दोच्चे भवग्गहणे इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले जाव^{१०} सुमेरुप्पभे नाम हत्थिराया होत्था । तत्थ ण मया^{११} अयमेवारूवे अग्गिसभमे^{१२} समणुभूए ॥
- १७२ तए ण तुम मेहा । तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयसि नियएण जूहेण सद्धि समण्णागए यावि होत्था ॥
- १७३ तए ण तुम मेहा । सत्तुस्सेहे जाव^{१३} सन्निजाईसरणे चउदते मेरुप्पभे नाम हीत्थ होत्था ॥

१. होत्था । सत्तगपइट्टिए तहेव जाव पडिरूवे (क, घ) । यत् पुनरिह दृश्यते—सत्तगेत्यादि तद् वाचनान्तरवर्णकापेक्ष कुलिखितमिति (वृ) ।
२. स० पा०—आहेवच्च जाव अभिरमेत्था ।
३. १५९ सूत्रस्य वर्णनपद्धत्यासौ पाठोऽत्र युज्यते ।
४. ना० १।१।१५६ ।
५. स० पा०—तत्थे जाव सजायभए ।
६. स० पा०—हत्थीहि य जाव कलभियाहि ।
७. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
८. °सभवे (ख, ग) ।
९. × (ग) ।
१०. मता (ख) ।
११. ना० १।१।१५६ ।
१२. महया (क, ख, ग), एतत् पद अशुद्ध दृश्यते ।
१३. °सभवे (घ) ।
१४. ना० १।१।१६७ ।

मेहप्पभेण मडलन्निम्माणपदं

१७४ तए ण तुज्भ मेहा । अयमेयारूवे अज्भत्थिए जाव' समुप्पज्जित्था—सेय खलु मम ड्याणि गगाए महानईए दाहिणिल्लसि कूलसि विभ्गिरिपायमूले 'दवग्गि-सताणकारणट्ठा'^१ सएण जूहेण महइमहालय मडल घाइत्तए^२ त्ति कट्टु एव सपेहेसि, सपेहेत्ता सुहसुहेण विहरसि ॥

१७५ तए ण तुम मेहा । अण्णया कयाइ पढमपाउससि^३ महावुट्ठिकायसि सन्निवयसि गंगाए महानईए अदूरसामने व्हृहि हत्थोहि य जाव' कलभियाहि य सत्तहि य हत्थिसएहि संपरिवुडे एग मह जोयणपरिमडल महइमहालय मडल घाएसि— ज तत्थ तण वा पत्त वा कट्टु वा कटए वा लया वा वल्ली वा खाणु वा रुक्खे वा खुवे वा, त सब्ब तिक्खुत्तो^४ आहुणिय-आहुणिय पाएण उट्टुवेसि,^५ हत्थेण गिण्हसि, एगते एडेसि ॥

१७६ तए ण तुम मेहा ! तस्सेव मडलस्म अदूरसामते गगाए महानईए दाहिणिल्ले कूले विभ्गिरिपायमूले गिरीमु य जाव' सुहसुहेण विहरसि ॥

१७७ तए ण तुम मेहा ! अण्णया कयाइ मज्झिमए वरिसारत्तसि महावुट्ठिकायसि^६ सन्निवडयसि जेणेव से मडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता दोच्च पि 'मडलघाय करेसि'^७ ।

एव—चरिमवरिसारत्तसि^८ महावुट्ठिकायसि सन्निवयमाणसि जेणेव से मडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तच्च पि मडलघाय करेसि^९ जाव'^{१०} सुहसुहेण विहरसि ॥

दवग्गिभीतसावयाण मंडलपवेस-पद

१७८. ^{११}तए ण तुम मेहा ! अण्णया कयाइ कमेण पचसु उऊसु समइक्कतेसु

१ ना० १।१।१६६ ।

२ वणदवग्गिमताण^० (क); दवग्गिसजाय^० (ख, ग, घ), दवग्गिमताण^० (वृपा) ।

४. घातए (ख) ।

४. ^०पाउसे (ग), ^०पाउसम्मि (घ) ।

५ ना० १।१।१५७ ।

६. × (ग, घ) ।

७. उट्टुवेसि (क), उट्टरेमि (ख, ग), उवट्टेसि (घ); उट्टुवेसित्ति उट्टरसि (वृ) ।

८ ना० १।१।१५८ ।

९ महाविट्ठि^० (क, ख) ।

१० त मडल घाएसि (क, ग, घ) ।

११ ^०वासारत्तसि (ख) ।

१२ करेसि, ज तत्थ तण वा जाव (क, ख, ग, घ), गमान्तरप्रसगे वृत्तिकारेण 'तच्च पि मडलघायं करेसि जाव सुहसुहेण विहरसि'— इति पाठ उद्धृतोस्ति, तस्याधारेणासौपाठोत्र स्वीकृत ।

१३ ना० १।१।१७५, १७६ ।

१४ प्रथमो गम पादटिप्पणे विन्यस्तोस्ति, द्वितीय-ञ्च मूलपाठे रक्षितोऽस्ति । वृत्तिकृता द्वितीय-गमस्य गमान्तरत्वेन उल्लेख कृतोऽस्ति, यथा—

- १८४ तए ण ते वहवे सीहा य जाव' चिल्लला य त वणदवं निट्टिय' •उवरय उवसंत' •
विज्झाय पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परव्भाहया
समाणा तओ मडलाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सव्वओ समना
विप्पसरित्था ।
- १८५ तए ण ते वहवे हत्थी' •य हत्थिणीओ य लोट्टया य लोट्टिया च कलभा य
कलभिया य त वणदवं निट्टिय उवरय उवसत विज्झाय पासति, पासित्ता
अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य • छुहाए य परव्भाहया समाणा तओ मडलाओ
पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता दिसोदिसि विप्पसरित्था ।
- १८६ तए ण तुम मेहा ! जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे सिढिलवलितय' -पिणिद्धगत्ते
दुव्वले किलते ज्जिए पिवासिए अत्थामे अवले अपरक्कमे ठाणुकडे' वेणेण
विप्पसरिस्सामि त्ति कट्टु पाए पसारेमाणे विज्जुहए विव रययगिरि' -पव्वभारे
धरणितलसि सव्वगेहि सण्णिवइए ॥
- १८७ तए ण तव मेहा ! सरीरगसि वेयणा पाउव्वभूया —उज्जला' •विउला कक्खडा
पगाढा चडा दुक्खा दुरहियासा । पित्तज्जरपरिगयसरीरे • दाहवक्कतीए यावि
विहरसि ॥

तीय संदग्गे वट्टमाण-तित्तिक्खोवदेस-पदं

- १८८ तए णं तुम मेहा ! त उज्जल जाव' दुरहियास त्तिण्णि राइदियाइं वेयणं
वेएमाणे विहरित्ता एग वाससयं परमाउ पालइत्ता इहेव जवुद्धीवे दीवे भारहे
वामे रायगिहे नयरे सेणियस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्चिसि कुमारत्ताए
पच्चायाए ॥
- १८९ तए णं तुम मेहा ! आणुपुव्वेण गव्वभासाओ निक्खते' समाणे उम्मुक्कवालभावे
जोव्वणगमणुप्पत्ते मम अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए ।
त जइ ताव तुमे मेहा ! त्तिरिक्खजोणियभावमुवगएण अपडिलद्ध-सम्मत्तरयण-
लभेण मे पाए पाणाणुकपयाए' •भूयाणुकपयाए जीवाणुकपयाए सत्ताणुकपयाए •

१ ना० १।१।१७८ ।

२. स० पा०—निट्टिय जाव विज्झाय ।

३ म० पा०—हत्थी जाव छुहाए ।

४ •तया (घ) ।

५. ठाणुकडे (क), ठाणुक्खे (घ) ।

६ रेवय० (ख०), एकस्या हस्तलिखितवृत्ता-

वपि 'रेवयगिरि' इति पाठो नम्यते । वृत्ती
'न्ययगिरि' पाठस्य पर्यालोचनमपि कृनमस्ति-

इह प्राग्भारः ईपदवनतखड उपमानेनास्य
महत्तर्यैव न वर्णतो रक्तत्वात् तस्य । वाच-
नान्तरे तु सित एवामाविति (वृ) ।

७. स० पा०—उज्जला जाव दाहवक्कतीए ।

८ ना० १।१।१८७ ।

९ निक्कते (ख) ।

१०. म० पा०—पाणाणुकपयाए जाव अतरा ।

अंतरा चेव संधारिए, नो चेव णं निक्खित्ते । किमंग पुण तुम^१ मेहा ! ड्यारिणं
'विपुलकुलसमुब्भवे णं'^२ निरुवह्यसरीर-दत्तलद्धपंचिदिए^३ ण एव उट्ठाण-वल-
वीरिय-पुरिसगार-परक्कमसजुत्ते ण मम अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ
अणगारिय पव्वइए समाणे समणाण निग्गथाण राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसम-
यसि वायणाए^४ •पुच्छणाए परियट्टणाए^५ •धम्माणुओगचित्ताए य उच्चारस्स
वा पासवणस्स वा अडगच्छमाणाण य निग्गच्छमाणाण य हत्थसंघट्टणाणि य
पायमंघट्टणाणि य^६ •सीससघट्टणाणि य पोट्टसघट्टणाणि य कायसघट्टणाणि य
ओलंडणाणि य पोलडणाणि य पाय^७-रय-रेणु-गुडणाणि य नो सम्मं सहसि
खमसि तित्तिक्खसि अहियासेसि ?

मेहस्स जाइसरण-पदं

१६० तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ट
सोच्चा निसम्म मुभेहि परिणामेहि पसत्थेहि अज्झवसाणेहि लेसाहि विसुज्झ-
माणीहि तयावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसण
करेमाणस्स सण्णिपुव्वे जाइसरणे समुप्पण्णे, एयमट्ट सम्मं अभिसमेइ ॥

मेहस्स समप्पणपुव्वं पुणो पव्वज्जा-पदं

१६१ तए णं से मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेण सभारियपुव्वभवे^१ दुगुणाणी-
यसवेगे^२ आणदअसुप्पणमुहे^३ हरिसवसं-^४विसप्पमाण हियए^५ धाराहयकलंबक
पिव समूससियरोमकूवे^६ समणं भगवं महावीर वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता
एवं वयासी—

अज्जप्पभित्ती ण भते ! मम दो अञ्छीणि मोत्तूणं अवसेसे काए समणाण
निग्गथाण निसट्टे त्ति कट्टु पुणरवि समण भगव महावीर वदइ नमसइ,
वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

१ तुमे (क, ख, ग, घ) ।

२. विपुलकुलसमुद्भवे ण मित्यादौ णकारो
वाक्यालकारे (वृ) ।

३ पत्तलद्ध^० (क, ख, ग, घ, वृपा) ।

४ सं० पा०—त्रायणाए जाव धम्माणुओग-
चित्ताए ।

५ सं० पा०—पायसघट्टणाणि य जाव
रयरेणुगुडणाणि ।

६. 'पुव्वजाइसरणे (क, ख, ग, घ, वृ), १०. समूसविय^० (क, ख, घ) ।

^०पुव्वभवे (वृपा), भगवती ११।१७२

सूत्रानुसारेण असौ वृत्ते. पाठभेदो मूले
स्वीकृत ।

७. दुगुणाणिय^० (क, ख, ग, घ) ।

८ आणदयसु^० (ख, ग) ।

९ सं० पा०—हरिसवसं । हरिसवसत्ति
अनेन हरिसवसविसप्पमाणहियए त्ति द्रष्टव्यम्
(वृ) ।

इच्छामि ण भंते । इयाणि दोच्चपि सयमेव पव्वाविय सयमेव मुडाविय'
 •सयमेव सेहाविय सयमेव सिक्खावियं ° सयमेव आयार-गोयर जायामाया-
 वत्तियं' धम्ममाइक्खिय' ॥

१९२ तए ण समणे भगव महावीरे मेह कुमार सयमेव पव्वावेइ' •सयमेव मुडावेइ
 सयमेव सेहावेइ सयमेव सिक्खावेइ सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-
 करण °-जायामायावत्तिय धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया ! गतव्व, एव
 चिट्ठियव्व, एव निसीयव्वं, एव तुयट्ठियव्व, एव भुजियव्व एव भासियव्व एव
 उट्टाए' उट्टाय पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण सजमेण सजमियव्व ॥

१९३ तए ण से मेहे समणस्स भगवओ महावीरस्स अयमेयारूव धम्मिय उवएस सम्म
 पडिच्छइ, पडिच्छत्ता तह गच्छइ तह चिट्ठइ' •तह निसीयइ तह तुयट्ठइ तह
 भुजइ तह भासइ तह उट्टाए उट्टाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि ° सजमेण
 सजमइ ॥

मेहस्स निग्गठचरिया-पद

१९४ तए ण से मेहे अणगारे जाए—डरियासमिए' •भासासमिए एसण।समिए आयाण-
 भड-मत्त-णिकखेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणिआ-
 समिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए
 गुत्तवभयारी चाई लज्जू धन्ने खतिखमे जिइदिए सोहिए अणियाणे अप्पुस्सुए
 अबहिल्लेसे सुसामण्णरए दते इणमेव निग्गथ पावयण पुरओकाउ विहरति ° ॥

१९५ तए ण से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तहारूवाण थेराण
 अतिए' सामाइयमाइयाइ' 'एक्कारस अगाइ'" अहिज्जइ, अहिज्जत्ता वहूहि
 छट्ठमदसमदुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि'" अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

मेहस्स भिक्खुपडिमा-पदं

१९६ तए ण समणे भगव महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलयाओ चेइयाओ
 पडिणिकखमइ, पडिणिकखमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

१ स० पा०—मुडाविय जाव सयमेव ।

२. °उत्तिय (क, ख, ग, घ) ।

३ °माइक्खइ (क, ग, घ) ।

४ स० पा०—पव्वावेइ जाव जायामाया-
 वत्तिय ।

५ उट्टाय (क, ग, घ) ।

६ स० पा०—चिट्ठइ जाव सजमेण ।

७. म० पा०—अणगार-वण्णओ भाणियव्वो । १०

वृत्तावय पाठ उल्लिखितोन्ति, तत्र 'दते'

इति विशेषण नास्ति ।

८ अतिए तहारूवाण थेराण (क, ख, ग, घ) ।

अत्र लेखने 'अतिए' पदस्य विपर्ययो जात
 इति सभाव्यते । (१।१।२०८) सूत्रे पि
 स्वीकृतपाठवत् पाठो लभ्यते—

९ °माइयाणि (क, ग), सामातियमाइयाणि
 (ख) ।

१० °अगति (ख), एक्कारसगाइ (घ) ।

११ °खवणेहि (ख) । पृ०—ना० १।१।२०१ ।

१६७ तए णं से मेहे अणगारे अणया कयाइ समण भगवं महावीरं वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते ! तुव्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे मासिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि ॥

१६८ तए ण से मेहे अणगारे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए^१ समाणे मासिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ ।

मासिय भिक्खुपडिम 'अहासुत्त अहाकप्पं अहामग्ग'^२ सम्म काएण फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्टेइ, सम्म काएण फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुव्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे दोमासिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि ।

जहा पढमाए अभिलावो तहा दोच्चाए तच्चाए चउत्थाए पचमाए छम्मासियाए सत्तमासियाए पढमसत्तराइदियाए दोच्चसत्तराइदियाए^३ तच्च सत्तराइदियाए^४ अहोराइयाए^५ एगराइयाए^६ वि ॥

मेहस्स गुणरयणसंव च्छर-पद

१६९ तए ण से मेहे अणगारे वारस भिक्खुपडिमाओ सम्म काएण फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुव्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसवच्छर तवोकम्म उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि ॥

२०० तए ण से मेहे अणगारे पढम मास चउत्थ-चउत्थेण अणिक्खत्तेण तवोकम्मेण, दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेण अवाउडएण^७ । दोच्च मास छट्ठ-छट्ठेण अणिक्खत्तेण तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेण अवाउडएण । तच्चं मास अट्ठमं-अट्ठमेण अणिक्खत्तेण तवोकम्मेण, दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेण अवाउडएण ।

१. अणुण्णाते (ग) ।

५. अहोराइदियाए (ख, घ) ।

२. स्थानाङ्गे (७।१३) एवं पाठो लभ्यते—
अहामुत्त अहाअत्थ अहातच्च अहामग्ग
अहाकप्प ।

६. एगराइदियाए (ग, घ) ।

३. दोच्चा° (ख), वीया° (घ) ।

७. अवाउडतेण (ख); अवाउडेण (घ); अप्रावृतेन अविद्यमानप्रावरणेन । स एव वा अप्रावृत. णकारस्त्वलकारार्थं (वृ) ।

४. तच्चा° (ख), तीया° (घ) ।

चउत्थं मासं दसमं-दसमेणं अणिक्वित्तेण तवोकम्मेण, दिया ठाणुक्कुडुए
सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेण अवाउडएण ।
पचम मासं दुवालसम-दुवालसमेण अणिक्वित्तेण तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए
सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेण अवाउडएण ।
एव एएण अभिलावेण छट्ठे चोद्दसम-चोद्दसमेण, सत्तमे सोलसम-सोलसमेण,
अट्ठमे अट्ठारसमं - अट्ठारसमेण, नवमे वीसडम-वीसडमेणं, दसमे वावीमडम-
वावीसडमेणं, एक्कारसमे चउव्वीसडम-चउव्वीसडमेण, वारसमे छव्वीसडमं-
छव्वीसडमेण, तेरसमे अट्ठावीसडम-अट्ठावीसडमेण, चोद्दसमे तीसडमं-तीसडमेण,
पचदसमे वत्तीसडम-वत्तीसडमेण, सोलसमे चउत्तीसडम-चउत्तीसडमेण—अणि-
क्वित्तेणं तवोकम्मेण, दिया ठाणुक्कुडुए मुराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे,
वीरासणेणं अवाउडएण य ॥

२०१. तए ण से मेहे अणगारे गुणरयणसवच्छर तवोकम्म अहामुत्तं •अहाकप्प अहा-
मग्गं° सम्म काएण फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्ठेइ अहामुत्त अहाकप्पं
•अहामग्ग सम्म काएण फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता° किट्ठेत्ता समणं
भगवं महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता वहुहिं छट्ठमदसमदुवालसेहिं
मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

मेहस्स सरीरदसा-पदं

२०२ तए ण से मेहे अणगारे तेण 'ओरालेणं' विपुलेण सस्सिरीएण पयत्तेणं पग्गहिएणं'
कल्लाणेण सिवेण घन्नेण मगल्लेणं उदग्गेण उदारेणं उत्तमेण महाणुभावेण
तवोकम्मेणं सुक्खे लुक्खे' निम्मसे किडिक्किडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्वे किसे
घमणिसतए जाए यावि होत्था—जीवजीवेण गच्छइ, जीवजीवेण चिट्ठइ, भास
भासित्ता गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ, भास भासिस्सामि त्ति गिलाइ ।
से जहानामए इगालसगडिया इ वा कट्टसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा
तिलडासगडिया° इ वा एरडसगडिया' इ वा" उण्हे दिन्ना सुक्का'° समाणी

१ वीरासणेण य (क, ख, ग) ।

२ स० पा०—अहामुत्त जाव सम्म ।

३ स० पा०—अहाकप्प जाव किट्ठेत्ता ।

४ उरालेण (ख, ग, घ) ।

५ परिग्गहिएण (क, ख) ।

६ भुक्खे (क, ग, घ)

७ तिलसगडिया (ग) ।

८ एरडकट्टमगडिया (ख) ।

९ भगवती (२।१) सूत्रे स्कन्दकवर्णके कानिचित् १० सुक्खा (ख, ग) ।

पदानि अविकानि विपर्ययं प्राप्तानि च
वर्तन्ते, यथा—ओरालेण विउलेण पयत्तेण
पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण घण्णेण मगल्लेण
सस्सिरिएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण उदा-
रेण महाणुभागेणं० ।

से जहा नामए कट्टसगडिया इ वा पत्तसग-
डिया इ वा पत्ततिलमडसगडिया इ वा
एरंडकट्टसगडिया इ वा इगालसगडिया इ वा ।

ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, एवामेव मेहे अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेण, अवचिए मससोणिण, ह्यासणे इव भासरासिपरिच्छन्ने तवेण तेण तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

मेहस्स विपुलपव्वए अणसण-पद

२०३. तेण कालेणं तेण समएण समणे भगव महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव^१ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिख्व ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२०४ तए ण तस्स मेहस्स अणगारस्स राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए^२ *चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^३ समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेण ओरालेण^४ *विपुलेण सस्सिरीएण पयत्तेण पग्गहिणए कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेण उदग्गेण उदारेणं उत्तमेण महाणुभावेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मा-वणद्धे किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था—जीवजीवेण गच्छामि, जीव-जीवेण चिट्ठामि, भास भासित्ता गिलामि, भास भासमाणे गिलामि^५, भास भासिस्सामि त्ति गिलामि । त अत्थि ता^६ मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिस-कार^७-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसकार^७-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं-महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, ताव ता^६ मे सेय कल्ल पाउप्प-भायाए रयणीए जाव^८ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते^९ समण भगव महावीर वदित्ता नमसित्ता समणेण भगवया महावीरेण अब्भणु-ण्णायस्स समाणस्स सयमेव पव्व महव्वयाइ आरुहित्ता गोयमादीए समणे निग्गथे निग्गथीओ य खामेता तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सिद्धि विउल पव्वय सणिय-सणिय दुरुहित्ता सयमेव मेहघणसण्णिगास पुढविसिलापट्टय पडिलेहित्ता सलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव^{१०} उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव समणे भगव

१ ओ० १६ ।

२. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

३ स० पा०—उरालेण तहेव जाव भासं ।

४ तामेव (ख, ग) ।

५ पुरिसक्कार (क, घ) ।

६ पुरिसगार (क) ।

७ ताव (क, ग, घ), तावताव (वृ) ।

८ ना० ११।२४ ।

९. जलते सूरिए (ख, ग) ।

१०. ना० ११।२४ ।

महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पायाहिण करेड, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सुसमाणे नमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे' पज्जुवासइ ॥

२०५ 'मेहा इ ।'^१ समणे भगव महावीरे मेह अणगार एव वयासी—से नूण तव मेहा । राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अय-मेयारूवे अज्झत्थिए^२ °च्चितिए पत्थिए मणोगए सकपे ° समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेण ओरालेण तवोकम्मेण मुक्के जाव' जेणेव' इह तेणेव हव्व-मागए ।

से नूण मेहा । अट्ठे समट्ठे ?

हता अत्थि ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवध करेहि ॥

२०६ तए ण से मेहे अणगारे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे हट्टुट्टु-चित्तमाणदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पायाहिण करेड, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता सयमेव पच महव्वयाइ आरूहेइ', आरूहेत्ता गोयमादोए' समणे निग्गये निग्गयोओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहि कडादोहि थेरेहि सद्धि विपुल पव्वय सणिय-सणिय दुरुहइ, दुरुहित्ता सयमेव मेहघणसण्णिगास'^३ पुढविसिलापट्टय पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दव्वसथारग सथरइ, सथरित्ता दव्वसथारग दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभि-मुहे सपलियकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी—नमोत्थु ण अरहताण जाव'^४ सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपत्ताण । नमोत्थु ण समणस्स जाव सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स । वदामि ण भगवत तत्थगय इहगए, पासउ मे भगव तत्थगए इहगय ति कट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पुव्वि पि य ण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए, मुसावाए अदिण्णादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे माणे माया लोहे पेज्जे दोसे कलहे

१ पजलियडे (ख), अजलियडे (घ) ।

७ ना० १।१।१६ ।

२ मेह ति (ख), मेघाइ (घ) ।

८ आरूभेइ (ख), आरूहति (घ) ।

३ सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९ गोयमादि (क, ख, ग, घ) ।

४ ना०—१।१।२०४ ।

१० अतोओ १।५।८३ सूत्रे 'देवसण्णिवाय' इति पद विद्यते ।

५ पू० ना० १।१।२०४ ।

६ अत्र १।१।२०४ सूत्रस्य 'जेणेव समणे भगव

११ ओ० सू० २१ ।

महावीरे' अत पूर्ववर्ती पाठः समर्पितोस्ति ।

अढभक्खाणे पेसुण्णे परपरिवाए अरइरई मायामोसे मिच्छादंसणसल्ले-
पच्चक्खाए ।

इयाणिं पि ण अह तस्सेव अतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव मिच्छा-
दसणसल्ल पच्चक्खामि, सव्व असण-पाण-खाइम-साइम चउव्विहपि आहारं
पच्चक्खामि जावज्जीवाए ।

जपि य डम सरीर इट्ठ क्त पिय^१ •मणुण्ण मणाम थेज्जं वेस्सासिय सम्मय
वहुमय अणुमय भंडकरडगसमाण मा ण सीयं मा णं उण्ह मा ण खुहा मा ण
पिवासा मा णं चोरा मा ण वाला मा ण दसा मा ण मसया मा ण वाइय-पित्तिय-
सेभिय-सण्णिवाइय^२ • विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा 'फुसतीति कट्टु'^३
एय^४ पि य ण चरमेहि^५ ऊसास-नीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु सलेहणा-
भूसणा-भूसिए^६ भत्तपाण - पडियाडक्खिए पाओवगए काल अणवकखमाणे
विहरइ ॥

२०७ तए ण ते थेरा भगवतो मेहस्स अणगारस्स अगिलाए वेयावडिय करेति ॥

मेहस्स समाहिमरण-पदं

२०८ तए ण से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए
सामाइयमाइयाइ^७ एक्कारसअगाइ अहिज्जित्ता, वहुपडिपुण्णाइ दुवालस-
वरिसाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अप्पाण भोसेत्ता,
सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेएत्ता, आलोइय-पडिक्कते उद्वियसल्ले समाहिपत्ते
अणुपुव्वेण कालगए ॥

थेरेहिं मेहस्स आयारभंडसमप्पण-पद

२०९ तए ण ते थेरा भगवतो मेह अणगार अणुपुव्वेण कालगय पासति, पासित्ता
परिनेव्वाणवत्तिय^८ काउस्सग्ग करेति, करेत्ता मेहस्स आयारभडग गेण्हति,
विउलाओ पव्वयाओ सणिय-सणिय 'पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता'^९ जेणामेव
गुणसिलए चेइए, जेणामेव समणे भगव महावीरे, तेणामेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव

१ स० पा०—पिय जाव विविहा ।

२ इह प्रथमावहुवचनलोपो द्वय (भ० वृ) ।

३ फुसति चिट्ठति (ग, घ) ।

४ एव (क, ख, ग, घ) ।

५ चरिमेहि (घ) ।

६ सलेखनास्पर्शक (वृ), सलेहणाभूसणाभूसिए
(वृपा) ।

७. सामाइयाइ (ख) ।

८ परिनिव्वाणवत्तिय (ख, घ), परिनिव्वाण-
पत्तिय (ग) ।

९ पच्चोरुमति २ (क) ।

वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए^१
 •पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपण्णे अल्लीणे^२ °
 विणीए, से ण देवाणुप्पिएहि अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाइए समणे निग्गथे
 निग्गथीओ य खामेत्ता अम्हेहिं सद्धि विपुल पव्वयं सणिय-सणिय दुरुहड,
 सयमेवमेघघणसण्णिगास पुढविसिल पडिलेहेड^३, भत्तपाण-पडियाडक्खिए
 अणुपुव्वेण कालगए ।
 एस ण देवाणुप्पिया । मेहस्स अणगारस्स आयारभडए ॥

गोयमपुच्छाए भगवओ उत्तर-पद

- २१० भते । त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वंदइ नमसड, वदित्ता नमसित्ता
 एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी मेहे नाम अणगारे से ण भते ।
 मेहे अणगारे कालमासे काल किच्चा कहि गए ? कहि उववण्णे ?
- २११ गोयमा । इ^४ समणे भगव महावीरे गोयम एव वयासी—एवं खलु गोयमा !
 मम अतेवासी मेहे नाम अणगारे पगइभद्दए जाव^५ विणीए, से ण तहारूवाण
 थेराण अतिए सामाडयमाइयाइ^६ एक्कारस अगाड अहिज्जित्ता, वारस भिक्खु-
 पडिमाओ गुणरयण-सवच्छर तवोकम्म काएण फासेत्ता जाव^७ किट्टेत्ता, मए
 अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाड थेरे खामेत्ता, तहारूवेहिं •कडादीहिं थेरेहिं
 सद्धि^८ ° विपुल पव्वयं [सणियं-सणिय ?] दुरुहित्ता^९, दव्वभसथारगं, संथरित्ता
 दव्वभसथारोवगए सयमेव पंचमहव्वए उच्चारेत्ता, वारस वासाड सामण्णपरि-
 याग पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अप्पाण भूसित्ता, सद्धि भत्ताइ अणसणाए
 छेदेत्ता आलोडय-पडिक्कते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा
 उड्डं च्चदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाण वहूइ जोयणाइ वहूइ जोयणसयाइं
 वहूइ जोयणसहस्साड वहूइ जोयणसयसहस्साइ वहूओ जोयणकोडीओ वहूओ
 जायणकोडाकोडीओ उड्डं दूर उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणकुमार-मार्हिद-वभ-^{१०}
 लतग-महासुक्क-सहस्साराणय-पाणयारणच्चुए तिण्णि य अट्टारसुत्तरे गेवेज्ज-
 विमाणवासए वीईवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे ।

१. स० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए ।

६. मामाडयाइ (ख) ।

२. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'अल्लीणे' इत्यस्य अनन्तर
 'भद्दए' इति पाठोऽस्ति ।

७. ना० १।१।२०।१ ।

८. स० पा०—तहारूवेहिं जाव विपुल ।

३. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोऽस्ति । अस्य
 पूर्तये द्रष्टव्य १।१।२०।६ सूत्रम् ।

९. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोऽस्ति । अस्य
 पूर्तये द्रष्टव्य १।१।२०।६ सूत्रम् ।

४. दि (क, ख, ग, घ) ।

१०. वभलोक (घ) ।

५. न० १।१।२०।६ ।

तत्थ णं अत्थेगइयाण देवाण तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ ण मेहस्स वि देवस्स तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई' ॥

२१२. एस ण भते ! मेहे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएण ठिइक्खएण भवक्खएण अणतर चयं चइत्ता कहिं गच्छहिइ ? कहि उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२१३. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण जाव^३ सिद्धिगइनामघेज्जं ठाण सपत्तेण अप्पोलंभ^३-निमित्त पठमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

महुरेहिं निउणेहिं, वयणेहिं चोययति आयरिया ।
सीसे कहिंचि खलिए, जह मेहमुणिं महावीरो ॥१॥

१ × (क, ख, ग) ।

२. ना० १११।७ ।

३. अप्पोपालभ (क्व०), एकस्या वृत्तिप्रतावपि 'अप्पोपालभ' इति लिखितमस्ति ।

वीयं अज्भयणं

संघाडे

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण पढमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, वितियस्स ण भते । नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नामं नयरे होत्था — वण्णओ^१ ॥
३. तस्स^२ ण रायगिहस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गुणसिलए नाम चेइए होत्था — वण्णओ^३ ।
- ४ तस्स ण गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामते, एत्थ ण मह एग जिण्णुज्जाणे यावि होत्था — विणट्ठदेवउल^४ -परिसडियतोरणघरे नाणाविहगुच्छ-गुम्म-लया-वल्लि-वच्छच्छाइए^५ अणेग-वालसय-सकणिज्जे यावि होत्था ॥
- ५ तस्स ण जिण्णुज्जाणस्स बहुमज्भदेसभाए, एत्थ ण मह एगे भग्गकूवे^६ यावि होत्था ॥
- ६ तस्स ण भग्गकूवस्स अदूरसामते, एत्थ ण मह एगे मालुयाकच्छए यावि होत्था — किण्हे किण्होभासे जाव^७ रम्मे महामेहनिउरवभूए^८ वहूहिं रुक्खेहि य गुच्छेहि य गुम्मेहि य लयाहि य वल्लीहि य तणेहि य कुसेहि^९ य खण्णुएहि^{१०} य सच्छण्णे पलिच्छण्णे अतो भुसिरे वाहि गभीरे अणेग-वालसय-सकणिज्जे यावि होत्था ॥

१ नगरवण्णओ (क, ग), नगरस्सवण्णओ (ग),

ओ० सू० १ ।

२ नत्थ (ग) ।

३ ओ० सू० २-१३ ।

४. विणट्ठदेवउले (ख, घ) ।

५. °च्छात्तिए (ग) ।

६. वूवए (क, ख, ग) ।

७ ओ० सू० ४ ।

८ वाचनान्तरे त्विदमधिकं पठ्यते—पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जभाणे सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ (वृ) ।

९. कुसएहि (क), कुविएहि (वृपा) ।

१०. खाणुएहि (ख), खत्तएहि (घ, वृपा) ।

घणसत्थवाह-पदं

७. तत्थ णं रायगिहे नयरे घणे नाम सत्थवाहे—अड्ढे दित्ते^१ •वित्थिण्ण^२-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे वहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए वहुधण-वहुजायरुवरयए आओग-पओग-सपउत्ते विच्छड्डिय^३ •विउल^४-भत्तपाणे ॥
८. तस्स ण घणस्स सत्थवाहस्स भद्दा^५ नाम भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरा लक्खण-वजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरगी ससिसोमागार-कत-पियदसणा सुरूवा करयल-परिमिय-तिवलय^६-वलियमज्झा^७ कु डलुल्लिहियगडलेहा कोमुइ-रयणियर^८-पडिपुण्ण-सोमवयणा^९ सिगारागार-चारुवेसा^{१०} •सगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-सलाव-निउण-जुत्तोवयार-कुसला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा^{११} पडिरूवा वक्का अवियाउरी जाणुकोप्परमाया यावि होत्था ॥
९. तस्स ण घणस्स सत्थवाहस्स पथए नाम दासचेडे होत्था—सव्वगसुदरगे मंसो-वचिए वालकीलावणकुसले यावि होत्था ॥
१०. तए ण से घणे सत्थवाहे रायगिहे नयरे वहुण नगर-निगम^{१२}-सेट्ठि-सत्थवाहाण अट्टारसण्ह य सेणिप्पसेणीणं वहुसु कज्जेमु य कुडुवेसु य मतेसु य जाव^{१३} चक्खु-भूए यावि होत्था । नियगस्स वि य ण कुडुवस्स वहुसु कज्जेसु य जाव चक्खुभूए यावि होत्था ॥

विजयतक्कर-पद

११. तत्थ ण रायगिहे नयरे विजए नाम तक्करे होत्था—पावचडाल-रूवे भीमतररुद्ध-कम्मे आरुसिय-दित्त-रत्तनयणे^{१४} खरफरुस-महल्ल-विगय-वीभच्छदाट्टिए असपुडियउट्टे उद्धय-पइण्ण-लवतमुद्धए भमर-राहुवण्ण निरणुककोसे निरणुतावे दारुणे पइभए^{१५} निससइए^{१६} निरणुकपे अहीव एगतदिट्ठीए खुरेव एगतधाराए गिट्ठेव आमिसत्तल्लिच्छे अग्गिमिव सव्वभक्खी जलमिव सव्वग्गाही उक्कचण-वचण-माया-नियडि-कूड कवड-साइ-सपओग-वहुले चिरनगरविणट्टु-ट्टुसीलायार-

१ स० पा०—दित्ते जाव विउलभत्तपाणे ।

२ विच्छन्न (ओ० सू० १४) ।

३ पउर (ओ० सू० १४) ।

४ सुभद्दा (ख) ।

५ पसत्थ-तिवली (ओ० सू० १५) ।

६ मज्झा (क, ख, घ) ।

७. रयणियर-विमल (१।१।१७) ।

८ सोमचदवयणा (ग) ।

९ स० पा०—चारुवेसा जाव पडिरूवा ।

१० नियम (क, ग) ।

११ ना० १।१।१६ ।

१२ रत्तनयणे (क) ।

१३ पतिभते (ग) ।

१४ नेससत्तिए (ख), निससे (वृषा) ।

चरित्ते जूयप्पसंगी मज्जप्पसंगी भोज्जप्पसंगी मंसप्पसंगी दारुणे हिययदारए^१
 साहसिए सधिच्छेयए उवहिए विस्सभघाई आलीवग^२-तित्थभेय-लहुहत्थसपउत्ते
 परस्स दव्वहरणम्मि निच्च अणुवद्धे तिक्कवेरे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अइ-
 गमणाणि य निग्गमणाणि य वाराणि य अववाराणि य छिंडीओ य खडीओ य
 नगरनिद्धमणाणि य सवट्टणाणि य निक्कट्टणाणि य जूयखलयाणि य पाणागाराणि
 य वेसागाराणि य तक्करट्टणाणि य तक्करघराणि य सिंघाडगाणि य तिगाणि य
 चउक्काणि य चच्चराणि य नागघराणि य भूयघराणि य जक्खदेउलाणि य
 सभाणि य पवाणि य पणियसालाणि य सुन्नघराणि य आभोएमाणे मग्गमाणे
 गवेसमाणे, बहुजणस्स छिद्देसु य विसमेसु य विहुरेसु^३ य वसणेसु य अब्भुदएसु
 य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जण्णेसु य पव्वणीसु य मत्तपमत्तस्स
 य वक्खित्तस्स य वाउलस्स य सुहियस्स य दुहियस्स य विदेसत्थस्स य
 विप्पवसियस्स य मग्ग च छिद् च विरह^४ च अतर च मग्गमाणे गवेसमाणे
 एव च ण विहरइ । वहिया वि य ण रायगिहस्स नगरस्स आरामेसु य
 उज्जाणेसु य वावि-पोक्खरणि-दीहिय-गुजालिय-सर-सरपंतिय सरसरपति-
 यामु य जिण्णुज्जाणेसु य भग्गकूवेसु^५ य मालुयाकच्छएसु य सुसाणेसु य
 'गिरिकदरेसु य लेणेसु य'^६ उवट्टाणेसु य बहुजणस्स छिद्देसु य जाव अतर च
 मग्गमाणे गवेसमाणे एव च ण विहरइ ॥

भद्दाए संताणमणोरह-पद

१२ तए ण तीसे भद्दाए भारियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि
 कुडुवजागरिय जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए^७ •चित्थिए पत्थिए
 मणोगए सकप्पे^८ समुप्पज्जित्था—अह धणेण सत्थवाहेण सद्धि बहूणि वासाणि
 सह-फरिस-रस-गध^९-रूवाणि माणुस्सगाइं कामभोगाइ पच्चणुवभवमाणी
 विहरामि, नो चेव ण अह दारगं वा दारियं^{१०} वा पयामि^{११} ।
 त धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ^{१२}, •सपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ
 ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ

१. जणहियाकारए (वृषा) ।

२. आलियग (क, ख) ।

३. विहुरेसु (क, ख, घ) ।

४. विहर (ख, ग) ।

५. भग्गवृचएनु (क, ख, घ) ।

६. °लेणेसु य देवउलेसु य (क); गिरिकदरलेण
 (ख, ग, घ) ।

७. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

८. × (क, ग, घ) ।

९. दारिग (क, ख) ।

१०. पयायामि (ग) ।

११. स० पा०—अम्मयाओ जाव सुलद्धे ।

ण ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ ण ताओ अम्मयाओ, ° सुलद्धे णं
माणुस्सए जम्मजीवियफले तासिं अम्मयाणं, जासिं मण्णे नियगकुच्छिसभूयाइ
थणदुद्ध-लुद्धयाइ महुरसमुल्लावगाइ मम्मणपयपियाइ थणमूला^१ कक्खदेसभाग
अभिसरमाणाइ^२ मुद्धयाइ थणयं पियति,^३ तओ य कोमलकमलोवमेहि
हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छग^४-निवेसियाणि देति समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो-
पुणो मजुलप्पभणिए । 'त णं अह'^५ अधण्णा अपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो
एगमवि न पत्ता । त सेय मम कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव^६ उट्ठियम्मि सूरे
सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते धण सत्थवाह आपुच्छित्ता धणेण
सत्थवाहेण अवभणुण्णाया समाणी सुवहु विपुल असण पाण खाइम साइम
उवक्खडावेत्ता सुवहु पुप्फ-वत्थ^७-गध-मल्लालकार गहाय बहूहिं मित्त-
नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियण-महिलाहिं सिद्धिं सपरिवुडा जाइ इमाइ
रायगिहस्स नयरस्स वहिया नागाणि य भूयाणि य जक्खाणि य इदाणि य
खदाणि य रुहाणि य सिवाणि य वेसमणाणि य, तत्थ ण वहूण नागपडिमाण
य जाव वेसमणपडिमाण य महुरिह पुप्फच्चणिय करेत्ता जन्नुपायपडियाए एव
वइत्तए^८—जइ णहं देवाणुप्पिया ! दारग वा दारिय वा पयामि^९, 'तो ण'^{१०}
अह तुव्व जाय च दायं च भाय च अक्खयणिहि च अणुवड्ढेमि त्ति कट्टु
उवाइयं उवाइत्तए^{११}—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव^{१२}
उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणामेव धणे सत्थवाहे
तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी—
एवं खलु अह देवाणुप्पिया ! तुव्वेहिं सिद्धिं वहूइ वासाइ^{१३} °सह-फरिस-रस-
गध-रूवाइ माणुस्सगाइ कामभोगाइ पच्चणुव्वभवाणी विहरामि, नो चेव णं
अहं दारग वा दारिय वा पयामि । त धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव
कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छग-निवेसियाणि ° देति समुल्लावए

१. थणमूले (क) ।

२. अइसर ° (ख, ग) ।

३. 'अतगड' सूत्रे (३।८।२६) 'मुद्धयाइ पुणो
य' इतिपाठोऽस्ति । तद्वृत्तिकृता मुग्घकानि-
अत्यव्यक्तविज्ञानानि भवन्तीति गम्यते,
इति क्रियाया अव्याहार कृत ।
'निरयावलियाओ' सूत्रे (३।४) 'पण्हयति
पुणो य' इति पाठो विद्यते ।

४ उच्छगे (क, ख) ।

५. अह णं (क, ख, ग) ।

६. ना० १।१।२४ ।

७ × (ख, ग, घ) ।

८. उवाइत्तए (क) ।

९. ण अह (घ) ।

१० पयायामि (क, ग) ।

११ तेण (क, ख, ग) ।

१२. उवाइत्तए (क) ।

१३ ना० १।१।२४ ।

१४. स० पा०—वासाइ जाव देति ।

सुमहुरे पिए पुणो-पुणो मजुलप्पभणिए । त ण अह अहण्णा अपुण्णा अकय-
लक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता । त इच्छामि ण देवाणुप्पिया । तुव्भेहि
अवभणुण्णाया समानी विपुल असण^१ •पाण खाइम साइम उवक्खडावेत्ता जाव
अक्खयणिहि च ° अणुवड्ढेमि उवाइय करित्तए ॥

१३ तए ण धणे सत्थवाहे भद्दं भारिय एव वयासी—मम^२ पि य णं देवाणुप्पिए । एस
चेव मणोरहे—‘कह ण^३ तुम दारग वा दारिय वा पयाएज्जासि ?—भद्दाए
सत्थवाहीए एयमट्ठ अणुजाणइ ॥

१४ तए ण सा भद्दा सत्थवाही धणेण सत्थवाहेण अवभणुण्णाया समानी हट्ठतुट्ठ-
चित्तमाणदिया जाव^४ हरिसवस-विसप्पमाण-हियया विपुल असण-पाण-खाइम-
साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता सुवहु पुप्फ-वत्थ^५-गधमल्लालकार गेण्हइ,
गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता रायगिह नयर मज्झमज्झेण
निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
पुक्खरिणीए तीरे सुवहु पुप्फ^६-वत्थ-गध °मल्लालकार ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणि
ओगाहेइ, ओगाहित्ता जलमज्जण करेइ, करेत्ता जलकीड करेइ, करेत्ता
ण्हाया कयवलिकम्मा उल्लपडसाडिगा जाइ तत्थ उप्पलाइ^७ •पउमाइ कुमुयाइ
णलिणाइ सुभगाइ सोगधियाइ पोडरीयाइ महापोडरीयाइ सयवत्ताइ °
सहस्सपत्ताइ ताइ गिण्हइ, गिण्हित्ता पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता
त पुप्फ-वत्थ-गध-मल्ल [मल्लालकार ?] गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणामेव नागघरए
य जाव^८ वेसमणघरए य तेणामेव^९ उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ ण
नागपडिमाण य जाव^{१०} वेसमणपडिमाण य आलोए पणामं करेइ, ईसि
पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता लोमहत्थग परामुसइ, परामुसित्ता नागपडिमाओ
य जाव वेसमणपडिमाओ य लोमहत्थएण^{११} पमज्जइ, पमज्जित्ता उदगधाराए
अवभुक्खेइ, अवभुक्खेत्ता पम्हल-सूमालाए गधकासाईए गायाइ लूहेइ, लूहेत्ता
महरिह ‘वत्थारुहण च मल्लारुहण च गधारुहण च वण्णारुहण’^{१२} च करेइ,
करेत्ता धूव डहइ, डहित्ता जन्नुपायपडिया पजलिउडा एव वयासी—

१ स० पा०—असण जाव अणुवड्ढेमि ।

२. मम (ग) ।

३. कहण (क, घ); कह ण (ख) ।

४. ना० १।१।१६ ।

५ × (ख, ग, घ) ।

६ स० पा०—पुप्फ जाव मल्लालकार ।

७ स० पा०—उप्पलाइ जाव सहस्सपत्ताइ ।

८. ना० १।२।१२ ।

९. तेणेव (क, ख, ग, घ) ।

१० ना० १।२।१२ ।

११ °हत्थेण (ख, ग, घ) ।

१२. रायपसेणइय (२६१) सूत्रे असी पाठः
किंचिद् भेदेन लभ्यते—पुप्फारुहण मल्ला-
रुहण चुण्णारुहण वत्थारुहण आभरणारुहण ।

जइ णं अहं दारग वा दारिय वा पयामि तो ण अह जाय च' •दाय च भाय च अक्खरिणी च° अणुवड्ढेमि त्ति कट्टु उवाइय करेइ, करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त विपुल असण-पाण-खाइम-साइम आसाएमाणी' •विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजेमाणी एव च ण° विहरइ । जिमिय'•भुत्तुत्तरागया वि य ण समाणा आयता चोक्खा परम° सुडभूया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया ॥

१५ अदुत्तर च णं भद्दा सत्थवाही चाउद्दसट्टमुद्धिपुण्णमासिणीसु विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उक्खडेइ, उक्खडेत्ता बह्वे नागा य जाव' वेसमणा य उवायमाणी नमसमाणी जाव एव च ण विहरइ ॥

भद्दाए देवदिन्न-पुत्तपसव-पदं

१६. तए ण सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ' केणइ कालतरेण आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था ॥

१७ तए ण तीसे भद्दाए सत्थवाहीए [तस्स गवभस्स ?]' दोसु मासेसु वीइक्कतेसु तइए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउवभूए—धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव' कयलक्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, जाओ ण विउल असण पाण खाइम साइम सुवहुय पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकार गहाय मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण-महिलियाहिं सद्धि सपरिवुडाओ रायगिह नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता पोक्खरिणि ओगाहेति, ओगाहित्ता ण्हायाओ कयवलिकम्माओ सव्वालकार-विभूसियाओ विपुल असण पाण खाइम साइम आसाएमाणीओ' •विसाए-माणीओ परिभाएमाणीओ° परिभुजेमाणीओ दोहल विणेति—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिगयरे तेयसा जलते जेणेव धण सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण सत्थवाह एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । मम तस्स गवभस्स''

१. स० पा०—जाय च जाव अणुवड्ढेमि ।

गवभस्स' इति पाठोस्ति । तेनात्रापि 'तस्स गवभस्स' इति पाठो युज्यते ।

२. स० पा०—आसाएमाणी जाव विहरइ ।

३. स० पा०—जिमिय जाव सुडभूया ।

७ ना० १।२।१२ ।

४. ना० १।२।१२ ।

८. १।२।१२ सूत्रे 'महिलाहिं' पाठो विद्यते ।

५ कयाइ (क) ।

९ सं० पा०—आसाएमाणीओ जाव परिभुजे-माणीओ ।

६ १।१।३३ सूत्रे 'तइए मासे वट्टमाणे तस्स

गवभस्स दोहलकालसमयसि' इति पाठो

१० ना० १।१।२४ ।

विद्यते । प्रस्तुत सूत्रे पि किंचिदग्रे 'तस्स

११ सं० पा०—गवभस्स जाव विणेति ।

कक्खसि अल्लियावेइ^१, अल्लियावेत्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ^२, पिहेत्ता सिग्घ तुरियं चवल वेइय^३ रायगिहस्स नगरस्स अवदारेण^४ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारयं जीवियाओ ववरोवेइ, ववरोवेत्ता आभरणालकार गेण्हइ, गेण्हित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीर निप्पाण निच्चेट्ठ जीवविप्पजढ भग्गकूवए पक्खिवड^५, पक्खिवित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छय अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता निच्चले निप्फंदे तुसिणीए दिवस खवेमाणे^६ चिट्ठइ ॥

देवदिन्नस्स गवेसणा-पदं

२६ तए ण से पथए दासचेडए^७ तओ मुहुत्ततरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए^८ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्न दारग तसि ठाणसि अपासमाणे रोयमाणे कदमाणे [विलवमाणे ?]^९ देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ । देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइ वा खुइ वा पर्त्ति वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव घणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता घण सत्थवाह एव वयासी—एव खलु सामी ! भद्दा सत्थवाहो देवदिन्न दारय ण्हायं जाव^{१०} सव्वालंकारविभूसिय मम हत्थसि^{११} दलयइ । तए 'ण अह'^{१२} देवदिन्न दारय कडोए गिण्हामि^{१३}, गिण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमामि, वूर्हहि डिभएहि य डिभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि सपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवदिन्न दारग एगते ठावेमि, ठावेत्ता वूर्हहि डिभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धि सपरिवुडे पमत्ते यावि विहरामि ।

तए ण अह तओ मुहुत्ततरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवदिन्न दारग तसि ठाणसि अपासमाणे रोयमाणे कदमाणे [विलवमाणे ?] देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समता^{१४} मग्गण-गवेसणं करेमि । त न नज्जइ णं सामी ! देवदिन्ने दारए केणइ नीते^{१५} वा अवहिते वा अक्खित्ते वा—पायवडिए घणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ निवेदेइ ॥

१. अल्लियावेइ (क, ख) ।

२. पेहेइ (क) ।

३. चेइय (क, ग) ।

४. अववारेण (क) ।

५. निक्खिवड (ग) ।

६. क्षेपयन् (वृ) ।

७. चेडे (क, ख, घ) ।

८. ठविए (ख) ।

९. १।२।३४ सूत्रे 'रोयमाणे जाव विलवमाणे' इति पाठोस्ति । अत्रापि तथैव युज्यते ।

१०. ना० १।२।२६ ।

११. हत्थे (घ) ।

१२. ण ह (ख, ग) ।

१३. स० पा०—गिण्हामि जाव मग्गणगवेसण ।

१४. नित्तिए (क, ग) ।

३०. तए णं से घणे सत्थवाहे पंथयस्स दासचेडगस्स एयमट्ठं सोच्चा निसम्म^१ तेण य महया पुत्तसोएणाभिभूए समाणे परसु^२-णियत्ते व चंपगपायवे 'घसत्ति' धरणी-यलंसि सव्वगेहिं सण्णिवडए ॥
- ३१ तए ण से घणे सत्थवाहे तओ मुहुत्ततरस्स आसत्थे पच्चागयपाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ । देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइ वा पर्त्ति वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता महत्थं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हिता जेणेव नगरगुत्तिया^३ तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छिता त महत्थ पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । मम पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए देवदिन्ने नाम दारए इट्ठे जाव^४ उवरपुफं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? तए ण सा भद्दा देवदिन्न ण्हाय^५ सव्वालकारविभूसिय पंथगस्स^६ हत्थे दलाइ जाव^७ पाय-वडिए त मम निवेदेइ । तं इच्छामि ण देवाणुप्पिया । देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं कय^८ ॥
- ३२ तए णं ते नगरगोत्तिया घणेणं सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणा सण्णद्ध-वद्ध-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया^९ •पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिच्च-पट्टा^{१०} गहियाउह-पहरणा घणेण सत्थवाहेण सद्धि रायगिहस्स नगरस्स 'वहुसु अइगमणेसु'^{११} य जाव^{१२} पवासु य मग्गण-गवेसणं करेमाणा रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरग निप्पाण निच्चेट्टु जीवविप्पजह पासति, पासित्ता हा हा अहो ! अकज्जमिति कट्टु देव-दिन्नं दारगं भग्गकूवाओ उत्तारेति, घणस्स सत्थवाहस्स हत्थे दलयति ॥

विजयतक्करस्स निग्गह-पदं

३३ तए ण ते नगरगुत्तिया विजयस्स तक्करस्स पयमग्गमणुगच्छमाणा^{१३} जेणेव

१. निसम्मा (क, ख, ग) ।

२. परिसुणियत्ते (ख, घ) ।

३. नगरगोत्तिए (क) ।

४. ना० १।१।१०६ ।

५. पू०—ना० १।२।२६ ।

६. पथदासस्स (ग) ।

७. ना० १।२।२७, २६ ,

८. करेह (क) ।

९. × (ग, वृषा) ।

१०. स्र० पा०—पट्टिया जाव गहियाउहपहरणा ।

११. वहुणि अइगमणाणि (क, ख, ग, घ) ।

यद्यपि १।१।११ सूत्रे 'अइगमणाणि य' पाठो विद्यते, किन्तु अत्र 'मग्गण-गवेसण' इति पदस्य सववेन सप्तम्यन्तो युज्यते, यथा पवासु । इद पद द्वितीयान्त केन कारणेनात्र कृतमथवा सक्षेपीकरणे गृहीत-मिति न ज्ञातुं शक्यते ।

१२. ना० १।२।११ ।

१३. पयमग्गमणुगच्छमाणा २ (क), पायमग्ग ० (घ) ।

•दोसु मामेसु वीइक्कतेसु तइए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउव्भूए—
घण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव दोहल ° विणेति । त इच्छामि णं देवाणु-
प्पिया । तुव्भेहि अब्भणुण्णाया समाणी ° विउलं असण पाण खाइमं साइम
सुवहुय पुप्फ-वत्थ-गघ-मल्लालकार गहाय जाव दोहल ° विणित्तए ।
अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवघ करेहि ॥

१८ तए ण सा भद्दा वणेण सत्यवाहेण अब्भणुण्णाया समाणी हट्टुट्ट-चित्तमाण-
दिया जाव हरिसवस-विसप्पमाणहियया विपुल 'असण पाण खाइमं साइम
उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता जाव धूव करेइ, करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव
उवागच्छइ ॥

१९ तए ण ताओ मित्त-नाइ °-नियग-सयण-संबंधि-परियण °-नगरमहिलाओ भद्दं
सत्यवाहिं सव्वालकारविभूसिय करेति ॥

२०. तए ण सा भद्दा सत्यवाही ताहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-
नगरमहिलियाहिं सद्धिं त विपुल असण ° पाण खाइम साइम आसाएमाणी
विसाएमाणी परिभाएमाणी ° परिभुजेमाणी दोहल विणेइ, विणेत्ता जामेव
दिस पाउव्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२१. तए ण सा भद्दा सत्यवाही सपुण्णदोहला जाव त गव्भ सुहसुहेण परिवहइ ॥

२२. तए ण सा भद्दा सत्यवाही नवण्ह मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्टमाण य राइं-
दियाण वीइक्कताण सुकुमालपाणिपायं जाव दारग पयाया ॥

२३ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जायकम्मं करेति, तहेव जाव °

१ स० पा०—समाणी जाव विहरित्तए (क, न, ग, घ), यद्यपि पाठसशोधनप्रयुक्तेषु मर्वेष्वपि आदर्शेषु 'विहरित्तए' इति पाठो लभ्यते किन्तु अर्थमीमासया नासौ ममीचीन प्रतिभाति । नास्य केनापि पाठेन पूर्तिर्जायते । मभवतो लिपिदोषेण 'विणित्तए' इत्यस्य 'विहरित्तए' इति रूपेण परिवर्तन जातम् । एतस्य पाठस्य स्वीकारेऽस्य पूर्तिरपि जायते । म्भवकादर्शे 'विणित्तए' इति पदस्यार्थं कृतोन्ति ।

२. ना० १।१।१६ ।

३. ना० १।२।१४ ।

४ अनण जाव उल्लपडमाडिया जेणेव नागघरए जाव धूव (क, न, ग, घ) । दोहदम्य उतात्ति, पत्तुस्तम्य निवेदनं, तम्यपूर्तिश्च—

एतेषु त्रिष्वपि स्थानेषु पाठस्य समानता युज्यते, किन्तु दोहदस्य पूर्तिविषयक. पाठ-
स्ततो भिन्नोस्ति । अत्र अनेकधा जाव शब्द. प्रयुक्तोस्ति । तदनुसारेण पाठपूरणे 'पणाम करेइ' इत्यस्य पदस्य द्विधा प्रयोगो जायते, किन्तु प्रतिप्रामाण्यात् अनन्यगतिकैरस्माभिर-
न्याधाराभावेन यथा लब्ध एव पाठ स्वीकृतः ।

५ सं० पा०—नाइ जाव नगरमहिलाओ ।

६. १२ सूत्रे—परियण-महिलाहिं । १७ सूत्रे—परियण-महिलियाहिं । १८ सूत्रे—परियण-नगरमहिलियाहिं ।

७. स० पा०—असण जाव परिभुजेमाणी ।

८ ना० १।१।७२ ।

९ ना० १।१।२० ।

१०. ना० १।१।८१ ।

विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, तहेव^१ मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण भोयावेत्ता अयमेयारूव गोण्ण गुणनिप्फण्ण नामधेज्जं करेति— जम्हा णं अम्ह इमे दारए व्हूणं नागपडिमाण य जाव^२ वेसमणपडिमाण य उवाइयलद्धे^३, त होउ णं अम्ह इमे दारए देवदिन्ने नामेणं ।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेति देवदिन्ने त्ति ॥

२४ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो जाय च दायं च भाय च अक्खयनिहि च अणुवड्ढेति ॥

देवदिन्नस्स कीडा-पदं

२५. तए ण से पंथए दासचेडए देवदिन्नस्स दारगस्स वालग्गाही जाए, देवदिन्न दारगं कडीए गेण्हइ, गेण्हत्ता व्हूहिं डिभएहि य डिभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि सपरिवुडे अभिरमइ ॥

२६ तए ण सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ देवदिन्नं दारय ण्हाय कयवलिकम्मं कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्त सव्वालकारविभूसिय करेइ, करेत्ता पथयस्स दासचेडगस्स हत्थयसि दलयइ ॥

२७ तए णं से पथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ देवदिन्न दारग कडीए गेण्हइ, गेण्हत्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, व्हूहिं डिभएहि य^४ • डिभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य^० कुमारियाहि य सद्धि सपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्न दारग एगते ठावेइ, ठावेत्ता व्हूहिं डिभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धि सपरिवुडे पमत्ते^५ यावि विहरइ ॥

देवदिन्नस्स अपहार-पदं

२८. इमं च णं विजए तक्करे रायगिहस्स नगरस्स व्हूणि [अइगमणाणि य निग्गमणाणि य ?] वाराणि य अववाराणि य तहेव जाव^६ सुन्नघराणि य आभोएमाणे मग्गेमाणे गवेसमाणे जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्न दारगं सव्वालकारविभूसियं पासइ, पासित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालकारेसु मुच्छिए गडिए गिद्धे अज्भोववण्णे पथयं दासचेडयं पमत्त पासइ, पासित्ता दिसालोय करेइ, करेत्ता देवदिन्न दारग गेण्हइ, गेण्हत्ता

१. तिपुल (ख) ।

२. पू०—ना० १।१।८१ ।

३. ना० १।२।१२ ।

४. ओवाइय^० (क) ।

५. स० पा०—डिभएहि य जाव कुमारियाहि ।

६. पमग्गे (ख) ।

७ ना० १।२।११ ।

मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता मालुयाकच्छं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता विजये तक्कर ससक्खं सहोढं सगेवेज्ज जीवग्गाहं^१ गेण्हति, गेण्हित्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणुकोप्पर-पहार-सभग्ग-महिय-गत्त करेति, करेत्ता अवउडा^२ वधण करेति, करेत्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरण गेण्हति, गेण्हित्ता विजयस्स तक्करस्स गीवाए वंघति, वंघित्ता मालुयाकच्छगाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता रायगिह नयर अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु कसप्पहारे य 'छिवापहारे य लयापहारे'^३ य निवाएमाणा-निवाएमाणा छार च घल्लि च कयवरं च उवरिं पकिरमाणा^४-पकिरमाणा महया-महया सट्ठेण उग्घोसेमाणा एवं वयंति—एस णं देवाणु-प्पिया ! विजए नाम तक्करे—^५पावचडालरूवे भीमतररुद्धकम्मे आरुसिय-दित्त-रत्तनयणे खरफस्स-महल्ल-विगय-वीभच्छदाढिए असंपुडियउट्टे उद्धुय-पइण्ण-लवतमुद्धए भमर-राहुवण्णे निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए निससइए निरणुकपे अहीव एगतदिट्ठीए खुरेव एगंतघाराए गिद्धेव आमिस-तल्लिच्छे अग्गिमिव^६ सव्वभक्खी वालघायए वालमारए ।

त नो खलु देवाणुप्पिया ! एयस्स केइ-राया वा रायमच्चे वा अवरज्झइ, नन्नत्थ^७ अप्पणो सयाइ कम्माइ अवरज्झति त्ति कट्ठु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छिता हडिवंधणं करेति, करेत्ता भत्तपाणनिरोह करेति, करेत्ता तिसंभ कसप्पहारे य^८ 'छिवापहारे य लयापहारे य^९ निवाए-माणा विहरति ॥

देवदिन्नस्स नीहरण-पदं

३४. ताए ण से धणे सत्थवाहे मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणेण सद्धि रोय-माणे^{१०} कदमाणे^{१०} विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरस्स^{१०} महया इड्ढी-सक्कार-समुदएण नीहरण करेति, करेत्ता वहूइ लोइयाइ मयगकिच्चाइ^{१०} करेति, करेत्ता केणइ कालतरेण अवगयसोए जाए यावि होत्था ॥

१. गीवग्गाह (घ) ।

२. अवउट (ख, घ); अवउडग (वृपा) ।

३. नयप्पहारे^० (क), लयापहारे य छिवापहारे य (ग, ग, घ), अमौ पाठ वृत्याधारेण न्यीकृत । १।२।४५ सूत्रेपि अयमेव क्रमो नम्यते ।

४. पकरमाणा (क) ।

५. सं० पा०—तक्करे जाव गिद्धे विव आमिस-भक्खी ।

६. वाचनान्तरेत्विद नाधीयते (वृ) ।

७. सं० पा०—कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा ।

८. सं० पा०—रोयमाणे जाव विलवमाणे ।

९. सरीरयस्स (क) ।

१०. मयकिच्चाइ (क) ।

घणस्स निग्गह-पदं

- ३५ तए ण से घणे सत्थवाहे अण्णया कयाइ लहुसयसि रायावराहसि सपलित्ते^१ जाए यावि होत्था ॥
- ३६ तए ण ते नगरगुत्तिया घण सत्थवाह गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव चारए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चारग अणुप्पवेसति, अणुप्पवेसित्ता विजएण तक्करेण सद्धि एगयओ हडिवघण करेति ॥

घणस्स घराओ आहाराणयण-पद

- ३७ तए ण सा भद्दा भारिया कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव^२ उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते विपुल असण पाण खाइम-साइम उवक्खडेइ, 'भोयणपिडय करेइ'^३, करेत्ता भोयणाइ पक्खिवइ, लच्छिय-मुद्धिय करेइ, करेत्ता एग च सुरभि [वर ?] वारिपडिपुण्ण दगवारय करेइ, करेत्ता पथय दास-चेडय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी--गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! इम विपुल असण पाण खाइम साइम गहाय चारगसालाए घणस्स सत्थवाहस्स उवणेहि ॥
- ३८ तए ण से पथए भद्दाए सत्थवाहीए एव वुत्ते समणे हट्टुट्टे त भोयणपिडय त च सुरभिवरवारिपडिपुण्ण दगवारय गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडि-णिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता राहगिह नगर मज्झमज्झेण जेणेव चारगसाला जेणेव घणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणपिडय ठवेइ, ठवेत्ता उल्लेहेइ, उल्लेहेत्ता भोयण गेण्हइ, गेण्हित्ता भायणाइ ठावइ^४, ठावित्ता हत्थ-सोय दलयइ, दलयित्ता घण सत्थवाह तेण विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण परिवेसेइ ॥

विजयतक्करेण संविभागमग्गण-पद

- ३९ तए ण से विजए तक्करे घण सत्थवाह एव वयासी--तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम एयाओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभाग करेहि ॥

घणस्स तन्निसेध-पदं

- ४० तए ण से घणे सत्थवाहे विजयं तक्कर एवं वयासी--अवियाइं अह विजया ! एय विपुल असण पाण खाइम साइम कायाण वा सुणगाण वा दलएज्जा, उक्कुर्हाडयाए वा ण छड्डेज्जा, नो चेव ण तव पुत्तघायगस्स पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स^५ पच्चामित्तस्स एत्तो विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभाग करेज्जामि^६ ॥

१ सपलित्ते (क, वृ) ।

२ ना० १।१।२४ ।

३ भोयण पिडए करेइ (क, वृपा), °पिडय भरेइ (वृपा) ।

४ धावइ (ख), -धोवइ (ग, घ) ।

५ पडिणीयस्स (ग, घ) ।

६ करेज्जासि (क, ग) ।

४१ तए ण से घणे सत्थवाहे तं विपुलं असणं पाण खाइमं साइम आहारेइ, तं पथयं पडिविसज्जेइ ॥

४२. तए ण से पथए दासचेडए तं भोयणपिडग^१ गिण्हइ, गिण्हत्ता जामेव दिसि पाउव्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

आवाधितस्स धणस्स विजयतक्करावेक्खा-पद

४३ तए ण तस्स धणस्स सत्थवाहस्स तं विपुल असण पाण खाइमं साइमं आहारियस्स समाणस्स उच्चार-पासवणे णं उव्वाहित्था ॥

४४ तए ण से घणे सत्थवाहे विजय तक्कर एवं वयासी—एहि ताव विजया^२ ! एगतमवक्कमामो 'जेण अह'^३ उच्चार-पासवण परिट्ठवेमि ॥

विजयतक्करेण तन्निसेध-पदं

४५. तए ण से विजए तक्करे घणं सत्थवाह एव वयासी—तुज्भ^४ देवाणुप्पिया ! विपुल असण पाण खाइम साइमं आहारियस्स अत्थि उच्चारे वा^५ पासवणे वा, मम ण देवाणुप्पिया ! इमेहि वहूहि कसप्पहारेहि य^६ • छिवापहारेहि य^७ लयापहारेहि य तण्हाए य छुहाए य परज्जमाणस्स^८ नत्थि केइ उच्चारे वा^९ पासवणे वा । त छदेण तुम देवाणुप्पिया ! एगते अवक्कमित्ता उच्चार-पासवण परिट्ठवेहि ॥

४६ तए ण से घणे सत्थवाहे विजएण तक्करेण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सच्चिट्ठइ ॥

घणेण पुणो कथिते विजएण सविभागमगण-पदं

४७ तए ण से घणे सत्थवाहे मुहुत्तरस्स वलियतराग उच्चार-पासवणेण उव्वाहि-ज्जमाणे विजय तक्कर एव वयासी—एहि ताव विजया^{१०} ! • एगतमवक्कमामो जेण अह उच्चार-पासवण परिट्ठवेमि^{११} ॥

४८. तए ण से विजए तक्करे घण सत्थवाह एव वयासी—जइ ण पुमं देवाणुप्पिया ! ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभागं करेहि, तओह तुमेहि सद्धि एगतं अवक्कमामि ॥

४९ तए ण से घणे सत्थवाहे विजय तक्करं एव वयासी—'अह ण'^{१०} तुव्भ^{११} ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ सविभाग करिस्सामि ॥

१. भोयणपिडिगह (ख) ।

२. विजया एत्तो (क) ।

३. जाव ण अह ताव (क), जा ण ° (ख, घ) ।

४. तुज्भ ण (क) ।

५. × (क, ख, ग, घ) ।

६. म०पा०—कसप्पहारेहि य जाव लयापहारेहि ।

७. परव्भवमाणस्स (क, घ) ।

८. × (क, ख) ।

९. स० पा०—विजया जाव अवक्कमामो ।

१०. अहण्ण (क, घ) ;

११. तुम (घ) ।

द्वितीय अङ्कप्रणं (सघाडे)

- ५० तए णं से विजए तक्करे धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥
 ५१. तए ण से 'धणे सत्थवाहे विजएण तक्करेण' सद्धि एगते अवक्कमइ, उच्चार-
 पासवण परिट्टवेइ, आयते चोक्खे परमसुइभूए तमेव ठाण उवसकमित्ता ण
 विहरइ ॥

धणेण विजयस्स संविभागदाण-पदं

- ५२ तए ण सा भद्दा कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव^१ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि
 दिणयरे तेयसा जलते विपुल असण^२ •पाण खाइम साइम उवक्खडेइ, भोयण-
 पिडय करेइ, करेत्ता भोयणाइ पक्खवइ, लच्छिय-मुट्ठियं करेइ, करेत्ता एग च
 सुरभि [वर ?] वारिपडिपुण्ण दगवारय करेइ, करेत्ता पथय दासचेडयं सद्दावेइ,
 सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया । इम विपुल असण पाण
 खाइम साइम गहाय चारगसालाए धणस्स सत्थवाहस्स उवणेहि ॥
 ५३ तए ण से पथए भद्दाए सत्थवाहीए एव वुत्ते समाने हट्ठुट्ठे त भोयणपिडय
 तं च मुरभिवरवारिपडिपुण्ण दगवारय गेण्हइ, गेण्हत्ता सयाओ गिहाओ
 पडिणक्खमइ, पडिणक्खमित्ता रायगिह नगर मज्झमज्झेण जेणेव चारगसाला
 जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणपिडय ठवेइ, ठवेत्ता
 उल्लखेइ, उल्लखेत्ता भोयण गेण्हइ, गेण्हत्ता भायणाइ ठावइ, ठावित्ता हत्थ-
 सोय दलयइ, दलयत्ता धणं सत्थवाह तेण विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण °
 परिवेसेइ ॥
 ५४. तए ण से धणे सत्थवाहे विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-
 खाइम-साइमाओ सविभाग करेइ ॥

पथगस्स भद्दाए साटोवं तन्निवेदण-पदं

५५. तए ण से धणे सत्थवाहे पथग दासचेडय विसज्जेइ ॥
 ५६ तए ण से पथए भोयणपिडय गहाय चारगाओ पडिणक्खमइ, पडिणक्खमित्ता
 रायगिह नयर मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे जेणेव भद्दा सत्थवाही तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भद्द [सत्थवाहि ?] एव वयासी—एव खलु देवाणु-
 प्पिए । धणे सत्थवाहे तव पुत्तघायगस्स^१ •पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स
 पडणीयस्स ° पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ
 सविभाग करेइ ॥

भद्दाए कोव-पदं

- ५७ तए ण सा भद्दा सत्थवाही पथगस्स दासचेडगस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा

४ विजए धणेण सत्थवाहेण (क, ख, ग) ।

२. स० पा०—असण जाव परिवेसेइ ।

१. ना० १।१।२४ ।

१ स० पा०—पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ।

आमुरुत्ता रुद्धा^१ •कुविया चडिक्किया^२ मिसिमिसेमाणी धणस्स सत्थवाहस्स पओसमावज्जड ॥

धणस्स चारमुत्ति-पदं

५८ तए ण से धणे सत्थवाहे अण्णया कयाइं मित्त-नाड-नियग-सयण-संवधि-परियणेण सएण य अत्थसारेण रायकज्जाओ अप्पाण मोयावेइ, मोयावेत्ता चारग-सालाओ पडिणिक्खमड, पडिणिक्खमित्ता जेणेव अलकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अलकारियकम्म कारवेइ^३ जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहघोयमट्टिय^४ गेण्हइ, गेण्हित्ता पोक्खरिणी ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जण करेइ, करेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे^५ •कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकारविभूसिए^६ रायगिह नगर अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

धणस्स सम्माण-पदं

५९ तए ण त धण सत्थवाह एज्जमाण पासित्ता रायगिहे नयरे वहवे नगरं-निगमं-सेट्ठि-सत्थवाह-पभिडओ आढति^७ परिजाणति सक्कारेति सम्माणेति अट्ठभुट्ठेति सरीरकुसल पुच्छति ॥

६० तए ण से धणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ । जावि य से तत्थ वाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा—दासा इ वा पेस्सा इ वा भयगा इ वा भाडल्लगा इ वा, सा वि य ण धण सत्थवाह एज्जमाणं पासइ, पायवडिया खेमकुसल पुच्छइ । जावि य से तत्थ अट्ठभतरिया^८ परिसा भवइ, तंजहा—माया इ वा पिया इ वा भाया इ वा भडणी इ वा, सा वि य ण धणं सत्थवाह एज्जमाणं पासइ, आसणाओ अट्ठभुट्ठेइ, कठाकठिय अवयासिय^९ वाह-प्पमोक्खण करेइ ॥

भद्दाए कोवोवसमपुच्चं सम्माण-पदं

६१ तए ण से धणे सत्थवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छइ ॥

१ म० पा०—रुद्धा जाव मिसिमिसेमाणी ।

२ वारेति (य), करावेई (घ) ।

३ अदायमट्टिय (क्व०) ।

४ म० पा०—कयवलिकम्मे जाव रायगिह ।

५ नागर (ग) ।

६ नियमे (फ); नियग (ग) ।

७ आढायति (क) ।

८ भडगा (क, ग, घ) ।

९ भातिल्लगा (ग) ।

१० अट्ठभतरिया (ग, घ) ।

११ अवदामिय (ग, घ) ।

- ६२ तए णं सा भद्दा धणं सत्थवाह एज्जमाणं पासड, पासित्ता नो आढाइ नो परिजाणड^१ अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी तुसिणीया परम्मुही सच्चिट्ठइ ॥
- ६३ तए णं से धणे सत्थवाहे भद् भाणिय एव वयासी—किण्ण तुज्भ^२ देवाणुप्पिए । न तुट्ठी वा न हरिसो वा नाणदो वा, ज मए सएण अत्थसारेण रायकज्जाओ^३ अप्पा^४ विमोडए ॥
६४. तए ण सा भद्दा धण सत्थवाह एव वयासी—कह ण देवाणुप्पिया । मम तुट्ठी वा^५ •हरिसो वा^६ आणदो वा भविस्सइ ? जेण तुम मम पुत्तघायगस्स^७ •पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स^८ पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाडम-साडमाओ सविभाग करेसि ॥
- ६५ तए ण से धणे सत्थवाहे भद् भाणिय एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पिए । धम्मो त्ति वा तवोत्ति वा 'कय-पडिकया इ वा'^९ लोगजत्ता इ वा नायए इ वा 'घाडियए इ वा'^{१०} सहाए इ वा सुहि त्ति वा [विजयस्स तक्करस्स ?] ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाडम-साडमाओ सविभागे कए, नण्णत्थ सरीरचित्ताए ॥
- ६६ तए णं सा भद्दा धणेण सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणी हट्टुत्तु-चित्तमाणदिया जाव^{११} हरिसवस-विसप्पमाणहियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता कठाकठि^{१२} अवयासेइ^{१३} खेमकुसल पुच्छइ, पुच्छित्ता ण्हाया^{१४} •कयवलिकम्मा कय-कोउय-मगल^{१५} -पायच्छित्ता विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ ॥

विजय-णायस्स निगमण-पदं

६७. तए ण से विजए तक्करे चारगसालाए तेहि वधेहि य वहेहि य कसप्पहारेहि य^१ •छिवापहारेहि य लयापहारेहि य^२ तण्हाए य छुहाए य परज्भमाणे कालमासे काल किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ।

१ परियाणाइ (क, ख); परियाणड (ग, घ) ।

२. तुब्भ (क्व०) ।

३. रज्जकज्जाओ (ग, घ) ।

४ अप्पाण (ख) ।

५ स० पा०—तुट्ठी वा जाव आणदो ।

६. सं० पा०—पुत्तघायगस्स जाव पच्चा-मित्तस्स ।

७ कयपडिकइया वा (क), कयाइपडिकइया वाला (घ) ।

८. घोडियए इ वा (क ख), संघाडियाए वा (घ) ।

९ अस्मिन् सूत्रे कस्मै सविभागो दत्त इति

न स्पष्ट भवति ७५ सूत्रे 'जाव विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ' इति पाठो विद्यते । तस्य पूर्तिः प्रस्तुतसूत्रेणैव जायते । एतेन प्रतीयते अत्रापि 'विजयस्स तक्करस्स' इति पाठ आसीत्, किन्तु केनापि कारणे-नासौ त्रुटितोभूत् ।

१० ना० १।१।१६ ।

११. कठाकठि (ख, ग) ।

१२ अब्भुट्ठेइ (ख), अब्भुट्ठेत्ता (ग, घ) ।

१३ स० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

१४ स० पा०—कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए ।

से ण तत्थ नेरइए जाए काले कालोभासे^१ •गंभीरलोमहरिसे भीमे उत्तासणए परमकण्हे वण्णेण ।

से ण तत्थ निच्च भीए निच्च तत्थे निच्च तसिए निच्च परमऽसुहसवद्ध नगरगति^२ वेयण पच्चणुवभवमाणे विहरइ ।

से ण तत्रो उव्वट्टित्ता अणादीय अणवदग्ग दीहमद्ध^३ चाउरत ससारकंतार अणुपरियट्टिस्सइ ॥

६८. एवामेव जवू । जो ण अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ^४ अणगारिय पव्वइए समाणे विपुलमणि-मोत्तिय^५-धण-कणग-रयणसारेण लुव्वइ, सो वि एव चेव ॥

धण-णायस्स निग्गमण-पद

६९ तेण कालेण तेण समएण थेरा भगवतो जाइसपण्णा जाव^६ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा^७ •गामाणुगाम दूइज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा^८ जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुणसिलए चेइए^९ •तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता^{१०} अहा-पडिख्व ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरति ॥

७० परिसा निग्गया धम्मो कहिओ ॥

७१ तए ण तस्स धणस्स सत्थवाहस्स बहुजणस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म^{११} इमेयारूवे अज्झत्थिए^{१२} •चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^{१३} समुप्पज्जित्था— एव खलु थेरा भगवतो जाइसपण्णा^{१४} इहमागया इहसपत्ता । तं गच्छामि ?^{१५} ण थेरे भगवते वदामि नमसामि [एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ?^{१६}]

१ स० पा—कालोभासे जाव वेयण ।

२ × (क, ख, ग) ।

३ आगाराओ (ख, घ) ।

४ मुत्तय (ख, ग) ।

५ ना० १।१।४ ।

६ सं० पा०—चरमाणा जाव जेणेव ।

७. स० पा०—चेइए जाव अहापडिख्व ।

८. निसम्मा (क, ख, ग) ।

९ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

१० पू०—ना० १।१।४ ।

११, १२ इच्छामि (क, ख, ग, घ), पाठसशोधन-प्रयुक्तेषु आदर्शेषु तथा मुद्रितपुस्तकेष्वपि 'इच्छामि' इति पाठो लभ्यते, किन्तु

अन्यागमानामेतत्तुल्यप्रकरणसमीक्षयाऽत्र

'गच्छामि' इति पाठः उपयुक्त प्रतिभाति । एवमेव 'एवं सपेहेइ, सपेहित्ता' इति सयोजक पाठोपि बहुषु आगमेषु लभ्यते । अत्रापि इत्यमेव युज्यते । अत्र सभाव्यते लिपिदोषेण वर्णपरिवर्तनं जातम्, तेन 'गच्छामि' स्थाने 'इच्छामि' इति जातम् । उत्तरोत्तरमेष एव पाठ प्रचुरेषु आदर्शेषु संक्रान्तोभूत् । सक्षेपीकरणपद्धते. कारणेन 'एव सपेहेइ, सपेहित्ता' इति पाठोत्रालिखितोऽस्ति ।

उक्तप्रकरणानुसारी पाठ. 'उवासगदसाओ' (१।२०) सूत्रे इत्यमस्ति—त गच्छामि ण

ण्हाए^१ •कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते ° सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाई वत्थाइ पवर^२ परिहिए पायविहारचारेण जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छित्ता वदइ नमसइ ॥

७२. तए ण थेरा भगवंतो घणस्स विचित्तं धम्ममाइक्खति ॥

७३. तए णं से घणे सत्थवाहे धम्म सोच्चा एवं वयासी—

सद्दहामि णं भते ! निग्गथ पावयण^३ ।

•पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण ।

रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयणं ।

अठ्ठुमि ण भते ! निग्गथ पावयण ।

एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवित्तहमेय भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छिय-

मेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से जहेयं तुब्भे वयह त्ति कट्टु

थेरे भगवते वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता ° जाव^४ पव्वइए जाव^५ बहूणि

वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता भत्त पच्चक्खाइत्ता, मासियाए संलेहणाए

[अप्पाण भोसेत्ता ?], सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता^६ कालमासे काल

किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे ।

तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता । तस्स^७ ण

घणस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई^८ ॥

७४. से ण घणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण ठिइक्खएण भवक्खएण

अणतर चय चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव^९ सव्वदुक्खाणमतं

करेहिइ ॥

७५. जहा ण जवू ! घणेण सत्थवाहेण नो धम्मो त्ति वा^{१०} •तवो त्ति वा कय-

पडिकया इ वा लोगजत्ता इ वा नायए इ वा घाडियए इ वा सहाए इ वा सुहि

त्ति वा^{११} विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ

सविभागे कए, नण्णत्थ सरीरसारक्खणट्टाए ॥^{१२}

७६. एवामेव जवू ! जे ण अम्ह निग्गथे वा^{१३} निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण

देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर ६ छेदइत्ता (ग, घ) ।

वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि ७. तत्थ (ख, ग, घ) ।

कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि— ८ ठिई पण्णत्ता (क, ख) ।

एव सपेहेइ, सपेहित्ता ण्हाए । ९ ना० १।१।२।२ ।

१. स० पा०—ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइ ।

१०. स० पा०—धम्मो त्ति वा जाव विजयस्स ।

२. विभक्तिरहित पदम् ।

११. °सारक्खणट्टयाए (ख), सरीररक्खणट्टाए

३. स० पा०—पावयण जाव पव्वइए ।

(ग) ।

४, ५. भग० ६।३३ ।

१२. स० पा०—निग्गथे वा जाव पव्वइए ।

अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय ° पव्वइए समाणे ववगय-ण्हाणुमट्टण-
 पुप्फ-गध-मल्लालकार-विभूसे' इमस्स ओरालिय-सरीरस्स नो वण्णहेउ वा 'नो
 रुवहेउ वा नो वलहेउ वा नो विसयहेउ वा'^१ त विपुल असण पाण खाडम साडमं
 आहारमाहारेइ, नण्णत्थ नाणदसणचरित्ताण वहणट्टयाए, से ण इहलोए चेव
 वहूण समणाण वहूण^२ समणीण वहूण^३ सावगाण वहूण सावियाण य अच्चणिज्जे^४
 °वदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मगल
 देवय चेइय विणएण ° पज्जुवासणिज्जे भवइ,
 परलोए वि य ण नो वहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेय-
 णाणि य एव हिययउप्पायणाणि^५ य वसणुप्पायणाणि य उल्लवणाणि य
 पाविहिइ, 'पुणो अणाइय'^६ च ण अणवदग्ग दीहमद्ध^७ °चाउरत ससारकतार °
 वीईवइस्सइ—जहा व से घणे सत्थवाहे ॥

निकखेव-पद

७७ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^८ सपत्तेणं दोच्चस्स
 नायज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा

सिवसाहणेसु आहार-विरहिओ-ज-न वट्टए देहो ।
 तम्हा घणो व्व विजय, साहू त-तेण पोसेज्जा ॥१॥

१ विभूमिते (ख, ग) ।

२. रुवहेउ वा वलविसयहेउ वा (क, ख, ग,
 घ) । अमौपाठ-सघटना १।१८।६१ सूत्रस्या-
 धारेण कृतान्ति ।

३, ४. × (क, ख, ग, घ) । .

५ सावगाण य (क, ख, ग) ।

६ स० पा०—अच्चणिज्जे जाव पज्जुवास-
 णिज्जे ।

७ °उप्पाडणाणि य (क) ।

८ अणाइय (ख, घ); अणातीतं (ग) ।

९ स० पा०—दीहमद्ध जाव वीईवइस्सइ ।

१०. ना० १।१।७ ।

तच्चञ्च अज्भयणं

अंडे

उक्त्वेव-पद

- १ जड णं भते ! समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स अज्भयणस्स नायावम्म-
कहाण अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स ण भते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था - वण्णओ^१ ।
- ३ तीसे णं चंपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिंसीभाए सुभूमिभागे नाम
उज्जाणे—‘सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे’^२ सुरम्मे नदणवणे^३ इव सुह-सुरभि-
सीयलच्छायाए समणुवद्धे ॥
- ४ तस्स ण सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तरओ^४ एगदेसम्मि मालुयाकच्छए
होत्था—वण्णओ^५ ॥

मयूरी अंड-पदं

५. तत्थ ण एगा वणमयूरी दो पुट्टे परियागए पिट्टुडी^६-पड्डरे^७ निव्वणे निरुवहए
भिण्णमुट्ठिप्पमाणे मयूरी-अडए पसवड, पसवित्ता सएण^८ पक्खवाएण सारक्ख-
माणी सगोवेमाणी^९ सचिट्ठेमाणी^{१०} विहरइ ॥

१. ओ० सू० १ ।

२. सव्वोउए (वृ), सव्वोउय (क, ख, ग, घ, वृपा), वृत्तिकृता अत्र द्वयोरपि पाठयो समीक्षा कृतास्ति यथा—सव्वोउएत्ति—सर्वे ऋतवो वसन्तादय, तत्सपाद्यकुसुमादि-भावानां वनस्पतीनां सद्भावात्, यत्र तत्तथा । ऋचिच् ‘सव्वोउयत्ति’ दृश्यते तेन च ‘सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे’ इत्येतत् सूचितम् (वृ) ।

३. नदणे वणे (ख) ।

४ उत्तर (क, ख, ग) ।

५ ना० १।२।६ ।

६ पिट्ठिपिडी (क), वृत्तौ ‘पिष्टस्य-शालिलोटस्य उडी—पिडी’ इति व्याख्यातमस्ति । असौ व्याख्याश मूलपाठे पि सक्रान्त ।

७ पड्डरे (क, ग) ।

८ सतेण (ख घ) ।

९ सगोवमाणी (ख), सगोयमाणी (ग) ।

१० सचिट्ठेमाणी (क), सचिट्ठेमाणी (ख, ग, घ), असौ पाठ वृत्त्यावारेण स्वीकृत ।

सत्यवाहदारग-पदं

६ तत्थ ण चपाए नयरीए दुवे सत्यवाहदारगा परिवसति, त जहा—जिणदत्तपुत्ते^१ य सागरदत्तपुत्ते^२ य—सहजायया सहवड्ढियया सहपसुकीलियया सहदारदरिसी अण्णमण्णमणुरत्तया अण्णमण्णमणुव्वयया^३ अण्णमण्णच्छदाणुवत्तया अण्णमण्णहिय-इच्छियकारया^४ अण्णमण्णेसु गिहेसु किच्चाइ करणिज्जाइ पच्चणु-व्वभवमाणा विहरति ॥

७ तए ण तेसिं सत्यवाहदारगाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण समुवागयाण^५ सण्णिसण्णाण सण्णिविट्ठाण इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्ण देवाणुप्पिया । अम्ह सुह वा दुक्ख वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जइ, तण्ण अम्हेहिं एगयओ समेच्चा^६ नित्थरियव्व ति कट्ठु अण्णमण्णमेयारूव सगार^७ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था ॥

देवदत्ता गणिया-पद

८ तत्थ ण चपाए नयरीए देवदत्ता नाम गणिया परिवसइ—अड्ढा^८ •दित्ता वित्ता वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणा बहुघण-जायरूव-रयया आओग-पओग-सपउत्ता विच्छड्ढिय-पउर^९-भत्तपाणा चउसट्ठिकलापडिया चउसट्ठि-गणियागुणोववेया अउणत्तीसं विसेसे रममाणी एक्कवीसं^{१०}-रइगुणप्पहाणा वत्तीस-पुरिसोवयारकुसला नवगसुत्तपडिवोहिया अट्टारसदेसीभासाविसारया सिंगारा-गारचारूवेसा सगय-गय-हसिय^{११}°-•भणिय-चेट्ठिय-विलाससंलावुल्लाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला^{१२} ऊसियज्भया सहस्सलभा विदिण्णछत्त-चामर-वालवीय-णिया कण्णीरहप्पयाया वि होत्था ।

वहूण गणियासहस्साण^{१३} आहेवच्चं^{१४} •पोरेवच्च सामित्तं भट्ठित्तं महत्तरगत्त आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणी पालेमाणी महयाऽ।हय-नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेण विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी^{१५} विहरइ ॥

१ °उत्ते (ग) ।

२ °उत्ते (ग) ।

३ °मणुव्वया (ग) ।

४. तिच्छियकारया (ख, ग, घ) ।

५ समुवगयाणं (क, ख, ग) ।

६ सहिच्चा (वृषा) ।

७. संगरं (वृषा) ।

८. स० पा०—अड्ढा जाव भत्तपाणा ।

९. एक्कवीस (क) ।

१०. स० पा०—सगयगयहसिय (अतोप्रे वृत्ते वाचनान्तर लभ्यते—वाचनान्तरे त्विदम-धिकम्—सुदरयण-जघण-वयण-चरण-नयण-लावण-रूव-जोव्वणविलासकलिया (वृ) । ओवाइय-वाचनान्तरे किचिद्भेदोस्ति-द्रष्टव्यम्—ओवाइय पृष्ठ १३६ ।

११. °सहस्सीणं (ख) ।

१२. स० पा०—आहेवच्च जाव विहरइ ।

सत्यवाहदारगाणं उज्जाणकीडा-पदं

६ तए ण तेसिं सत्यवाहदारगाण अण्णया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयसिं^१ जिमिय-भुत्तुत्तरागयाणं समाणाण आयताण चोक्खाण परमसुडभूयाण सुहासणवर-गयाण इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—सेय खलु अम्ह देवाणु-प्पिया ! कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव^२ उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेत्ता त विपुल असण पाण खाइम साइम धूव-पुप्फ-गध-वत्थ-मल्लालकार^३ गहाय देवदत्ताए गणियाए सद्धि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिंरिं पच्चणुव्भ-माणण विहरित्ताए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठु पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते कोडुवियपुरिसे सद्दावेत्ति, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण देवाणुप्पिया ! विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेह, उवक्ख-डेत्ता त विपुल असण-पाण-खाइम-साइम धूव-पुप्फ-गध-वत्थ-मल्लालकार गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नदा पुक्खरिणी तेणेव^४ उवागच्छह, उवागच्छित्ता नंदाए पोक्खरिणीए^५ अदूरसामते थूणामडव^६ आहणह—आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं^७ •पचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क-पुप्फपुजोवयारकलिय काला-गरु-पवरकुटुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्भत-सुरभि-मघमघेत-गधुद्धुयाभिराम सुगधवर-गधगधिय गधवट्टिभूय^८ करेह, करेत्ता अमहे पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह जाव चिट्ठति ॥

१०. तए ण ते सत्यवाहदारगा दोच्चपि कोडुवियपुरिसे सद्दावेत्ति, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव [भो देवाणुप्पिया ! ?] 'लहुकरण-जुत्त-जोइय'^९ समखुर-वालिहाण-'समलिहिय-तिक्खग्गसिंगएहि'^{१०} रययामय-घट-सुत्तरज्जु-पवरकत्रण-

१ पुव्वावरद्ध ° (क) ।

२. ना० १।१।२४ ।

३. × (ख, ग, घ) ।

४. तैणामेव (क, ग, घ) ।

५. पुक्खरिणीए (क, ख) ।

६. धूण ° (ख) ।

७. स० पा०—सम्मज्जिओवलित्तं सुगध जाव कलिय (क, ख, ग, घ); अत्र पाठसक्षेपे कश्चिद् विपर्यय, सभाव्यते । १।१।३३ सूत्रे

'सम्मज्जिओवलित्तं जाव सुगधवरगधिय' अस्ति, तथैव अत्रापि 'सम्मज्जिओवलित्तं जाव गधवट्टिभूय' इति सक्षेप उपयुक्त-स्यात् । 'सम्मज्जिओवलित्तं' इति पाठानन्तर 'सुगध' इति पद क्वापि नोपलभ्यते ।

८ लहुकरणजुत्तएहिं जोइय (वृषा) ।

९ समलिहिय तिक्खग्गसिंगएहिं (क, घ), समलिहिय-सिंगएहिं ।

रुक्खडालयंसि ठिच्चा ° अम्हे मालुयाकच्छय' च [अणिमिसाए ढिट्ठीए ?] पेच्छमाणी^१ चिट्ठइ, त भवियव्वमेत्थ कारणेण ति कट्ठु मालुयाकच्छयं अतो अणुप्पविसति । तत्थ ण दो पुट्ठे परियागए^२ °पिट्ठुडी-पडुरे निच्चणे निरुवहए भिण्णमुट्ठिप्पमाणे मयूरी-अंडए ° पासित्ता अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—सेय खलु देवाणुप्पिया । अम्ह इमे वणमयूरी-अंडए साण जातिमताणं कुक्कुडियाण अंडएसु पक्खिवावित्तए । तए ण ताओ जातिमताओ कुक्कुडियाओ एए अंडए सए य अंडए सएणं पखवाएण सारक्खमाणीओ सगोवेमाणीओ विहरिस्सति । तए ण अम्ह एत्थ' दो कीलावणगा मयूरी-पोयगा भविस्सति त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता सए सए दासचेडए^३ सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह' ण तुव्भे देवाणुप्पिया । इमे अंडए गहाय सगाण जातिमताण कुक्कुडीण अंडएसु पक्खिवह जाव ते वि पक्खिवेति ॥

२० तए ण ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सिद्धि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिंरि पच्चणुव्वभवमाणा विहरित्ता तमेव जाण दुरुढा समाणा जेणेव चपा नयरी जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवदत्ताए गिह अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता देवदत्ताए गणियाए विउलं जीवियारिह पीइदाण दलयति, दलइत्ता सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता देवदत्ताए गिहाओ पडिणक्खमति, पडिणक्खमित्ता जेणेव साइं-साइ गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ॥

सागरदत्तपुत्तस्स संदेहेण अंडयविणास-पदं

२१. तत्थ णं जे से सागरदत्तपुत्ते^४ सत्थवाहदारए से ण कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव से वणमयूरी-अंडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तसि मयूरी-अंडयसि सकिए कखिए वित्ति-गिच्छसमावण्णे भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे किण्ण मम एत्थ कीलावणए^५ ° मयूरी-पोयए भविस्सइ उदाहु नो भविस्सइ ? त्ति कट्ठु^६ त मयूरी-अंडय अभिक्खण-अभिक्खण उव्वत्तेइ परियत्तेइ आसारेइ ससारेइ चालेइ फदेइ घट्टेइ खोभेइ अभिक्खणं-अभिक्खण कण्णमूलसि टिट्ठियावेइ^७ ।

१ ° कच्छक (क), कच्छण (ग) ।

२ पेहमाणी (क, घ), पिच्छमाणी (ग) ।

३. स० पा०—परियागए जाव पासित्ता ।

४. जायमेत्ताण (क) ।

५ एत्थ (घ) ।

६ दासचेडे (क) ।

७ एह गच्छह (क) ।

८. सागरदत्तस्स पुत्ते (ग) ।

९ ना० १।१।२४ ।

१०. किलावण (ख, ग, घ) ।

११. ढिट्ठियावेइ (क); ढिट्ठियावेइ (ख) ।

टिट्ठियारेइ (ग) ।

२२. तए ण से मयूरी^१-अड^२ अ^३भिवक्खणं-अ^३भिवक्खणं उव्वत्तिज्जमाणे^३ •परियत्तिज्जमाणे आसारिज्जमाणे ससारिज्जमाणे चालिज्जमाणे फदिज्जमाणे घट्टिज्जमाणे खोभिज्जमाणे अ^३भिवक्खण-अ^३भिवक्खण कण्णमूलसि^० टिट्ठियावेज्जमाणे पोच्चडे जाए यावि होत्था ॥
२३. तए ण से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अण्णया कयाइ जेणेव से मयूरी-अडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता त मयूरी-अडय पोच्चडेमेव^४ पासड, अहो ण मम एत्थं^५ कीलावणए मयूरी-पोयए न जाए त्ति कट्टु ओहयमणं^६ सक्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए^० भियाइ^६ ॥
२४. एवामेव समणाउसो^७ । जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए^८ समाणे पचमहव्वएसु^९ छज्जीवनिकाएसु निग्गथे पावयणे सकिए^{१०} •कखिए वित्तिगिच्छसमावण्णे भेय-समावण्णे^० कलुससमावण्णे, से ण इहभवे चेव बहूण समणाण बहूण समणीण बहूण^{११} सावगाण बहूण^{१२} सावियाण य हीलणिज्जे निदणिज्जे खिसणिज्जे गरह-णिज्जे परिभवणिज्जे^{१३},
परलोए वि य ण आगच्छइ बहूणि दडगाणि य^{१४} •बहूणि मुडणाणि य बहूणि तज्जणाणि य बहूणि तालणाणि य बहूणि अद्रुवघणाणि य बहूणि घोलणाणि य बहूणि माइमरणाणि य बहूणि पिइमरणाणि य बहूणि भाइमरणाणि य बहूणि भगिणीमरणाणि य बहूणि भज्जामरणाणि य बहूणि पुत्तमरणाणि य बहूणि धूयमरणाणि य बहूणि सुण्हामरणाणि य,
बहूणं दारिहाण बहूण दोहग्गाण बहूण अप्पियसवासाण बहूणं पियविप्प-ओगाण बहूण दुक्ख-दोमणस्साण आभागी भविस्सति, अणादिय च ण अणवयग्ग दीहमद्ध चाउरत संसारकतार भुज्जो-भुज्जो^० अणुपरियट्टिस्सइ^{१५} ॥

१ वणमयूरी (ग, घ) ।

२ स० पा०—उवत्तिज्जमाणे जाव टिट्ठिया-वेज्जमाणे ।

३ पोच्चडेमेय (ख) ।

४ सत्थवाह (क, ख, ग) ।

५ स० पा०—ओहयमण जाव भियायइ ।

६ भियायइ (ख, घ); भायति (ग) ।

७. पव्वज्जिते (ख); पव्वतिए (ग, घ) ।

८. ० महव्वए (ख, ग, घ) ।

९. स० पा०—सकिए जाव कलुससमावण्णे ।

१०. × (ख, ग) ।

११ × (क, ख, ग) ।

१२. परभवणिज्जे (क, ख, घ), भगवती (५।८१) सूत्रे 'गरहह अवमन्नह' इति पदमस्ति ।

१३ स० पा०—दडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ ।

१४. अणुपरियट्टइ (क, ख, ग, घ) । 'भविस्सति' इति क्रियापदस्यानन्तर 'अणुपरियट्टिस्सइ' इति पाठो युज्यते । सप्तमाध्ययनस्य २७ सूत्रेऽपि एवमेव पाठो लभ्यते । तेनात्रापि तथैव स्वीकृत ।

खचिय-नत्थपग्गहोग्गहियएहिं' नीलुप्पलकयामेलएहिं पवर-गोण-जुवाणएहिं
'नाना-मणि-रयण-कचण'-घटियाजालपरिक्खित्तं'^१ पवरलक्खणोववेय जुत्तामेव
पवहण उवणेह । ते वि तहेव उवणेति ॥

- ११ तए ण ते सत्थवाहदारगा ण्हाया^२ •कयवलिकम्मा कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ता
अप्पमहग्घाभरणालकिय^३ सरीरा पवहणं दुरुहति, दुरुहित्ता जेणेव देवदत्ताए
गणियाए गिहे^४ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहति,
पच्चोरुहित्ता देवदत्ताए गणियाए गिह^५ अणुप्पविसति ॥
- १२ तए ण सा देवदत्ता गणिया ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ, पासित्ता
हट्टुट्टा आसणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टेत्ता सत्तट्टपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता
ते सत्थवाहदारए एव वयासी—सदिसंतु ण देवाणुप्पिया ! किमिहागमणप्प-
ओयण^६ ?
- १३ तए ण ते सत्थवाहदारगा देवदत्त गणियं एव वयासी—इच्छामो ण देवाणुप्पिए !
तुमे^७ सद्धि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिंरिं पच्चणुढभवमाणा
विहरित्तए ॥
- १४ तए ण सा देवदत्ता तेसिं सत्थवाहदारगाण एयमट्ट पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता
ण्हाया कयवलिकम्मा^८ जाव^९ सिरी-समाणवेसा जेणेव सत्थवाहदारगा तेणेव
उवागया^{१०} ॥
- १५ तए ण ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धि जाण दुरुहति, दुरुहित्ता
चपाए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नदा पोक्खरिणी
तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता नद^{११}

(जंवूणयामय-कलाव-जुत्त-पडविसिट्टएहिं ।

उवासगदसाओ ११४०) । वृत्ती—जवूणया-
मय^० इति पाठो वाचनान्तरत्वेन
उल्लिखितोस्ति ।

१^० वग्गहियएहिं (क);^० वग्गहोवग्गहियएहिं
(न, ग)

२ × (क) ।

३. नाणा-मणि-कणग-घटियाजालपरिगय सुजाय-
जुग-जुत्त-उज्जुग - पसत्थ - मुत्तिरडय-निम्मिय
(उवामगदनाओ ११४७) । वृत्ती—
^० 'मुजायजुग' ^० इति पाठ वाचनान्तरत्वेन
उल्लिखितोस्ति ।

४ स० पा०—ण्हाया जाव सरीरा ।

५. गेहे (ख) ।

६. गेहे (क, घ) ।

७. पयोयण (ख); पतोयण (घ) ।

८ तुम्हेहिं (ग), तुम्भेहिं (क्वचित्) ।

९ कयवलिकम्मा किं ते (क); कयवलिकम्मा
किं ते पवर (ग); कयवलिकम्मा किं ते वर
(घ) ।

१०. ना० १११३३ ।

११. उवागच्छंति (ख), समागया (घ) ।

१२. नदा (ख) ।

पोक्खरिणिं ओगाहेति, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेति, करेत्ता जलकिडुं करेति, करेत्ता ण्हाया देवदत्ताए सद्धिं [नंदाओ पोक्खरिणीओ ?] पच्चुत्तरंति, जेणेव थूणामंडवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता [थूणामंडवं ?] अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता सव्वालकारभूसिया आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया देवदत्ताए सद्धिं तं विपुल असण-पाण-खाडम-साइम धूव-पुप्फ-वत्थ-गघ-मल्लालकार आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा एव च ण विहरति । जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा [आयता चोक्खा परमसुडभूया ?] देवदत्ताए सद्धिं विपुलाइ कामभोगाड भुजमाणा विहरति ॥

१६ तए ण ते सत्थवाहदारगा पुव्वावरण्हकालसमयसि देवदत्ताए गणियाए सद्धिं थूणामंडवाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता हत्थसगेल्लीए^१ सुभूमिभागे उज्जाणे बहूसु आलिघरएसु य^२ •कयलिघरएसु य लताघरएसु य अच्छणघरएसु य पेच्छणघरएसु य पसाहणघरएसु य मोहणघरएसु य सालघरएसु य जालघर-एसु य^३ कुसुमघरएसु य उज्जाणसिंरि पच्चणुवभवमाणा विहरति ॥

सत्थवाहदारगेहिं मयूरीअंडगाणयण-पदं

१७ तए ण ते सत्थवाहदारगा जेणेव से मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
 १८. तए ण सा वणमयूरी ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ, पासित्ता भीया तत्था महया-महया सद्देणं केकारव^४ 'विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी'^५ मालुया-कच्छाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता एगसि रुक्खडालयसि^६ ठिच्चा ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छणं^७ च अणिमिसाए दिट्ठीए पेच्छमाणी^८ चिट्ठइ ॥
 १९. तए ण ते सत्थवाहदारगा अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—जहा^९ ण देवाणुप्पिया । एसा वणमयूरी अम्हे एज्जमाणे पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महया-महया सद्देणं^{१०} •केकारवं विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी मालुयाकच्छाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता एगसि

१. द्रष्टव्यम्—१।२।१४ सूत्रस्य—पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ—इति पदम् ।

२. द्रष्टव्यम्—१।३।११ सूत्रस्य—देवदत्ताए गणियाए गिह अणुप्पविसति—इति पदम् ।

३. द्रष्टव्यम्—१।३।१६ ।

४. सगिल्लीए (क, घ) ।

५. स० पा०—आलिघरएसु य जाव कुसुमघर-एसु । वृत्तिकृत्ता पूर्णः पाठो व्याख्यात,

सक्षिप्तपाठस्य सूत्रनापि कृतास्ति, यथा—

क्वचित् कदलीगृहादिपदानि यावच्छब्देन सूच्यन्ते (वृ) ।

६. केक्कारव (क, ख, घ) ।

७. विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी (ग) ।

८. °डालसि (घ) ।

९. °कच्छ (क, ख, ग, घ) ।

१०. देहमाणी (क, ग, घ) ।

११. जया (क) ।

१२. स० पा०—सेद्देण जाव अम्हे ।

जिणदत्तपुत्तस्स सद्धाए मयूर-लद्धि-पद

२५. तए ण से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मयूरी-अडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तसि मयूरी-अडयसि निस्सकिए [निक्कखिए निव्वित्तिगिच्छे ?]' 'सुव्वत्तए ण'^१ मम एत्थ कीलावणए मयूरी-पोयए भविस्सइ त्ति कट्टु त मयूरी-अडय अभिक्खण-अभिक्खण नो उव्वत्तेइ^२ •नो परियत्तेइ नो आसारेइ नो संसारेइ नो चालेइ नो फदेइ नो घट्टेइ नो खोभेइ अभिक्खण-अभिक्खण कण्णमूलसि^३ नो टिट्ठियावेइ ।
२६. तए ण से मयूरी-अडए अणुव्वत्तिज्जमाणे जाव^४ अटिट्ठियाविज्जमाणे कालेण समएण उव्विन्ने^५ मयूरी-पोयए एत्थ जाए ॥
२७. तए ण से जिणदत्तपुत्ते त मयूरी-पोयय पासइ, पासित्ता हट्टतुट्टे मयूर-पोसए सद्धावेइ, सद्धावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया । इम मयूर-पोयग व्हूहिं मयूर-पोसण-पाओग्गेहिं दव्वेहिं अणुपुव्वेण सारक्खमाणा सगोवेमाणा सवड्ढेह^६, नदुल्लग^७ च सिक्खावेह ॥
२८. तए ण ते मयूर-पोसगा जिणदत्तपुत्तस्स एयमट्ट पडिसुणेति, त मयूर-पोयगं गेण्हति, जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, त मयूर-पोयग^८ •व्हूहिं मयूर-पोसण-पाओग्गेहिं दव्वेहिं अणुपुव्वेण सारक्खमाणा संगोवेमाणा सवड्ढेति^९, नदुल्लग च सिक्खावेति ॥
२९. तए ण से मयूर-पोयए उम्मुक्कवालभावे विण्णयं-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते लक्खण-वजण-गुणोव्वेए माणुम्माण-प्पमाणपडिपुण्णपक्ख-पेहुणकलावे 'विचित्त-पिच्छसतचंदए'^{१०} नीलकठए नच्चणसीलए एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए अणेगाइ नदुल्लगसयाइ केकाइयसयाणि^{११} य करेमाणे विहरइ ॥
३०. तए ण ते मयूर-पोसगा तं मयूर-पोयगं उम्मुक्कवालभावं जाव^{१२} केकाइय-सयाणि य करेमाण पासित्ता ण त मयूर-पोयग गेण्हति, गेण्हित्ता जिणदत्तपुत्तस्स उव्वणेति ॥
३१. तए णं से जिणदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए मयूर-पोयग उम्मुक्कवालभाव जाव^{१३}

१. द्रष्टव्यम्—३४ सूत्रम् ।

२. सुव्वत्तण (क, घ); × (ख); सुद्धत्तण (ग) ।

३. स० पा०—उव्वत्तेइ जाव नो टिट्ठियावेइ ।

४. ना० १।३।२५ ।

५. उव्विन्ने (ग) ।

६. सवट्टेह (क, ख, ग, घ) ।

७. नदुल्लग (ग), नट्टुल्लग (घ) ।

८. स० पा०—मयूरपोयग जाव नदुल्लग ।

९. विन्नाण (क), विन्नाय (ख, ग, घ) ।

१०. विचित्तपिच्छोसत्तचंदए (ख, ग, वृषा) ।

११. केयाणियगसइयाइ (क), केयाइग^० (ख, ग), केकातित^० (घ) ।

१२. ना० १।३।२६ ।

१३. ना० १।३।२६ ।

केकाइयसयाणि य करेमाण पासित्ता हट्टुट्टे तेसि विपुल जीवियारिह पीइदाण'
 •दलयइ, दलइत्ता° पडिविसज्जेइ ॥

३२ तए ण से मयूर-पोयगे जिणदत्तपुत्तेण एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए
 नगोला-भग-सिरोधरे सेयावगे^३ ओयारिय^३-पइण्णपक्खे उक्खित्तचदकाइय-कलावे
 केक्काइयसयाणि मुचमाणे^५ नच्चइ ॥

३३ तए ण से जिणदत्तपुत्ते^१ तेण मयूर-पोयएण चपाए नयरीए सिघाडग^६-•तिग-
 चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह^०पहेसु सएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सि-
 एहि य पणिएहि^७ जय करेमाणे विहरइ ॥

३४ एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयारिय-उवज्झायाण
 अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे पचमहव्वएसु
 छज्जीवनिकाएसु निग्गथे पावयणे निस्सकिए निक्कखिए निव्वितिगिच्छे^८, से ण
 इहभवे चेव वहूण समणाणं •वहूण समणीण वहूण सावगाण वहूण सावियाण
 य अच्चणिज्जे वदणिज्जे नमसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे
 कल्लाणं मगल देवय चेइय विणएण पज्जुवासणिज्जे भवइ ।
 परलोए वि य ण नो वहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाच्छेय-
 णाणि य एव—हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लवणाणि य
 पाविहिइ, पुणो अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार^०
 वीईवइस्सइ ॥

निक्खेव-पदं

३५ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण जाव^{१०}
 सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपत्तेण 'तच्चस्स नायज्भयणस्स'^{११} अयमट्टे पण्णत्ते ।
 —त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जिणवरभासियभावेसु, भावसच्चेसु भावओ मइम ।
 नो कुज्जा सदेह, सदेहोऽणत्थहेउ त्ति ॥१॥

१ स० पा०—पीइदाण जाव पडिविमज्जेइ । ७ पणिएहि य (ख, ग, घ) ।
 २ सेयावण्णे (घ, वृ), मेयावगे (वृपा) । ८ निव्वितिगिच्छे (ख, घ) ।
 ३. ओरालिय (ग, घ) । ९ स० पा०—समणाण जाव वीईवइस्सइ ।
 ४. मुच्चमाणे (क, ख, ग, घ); विमुचमाणे १० ना० १।१।७ ।
 (क्व०) । ११. नायाण तच्चस्स अज्भयणस्स (क, ख, ग);
 ५. जिणयत्त° (क) । ६. नायाण तच्चस्स णायाज्भयणस्स (घ) ।
 ६. स० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

निसदेहत्त पुण, गुणहेउ ज तओ तय कज्ज ।
 एत्थ दो सेट्टिसुया, अडयगाही उदाहरण ॥२॥
 कत्थइ मइदुव्वत्तेण, तव्विहायरियविरहओ वावि ।
 नेयगहणत्तणेण, नाणावरणोदयेण च ॥३॥
 हेउदाहरणासभवे य, सइ सुट्ठु ज न वुज्जेज्जा ।
 सव्वण्णुमयमवितह, तहावि इइ चितए मइम ॥४॥
 अणुवकय-पराणुग्गह-परायणा उ जिणा जगप्पवरा ।
 जिय - राग - दोस - मोहा, य नन्नहावाइणो तेण ॥५॥

चउत्थं अज्भयणं

कुम्भे

उक्खेव-पद

१. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण 'तच्चस्स नायज्भयणस्स'^१ अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स ण भते ! नायज्भयणस्स^२ के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण वाणारसी^३ नाम नयरी होत्था—वण्णओ^४ ॥
- ३ तीसे ण वाणारसीए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गगाए महानईए मयग-तीरद्दहे नाम दहे होत्था—अणुपुव्वसुजायवप्प^५-गभीरसीयलजले 'अच्छ-विमल-सलिल-पलिच्छण्णे'^६ सच्छण्ण-पत्त-पुप्फ-पलासे^७ बहुउप्पल-पउम-कुमुय-नलिण-सुभग-सोगधिय-'पुडरीय - महापुडरीय'^८ - सयपत्त-सहस्सपत्त - केसरपुप्फोवचिए^९ पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥
- ४ 'तत्थ ण वहूण मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य सुसुमाराण य सयाणि य सहस्साणि य सयसहस्साणि य जूहाइं निव्वभयाइ निरुव्विग्गाइ सुहसुहेण अभिरममाणाइ-अभिरममाणाइ विहरंति'^{१०} ॥

-
- | | |
|--|---|
| १ नायाण तच्चस्स ^० (ख, ग), नायाण तच्चस्स अज्भयणस्स (घ) । | दृश्यम्—सच्छन्नपउमपत्त - विसमुणाले ।
क्वचिदेव पाठ —सच्छन्नपत्तपुप्फपलासे (वृ) । |
| २ नायाण (क, ख, घ) | ८ पोडरीय-महापोडरीय (ग) । |
| ३ वाराणसी (ग) । | ९ °चिए छप्पय-परिभुज्जमाण-कमले अच्छ-विमल-सलिल-पत्थ-पुण्णे परिहत्थभमत-मच्छ - कच्छभ - अणेगसउणगण - मिहुणय, पविचरिए (वृ), असौ पाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते । |
| ४ ओ० सू० १ । | |
| ५ आणुपुव्व ^० (घ) । | |
| ६. × (वृ); अच्छ-विमल-सलिल-पलिच्छन्ने (वृया) । | |
| ७ × (वृ); क्वचित्तु सच्छन्नेत्यादि सूचनादिद १०. 'तत्थ ण' इत्यादि आदर्शंगत पाठ नास्ति वृत्तौ व्याख्यात. । | |

- ५ तस्स ण मयगतीरद्दहस्स अदूरसामते, एत्थ णं महं एगे^१ मालुयाकच्छए होत्था—
वण्णओ^२ ॥

पावसियालग-पद

६. तत्थ ण दुवे पावसियालगा परिवसति—पावा चडा रुढा तल्लिच्छा साहसिया
लोहियपाणी आमिसत्थी आमिसाहारा आमिसप्पिया आमिसलोला आमिस
गवेसमाणा रत्तिवियालचारिणो दिया पच्छन्त^३ या वि चिट्ठति ॥

कुम्म-पदं

७. तए ण ताओ मयगतीरद्दहाओ अण्णया कयाइ सूरियसि चिरत्थमियसि लुलि-
याए सभाए पविरलमाणुससि निसत्त-पडिनियत्तसि समाणसि दुवे कुम्मगा
आहारत्थी आहार गवेसमाणा सणिय-सणिय उत्तरति, तस्सेव^४ मयगतीरद्दहस्स
परिपेरतेण सव्वओ समता परिघोलमाणा-परिघोलमाणा 'वित्ति कप्पेमाणा'^५
विहरति ॥

पावसियालगाण आहारगवेसण-पदं

८. तयाणंतर च ण ते पावसियालगा आहारत्थी^६ आहार गवेसमाणा मालुयाकच्छ-
गाओ पडिणिव्वमत्ति, पडिणिव्वमित्ता जेणेव मयगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता तस्सेव मयगतीरद्दहस्स परिपेरतेण परिघोलमाणा-परिघोलमाणा
वित्ति कप्पेमाणा विहरति ॥
९. तए ण ते पावसियालगा^७ ते कुम्मए पासति, पासित्ता जेणेव ते कुम्मए तेणेव
पहारेत्थ गमणाए ॥

कुम्माण साहरण-पद

- १० तए ण ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासति, पासित्ता भीया तत्था
तसिया उव्विग्गा सजायभया हत्थे य पाए य गीवाओ य सएहिं-सएहिं काएहिं
साहरति^८, साहरित्ता निच्चला निप्फदा^९ तुसिणीया सचिट्ठति ॥

१ वेगे (ग, घ) ।

२. ना० १।२।६ ।

३. पच्छन्त (क, ख); पच्छिन्त (ग, घ) ।

४ तस्स य (ख); तस्से य (ग, घ) ।

५ एव च ण (क) ।

६ आहारत्थी जाव (क, ख, ग, घ), सर्वास्वपि
प्रतिपु जाव शब्दो लभ्यते किन्तु अर्थमीमा-
सया नासौ समीचीन प्रतिभाति । यद्यत्र

जाव शब्द स्यात् तदा आमिसत्थी जाव
आमिस इति पाठ. संगत. स्यात् । यदि
पूर्ववत्सूत्रमनुश्रियते तदा जाव शब्दो
नापेक्ष्यते ।

७. ° सियाला (ख, ग, घ) ।

८. सहरति (ग, घ) ।

९ निप्फदा (ख, घ) ।

११ तए ण ते पावसियालगा जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता ते कुम्मए^१ सव्वओ समता उव्वत्तेति परियत्तेति आसारेति ससारेति चालेति घट्टेति फदेति खोभेति नहेहिं आलुपति दतेहि य अक्खोडेति, नो चएव ण सचाएति तेसि कुम्मगाण सरीरस्स किञ्चि^२ आवाह वा 'वावाह वा'^३ उप्पाइत्तए छविच्छेय वा करेत्तए ॥

१२. तए ण ते पावसियालगा ते कुम्मए दोच्चपि तच्चपि सव्वओ समता उव्वत्तेति^४ •परियत्तेति आसारेति ससारेति चालेति घट्टेति फदेति खोभेति नहेहिं आलुपति दतेहि य अक्खोडेति, नो चएव ण सचाएति तेसि कुम्मगाण सरीरस्स किञ्चि आवाहं वा वावाह वा उप्पाइत्तए छविच्छेय वा^५ करेत्तए, ताहे सता तता परितता निव्विण्णा समाणा सणिय-सणिय पच्चोसक्कति, एगतमवक्क-मंति', निच्चला निप्फंदा तुसिणीया सच्चिट्ठति ॥

अगुत्त-कुम्मस्स मच्चु-पदं

१३. तए^६ ण एगे कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरगए जाणित्ता सणियं-सणियं एग पायं निच्छुभइ ॥

१४ तए ण ते पावसियालगा तेण कुम्मएण सणिय-सणिय एग पाय नीणिय पासति, पासित्ता सिग्घ तुरिय चवल चड जइण वेगिय^७ जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता तस्स ण कुम्मगस्स त पाय नखेहिं आलुपति दतेहिं अक्खोडेति, तओ पच्छा मंस च सोणिय च आहारेति, आहारेत्ता त कुम्मग सव्वओ समता उव्वत्तेति जाव^८ नो चएव ण सचाएति^९ •तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किञ्चि आवाह वा वावाह वा उप्पाइत्तए छविच्छेय वा करेत्तए ॥

१५. तए णं ते पावसियालगा त कुम्मय दोच्चपि तच्चपि सव्वओ समता उव्वत्तेति परियत्तेति आसारेति ससारेति चालेति घट्टेति फदेति खोभेति नहेहिं आलुपति दतेहि य अक्खोडेति, नो चएव ण सचाएति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किञ्चि आवाह वा वावाह वा उप्पाइत्तए छविच्छेय वा करेत्तए, ताहे सता तता

१. कुम्मगा (क, ख, ग, घ); अग्रिमसूत्रे 'ते कुम्मए' इति पाठोस्ति, अत्रापि तथैव युज्यते ।

२. × (ग, घ) ।

३. × (क) ।

४ स० पा०—उव्वत्तेति जाव नो चएव ण सचाएति करेत्तए ।

५ एगते अवक्कमति (क) ।

६. तत्थ (ख, ग, घ) ।

७. वेगित (ख) ।

८. ना० १।४।११ ।

९. स० पा०—सचाएति^० करेत्तए । ताहे

दोच्चपि अवक्कमति ।

परितता निविण्णा समाणा सणिय-सणियं पच्चोसवकंति, दोच्चंपि एगत-
मवक्कमति । °

एव चत्तारि वि' पाया ॥

१६ °तए ण से कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरंगए जाणित्ता ° सणिय-सणियं
गीव नीणेइ ॥

१७ तए ण ते पावसियालगा तेण कुम्मएण [सणिय-साणिय ?] गीव नीणियं
पासति, पासित्ता सिग्घ तुरिय चवल' °चड जइण वेगिय जेणेव से कुम्मए तेणेव
उवागच्छति, उवागच्छित्ता तस्स ण कुम्मगस्स त गीव ° नहेहि [आलुपति ?]
दतेहि कवाल विहाडेति, विहाडेत्ता त कुम्मग जीवियाओ ववरोवेति, ववरोवेत्ता
मस च सोणिय च आहारेति ॥

१८ एवामेव समणाउसो ! जो अम्मह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण
अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वडए समाणे', पच य से इदिया
अगुत्ता भवति, से ण इहभवे चेव वहूण समणाण वहूण समणीण वहूण
सावगाण वहूण सावियाण य हीलणिज्जे °निदणिज्जे खिसणिज्जे गरहणिज्जे
परिभवणिज्जे, ° परलोए वि य ण आगच्छइ—वहूणि दडणाणि' °य वहूणि
मुडणाणि य वहूणि तज्जणाणि य वहूणि तालणाणि य वहूणि अदुवघणाणि
य वहूणि घोलणाणि य वहूणि माइमरणाणि य वहूणि पिडमरणाणि य
वहूणि भाइमरणाणि य वहूणि भगिणीमरणाणि य वहूणि भज्जामरणाणि
य वहूणि पुत्तमरणाणि य वहूणि धूयमरणाणि य वहूणि सुण्हामरणाणि य ।
वहूण दारिद्दाण वहूण दोहग्गाण वहूण अप्पियसवासाण वहूण पियविप्पओगाण
वहूण दुक्ख-दोमणस्साण आभागी भविस्सति, अणादिय च ण अणवयग्ग
दीहमद्ध चाउरत ससारकतार भुज्जो-भुज्जो ° अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व से
कुम्मए अगुत्तिदिए ॥

गुत्तकुम्मस्स सोक्ख-पद

१९ तए ण ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चे कुम्मए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता
त कुम्मग सव्वओ समता उव्वत्तेति' °परियत्तेति आसारेति ससारेति चालेति
घट्टेति फदेति खोभेति नहेहि आलुपति दतेहि य अक्खोडेति, नो चेव णं

१ × (ख, ग) ।

२ स० पा०—जाव सणिय ।

३. स० पा०—चवल नहेहि ।

४ 'समाणे' इत्यत्र विहरतीति शेषो द्रष्टव्य
(वृ) ।

५ स० पा०—हीलणिज्जे ° ।

६. स० पा०—दडणाणि जाव अणुपरियट्टइ ।

७. स० पा०—उव्वत्तेति जाव दतेहि निक्खु-
डेंति जाव करेत्तए ।

सचाएति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किञ्चि आवाह वा वावाह वा उप्पाडत्तए छविच्छेय वा° करेत्तए ॥

२०. तए ण ते पावसियालगा त कुम्मग दोच्चपि तच्चपि उव्वत्तेति जाव', नो चेव ण संचायति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किञ्चि आवाह वा वावाह वा° उप्पाडत्तए° छविच्छेय वा करेत्तए, ताहे सता तता परितता निव्विण्णा समाणा जामेव दिस पाउव्वभूया तामेव दिस पडिगया ॥

२१ तए ण से कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरगए' जाणित्ता सणिय-सणियं गीव नीणेइ, नीणेत्ता दिसावलोय करेइ, करेत्ता जमगसमग चत्तारि वि पाए नीणेइ, नीणेत्ता ताए उक्किट्टाए' •तुरियाए चवलाए चडाए सिग्घाए उद्धयाए जइणाए छेयाए° कुम्मगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव मयंगतीरद्वहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणेणं सद्धि अभिसमण्णागए यावि होत्था ॥

२२ एवामेव समणाउसो । जो अम्ह समणो वा समणी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे' पच य से इदियाइ गुत्ताइ भवति', °से ण इहभवे चेव बहूण समणाण बहूण समणीण बहूण सावगाण बहूण सावियाण य अच्चणिज्जे वदणिज्जे नमसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मगल देवय चेइय विणएण पज्जुवास-णिज्जे भवइ ।

परलोए वि य ण नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एव हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लवणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार वीईवइस्सइ°—जहा व से कुम्मए गुत्तिदिए ॥

निक्खेव-पदं

२३ एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण चउत्थस्स नायज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

१ ना० १।४।११ ।

सूचितोस्ति । वृत्ता पूर्णपाठस्य निर्देशो

२ स० पा०—वावाहं वा जाव छविच्छेय ।

लभ्यते ।

३ दूरगए (क, ख, ग, घ) ।

५. विहरतीति शेष (वृ) ।

४ स० पा०—उक्किट्टाए प्फ कुम्मगईए ।

६ स० पा०—जाव जहा ।

अत्र पाठ सक्षेप. 'प्फ' अनेन सकेतेन

- ४ तस्स णं रेवयगस्स अद्दुरसामते, एत्थ ण नंदणवणे नाम उज्जाणे होत्था—
सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे रम्मे नदणवणप्पगाये पासाईए' दरिस्मणीए अभिरुवे
पडिरुवे ॥
- ५ तस्स ण उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिण्णं नाम जक्खाययणे होत्था—
दिव्वे वण्णओ' ॥
- ६ तत्थ ण वारवईए नयरीए कण्हे नाम वामुदेवे राया परिवसड । से णं नत्थ
समुद्दविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण, वलदेवपामोक्खाण पच्चण्ह महावीराण,
उग्गसेणपामोक्खाण सोलसण्ह राईसाहस्सीण', पज्जुन्नपामोक्खाण अद्दट्ठणं
कुमारकोडीण, सवपामोक्खाण सट्ठीए' दुद्धतसाहस्सीण, वीरसेणपामोक्खाण
एक्कवीसाए वीरसाहस्सीण, महासेणपामोक्खाण' छप्पण्णाए वरावगसाहस्सीण,
रुप्पिण्णपामोक्खाण वत्तीसाए महिलासाहस्सीण, अणगमेणापामोक्खाण
अणेगाण गणियासाहस्सीण अण्णेसि च वहुण ईसर-तलवर'-^६ माडविय-कोडुविय-
इव्वभ-सेट्ठि-सेणावड °-सत्थवाहपभिईण, वेयट्ठगिरि'-सागरपेरतम्म य दाहिणडु-
भरहस्स, वारवईए नयरीए आहेवच्च' °पोरेवच्चं सामित्त भट्ठित्त महत्तरगत
आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे ° पालेमाणे विहरड ॥

थावच्चापुत्त-पदं

- ७ तत्थ ण वारवईए नयरीए थावच्चा नाम गाहावडणी परिवसड—अड्डा' °दित्ता
वित्ता वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाणवाहणा बहुघण-जायरुव-रयया
आओग-पओग-सपउत्ता विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणा वहुंदासी-दास-गो-महिस-
गवेलग-प्पभूया बहुजणस्स ° अपरिभूया ॥
८. तीसे ण थावच्चाए गाहावडणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते नाम सत्थवाहदारए होत्था—
सुकुमालपाणिपाए'^{१०} °अहीण-पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरे लक्खण-वजण-गुणोववेए
माणुम्माण-प्पमाणपडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरगे ससिसोमाकारे कते पिय-
दसणे ° सुरूवे ॥
- ९ तए ण सा थावच्चा गाहावडणी त दारग साइरेगअट्ठवासजायय'^{११} जाणित्ता

१. पासातीए (ग, घ) ।

२ ओ० सू० २ ।

३ रायमहम्साण (क); रातीसहम्साण (ग);
रायासहम्साण (घ) ।

४ सट्ठी (क); सट्ठीण (घ) ।

५ महमेण ° (ख, घ) ।

६ सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह ।

७. वियड्ड ° (ख) ।

८ सं० पा०—आहेवच्चं जाव पालेमाणे ।

९ सं० पा०—अड्डा जाव अपरिभूया ।

१० सं० पा०—सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे ।

११. °जाइ (ख); °जाय (क्वचित्) ।

सोहणसि तिहि-करण-नवखत्त-मुहुत्तसि कलायरियस्स उवणेड जाव' भोगसमत्थ जाणित्ता वत्तीसाए इव्भकुलवालियाण एगदिवसेण पाणिं गेण्हावेड ।
वत्तीसओ दाओ जाव' वत्तीसाए इव्भकुलवालियाहि सद्धिं विपुले सद्द-फरिस-
रस-रूव-गधे' *पंचविहे माणुस्सए कामभोए ° भुजमाणे विहरइ ॥

अरिट्टनेमि-समवसरण-पद

१० तेण कालेण तेण समएण अरहा' अरिट्टनेमी आडगरे तित्थगरे सो चेव वण्णओ' दसघणुस्सेहे नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासे अट्टारसहिं समण-
साहस्सीहिं', चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि
चरमाणे' *गामाणुगाम दूडज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे ° जेणेव वारवती
नाम नगरी जेणेव रेवत्तगपव्वए जेणेव नदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स
जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता
अहापडिरूव ओगगह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

११. परिस्ता निग्गया । घम्मो कहिओ ॥

कण्हस्स पज्जुवासणा-पदं

१२ तए ण से कण्हे वासुदेवे डमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेड,
सद्दावेत्ता एव वयासी —खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । सभाए सुहम्माए मेघो-
घरसिय गभीरमहुरसद्द' कोमुडय' भेरि तालेह ॥

१३ तए ण ते कोडुवियपुरिसा कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा हट्टतुट्ट'—*चित्त-
माणदिया जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहिय दसणह
सिरसावत्त ° मत्थए अर्जलि कट्टु एव सामी । तह त्ति' °आणाए विणएण
वयण ° पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अतियाओ पडिनिक्खमत्ति,
पडिनिक्खमित्ता जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव कोमुडया भेरी, तेणेव उवागच्छत्ति,

१ ओ० सू० १४६-१४६ ।

२. ना० १।१।६१-६३ ।

३ स० पा०—सद्दफरिसरसरूवगधे जाव भुज-
माणे ।

४ अरिहा (क, ख, ग) ।

५ ओ० सू० १६ तथा वाचनान्तर पृ० १४०;
अत्र 'सपाविउकामे' पर्यन्त वर्णको ग्राह्य ।

६ °साहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे (क, ख, ग,
घ) (औपपातिकसूत्रे सू० १६) 'चउद्दसहिं

समणसाहस्सीहिं, छत्तीसाए अज्जियासाह-

स्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे' एकवारमेव सद्धिं

सपरिवुडे, इतिपाठोस्ति । अन्यागमेष्वपि

इत्थमेव दृश्यते । अत्रापि इत्थमेव युज्यते ।

७ स० पा०—चरमाणे जाव जेणेव ।

८ गभीर ° (ख, घ) ।

९. सामुदा (द) इय (वृपा) ।

१० स० पा०—हट्टतुट्ट जाव मत्थए ।

११. ना० १।१।६६ ।

१२ स० पा०—तहत्ति जाव पडिसुणेत्ति ।

वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा—

विसएसु इदियाइ, रुभता राग-दोस-निम्मुक्का ।
 पावेति निव्वुइसुह, कुम्मोव्व मयगदहसोक्खं ॥१॥
 इयरे उ अणत्थ-परपराओ पावेति पावकम्मवसा ।
 ससार-सागरगया, गोमाउग्गसियकुम्मोव्व ॥२॥

पंचमं अज्भयणं

सेलगे

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भंते । समणेण भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स ण भते । नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण वारवती^१ नाम नयरी होत्था—
पाईणपडीणायया उदीणदाहिणवित्थिण्णा नवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणा-
यामा घणवइ-मइ-निम्मिया^२ चामीयर-पवर-पागारा नाणामणि-पचवण्ण-
कविसीसग-सोहिया अलकापुरि^३-संकासा पमुइय-पक्कीलिया पच्चक्ख^४ देव-
लोगभूया ॥
- ३ तीसे ण वारवईए नयरीए वहिया^५ उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगे^६ नामं पव्वए होत्था—तुगे गगणतलमणुलिहतसिहरे नाणाविहगुच्छ-गुम्म-लया-वल्लि-
परिगए हस-मिग-मयूर-कोच्च-सारस-चक्कवाय-मयणसाल-कोइलकुलोववेए
अणेगतड^७-कडग-वियर-उज्झर-पवायपवभारसिहरपउरे अच्छरगण-देवसघ-
चारण-विज्जाहरमिहुण-सविक्किण्णे^८ निच्चच्छणए दसारवर-वीरपुरिस-तेलोकक-
वलवगाण, सोमे सुभगे पियदसणे सुरूवे पासाईए दरिसणीए अभिरूवे पडिरूवे ॥

१ वारवई (क) ।

२ निम्माया (क, ग, घ); निम्मया (ख);

अस्माक पाश्वे वृत्ते आदर्शद्वयमस्ति ।

तत्रैकस्मिन् घणवइमतिनिम्मियत्ति—

‘घनपतिर्वैश्रमण तन्मत्यानिर्मिता निरुपिता’

इति पाठोस्ति । अपरस्मिनादर्शे ‘घणवइमइ-

निम्मायत्ति—घनपतिर्वैश्रमणः तन्मत्या-

निर्मापिता निरुपिता’ इति पाठोस्ति ।

आदर्शगत-पाठभेदानुसारेण वृत्तावपि लिपि-
कर्त्रा भेद कृत इति प्रतीयते ।^९

३ अलया (क, ख) ।

४. पच्चक्ख (ख) ।

५ वहिया (क, ख) ।

६ रेवयए (क); रेवए (घ) ।

७ °तडाग (क) ।

८. रायपसेणइय (३२) सूत्रे ‘सविकिण्ण’ इति
पाठो लभ्यते ।

उवागच्छिता तं मेघोघरसियं गभीरमहुरसदं कोमुड्यं^१ भेरि तालेंति^२ । तत्रो
निद्ध-महुर-गभीर-पडिसुएण पिव^३ सारडएण बलाहएणं अणुरमियं भेरीण ॥

१४. तए ण तीसे कोमुडयाए भेरीए तालियाए समाणीए वारवईए नयरीए नव-
जोयणवित्थिण्णाए दुवालसजोयणायामाए सिंघाडग-तिय-चउवक-चच्चर-कदर-
दरी-विवर^४-कुहर-गिरिसिहर-नगरगोउर-पासाय-दुवार-भवण-देउल-पडिस्मुया -
सयसहस्ससकुल^५ करेमाणे^६ 'वारवति नयरि'^७ सन्धितर-वाहिरियं मव्वओ
समता सद्दे विप्पसरित्था ॥
१५. तए ण वारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए वारसजोयणायामाए समुद्-
विजयपामोक्खा दस दसारा जाव^८ गणियासहस्साइ^९ कोमुडियाए भेरीण सह
सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणदिया जाव^{१०} हरिसवस-विसप्पमाणहियया
ण्हाया आविद्ध-वग्घारिय-मल्लदाम-कलावा अहयवत्य-चंदणोकिन्नगायसरीरा^{११}
अप्पेगडया हयगया एव गयगया रह-सीया^{१२}-सदमाणीगया अप्पेगडया पायविहार-
चारेण पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अतिय^{१३} पाउवभवित्था ॥
१६. तए ण से कण्हे वासुदेवे समुद्विजयपामोक्खे दस दसारे जाव^{१४} अंतिय पाउवभव-
माणे पासित्ता हट्टुट्टु-चित्तमाणदिए जाव^{१५} हरिसवस-विसप्पमाणहियए कोडु-
वियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । चाउ-
रगिणि सेण सज्जेह^{१६}, विजय च गंधहत्थि उवट्टुवेह^{१७} । तेवि तहत्ति उवट्टुवेति^{१८} ॥
१७. ^{१९}तए ण से कण्हे वासुदेवे ण्हाए जाव^{२०} सव्वालकारविभूसिए विजय गधहत्थि
दुरुहे समाणे सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण महया भड-चडगर-वद-

१ कोमुदिय (ख, ग, घ) ।

२ तालेंति (ग) ।

३ तिव (क) ।

४ वियर (क) ।

५. पडिसुया (क, घ); पडिसुया (ख, ग) ।

६ °सकुलसद्द (क, ख) ।

७ करेमाणा (क, ख, ग, घ); असौ पाठ
वृत्त्याघारेण स्वीकृत । अत्र 'करेमाणे'
'सद्दे' इति पदस्य विशेषणमस्ति । वृत्तौ-
कुर्वन्निति व्याख्यातमुपलभ्यते ।

८. वारवईए नयरीए (क) ।

९ ना० १।५।६ ।

१०. अत्रोत्रे 'ईसरतलवर' सवन्विपाठो विद्यते,

सचात्र सक्षेपीकरणहेतुना परित्यक्तोभूदिति
प्रतीयते ।

११. ना० १।१।१६ ।

१२. °किन्नगासरीरा (ख, ग) ।

१३. सिया (ख) ।

१४. अतिए (ग, घ) ।

१५. ना० १।५।१५ ।

१६. ना० १।१।१६ ।

१७. सज्जेहा (ग)

१८. उट्टुवेह (ग) ।

१९. उट्टुवेति (ग) ।

२०. सं० पा० —जाव पज्जुवासइ ।

२१. ना० १।१।८१ ।

परियाल-सपरिवुडे वारवतीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहओ अरिट्टुनेमिस्स छत्ताइच्छत्त पडागाइपडाग विज्जाहर-चारणे जभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता विजयाओ गधहत्थीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अरह अरिट्टुनेमि पचविहेण अभिगमेणं अभिगच्छइ, [तं जहा—सचित्ताण दव्वाण विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरण-याए, एगसाडिय-उत्तरासगकरणेण, चक्खुफासे अजलिपग्गहेण, मणसो एगत्ती-करणेण]१। जेणामेव अरहा अरिट्टुनेमी तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरह अरिट्टुनेमि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता अरहओ अरिट्टुनेमिस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे पजलिउडे अभिमुहे विणएणं० पज्जुवासइ ॥

थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं

१८. थावच्चापुत्ते वि निग्गए । जहा मेहे३ तहेव धम्मं सोच्चा निसम्म१ जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहण करेइ । जहा मेहस्स४ तहा चेव निवेयणा ॥
१९. तए ण त थावच्चापुत्तं थावच्चा गाहावइणी जाहे नो सचाएइ विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य वहुहिं५ आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स६ निक्खमणमणुमन्नित्था ॥
२०. तए णं सा थावच्चा [गाहावइणी ?] आसणाओ अठ्ठेइ, अठ्ठेत्ता महत्थ महग्घ महरिह रायारिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता मित्तं७-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणेण सिद्धिं० सपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवर-पडिदुवार-देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएण मग्गेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलं८-परिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएणं० वद्धावेइ, वद्धावेत्ता त महत्थ महग्घं महरिह रायारिहं पाहुड उवणेइ, उवणेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नाम दारए—इट्ठे९ कते पिए मणुण्णे

१. असी कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश्च प्रतीयते ।

२. पू०—ना० ११११०१, १०२ ।

३. निसम्मा (ख, ग, घ) ।

४. पू०—ना० ११११०२-११३ ।

५. १११११४ सूत्रे 'वहुहिं' इति पद विसयाणु-

लोमाहि इति पदस्य पूर्वं विद्यते ।

६. × (ख, ग, घ) ।

७. स० पा०—मित्तं जाव सपरिवुडा ।

८. स० पा०—करयल वद्धावेइ ।

९. स० पा०—इट्ठे जाव से ण ।

मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियऊसासए हिययनदिजणए उवरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पके जाए जले संवड्डिए नोवलिप्पइ पकरणेण नोवलिप्पइ जलरणेण, एवामेव थावच्चापुत्ते कामेसु जाए भोगेसु सवड्डिए नोवलिप्पइ कामरणेण नोवलिप्पइ भोगरणेण ।^० से ण देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गे भीए 'जम्मण-जर-मरणण'^१ इच्छइ अरहओ अरिट्टेनेमिस्स^२ •अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय^० पव्वइत्तए । अहण्ण^३ निक्खमणसक्कार करेमि । त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउड-चामराओ य विदिन्नाओ ॥

२१ तए ण कण्हे वासुदेवे थावच्च गाहावइणि एव वयासी—अच्छाहि ण तुम देवाणुप्पिए । सुनिव्वुत-वीसत्था, अहण्ण सयमेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमणसक्कार करिस्सामि ॥

कण्हस्स थावच्चापुत्तस्स य परिसंवाद-पदं

२२ तए ण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणीए सेणाए विजय हत्थिरयण दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त एव वयासी—मा^४ ण तुम देवाणुप्पिया । मुडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि ण देवाणुप्पिया^५ । विपुले माणुस्सए कामभोगे मम वाहुच्छाय^६-परिग्गहिए । केवल देवाणुप्पियस्स अह नो सचाएमि वाउकाय^७ उवरिमेण गच्छमाण निवारित्तए । अण्णो^८ ण^९ देवाणुप्पियस्स ज किंचि आवाह वा वावाह^{१०} वा उप्पाएइ, त सव्व निवारेमि ॥

२३ तए ण से थावच्चापुत्ते कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे कण्ह वासुदेव एव वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया । मम जीवियतकर^{११} मच्चु एज्जमाण निवारेसि, जर वा सरीररूव-विणासणिं सरीर अइवयमाणि निवारेसि, तए ण अह तव वाहुच्छाय-परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुजमाणे विहरामि ॥

२४ तए ण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्ते समाणे थावच्चापुत्त एवं

१. लिपिसक्षेपेण एतवान् पाठ परित्यक्तोस्ति । ६. °छाया (ख) ।

स च १।१।१४५ सूत्राधारेण पूरित्तोस्ति । ७. °क्काय (क) ।

२. स० पा०—अरिट्टेनेमिस्स जाव पव्वइत्तए । ८. अन्ने (घ) ।

६. अह ण (ख) । ९. ण्ण (ख, ग) ।

४. नो (ग) । १०. विवाह (ख) ।

५. °प्पिया मम जीवियणुस्सए (ख) । ११. °करणिय (क, ख, घ) ।

वयासी—एए णं देवाणुप्पिया दुरइक्कमणिज्जा, नो खलु सक्का सुवलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए, नण्णत्थ^१ अप्पणो^२ कम्मक्खएणं ॥

२५ तए ण से थावच्चापुत्ते कण्ह वासुदेव एवं वयासी—जइ ण एए दुरइक्कमणिज्जा, नो खलु सक्का^३ •सुवलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए^०, नण्णत्थ अप्पणो कम्मक्खएण । त इच्छामि ण देवाणुप्पिया । अण्णाण-मिच्छत्त-अविरइ-कसाय-सचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए ॥

कण्हस्स जोगक्खेम-घोसणा-पद

२६ तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एव वुत्ते समाने कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण देवाणुप्पिया । वारवईए नयरीए सिंघाडग-तिग^४-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह^०पहेसु हत्थिखधवरगया महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा उग्घोसणं करेह—एव खलु देवाणुप्पिया । थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे भीए जम्मण-जर-मरणाण, इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए^५, त जो खलु देवाणुप्पिया । राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुविय-माडविय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पव्वयतमणु-पव्वयड, तस्स ण कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ^६ पच्छाउरस्स वि य से मित्त-नाइ^०-•नियग-सयण-सवधि-परिजणस्स^० 'जोगक्खेम-वट्टमाणी'^७ पडिवहइ त्ति कट्टु घोसण घोसेह जाव घोसति ॥

थावच्चापुत्तस्स अभिनिक्खमण-पद

२७ तए ण थावच्चापुत्तस्स अणुराएण पुरिससहस्स निक्खमणाभिमुह ण्हायं सव्वालकारविभूसियं^८ पत्तेयं-पत्तेय पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढ समानं मित्त-नाइ-परिवुड थावच्चापुत्तस्स अतिय पाउव्वभूय ॥

२८ तए ण से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्स अतिय पाउव्वभवमाण पासइ, पासित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ^९

१ अन्नत्थ (ख, ग) ।

२ अप्पणा (क, ख, ग, वृ) ।

३. स० पा०—सक्का जाव नन्नत्थ ।

४ सं० पा०—तिग जाव पहेसु ।

५. पव्वत्तित्ते (ख, घ) ।

६. अणुजाणाति (ख) ।

७ स० पा०—नाइ^० ।

८. जोगक्खेमं वट्टमाणी (क, ख, ग), जोगक्खेम-वट्टमाणी (घ) ।

९ सव्वालंकारभूसिय (क, ख) ।

१० ना० १।१।१२२-१२८ ।

•'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभ-सयसन्निविट्ठं जाव' सीयं उवट्ठवेह^१ ॥

२६ तए ण से थावच्चापुत्ते वारवतीए नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्त पडागाडपडाग विज्जाहर-चारणे जभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ^०, पासित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

सिस्सभिव्खादाण-पद

३० तए ण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी^० तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता वदति नमंसति, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी— एस ण देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते थावच्चाए गाहावइणीए एगे पुत्ते इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियऊसासए हिययनदिजणए उंवरपुप्फ पिव दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले सवड्ढिए नोवलिप्पइ पकरणं नोवलिप्पइ जलरण, एवामेव थावच्चापुत्ते कामेसु जाए भोगेसु सवड्ढिए नोवलिप्पइ कामरण नोवलिप्पइ भोगरण । एस णं देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विगे भीए जम्मण-जर-मरणाणं, इच्छइ देवाणु-प्पियाणं अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अम्हे णं देवाणुप्पियाण सिस्सभिव्ख दलयामो । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिव्ख ॥

३१. तए ण अरहा अरिट्ठनेमी कण्हेण वासुदेवेणं एव वुत्ते समणे एयमट्ठ सम्म पडिमुणेइ ॥

३२ तए ण से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतियाओ उत्तरपुरत्थिम दिसीभायं अवक्कमड, सयमेव^० आभरण-मल्लालंकार ओमुयइ ।

३३ तए ण सा थावच्चा गाहावइणी हसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, हार-वारिधार-सिदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइ असूणि 'विणिम्मु-

१. स० पा०—तहेव सेयापीएहि कलसेहि ण्हावेइ जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्त पडागाडपडाग पासइ, पासित्ता विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता ।

२. ता० १११२६ ।

३. पू०—ना० १११३०-१४३ ।

४. स० पा०—सव्व त चेव जाव आभरणं ।

५. पडगसाडगेण (ख) ।

यमाणी-विणिम्मुयमाणी' • रोयमाणी-रोयमाणी कंदमाणी-कदमाणी विलव-
माणी-विलवमाणी° एव वयासी—जइयव्व जाया ! घडियव्वं जाया !
परक्कमियव्व जाया ! अस्सिं च ण अट्टे नो पमाएयव्वं । • अम्हपि ण एसेव
मग्गे भवउ त्ति कट्टु थावच्चा गाहावइणी अरह अरिट्टुनेमि वंदति नमंसति,
वदित्ता नमसित्ता° जामेव दिसि पाउव्वभूया तामेव दिसि पडिगया ॥

थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जागहण-पदं

३४. तए ण से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेण सद्धिं सयमेव पचमुट्ठिय लोयं करेइ,
करेत्ता जेणामेव अरहा अरिट्टुनेमी तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरह
अरिट्टुनेमि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ जाव^३
पव्वइए ॥

थावच्चापुत्तस्स अणगारचरिया-पदं

३५. तए ण से थावच्चापुत्ते अणगारे जाए—इरियासमिए भासासमिए^४ • एसणासमिए
आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-
पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वडसमिए कायसमिए मणगुत्ते वडगुत्ते
कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तवभयारी अकोहे अमाणे अमाए अलोहे सते पसते
उवसते परिनिव्वुडे अणासवे अममे अकिंचणे निरुवलेवे,
कसपाईव मुक्कतोए सखो इव निरगणे जीवो विव अप्पडिह्यगई गगमिव
निरालवणे वायुरिव अप्पडिवद्धे सारयसलिल व सुद्धहियए पुक्खरपत्त पिव
निरुवलेवे कुम्मो इव गुत्तिदिए खग्गविसाण व एगजाए विहग इव विप्पमुक्के
भारडपक्खीव अप्पमत्ते कुजरो इव सोडीरे वसभो इव जायत्थामे सीहो इव
दुद्धरिसे मंदरो इव निप्पकपे सागरो इव गंभीरे चदो इव सोमलेस्से सूरु इव
दित्तेए जच्चकचण व जायरूवे वसुधरव्व सव्वफासविसहे सुहुयहुयासणोव्व
तेयसा जलते ॥

३६. नत्थि ण तस्स भगवतस्स कत्थइ पडिवधे भवइ । [सेय पडिवधे चउव्विहे
पणत्ते, त जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । दव्वओ—सच्चित्ताचित्त-
मीसेसु । खेत्तओ—गामे वा नगरे वा रण्णे वा खले वा घरे वा अंगणे वा ।
कालओ—समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा

१. विणिमुच्चमाणी-विणिमुच्चमाणी (ख, ग, घ),

स० पा०—विणिम्मुयमाणी २ एव ।

२. सं० पा०—पमाएयव्व जाव जामेव ।

३. ना० १।१।१४६, १५० ।

४. सं० पा०—भासासमिए जाव विहरइ ।

औपपातिकसूत्रे स्थानद्वये (२७-२६, १६४)

अनगार-वर्णको विद्यते । प्रस्तुतसूत्रस्यवृत्तौ

व्याख्यातादनगार-वर्णकात् तद् द्वयमपि

भिन्नमस्ति ।

अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा अयणे वा संवच्छरे वा अण्णयरे वा दीहकाल-
संजोए । भावओ—कोहे वा माणे वा माए वा लोहे वा भए वा हासे वा । एवं
तस्स न भवइ'] ॥

३७ से ण भगव वासीचदणकप्पे समतिणमणि-लेट्ठुकचणे समसुहदुक्खे इहलोग-
परलोग-अप्पडिवद्धे जीविय-मरण-निरवकखे ससारपारगामी कम्मनिग्घायणट्ठाए
एवं च ण० विहरइ ॥

३८ तए ण से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाण थेराणं अंतिए
सामाइयमाइयाइ' चौहसपुव्वाइ अहिज्जइ, अहिज्जिता वहूहि' •चउत्थ-
छट्ठम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि अप्पाणं भावेमाणे० विहरइ ॥

थावच्चापुत्तास्स जणवयविहार-पद

३९ तए णं अरहा अरिट्ठनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स त इवभाइयं अणगार-
सहस्स सीसत्ताए दलयइ ॥

४० तए ण से थावच्चापुत्ते अण्णया कयाइं अरह अरिट्ठनेमि वदइ नमसइ, वदित्ता
नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुव्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे
'अणगारसहस्सेण सद्धि' वहिया जणवयविहार विहरित्तए ।
अहामुह' ॥

४१. तए ण से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेण सद्धि' वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते ।

२. मामाइयाइ (ख, ग) ।

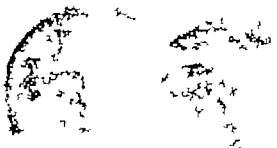
३. स० पा०—वहूहि जाव चउत्थ विहरइ
(क, ख, ग, घ) । अत्र 'चउत्थ' शब्दान्तर
'जाव' शब्दो युज्यते । 'वहूहि' इति पदानन्तरं
'जाव' शब्दो नर्थकोस्ति । प्रस्तुतसूत्रस्य
द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य प्रथमवर्गधस्य प्रथमाव्ययने
पि 'वहूहि चउत्थ जाव विहरइ' एव पाठो
लभ्यते ।

४. सहस्सेण अणगाराण (क, ख, घ) । सहस्सेण
अणगारेण (ग) । अग्रिमसूत्रे 'अणगार
सहस्सेण सद्धि' इति पाठो लभ्यते । 'क्वचित्'
प्रयुक्तादर्शेषु अत्रापि इत्यमेव पाठोस्ति,
तेनात्र स एव पाठः स्वीकृतः ।

५. अहामुह देवाणुप्पिया । (क) ।

६. सद्धि तेणं उरालेणं उदग्गेणं (उग्गेणं—
ख, ग) पयत्तेण पग्गहिणं (क, ख, ग, घ) ।
पूर्वसूत्रे थावच्चापुत्तेण विहारस्य अनुज्ञा
प्राथिता तत्र य पाठोऽस्ति, तस्यानुसारेण
प्रस्तुतसूत्रेऽपि 'अणगारसहस्सेण सद्धि वहिया
जणवयविहार विहरइ' इत्येव पाठो
युक्तोस्ति । एतादृशे प्रसङ्गे सर्वत्रापि
एतावानेव पाठ उपलभ्यते । 'तेणं उरालेण०
पग्गहिणं' एतावान् पाठोऽत्र अतिरिक्त
इव प्रतिभाति ।

यद्यसौ पाठः स्वीक्रियेत, तदानीं 'पग्गहिणं'
इति पदस्यानन्तरं 'तवोकम्मेणं' इति पाठ
आवश्यकोऽस्ति । तं विना कश्चिद् अर्थ-
सम्बन्धो नोपपद्यते ।



सेलगराय-पदं

- ४२ तेणं कालेण तेण समएण सेलगपुरे नाम नगरे होत्था । सुभूमिभागे उज्जाणे ।
सेलए राया । पउमावई देवी । मडुए^१ कुमारे जुवराया ।
- ४३ तस्स ण सेलगस्स पथगपामोक्खा^२ पच्च मत्तिसया होत्था—उप्पत्तियाए वेणइयाए
कम्मियाए पारिणामियाए उववेया रज्जघुरं चित्तयति ॥
- ४४ थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे । राया निग्गए ॥

सेलगस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

- ४५ ^३तए णं से सेलए राया थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अत्तिए धम्म सोच्चा
निसम्म हट्टुत्तु-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण-
हियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता थावच्चापुत्त अणगार तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण
करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—
सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण ।
पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण ।
रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण ।
अवभुट्टेमि ण भते ! निग्गथ पावयणं ।
एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवित्तहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छिय-
मेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! ज णं तुब्भे वदह
त्ति कट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जहा ण देवाणुप्पियाण
अत्तिए वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा जाव^४ इव्भा इवभुत्ता चिच्चा हिरण्ण,
एव—घण घन्न वल वाहण कोस कोट्टागार पुर अतेउर, चिच्चा विउल घण-
कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-सतसार-सावएज्ज, विच्छड्डित्ता
विगोवइत्ता, दाण दाइयाण परिभाइत्ता, मुडा भवित्ता ण अगाराओ
अणगारिय पव्वइया, तहा ण अह नो सचाएमि^५ जाव^६ पव्वइत्तए,
अह ण देवाणुप्पियाण अत्तिए चाउज्जामिय^६ • गिहिधम्मं पडिवज्जि-

१. मडुए (क) सर्वत्र मद्दए (ग), मद्दुए (घ) ।

२. °मोक्खा ण (क, ग, घ) ।

३. स० पा०—धम्म सोच्चा जहा ण देवाणुप्पियाण अत्तिए वहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरण्ण जाव पव्वइया तहा ण अह णो सचाएमि पव्वइए ।

४. राय० सू० ६८८ ।

५. राय० सू० ६९५ ।

६. अत्र 'पचाणुव्वइय' इति पाठ प्रवाहपत्तित

इवाभाति । अर्हंतोऽरिष्टनेमे. समये चतुर्यामघर्मस्य प्रवृत्तिरासीत् । यथा केशिस्वामिना चित्तसारथये चतुर्यामघर्मस्य उपदेश कृत (रायपसेणइय सू० ६९३) । चित्तसारथेर्वातस्वीकारेप्यस्य समीक्षा कृतास्ति, द्रष्टव्य—रायपसेणइय, ६९५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् । अत्रापि वस्तुतः 'चाउज्जामिय गिहिधम्म' इति पाठः समीचीन प्रतिभाति ।

स्सामि' ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवंघं करेहि' ॥

४६. तए ण से सेलए राया थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अतिए चाउज्जामियं गिहि-
धम्म उवसपज्जइ ॥

सेलगस्स समणोवासग-चरिया-पदं

४७ तए ण से सेलए राया समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे
आसव-सवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्ख-कुसले असहेज्जे देवासुर-
णाग-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-नांघव्व-महोरगाइएहि देवगणेहि
निग्गथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गथे पावयणे णिस्सकिए णिवक-
खिए निव्वित्तिगिच्छे, लद्धट्टे गहियट्टे पुच्छियट्टे अभिगयट्टे विणिच्छियट्टे अट्टिमिज-
पेमाणुरागरत्ते 'अयमाउसो ! निग्गथे पावयणे अट्टे अयं परमट्टे सेसे अणट्टे,
ऊसियफलहे अवगुयदुवारे चियत्ततेउर-परघरदार-प्पवेसे चाउइसट्टमुद्धिट्टपुण्ण-
मासिणीसु पडिपुण्ण पोसह सम्म अणुपालेमाणे समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण
असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुच्छणेण ओसहभेसज्जेण
पाडिहारिएण य पीढफलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणे सील-व्वय-गुण-
वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि'° अप्पाणं
भावेमाणे विहरइ ॥

४८. पथगपामोक्खा पच मति-सयां समणोवासया जाया ॥

४९ थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

५०. तेण कालेण तेण समएणं सोगधिया नाम नयरी होत्था—वण्णओ' । नीलासोए
उज्जाणे—वण्णओ' ॥

सुदंसणसेट्टि पदं

५१ तत्थ ण सोगधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्टी परिवसइ, अड्ढे जाव'
अपरिभूए ॥

सुयपरिव्वायग-पदं

५२. तेण कालेण तेण समएण सुए नामं परिव्वायए होत्था—'रिउव्वेय'-जजुव्वेय'-साम-

स० पा०—पचाणुव्वइय जाव समणोवासए
जाए अहिगयजीवाजीवे जावअप्पाण ।
वृत्तौ 'पचाणुव्वइय' इति पदस्याग्रे
'सत्तसिक्खावइय दुवालसविह' इति
पाठोऽस्ति । असावपि श्रीपपातिकसूत्रात्
उद्धृतोऽस्ति वृत्तिकृता ।

३. वृत्तौ अस्य पाठस्य पूर्तिः कृताऽस्ति । तत्र
कानिचित् पदानि भिन्नानि लभ्यन्ते ।

४. °सया य (ग) ।

५. ओ० सू० १ ।

६. ना० १।३।३ ।

७. ना० १।५।७ ।

८. रियुव्वेय (ख) ।

९. यजुव्वेय (घ); जउव्वेय (क्व०) ।

१. पडिवज्जित्तए (वृ) ।

२. काहिसि (वृ) ।

वेय-अथव्वणवेय-सट्ठितंतकुसले^१ संखसमए लद्धट्टे पंचजम^२-पचनियमजुत्त सोय-मूलय दसप्पयार परिव्वायगधम्म दाणधम्मं च सोयधम्म च तित्थाभिसेय च आघवेमाणे पण्णवेमाणे घाउरत्त-‘वत्थ-पवर’^३-परिहिए तिदड-कुडिय^४-छत्त-छन्नालय-अकुस-पवित्तय^५-केसरि-हत्थगए परिव्वायगसहस्सेण सट्ठि सपरिवुडे जेणेव सोगधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता परिव्वायगावसहसि भङ्गनिक्खेव करेइ, करेत्ता सखसमएण अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

५३. तए ण सोगधियाए नगरीए सिंघाडग^६-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु^७ बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ—एव खलु सुए परिव्वायए इहमा-गए^८ •इह सपत्ते इह समोसढे इह चेव सोगधियाए नयरीए परिव्वायगावसहसि सखसमएणं अप्पाण भावेमाणे^९ विहरइ ॥

५४. परिसा निग्गया ! सुदसणो वि णीति^{१०} ॥

सोयमूलय-धम्म-पद

५५ तए ण से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदसणस्स य अण्णेसि च बहूण सखाणं^१ परिकहेइ—एवं खलु सुदसणा ! अम्ह सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते । से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वसोए य भावसोए य ।
दव्वसोए उदएण मट्टियाए य । भावसोए दब्भेहि य मतेहि य ।
जं ण अम्ह देवाणुप्पिया ! किञ्चि असुई भवइ त सव्व सज्जपुढवीए आलिप्पइ^२, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ, तओ त असुई सुई भवइ । एव खलु जीवा जलाभिसेय-पूयप्पाणो अविग्घेण सग्ग गच्छंति ॥

१. वृत्तिकारेणात्र वाचनान्तरं व्याख्यातमस्ति । तद् औपपातिकसूत्रे (१७) इत्थमस्ति—
रिउव्वेद - यज्जुव्वेद - सामवेद-अहं णवेद-
इतिहासपचमाण निघण्टुछट्टाण सगोवगाण
सरहस्साणं चउण्ह वेदाण सारगा पारगा
धारगा सडगवी सट्ठिततविसारया सखाणे
सिक्खाकप्पे वागरणे छदे निरुत्ते जोइसामयणे
अण्णेसु य बहूसु वभण्णएसु य सत्येसु
सुपरिणिट्टिए ।

२. पचजाम (घ) ।

३. पवरवत्थ (ग) ।

४. वृत्तौ वाचनान्तरस्य उल्लेखो विद्यते,

तदनुसारेण ‘कु डिय-कचणिय-करोडिय-
छत्त^०’ एव पाठ-सरचना स्यात् । औपपातिके
(११७) पि इत्थ पाठक्रमो विद्यते—
कु डियाओ य कचणियाओ य करोडियाओ
य भिसियाओ य’ ।

५. परिवत्तिय (ख, ग) अशुद्ध प्रतिभाति;
पवित्तिय (घ) ।

६. स० पा०—सिंघाडग० ।

७. स० पा०—इहमागए जाव विहरइ ।

८. निग्गए (क्व०) ।

९. सखाण धम्मं (क्व०) ।

१०. आलिपइ (ख) ।

सुदंसणस्स सोयमूलय-धम्मपडिवत्ति-पदं

- ५६ तए णं से सुदसणे सुयस्स अतिए धम्म सोच्चा हट्टतुट्टे' सुयस्स अतियं सोयमूलयं धम्म गेण्हइ, गेण्हत्ता परिव्वायए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिला-भेमाणे' •सखसमएण अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥
- ५७ तए ण से सुए परिव्वायए सोगधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

थावच्चापुत्तस्स सुदंसणेण संवाद-पदं

- ५८ तेणं कालेण तेण समएण थावच्चापुत्तस्स समोसरणं । परिस्ता निग्गया । सुदसणो वि णीइ' । थावच्चापुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—तुम्हाण' किमूलए धम्मे पण्णत्ते ?
- ५९ तए ण थावच्चापुत्ते सुदसणेण एवं वुत्ते समाणे सुदसण एव वयासी—सुदसणा ! विणयमूलए' धम्मे पण्णत्ते । से वि य विणए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अगार-विणए' अणगारविणए य ।
- तत्थ ण जे से अगारविणए, से ण 'चाउज्जामिए गिहिधम्मे । तत्थ ण जे से अणगारविणए, से णं चाउज्जामा, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, सव्वाओ वहिद्धादाणाओ वेरमण'° ।

१ हट्ट (क, ख, ग) ।

२ स० पा०—पडिलाभेमाणे जाव विहरइ ।

३ णीओ (ग), निग्गओ (क्व०) ।

४ तुम्हाण (घ) ।

५ विणयमूले (ख, ग, घ) ।

६ अगार° (ख, घ) ।

७. पच अणुव्वयाइ सत्त सिक्खावयाइ एक्कारस उवासगपडिमाओ । तत्थण जे से अणगार-विणए, से ण पच महव्वयाइ, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण सव्वाओ अदिण्णा-दाणाओ वेरमण सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण सव्वाओ राइमोयणाओ वेरमण जाव मिच्छादमण-सन्नाओ वेरमण, दसविहे पच्चक्खाणे वारस भिक्खुपडिमाओ (क, ख, ग, घ) ।

एतत् अगारानगारविनययोनिरूपण महावीर-कालीन वर्तते । अहंन्नरिष्टनेमि द्वाविंशति-तम तीर्थकरो विद्यते । तच्छासने चतुर्याम धर्मस्यैव निरूपणमासीत् । मज्झिमगा वावीस अरहता भगवतो चाउज्जाम धम्म पणवयति' इति स्थानाद्भवति पाठेन उक्ताभिमतस्य पुष्टिर्जायते । उत्तराध्ययने-नापि (२३।२३-२८) अस्य समर्थनं भवति । अत्र पचमहान्नतात्मकस्य अनगारधर्मस्य तथा पचाणुव्वत-सप्तशिक्षान्नतात्मकस्य अगारधर्मस्य निरूपणं जातं तद्वर्णनसंक्रमणमेव प्रतीयते । स्थानाद्भवे चतुर्यामनिरूपण इत्थमस्ति—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिण्णादा-णाओ वेरमणं सव्वाओ वहिद्धादाणाओ वेरमण (४।१३६) ।

इच्चेएणं दुविहेण विणयमूलएण धम्मेणं आणुपुव्वेण अट्टकम्मपगडीओ खवेत्ता लोयगपइट्टाणा भवति ॥

६०. तए ण थावच्चापुत्ते सुदसण एव वयासी—तुब्भण सुदसणा ! किंमूलए धम्मे पणत्ते ?

अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूलए धम्मे पणत्ते^१ । •से वि य सोए दुविहे पणत्ते, त जहा—दव्वसोए य भावसोए य ।

दव्वसोए उदएण मट्टियाए य । भावसोए दव्वभेहि य मतेहि य ।

जं ण अम्ह देवाणुप्पिया ! किञ्चि असुई भवइ त सव्व सज्जपुढवीए आलिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ, तओ ण असुई सुई भवइ । एव खलु जीवा जलाभिसेय-पूयप्पाणो अविग्घेण^० सग्ग गच्छंति ॥

६१ तए ण थावच्चापुत्ते सुदसण एव वयासी—सुदसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एग मह रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चेव धोवेज्जा^२, तए ण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव^३ पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ^४ सोही ?

नो इणट्ठे^५ समट्ठे । एवामेव सुदसणा ! तुब्भ पि पाणाइवाएणं जाव^६ वहिद्धा-दाणेण^७ नत्थि सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही ।

सुदसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एग मह रुहिरकय वत्थ सज्जिय^८-खारेण आलिपइ^९, आलिपित्ता पयण आरुहेइ^{१०}, आरुहेत्ता उण्हं गाहेइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा धोवेज्जा । से नूण सुदसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जिय-खारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ ?

हता भवइ । एवामेव सुदसणा ! अम्ह पि पाणाइवायवेरमणेण जाव^{११} वहिद्धा-दाणेवेरमणेण^{१२} अत्थि सोही, जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स^{१३} •सज्जिय-खारेण अणुलित्तस्स पयण आरुहियस्स उण्ह गाहियस्स^० सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही ॥

१ स० पा०—पणत्ते जाव सग्ग ।

२ धोएज्जा (क, ग, घ) ।

३ × (ख, ग) ।

४ काय (क, ग) ।

५ यणट्ठे (क, ख) ।

६ ना० १।५।५६ ।

७ मिच्छादसणसल्लेणं (क, ख, ग, घ) ।

८ सज्जिया (क, घ) ।

९ अणुलिप्पति (ख, घ), अणुलिपइ (ग) ।

१० आरोहइ (घ) ।

११ ना० १।५।५६ ।

१२ मिच्छादसणसल्लेणं (क, ख, ग, घ) ।

द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१३ स० पा०—वत्थस्स जाव सुद्धेण ।

द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

सुदंसणस्स विणयमूलय-धम्मपडिवत्ति-पदं

- ६२ तत्थ ण सुदसणे संवुद्धे थावच्चापुत्त वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते ! [तुंभ अतिए ?] धम्मं सोच्चा जाणित्तए ॥
- ६३ '•तए ण थावच्चापुत्ते अणगारे सुदसणस्स तीसे य महइमहालियाए महच्चपरि-साए चाउज्जाम धम्म कहेइ, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, सव्वाओ वहिद्धादाणाओ^१ वेरमण जाव^२ ॥
- ६४ तए ण से सुदसणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव^३ समणे निगंथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फल-सेज्जा-सथारएण^४ पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

सुएण सुदंसणस्स पडिसंबोध-पयत्त-पदं

- ६५ तए ण तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए लद्धट्टस्स समाणस्स अयमेया-रूवे^५ •अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^६ समुप्पज्जित्था—एवं खलु सुदंसणेणं सोयधम्म विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवण्णे, त सेयं खलु मम सुदसणस्स दिट्ठि वामेत्तए पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघवित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता परिव्वायगसहस्सेण सद्धि जेणेव सोगधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वा-यगावसहसि भडगनिक्खेव करेइ, करेत्ता घाउरत्त-वत्थ-पवर^७-परिहिए पविरल-परिव्वायगेण सद्धि सपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सोगधियाए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदसणे तेणेव उवागच्छइ ॥
- ६६ तए णं से सुदसणे त सुयं एज्जमाण पासइ, पासित्ता नो अब्भुट्टेइ न पचेचुग्ग-च्छइ^८ नो आढाइ नो वदइ तुसिणीए सच्चिट्टइ ॥
- ६७ तए ण से सुए परिव्वायए सुदंसण अणव्भुट्टिय^९ पासित्ता एव वयासी—'तुंमं ण'^{१०} सुदसणा । अण्णया मम एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्टेसि^{१०} •पच्चुग्गच्छसि

१. सं० पा०—जाव समणोवासए जाए

अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे ।

२. एतन् १।५।५६ नूत्रात् पूरितम् ।

३. राय० ६६४-६६७ ।

४. ना० १।५।४७ ।

५. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

६. × (क, ख, ग, घ) ।

७. पत्तुगच्छइ (घ) ।

८. अणुव्भुट्टिय (ख, ग, घ) ।

९. तुमण्ण (क) ।

१०. सं० पा०—अव्भुट्टेसि जाव वदसि ।

आढासि० वंदसि, इयाणि सुदंसणा ! तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता' •नो
अब्भुट्टेसि नो पच्चुग्गच्छसि नो आढासि० नो वदसि । तं कस्स ण तुमे
सुदंसणा ! इमेयारूवे विणयमूले घम्मे पडिवण्णे ?

६८ तए ण से सुदंसणे सुएण परिव्वायगेण एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्टेइ,
अब्भुट्टेत्ता करयल'•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अज्जलिं कट्टु० सुय परिव्वा-
यग एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतेवासी
थावच्चापुत्ते नाम अणगारे' •पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे०
इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ । तस्स ण अतिए विणयमूले
घम्मे पडिवण्णे ॥

६९ तए ण से सुए परिव्वायए सुदसणं एव वयासी—त गच्छामो णं सुदसणा । तव
घम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अतियं पाउव्वमामो, इमाइं च ण एयारूवाइं
अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइ कारणाइ वागरणाइं पुच्छामो । त जइ मे से इमाइ
अट्ठाइ' •हेऊइं पसिणाइं कारणाइ वागरणाइ० वागरेइ', तओ ण वदामि
नमंसामि । अह मे से इमाइ अट्ठाइ' •हेऊइ पसिणाइ कारणाइ वागरणाइ० नो
वागरेइ, तओ ण अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेऊहिं निप्पट्टु-पसिणवागरण
करिस्सामि ॥

सुयस्स थावच्चापुत्तेण सवाद-पदं

७० तए ण से सुए परिव्वायगसहस्सेण सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धि जेणेव नीलासोए
उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थाव-
च्चापुत्तं एव वयासी—जत्ता ते भते ? जवणिज्ज 'ते (भते ?) ? अब्वावाह
(ते भते ?) ? फासुय विहारं (ते भते ?) ?”

७१ तए ण से थावच्चापुत्ते अणगारे सुएण परिव्वायगेण एव वुत्ते समाणे सुयं
परिव्वायगं एव वयासी—सुया ! जत्तावि मे जवणिज्जं पि मे अब्वावाह पि मे
फासुयं विहार पि मे ॥

७२ तए णं से सुए थावच्चापुत्त एव वयासी—किं ते'० भते । जत्ता ?

१. स० पा०—पासित्ता जाव नो वदसि ।

२. सं० पा०—करयल० ।

३. स० पा०—अणगारे जाव इहमागए ।

४. हेऊणि (क); हेऊति (ख, ग, घ) ।

५. स० पा०—अट्ठाइ जाव वागरेइ ।

६. वाकरेइ' (ख, ग, घ) ।

७. स० पा०—अट्ठाइं जाव नो वागरेइ ।

८. नो से (ख, ग) ।

९. प्रयुक्तादर्शेषु एतेषु त्रिष्वपि प्रश्नेषु 'ते भते ?’

इति पाठो नास्ति । क्वचित्प्रयुक्तादर्शे

'जवणिज्ज' इति पदस्याग्रे 'ते' इति पद

लभ्यते । तेनानुमीयते चतुर्ष्वपि प्रश्नेषु

एवमासीत् । उत्तरसूत्रेणाप्यस्य पुष्टिर्जायते ।

१०. आदर्शेषु 'ते' इति पद न लभ्यते, किन्तु

पूर्वप्रसंगानुसारेणात्र तद् युज्यते । भगवत्या

(१८।२०७) मपि इत्थमेव पाठो लभ्यते ।

सुया ! जण्णं मम नाण-दसण-चरित्त-तव-संजममाइएहिं जोएहिं जयणा, से तं जत्ता ।

से किं ते भते ! जवणिज्जं ?

सुया ! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—इदियजवणिज्जे य नोइदियजवणिज्जे य ।

से किं त इदियजवणिज्जे ?

सुया ! जण्णं मम सोत्तिदिय-चक्खिदिय-घाणिदिय-जिठ्ठिभदिय-फासिदियाइं निस्वहयाइं वसे वट्टति^१, से तं इदियजवणिज्जे ।

से किं त नोइदियजवणिज्जे ?

सुया ! जण्णं मम कोह-माण-माया-लोभा खीणा उवसता नो उदयंति, से तं नोइदियजवणिज्जे ।

से किं ते भते ! अग्वावाह ?

सुया ! जण्णं मम वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइया^२ विविहा रोगायका नो उदीरंति, से त अग्वावाह ।

से किं ते भते ! फासुयं विहारं ?

सुया ! जण्ण आरामेसु उज्जाणेसु देउलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडग-विवज्जियासु वसहीसु पाडिहारिय पीढ-फलग-सेज्जा-सथारय ओगिण्हत्ता णं विहरामि, से त फासुयं विहारं ॥

सरिसवयाण भक्खाभक्ख-पदं

७३. सरिसवया^३ ते भते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सुया ! सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्टेणं भते ! एव वुच्चइ—सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

सुया ! सरिसवया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मित्तसरिसवया^४ य घण्णसरिसवया^५ य ।

तत्थ ण जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सहजायया सह-वड्ढियया सहपसुकीलियया^६, ते ण समणाणं निग्गथाण अभक्खेया ।

अग्रवर्तिषु त्रिष्वपि प्रश्नेषु आदर्शलव्वस्य 'त' इति पदस्य स्थाने 'ते' इति पदं स्वीकृतमस्ति ।

सूत्रे 'सन्निवाइय' पदं विभक्त्यन्तं स्वीकृतमस्ति, तदाधारेणात्रापि तथैव स्वीकृतम् ।

१. जवणिज्ज (क, ख, ग, घ) । भगवत्या (१८।२०६) मपि इत्थमेव पाठो लभ्यते ।

४. सरिसवत्ता (ख, ग) ।

२. चिट्ठति (ख) ।

५. °सरिसवा (ख, ग) ।

३. सन्निवाइय (क, ख, ग, घ) । १।१।११२

६. °सरिसवा (ख, ग) ।

७. °कीलयया (क), °कीलया (ग, घ) ।

तत्थ णं जे ते धण्णसरिसवया^१ ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य । तत्थ ण जेते असत्थपरिणया ते ण समणाण निग्गथाण अभक्खेया । तत्थ ण जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—फासुया य अफासुया य । अफासुया ण सुया । [समणाण निग्गथाण ?] नो भक्खेया । तत्थ ण जेते 'फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—एसणिज्जा^२ य अणेसणिज्जा^३ य । तत्थ ण जेते अणेसणिज्जा ते [ण समणाण निग्गथाण ?] अभक्खेया । तत्थ ण जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जाइया य अजाइया य^४ । तत्थ ण जेते अजाइया ते [ण समणाण निग्गथाण ?] अभक्खेया । तत्थ ण जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—लद्धा य अलद्धा य । तत्थ ण जेते अलद्धा ते [ण समणाण निग्गथाण ?] अभक्खेया । तत्थ ण जेते लद्धा ते ण समणाण निग्गथाण भक्खेया ।

एएणं अट्टेण सुया ! एव वुच्चइ—सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

कुलत्थाणं भक्खाभक्ख-पदं

७४. "●कुलत्था ते भते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सुया ! कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्टेण भते ! एव वुच्चइ—कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

सुया ! कुलत्था दुविहा पण्णत्ता, त जहा—इत्थिकुलत्था य घण्णकुलत्था य ।

तत्थ ण जेते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कुलवहुया इ य कुलमाउया इ य कुलघूया इ य । ते ण समणाण निग्गथाण अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते घण्णकुलत्था ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य । तत्थ ण जेते असत्थपरिणया ते समणाण निग्गथाण अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—फासुया य अफासुया य । अफासुया ण सुया । समणाणं निग्गथाण नो भक्खेया । तत्थ ण जेते

१. °सरिसवा (क, ख, ग, घ) ।

२. जातिया (क, ख, ग, घ) ।

३. अजातिया (क, ख, ग, घ) ।

४. भगवतीसूत्रे सोमिलप्रश्नोत्तरप्रसंगे (१८।

२१४) एसणिज्जा अणेसणिज्जा, जाइया

अजाइया, असौ पाठक्रमो विद्यते । तत्र

'अफासुया फासुया' इति पाठो नास्ति । अत्र

'जाइय' इति पाठानन्तर 'एसणिज्जा अणे-

सणिज्जा' इति पाठोस्ति । द्वयोस्तुलनाया

भगवतीवर्तिपाठक्रम सगतोस्ति । याचित्तानन्तर एषणीयत्वस्य कापेक्षा स्यात् लिपिदोषेण अस्य परिवर्तनं जातमथवा अन्येन केनचित् कारणेन, नेति वक्तुं शक्यते ।

५. स० पा०—एव कुलत्था वि भाणियन्वा ।

नवर—इमं नाणत्त—इत्थिकुलत्था य

घन्नकुलत्था य । इत्थिकुलत्था तिविहा

पण्णत्ता, त जहा—कुलवहुया इ य कुलमाउया

इ य कुलघूया इ य । घन्नकुलत्था तद्देव ।

फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य । तत्थ णं जेते अणेसणिज्जा ते ण समणाण निग्गथाणं अभक्खेया । तत्थ ण जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जाइया य अजाइया य तत्थ ण जेते अजाइया ते ण समणाण निग्गथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—लद्धा य अलद्धा य । तत्थ ण जेते अलद्धा ते अभक्खेया । तत्थ ण जेते लद्धा ते णं समणाण निग्गथाणं भक्खेया ।
एएण अट्ठेण सुया ! एव वुच्चइ—कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि° ॥

मासाण भक्खाभक्ख-पदं

७५ १०मासा ते भते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सुया ! मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

सुया ! मासा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—कालमासा य अत्थमासा य घण्णमासा य ।

तत्थ ण जेते कालमासा ते दुवालसविहा पण्णत्ता, त जहा—सावणे भद्दवए आसोए कत्तिए मग्गसिरे पोसे माहे फग्गुणे चेत्ते वइसाहे जेट्टामूले आसाढे । ते ण समणाणं निग्गथाणं अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य । ते णं समणाण निग्गथाणं अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते घण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य । तत्थ ण जेते असत्थपरिणया ते समणाण निग्गथाणं अभक्खेया । तत्थ ण जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—फासुया य अफासुया य । अफासुया णं सुया ! समणाण निग्गथाणं नो भक्खेया । तत्थ ण जेते फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य । तत्थ ण जेते अणेसणिज्जा ते ण समणाण निग्गथाणं अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जाइया य अजाइया य । तत्थ णं जेते अजाइया ते ण समणाण निग्गथाणं अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—लद्धा य अलद्धा य । तत्थ ण जेते अलद्धा ते ण समणाणं निग्गथाणं अभक्खेया ।

१. स० पा०—एव मासा वि । नवर—इम नाणत्तं—मासा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—कालमासा य अत्थमासा य घण्णमासा य । तत्थ ण जे ते कालमासा ते णं दुवालस, त

जहा—सावणे जाव आसाढे । ते णं अभक्खेया । अत्थमासा दुविहा—हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य । ते ण अभक्खेया । घण्णमासा तहेव ।

तत्थ ण जेते लद्धा ते ण समणाण निग्गथाण भक्खेया ।

एएण अट्टेण सुया । एव वुच्चइ—मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि ० । ॥

अत्थित्त-पण्ह-पदं

७६. एगे भव ? दुवे भव ? अक्खए भव ? अक्खए भव ? अवट्टिए भव ? अणेगभूय-भाव-भविए भवं ?

सुया । एगे वि अह, •दुवेवि अह, अक्खए वि अह, अक्खए वि अह, अवट्टिए वि अह, ०अणेगभूय-भाव-भविए वि अह ।

से केणट्टेण भते । एगे वि अह ? •दुवेवि अह ? अक्खए वि अह ? अक्खए वि अह ? अवट्टिए वि अह ? अणेगभूय-भाव-भविए वि अह ? ०

सुया ! दव्वट्टयाए 'एगे वि अह', नाणदसणट्टयाए दुवे वि अह, पएसट्टयाए अक्खए वि अह, अक्खए वि अह, अवट्टिए वि अह, उवओगट्टयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि अह ॥

सुयस्स परिव्वायगसहस्सेण पव्वज्जा-पदं

७७ एत्थ ण से सुए सवुद्धे थावच्चापुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते । तुवभ अतिए केवलपण्णत्त धम्म निसामित्तए ॥

७८. •तए ण थावच्चापुत्ते अणगारे सुयस्स चाउज्जाम धम्म कहेइ ॥ ०

७९ तए ण से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म एव वयासी—इच्छामि ण भते । परिव्वायगसहस्सेण सद्धि सपरिवुडे देवाणु-प्पियाण अतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ॥

८० •तए ण से सुए परिव्वायए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता त्तिदडय य कुडियाओ य छत्तए य छन्नालए य अकुसए य पवित्तए य केसरियाओ य ० धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, सयमेव सिंह उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता जेणेव थावच्चापुत्ते •अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्त अणगार वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अतिए ० मुडे 'भवित्ता पव्वइए' ० । सामाइयमाइयाइ चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ ॥

१. भगवतीसूत्रे (१८।२१३-२१८) एतत्तुल्य प्रकरणमस्ति, क्वचित्-क्वचित् किञ्चित् पाठ-भेदो विद्यते ।

२ स० पा०—अह जाव अणेगभूयभाव भविए ।

३. स० पा०—अह जाव सुया ।

४. एगेह (क) एगे अह (ख, ग घ) ।

५. × (ख, ग, घ) ।

६ × (घ) ।

७ स० पा०—धम्मकहा भाणियव्वा ।

८ सं० पा०—उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए त्तिदडय जाव धाउरत्ताओ ।

९ स० पा०—थावच्चापुत्ते जाव मुडे ।

१०. भवित्ता जाव पव्वइए (ख, ग, घ); अत्र 'जाव' शब्दस्य विपर्ययो जातोस्ति ।

सुयस्स जणवयविहार-पदं

८१. तए णं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्स सीसत्ताए वियरइ ॥
 ८२. तए ण थावच्चापुत्ते सोगधियाओ नयरीओ नीलासोयाओ उज्जाणाओ
 पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

थावच्चापुत्तस्स परिनिव्वाण-पदं

८३. तए ण से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव पुडरीए पव्वए
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुडरीय पव्वयं सणियं-सणिय दुरुहइ^१,
 दुरुहित्ता^२ मेघघणसन्निगास देवसन्निवायं पुढवि^३●सिलापट्टय पडिलेहेइ,
 पडिलेहेत्ता जाव^४ सलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए^०
 पाओवगमणणुवन्ते ॥
 ८४. तए ण से थावच्चापुत्ते वहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए
 सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सद्धिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता जाव^५ केवलवर-
 नाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे^६ ●बुद्धे मुत्ते अतगडे परिनिव्वुडे
 सव्वदुक्ख^० प्पहीणे ॥

सेलगस्स अभिनिक्खमणाभिप्पाय-पदं

८५. तए ण से सुए अण्णया कयाइ जेणेव सेलगपुरे नगरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे^७
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिक्ख ओग्गह ओगिण्हित्ता संजमेणं
 तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ^० ॥
 ८६. परिसा निग्गया । सेलओ निग्गच्छइ ॥
 ८७. “तए ण से सेलए सुयस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुट्टे सुयं तिक्खुत्तो
 आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव
 वयासी—सद्धामि णं भंते ! निग्गथ पावयण^८ जाव^९ नवर^{१०} देवाणुप्पिया !

१ द्रुहति (ख) ।

२, अतोअं १।१।२०६ सूत्रे ‘सयमेव’ इति
 पद विद्यते ।

३ स० पा०—पुढवि जाव पाओवगमण ।

४ ना० १।२।२०६ ।

५. अमो पाठ भगवती (६।१५१) सूत्रात् १०. ना० १।१।१०१ ।

पूर्तिमर्हति, तद्महावीरकालीन वर्णनमस्ति,
 ततो नाक्षरशोत्र घटनामर्हति ।

६ स० पा०—मिद्धे जाव प्पहीणे ।

७ स० पा०—समोमरणं ।

८ सं० पा०—धम्म सोच्चा ज नवर ।

९. अत्र पाठपूर्तिकारणेन ‘निग्गथं पावयणं’
 इति पद प्राप्तं किन्तु ऐतिहासिकदृष्ट्यात्र
 ‘अरहत पावयण’ इति पदं समीचीन स्यात् ।

१०. ना० १।१।१०१ ।

११. जं नवर (क, ख, ग, घ), संभवतः ‘जं’
 इति पद ‘जं तुब्भे वदह’ इति पाठस्य
 सकेतरूपमस्ति ।

पंथगपामोक्खाइं पंच मतिसयाइं आपुच्छामि, मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि । तओ पच्छा देवाणुप्पियाण अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया ॥

८८. तए णं से सेलए राया सेलगपुरं नगरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे^१ सण्णिसण्णे ॥

८९. तए ण से सेलए राया पंथगपामोक्खे पंच मतिसए सहावेइ, सहावेत्ता एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मए सुयस्स अंतिए घम्मे निसते, से वि य मे घम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए^२ । 'तए णं अह'^३ देवाणुप्पिया ! ससार-भउन्विग्गे^४ भीए जम्मण-जर-मरणाणं सुयस्स अणगारस्स अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं^५ पव्वयामि । तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! किं करेह ? किं ववसह^६ ? 'किं वा भे^७ हियइच्छिए सामत्ये ?'^८

९०. तए णं ते पथगपामोक्खा पंच मतिसया सेलगं राय एव वयासी—जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउन्विग्गा जाव^९ पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया ! के^{१०} अण्णे आहारे वा आलवे वा ? अम्हे वि य ण देवाणुप्पिया ! ससारभउन्विग्गा जाव पव्वयामो ।

जहा^{१०} णं^{११} देवाणुप्पिया ! अम्हं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य^{१२} कुडुवेसु य मतेसु य गुज्भेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाण आहारे आलवण चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए^{१३}, तथा ण पव्वइयाण वि समाणाण^{१४} बहूसु कज्जेसु य जाव चक्खुभूए ॥

९१ तए ण से सेलगे पंथगपामोक्खे पंच मतिसए एव वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे संसारभउन्विग्गा जाव^{१५} पव्वयह, त गच्छह ण देवाणुप्पिया ! सएसु-सएसु

१ सिहासण (क, ख, ग, घ) ।

२. अभिरुत्तिते (ग) ।

३. तए णं अहन्नं (ख), अहन्न (ग) ।

४ स० पा० — ससारभउन्विग्गे जाव पव्वयामि ।

५ वसह (ग, घ) ।

६. ते (ख, ग) ।

७. किं भे हियइच्छिए, किं भे सामत्ये (भ० १८।४५) ।

८ ना० १।५।८६ ।

९ किं (ख, ग, घ) ।

१०. जह (ख) ।

११ × (क, ख, ग, घ) ।

१२ सं० पा०—कारणेसु य जाव तथा ।

१३. समणाण (क, ख, ग, घ) ।

१४ ना० १।५।८८ ।

कुटुवेसु^१ जेट्ठपुत्ते कुटुंबमज्जे^२ ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ^३ सीयाओ दुरूढा समाणा मम अतिय पाउब्भवह । ते वि तहेव पाउब्भवति ॥

मंडुयस्स रायाभिसेय-पदं

६२. तए ण से सेलए राया पच मतिसयाइं पाउब्भवमाणाइ पासइ, पासित्ता हट्टुट्टे कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मडुयस्स कुमारस्स महत्थ^४ •महग्घं महरिह विउल^५ ° रायाभिसेय उवट्टुवेह ॥
६३. “तए ण ते कोडुवियपुरिसा मडुयस्स कुमारस्स महत्थ महग्घ महरिह विउल रायाभिसेय उवट्टुवेति ॥
६४. तए णं से सेलए राया बहूहिं गणनायगेहि य जाव^६ संधिवालेहि य सद्धि सपरिवुडे मडुय कुमार जाव^७ रायाभिसेएण अभिसिचइ ॥
६५. तए ण से मडुए राया जाए—महयाहिमवत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव^८ रज्ज पसासेमाणे^९ विहरइ ॥

सेलयस्स निक्खमणाभिसेय-पदं

६६. तए ण से सेलए मडुय राय आपुच्छइ ॥
६७. तए ण मडुए राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सेलगपुर नयर आसिय^{१०}—•सित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्तं जाव^{११} सुगधवरगधिय^{१२} ° गधवट्टिभूय करेह य कारवेह य, एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥
६८. तए ण से मडुए दोच्च पि कोडुवियपुरिसे एव^{१३} वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सेलगस्स रण्णो महत्थ^{१४} •महग्घ महरिहं विउल^{१५} ° निक्खमणाभिसेय [करेह ?] जहेव मेहस्स तहेव^{१६} नवर—पउमावती देवी अग्गकेसे पडिच्छइ, सच्चेव पडिग्गह गहाय सीयं दुरुहइ । अवसेस तहेव जाव^{१७} ॥

१ कोडुवेसु (ख) ।

२. कोडुव^० (घ) ।

३. °वाहिणीयाओ (घ) ।

४ सं० पा०—महत्थं जाव रायाभिसेय ।

५ सं० पा०—अभिसिचइ जाव राया जाए विहरइ ।

६. ना० १।१।२४ ।

७. ना० १।१।११८ ।

८ ओ० सू० १४ ।

९ सं० पा०—आसिय जाव गधवट्टिभूय ।

१०. ना० १।१।३३ ।

११. सदावेइ २ एव (क) ।

१२. सं० पा०—महत्थ जाव निक्खमणाभिसेयं ।

१३ ना० १।१।१२२-१३२ ।

१४. ना० १।१।१३४-१४३, १।५।२६-३३ ।

सेलगस्स पव्वज्जा-पदं

६६. १•तए णं से सेलगे [पचहिं मत्तिसएहिं सद्धिं ?] सयमेव पंचमुट्ठियं लोय करेइ, करेत्ता जेणामेव सुए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुय अणगार तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ जाव^१ पव्वइए ॥

सेलगस्स अणगारचरिया-पदं

१०० तए ण से सेलए अणगारे जाए जाव^१ कम्मनिग्घायणट्ठाए एव च ण विहरइ ॥
 १०१ तए ण से सेलए सुयस्स तहारूवाण थेराणं अत्तिए^० सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ^१-•छट्ठम - दसम - दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणे^० विहरइ ॥

सुयस्स परिनिव्वाण-पदं

१०२. तए ण से सुए सेलगस्स अणगारस्स ताइ पथगपामोक्खाइ पच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरइ ॥
 १०३ तए ण से सुए अणया कयाइ सेलगपुराओ नगराओ सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥
 १०४. तए ण से सुए अणगारे अणया कयाइ^१ तेण अणगारसहस्सेण सद्धिं सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव पुडरीयपव्वए^० •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुडरीय पव्वय सणिय-सणिय दुरुहइ, दुरुहित्ता मेघघणसन्निगास देवसन्निवाय पुढविसिलापट्टय पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता जाव^१ सलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाडक्खिए पाओव-गमणणुवन्ने ॥
 १०५ तए ण से सुए बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सद्धिं भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता जाव^१ केवलवरनाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्प-हीणे^० ॥

सेलगस्स रोगातंक-पदं

१०६ तए ण तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अतेहिं य पतेहिं य तुच्छेहिं य लूहेहिं

- | | |
|--|---|
| १. सं० पा०—अवसेस तहेव जाव सामाइय-माइयाइ । | ४ ना० १।५।३५-३७ । |
| २. प्रव्रज्या-प्रसगे मंत्रिणामुल्लेखोनोपलभ्यते, सच आवश्यकोस्ति । तेनासौ पाठ. प्रकरण-सादृश्येन थावच्चापुत्रवर्णनगत ३४ सूत्रात् पूरितोस्ति । | ५ सं० पा०—चउत्थ जाव विहरइ । |
| ३. ना० १।१।१४६, १५० । | ६. कयाइं (ख) । |
| | ७ सं० पा०—पव्वए जाव सिद्धे ^० । |
| | ८. ना० १।१।२०६ । |
| | ९ भग० ६।१५१ । |

य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाडक्कतेहि य पमाणाडक्क-
तेहि य निच्च^१ पाणभोयणेहि य पयड-सुकुमालस्स सुहोचियस्स^२ सरीरगसि
'वेयणा पाउव्भूया'^३—उज्जला^४ •विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा^०
दुरहियासा । कडु-दाह-पित्तज्जर-परिगयसरीरे यावि विहरइ ॥

१०७ तए ण से सेलए तेण रोयायकेण सुक्के भुक्खे जाए यावि होत्था ॥

१०८ तए ण से सेलए अण्णया कयाड पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे^१ •गामाणुगाम दूडज्जमाणे
मुहसुहेण विहरमाणे जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिख्व ओग्गह ओगिण्हिता संजमेण तवसा
अप्पाण भावेमाणे^० विहरइ ॥

१०९ परिसा निग्गया । मडुओ वि निग्गओ सेलगं अणगारं 'वदइ नमसइ पज्जु-
वासइ'^६ ॥

सेलगस्स तिगिच्छा-पद

११० तए ण से मडुए राया सेलगस्स अणगारस्स सरीरग सुक्क भुक्ख^१ सव्वावाहं
सरोग पासइ, पासित्ता एव वयासी—अहण्ण भंते^१ ! तुव्व भ अहापवत्तेहिं^२
तेगिच्छएहिं^३ अहापवत्तेण^० ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेण तेगिच्छ आउट्टावेमि^४ ।
तुव्वे ण भते ! मम जाणसालासु समोसरह, फासु-एसणिज्ज पीढ-फलग-सेज्जा-
सथारग ओगिण्हित्ताण विहरह ॥

१११. तए ण से सेलए अणगारे मडुयस्स रण्णो एयमट्ठं तह 'त्ति' पडिसुणेइ ॥

११२ तए ण से मडुए सेलग वदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं^५ पाउव्भूए
तामेव दिसिं पडिगए ॥

११३ तए ण से सेलए कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव^६ उट्टियम्मि सूरे सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते स-भंड-मत्तोवगरणमायाए पथगपामोक्खेहिं पचहिं

१. निच्च य (क, ख, ग, घ) ।

२. सुहोइयस्स (ग) ।

३. रोगायके पाउव्भूए (वृषा) ।

४. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

५. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे
जाव विहरइ ।

६. अणगारं जाव वंदइ नमसइ, रत्ता पज्जु-
वासइ, रत्ता (क) ।

७. भुक्खं जाव (क, ख, ग, घ) अत्र आदर्शेषु
'जाव' शब्द. उपलभ्यते, किन्तु अस्य

पूर्तिस्थलमद्यापि क्वापि नोपलब्धम् ।

८. अहापउत्तेहिं (ख); अहापवत्तितेहिं (घ) ।

९. तिगच्छएहिं (क) ।

१०. अहापवित्तेण (ख) ।

११. आउटावेमि (क, ग, घ); आउट्टावेमि
(ख); आदर्शेषु प्रायेण 'आउंटावेमि' इति
पाठो लभ्यते, वृत्तावत्र नास्त्यनुस्वारः ।

१२. दिसिं (क) ।

१३. ना० १।१।२४ ।

अणगारसएहिं सद्धिं^१ सेलगपुरमणुप्पविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव 'मडुयस्स रण्णो जाणसाला'^२ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फासु-एसणिज्ज^३ •पीढ-फलग-सेज्जा-सथारण ओगिण्हित्ताण^० विहरइ ॥

११४. तए णं से मडुए तेगिच्छिए^४ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया । सेलगस्स फासु-एसणिज्जेण^५ •ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेण^० तेगिच्छ आउट्टेह^६ ॥

११५. तए णं ते तेगिच्छिया मडुएणं रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्टतुट्ठा सेलगस्स अहा-पवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेहिं तेगिच्छ आउट्टेति, 'मज्जपाणग च से उधदिसंति'^७ ॥

११६. तए ण तस्स सेलगस्स^८ अहापवत्तेहिं^९ •ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेहिं^० मज्जपाण-एण य से रोगायके उवसते यावि होत्था—हट्टे गल्लसरीरे^{१०} जाए ववगय-रोगायके ॥

सेलगस्स पमत्तविहार-पदं

११७. तए ण से सेलए तसि रोगायकसि उवसतसि समाणसि तसि विपुले असण-पाण-खाइम-साइमे मज्जपाणए य मुच्छिए गट्टिए गिट्ठे अज्भोववन्ने ओसन्ने ओसन्न-विहारी, पासत्ये^{११} •पासत्यविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी^० ससत्ते संसत्तविहारी उउवद्ध^{१२}-पीढ^{१३}-फलग-सेज्जा-संथारए^० पमत्ते यावि विहरइ, नो सचाएइ फासु-एमणिज्ज पीढ-फलग-सेज्जा-सथारय पच्चप्पिणित्ता मडुय च राय आपुच्छित्ता वहिया^{१४} •जणवयविहार^० विहरित्तए ॥

साहूहिं सेलगस्स परिच्चाय-पदं

११८. तए ण तेसि पथगवज्जाण पच्चण्ह अणगारसयाण अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण^{१५} •समुवागयाण सण्णिसण्णाण सण्णिविट्ठाण^० पुव्वरत्तावरत्तकाल-

१. × (ख, ग, घ) ।

२. मडुया जाणसाला (ग) ।

३. स० पा०—फासुय पीढ जाव विहरइ ।

४. तिगिच्छिए (क, ख) ।

५. स० पा०—फासुएसणिज्जेण जाव तेगिच्छ ।

६. आउट्टेह (क, ख, ग) ।

७. × (क), मज्जण^० (ख, ग) सर्वत्र ।

८. सेलगस्स तेहिं २ (क) ।

९. स० पा०—अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणएण ।

१०. मल्लसरीरे (ग), वलियसरीरे (क्वचित्) ।

अत्र 'कल्ल' शब्दस्य ककारस्य गकारादेशो जातोस्ति ।

११. स० पा०—एव पासत्ये कुसीले पमत्ते ।

१२. ओवद्ध (क, ख) ।

१३. स० पा०—पीढ ।

१४. स० पा०—वहिया जाव विहरित्तए ।

१५. स० पा०—सहियाण जाव पुव्वरत्ता^० ।

समयसि धम्मजागरिय जागरमाणण अयमेयाह्वे अज्भत्थिए^१ •चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^२ समुप्पज्जित्था—एव खलु सेलए रायरिसी चडत्ता रज्ज जाव^३ पव्वइए विउले^४ असण-पाण-खाइम-साइमे मज्जपाणए य मुच्छिए नो सचाएइ^५ फासु-एसणिज्ज पीढ-फलग-सेज्जा-सथारय पच्चप्पिणित्ता मडुय च राय आपुच्छित्ता वहिया जणवयविहार^६ विहरित्तए । नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया । समणाण^७ निग्गथाण^८ ओसन्नाण पासत्थाण कुसोलाणं पमत्ताण ससत्ताण उउ-वद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-सथारए^९ पमत्ताण विहरित्तए । त सेय खलु देवाणुप्पिया । अम्ह कल्ल सेलगं रायरिसि आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीढ-फलग-सेज्जा-सथारय पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पथयं अणगारं वेयावच्चकर ठावेत्ता वहिया अठ्भुज्जएण^{१०} जणवयविहारेण^{११} विहरित्तए—एव सपेहेत्ति, सपेहेत्ता कल्ल जेणेव सेलए रायरिसी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेलय रायरिसि आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीढ-फलग-सेज्जा-सथारयं पच्चप्पिणित्ति, पच्चप्पिणित्ता पथय अणगार वेयावच्चकरं ठावेत्ति, ठावेत्ता वहिया^{१२} जणवयविहार^{१३} विहरति ॥

पंथगस्स चाउम्मासिय-खामणा-पद

११६. तए ण से पथए सेलगस्स सेज्जा-संथारय-उच्चार-पासवण-खेल्ल-सिंघाणमत्त-ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणएण अगिलाए विणएण वेयावडियं करेइ ॥
१२०. तए ण से सेलए अण्णया कयाड कत्तियं-चाउम्मासियसि विउल असण-पाण-खाइम-साइम आहारमाहारिए सुवहु च मज्जपाणयं^{१४} पीए पच्चावरण्हकाल-समयसि^{१५} सुहप्पसुत्ते ॥
१२१. तए ण से पथए कत्तिय-चाउम्मासियसि कयकाउस्सग्गे देवसिय पडिक्कमणं

१. सं० पा०—अज्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था । १०. मज्जणपाययं (ख) ।
२. ओ० सू० २३ । ११. पुव्वावरण्हकालसमयसि (क, ख, ग, घ) ।
३. विपुलेण (क) । सर्वेषु आदर्शेषु 'पुव्वावरण्ह०' इति पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थ-मीमांसया नासावत्र संगतोस्ति । अत्र सायकालीनसमयस्य प्रसंगोस्ति, अत. 'पच्चावरण्ह०' इति पाठोस्माभि. गृहीत. । आदर्शेषु लिपिदोषेण 'पच्चा०' स्थाने 'पुव्वा०' जातमिति सभाव्यते । उपासकदशासूत्रेषु (६।१७) इत्थ जातमस्ति ।
४. सं० पा०—सचाएइ जाव विहरित्तए ।
५. सं० पा०—समणाणं जाव पमत्ताण । अस्य पूर्ति १।५।११० मूत्रे प्रदत्तसकेतानुसारेण कृतास्ति ।
६. एतत् पद १।५।१२४ सूत्राधारेण स्वीकृतम् ।
७. सं० पा०—अठ्भुज्जएण जाव विहरित्तए ।
८. सं० पा०—वहिया जाव विहरति ।
९. कत्तिया (ख) ।

पडिक्कते, चाउम्मासियं पडिक्कमिउकामे सेलग रायरिसि खामणट्टयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ ॥

सेलगस्स कोव-पदं

१२२. तए णं से सेलए पंथएण सीसेण पाएसु सघट्टिए समाणे आसुरुत्ते^१ •रुट्टे कुविए चडिक्किए^२ मिसिमिसेमाणे उट्टेइ, उट्टेत्ता एव वयासी—से केस ण भो ! एस अपत्थियपत्थिए^३, •दुरत-पत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउट्टसिए, सिरि-हिरि-घिइ-कित्ति-परि^४ वज्जिए, जे ण मम सुहपसुत्त पाएसु सघट्टेइ ?

१२३ तए ण से पथए सेलएण एव वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिए करयल^५ •परिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अर्जलि^६ कट्टु एव वयासी—‘अह ण’^७ भते ! पथए कयकाउस्सग्गे देवसिय पडिक्कमण पडिक्कते^८, चाउम्मासिय खामेमाणे देवाणुप्पिय वदमाणे सीसेणं पाएसु सघट्टेमि ।

‘त खामेमि ण तुव्भे देवाणुप्पिया’^९ !

खमत्तु ण देवाणुप्पिया !

खत्तुमरहति^{१०} ण देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एवकरणयाए त्ति कट्टु सेलय अणगार एयमट्टु सम्म विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेइ ॥

सेलगस्स अब्भुज्जयविहार-पदं

१२४ तए ण तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स पथएण एव वुत्तस्स अयमेयारूवे अज्भत्थिए^१ •चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^२ समुप्पज्जित्था—एव खलु अह^३ •चइत्ता रज्ज जाव^४ पव्वइए ओसन्ने ओसन्नविहारी, पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी ससत्ते ससत्तविहारी उउवद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-सथारए पमत्ते यावि^५ विहरामि । त नो खलु कप्पड समणाण निग्गथाण^६ •ओसन्नाणं पासत्थाण कुसीलाण पमत्ताण ससत्ताण उउवद्ध-पीढ-

१ स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे ।

प्रयुक्तादशाधारेण स्वीकृत । १।१६।२६५

२ स० पा०—अपत्थियपत्थिए जाव वज्जिए

सूत्रेपि लभ्यते ।

(ख, ग, घ) । अत्रापि त्रिषु आदर्शेषु अन्यत्र च उपासकदशादिषु सूत्रेषु पाठान्तरनिर्दिष्ट

७ खत्तुमरहतु (क, ग), खमन्तु ममाराह तुम ण (ख) ।

पाठो लभ्यते, किन्तु ‘पत्थय’ इति पाठे समाससारत्यमस्ति ।

८ स० पा०—अज्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९ स० पा०—अह रज्ज च जाव ओसन्न जाव उउवद्धपीढ^० विहरामि ।

३. स० पा०—करयल ।

४. अहण (ख) ।

१०. ओ० सू० २३ ।

५. पडिक्कते चाउम्मासिय पडिक्कते (क) ।

११ स० पा०—निग्गथाण जाव विहरित्तए ।

३. X (क, ख, ग, घ); असौ पाठ क्वचिद्

फलग-सेज्जा-सथारए पमत्ताणं ° विहरित्तए । त सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं
आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीढ-फलग-सेज्जा-सथारग पच्चप्पिणित्ता पंथएणं
अणगारेण सद्धि वहिया अठ्भुज्जएणं जणवयविहारेण विहरित्तए — एवं सपेहेड,
सपेहेत्ता कल्लं ° मडुय राय आपुच्छित्ता पाडिहारिय पीढ-फलग-सेज्जा-
सथारग पच्चप्पिणित्ता पथएण अणगारेण सद्धि वहिया अठ्भुज्जएणं जणवय-
विहारेण ° विहरइ ॥

१२५ एवामेव समणाउसो । जे^१ निग्गथे वा निग्गथी वा ओसन्ने^२ ° ओसन्नविहारी,
पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी संसत्ते
ससत्तविहारी उउवद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा °-सथारए पमत्ते विहरइ, से णं
इहलोए चेव वहूण समणाण वहूण समणीण वहूण सावयाणं वहूण सावियाण
य हीलणिज्जे^३ ° निंदणिज्जे खिसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे,
परलोए वि य ण आगच्छइ वहूणि दडणाणि^४ य अणादिय च णं अणवयगं
दीहमद्ध चाउरत-संसार कतार भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ ° ॥

१२६ तए ण ते पथगवज्जा पच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्टा समाणा अणमण्णं
सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी--एव खलु देवाणुप्पिया । सेलए रायरिसी
पथएणं ° अणगारेण सद्धि वहिया अठ्भुज्जएण जणवयविहारेण ° विहरइ ।
त सेय खलु देवाणुप्पिया । अम्ह सेलग रायरिसि उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए—
एव सपेहेति, सपेहेत्ता सेलग रायरिसि उवसपज्जित्ता ण विहरंति ॥

१२७ तए ण से सेलए रायरिसी पथगपामोक्खा पंच अणगारसया^५ ° जेणेव पुडरीए
पव्वए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पुडरीय पव्वयं सणिय-सणिय दुरुहति,
दुरुहित्ता मेघघणसन्निगास देवसन्निवाय पुढविसिलापट्टयं पडिलेहति, पडिले-
हित्ता जाव^६ सलेहणा-भूसणा-भूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया पाओवगमणं-
णुवन्ता ॥

१. अठ्भुज्जएण जाव (क, ख, ग, घ), अत्र
जाव पद अनावश्यक प्रतिभाति । १।५।११८
सूत्रे सक्षिप्तपाठ आसीत् तत्र 'जाव'
पदस्थोपयोगित्वम्, किन्तु नात्र ।

२. स० पा०—कल्ल जाव विहरइ ।

३. जाव (क, ग, घ), अत्र लिपिदोषेण 'जे'
पदस्य स्थाने 'जाव' इति पदं जातम् ।

४. स० पा०—ओसन्ने जाव सथारए ।

५. स० पा०—हीलणिज्जे संसारो भाणियच्चो ।

६. पू०—ना० १।३।२४ ।

७. स० पा०—पथएण जाव विहरइ ।

८. स० पा०—पच अणगारसया वहूणि वासाणि
सामण्णपरियाग पाउणित्ता जेणेव पुडरीए
पव्वए तेणेव उवागच्छति जहेव धाणच्चापुत्ते
तहेव सिद्धा ° ।

९. ना० १।१।२०६ ।

१२८. तए णं से सेलए रायरिसी पंथगपामोक्खा पंच अणगारसया व्हूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव' केवलवरनाणदसण समुप्पाडेत्ता तत्रो पच्छा सिद्धा बुद्धा मुत्ता अतगडा परिनिव्वुडा सव्वदुक्खप्पहीणा ° ॥

१२९ एवामेव समणाउसो ! जो निग्गथो वा निग्गथी वा ° अग्गभुज्जएणं जणवय-विहारेण विहरइ, से णं इहलोए चेव व्हूण समणाण व्हूण समणीण व्हूण सावगाण व्हूण सावियाण य अच्चणिज्जे वदणिज्जे नमसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मगल देवय चेइय विणएण पज्जुवास-णिज्जे भवइ, परलोए वि य ण नो व्हूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाच्छेय-णाणि य एव हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लवणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार ° वीईवइस्सइ ॥

निकखेव-पदं

१३० एव खलु जवू ! समणेणं भगवया महावीरेण पचमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

सिढिलिय-सजम-कज्जा वि, होइउ उज्जवति जइ पच्छा ।

सवेगाओ ते सेलओ व्व आराहया होति ॥ १ ॥

१. भग० ६।३३।

२. सं० पा०—निग्गथो वा २ जाव विहरिस्सइ (क, ख, ग, घ); अत्र लिपिदोषेण 'वीईवइस्सइ' स्थाने 'विहरिस्सइ' इति जातम् । यद्यत्र 'विहरिस्सइ' इति पदं

स्यात्, तर्हि प्रस्तुतपाठस्य पूर्तिरपि न स्यात्, न च यच्छब्दस्योत्तरवर्त्ती तच्छब्दस्यनिर्देशोपि प्राप्तो भवेत् । तेनात्र इति कल्पना कतुं न्याय्या यल्लिपिदोषेण विपर्ययोसौ जातः ।

छट्ठं अज्झयणं

तुंवे

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स ण भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरणं । परिसा निग्गया ॥
३. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नाम अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते जाव^१ सुक्कज्झाणोव-गए विहरइ ॥

गरुयत्त-लहुयत्त-पदं

४. ताए णं से इंदभूई नामं अणगारे जायसइडे जाव^२ एवं वयासी—कहण^३ भते ! जीवा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कतुव^४ निच्चिद्धं निरुवहयं दव्वभेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्ठियालेवेण लिपइ, लिपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्क समाण दोच्चंपि दव्वभेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्ठियालेवेण लिपइ, लिपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्कं समाणं तच्चपि दव्वभेहि य कुसेहि य वेढेइ, मट्ठियालेवेण लिपइ, उण्हे दलयइ । एव खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे

१. ओ० सू० ८२ ।

२. ओ० सू० ८३ ।

३. कह ण (क, ग) ।

४. सुक्क० (क, घ) ।

अतरा लिपमाणे^१ अंतरा सुक्खवेमाणे^२ जाव अट्टहिं मट्टियालेवेहिं लिपइ^३,
अत्थाहमतारमपोरिसियसि उदगसि पक्खिवेज्जा^४ । से नूण गोयमा । से तुवे
तेसिं अट्टण्ह मट्टियालेवेण गरुययाए^५ भारिययाए^६ गरुय-भारिययाए^७ उप्पि
सलिलमइवइत्ता^८ अहे धरणियल^९-पइट्टाणे भवइ ।

एवामेव गोयमा ! जीवा वि पाणाइवाएणं^{१०} •मुसावाएण अदिण्णादाणेण
मेहुणेण परिग्गहेण जाव^{११} °मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेण अट्टकम्मपगडीओ
समज्जित्ता तासिं गरुययाए भारिययाए^{१२} गरुय-भारिययाए^{१३} कालमासे काल
किच्चा धरणियलमइवइत्ता^{१४} अहे नरगतल-पइट्टाणा भवति । एव खलु गोयमा !
जीवा गरुयत्त हव्वमागच्छति । 'अह ण'^{१५} गोयमा । से तुवे तसि पढमिल्लुगसि^{१६}
मट्टियालेवसि तित्तसि कुहियसि परिसडियसि ईसिं धरणियलाओ उप्पतित्ता
ण चिट्ठइ । तयाणतर दोच्च पि मट्टियालेवे^{१७} •तित्ते कुहिए परिसडिए ईसिं
धरणियलाओ °उप्पतित्ता ण चिट्ठइ । एव खलु एएण उवाएण तेसु अट्टसु
मट्टियालेवेसु तित्तेसु^{१८} •कुहिएसु परिसडिएसु ° [से तुवे ?] विमुक्कवधणे^{१९}
अहे धरणियलमइवइत्ता उप्पि सलिलतल-पइट्टाणे भवइ ।

एवामेव गोयमा ! जीवा पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेण
अणुपुव्वेण अट्टकम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पि लोयग्ग-पइट्टाणा
भवति । एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्त^{२०} हव्वमागच्छति ॥

निक्खेव-पदं

५ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^{२१} सपत्तेण छट्टस्स नायज्झय-
णस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

- | | |
|--|--|
| १. लिपेमाणे (ख, घ) । | ११. ना० १।१।२०६ । |
| २. सुक्खवेमाणे (ख, ग, घ) । | १२. × (क, ख) । |
| ३. आलिपइ (ख, ग) । | १३. × (ग) । |
| ४. पक्खिवेज्जा (ख) । | १४. ° मतिवतित्ता (ख), ° मतिवतित्ता (ग) । |
| ५. गरुय ° (ख, ग) । | १५. अहण्ण (क, ग, घ) । |
| ६. × (ख) । | १६. पढमिल्लुगसि (ख) । |
| ७. × (ग) । | १७. स० पा० — मट्टियालेवे जाव उपतित्ता । |
| ८. ° मतिवतित्ता (ख, ग) । | १८. स० पा० — तित्तेसु जाव विमुक्कवधणे । |
| ९. धरणितल (क) । | १९. विमुक्कवधणेसु (क) । |
| १०. स० पा० — पाणाइवाएण जाव मिच्छा-
दंसणसल्लेण । | २०. लहुत्त (ख) । |
| | २१. १।१।७ । |

वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा—

जह मिउलेवालित्तं, गुरुयं तुवं अहो वयइ ।
 एवं कय-कम्मगुरु, जीवा वच्चंति अहरगइं ॥१॥
 त चेव तन्विमुक्कं, जलोवरिं ठाइ जाय-लहुभावं ।
 जह तह कम्म-विमुक्का, लोयग-पइट्टिया होति ॥२॥

—

सत्तमं अज्भयणं

रोहिणी

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भते ! समणेण भगवया महावीरेण छट्टस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स ण भते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे होत्था । सुभूमिभागे उज्जाणे ॥

घणसत्थवाह-पदं

३. तत्थ णं रायगिहे नयरे घणे नामं सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे जाव' अपरिभूए । भद्दा भारिया—अहीणपच्चिदियसरीरा जाव' सुरूवा ॥
४. तस्स ण घणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाह-दोरगा होत्था, तं जहा—घणपाले घणदेवे घणगोवे घणरक्खिए ॥
५. तस्स ण घणस्स सत्थवाहस्स चउण्ह पुत्ताण भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, त जहा—उज्भया भोगवइया रक्खिया' रोहिणिया ॥

घणस्स परिवखापओग-पदं

६. तए णं तस्स घणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे' •अज्भत्थिए च्चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु अह रायगिहे नयरे वहूण ईसर'•-तलवर-माडविय-कोडुविय-इवभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°पभितीण सयस्स य कुडुवस्स वहूसु कज्जेसु य कारणेसु

१. ना० १।५।७ ।

२. ना० १।२।८ ।

३. रक्खित्थिया (ग), रक्खित्थिया (घ) ।

४. स० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था

५. स० पा०—ईसर जाव पभितीण ।

चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता °
 चउत्थ रोहिणीय सुण्हं सद्दावेइ, 'सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुम णं पुत्ता ! मम
 हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गेण्हाहि, जाव^१ गेण्हइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ,
 एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
 समुप्पज्जित्था—एव खलु मम ताओ इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवंधि-
 परियणस्स चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुम णं
 पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी
 सगोवेमाणी विहराहि । जया ण अह पुत्ता ! तुमं इमे पच सालिअक्खए
 जाएज्जा, तथा ण तुम मम इमे पच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्ठु
 मम हत्थसि पच सालिअक्खए दलयइ ° । तं भवियव्व एत्थ कारणेणं^२ । तं सेय
 खलु मम एए पच सालिअक्खए सारक्खमाणीए सगोवेमाणीए सवड्ढेमाणीए
 त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कुलघर-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
 तुव्वे ण देवाणुप्पिया ! एए पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता पढमपाउससि
 महावुट्ठिकायसि निवइयसि समाणसि खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेह, करेत्ता
 इमे पच सालिअक्खए वावेह, वावेत्ता दोच्च पि 'तच्च पि'^३ उक्खय-निहए^४
 करेह, करेत्ता वाडिपक्खेव^५ करेह, करेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा
 आणुपुव्वेण संवड्ढेह ॥

११. तए ण ते कोडुविया रोहिणीए एयमट्ठं पडिसुणेति, ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति,
 अणुपुव्वेण सारक्खति, संगोविति^६ ॥
१२. तए ण कोडुविया पढमपाउससि महावुट्ठिकायसि निवइयसि समाणसि खुड्डाग
 केयार सुपरिकम्मिय करेति, ते पच सालिअक्खए ववंति, दोच्च पि तच्चं पि
 उक्खय-निहए करेति, वाडिपरिक्खेव करेति, अणुपुव्वेण सारक्खेमाणा
 सगोवेमाणा सवड्ढेमाणा विहरति ॥
१३. तए ण ते साली अणुपुव्वेण सारक्खज्जमाणा सगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा
 साली जाया—किण्हा किण्होभासा^७ •नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा
 सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिक्वा तिक्वोभासा किण्हा किण्हच्छाया
 नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया
 तिक्वा तिक्वच्छाया घण-कडियकडिच्छाया रम्मा महामेह ° निउरंवभूया
 पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

१. सं० पा०—सद्दावेइ जाव त ।

२. ना० १।७।६,७ ।

३. कारणेण त्ति कट्ठु (क, घ) ।

४. ×(क, ग) ।

५. निक्खए (क, ख, ग, घ) ।

६. ×(क, ख ग) ।

७. सगोविति विहरंति (क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—किण्होभासा जाव निउरवभूया ।

- १४ तए ण ते साली पत्तिया वत्तिया^१ गन्भिया पसूइया आगयगघा^२ खीराइया^३ वद्धफला पक्का परियागया सल्लइय^४-पत्तइया 'हरिय-फेरडा'^५ जाया यावि होत्था ।
१५. तए ण ते कोडुविया ते साली पत्तिए^६ •वत्तिए गन्भिए पसूइए आगयगघे खीराइए वद्धफले पक्के परियागए^७ सल्लइय-पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं नवपज्जणएहिं असिएहिं लुणति, लुणित्ता करयलमलिए करेति, करेत्ता पुणति । तत्थ ण चोक्खाण सूइयाण^८ अखडाण अफुडियाण छडछडापूयाण^९ सालीण मागहए पत्थए जाए ॥
- १६ तए ण ते कोडुविया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवति पक्खिवित्ता ओलिपति, ओलिपित्ता लच्छिय-मुद्दिए^{१०} करेति, करेत्ता कोट्टागारस्स एगदेससि^{११} ठावेति, ठावेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा विहरति ॥
- १७ तए ण ते कोडुविया दोच्चसि वासारत्तसि पढमपाउससि महावुट्टिकायसि निवइयसि [समाणसि ?] खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेति, ते साली ववति^{१२}, दोच्चपि उक्खाय-णिहए करेति जाव^{१३} असिएहिं लुणति लुणित्ता^{१४} चलणतल-मलिए करेति करेत्ता पुणति । तत्थ ण^{१५} सालीण वहवे कुडवा^{१६} •जाया ॥
१८. तएण ते कोडुविया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवति, पक्खिवित्ता ओलिपति ओलिपित्ता लच्छिय-मुद्दिए करेति, करेत्ता कोट्टागारस्स^{१७} एगदेससि ठावेति, ठावेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा विहरति ॥
१९. तए ण ते कोडुविया तच्चसि वासारत्तसि महावुट्टिकायसि निवइयसि [समाणसि ?] केयारे^{१८} सुपरिकम्मिए करेति जाव^{१९} असिएहिं लुणति, लुणित्ता सवहति, सवहित्ता खलय करेति, मलेति,^{२०} पुणति । तत्थ ण^{२१} सालीण वहवे कुभा जाया ॥

१. पाठान्तरेण तयावत्ति (वृ) ।

२. आययगघा (वृ) ।

३. क्षीरकिता (वृ) ।

४. सल्लइया (क, ख, ग, घ, वृपा) ।

५. हरिया^० (ख), ^०फेरडा (ग) ।

६. स० पा०—पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए ।

७. सूयाण (घ) ।

८. छड्छड्छडाण पूयाण (क), छड्छड्छडा-पूयाण (ख), छड्छडाभूयाण (ग, वृपा), छड्छड्छड्छडापूयाण (घ) ।

९. मुद्दियाए (क) ।

१०. ०देसम्मि (ग) ।

११. वुप्पति (क, ग), वुपति (ख), वुप्पति (घ) ।

१२. ना० १।७।१२-१५ ।

१३. जाव (क, ख, ग, घ) ।

१४. पू०—ना० १।७।१५ ।

१५. स० पा०—कुडवा जाव एगदेससि ।

१६. केदारे (ख, ग, घ) ।

१७. ना० १।७।१२-१५ ।

१८. मेलित्ति (ख), मेलेति (ग, घ) ।

१९. पू०—ना० १।७।१५ ।

य कोडुवेसु य मतेसु य गुज्जेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपु-
च्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलवणे चक्खू, मेढीभूते
पमाणभूते आहारभूते आलवणभूते चक्खूभूए सव्वकज्जवड्ढावए ।

त 'न नज्जइ' ण मए^१ गयसि वा चुयसि वा मयसि वा भग्गसि वा लुग्गसि वा
सडियसि वा पडियसि वा विदेसत्थसि वा विप्पवसियसि वा इमस्स कुडुवस्स
के मन्ने आहारे वा आलवे वा पडिवघे वा भविस्सइ ?

त सेय खलु मम कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव^२ उट्टियम्मि सूरे सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुल असण पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता
मित्त-नाइ^३-^०नियग-सयण-सवधि-परियण^० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्ग
आमतेत्ता त मित्त-नाइ-नियग^४-^०सयण-संवधि-परियण^० चउण्ह य सुण्हाणं^५
कुलघरवग्ग विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध^६-^०मल्ला-
लकारेण य^० सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ^७-^०नियग-सयण-संवधि-
परियणस्स^० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्ह सुण्हाणं परिक्खण-
ट्टयाए पच-पच सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किह वा सारक्खेइ
वा ? सगोवेइ वा ? सवड्ढेइ वा ? एव सपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए
रयणीए जाव^८ उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते 'विपुलं
असण पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, मित्त-नाइ^९-^०नियग-सयण-संवधि-
परियण^० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्ग आमतेइ^{१०}, तओ पच्छा ण्हाए भोयणमंड-
वसि सुहासणवरगए तेण मित्त-नाइ^{११}-^०नियग-सयण-सवधि-परियणेण^० चउण्ह
य सुण्हाणं कुलघरवग्गेण सद्धिं तं विपुल असण पाणं खाइमं साइमं आसादेमाणे
जाव^{१२} सक्कारेइ, सकारेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ^{१३}-^०नियग-सयण-सवधि-परियणस्स^०
चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता
जेट्ठ सुण्ह उज्झिय^{१४} सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—तुमं ण पुत्ता ! मम

१. × (ख, ग) ।

२. मए त्ति मयि (वृ) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. स० पा०—नाइ^० ।

५. ण्हुसाणं (ख) ।

६. सं० पा०—नियग^० ।

७. ण्हुमाणं (ख, ग) ।

८. म० पा०—गघ जाव सक्कारेत्ता ।

९. स० पा०—नाइ^० ।

१०. ना० १।१।२४ ।

११. सं० पा०—नाइ^० ।

१२. मित्त-नाइ^० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्ग
आमतेइ, विपुल असणं ४ उवक्खडावेइ
(क, ख, ग) ।

१३. स० पा—नाइ^० ।

१४. ना० १।१।२१ ।

१५. स० पा०—नाइ^० ।

१६. उज्झियत्तं (ख); उज्झियत्तं (ग);
उज्झियत्तं (घ) ।

हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी^१ सगोवेमाणी विहराहि । जया ण अहं पुत्ता । तुमं इमे पच सालिअक्खए जाएज्जा, तथा ण तुम मम इमे पच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि^२ त्ति कट्ठु सुण्हाए हत्थे दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ ॥

७ तए ण सा उज्झिया घणस्स तह त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता घणस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हत्ता एगतमवक्कमइ, एगतमवक्कमियाए इमेयारूवे अञ्भत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु तायाणं कोट्टागारसि वहवे पल्ला सालीण पडिपुण्णा चिट्ठति, तं जया ण मम ताओ इमे पच सालिअक्खए जाएसइ^३, तथा^४ णं अह पल्लतराओ अण्णे पच सालिअक्खए गहाय दाहामि^५ त्ति कट्ठु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता ते पच सालिअक्खए एगते एडेइ, सकम्मसजुत्ता जाया यावि होत्था ॥

८ एव भोगवइयाए वि, नवरं—सा छोल्लेइ, छोल्लेत्ता अणुगिलइ, अणुगिलित्ता सकम्मसजुत्ता जाया यावि होत्था ॥

९ एव रक्खियाए वि, नवर—गेण्हइ, गेण्हत्ता एगतमवक्कमइ, एगतमवक्कमियाए इमेयारूवे^६ अञ्भत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था— एवं खलु मम ताओ इमस्स मित्त-नाइ^७-^८नियग-सयण-सवधि-परियणस्स^९ चउण्ह य सुण्हाण कुलघरत्तगस्स पुरओ सदावेत्ता एव वयासी—तुम ण पुत्ता । मम हत्थाओ^{१०} इमे पच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेण सारक्खमाणी सगोवेमाणी विहराहि । जया ण अह पुत्ता ! तुम इमे पच सालिअक्खए जाएज्जा, तथा ण तुम मम इमे पच सालिअक्खए^{११} पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्ठु मम हत्थसि पच सालिअक्खए दलयइ । त भवियव्वमेत्थ कारणेण त्ति कट्ठु एवं सपेहेइ सपेहेत्ता ते पच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे वधइ, वधित्ता रयणकरडियाए पक्खवइ, पक्खवित्ता^{१२} उसीसामूले ठावेइ, ठावेत्ता तिसभ पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

१० तए ण से घणे सत्थवाहे तहेव^{१३} मित्त^{१४}-^{१५}नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणस्स

१. सरक्खमाणी (ग) ।

२. हं (क, ख) ।

३. पडिदिज्जाएज्जासि (क); दलएज्जासि (ग), पडिदेज्जासि (घ) ।

४. जातिसति (ख) ।

५. तता (क) ।

६. देहामि (ख, ग) ।

७. एमेयारूवे (ख) ।

८. स० पा०—नाइ^० ।

९. स० पा०—हत्थाओ जाव पडिनिज्जा एज्जासि ।

१०. पक्खवइ २ मज्जूसाए पक्खवइ २ (क, घ) ।

११. तस्सेव (ख, ग) ।

१२. स० पा०—मित्त जाव चउत्थ ।

चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता °
 चउत्थ रोहिणीय सुण्हं सद्दावेइ, १ •सद्दावेत्ता एव वयासी—तुम णं पुत्ता ! मम
 हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गेण्हाहि, जाव २ गेण्हइ, गेण्हित्ता एगतमवक्कमइ,
 एगतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
 समुप्पज्जित्था—एव खलु मम ताओ इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-
 परियणस्स चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं
 पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेण सारक्खमाणी
 सगोवेमाणी विहराहि । जया ण अह पुत्ता ! तुमं इमे पच सालिअक्खए
 जाएज्जा, तथा ण तुम मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्ठु
 मम हत्थसि पच सालिअक्खए दलयइ ° । तं भवियव्व एत्थ कारणेण ३ । तं सेयं
 खलु मम एए पच सालिअक्खए सारक्खमाणीए सगोवेमाणीए सवड्ढेमाणीए
 त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कुलघर-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
 तुव्वे ण देवाणुप्पिया ! एए पच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता पढमपाउससि
 महावुट्ठिकायसि निवइयसि समाणसि खुड्ढाग केयार सुपरिकम्मिय करेह, करेत्ता
 इमे पच सालिअक्खए वावेह, वावेत्ता दोच्चं पि 'तच्च पि' ४ उक्खय-निहए ५
 करेह, करेत्ता वाडिपक्खेव ६ करेह, करेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा
 अणुपुव्वेण संवड्ढेह ॥

११. तए ण ते कोडुविया रोहिणीए एयमट्ठ पडिसुणेति, ते पच सालिअक्खए गेण्हंति,
 अणुपुव्वेण सारक्खति, संगोव्विति ७ ॥
१२. तए ण कोडुविया पढमपाउससि महावुट्ठिकायसि निवइयसि समाणसि खुड्ढाग
 केयार सुपरिकम्मिय करेति, ते पच सालिअक्खए ववंति, दोच्च पि तच्चं पि
 उक्खय-निहए करेति, वाडिपरिक्खेव करेति, अणुपुव्वेण सारक्खेमाणा
 सगोवेमाणा सवड्ढेमाणा विहरति ॥
१३. तए ण ते साली अणुपुव्वेण सारक्खज्जमाणा सगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा
 साली जाया—किण्हा किण्होभासा ८ •नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा
 सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिव्वा तिव्वोभासा किण्हा किण्हच्छाया
 नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया
 तिव्वा तिव्वच्छाया घण-कडियकडिच्छाया रम्मा महामेह ° निउरवभूया
 पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

१. म० पा०—सद्दावेइ जाव त ।

२. ना० १।७।६,७ ।

३. कारणेण त्ति कट्ठु (क, घ) ।

४. ×(क, ग) ।

५. निक्खए (क, ख, ग, घ) ।

६. ×(क, ख, ग) ।

७. सगोव्विति विहरंति (क, ख, ग, घ) ।

८. स० पा०—किण्होभासा जाव निउरवभूया ।

१४. तए ण ते साली पत्तिया वत्तिया^१ गन्धिया पसूइया आगयगघा^२ खीराइया^३ वद्धफला पक्का परियागया सल्लइय^४-पत्तइया 'हरिय-फेरडा'^५ जाया यावि होत्था ।
- १५ तए ण ते कोडुविया ते साली पत्तिए^६ •वत्तिए गन्धिए पसूइए आगयगघे खीराइए वद्धफले पक्के परियागए^७ सल्लइय-पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहि नवपज्जणएहि असिएहि लुणति, लुणित्ता करयलमलिए करेति, करेत्ता पुणति । तत्थ ण चोवखाण सूइयाण^८ अखडाण अफुडियाण छडछडापूयाण^९ सालीण मागहए पत्थए जाए ॥
- १६ तए ण ते कोडुविया ते साली नवएसु घडएसु पक्खवति पक्खवित्ता ओलिपति, ओलिपित्ता लच्छिय-मुद्दिए^{१०} करेति, करेत्ता कोट्टागारस्स एगदेससि^{११} ठावेति, ठावेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा विहरति ॥
- १७ तए ण ते कोडुविया दोच्चसि वासारत्तसि पढमपाउससि महावुट्टिकायसि निवइयसि [समाणसि ?] खुड्डाग केयार सुपरिकम्मिय करेति, ते साली ववति^{१२}, दोच्चंपि उक्खाय-णिहए करेति जाव^{१३} असिएहि लुणति लुणित्ता^{१४} चलणतल-मलिए करेति करेत्ता पुणति । तत्थ ण^{१५} सालीण बहवे कुडवा^{१६} •जाया ॥
१८. तएण ते कोडुविया ते साली नवएसु घडएसु पक्खवति, पक्खवित्ता ओलिपति ओलिपित्ता लच्छिय-मुद्दिए करेति, करेत्ता कोट्टागारस्स^{१७} एगदेससि ठावेति, ठावेत्ता सारक्खमाणा सगोवेमाणा विहरति ॥
१९. तए ण ते कोडुविया तच्चसि वासारत्तसि महावुट्टिकायसि निवइयसि [समाणसि ?] केयारे^{१८} सुपरिकम्मिए करेति जाव^{१९} असिएहि लुणति, लुणित्ता सवहति, सवहित्ता खलय करेति, मलेति,^{२०} पुणति । तत्थ ण^{२१} सालीण बहवे कुभा जाया ॥

१. पाठान्तरेण तयावत्ति (वृ) ।

२. आययगघा (वृ) ।

३. क्षीरकित्ता (वृ) ।

४. सल्लइया (क, ख, ग, घ, वृपा) ।

५. हरिया^० (ख), ^०पेरुडा (ग) ।

६. सं० पा०—पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए ।

७. सूयाण (घ) ।

८. छड्छड्छडाण पूयाणं (क), छड्छड्छडा-पूयाण (ख), छड्छडाभूयाण (ग, वृपा), छड्छड्छडपूयाण (घ) ।

९. मुद्दियाए (क) ।

१०. ०देसम्मि (ग) ।

११. वुप्पति (क, ग), वुपति (ख), वुप्पति (घ) ।

१२. ना० १।७।१२-१५ ।

१३. जाव (क, ख, ग, घ) ।

१४. पू०—ना० १।७।१५ ।

१५. सं० पा०—कुडवा जाव एगदेससि ।

१६. केदारे (ख, ग, घ) ।

१७. ना० १।७।१२-१५ ।

१८. मेलित्ति (ख), मेलेति (ग, घ) ।

१९. पू०—ना० १।७।१५ ।

२०. तए ण ते कोडुंबिया ते साली कोट्टागारंसि पल्लंसि' •पक्खिंति, पक्खिवित्ता ओल्लिपति, ओल्लिपित्ता लच्छिय-मुट्ठिए करेति, करेत्ता सारक्खमाणा सगोवे माणा^० विहरति ॥
२१. चउत्थे वासारत्ते बहवे कुभसया जाया ॥

परिक्खा-परिणाम-पदं

२२. तए ण तस्स घणस्स पचमयसि सवच्छरसि परिणममाणसि पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था— एव खलु मए इओ अतीते^१ पचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाण परिक्खणट्ठयाए ते पच-पच सालिअक्खया हत्थे दिन्ना । त सेय खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव^२ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते पंच सालिअक्खए परिजाइत्तए^३ जाव^४ जाणामि ताव काए किह सारक्खिया वा सगोविया वा सवड्ढिया वत्ति कट्ठु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव^५ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते विपुल असण^६ •पाण खाइम साइम उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणं चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गं जाव^७ • सम्माणित्ता तस्सेव मित्त-नाइ-
•नियग-सयण-सवधि-परियणस्स^८ • चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठ उज्झिय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु अह पुत्ता ! इओ अतीते पचमम्मि सवच्छरे^९ इमस्स मित्त-^{१०} •नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणस्स^{११} • चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ तव हत्थसि पच सालिअक्खए दलयामि । जया ण अह पुत्ता ! एए पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया ण तुम मम इमे पच सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि^{१२} । से नूण पुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ?

१. सं० पा०—पल्लसि जाव विहरति, घल्लति (क) पल्लति (ख, ग, घ), यद्यपि बहुषु आदर्शेषु 'पल्लति' इति पद विद्यते, किन्तु नैतत् समीचीन प्रतिभाति । यद्येतत् स्वीकृत स्यात् तर्हि जाव शब्दस्य पूर्वोदाहारस्थल नोपलभ्यते 'पल्लति' इति पदस्यार्थोपि नैव सगच्छते । अतएव अस्माभिः 'पल्लसि' इति पद स्वीकृतम् । अम्याधारः (४३) सूत्रे 'पल्ले उन्निदड' इति पाठे उपलभ्यते ।

२. अईए (क) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. परिजातित्तए (ख, ग, घ) ।

५. एव (घ) ।

६. ना० १।१।२४ ।

७. सं० पा०—असणं मित्त-नाइ चउण्ह य सुण्हाण कुलघर जाव सम्माणित्ता ।

८. ना० १।७।६ ।

९. सं० पा०—नाइ^० ।

१०. संवत्सरे (ग) ।

११. सं० पा०—मित्त ।

१२. •निज्जाएसि त्ति कट्ठु (क) ।

हंता अत्थि ।

त णं तुमं पुत्ता ! मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि ॥

२३ तए ण सा उज्झिया एयमट्ठं घणस्स सत्थवाहस्स पडिसुणेइ, जेणेव कोट्टागारं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पल्लाओ पच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव घणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता घण सत्थवाहं एवं वयासी—एए ण ताओ ! पच सालिअक्खए ति कट्ठु घणस्स हत्थसि ते पंच सालिअक्खए दलयइ ॥

२४ तए णं घणे सत्थवाहे उज्झिय सवह-साविय करेइ, करेत्ता एव वयासी—किण्ण पुत्ता ! ते चेव पच सालिअक्खए उदाहु अण्णे ?

२५. तए णं उज्झिया घण सत्थवाहं एव वयासी—एव खलु तुव्भे ताओ ! इओ अतीए पचमे सवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संबधि-परिजणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुम ण पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेण सारक्खमाणी संगोवेमाणी ° विहराहि । तए णह तुव्वं एयमट्ठ पडिसुणेमि, ते पच सालिअक्खए गेण्हामि, एगतमवक्क-मामि ।

तए णं मम इमेयारूवे^१ अज्झत्थिए^२ •चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे ° समुप्प-ज्जित्था—एव खलु ताताणं कोट्टागारसि^३ •वह्वे पल्ला सालीण पडिपुण्णा चिट्ठति, त जया ण मम ताओ इमे पच सालिअक्खए जाएसइ, तथा णं अहं पल्लतराओ अण्णे पच सालिअक्खए गहाय दाहामि ति कट्ठु एव सपेहेमि, सपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए एगते एडेमि, सकम्मसंजुत्ता यावि भवामि ° । त नो खलु ताओ ! ते चेव पच सालिअक्खए, एए ण अण्णे ॥

२६. तए ण से घणे सत्थवाहे उज्झियाए अत्थिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्मा^४ आसुरुत्ते जाव^५ मिसिमिसेमाणे उज्झियं तस्स मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संबधि-परिय-णस्स ° चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छासुज्झियं च 'छाणुज्झियं च'^६ 'कयवरुज्झिय च सपुच्छिय च'^७ सम्मज्जिय च पाओवदाइयं

१ ते (क, ख, ग) ।

२. ×(क) ।

३ स० पा०—नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि ।

४. इमे एयारूवे (क) ।

५ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

६. स० पा०—कोट्टागारसि सकम्मस ।

७. ना० १।१।१६१ ।

८ निसम्म (क्वचित्) ।

९ स० पा०—नाइ ° ।

१० ×(ख), वृत्तावपि नास्तिव्याख्यातम् ।

११ समुक्खिय (वृ), सपुच्छिय (वृपा) ।

- च ण्हाणोवदाइय च बाहिर^१-पेसणकारियं^२ च ठवेइ^३ ॥
- २७ एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गथो वा निग्गथी वा^४ •आयरिय-उवज्झा-याण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं^० पव्वइए, पच य से महव्वयाइ उज्झियाइ भवति, से ण इहभवे चेव बहूण समणाण बहूण समणीणं बहूण सावयाण बहूण सावियाण य हीलणिज्जे जाव^५ चाउरंत-ससार-कतार भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा सा उज्झिया^६ ॥
- २८ एव भोगवइया वि, नवर^७—•छोल्लेमि, छोल्लित्ता अणुगिलेमि, अणुगिलित्ता सकम्मसजुत्ता यावि भवामि । त नो खलु ताओ ! ते चेव पच सालिअक्खए, एए ण अण्णे ।
- २९ तए ण से घणे सत्थवाहे भोगवइयाए अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्मा आसुरुत्ते जाव^८ मिसिमिसेमाणे भोगवइ तस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणस्स चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ^० तस्स कुलघरस्स कडितियं^९ च कोट्टेतिय च पीसतिय च एव—हंधतिय रधतिय परिवेसतिय^{१०} परिभायतिय^{११} अन्धिभतरिय^{१२} पेसणकारि महाणसिणिं ठवेइ ॥
- ३० एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झा-याण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए, पच य से महव्वयाइ फालियाइ^{१३} भवति, से ण इहभवे चेव बहूण समणाणं बहूण समणीणं बहूणं सावयाण बहूण सावियाण य हीलणिज्जे जाव^{१४} चाउरत-ससार-कतार भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व सा भोगवइया ॥
- ३१ एवं रक्खियावि^{१५}, नवर—जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मजूस विहाडेइ, विहाडेत्ता रयणकरडगाओ ते पच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव घणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच सालिअक्खए घणस्स हत्थे दलयइ ॥
- ३२ तए ण से घणे सत्थवाहे रक्खिय एव वयासी—किं ण पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालिअक्खए उदाहु अण्णे ?

१ बाहर (ख) ।

२. पेसणकारि (क, ख) ।

३. ठवेइ (क) ।

४. स० पा०—निग्गथी वा जाव पव्वइए ।

५. ना० १।३।२४ ।

६. उज्झिया (ग, घ) ।

७. स० पा०—नवर तस्स ।

८. ना० १।१।१६१ ।

९. कुडेतिय (ख); कडेतिय (ग), खडेतिय (घ) ।

१०. ०तियं च (ग) ।

११. ०तिय च (ग) ।

१२. ०तरिय च (ग) ।

१३. फाडियाति (घ) फोडियाइं (वव) ।

१४. ना० १।३।२४ ।

१५. रक्खितियावि (ख, ग) ।

३३ तए ण रक्खिया घणं सत्थवाहं एव वयासी—ते चेव ताओ ! एए पच सालि-
अक्खए, नो अण्णे ।

कहण्णं ? पुत्ता !

एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ अतीते पचमे^१ •संवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ-नियग-
सयण-संबधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालि-
अक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता ममं एव वयासी—तुम णं
पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गिण्हाहि, अणुपुव्वेण सारक्खमाणी
सगोवेमाणी विहराहि । जया णं अह पुत्ता ! तुम इमे पच सालिअक्खए
जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि ति
कट्टु मम हत्थसि पच सालिअक्खए दलयह । त^२ भवियव्व एत्थ कारणेणं
ति कट्टु ते पच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे^३ •वधेमि, वधित्ता रयणकरडियाए
पक्खिवेमि, पक्खिवित्ता उसीसामूले ठावेमि, ठावेत्ता^४ तिसभ पडिजागरमाणी
यावि विहरामि । तओ^५ एएण कारणेण ताओ ! ते चेव पच सालिअक्खए,
नो अण्णे ॥

३४. तए णं से घणे सत्थवाहे रक्खियाए^६ अतिय एयमट्टु सोच्चा हट्टुट्टे तस्स कुल-
घरस्स हिरण्णस्स य कस-दूस-विपुल-घण^७—•कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-
सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार^८—सावएज्जस्स^९ य भडागारिणी^{१०} ठवेइ ॥

३५ एवामेव समणाउसो^{११} ! •जो अम्ह निग्गथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झा-
याण अंतिए मूडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए,^{१२} पच य से महव्व-
याइं रक्खियाइं भवति, से ण इहभवे चेव बहूणं समणाण बहूण समणीणं बहूण
सावगाण बहूण सावियाण य अच्चणिज्जे जाव^{१३} चाउरत ससारकतार वीईव-
इस्सइ—जहा व सा रक्खिया ॥

३६ रोहिणीया वि एव चेव, नवर—तुब्भे ताओ ! मम सुवहुयं सगडि-सागडं
दलाह^{१४}, जा ण^{१५} अह तुब्भं ते पच सालिअक्खए पडिनिज्जाएमि ॥

३७. तए णं से घणे सत्थवाहे रोहिणिं^{१६} एव वयासी—कह^{१७} ण तुम^{१८} पुत्ता ! ते पच

१. ताया (ख, ग), ताय (घ) ।

२. स० पा०—पचमे जाव भवियव्व ।

३. स० पा०—वत्थे जाव तिसभ ।

४. ततेण (ख), तते (ग), तं (घ) ।

५. रक्खितियाए (क, ख, ग, घ) ।

६. स० पा०—घण जाव सावएज्जस्स ।

७. सावइज्जस्स (क), सावतेयस्स (ख, ग, घ) ।

८. भडागारिणि (क्व) ।

९. स० पा०—समणाउसो जाव पच ।

१०. ना० १।३।३४ ।

११. दलयाह (घ) ।

१२. जोअण (ख) ।

१३. रोहिणी (क, ख, ग) ।

१४. कह (ग) ।

१५. तुम मम (क, ख, ग)

सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइस्ससि ? ॥

३८. तए ण सा रोहिणी घण सत्थवाह एव वयासी—एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ अतीते पचमे सवच्छरे इमस्स मित्त^१-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरओ पच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता मम सदावेह, सदावेत्ता एव वयासी—तुम णं पुत्ता मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेण सारक्खमाणी सगोवेमाणी विहराहि । जया ण अह पुत्ता ! तुम इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया ण तुम मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि ति कट्टु मम हत्थसि पच सालिअक्खए दलयह । त भवियव्व एत्थ कारणेण । त सेयं खलु मम एए पच सालिअक्खए सारक्खमाणीए सगोवेमाणीए सवड्ढेमाणीए जाव^२ °वह्वे कुभसयाजाया तेणेव कमेण । एव खलु ताओ ! तुब्भे ते पच सालिअक्खए सगडि-सागडेण निज्जाएमि ॥
- ३९ तए णं से घणे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुवहुय सगडि-सागड दलात्ति^३ ॥
- ४० तए ण से रोहिणी सुवहु सगडि-सागड गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्टागारे विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले उव्विभदइ, उव्विभदित्ता सगडि-सागडं भरेइ, भरेत्ता रायगिह नगरं मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव घणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ ॥
४१. तए ण रायगिहे नयरे सिंघाडग^४-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु ° बहुजणो अण्णमण्ण एवमाइक्खइ—घण्णे ण देवाणुप्पिया । घणे सत्थवाहे, जस्स ण रोहिणीया सुण्हा पंच सालिअक्खए 'सगडि-सागडेण'^५ निज्जाएइ ॥
४२. तए ण से घणे सत्थवाहे ते पच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ता हट्टुट्टे^६ पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्त^७-नाइ^८-नियग-सयण-सवधि-परियणस्स ° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ रोहिणीय सुण्ह तस्स कुलघरस्स वहुसु कज्जेसु य^९ °कारणसु य कुडुंवेसु य मतेसु य गुवभेसु य °रहस्सेसु य आपुच्छणिज्ज^{१०} °पडिपुच्छणिज्ज मेढि पमाणं आहार आलवणं चक्खु, मेढीभूय पमाणभूयं आहारभूय आलवणभूय चक्खुभूयं सव्वकज्ज °वड्ढाविय पमाणभूय ठवेइ ।
४३. एवामेव समणाउसो^{११} । °जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उव्वज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए°, पच से महव्वया

१ स० पा०—मित्त जाव वह्वे ।

२ ना० १।७।१०-२१ ।

३ दलयइ (ख) ।

४ सं० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो ।

५ सगडसागडिएण(क), सगडिसागडिएण (ख) ।

६ हट्ट जाव (क, च) ।

७ सं० पा०—नाइ ।

८ स० पा०—कज्जेसु जाव रहस्सेसु ।

९ स० पा०—आपुच्छणिज्ज जाव वड्ढावियं ।

१० स० पा०—आपुच्छणिज्ज जाव वड्ढावियं ।

११ स० पा०—समणाउसो । जाव पच ।

संवड्डिया भवंति, से णं इहभवे चेव बहूण समणाणं बहूण समणीण बहूणं
सावगाण बहूण सावियाण य अच्चणिज्जे जाव' चाउरत ससारकतार वीईवइ-
स्सइ—जहा व सा रोहिणीया ॥

निक्खेव-पद

४४ एवं खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेणं तित्थगरेण जाव'^३
सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपत्तेण सत्तमस्स नायज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।
—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सेट्ठी तह गुरुणो, जह नाइ-जणो तहा समणसघो ।
जह बहुया तह भव्वा, जह सालिकणा तह वयाइं ॥१॥

उज्झिया—

जह सा उज्झियनामा, उज्झियसाली जहत्थमभिहाणा ।
पेसणगारित्तेण, असखदुक्खक्खणी जाया ॥२॥
तह भव्वो जो कोई, सघसमक्ख गुरु-विदिण्णाइ ।
पडिवज्जिउ समुज्झइ, महव्वयाइ महामोहा ॥३॥
सो इह चेव भवम्मि, जणाण धिक्कार-भायण होइ ।
परलोए उ दुहत्तो, नाणा-जोणीसु सचरइ ॥४॥

भोगवती—

जह वा सा भोगवती, जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा ।
पेसणविसेसकारित्तणेण पत्ता दुह चेव ॥५॥
तह जो महव्वयाइ, उवभुजइ जीवियत्ति पालितो ।
आहाराइसु सत्तो, चत्तो सिवसाहणिच्छाए ॥६॥
सो एत्थ जहिच्छाए, पावइ आहारमाइ लिंगित्ता ।
विउसाण नाइपुज्जो, परलोयसी दुही चेव ॥७॥

रक्खिया—

जह वा रक्खियवहुया, रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा ।
परिजणमण्णा जाया, भोगसुहाइ च सपत्ता ॥८॥
तह जो जीवो सम्मं, पडिवज्जित्ता महव्वए पच ।
पालेइ निरइयारे, पमाय-लेसपि वज्जेतो ॥९॥

सो अप्पहिएक्करई, इहलोयम्मि वि ऊर्हि पणयपओ-।
एगंतसुही जायइ, परम्मि मोक्खपि पावेइ ॥१०॥

रोहिणी—

जह रोहिणी उ सुण्हा, रोवियसाली जहत्थमभिहाणा ।
वड्डित्ता सालिकणे, पत्ता सव्वस्स सामित्तं ॥११॥
तह जो भव्वो पाविय, वयाइ पालेइ अप्पणा सम्मं ।
अण्णेसि वि भव्वाण, देइ अणेगेसि हियहेउ ॥१२॥
सो इह सघप्पहाणो, जुगप्पहाणोत्ति लहइ ससइ ।
अप्पपरेसि कल्लाण-कारओ गोयमपहुव्व ॥१३॥
तित्थस्स वुड्डिकारी, अक्खेवणओ कुतित्थियाईणं ।
विउस-नरसेविय-कमो, कमेण सिद्धि पि पावेइ ॥१४॥

अट्ठमं अज्झयणं

मल्ली

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भते । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^१ सपत्तेण सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स ण भते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

बल-राय-पदं

- २ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेण समएणं इहेव जवुद्धीवे दीवे महाविदेहे वासे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण, निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेण, सीओदाए महानदीए दाहिणेणं, सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेण, पच्चत्थिम-लवणसमुद्धस्स पुरत्थिमेण, एत्थ ण सलिलावई^३ नाम विजए पण्णत्ते ॥
- ३ तत्थ ण सलिलावईविजए वीयसोगा नाम रायहाणी^४—नवजोयणवित्थिणा जाव^५ पच्चक्ख देवलोगभूया ॥
- ४ तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए इदकुभे नामं उज्जाणे ॥
- ५ तत्थ ण वीयसोगाए रायहाणीए बले^६ नाम राया । तस्स^६ धारिणीपामोक्ख देवीसहस्स ओरोहे^७ होत्था ॥
- ६ तए ण सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ सीह सुमिणे पासित्ता ण पडिवुद्धा जाव^८ महव्वले दारए जाए—उम्मक्कवालभावे जाव भोगसमत्थे ॥

१. ना० १।१।७ ।

२. नलिणावती (वृषा) ।

३. ०हाणी पण्णत्ता (क, घ) ।

४. ना० १।५।२ ।

५. धीवले (क, ख) ।

६. तस्स ण (क) ।

७. ओरोहो (क) ।

८. भग० ११।१३३-१५६ ।

- ७ तए णं तं महव्वलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरिपामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नासयाण' एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेति । पंच पासायसया । पंचसओ दाओ जाव' माणुस्सए कामभोगे पच्चणुवभवमाणे विहरड ।
- ८ 'तेण कालेण तेणं समएण इंदकुभे उज्जाणे थेरा° समोसढा । परिसा निग्गया । 'वलो वि'° निग्गओ । धम्म सोच्चा निसम्म' •हट्टुट्टे थेरे तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदड नमसड, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि ण भते । निग्गथ पावयणं जाव' नवरं महव्वलं कुमार रज्जे° ठावेमि । तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि ।
- अहासुह देवाणुप्पिया । जाव' एक्कारसंगवी । वहूणि° वासाणि परियाओ । जेणेव चारुपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्त' मासिएणं भत्तेणं सिद्धे ॥

महव्वल-राय-पद

- ९ तए ण सा कमलसिरी अण्णया कयाइ सीह सुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा जाव' । वलभट्ठो कुमारो जाओ । जुवराया यावि होत्था ॥
- १० तस्स ण महव्वलस्स रण्णो इमे 'छप्पि य वालवयंसगा'° रायाणो-होत्था, तं जहा—
- अयले धरणे पूरणे वसू वेसमणे अभिचदे"—सहजायया" •सहवड्ढियया सहपंसु-कीलियया सहदारदरिसी अण्णमण्णमणुरत्तया अण्णमण्णमणुव्वयया अण्णमण्ण-च्छदानुवत्तया अण्णमण्णहियइच्छियकारया अण्णमण्णेषु रज्जेषु किच्चाइं करणिज्जाइ पच्चणुवभवमाणा विहरति ॥
- ११ तए ण तेसिं रायाण अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण समुवागयाण सण्णि-सण्णाण सण्णिविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्णं देवाणुप्पिया ! अम्ह सुह वा दुक्ख वा पवज्जा वा विदेसगमण वा समुप्पज्जइ, तण्ण अम्मेहिं एगयओ° समेच्चा" नित्थरियव्वे त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ट पडिसुणेत्ति ॥

१. °कन्नया° (ग) ।

२ ना० १।१।६१-६३ ।

३ म० पा०—थेरागमण इदकुभे उज्जाणे समोसढा । अमी पाठ (१२) सूत्रेण नियोजितोन्ति ।

४ धीवलो (क) ।

५ म० पा०—निसम्म ज० नवरं महव्वल कुमार रज्जे ठावेमि ।

६. ना० १।१।१०१ ।

७ ना० १।५।८८-१०१ ।

८. पू०—ना० १।५।१०४, १०५ ।

९. भग० १।१।३३-१५६ ।

१०. छप्पिया° (क, ख, ग) ।

११ अभियदे (ख, घ) ।

१२ स० पा०—सहजायया जाव समेच्चा ।

१३. सहिच्चाए (ख, ग, घ) ।

- १२ तेणं कालेणं तेण समएण इदकुभे उज्जाणे थेरा समोसढा । परिस्ता निग्गया । महव्वले ण धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुत्तुं । ज नवर—छप्पि य बालवयसए आपुच्छामि, वलभद् च कुमार रज्जे ठावेमि, जाव^३ ते छप्पि य बालवयसए आपुच्छइ ॥
- १३ तए ण ते छप्पि य बालवयसगा महव्वल राय एव वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया । तुव्वभे पव्वयह, अम्ह के अण्णे आहारे^३ •वा आलवे वा ? अम्हे वि य ण^० पव्वयामो ॥
- १४ तए णं से महव्वले राया ते छप्पि य बालवयसए एवं वयासी—जइ ण तुव्वभे मए सद्धिं^४ पव्वयह, तं^५ गच्छह, जेट्टुत्ते सएहिं-सएहि रज्जेहिं^६ ठावेह, पुरिस-सहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा^७ •समाणा मम अतिय पाउव्वभवह । तेवि तहेव^० पाउव्वभवति ॥
१५. तए ण से महव्वले राया छप्पि य बालवयसए पाउव्वभूए पासइ, पासित्ता हट्टुत्तुं कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ जाव^६ वलभद्स्स अभिसेओ । जाव^६ वलभद् राय आपुच्छइ ॥

महव्वलादीणं पव्वज्जा-पदं

१६. तए ण से महव्वले^{१०} •छहिं बालवयसगेहि सद्धिं^० महया इड्डीए पव्वइए । एक्कारसगवी^{११} । बहूहि चउत्थ^{१२}—•छट्टुट्टम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि अप्पाण^० भावेमाणे विहरइ ॥
१७. तए ण तेसिं महव्वलपामोक्खाण सत्तण्ह अणगाराण अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्ण^{१३} अम्ह देवाणुप्पिया एगे तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरइ, तण्ण अम्हेहि सव्वेहि तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्टु पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता बहूहि चउत्थ^{१४}—•छट्टुट्टम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमास-खमणेहि अप्पाण भावेमाणा^० विहरति ॥

१. पू०—ना० १।५।५७ ।

२. ना० १।५।५७-५९ ।

३. स० पा०—आहारे जाव पव्वयामो ।

४. सद्धिं जाव (क, ख, ग, घ) ।

५. तो ण (क्व०) ।

६. रज्जेहिं रट्टेहिं (ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—दुरूढा जाव पाउव्वभवति ।

८. ना० १।५।६२-६४ ।

९. ना० १।५।६५, ६६ ।

१०. स० पा०—महव्वले जाव महया ।

११. एक्कारसअगाइ (क), एक्कारसअगवी (ख, घ) ।

१२. स० पा०—चउत्थ जाव भावेमाणे ।

१३. जण्ह (ग, घ) ।

१४. सं० पा०—चउत्थ जाव विहरति ।

महब्बलस्स तवविसय-माया-पद

१८ तए ण से महब्बले अणगारे इमेण कारणेण इत्थिनामगोय कम्मं निव्वत्तिसु—
जइ ण ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थ उवसंपज्जिता ण विहरति, तओ
से महब्बले अणगारे छट्ट उवसंपज्जिता ण विहरइ । जइ^१ णं ते महब्बलवज्जा छ
अणगारा छट्ट उवसंपज्जिता ण विहरति, तओ से महब्बले अणगारे अट्टम
उवसंपज्जिता ण विहरइ । एव—अह अट्टम तो दसम, अह दसम तो
दुवालसम । 'इमेहि य'^२ ण वीसाए ण कारणेहि आसेविय-वहुलीकएहि^३ तित्थयर-
नामगोय कम्म निव्वत्तिसु, त जहा—

संगहणी-गाहा

अरहत-सिद्ध-पवयण-गुरु-थेर-बहुस्सुय^४-तवस्सीसु ।
वच्छल्लया य तेसि, अभिक्ख^५ नाणोवओगे य ॥१॥
दसण-विणए आवस्सए य सीलव्वए निरइयारो ।
खणलवतवच्चियाए, वेयावच्चे समाहीए^६ ॥२॥
अपुव्वनाणगहणे, सुयभत्ती पवयण^७-पहावणया ।
एएहि कारणेहि, तित्थयरत्त लहइ 'सो उ'^८ ॥३॥

महब्बलादीणं विविहतवचरण-पदं

१९ तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासिय भिक्खुपडिम उवसंपज्जिता
ण विहरति जाव^९ एगराइय ॥
२०. तए ण ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुडुग 'सीहनिक्कीलिय तवोकम्म'^{१०}
उवसंपज्जिता ण विहरति, त जहा—

चउत्थ करेति, सब्बकामगुणिय पारेति ।
छट्ट करेति, चउत्थ करेति ।
अट्टम करेति, छट्टं करेति ।
दसम करेति, अट्टम करेति ।
दुवालसम करेति, दसम करेति ।
चोद्दसमं करेति, दुवालसम करेति ।

- | | |
|--|----------------------------|
| १. अत्र वर्णविपर्ययेण 'यकार' स्थाने इकारो जात । मृदूच्चारणार्थं वर्णविपर्ययो लभ्यते आपर्वाक्येषु । | ५. समाही य (क, ख, ग, घ) । |
| २. इमेहि च (क) । | ६. पवयणे (क, ख, ग, घ) । |
| ३. बहुस्सुए (क, ख, ग, घ) । | ७. जीवो (वृ), एसो (वृपा) । |
| ४. अत्र अनुन्वारलोपः । | ८. ना० १।१।१६८ । |
| | ९. ° लियत्तवोकम्म (ख) । |

सोलसम करेति, चोद्दसमं करेति ।
 अट्टारसम करेति, सोलसम करेति ।
 वीसइम करेति, सोलसम करेति ।
 अट्टारसम करेति, चोद्दसम करेति ।
 सोलसम करेति, दुवालसमं करेति ।
 चोद्दसम करेति, दसम करेति ।
 दुवालसम करेति, अट्टम करेति ।
 दसम करेति, छट्टु करेति ।
 अट्टम करेति, चउत्थ करेति ।

छट्टु करेति, चउत्थ करेति, करेत्ता सव्वत्थ सव्वकामगुणिएण पारेति ।

एव खलु एसा खुड्डागसीहनिककीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहिं सत्तहिं य अहोरत्तेहिं अहासुत्त जाव' आराहिया भवइ ॥

२१. तयाणतर दोच्चाए परिवाडीए चउत्थ करेति, नवर—विगइवज्ज' पारेति ॥
२२. एवं तच्चा वि परिवाडी, नवर—पारणए अलेवाड पारेति ॥
२३. एवं चउत्था वि परिवाडी, नवर—पारणए आयविलेण पारेति ॥
२४. तए ण ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डाग सीहनिककीलिय तवोकम्म दोहिं सवच्छरेहिं अट्टवीसाए अहोरत्तेहिं अहासुत्त जाव' आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामो ण भते ! महालय सीहनिककीलिय तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।
 तहेव जहां खुड्डाग, नवर—चोत्तीसइमाओ नियत्तइ । एगाए परिवाडीए कालो एगेण सवच्छरेण छहिं मासेहिं अट्टारसहिं य अहोरत्तेहिं समप्पेइ' । सव्वपि [महालय ?] सीहनिककीलिय छहिं वासेहिं दोहिं मासेहिं बारसहिं य अहोरत्तेहिं समप्पेइ ॥
२५. तए ण ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा महालय सीहनिककीलिय अहासुत्त जाव' आराहित्ता जेणेव थेरे भगवते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता वहूणि चउत्थ'-●छट्टुट्टम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणा ° विहरति ॥

१. ठा० ७।१३ ।

२. विगति ° (ख), विगय (घ) ।

३. ठा० ७।१३ ।

४. पू०—ना० १।५।२० ।

५. समप्पइ (क) ।

६. ठा० ७।१३ ।

७. स० पा०—चउत्थ जाव विहरति ।

समाहिमरण-पद

२६ तए ण ते महव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा तेण उरालेण' तवोकम्मेषं सुक्का भुक्खा निम्मसा किडिकिडियाभूया अट्टिचम्मावणद्धा किंसा धमणिसतया जाया या वि होत्था । जहा खदओ^१ नवर—थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वय सणिय-सणिय दुरुहति जाव^२ दोमासियाए सलेहणाए अप्पाण भोसेत्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेएत्ता, चतुरासीइ वाससयसहस्साइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, चुलसीइ पुव्वसयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता जयते विमाणे देवत्ताए उववण्णा । तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण वत्तीसं सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता । तत्थ ण महव्वलवज्जाण छण्ह देवाण देसूणाइ वत्तीस सागरोवमाइं ठिई । महव्वलस्स देवस्स य पडिपुण्णाइ वत्तीस सागरोवमाइं ठिई^३ ॥

पच्चायाति-पदं

२७ तए ण ते महव्वलवज्जा छप्पि देवा जयताओ देवलोगाओ आउक्खएण 'भवक्खएण ठित्तिक्खएण'^४ अणतर चय चइत्ता इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवसेसु^५ रायकुलेसु पत्तेय-पत्तेय कुमारत्ताए पच्चायाया, तं जहा—
पडिबुद्धी इक्खागराया,
चंदच्छाए अगराया,
सखे कासिराया,
रूपी कुणालाहिवई,
अदीणसत्तू कुरुराया,
जियसत्तू पंचालाहिवई ॥

२८ तए ण से महव्वले देवे तिहिं नार्णेहिं समग्गे 'उच्चट्टाणगएसु गहेसु'^६, सोमासु दिसासु वित्तिमिरासु विसुद्धामु, जइएसु^७ सउणेषु, पयाहिणाणुकूलंसि भूमि-सप्पिसि मारुयसि पवायसि, निप्फण्ण-सस्स-मेइणीयसि कालसि पमुइय-पक्कीलिएसु^८ जणवएसु अद्धरत्तकालसमयसि अस्सिणीनक्खत्तेण जोगमुवागएणं जे से 'हेमताण चउत्थे मासे अट्टमे पक्खे, तस्स ण फग्गुणसुद्धस्स'^९ चउत्थीपक्खेण जयताओ विमाणाओ वत्तीसं सागरोवमठिइयाओ अणतर चय चइत्ता इहेव

१. पू०—ना० १।१।२०२ ।

२. भग० २।१६४-६८, इहैव यथा मेघकुमारो वर्णित (१।१।२०३-२०६) ।

३. ना० १।१।२०६-२०८ ।

४. ठिई पण्णत्ता (क, ख, घ) ।

५. ठित्तिक्खएण भवक्खएण (ख, ग, घ) ।

६. पित्तिमात्ति० (ख, ग, घ) ।

७. ०गएसु गहेसु (घ) ।

८. जइत्तेसु गहेसु (क, ख, ग, घ) ।

९. पक्कीलिएसु (ख) ।

१०. वाचनान्तरेषु—गिम्हाण पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेतसुद्धे तस्स ण चेतसुद्धस्स (वृ) ।

जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुभस्स^१ रण्णो पभावतीए देवीए कुच्छिसि आहारवक्कतीए भववक्कतीए सरीरवक्कतीए गव्वत्ताए वक्कते ॥

२६ ^१ज रयणिं च ण महव्वले देवे पभावतीए देवीए कुच्छिसि गव्वत्ताए वक्कते, त रयणिं च ण सा पभावती देवी^२ चोद्दस महासुमिणे पासित्ता ण पडिबुद्धा^३ । भत्तार-कहण । सुमिणपाढगपुच्छा^४ जाव^५ •विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी^६ विहरइ ॥

३०. तए ण तीसे पभावईए देवीए तिण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण इमेयारूवे डोहले पाउव्वभूए—घण्णाओ ण 'ताओ अम्मयाओ'^७ जाओ ण जल-थलय-भासर^८-प्पभूएण दसद्ववण्णेण मल्लेण अत्थुय-पच्चत्थुयसि सयणिज्जसि सणिणसण्णाओ निवण्णाओ^९ य विहरति, एग च मह सिरिदामगड पाडल-मल्लिय-चपग-असोग-पुन्नाग-नाग-मरुयग-दमणग-अणोज्जकोज्जय^{१०}-पउर परमसुहफास^{११} दरिसणिज्ज महया गधद्वणि मुयत अग्घायमाणीओ^{१२} डोहल विणेति ॥

३१ तए ण तीसे^{१३} पभावईए इम एयारूव डोहल पाउव्वभूय पासित्ता अहासणिहिया वाणमतरा देवा खिप्पामेव जल-थलय^{१४} - •भासरप्पभूय दसद्ववण्णं^{१५} मल्ल कुभगसो य भारगसो य कुभस्स^{१६} रण्णो भवणसि साहरति, एग च ण मह सिरिदामगड जाव^{१७} गधद्वणि मुयत उवणेति ॥

३२ तए णं सा पभावई देवी जल-थलय^{१८} - •भासरप्पभूएण दसद्ववण्णेण^{१९} मल्लेण^{२०} दोहल विणेइ ॥

३३ तए ण सा पभावई देवी पसत्थदोहला^{२१} •सम्माणियदोहला विणीयदोहला सपुण्णदोहला सपत्तदोहला विउलाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ पच्चणुभवमाणी^{२२} विहरइ ॥

१ कुभगस्स (क, ख, ग) ।

२. स० पा०—त रयणिं च ण चोद्दसमहासु-
मिणा वण्णओ ।

३ पू० कप्पो० सू० ४ ।

४. पू०—कप्पो० सू० ३ ।

५. स० पा०—सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ ।

६ ना० १।१।१६-३२ ।

७ तातो अम्मयातो (ख) ।

८. पभासुर (ख, ग) ।

९ सयणुवण्णाओ (क, ग), सयणुवण्णातो
(ख, घ) ।

१०. ०कुज्जय (क) ।

११. ०सुह (ग, घ) ।

१२ आघाय० (क) ।

१३. तीए (ख, ग, घ) ।

१४ स० पा०—थलय जाव दसद्ववण्ण ।

१५ कुभगस्स (ख) ।

१६ ना० १।ना३० ।

१७ स० पा०—थलय जाव मल्लेण ।

१८. पू०—ना० १।ना३० ।

१९ स० पा०—पसत्थदोहला जाव विहरइ ।

- ३४ तए ण सा पभावई देवी नवण्हं मासाण [वहुपडिपुण्णाणं ?] अद्धट्टमाण य राइदियाण [वीइक्कंताणं ?] जे से हेमंताण पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिर-सुद्धे, तस्स णं एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अस्सिणीनक्खत्तेण [जोगमुवागएण ?] उच्चट्टाणगएसु गहेसु जाव' पमुइय-पक्कीलिएसु जणवएसु आरोगारोग' एगूणवीसइम तित्थयर पयाया ॥
३५. तेण कालेण तेणं समएणं अहेलोगवत्थव्वाओ अट्टु दिसाकुमारीमहयरियाओ जहा जंबुद्वीवपण्णत्तीए' जम्मणुस्सव', नवर—मिहिलाए कुभस्स पभावईए अभिलाओ सजोएयव्वो जाव नदीसरवरदीवे महिमा ॥
३६. तथा ण कुभए राया व्हूहिं भवणवइ'-●वाणमतर-जोइस-वेमाणिएहिं देवेहिं तित्थयर-जम्मणाभिसेयमहिमाए कयाए समाणीए पच्चूसकालसमयंसि नगर-गुत्तिए सद्दावेइ° जायकम्मं जाव' नामकरणं—जम्हा' ण अम्ह इमीसे' दारियाए माऊए मल्लसयणिज्जसि डोहले विणीए, तं होउ णं [अम्ह दारिया ?] नामेण मल्ली' ॥
- ३७ '●तए ण सा मल्ली पच्चघाईपरिक्खत्ता जाव'' सुहसुहेणं परिवड्डई° ॥

१. ना०—१।५।२५ ।

२. आरोगारोग (ग) ।

३. वक्ष° ५ ।

४ जम्मण सव्व (क, ख, ग, घ) । अत्र 'जम्मण सव्व' अस्य पाठस्थार्थो नैव सगति गच्छति । वृत्तिकृता—'जन्मवक्तव्यता सर्वा वाच्या' इति विवृतम्, किन्तु नात्र विवरणानु-सारी पाठोस्ति । अत्र 'जम्मणुस्सव' इति पाठ स्वाभाविक स्यात् । जंबुद्वीपप्रज्ञप्त्यामपि 'जम्मणमहिमं करेति' इति पाठो लभ्यते । अमो 'जम्मणुस्सव' इति पाठस्य पुष्टि करोति । लिपिदोषेण पाठविपर्ययो जातः इति कल्पना नात्रास्वाभाविकी ।

५ सं० पा०—भवणवइ° तित्थयर° ।

६ कप्पो° महावीर जन्म प्रहरण ।

७. जहा (न, घ) ।

८ इमीए (क, ख, ग, घ); अत्र पण्ठ्यन्त

सा वड्डई भगवई, दियलोयचुया अणोवमसिरीया ।

दासीदासपरिवुडा,

परिकिण्णा

पीढमद्देहि ॥१॥

पदमस्ति तेन 'इमासे' इति पद युज्यते ।

६ मल्ली २ (क) ।

१०. सं० पा०—जहा महव्वले जाव परिवड्डइया । अत्र पूर्णपाठावलोकनार्थं महावलस्य सकेतः कृतोस्ति । तस्य वर्णनं भगवत्या (११।११) विद्यते । तत्राप्यादर्शेषु 'जहा दढपइण्णे' इति समर्पणमस्ति, तेनास्माभिरसौ पाठः दृढप्रतिज्ञप्रकरणादेव पूरितः । अतोऽत्रे आदर्शेषु निम्नलिखित गाथाद्वयं प्राप्यते, किन्तु एतत् प्रक्षिप्तमस्ति । वृत्तिकारेणापि सूचितमिदं, यथा—'सा वड्डई भगवई' इत्यादि गाथाद्वय आवश्यक-नियुक्तिसवधिऋषभमहावीरवर्णकरूप बहु-विशेषणसाधर्म्यादिहाघीतम्, न पुनर्गाथा-द्वयोक्तानि विशेषणानि सर्वाणि मल्लि-जिनस्य घटन्ते । तेनास्माभिः नैतत् मूलपाठे स्वीकृतम् । तच्च गाथाद्वयमिदम्—

- ३८ तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना उम्मुक्कवालभावा' •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता° रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य अईव-अईव उक्किट्टा उक्किट्टसरीरा जाया यावि होत्था ॥
३९. तए णं सा मल्ली देसूणवाससयजाया ते 'छप्पि य रायाणो'^१ विउलेण ओहिणा आभोएमाणी-आभोएमाणी विहरइ, त जहा—पडिबुद्धि' •इक्खागरायं, चदच्छाय अग्राय, सखं कासिरायं, रुप्पि कुणालाहिवइं, अदीणसत्तु कुरुराय ° जियसत्तु पचालाहिवइ ॥

मल्लिस्स मोहणघर-निम्माण-पदं

४० तए ण सा मल्ली कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया । असोगवणियाए एगं मह मोहणघर करेह—अणेगखभसय-सण्णिविट्टु' । तस्स ण मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गवभघरए करेह । तेसि णं गवभघरगाणं बहुमज्झदेसभाए जालघरय करेह । तस्स ण जालघरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढिय' करेह' । •एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह । तेवि तहेव ° पच्चप्पिणति ॥

असियसिरया सुनयणा, विवोट्टी धवलदत्तपतीया ।

वरकमलकोमलगी, फुल्लुप्पलगघनीसासा ॥२॥

वृत्तिकारेण स्थाने-स्थाने अनयोः पाठभेदा उल्लिखिता ।

आवश्यकनियुक्तौ भगवतो ऋषभस्य वर्णने इदं गाथाद्वयमित्यमस्ति—

अह वड्डइ सो भयव, दिवलोगचुतो य अणुवमसिरीओ ।

देवगणसपरिवुडो, नदाए सुमगला-सहितो ॥१८७॥

असियसिरतो सुनयणो, विवोट्टो धवलदत्तपतीओ ।

वरपउमगवभगोरो, फुल्लुप्पलगघनीसासो ॥१८८॥

भगवतो महावीरस्य वर्णने तद् गाथाद्वयमित्यमस्ति—

अह वड्डइ सो भयव, दिवलोगचुओ अणुवमसिरीओ ।

दासोदासपरिवुडो, परिकिण्णो पीढमदेहि ॥६६॥

असियसिरओ सुनयणो, विवोट्टो धवलदत्तपतीओ ।

वरपउमगवभगोरो, फुल्लुप्पलगघनीसासो ॥७०॥

११. राय० सू० ८०४ ।

१. स० पा० —उम्मुक्कवालभावा जाव'रूवेण ।

२ छप्पिया० (क), छप्पि० (ख, घ) १२ ३

३ म० पा० —पडिबुद्धि जाव जियसत्तु म ० ।

- ४१ तए ण सा मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसिय सरित्तयं सरिव्वयं सरिस-
लावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेय कणगामइं^१ मत्थयच्छिड्डुं पउमुप्पल^२-पिहाण
पडिम करेइ, करेत्ता ज विउल असण-पाण-खाइम-साइमं आहारेइ, तओ
मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ कल्लाकल्लि एगमेगं पिंड गहाय
तीसे कणगामइए मत्थयच्छिड्डाए^३ •पउमुप्पल-पिहाणाए^४ पडिमाए मत्थयंसि
पक्खिवमाणी-पक्खिवमाणी विहरइ ॥
४२. तए ण तीसे कणगामइए मत्थयच्छिड्डाए^५ •पउमुप्पल-पिहाणाए^६ पडिमाए
एगमेगसि पिंडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे तओ गवे पाउव्वभवेइ, से जहाणामए
—अहिमडे इ वा^७ •गोमडे इ वा सुण्हमडे इ वा मज्जारमडे इ वा मणुस्समडे इ
वा महिसमडे इ वा मूसगमडे इ वा आसमडे इ वा हत्थिमडे इ वा सीहमडे इ वा
वरघमडे इ वा विगमडे इ वा दीविगमडे इ वा । मय-कुहिय-विणट्ट-दुरभिवा-
वण्ण-दुट्ठिभगवे किमिजालाउलसंसत्ते असुइ-विलीण-विगय-वीभत्सदरिसणिज्जे
भवेयारूवे सिया ?
नो इणट्टे समट्टे । एत्तो अणिट्टतराए चेव अकततराए चेव अप्पियतराए चेव
अमणुण्णतराए चेव^८ अमणामतराए चेव ॥

पडिवुद्धिराय-पदं

४३. तेण कालेणं तेण समएणं कोसला नामं जणवए । तत्थ णं सागेए नाम नयरे ।
४४ तस्स ण उत्तरपुरत्थिमे^९ दिसीभाए, एत्थ ण महेगे नागघरए होत्था—दिव्वे
सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय-पाडिहेरे ॥
४५ तत्थ ण सागेए नयरे पडिवुद्धी नाम इक्खागराया परिवसइ । पउमावई देवी ।
सुवुद्धी अमच्चे साम-दड^{१०}-•भेय-उवप्पयाण-नोत्ति-मुपउत्त-नय-विहण्णू
विहरई ० ॥
४६. तए ण पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ नागजण्णए यावि होत्था ॥
४७. तए ण सा पउमावई देवी नागजण्णमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिवुद्धी^{११} •राया
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसण्ह सिरसावत्त मत्थए

१. कणगामय (ग) ।

२. पउमुप्पल्ल (ख, ग, घ) ।

३. स० पा०—मत्थयच्छिड्डाए जाव पडिमाए ।

४. स० पा०—कणगामइए जाव मत्थयच्छिड्डाए ।
अय जाव शब्दस्य प्रयोगोऽशुद्धोऽस्ति । असौ
उपन्तितमृत्रवत् 'मत्थयच्छिड्डाए जाव
पडिमाए' एव युज्यते ।

५. गविण (क); गंवि (ग, घ) ।

६. सं० पा०—अहिमडे इ वा जाव अणिट्टतराए
अमणामतराए ।

७. उत्तरपुरत्थिमे णं (ख, ग) ।

८. स० पा०—साम दड० । असौ अपूर्णं. पाठः
'जाव' आदिपूर्तिमकेतरहितोऽस्ति ।

९. पू०—ना० १।१।१६ ।

१०. स० पा०—पडिवुद्धी० करयल० ।

अंजलिं कट्टु जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता° एव वयासी—एवं खलु सामी ! मम कल्ल नागजण्णए भविस्सइ । त इच्छामि ण सामी ! तुव्भेहि अव्वभणुण्णाया समाणी नागजण्णयं गमित्तए । तुव्भे वि ण सामी ! मम नागजण्णयंसि समोसरह ॥

४८. तए ण पडिवुद्धी पउमावईए एयमट्टु पडिसुणेइ ॥

४९. तए ण पउमावई पडिवुद्धिणा रण्णा अव्वभणुण्णाया समाणी हट्टुट्टा कोडुविय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मम कल्ल नागजण्णं भविस्सइ, त तुव्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दावेत्ता एव वदाह—एवं खलु पउमावईए देवीए कल्ल नागजण्णए भविस्सइ, तं तुव्भे ण देवाणुप्पिया ! जल-थलय'-●भासरप्पभूय° दसद्धवण्णं मल्ल नागघरयसि साहरह, एग च ण मह सिरिदामगड उवणेह ।

तए ण जल-थलय'-●भासरप्पभूएण° दसद्धवण्णेण मल्लेण नाणाविह-भत्ति-सुविरइय हस-मिय-मयूर-कोंच-सारस-चक्काय'-मयणसाल-कोइल-कुलोववेय ईहामिय'-●उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किंनर-रु-सरभ-चमर-कुजर-वणलय-पउमलय°-भत्तिचित्तं महगघ महरिह विउल पुप्फमडव विरएह । तस्स ण वहमज्जभदेसभाए एग मह सिरिदामगड जाव' गघद्धणिं मुयत उल्लोयसि ओलएह, पउमावइ देविं पडिवालेमाणा चिट्ठह ॥

५०. तए ण ते कोडुविया जाव' पउमावतिं देविं पडिवालेमाणा चिट्ठति ॥

५१. तए ण सा पउमावई देवी कल्ल' ●पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते° कोडुविए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेय नयर सन्निभतरवाहिरिय आसिय-सम्मज्जिओवलित्त जाव' गघवट्ठिभूय करेह, कारवेह य, एयमाणत्तिय पच्चपिणह । ते वि तहेव पच्चपिणति ॥

५२. तए ण सा पउमावई देवी दोच्चपि कोडुविय'-●पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त जाव' धम्मिय जाणप्पवर उवट्टवेह । ते वि तहेव° उवट्टवेति ॥

१. स० पा०—थलय° ।

२. स० पा०—थलय° ।

३ चक्काय (क) ।

४ स० पा०—ईहामिय जाव भत्तिचित्त ।

५. ना० १।५।३० ।

६. ना० १।५।४९ ।

७. स० पा०—कल्ल° ।

८. ना० १।१।२४ ।

९. ना० १।१।३३ ।

१०. स० पा०—कोडुविय जाव खिप्पामेव लहुकरणजुत्त जाव जुत्तामेव उवट्टवेति ।

११. उवा० १।४७ ।

५३. तए ण सा पउमावई देवी अतो अतेउरसि ण्हाया जाव' धम्मियं जाणं दुख्खा ॥
५४. तए ण सा पउमावई देवी नियग-परियाल-संपरिवुडा सागेय नयरं मज्झमज्झेण निज्जाइ', जेणेव पोक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोक्खरणि ओगाहति, ओगाहित्ता जलमज्जण करेइ जाव' परमसुइभूया उल्लपडसाडया जाइं तत्थ उप्पलाइ जाव' ताइ' गेण्हइ, जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
५५. तए ण पउमावईए देवीए दासचेडीओ वहूओ पुप्फपडलग-हत्थगयाओ धूवकड-च्छुय-हत्थगयाओ पिट्टुओ समणुगच्छति ॥
५६. तए ण पउमावई देवी सव्विड्डीए जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता नागघरं अणुप्पविसइ, लोमहत्थग परामुसइ जाव' धूव ड्हइ, पडिवुद्धिं पडिवालेमाणी-पडिवालेमाणी चिट्ठइ ॥
- ५७ तए ण से पडिवुद्धी ण्हाए' हत्थिखधवरगए सकोरेट' मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण ° सेयवरचामराहि वीइज्जमाणे ह्य-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महया भड-चडगर-रह-पहकर-विदपरि-क्खित्ते सागेय नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आलोए पणाम करेइ, करेत्ता पुप्फमडव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता पासइ त एग मह सिरिदामगड ॥
५८. तए ण पडिवुद्धी त सिरिदामगड सुचिर' काल निरिक्खइ । तसि सिरिदाम-गडसि जायविम्हए सुवुद्धि अमच्च एवं वयासी—तुमं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेण वहूणि गामागर जाव'° सण्णिवेसाइं आहिंडसि, वहूण य राईसर जाव'' सत्थवाहपभिईणं गिहाइ अणुप्पविससि, त अत्थि ण तुमे कहिचि एरिसए सिरिदामगडे दिट्ठपुव्वे, जारिसए ण इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगडे ?
५९. तए ण सुवुद्धी पडिवुद्धि रायं एव वयासी—एव खलु सामी ! अह अण्णया कयाइ'' तुव्वम दोच्चेण मिहिलं रायहाणि गए । तत्थ ण मए कुभयस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए सवच्छर-पडिलेहणगसि दिव्वे

१. ना० १।१।६५ ।

२. नियाड (क, ख), निग्गच्छइ (घ) ।

३. ४. ना० १।२।१४ ।

५. तत्थ (क, ख, ग, घ) एतत् अशुद्ध प्रति-भाति ।

६. ना० १।२।१४ ।

७. पू०—ना० १।१।६६ ।

८. स० पा०—सकोरेट जाव सेयवर० ।

९. सुइरं (क, ख, ग) ।

१०. ना० १।१।११८ ।

११. ना० १।५।६ ।

१२. कयाइ (ग) ।

सिरिदामगडे दिट्ठपुण्वे । तस्स णं सिरिदामगडस्स इमे पउमावईए देवीए
सिरिदामगडे सयसहस्सइमपि कलं न अग्घइ ॥

- ६० तए ण पडिवुद्धी सुवुद्धिं अमच्च एव वयासी—केरिसिया ण देवाणुप्पिया ।
मल्ली विदेहरायवरकन्ना, जस्स' णं सवच्छर-पडिलेहणयसि सिरिदामगडस्स
पउमावईए देवीए सिरिदामगडे सयसहस्सइमपि कल न अग्घइ ?
- ६१ तए ण सुवुद्धी पडिवुद्धिं इक्खागराय एव वयासी—एव खलु सामी । मल्ली
विदेहरायवरकन्ना सुपडिट्ठियकुम्मुण्णय-चारुचरणा जाव' पडिरूवा ॥
- ६२ तए ण पडिवुद्धी सुवुद्धिस्स अमच्चस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म सिरिदाम-
गड-जणियहासे' द्वय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छाहि ण तुम
देवाणुप्पिया ! मिहिल रायहाणि । तत्थ ण कुभगस्स रण्णो धूय पभावईए
अत्तय' मल्लि विदेहरायवरकन्ना' मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य ण सा
सय रज्जसुका ॥
- ६३ तए ण से द्दए पडिवुद्धिणा रण्णा एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता
जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
चाउग्घट आसरह पडिकप्पावेइ, पडिकप्पावेत्ता दुरूढे हय-नय'-•रह-पवर-
जोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे° महया भड-चडगरेण
साएयाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव विदेहजणवए" जेणेव मिहिला
रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

चंदच्छाय-राय-पदं

- ६४ तेणं कालेण तेण समएण अगनाम' जणवए होत्था । तत्थ ण चपा नाम नयरी
होत्था । तत्थ ण चपाए नयरीए चदच्छाए अगाराया होत्था । तत्थ ण चपाए
नयरीए अरहण्णगपामोक्खा बहवे सजत्ता-नावावाणियगा परिवसत्ति—अड्ढा
जाव' बहुजणस्स अपरिभूया ॥
- ६५ तए ण से अरहण्णगे समणोवासए यावि होत्था—अहिगयजीवाजीवे वण्णओ" ॥
- ६६ तए ण तेसि अरहण्णगपामोक्खाणं सजत्ता-नावावाणियगाण अण्णया कयाइ
एगयओ सहियाण इमेयारूवे मिहोकहा समुल्लावे" समुप्पज्जित्था—सेय खलु

१. अत्र पुस्त्वनिर्देश मल्ल्या. तीर्थंकरत्वेन
कृत स्यात् ?

२. वण्णओ० (क, ख, ग, घ), जीवाजीवा-
भिगमपडिवत्ती ३ ।

३. °हरिसे (क, ख) ।

४. अत्तिय (क, ख, ग, घ) ।

५. °कल्लय (क, ख) ।

६. स० पा०—गय० ।

७. विदेहा० (क, ख) ।

८. अगा० (क, ख, ग) ।

९. ना० १।५।७ ।

१०. ना० १।५।४७ ।

११. सलावे (ख, ग, घ) ।

अम्ह गणिम च धरिमं च मेज्ज च पारिच्छेज्ज च भडगं गहाय लवणसमुदं
 पोयवहणेणं ओगाहित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमदुं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता
 गणिम च धरिम च मेज्ज च पारिच्छेज्ज च भडग गेण्हति, गेण्हित्ता सगडी-
 सागडयं सज्जेति, सज्जेत्ता गणिमस्स धरिमस्स मेज्जस्स पारिच्छेज्जस्स य
 भंडगस्स सगडी-सागडिय भरेति, भरेत्ता सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्त-
 मुहुत्तसि विउलं असणं पाण खाइमं साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता
 मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण भोयणवेलाए भुजावेति^१, भुजावेत्ता
 मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण ° आपुच्छति, आपुच्छित्ता सगडी-
 सागडिय जोयति, जोइत्ता चपाए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्ग-
 च्छित्ता जेणेव गभीरए^२ पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगडी-
 सागडिय मोयति, पोयवहण सज्जेति, सज्जेत्ता गणिमस्स^३ धरिमस्स मेज्जस्स
 पारिच्छेज्जस्स य ° भडगस्स [पोयवहण ?] भरेति, तदुलाण य समियस्स
 य तेल्लस्स य घयस्स य गुलस्स य गोरसस्स य उदगस्स य भायणाणं^४ य
 ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्टुस्स य आवरणाण य पहरणाण
 य अण्णेसि च वहूण पोयवहणपाउगाण दव्वाण पोयवहण भरेति । सोहणसि
 तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तसि विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेति,
 उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणं भोयणवेलाए भुजावेति,
 भुजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणं आपुच्छति, जेणेव पोयट्टाणे
 तेणेव उवागच्छति ॥

६७. तए ण तेसि अरहण्णग^५ पामोक्खाण वहूण सजत्ता-नावा ° वाणियगाण^६
 ° मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि °-परियणा ताहि इट्ठाहि^७ ° कताहि पियाहि
 मणुणाहि मणामाहि ओरालाहि ° वग्गूहि अभिनदता य अभिसथुणमाणा
 य एव वयासी—अज्जू ! ताय ! भाय ! माउल ! भाइणेज्ज ! भगवया
 समुद्वेण अभिरक्खज्जमाणा-अभिरक्खज्जमाणा चिर जीवह, भद्द च भे,
 पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे नियग घर हव्वमागए पासामो त्ति कट्टु
 ताहि सोमाहि निद्धाहि दीहाहि सप्पिवासाहि पप्पुयाहि दिट्ठीहि निरिक्खमाणा
 मुहुत्तमेत्त सच्चिट्ठति । तओ समाणिएसु पुप्फवलिकम्मेषु, दिन्नेसु सरस-रत्त-
 चदण-दहर-पचगुलितलेसु, अणुक्खत्तसि धूवसि, पूइएसु^८ समुद्वेएसु,

१. स० पा०—भुजावेति जाव आपुच्छति ।

२. गभीर (ग, घ) ।

३. स० पा०—गणिमस्स जाव चउव्विहभडगस्स ।

४. भायणस्स (घ) ।

५. सं० पा०—अरहण्णग जाव वाणियगाण ।

६. सं० पा०—वाणियगाण जाव परियणा ।

७. सं० पा०—इट्ठाहि जाव वग्गूहि ।

८. पूतिएसु (ख); पूइत्तेसु (ग, घ) ।

ससारियासु^१ वलयासु^२, ऊसिएसु सिएसु भयग्नेसु, पड्डुप्पवाइएसु तूरेसु^३
जइएसु^४ सव्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु महया उक्किट्टु-सीहनाय^५-
•वोल-कलकल^० रवेण पक्खुभियमहासमुद्द-रवभूय पिव मेइणि करेमाणा
एगदिसि^६ •एगाभिमुहा अरहण्णगपामोक्खा सजत्ता-नावा^० वाणियगा नावाए
दुरूढा ॥

६८. तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु—हं भो ! 'सव्वेसिमेव भे'^७ अत्थसिद्धी, उवट्टियाइ
कल्लाणाइ, पडिहयाइ सव्वपावाइ, 'जुत्तो पूसो,'^८ विजओ मुहुत्तो 'अयं
देसकालो'^९ ॥

६९. ताओ पुस्समाणवेण^{१०} वक्कमुदाहिए^{११} हट्टुट्टा 'कण्णधार-कुच्छिधार'^{१२} गब्भिज्ज-
सजत्ता-नावावाणियगा वावारिसु, त नाव पुण्णुच्छग^{१३} पुण्णमुहिं वधणेहिंतो
मुच्चति ॥

७०. तए ण सा नावा विमुक्कवधणा पवणवल-समाहया ऊसियसिया विततपक्खा
इव गरुलजुवई गगासलिल-तिक्ख-सोयवेगेहिं 'सखुव्वभाणी-सखुव्वभाणी'^{१४}
उम्मी-तरग-मालासहस्साइ समइच्छमाणी-समइच्छमाणी कइवएहिं अहोरत्तेहिं
लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढा ॥

७१. तए णं तेसि अरहण्णगपामोक्खाण सजत्ता-नावावाणियगाण लवणसमुद्द अणेगाइ
जोयणसयाइ ओगाढाण समाणाण वहुइ उप्पाइयसयाइ पाउव्भूयाइ, त जहा—
अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्वे अविभक्खण-अविभक्खण
आगासे देवयाओ नच्चति ॥

७२. ^{१५}तए ण ते अरहण्णगवज्जा सजत्ता-नावावाणियगा एग^{१६} च ण मह तालपिसाय

१. सचारियासु (क) ।

२. वलयवाहामु (क), वलयवाहामु (ग, घ) ।

३. भूतेसु (ग) ।

४. जतिएसु (ख), जइतेसु (ग, घ) ।

५. स० पा०—सीहनाय जाव रवेण ।

६. स० पा०—एगदिसि जाव वाणियगा ।

७. सव्वेसामवि (क, ख, ग, घ) ।

८. इहावसरे इति गम्यते (वृ) ।

९. एप प्रस्तावो गमनस्येति गम्यते ।

१०. ०माणएण (ख, ग, घ) ।

११. ०मुदाहरिए (क, घ) ।

१२. कुच्छिधारकण्णधार (ख, ग, घ) ।

१३. पुण्णत्थग (ख) ।

१४. सवुज्जभाणी २ (क, ख, ग, घ) ।

१५. अत्र द्वयोर्वाचनयो समिश्रण जातमस्ति ।

वृत्तिकारस्य सम्मुखे असौ मिश्रितपाठ
एवादर्शेषु लिखित आसीत्, तेन वृत्तिकृता
द्वयोः सर्गतिं स्थापयितुं प्रयत्नं कृतं, यथा—
तत्रार्हन्नकवर्जा यत् कुर्वन्ति तत् दर्शयितु-
मुक्तमेव पिशाचस्वरूपं सविशेषं तेषां
तद्दर्शनं चानुवदन्नाह—तए णमित्यादि.
ततस्ते अर्हन्नकवर्जा सायात्रिका पिशाचरूपं
वक्ष्यमाणविशेषणं पश्यन्ति (वृ) ।

वृत्तिकारेण वैकल्पिकरूपेण 'तएण ते अरहण्णग
वज्जा' इति सूत्राश वाचनान्तरत्वेन स्वीकृतम्,
यथा—अथवा 'तएण ते 'अरहण्णगवज्जा'

पासति—तालजघ दिवंगयाहिं वाहाहिं फुट्टसिर भमर-निगर-वरमासरासि-
महिसकालग भरिय-मेहवण सुप्पणह फाल-सरिस-जीह लवोट्टं धवलवट्ट-
असिलिट्ट-तिक्ख-थिर-पीण-कुडिल-दाढोवगूढवयण विकोसिय-धारासिजुयल-
समसरिस-तणुय - चचल - गलतरसलोल - चवल-फुरुफुरेत - निल्लालियगगीह
अवयत्थिय' -महल्ल-विगय-बीभच्छ-लालपगलत-रत्ततालुय हिंगुलय-सगव्भ-
कदरविल व अजणगिरिस्स अग्गिज्जालुग्गिलतवयण^१ आऊसिय^२-अक्खचम्म-
उड्डुगडदेस^३ चीण-चिमिढ-वक-भग्गनास रोसागय-धमधमेत^४-मारुय-निट्ठुर-
खर-फरुसभुसिर ओभुग्ग-नासियपुड घाडुव्भड^५-रइय-भीसणमुह उद्धमुहकण्ण-
सक्कुलिय-महतविगय-लोम-सखालग^६-लंबत-चलियकण्ण पिंगल-दिप्पतलोयण
'भिरडिड-तडिनिडाल'^७ नरसिरमाल-परिणद्धिचिध विचित्तगोणस-सुवद्धपरिकरं
अवहोलत-फुप्फुयायत^८-सप्प - विच्छुय-गोधुदुर^९-नउल- सरड-विरइय-विचित्त-
वेयच्छमालियाग भोगकूर-कण्हसप्प-धमधमेत-लवतकण्णपूर मज्जार-सियाल-
लइयखध दित्त-घुघुयत^{१०}-घूय-कय-भुभरसिर^{११}, घटारवेण भीम-भयकर कायर-

इत्यादि गमान्तर 'आगासे देवयाओ नच्चति'
इतोन्नतर द्रष्टव्यम्, अतएव वाचनान्तरे
नेदमुपलभ्यते चैवम् 'अभिमुह आवयमाण
पासति' (वृ) ।

प्रथमवाचनापाठे कोपि कर्ता नास्ति
अतोस्माभि द्वितीयवाचनापाठे मूले
स्वीकृत । प्रथमवाचना पाठ इत्यमस्ति—
'एग च ण मह पिसायरूव पासति—
तालजघ दिवगयाहिं वाहाहिं मसि-मूसग-
महिस-कालग भरिय-मेहवण लवोट्ट
निगयग्गदत निल्लालिय-जमल-जुयल-जीह
आऊसिय-[आघूसिय (ख); आघूसिय,
आपूमिय (वृपा) ।] वयण-गडदेस चीण-
चिमिढ-[चिविड (क); चमड (घ) ।]
नासिय विगय-भुग्ग-[भुग्ग-भग्ग (क, वृपा) ।]
भुमय [भमय (ख) ।] खज्जोयग-दित्त-
चक्खुराग [वाचनान्तरे - विगय - भग्ग
भुमय - पहसिय - पयलिय - पडिय-फुल्लिग-
एज्जोय-चक्खुराग ।] उत्तासणग विसालवच्छं
विसालकुच्छि पलवकुच्छि पहसिय-पयलिय-

पयडियगत्त [पडियगत्त (क, ख, ग) ।]
पणच्चमाण अपफोडत अभिवगत
अभिगज्जत बहुसो-बहुसो य अट्टट्टहासे
विणिम्मयत नीलुप्पल-गवल-गुलिय-[गुडिय
(ख) ।] अयसिकुसुमप्पगास खुरधार असि
गहाय अभिमुहमावयमाण पासति ।

१६. एव (क) ।

१. अवत्थिय (वृपा) ।

२. अग्गिजालो^० (क), अग्गिजालु^० (ख) ।

३. आवूसिय^० (वृपा) ।

४. उट्ट^० (ख, ग) ।

५. धम्मधमेत (ख) ।

६. घोडुव्भड (ख) ।

७. सखालग (वृपा) ।

८. भिरडितनिडाल (वृपा) ।

९. पुप्फया^० (क, ख, ग, घ) ।

१०. गोधुदुर (ग, घ) ।

११. घुघुयत (ख) ।

१२. भुभल^० (क, ग); सुभल^० (ख) ।

एकस्मिन् वृत्तगदर्शे 'सुभल' इति लभ्यते ।
कुतल (क्व) ।

जणहिययफोडण दित्तं अट्टट्टहासं विणिम्मुयत, वसा-रुहिर-पूय-मस-मल-मलिण-पोच्चडतणु उत्तासणय विसालवच्छ पेच्छता भिन्ननख-मुह-नयण-कण्ण वरवग्घ-चित्त-कत्ती-णियसण सरस-रुहिर-गयचम्म-वियय-ऊसविय-वाहुजुयल ताहि य खर-फरुस-असिणिद्ध-दित्त-अणिट्ट-असुभ-अप्पिय^१-अकत-वग्गूहि य तज्जयतं—त तालपिसायरूव एज्जमाण पासति, पासित्ता भीया^२ •तत्था तसिया उव्विग्गा^३ सजायभया अण्णमण्णस्स काय समतुरगेमाणा-समतुरगेमाणा वहूण इदाण य खदाण^४ य रुदाण य सिवाण य वेसमणाण य नागाण य भूयाण य जक्खाण य अज्ज-कोट्टिकिरियाण^५ य वहूणि उवाइयसयाणि उवाइमाणा चिट्ठति ॥

७३ तए णं से अरहण्णए समणोवासए त दिव्व पिसायरूव एज्जमाण पासइ, पासित्ता अभीए अतत्थे अचलिए असभते अणाउले अणुव्विग्गे अभिण्णमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे पोयवहणस्स एगदेससि वत्थतेण भूमि पमज्जइ, पमज्जित्ता ठाण ठाइ, ठाइत्ता, करयल^६—परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अंजलि कट्टु^७ एवं वयासि—नमोत्थु ण अरहताण भगवताण जाव^८ सिद्धिगइनामघेज्ज ठाण सपत्ताण । जइ ण ह एत्तो उवसग्गाओ मुचामि तो मे कप्पइ पारित्तए, अह ण एत्तो उवसग्गाओ न मुचामि तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वे ति कट्टु सागार भत्त पच्चक्खाइ ॥

७४ तए ण से पिसायरूवे जेणेव अरहण्णगे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहण्णग एव वयासी—हभो अरहण्णगा ! अपत्थियपत्थया^९ ! •दुरत-पत-लक्खणा ! हीणपुण्ण-चाउद्दिसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति^{१०}—परिवज्जिया ! नो खलु कप्पइ तव सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ चालित्तए वा खोभित्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्जित्तए वा परिच्चइत्तए वा । त जइ ण तुम सील-व्वयं—गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ न चालेसि न खोभेसि न खडेसि व भजेसि न उज्जसि^{१०} न परिच्चयसि, तो ते अह एय पोयवहण दोहि अगुलियाहिं^{१०} गेण्हामि, गेण्हित्ता सत्तट्टतलप्पमाणमेत्ताइ उड्ढ वेहास उव्विहामि अतो जलसि

१. अप्पियअमण्णुण (क, घ) ।

२. तज्जयत पासति (क, ख, ग, घ) ।

३. स० पा०—भीया सजायभया ।

४. कोटिकिरियाण (क) ।

५. स० पा०—करयल^० ।

६. ओ० सू० २१ ।

७. अपत्थियपत्थिया (ग, घ, वृपा), स० पा—
अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया ।

८. वा एव (क, खं, ग, घ) ।

९. स० पा०—सीलव्वय जाव न परिच्चयसि ।

१०. अगुलीहिं (ग) ।

अवक्कमामि' उत्तरवेउव्विय रूव विउव्वामि, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए^१
 देवगईए^२ जेणेव लवणसमुट्ठे जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता
 देवाणुप्पियस्स उवसग्ग करेमि, नो चेव ण देवाणुप्पिए भीए^३ •तत्थे चलिए सभते
 आउले उव्विग्गे भिण्णमुहराग-नयणवण्णे दीणविमणमाणसे जाए ° । तं ज णं
 सक्के देविदे देवराया एव वयइ, सच्चे ण एसमट्ठे । त दिट्ठे ण देवाणुप्पियस्स
 इड्डी^४ •जुई जसो वल वीरिय पुरिसकार°-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।
 त खामेमि ण देवाणुप्पिया । खमेसु ण देवाणुप्पिया । खतुमरिहसि ण देवाणु-
 प्पिया ! नाइ भुज्जो एवकरणयाए त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं
 विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेइ, अरहण्णगस्स य दुवे कुडलजुयले दलयइ, दलइत्ता
 जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

८० तए ण से अरहण्णए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ ॥

८१. तए ण ते अरहण्णगपामोक्खा^५ •सजत्ता-नावा°वाणियगा दक्खिणाणुकूलेण
 वाएण जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोय लंवेति,
 लवेत्ता सगडि°-सागड सज्जेति, तं गणिम धरिम मेज्ज परिच्छेज्जं च सगडि-
 सागड सकामेति, सकामेत्ता सगडि-सागडं जोविति^६ जोवित्ता जेणेव मिहिला
 तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए वहिया अग्गुज्जाणंसि
 सगडि-सागड मोएति, मोएत्ता महत्थं महग्घ महरिह विउलं रायारिहं पाहुड
 दिव्व कुंडलजुयलं च गेण्हति, गेण्हित्ता [मिहिलाए रायहाणीए^७ ?] अणुप्प-
 विसति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुभए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता
 करयलं^८ •परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अर्जलि कट्टु° महत्थं^९ •महग्घ मह-
 रिह विउल रायारिह पाहुड° दिव्व कुंडलजुयल च उवणेति ॥

८२ तए ण कुभए राया तेसि संजत्ता^{१०} •नावावाणियगाणं तं महत्थं महग्घ महरिहं
 विउलं रायारिह पाहुड दिव्व कुंडलजुयल च° पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लि
 विदेहवररायकन्न सदावेइ, सदावेत्ता त दिव्व कुंडलजुयलं मल्लीए विदेह-
 रायकन्नगाए पिणद्धेइ, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१. २, ३ पू०—राय सू० १० ।

४. म० पा०—भीया वा ।

५. स० पा०—इड्डी जाव परक्कमे ।

६. म० पा०—पामोक्खा जाव वाणियगा ।

७. सगड (ग, घ) ।

८. जोएनि (क) ।

९. 'क' प्रती अमी पाठ 'महत्थं' अत प्राग्

लिखितो लभ्यते, किन्तु वस्तुतः कोष्ठक-
 स्थाने युज्यते । अन्यादर्शेषु नासी
 लब्धोस्ति ।

१०. स० पा०—करयल° ।

११. स० पा०—महत्थं° ।

१२. सं० पा०—सजत्तगाणं जाव पडिच्छइ ।

८३. तए णं से कुंभए राया ते अरहण्णगपामोक्खे' •संजत्ता-नावा°वाणियगे विपुलेणं वत्थ-गध°-मल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता° उस्सुक्क वियरइ, वियरित्ता रायमग्गमोगाढे य आवासे वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ॥
८४. तए णं अरहण्णग'•पामोक्खा संजत्ता-नावावाणियगा° जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भडववहरणं करेति, पडिभडे गेण्हति, गेण्हित्ता सगडी-सागड भरेति, भरेत्ता जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहण सज्जेति, सज्जेत्ता भड सकामेति, संकामेत्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव चपाए पोयट्टाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोय लवेति, लवेत्ता सगडी-सागड सज्जेति, सज्जेत्ता त गणिम धरिम मेज्जं परिच्छेज्जं च सगडी-सागड सकामेति, सकामेत्ता' •सगडि-सागड जोविंति, जोवित्ता जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चपाए रायहाणीए वहिया अग्गुज्जाणसि सगडि-सागड मोएति, मोएत्ता महत्थ महग्घ महरिह विडल रायारिह° पाहुड दिव्व च कुडलजुयल गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव चदच्छाए अंगराया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता त महत्थ' •महग्घ महरिह विडल रायारिहं पाहुड दिव्व च कुडलजुयल° उवणेति ॥
८५. तए णं चदच्छाए अंगराया त महत्थ' पाहुड दिव्व च कुडलजुयल पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते अरहण्णगपामोक्खे एव वयासी—तुव्भे ण देवाणुप्पिया! वहूणि गामागर जाव' सण्णिवेसाइ आहिडह, लवणसमुद्दं च अभिक्खण-अभिक्खणं पोयवहणेहि अोगाहेह, त अत्थियाइ भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठुपुव्वे ?
८६. तए ण ते अरहण्णगपामोक्खा चदच्छाय अंगराय एव वयासी—एव खलु सामी ! अम्हे इहेव चपाए नयरीए अरहण्णगपामोक्खा वहवे सजत्तगा-नावा-वाणियगा परिवसामो । तए ण अम्हे अण्णया कयाइ गणिम च धरिम च मेज्ज च परिच्छेज्ज च गेण्हामो तहेव अहीण-अइरित्त जाव' कुभगस्स रण्णो उवणेमो । तए ण से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए त दिव्व कुडलजुयल पिणद्धेइ', पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ । तं एस ण सामी ! अम्हेहि कुभगरायभवणसि

१. सं० पा०—°पामोक्खे जाव वाणियगे ।

२. सं० पा०—गध जाव उस्सुक्क ।

३. सं० पा०—अरहन्ग सजत्तगा ।

४ भंडग° (ग) ।

५ सं० पा०—सकामेत्ता जाव महत्थ पाहुड ।

६. सं० पा०—महत्थ जाव उवणेति ।

७. पू०—ना० १।८।८१ ।

८. ना० १।१।११८ ।

९. ना० १।८।६४-८२ ।

१०. पिणद्धेइ (ख); पिणिवेइ (क) ।

निव्वोलेमि^१, जेण^२ तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

७५ तए ण से अरहण्णगे समणोवासए त देव मणसा चेव एव वयासी—अह ण देवाणुप्पिया ! अरहण्णए नाम^३ समणोवासए अहिगयजीवाजीवे । नो खलु अह सक्के केणइ देवेण वा^४ •दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्तरेण वा किपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधवेण वा^५ निगगथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुमं ण जां सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव^६ अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्फदे^७ तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

७६ तए ण से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णग समणोवासगं दोच्चपि तच्चपि एवं वयासी—हभो अरहण्णगा ! जाव^८ धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

७७ तए ण से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णग धम्मज्झाणोवगय पासइ, पासित्ता वलियतराग आसुरत्ते त पोयवहणं दोहि अगुलियाहि गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्टतलं-
•प्पमाणमेत्ताइ उड्ड वेहास उव्विहइ, उव्विहित्ता^९ अरहण्णग एवं वयासी—
हभो अरहण्णगा ! अपत्थियपत्थया^{१०} ! नो खलु कप्पइ तव सील-व्वय^{११}-
•गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ चालित्तए वा खोभित्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा । तं जइ ण तुमं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ न चालेसि न खोभेसि न खंडेसि न भजेसि न उज्झसि न परिच्चयसि, तो ते अह एय पोयवहणं अतो जलंसि निव्वोलेमि, जेण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

७८ तए ण से अरहण्णगे समणोवासए तं देव मणसा चेव एवं वयासी—अह ण देवाणुप्पिया ! अरहण्णए नाम समणोवासए—अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्तरेण वा किपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधवेण वा निगगथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुम ण जा सद्धा त करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव^{१२} अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्फदे

१. निच्चोल्लेमि (क) ।

२. जाण (क, ग, घ) ।

३. × (ग) ।

४. सं० पा०—देवेण वा जाव निगगथाओ ।

५. जाव (ख, ग, घ) अशुद्ध प्रतिभाति ।

६. ना० १।८।७३ ।

७. निप्फंदे (ख) ।

८. ना० १।८।७४, ७५ ।

९. सं० पा०—सत्तट्टतलाइं जाव अरहण्णग ।

१०. पू०—ना० १।८।७४ ।

११. सं० पा०—सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए ।

१२. ना० १।८।७३ ।

तुसिणीए ° धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।

७६. तए ण से पिसायरूवे अरहण्णग जाहे नो सचाएइ निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे सते' •तते परितते ° निव्विण्णे त पोयवहण सणिय-सणिय उवरिं जलस्स ठवेइ, ठवेत्ता त दिव्व पिसायरूव पडिसाहरेइ, पडिसाहरेत्ता दिव्व देवरूव विउव्वइ^१—अंतलिकख-पडिवन्ते सखिखिणीयाइ दसद्धवण्णाइ वत्थाइ पवर परिहिए अरहण्णग समणोवासग एवं वयासी—ह भो अरहण्णगा ! समणोवासया ! धन्नेसि ण तुम देवाणुप्पिया' ! •पुण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! कयत्थेसि ण तुम देवाणु-प्पिया ! कयलक्खणेसि ण तुमं देवाणुप्पिया ! सुलद्धे ण तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्म ° जीवियफले, जस्स ण तव निग्गथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।

एव खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूण देवाण मज्झगए महया-महया सद्देण एव आइक्खइ, एवं भासेइ, एव पण्णवेइ, एव परूवेइ—एव खलु देवा ! जबुद्धीवे दीवे भारहे वासे चपाए नयरीए अरहण्णए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे । नो खलु सक्के^२ केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गधव्वेण वा निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए^३ •वा खोभित्तए वा ° विपरिणामित्तए वा । तए ण अह देवाणुप्पिया ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो नो एयमट्ठ सद्दहामि, पत्तियामि रोएमि । तए ण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए^४ •चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पजित्था °— गच्छामि ण अह अरहण्णगस्स अतिय पाउव्वभवामि, जाणामि ताव अह अरहण्णग—किं पियधम्मे नो पियधम्मे ? दढधम्मे नो दढधम्मे ? सील-व्वय-गुण^५—वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ किं चालेइ नो चालेइ ? खोभेइ नो खोभेइ ? खडेइ नो खडेइ ? भजेइ नो भजेइ ? उज्झइ नो उज्झइ ? परिच्चयइ ° नो परिच्चयइ त्ति कट्टु एव सपेहेमि, सपेहेत्ता ओहिं पउजामि, पउजित्ता देवाणुप्पिय ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग

१. स० पा०—सते जाव निव्विण्णे । तहेव सते जाव निव्विणे (क, ख, ग, घ) ।

२. पू०—उवा ° २।४० ।

३. स० पा०—देवाणुप्पिया जाव जीवियफले ।

४. सक्का (क, ख, ग, घ) ।

५. स० पा०—चालित्तए जाव विपरिणामित्तए ।

६. स० पा०—अज्झत्थिए ° ।

७. स० पा०—गुणे • किं चालेइ जाव नो परिच्चयइ ।

अवक्कमामि' उत्तरवेउव्विय रूवं विउव्वामि, विउव्वित्ता ताए उक्किट्टाए^१
 देवगईए^२ जेणेव लवणसमुद्धे जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता
 देवाणुप्पियस्स उवसग्ग करेमि, नो चेव ण देवाणुप्पिए भीए^३ •तत्थे चलिए सभते
 आउले उव्विग्गे भिण्णमुहराग-नयणवण्णे दीणविमणमाणसे जाए^४ । त ज ण
 सक्के देविदे देवराया एव वयइ, सच्चे ण एसमट्टे । त दिट्ठे ण देवाणुप्पियस्स
 इड्डी^५ •जुई जसो वल वीरिय पुरिसकार^६ -परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।
 त खामेमि ण देवाणुप्पिया । खमेसु ण देवाणुप्पिया । खतुमरिहसि ण देवाणु-
 प्पिया । नाइ भुज्जो एवकरणयाए त्ति कट्टु पजलिउडे पायवडिए एयमट्ट
 विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेइ, अरहण्णगस्स य दुवे कुडलजुयले दलयइ, दलइत्ता
 जामेव दिंसि पाउव्वभूए तामेव दिंसि पडिगए ॥

८० तए ण से अरहण्णए निरुवसग्गमित्ति कट्टु पडिम पारेइ ॥

८१. तए ण ते अरहण्णगपामोक्खा^७ •सजत्ता-नावा^८ वाणियगा दक्खिणाणुकूलेण
 वाएण जेणेव गभीरए पोयट्टाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोय लंवेति,
 लवेत्ता सगडि^९-सागड सज्जेति, त गणिम घरिम मेज्ज परिच्छेज्ज च सगडि-
 सागडं सकामेति, सकामेत्ता सगडि-सागडं जोविति^{१०} जोवित्ता जेणेव मिहिला
 तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए वहिया अग्गुज्जाणसि
 सगडि-सागड मोएति, मोएत्ता महत्थ महग्घ महरिह विउलं रायारिह पाहुडं
 दिव्व कुडलजुयल च गेण्हति, गेण्हित्ता [मिहिलाए रायहाणीए^{११}?] अणुप्प-
 विसति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुभए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता
 करयल^{१२} •परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु^{१३} महत्थ^{१४} •महग्घं मह-
 रिह विउल रायारिह पाहुड^{१५} दिव्व कुडलजुयल च उवणेति ॥

८२ तए ण कुभए राया तेसि संजत्ता^{१६} -नावावाणियगाण त महत्थ महग्घं महरिह
 विउल रायारिह पाहुड दिव्व कुडलजुयलं च^{१७} पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लि
 विदेहवररायकन्न सद्दावेइ, सद्दावेत्ता त दिव्व कुडलजुयलं मल्लीए विदेह-
 रायकन्नगाए पिणद्धेइ, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१. २, ३ पू०—राय सू० १० ।

४. स० पा०—भीया वा ०० ।

५. स० पा०—इड्डी जाव परकम्मे ।

६. स० पा०—पामोक्खा जाव वाणियगा ।

७. सगड (ग, घ) ।

८. जोएति (क) ।

९. 'क' प्रती असौ पाठ 'महत्थ' अत प्राग्

लिखितो लभ्यते, किन्तु वस्तुतः कोष्ठक-
 स्थाने युज्यते । अन्यादर्शेषु नासौ
 लब्धोस्ति ।

१०. स० पा०—करयल० ।

११. स० पा०—महत्थ० ।

१२. स० पा०—सजत्तगाणं जाव पडिच्छइ ।

८३. तए ण से कुभए राया ते अरहण्णगपामोक्खे^१ •संजत्ता-नावा^० वाणियगे विपुलेणं वत्थ-गध^२ •मल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता^० उस्सुक्क वियरइ, वियरित्ता रायमग्गमोगाढे य आवासे वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ॥
८४. तए ण अरहण्णग^३ •पामोक्खा सजत्ता-नावावाणियगा^० जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भडववहरणं^४ करेति, पडिभडे गेण्हति, गेण्हित्ता सगडी-सागड भरेति, भरेत्ता जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहणं सज्जेति, सज्जेत्ता भड सकामेति, सकामेत्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव चपाए पोयट्टाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोय लवेति, लवेत्ता सगडी-सागड सज्जेति, सज्जेत्ता त गणिम धरिम मेज्ज परिच्छेज्जं च सगडी-सागड सकामेति, सकामेत्ता^५ •सगडि-सागड जोविंति, जोवित्ता जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चपाए रायहाणीए वहिया अग्गुज्जाणसि सगडि-सागड मोएति, मोएत्ता महत्थ महग्घ महरिहं विउल रायारिहं^० पाहुड दिव्व च कुडलजुयल गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव चदच्छाए अगाराया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता त महत्थ^६ •महग्घ महरिह विउल रायारिह पाहुड दिव्व च कुडलजुयल^० उवणेति ॥
८५. तए ण चदच्छाए अगाराया त महत्थ^७ पाहुड दिव्व च कुडलजुयल पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते अरहण्णगपामोक्खे एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव^८ सण्णिवेसाइ आहिंडह, लवणसमुद्दं च अभिक्खण-अभिक्खण पोयवहणेहि ओगाहेह, त अत्थियाइ भे केइ कहिंत्ति अच्छेए दिट्ठुपुव्वे ?
८६. तए ण ते अरहण्णगपामोक्खा चदच्छाय अगाराय एव वयासी—एव खलु सामी ! अम्हे इहेव चपाए नयरीए अरहण्णगपामोक्खा बहवे सजत्तगा-नावा-वाणियगा परिवसामो । तए ण अम्हे अण्णया कयाइ गणिम च धरिम च मेज्ज च परिच्छेज्जं च गेण्हामो तहेव अहीण-अइरित्तं जाव^९ कुभगस्स रण्णो उवणेमो । तए ण से कुभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए त दिव्व कुडलजुयल पिणद्धेइ^{१०}, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ । त एस ण सामी ! अम्हेहि कुभगरायभवणसि

१. सं० पा०—•पामोक्खे जाव वाणियगे ।

२. सं० पा०—गध जाव उस्सुक्क ।

३. सं० पा०—अरहन्तग सजत्तगा ।

४ भंडग^० (ग) ।

५ सं० पा०—सकामेत्ता जाव महत्थ पाहुड ।

६. सं० पा०—महत्थ जाव उवणेति ।

७. पू०—ना० १।८।८१ ।

८. ना० १।१।११८ ।

९. ना० १।८।६४-८२ ।

१०. पिणद्धेइ (ख), पिण्णवेइ (क) ।

मल्ली विदेहरायवरकन्ना अच्छेरए दिट्ठे । तं नो खलु अण्णा कावि तारिसिया देवकन्ना वा^१ असुरकन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा रायकन्ना वा^० जारिसिया णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ॥

८७ तए ण चदच्छाए अरहण्णगपामोक्खे^२ सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ॥

८८. तए ण चंदच्छाए वाणियग-जणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— जाव^३ मल्लि विदेहरायवरकन्न् मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुका^४ ॥

८९. तए ण से दूए चदच्छाएण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव^५ पहारेत्य गमणाए ॥

रुप्पि-राय-पदं

९०. तेण कालेण तेण समएण कुणाला नाम जणवए होत्था । तत्थ णं सावत्थी नाम नयरी होत्था । तत्थ ण रुप्पी कुणालाहिवई नाम राया होत्था । तस्स ण रुप्पिस्स धूया धारिणीए देवीए अत्तया सुवाहू नाम दारिया होत्था—सुकुमाल-पाणिपाया^६ रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

९१. तीसे ण सुवाहूए दारियाए अण्णया चाउम्मासिय-मज्जणए जाए यावि होत्था ॥

९२. तए ण से रुप्पी कुणालाहिवई सुवाहूए दारियाए चाउम्मासिय-मज्जणयं उवट्ठिय जाणइ, जाणित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया । सुवाहूए दारियाए कल्ल चाउम्मासिय-मज्जणए भविस्सइ, त तुव्वे ण रायमग्गमोगाढसि चउक्कंसि^७ जल-थलय-दसद्धवण्ण मल्ल साहरह^८ •जाव^९ एग मह सिरिदामगड^{१०} गधद्धणिं मुयत उल्लोयसि ओलएह । ते वि तहेव^० ओलयति^{११} ॥

९३ तए ण से रुप्पी कुणालाहिवई सुवण्णगार-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । रायमग्गमोगाढसि पुप्फमडवसि नाणाविहपंच-वण्णेहिं तदुलेहिं नगर आलिहह् तस्स बहुमज्जभदेसभाए पट्टयं रएह, एयमाण-त्तिय पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणति ॥

१. स० पा०—देवकन्ना वा जाव जारिसिया ।
देवकन्नागा (क, ख, ग, घ) ।

२. पामोक्खा (क, ख, घ) ।

३. ना० १।८।६२ ।

४. ०सुक्का (घ) ।

५. ना० १।८।६३ ।

६. पू०—ना० १।१।१७ ।

७. मंडवसि (क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—साहरह जाव ओलयति ।

९. ना० १।८।४८ ।

१०. पू०—ना० १।८।३० ।

११. ओलेति (क) ।

६४. तए ण से रूपी कुणालाहिवई हत्थिखंधवरगए चाउरगिणीए सेणाए महया भड'-●चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते ° अतेउर-परियाल-सपरिवुडे सुवाहुं दारियं पुरओ कट्ट जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमडवे^१ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमडवे अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिसण्णे ॥
- ६५ तए ण ताओ अतेउरियाओ सुवाहु दारिय पट्टयसि दुरुहेति^२, दुरुहेत्ता सेयापीयएहिं^३ कलमेहिं ष्हाणेति, ष्हाणेत्ता सब्वालकारविभूसिय^४ करेति, करेत्ता पिउणो पायवदिय उवणेति ॥
६६. तए ण सुवाहु दारिया जेणेव रूपी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायगहण^५ करेइ ॥
- ६७ तए णं से रूपी राया सुवाहुं दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता सुवाहुए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए वरिसधर सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुम ण देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेण बहूणि गामागर-नगर^६ ●जाव^७ सणिवेसाइ आहिंडसि, बहूण य राईसर जाव^८ सत्थवाहपभिईण ° गिहाणि अणुप्पविससि, तं अत्थियाइ ते कस्सइ रण्णो वा ईसरस्स वा कहिंच्चि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमीसे सुवाहुए दारियाए मज्जणए ?
- ६८ तए ण से वरिसधरे रुप्पि राय करयल^९—●परिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अर्जलि कट्टु एव वयासी—एव खलु सामी ! अह अण्णया तुव्वभ दोच्चेण मिहिल गए । तत्थ ण मए कुभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायवरकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे । तस्स ण मज्जणगस्स इमे सुवाहुए दारियाए मज्जणए सयसहस्सइमपि कल न अग्घइ ॥
- ६९ तए ण से रूपी राया वरिसधरस्स अतिय एयमट्ट सोच्चा निसम्म मज्जणग-जणिय-हासे^{१०} दूय सद्दावेइ^{११}, ●सद्दावेत्ता एवं वयासी—जाव^{१२} मल्लि विदेहराय-वरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य ण सा सय रज्जसुका ॥

१ स० पा०—भड*** ।

२. °मडव (क) ।

३ दुरुहति (ग घ) ।

४ सेयावीयएहिं (क) ।

५ °भूसिय (क, ख) ।

६ पायगहण (क) ।

७ स० पा०—नगर गिहाणि ।

८ ना० १।१।११८ ।

९ ना० १।५।६ ।

१०. स० पा०—करयल*** ।

११ अग्घइ सेस तहेव मज्जणग-जणियहासे (क) ।

१२ स० पा०—सद्दावेइ जाव जेणेव ।

१३. ना० १।८।६२ ।

१०० तए णं से दूए रुपिणा एवं वुत्ते समाणे हट्टुट्टे जाव'० जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

संख-राय-पद

१०१. तेण कालेण तेण समएणं कासी नामं जणवए होत्था । तत्थ ण वाणारसी नामं नयरी होत्था । तत्थ ण सखे नाम कासीराया होत्था ॥
- १०२ तए ण तीसे मल्लीए विदेहवररायकन्नाए^१ अण्णया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सधी विसघडिए यावि होत्था ॥
- १०३ तए ण से कुभए राया सुवण्णगारसेणि सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया । इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स सर्धि^२ संघाडेह, [सघाडेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह^३ ?] ॥
- १०४ तए ण सा सुवण्णगारसेणी एयमट्टु तहत्ति पडिसुणेड, पडिसुणेत्ता त दिव्वं कुडलजुयल गेण्हइ, गेण्हत्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवण्णगार-भिसियासु निवेसेइ, निवेसेत्ता वह्हिं आएहि यं •उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मयाहि य पारिणामियाहि य बुद्धीहिं^४ परिणामेमाणा इच्छति तस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स सर्धि घडित्तए, नो चेव ण सचाएइ घडित्तए ॥
- १०५ तए ण सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुभए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल^५-परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेइ^६, वद्धावेत्ता एव वयासी—एव खलु सामी ! अज्ज तुम्हे^७ अम्हे सद्दावेह, जाव^८ सर्धि सघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं अम्हे त दिव्वं कुडलजुयल गेण्हामो, गेण्हत्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवागच्छामो जाव^९ नो सचाएमो सर्धि^{१०} संघाडेत्तए । तए णं अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुडलजुयलस्स अण्ण सरिसय कुडलजुयल घडेमो ॥
- १०६ तए ण से कुभए राया तीसे सुवण्णगारसेणीए अतिए एयमट्टुं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिय भिउडिं निडाले साहट्टु एव वयासी—केस ण तुब्भे कलाया ण भवह, जे ण तुब्भे इमस्स

१. ना० १।८।६३ ।

२. ० कन्नयाए (ख) ।

३. सधी (क, ख, ग, घ) ।

४. स्वर्णकारश्रेण्या राज्ञे निवेदने कोष्ठकवर्ती पाठो विद्यते । द्रष्टव्यम्—सू० १०५ । तेन अत्रासी युज्यते ।

५. सं० पा०—आएहि य जाव परिणामेमाणा ।

६. सं० पा०—करयलवद्धावेत्ता ।

७. तुब्भे (ग) ।

८. ना० १।८।१०३ ।

९. ना० १।८।१०४ ।

१०. X (ख, घ) ।

दिव्वस्स कुडलजुयलस्स नो सचाएह सधिं सघाडित्तए ? ते सुवण्णगारे निव्विसए आणवेइ ॥

१०७. तए ण ते सुवण्णगारा कुभगेण रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइ-साइ गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सभडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाए रायहाणीए मज्झमज्झेण निक्खमति, निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झमज्झेण निक्खमति, निक्खमित्ता जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणसिं सगडी-सागड मोएत्ति, मोएत्ता महत्थ जावं पाहुड गेण्हति, गेण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव सखे कासीराया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलं-परिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्ठु जएण विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता पाहुड उवणेत्ति, उवणेत्ता एव वयासी—अम्हे ण सामी ! मिहिलाओ कुभएण रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा इह हव्वमागया । त इच्छामो ण सामी ! तुब्भं वाहुच्छायापरिग्गहिया निव्वभया निरुव्विग्गा सुहसुहेण परिवसिउ ॥

१०८ तए ण सखे कासीराया ते सुवण्णगारे एवं वयासी—किं ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता ?

१०९ तए ण ते सुवण्णगारा सख कासीराय एव वयासी—एव खलु सामी ! कुभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायवरकन्ताए कुडल-जुयलस्स सधी विसघडिए । तए ण से कुभए राया सुवण्णगारसेणि सद्दावेइ जावं निव्विसया आणत्ता । तं एएण कारणेण सामी ! अम्हे कुभएण रण्णा निव्विसया आणत्ता ॥

११० तए ण से सखे कासीराया सुवण्णगारे एवं वयासी केरिसिया ण देवाणुप्पिया ! कुभगस्स रण्णो धूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेहरायवरकन्ता ?

१११ तए ण ते सुवण्णगारा सख कासीराय एव वयासी—नो खलु सामी ! अण्णा कावि तारिसिया देवकन्ता वा *असुरकन्ता वा नागकन्ता वा जक्खकन्ता वा गधव्वकन्ता वा रायकन्ता वा °जारिसिया णं मल्ली विदेह्वररायकन्ता ॥

११२. तए णं से सखे कासीराया कुडल-जणिय-हासे दूय सद्दावेइ, °सद्दावेत्ता एवं

१. अगुजाणसि (घ) ।

करयल ए (ख, ग) ।

२ ना० १।८।८१ ।

३ रायपसेणइय ६८३ सूत्रे अस्यानन्तरं 'अणुपविसइ' इति क्रियापद लभ्यते ।

५. ना० १।८।१०३-१०६ ।

६ स० पा०—देवकन्ता वा जाव जारिसिया ।

४. स० पा०—करयल जाव वद्धावेहि (क),

७ स० पा०—सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्थ' ।

वयासी—जाव^१ मल्लि विदेहरायवरकन्त मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सय रज्जसुका ॥

११३ तए णं से दूए सखेण एव वुत्ते समाणे हट्टुत्तुडे जाव^३ जेणेव मिहिला नयरी तेणेव^० पहारेत्थ गमणाए ॥

अदीणसत्त-राय-पदं

११४. तेण कालेण तेण समएण कुरु नाम जणवए होत्था । तत्थ ण हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था । तत्थ ण अदीणसत्तू नाम राया होत्था जाव^१ रज्ज पसासेमाणे विहरइ ॥

११५. तत्थ ण मिहिलाए तस्स ण कुभगस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए मल्लीए अणुमग्गजायए मल्लदिन्ने^५ नाम कुमारे सुकुमालपाणिपाए जाव^१ जुवराया यावि होत्था ॥

११६. तए णं मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे मम पमदवणंसि एग महं चित्तसभ करेह—अणेगखभसयसण्णिविट्ठ^६ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणत्ति ॥

११७. तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण^७ देवाणुप्पिया ! चित्तसभ हाव-भाव-विलास-विब्बोयकलिएहिं रुवेहिं चित्तेह^८, •चित्तेत्ता एयमाणत्तियं^० पच्चप्पिणह ॥

११८ तए ण सा चित्तगर-सेणी एयमट्ठ^९ तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइ गिहाइ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तूलियाओ वण्णए य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता भूमिभागे विरचत्ति, विरचित्ता भूमिं सज्जेइ, सज्जेत्ता चित्तसभ हाव-भाव^{१०}-विलास-विब्बोय-कलिएहिं रुवेहिं^{११} चित्तेउ पयत्ता यावि होत्था ॥

११९. तए ण एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर-लद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णा-गया—जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स ण देसाणुसारेण तयाणुरूवं निव्वत्तेइ ॥

१२०. तए ण से चित्तगरे^{१२} मल्लीए जवणियंतरियाए^{१३} जालतरेण पायगुट्ट पासइ । तए

१. ना० १।८।६२।

२. ना० १।८।६३ ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. ०दिन्ने (क, ख, ग, घ) ।

५. ओ० सू० १४३ ।

६. पू०—ना० १।१।८६ ।

७. गच्छह ण तुब्भे (ख, घ) ।

८. स० पा०—चित्तेह जाव पच्चप्पिणह ।

९. द्रष्टव्यम्—अस्यैवाव्ययनस्य १०४ सूत्रम् ।

१०. स० पा०—भाव जाव चित्तेउं ।

११ चित्तगरदारए (क, ख, ग, घ) ।

१२. जवणियतराए (ख), जवणतरियाए (ग) ।

णं तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे अञ्जत्थिए जाव^१ समुप्पज्जित्था—सेय खलु मम मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायगुट्ठाणुसारेण सरिसग^२ •सरित्तय सरिव्वय सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण^३ गुणोववेय रूव निव्वत्तिए—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता भूमिभाग सज्जेइ, सज्जेत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायगुट्ठासारेण सरिसग जाव रूव निव्वत्तेइ ॥

१२१. तए ण सा चित्तगर-सेणी चित्तसभ हाव-भाव^४-विलास-विब्वोयकलिएहिं रूवेहि^५ चित्तेइ, चित्तेत्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवाग च्छित्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणइ ॥
१२२. तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणिं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुल जीवियारिहं पीइदाण दलयइ, दलयत्ता पडिविसज्जेइ ॥
१२३. तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे^६ ण्हाए अतेउर-परियाल-सपरिवुडे अम्मघाईए सद्धि जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चित्तसभ अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता हाव-भाव-विलास-विब्वोयकलियाइ रूवाइ पासमाणे-पासमाणे जेणेव मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
- १२४ तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवं रूव निव्वत्तिय पासइ, पासित्ता^७ इमेयारूवे अञ्जत्थिए जाव^१ समुप्पज्जित्था - एस णं मल्ली विदेहरायवरकन्ने त्ति कट्टु लज्जिए विलिए^८ वेड्डे सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ ॥
- १२५ तए णं त मल्लदिन्ने कुमार अम्मघाई सणिय-सणिय पच्चोसक्कत पासित्ता एव वयासी—किण्णं तुम पुत्ता^९ ! लज्जिए विलिए वेड्डे सणिय-सणिय पच्चोसक्कसि ?
- १२६ तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे अम्मघाई^६ एवं वयासी—जुत्त ण अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरु-देवयभूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तसभ^{१०} अणुपविसित्तिए ?
१२७. तए ण अम्मघाई मल्लदिन्ने कुमार एव वयासी—नो खलु पुत्ता ! एस मल्ली

१. ना० १।१।४८ ।

२. स० पा०—सरिसग जाव गुणोववेय ।

३. स० पा०—जाव हाव भाव । अत्र जाव शब्द. भावशब्दानतर युज्यते ।

४. कुमारे अणया (क, ख, ग) ।

५. अतोऽग्रे 'तस्स' इति पदमध्याहर्तव्यम् ।

६. ना० १।१।४८ ।

७. विलए (ख), विलज्जिए (घ), वीडिए (क्व) ।

८. अम्मघाई (क, ख, ग, घ) ।

९. चित्तघरसभं (ख, ग, घ) ।

विदेहरायवरकन्ना । एस णं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए चित्तगरएणं तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ॥

१२८. तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे अम्मघाईए एयमट्टु सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते' एव वयासी—केस ण भो ! से चित्तारए अपत्थिय^१•पत्थए, दुरत-पत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-^२परिवज्जिए, जे ण मम जेट्टाए भगिणीए गुरु-देवयभूयाए^३ •लज्जणिज्जाए मम चित्तसभाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए त्ति कट्टु त चित्तगर वज्ज आणवेइ ॥
- १२९ तए ण सा चित्तगर-सेणी इमीसे कहाए लद्धट्टा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय^४ •सिरसावत्त मत्थए अर्जलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेइ^५ वद्धावेत्ता एव वयासी— एव खलु सामी ! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर'-लद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया—जस्स ण दुपयस्स वा^६ •चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स ण देसाणुसारेण तयाणुरूव रूव^७ निव्वत्तेइ । तं मा ण सामी ! तुव्भे त चित्तगर वज्ज आणवेह । त तुव्भे ण सामी ! तस्स चित्तगरस्स अण्ण तयाणुरूव दड निव्वत्तेह^८ ॥
१३०. तए ण से मल्लदिन्ने कुमारे तस्स चित्तगरस्स सडासग छिदावेइ, छिदावेत्ता निव्विसय आणवेइ ॥
- १३१ तए ण से चित्तगरे मल्लदिन्नेण कुमारेण निव्विसए आणत्ते समाणे सभडमत्तो- वगरणमायाए मिहिलाओ नयरीओ निक्खमइ, निक्खमित्ता 'विदेहस्स जणव- यस्स'^९ मज्जमज्जेणं जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवा- गच्छइ, उवागच्छित्ता भडनिक्खेव करेइ, करेत्ता चित्तफलग सज्जेइ, सज्जेत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायगुट्टाणुसारेण रूव निव्वत्तेइ, निव्वत्तेता कक्खतरसि छुव्भइ, छुव्भित्ता महत्थ जाव^{१०} पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता 'हत्थिणा- उरस्स नयरस्स'^{११} मज्जमज्जेणं^{१२} जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ,

१. पू०—ना० १।८।१०६ ।

२. सं० पा०—अपत्थिय जाव परिवज्जिए ।

३. सं० पा०—देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए ।

४. सं० पा०—करयलपरिग्गहिय जाव वद्धा- वेत्ता ।

५. चित्तकार (ख, ग) ।

६. सं० पा०—दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेति ।

७. निव्वत्तएह (ख) ।

८. विदेहं जणवय (क, ख, ग, घ); १।८।१०७

सूत्रानुसारेणासौ पाठ स्वीकृतोस्ति । अत्र क्रियापदमन्तरा द्वितीयाः विभक्तिर्नैव सगच्छते ।

९. 'निक्खमइ, निक्खमित्ता' इत्यध्याहार्यम् ।

१०. ना० १।८।८१ ।

११. हत्थिणाउर नयर (क, ख, ग, घ) ।

१२. रायपसेणइय ६८३ सूत्रे अस्यानन्तरं 'अणुपविसइ' इति क्रियापद लभ्यते ।

उवागच्छिता करयल^१ परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएणं वद्धावेइ^२ वद्धावेत्ता पाहुड उवणेइ, उवणेत्ता एव वयासी—एवं खलु अह सामी ! मिहिलाओ रायहाणीओ कुभगस्स रण्णो पुत्तेण पभावईए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेण निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए । त इच्छामि ण सामी ! तुव्भं वाहुच्छाया-परिग्गहिए^३ निव्वभए निव्विग्गो सुह-सुहेण^४ परिवसित्तए ॥

१३२ तए णं से अदीणसत्तू राया त चित्तगर^१ एव वयासी—किण्ण तुम देवाणुप्पिया ! मल्लदिन्नेण निव्विसए आणत्ते ?

१३३ तए णं से चित्तगरे अदीणसत्तू राय एव वयासी—एव खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगर-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुव्वे ण देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभ हाव-भाव-विलास-विव्वोयकलिएहि रूवेहि चित्तेह त चेव सव्व भाणियव्व जाव^५ मम सडासग छिदावेइ, छिदावेत्ता निव्विसय आणवेइ । एव खलु अह सामी ! मल्लदिन्नेण कुमारेण निव्विसए आणत्ते ॥

१३४ तए ण अदीणसत्तू राया त चित्तगर एव वयासी—से केरिसए ण देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ॥

१३५ तए ण से चित्तगरे कक्खतराओ चित्तफलग नीणेइ, नीणेत्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ, उवणेत्ता एव वयासी—एस ण सामी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगार-भाव-पडोयारे निव्वत्तिए । नो खलु सक्का^६ केणइ देवेण वा^७ दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्तरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गघव्वेण वा^८ मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ॥

१३६ तए णं से अदीणसत्तू पडिरूव-जणिय-हासे दूय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी^९—जाव^५ मल्लि विदेहरायवरकन्त मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य ण सा सय रज्जसुका ॥

१३७ तए ण से दूए अदीणसत्तुणा एव वुत्ते समाणे हट्टुट्टे जाव^५ जेणेव मिहिला नयरी तेणेव^{१०} पहारेत्थ गमणाए ॥

१ स० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

२. स० पा०—परिग्गहिए जाव परिवसित्तए ।

३. चित्तगरदारय (ख, ग, घ) ।

४ ना० १।८।११७ १३० ।

५ प्राकृतव्याकरणानुसारेण 'सक्क' इति पद युज्यते, किन्तु आदर्शेषु 'सक्का' इति पदमेव

लिखितमस्ति । एतद् लिपिदोषेण जात-मथवा प्राकृतशैल्या प्रयुक्तम् ?

६. स० पा०—देवेण वा जाव मल्लीए ।

७. स० पा०—तहेव जाव पहारेत्थ ।

८. ना० १।८।६२ ।

९. ना० १।८।६३ ।

जियसत्तु-राय-पद

- १३८ तेण कालेण तेणं समएण पचाने जणवाए । कपित्तनपुरे नयने । जियसत्तु नाम राया पचालाहिवई । तस्स ण जियसत्तुम्म धारिणोपामोत्त वेदोत्तम्म ओरंत्ते' होत्था ॥
१३९. तत्थ ण मिहिलाए चोक्खा' नाम परिव्वाडया—'रिउत्तये'-•यत्तवेद-नामवेद-अहव्वणवेद-इतिहासपचमाण निघट्टुछट्टाण गगोवगाण गग्गन्नाण चउत्त वेदाय सारगा जाव' वभण्णाणमु य गत्थेगु° नुपरिणिट्ठिया यावि होत्था ॥
- १४० तए ण सा चोक्खा परिव्वाडया मिहिलाए वट्ठण राउत्तर जाव गत्थवाहवभिउत्त पुरओ दाणवम्म च सोयवम्म च नित्थाभिसेय च आघवेमाणी पणवेमाणी परूवेमाणी उवदसेमाणी विहरइ ॥
१४१. तए ण सा चोक्खा अणया कयाइ तिदट च कट्ठिय च जाव' घाउत्तरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हत्ता परिव्वाडगावसहाओ पडिनिकयमट, पडिनिकयमित्ता पविस्स-परिव्वाडया-सट्ठि सपरिवुडा मिहिल रायहाराण मज्जमज्जेण जेणेव कुभगस्स रण्णो भवणे जेणेव कन्नतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवागच्छट, उवागच्छत्ता उदयपरिफोसियाए' 'दवभोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए'° निर्नायड, निसीइत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणवम्म च •सोयवम्मं च तित्थाभिसेय च आघवेमाणी पणवेमाणी परूवेमाणी उवदसेमाणी° विहरइ ॥
१४२. तए ण मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्ख परिव्वाडय एव वयासी—'तुवभण्ण' चोक्खे ! किमूलए धम्मे पण्णत्ते ?
१४३. तए ण सा चोक्खा परिव्वाडया मल्लि विदेहरायवरकन्ना एव वयासी—अम्हं ण देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते । ज ण अम्ह किंचि अनुउं भवइ त ण उदएण य मट्ठियाए'' •य सुई भवइ । एव खलु अम्हे जलाभिसेय-पूवप्पाणो° अविग्घेण सग्ग गच्छामो ॥
- १४४ तए ण मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्ख परिव्वाडय एव वयासी—चोक्खे'' ! से जहानामए केइ पुरिसे रुहिरकय वत्थ रुहिरेण चैव धोवेज्जा, अत्थि णं

१. ओरोहो (क), उवरोहे (ख) ।

२. चोक्खी (ख) ।

३. स० पा०—रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया ।

४. ओ० सू० ६७ ।

५. ना० १।५।६ ।

६ ओ० सू० ११७ ।

७. °फासियाए (क, ग) ।

८. °पच्चत्थुयाते भिसियाते (ख, घ) ।

९. स० पा०—दाणवम्म च जाव विहरइ ।

१०. तुवभेण (ख, घ) अशुद्ध प्रतिभाति ।

११. स० पा०—मट्ठियाए जाव अविग्घेण ।
१।५।६० सूत्रे एतत् वर्णन किञ्चित् परिवर्तनेन लभ्यते ।

१२. चोक्खा (ख, घ) ।

चोक्खे । तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काइ सोही ?
नो इणद्धे समद्धे ।

एवामेव चोक्खे' । तुवभण्ण पाणाइवाएण जाव' मिच्छादसणसल्लेण नत्थि
काइ सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव धोव्वमाणस्स ॥

१४५ तए ण सा चोक्खा' परिव्वाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एव वुत्ता समाणी
सकिया कखिया वित्तिगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि' होत्था, मल्लीए
विदेहरायवरकन्नाए नो सचाएइ किच्चिवि पामोक्खमाइक्खत्तए', तुसिणीया
सच्चिट्ठइ ॥

१४६. तए णं त चोक्ख मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए वहूओ दासचेडीओ हीलेति
निदति खिसति गरिहति, अप्पेगइयाओ हेरुयालेति अप्पेगइयाओ मुहमक्कडि-
याओ' करेति अप्पेगइयाओ वग्घाडियाओ' करेति अप्पेगइयाओ तज्जेमाणीओ
तालेमाणीओ निच्छुहति ॥

१४७ तए ण सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहि' •हीलिज्जमाणी
निदिज्जमाणी खिसिज्जमाणी ° गरहिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव' मिसिमिसेमाणी
मल्लीए विदेहरायवरकन्नयाए पओसमावज्जइ, भिसिय गेण्हइ, गेण्हत्ता
कन्नतेउराओ पडिणक्खमई, पडिणक्खमित्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्ग-
च्छित्ता, परिव्वाइया-सपरिवुडा जेणेव पचालजणवए जेणेव कपिल्लपुरे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वहूण राईसर' ° जाव'' सत्थवाहपभिईण पुरओ
दाणधम्म च सोयधम्म च तित्थाभिसेय च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी
उवदसेमाणी ° विहरइ ॥

१४८. तए ण से जियसत्तू अण्णया कयाइ अतो अतेउर-परियाल-सद्धि सपरिवुडे'^१
•सीहासणवरगए यावि ° विहरइ ॥

१४९ तए ण सा चोक्खा, परिव्वाइया-सपरिवुडा जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो भवणे
जेणेव जियसत्तू राया तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जियसत्तु जएण विजएण
वद्धावेइ ॥

१५० तए ण से जियसत्तू चोक्ख परिव्वाइय एज्जमाण पासइ, पासित्ता सीहासणाओ

१ एव चोक्खी (क, ग), एव चोक्खा (ख) ।

वग्घाडाओ (घ) ।

२. ओ० सू० १६३ ।

८. स० पा०—दासचेडियाहिं जाव गरहिज्ज-
माणी ।

३ चोक्खी (क, ख, ग, घ) ।

९. ना० १।८।१०६ ।

४. वि (ग) ।

५. ° माति ° (ग, घ) ।

१०. स० पा० — राईसर जाव विहरइ ।

६ मुहमक्कडिय (क) ।

११ ना० १।५।६ ।

७ वग्घाडिया (क), वग्घाडिओ (ख, ग),

१२. स० पा०—सपरिवुडे एव जाव विहरइ ।

अवभुट्टेड, अवभुट्टेत्ता चोक्ख सवकारेऽ सम्माणेड, गवगारंत्ता नम्माणंत्ता आन-
णेण उवनिमतेड ॥

१५१ तए ण सा चोक्खा उदगपरिफोसियाए' °दवभोवरि पच्चन्वयाए' ° भिसियाए
निविसइ', निविसित्ता जियसत्तु राय रज्जे य' °रुट्ठे य कोमे य कोट्टागारे य
वले य वाहणे य पुरे य ° अतेउरे य कुसलोदन पुच्छेड ॥

१५२ तए ण सा चोक्खा जियसत्तुस्स रण्णो दाणघम्म च' °नोगघम्म च तिन्याभि-
सेय च आघवेमाणी पणवेमाणी पस्वेमाणी उवदमेमाणी ° विहरइ ॥

१५३ तए ण मे जियसत्तु अप्पणो ओरोहमि जायविम्हए चोक्खं एव वयासी—तुमं
ण देवाणुप्पिया । बहूणि गामागर जाव' सण्णिवेममि आत्तिडमि, बहूण य
राईसर'—सत्थवाहप्पभिईण गिहाइ अणुप्पविमसि, त अन्वियाट ते करमड रण्णो
वा' °ईसरस्स वा कहिचि ° एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिमए ण इमे मम
ओरोहे ?

१५४. तए ण सा चोक्खा परिव्वाडया 'जियसत्तुणा एव वुत्ता समाणी णि विहसिय'
करेइ, करेत्ता एवं वयासी—सरिसए ण तुम देवाणुप्पिया । तम्म अगडददुरस्स।
के ण देवाणुप्पिए ! से अगडददुरे ?

जियसत्तु । मे जहानामए अगडददुरे सिया । मेण तत्थ जाए तत्थेव वुड्ठे अण्णं
अगड वा तलाग वा दहं वा सर वा सागरं वा अपाममाणे मण्णड—अयं चेव
अगडे वा" °तलागे वा दहे वा सरे वा ° सागरे वा ।

तए ण त कूव अण्णे सामुद्दए ददुरे हव्वमागए ।

तए ण से कूवददुरे त सामुद्दय" ददुरं एव वयासी—से के" तुम देवाणुप्पिया ।
कत्तो वा इह हव्वमागए ?

तए ण से सामुद्दए ददुरे त कूवददुरं एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ।
अह सामुद्दए ददुरे ।

१ स० पा०—उदगपरिफोसियाए जाव भिमि-
याए ।

२ णिवसइ (क, ख, ग, घ) ।

३. स० पा०—रज्जे य जाव अतेउरे ।

४ सं० पा०—दाणघम्म च जाव विहरइ ।

५ ना० १।१।११८ ।

६ पू०—ना० १।५।६ ।

७ स० पा०—रण्णो वा जाव एरिसए ।

८ ओरोधे (ख) ।

९. जियसत्तु एव व ईसि अवहसिय (क, ख,

ग), जियसत्तु एव वयासी ईसि अवहसिय
(घ); आदर्शेषु 'एव व' इति मक्षिप्तत्प
लिखित लभ्यते स्तवकादर्शे तत्र 'एवं
वयासी' इति जातम् । स्तवकारेण 'इम
कहइ' इत्यर्थोपि कृतः । अस्य मौलिक रूप
अस्माभिः प्रस्तुतमूत्रम्य षोडशाव्ययने
लब्धम् ।

१० स० पा०—अगडे वा जाव सागरे ।

११. समुद्दय (घ) ।

१२. केसण (घ) ।

तए ण से कूवदद्दुरे त सामुद्दयं दद्दुर एवं वयासी—केमहालए ण देवाणु-
प्पिया ! से समुद्दे ?

तए ण से सामुद्दए दद्दुरे त कूवदद्दुर एव वयासी—महालए ण देवाणुप्पिया !
समुद्दे ।

तए णं से कूवदद्दुरे पाएण लीह कड्ढेइ, कड्ढेत्ता एवं वयासी—एमहालए
ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे । महालए ण से समुद्दे ।

तए ण से कूवदद्दुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फडित्ता ण 'पच्चत्थिमिल्ल
तीर' गच्छइ, गच्छित्ता एव वयासी—एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

एवामेव तुमपि जियसत्तू अण्णेसिं वहूण राईसर जाव' सत्थवाहप्पभिईण भज्ज
वा भगिणिं वा धूय वा सुण्हं वा अपासमाणे जाणसिं जारिसए मम चेव ण
ओरोहे, तारिसए नो अण्णेसिं ।

त एव खलु जियसत्तू ! मिहिलाए नयरीए कुभगस्स धूया पभावईए अत्तया
मल्ली नाम विदेहरायवरकन्ना रूवेण य जोव्वणेण य' •लावणेण य उक्किट्ठा
उक्किट्ठसरीरा, ° नो खलु अण्णा काइ [तारिसिया ?] देवकन्ना' •वा असुर-
कन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा रायकन्ना वा ° जारि-
सिया मल्ली विदेहरायवरकन्ना [तीसे ?] छिन्नस्स वि पायगुट्ठगस्स इमे
तवोरोहे सयसहस्सइमपि कल न अग्घइ त्ति कट्ठु जामेव दिस पाउठभूया
तामेव दिस पडिगया ॥

१५५. तए ण से जियसत्तू परिव्वाडया-जणिय-हासे दूय सद्दावेइ', •सद्दावेत्ता
एव वयासी—जाव' मल्लि विदेहरायवरकन्न मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि
य ण सा सयं रज्जसुका ॥

१५६ तए णं से दूए जियसत्तुणा एव वुत्ते समाणे हट्ठुत्तुडे जाव' जेणेव मिहिला नयरी
तेणेव ° पहारेत्थ गमणाए ॥

द्वयाणं संदेस-निवेदन-पदं

१५७ तए ण तेसिं जियसत्तुपामोक्खाण छण्ह राईण दूया जेणेव मिहिला तेणेव
पहारेत्थ गमणाए ॥

१. × (क, ख, ग, घ) ।

२ तहेव (क, ख, ग, घ) ।

३ ना० १।५।६ ।

४ जाणासि (घ) ।

५ स० पा०—जोव्वणेण य जाव नो खलु ।

६. स० पा०—देवकन्ना'... ।

७ स० पा०—सद्दावेइ जाव पहारेत्थ ।

८. ना० १।८।६२ ।

९ ना० १।८।६३ ।

१५८ तए ण छप्पि दूयगा जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता मिहिलाए अग्गुज्जाणसि पत्तेयं-पत्तेय खधावारनिवेस करेति, करेत्ता मिहिल रायहारिण अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता पत्तेय करयल^१•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु^२ साण-साण राईणं वयणाइ निवेदेति^३ ॥

कुभएण दूयाणं असक्कार-पद

१५९ तए ण से कुभए तेसि दूयाण 'अतिय एयमट्टु'^४ सोच्चा आसुरुत्ते^५ •रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे^६ तिवलिय भिउडि निडाले साहट्टु एव वयासी— न देमि णं अह तुव्भ मल्लि विदेहरायवरकन्न ति कट्टु ते छप्पि दूए असक्कारिय असम्माणिय अवदारेण निच्छुभावेइ ॥

१६० तए ण ते जियसत्तुपामोक्खाण छण्ह राईणं दूया कुभएण रण्णा 'असक्कारिय असम्माणिय'^७ अवदारेण^८ निच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा-सगा जणवया जेणेव 'सयाइ-सयाइ नगराइ'^९ जेणेव सया-सया रायाणो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता करयल^{१०}•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु^{११} एव वयासी—एव खलु सामी! अम्हे जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमग चेव जेणेव मिहिला तेणेव उवागया जाव^{१२} अवदारेणं निच्छुभावेइ । "त न देइ ण सामी ! कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्न" साण-साण राईण एयमट्टु निवेदेति ॥

जियसत्तुपामोक्खाणं कुभएणं जुज्झ-पदं

१६१ तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसि दूयाणं अतिए एयमट्टुं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता रुट्टा कुविया चडिक्किया मिसिमिसेमाणा अण्णमण्णस्स दूय-सपेसण करेति, करेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छण्ह राईणं दूया जमगसमग चेव मिहिला तेणेव उवागया जाव^{१३} अवदारेणं निच्छूढा । तं सेय खलु देवाणुप्पिया ! कुभगस्स जत्त^{१४} गेण्हित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्टुं

१. स० पा०—करयल*** ।

२. निवेसति (क, ग, घ) ।

३. × (ख, ग) ।

४. स० पा०—आसुरुत्ते जाव तिवलियं ।

५. अवदारेण (क, ख, घ) ।

६. असक्कारिय-असम्माणिया (ख, ग) ।

७. अवदारेण (क) ।

८. सयार्ति-सयार्ति नगरार्ति (ख) ।

९. स० पा०—करयल० ।

१०. ना० १।८।१५८, १५९ ।

११. ना० १।८।१५८, १५९ ।

१२. जुत्त (ख, ग) ।

पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता ण्हाया सण्णद्धा^१ हत्थिखंधवरगया सकोरेटमल्लदामेण^२
 •छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि वीइज्जमाणा^३ महया हय-गय-रह-
 पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा सव्विड्डीए जाव^४
 दुदुभि-नाइयरवेण 'सएहिंतो-सएहिंतो नगरेहिंतो निग्गच्छति',^५ निग्गच्छित्ता
 एगयओ मिलायति, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए । ।

१६२ तए ण कुभए राया इमीसे कहाए लद्धे समाने वलवाउयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता
 एव वयासी—खिप्पामेव हय -•गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरगिणिं^६ सेण
 सन्नाहेहिं^७, सन्नाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि सेवि जाव पच्चप्पिणति^८ ॥

१६३ तए ण कुभए राया ण्हाए सण्णद्धे^९ हत्थिखंधवरगए^{१०} •सकोरेटमल्लदामेण
 छत्तेणं धरिज्जमाणेण^{११} सेयवरचामराहि वीइज्जमाणे महया हय-गय-रह-पवर-
 जोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे सव्विड्डीए जाव^{१२} दुदुभि-
 नाइयरवेण मिहिल मज्झमज्झेण निज्जाइ^{१३}, निज्जावेत्ता विदेहजणवय मज्झ-
 मज्झेण जेणेव देसग्ग^{१४} तेणेव खधावारनिवेस करेइ, करेत्ता जियसत्तुपामोक्खा
 छप्पि य रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ ॥

१६४ तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा^{१५} छप्पि रायाणो जेणेव कुभए राया तेणेव
 उवागच्छति, उवागच्छित्ता कुभएण रण्णा सद्धि सपलग्गा^{१६} यावि होत्था ॥

१६५. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुभय राय हय-महिय-पवरवीर-
 घाइय-विवडियच्चिध-धय^{१७}-पडाग किच्छोवगयपाण^{१८} दिसोदिसि पडिसेहेति ॥

१. पू०—ना० १।२।३२ ।

चामराहि ।

२. स० पा०—सकोरेटमल्लदाम जाव सेयवर-
 चामराहि महया ।

१०. ना० १।१।३३ ।

११. णिगच्छई (घ) ।

३. ना० १।१।३३ ।

१२. देसग्गते (क, ख, घ), देसग्गते (क्व),

४. सएहिंतो जाव निग्गच्छति (क); सएहिं २
 नगरेहिंतो जाव निग्गच्छति (ख, ग, घ) ।

देसमग्गे (क्व) ।

१३. जियसत्तू^० (क, ख, ग, घ) ।

५. स० पा०—हय जाव सेण ।

१४. योद्धुमिति शेष (वृ) ।

६. सन्नाहेह (क, ख, ग, घ) । आदर्शेषु
 बहुवचनान्त प्रयोगो दृश्यते, किन्तु एकवचन-
 कर्तके पाठे नासौ उपयुक्तोस्ति । ओवाइय-
 ५६ सूत्रेपि एकवचनान्त क्रियापद लभ्यते ।

१५. निवडियधयच्छत्तच्चिध (क) ।

१६. किच्छपाणोवगय (क), किच्छपाणोवगय

७. पच्चप्पिणति (क, ख, ग, घ) ।

(ख, ग, घ) । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ नाय

८. पू०—ना० १।२।३२ ।

पाठो व्याख्यातोस्ति । १।१६।२५२ सूत्रस्य

९. स० पा०—हत्थिखंधवरगए जाव सेयवर-

वृत्तावस्य व्याख्या दृश्यते । तत्रत्य पाठो

व्याख्या च सम्यक् प्रतिभाति, तेन तदनु-

सारेणात्र पाठ स्वीकृतः ।

- १६६ तए ण से कुभए जियसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं ह्य-महिय-^१ •पवरवीर-
घाइय-विवडियचिध-घय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं ° पडिमेहिण समाने
अत्थामे अवले अवीरिए^२ •अपुरिसक्कारपरक्कमे ° अधारणिज्जमिति कट्टु
सिग्घ तुरिय^३ •चवल चड जइण ° वेइय जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छड,
उवागच्छित्ता मिहिल अणुपविसड,^४ अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइ पिहेड,
पिहेत्ता रोहसज्जे चिट्ठइ ॥
- १६७ तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति,
उवागच्छित्ता मिहिल रायहाणि निस्सचारं निरुच्चार सव्वओ समता
ओरुभित्ता ण चिट्ठति ॥
- १६८ तए ण से कुभए राया मिहिल रायहाणि ओरुद्ध जाणित्ता अविभतरियाए
उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्ह राईण
अतराणि य छिट्ठाणि य 'विवराणि य' मम्माणि^५ य अलभमाणे व्हूहिं आएहि
य उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य वेणडयाहि य कम्मयाहि य पारिणामियाहि
य—बुद्धीहिं परिणामेमाणे-परिणामेमाणे किंचि आय वा उवाय वा अलभमाणे
ओहयमणसकप्पे^६ •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए ° भियायड ॥

मल्लीए चिताहेउ-पुच्छा-पदं

- १६९ इम च ण मल्ली विदेहरायवरकन्ता ण्हाया^७ •कयवलिकम्मा कयकोउय-
मगलपायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया ° व्हूहिं खुज्जाहिं सपरिवुडा जेणेव
कुभए तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता कुभगस्स पायग्गहणं करेइ ॥
- १७० तए ण कुभए मल्लि विदेहरायवरकन्त नो आढाइ नो परियाणाइ^८ तुसिणीए
सचिट्ठइ ॥
- १७१ तए ण मल्ली विदेहरायवरकन्ता कुभग एव वयासी—तुव्भे ण ताओ !
अण्णया मम एज्जमाणिं^९ •पासित्ता आढाइ परियाणाह अके निवेसेह । इयाणि
ताओ ! तुव्भे मम नो आढाइ नो परियाणाह नो अके ° निवेसेह । किण्णं तुव्भं
अज्ज ओहय^{१०} •मणसकप्पा करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया ° भियायह ?

१ स० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिण ।

२. स० पा०—अवीरिए जाव अधारणिज्ज ° ।

३ स० पा०—तुरिय जाव वेइय ।

४. °पवेसेइ (ख, ग, घ) ।

५. विरहाणि य (ग); विरहाणि य विवराणि
(घ) ।

६. सम्माणि (क, ख, ग) अशुद्ध प्रतिभाति ।

७. सं० पा०—ओहयमणसकप्पे जाव भियायड ।

८. स० पा०—ण्हाया जाव व्हूहिं ।

९ पू०—ओ० सू० ७० ।

१० द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम् ।

११ एज्जमाणं (ख, ग, घ) । स० पा०—
एज्जमाणिं जाव निवेसेह ।

१२. स० पा०—ओहय जाव भियायह ।

कुंभगस्स चिंताहेउ-कहण-पदं

१७२ तए णं कुंभए मल्लि विदेहरायवरकन्त एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! तव कज्जे जियसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं दूया संपेसिया । ते ण मए असक्कारिय' •असम्माणिय अवद्वारेण° निच्छूढा । तए ण जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाण अतिए एयमट्ट सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिल रायहाणिं निस्सचार' •निरुच्चार सव्वओ समंता ओरंभित्ता ण° चिट्ठति । तए णं अहं पुत्ता तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्ह राईण अतराणि [य छिद्दाणि य विवराणि य मम्माणिय य ?] अलभमाणे जाव' अट्टज्झाणोवगए भियामि ॥

मल्लीए उवायनिरूवण-पदं

१७३. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ता कुंभग राय एव वयासी—माण तुव्भे ताओ ! ओहयमणसकप्पा' •करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया° भियायह । तुव्भे ण ताओ ! तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्ह राईण पत्तेय-पत्तेय रहस्सिए' दूयसपेमे करेह, एगमेग एव वयह—तव देमि मल्लि विदेहरायवरकन्त ति कट्टु सभकालसमयसि' पविरल-मणूससि निसत-पडिनिसतसि पत्तेय-पत्तेय मिहिल रायहाणिं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसेत्ता गव्वभघरएसु अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेमेत्ता मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइ पिहेह, पिहेत्ता रोहासज्जा° चिट्ठह ॥

१७४ तए ण कुंभए' •तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्ह राईण पत्तेय-पत्तेय रहस्सिए दूयसपेसे करेइ जाव' ° रोहासज्जे चिट्ठइ ॥

मल्लीए जियसत्तुपामोक्खाणं सवोह-पदं

१७५ तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव'° उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जालतरेहि कणगमइ मत्थयच्छिट्ठु पउमुप्पल-पिहाण पडिम पासति—एस ण मल्ली विदेहराय-वरकन्तत्ति कट्टु मल्लीए रायवरकन्ताए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा गडिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा-पेहमाणा चिट्ठति ॥

१. स० पा०—असक्कारिया जाव निच्छूढा ।

२. म० पा०—निस्सचार जाव चिट्ठति ।

३. ना० १।८।१६८ ।

४. स० पा०—ओहयमणसकप्पा जाव भिया-यह ।

५. रहस्सिय (क, ख, ग, घ) ।

६. सक्का° (क, ग) ।

७. °सज्जे (क, ख, ग, घ), अत्र कर्तृपद

क्रियापद च बहुवचनान्तमस्ति अत अनेन कर्तृपदविशेषणेन बहुवचनान्तेन भाव्यम् ।

८. स० पा०—कुंभए एव त चेव जाव पवेसेइ रोहासज्जे ।

९. ना० १।८।१७३ ।

१०. ना० १।१।२४ ।

- १७६ तए ण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया' •कयवलिकम्मा कयकोउय-मगल °-
पायच्छित्ता सव्वालकारविभूसिया वहाँहि खुज्जाहि जाव' परिकिखत्ता जेणेव
जालघरणे जेणेव कणगमई मत्थयच्छिड्डा पउमुप्पल-पिहाणा पडिमा तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तीसे कणगमईए मत्थयच्छिड्डाए पउमुप्पल-पीहाणाए
पडिमाए मत्थयाओ त पउमुप्पल-पिहाण' अरणेइ । तओ' ण गघे निद्धावेइ', से
जहाणामए—अहिमडे इ वा जाव' एत्तो असुभतराए' चेव ॥
१७७. तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेण असुभेण गघेणं अभिभूया
समाणा सएहि-सएहि उत्तरिज्जेहि आसाइ' पिहेति, पिहेत्ता परम्मुहा चिट्ठति ॥
१७८. तए ण सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एव वयासी—किण्ण
तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहि-सएहि उत्तरिज्जेहि' •आसाइं पिहेत्ता ° परम्मुहा
चिट्ठह ?
- १७९ तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा मल्लि विदेहरायवरकन्त एव वयति—एव खलु
देवाणुप्पिए ! अम्हे इमेण असुभेणं गघेण अभिभूया समाणा सएहि-सएहि
उत्तरिज्जेहि' •आसाइं पिहेत्ता ° चिट्ठामो ॥
१८०. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—जइ ताव
देवाणुप्पिया ! इमीसे कणग' •मईए मत्थयच्छिड्डाए पउमुप्पल-पिहाणाए °
पडिमाए कल्लाकल्लि ताओ मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ एगमेगे
पिंडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे इमेयारूवे असुभे पोग्गल'^{१३}-परिणामे, इमस्स'^{१४}
पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स
सोणियपूयासवस्स दुरुय'^{१५}-ऊसास-नीसासस्स 'दुरुय-मुत्त-पूइय-पुरीस-पुण्णस्स'^{१६}

१. स० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

२ ओ० सू० ७० ।

३ पउम (क, ख, ग, घ) ।

४ ततेण (ख, घ) ।

५. णिद्धाइ (क); णिद्धवेइ (ख) ।

६ ना० १।८।४२ ।

७. प्रस्तुताध्ययनस्य ४२ मूत्रे 'एत्तो अणिट्ठतराए
चेव अकततराए चेव' इत्यादि पदानि
दृश्यन्ते । तत्र 'असुभतराए चेव' इति पद
नास्ति । अत्र मभवत् 'अणिट्ठतराए'
इत्यादिपदाना सारसग्रहरूपेण 'असुभतराए'
इति पद प्रयुक्तमस्ति ।

८. आसाति (ख, ग, घ) ।

९ पिहिति (क, ग) ।

१० सं० पा०—उत्तरिज्जेहि जाव परम्मुहा ।

११ सं० पा०—उत्तरिज्जेहि जाव चिट्ठामो ।

१२ सं० पा०—कणग जाव पडिमाए ।

१३. पोग्गले (क, ख, घ) ।

१४ अत. पूर्वं वाचनान्तरे 'किमग पुण' इति
लभ्यते । (वृ) ।

१५ दुरुय (घ) । मुखमुखोच्चारणार्थं 'दुरुव'
शब्दस्य 'दुरुय' मितिरूप कृत सभाव्यते
अथवा दुरुपार्थवाची देशी शब्दः स्यात् ?
वृत्तौ 'दुरुय' शब्दस्य 'दुरुप' इत्यर्थोस्ति
कृतः ।

१६ दुरुय-मुत्त-पुरिस-पूय-वहुपडिपुण्ण(१।१।१०६)।

‘सडण-पडण-छेयण-विद्धसण-धम्मस्स’^१ केरिसए य परिणामे भविस्सइ ? त माणं तुव्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह । एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमाओ^२ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावत्तिसि^३ विजए वीयसोगाए रायहाणीए महव्वल-पामोक्खा सत्तवि^४ य वालवयसया रायाणो होत्था—सहजाया जाव^५ पव्वइया । तए ण अह देवाणुप्पिया ! इमेण कारणेण इत्थीनामगोय कम्म निव्वत्तेमि—जइ णं तुव्भे चउत्थ^६ उवसपज्जित्ता ण विहरह, तए ण अह छट्ठ उवसपज्जित्ता णं विहरामि सेसं तहेव सव्व^७ । तए ण तुव्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे काल किच्चा जयते विमाणे उववण्णा । तत्थ णं तुव्भ देसूणाइ वत्तीस सागरोवमाइं ठिई । तए ण तुव्भे ताओ देवलोगाओ अणतर चय चइत्ता इहेव जवुद्दीवे दीवे जाव^८ साइ-साइ रज्जाइ उवसपज्जित्ता ण विहरह । तए ण अह ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव^९ दारियत्ताए पच्चायाया ।

गाहा—

किंय तय पम्हुट्ट^{१०}, जय तया भो ! जयतपवरम्मि ।

वुत्था समय-णिवद्धा^{११}, देवा त सभरह जाइ ॥१॥

जियसत्तुपामोक्खाणं जाइसरण-पदं

१८१ तए ण तेसिं जियसत्तुपामोक्खाण छण्हं राईणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्मा सुभेण परिणामेण पसत्थेण अज्झवसाणेण लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावर^{१०}णिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसण करेमाणण सण्णिपुव्वे^{११} जाइसरणे^{१२} समुप्पण्णे, एयमट्ट सम्म अभिसमागच्छति^{१३} ॥

मल्लीए पव्वज्जा-पदं

१८२ तए ण मल्ली अरहा^{१४} जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्णजाईसरणे जाणित्ता गव्वघराण दाराइ विहाडेइ ॥

१ सडण जाव धम्मम्म (ग) ।

२. इमे (ग) ।

३ सलिलावत्तिम्मि (ख) ।

४. सत्तपि (क, ख, घ) ।

५ ना० १।८।१०-१६ ।

६ चोत्थ (ख, ग, घ) ।

७. ना० १।८।१८-२६ ।

८. ना० १।८।२७ ।

९. ना० १।८।२८-३४ ।

१०. पम्हुट्टा (ख, ग) ।

११ णिवद्ध (वृपा) ।

१२. स० पा०—तयावर ईहापूह जाव सण्णि-जाइसरणे ।

१३ जाई^० (घ) ।

१४ अभिसमण्णागच्छति (ग) ।

१५ अरिहा (क) ।

- १८३ तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छति ॥
- १८४ तए णं महव्वलपामोक्खा सत्तवि य' वालवयंसा एगयओ अभिसमण्णागया वि होत्था ॥
- १८५ तए ण मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एव वयासी—एवं खलु अह देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा जाव' पव्वयामि । त तुव्वभे ण किं करेह ? किं ववसह ? 'किं वा भे हियडच्छिए सामत्ये' ?
- १८६ तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लि अरह एव वयासी—जइ ण तुव्वभे देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा जाव' पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलवणे वा आहारे वा पडिवधे वा ? जह चेव ण देवाणुप्पिया ! तुव्वभे अम्ह इओ तच्चे भवग्गहणे वहूसु कज्जेसु' य मेढी पमाण जाव' धम्मवुरा होत्था, तह' चेव णं देवाणुप्पिया ! इण्हि पि जाव' धम्मवुरा भविस्सह । अम्हे वि ण देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा' भीया जम्मणमरणाण देवाणुप्पिया'—सद्धि मुडा भवित्ता' •ण अगाराओ अणगारिय ° पव्वयामो ॥
- १८७ तए ण मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एव वयासी—जइ णं तुव्वभे ससारभउव्विग्गा जाव' मए सद्धि पव्वयह, त गच्छह ण तुव्वभे देवाणुप्पिया ! सएहिं-सएहिं रज्जेहिं जेट्ठपुत्ते" ठावेह, ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ" दुरुहह", मम अतिय पाउव्वभवह ॥
- १८८ तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लिस्स अरहओ एयमट्ट पडिसुणेति ॥
- १८९ तए ण मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो गहाय जेणेव कुभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुभगस्स पाएसु पाडेइ ॥
- १९० तए ण कुभए ते जियसत्तुपामोक्खे विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-

१. पिय (ख) ।

२. ना० १।५।८६ ।

३. के भे हियसामत्ये (क, ख, ग); १।५।८६ सूत्रात् किंचित् पाठः स्वीकृतः ।

४. ना० १।५।८६ ।

५. पू०—ना० १।५।९० ।

६. ना० १।५।९० ।

७. तहा (ख, ग, घ) ।

८. ना० १।५।९० ।

९. भउव्विग्गा जाव (क, ख, ग, घ) । अगुद्ध प्रतिभाति ।

१०. देवाणुप्पियाण (क्व °) ।

११. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामो ।

१२. ना० १।५।८६ ।

१३. °पुत्ते रज्जे (ख, ग, घ) ।

१४. सीविया (क) ।

१५. दुरुडा समाणा (क); अस्याध्ययनस्य १४ सूत्रेपि 'दुरुडा समाणा' इति पाठोस्ति ।

वत्थ-गंध-मल्लालकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ^१, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडि-
विसज्जेइ ॥

१९१. तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुभएण रण्णा विसज्जिया समाणा
जेणेव साइ-साइ रज्जाइं जेणेव [साइ-साइ ?] नगराइ तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता 'सगाइ-सगाइ'^२ रज्जाइ उवसपज्जित्ता ण विहरति ॥

१९२. तए ण मल्ली अरहा सक्कच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि त्ति मण पहारेइ^३ ॥

१९३. तेण कालेण तेण समएण सक्कस्स आसण चलइ ॥

१९४. तए ण से^४ सक्के देविदे देवराया आसण चलय पासइ, पासित्ता ओहिं
पउंजइ, पउजित्ता मल्लि अरह ओहिणा आभोएइ । इमेयारूवे अज्भत्थिए
चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु जवुद्दीवे दीवे भारहे
वासे मिहिलाए नयरीए कुभगस्स रण्णो [धूया पभावईए देवीए अत्तया ?]
मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मण पहारेइ । त जीयमेय तीय-पच्चुप्पण-
मणागयाण सक्काण अरहताण भगवताण निक्खममाणण इमेयारूव अत्थ-
संपयाण दलइत्तए, [त जहा—

संगहणी-गाहा—

तिण्णेव य कोडिसया, अट्टासीइ च हुत्ति कोडीओ ।

असिइ च सयसहस्सा^५, इंदा दलयति अरहाण ॥१॥]

एव सपेहेइ, सपेहेत्ता वेसमण देव सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—एव खलु
देवाणुप्पिया ! जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे^६ •मिहिलाए रायहाणीए कुभगस्स
रण्णो धूया पभावईए देवीए अत्तया मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मणं
पहारेइ जाव इदा दलयति अरहाण । ° तं गच्छह ण देवाणुप्पिया ! जवुद्दीव
दीव भारह वास मिहिलं रायहाणिं कुभगस्स रण्णो भवणसि इमेयारूव अत्थ-
सपयाण साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणाहि ॥

१९५. तए ण से वेसमणे देवे सक्केणं देविदेण देवरण्णा एव वुत्ते समाणे हट्टुट्टे करयल^७
•परिगहियं दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव देवो ! तहत्ति आणाए
विणएण वयण ° पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जभए देवे सदावेइ, सदावेत्ता एव
वयासी—गच्छह ण तुव्भे देवाणुप्पिया ! जवुद्दीवं दीव भारहं वास मिहिल

१. सम्माणेई जाव (क, ख, ग) ।

२. सयाइ २ (ख) ।

३. सपहारेइ (क); सपाहारेति (ख), पाहारेइ
(ग) ।

४. X (ख) ।

५. सयसहस्स (ग, घ) ।

६. स० पा०—वासे जाव असीइ च सयसहस्सा
दलइत्तए । अत्र सक्षेपीकरणे किञ्चित्
त्रिपर्ययो जात इति सभाव्यते ।

७. स० पा०—करयल जाव पडिसुणेइ ।

रायहाणि कुभगस्स रण्णो भवणंमि तिण्णि कोडिसया अट्टासीड च कोडीओ
असीइ सयसहस्साइ—इमेयारूव अत्थ-सपयाण साहरह, साहरित्ता मम
एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

१६६ तए ण ते जभगा देवा वेसमणेणं देवेण एव वुत्ता समाणा जाव' पडिसुणेत्ता
उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमति अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्वाएण
समोहण्णति, समोहणित्ता सखेज्जाइ जोयणाइ दड निसिरति, जाव' उत्तरवेउ-
व्वियाइ रूवाइ विउव्वति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्टाए जाव' देवगईए वीईवय-
माणा-वीईवयमाणा जेणेव जवुद्धीवे दीवे भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी
जेणेव कुभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कुभगस्स रण्णो
भवणसि तिण्णि कोडिसया जाव' साहरति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे
तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल' परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त
मत्थए अजलि कट्टु तमाणत्तिय० पच्चप्पिणति ॥

१६७ तए ण से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता करयलपरिग्गहिय जाव' तमाणत्तिय पच्चप्पिणड ॥

१६८ तए ण मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागहओ पायरासो त्ति वहुण सणाहाण
य अणाहाण य पथियाण य पहियाण य करोडियाण' य कप्पडियाण य 'एगमेग
हिरण्णकोडि अट्टु य अणूणाइं सयसहस्साइ—इमेयारूव अत्थ-संपयाण'०
दलयड ॥

१६९ तए णं कुंभए राया मिहिलाए रायहाणीए तत्थ-तत्थ तहि-तहि देसे-देसे वहुओ
महाणससालाओ करेइ । तत्थ ण वहवे इमणुया दिण्णभइ-भत्त-वेयणा विउल
असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेति । जे जहा आगच्छति, त जहा—पथिया
वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासडत्था वा गिहत्था वा, तस्स
य तथा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स त विउल असण-पाण-खाइम-
साइम परिभाएमाणा परिवेसेमाणा' विहरति ॥

२०० तए ण मिहिलाए नयरीए सिघाडंग'०-०तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-
पहेसु० बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ—एव खलु देवाणुप्पिया । कुभगस्स
रण्णो भवणसि सव्वकामगुणिय किमिच्छियं विपुल असण-पाण-खाइम-साइम

१. ना० १।८।१६५ ।

२, ३. राय० सू० १० ।

४. ना० १।८।१६५ ।

५. स० पा०—करयल जाव पच्चप्पिणति ।

६. ना० १।८।१६६ ।

७ काउडियाण (वृषा) ।

८ एगमेग हत्थामास ति वाचनान्तरे दृश्यते(वृ)।

९ परिवेसमाणा (क, ख) ।

१०. स० पा०—सिघाडंग जाव बहुजणो ।

वहूण समणाण य^१ •माहणाण य सणाहाण य अणाहाण य पथियाण य एहियाण
य करोडियाण य कप्पडियाण य परिभाइज्जइ^२ परिवेसिज्जइ^३ ।

संगहणी-गाहा—

वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छिय दिज्जए बहुविहीय ।
सुर-असुर देव-दाणव-नरिद-महियाण निक्खमणे ॥१॥

२०१ तए ण मल्ली अरहा सवच्छरेण तिण्णि कोडिसया अट्टासीइ च^४ कोडीओ
असीइ सयसहस्साइ^५—इमेयारुव अत्थ-सपयाण दलइत्ता निक्खमामि त्ति मण
पहारेइ^६ ॥

२०२ तेण कालेण तेण समएण लोगतिया देवा वभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे^७
सएहि-सएहि विमाणेहि सएहि-सएहि पासायवाडिसएहि पत्तेय-पत्तेय चउहि सामा-
णियसाहस्सीहि तिहि परिसाहि सत्तहि अणिएहि सत्तहि अणियाहिवईहि
सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्साहि अण्णेहि य वहूहि लोगतिएहि देवेहि सद्धि
सपरिवुडा महयाअहय-नट्ट-गीय-वाइय^८—•तती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइग-
पडुप्पवाइय^९ रवेण [विउलाइ भोगभोगाइ ?] भुंजमाणा विहरति, त जहा—

संगहणी-गाहा

सारस्सयमाइच्चा, वण्णी वरुणा य गट्ठोया य ।

तुसिया अग्गिवाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य^{१०} ॥१॥

२०३ तए ण तेसि लोगतियाण देवाण पत्तेय-पत्तेय आसणाइ चलति तहेव जाव^{१०} त
जीयमेय लोगतियाण देवाण अरहताण भगवताण निक्खममाणाण सबोहण
करित्तए त्ति । त गच्छामो ण अम्हे वि मल्लिस्स अरहओ सबोहण करेमो त्ति
कट्ठु एव सपेहेति, सपेहेत्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमति, अवक्कमित्ता
वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति, समोहणित्ता सखेज्जाइ जोयणाइ दड निसि-
रति, एव जहा जभगा जाव^{१०} जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुभगस्स रण्णो
भवणे जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अतलिक्ख-

१ स० पा०—समणाण य जाव परिवेसिज्जइ ।

२ सूरासूरिय परिवेसिज्जइ—इति वाचनान्तरम्
(वृ) ।

३. च होति (क, ख, ग, घ) ।

४ च सयसहस्सा (क, ख, ग, घ) ।

५ पघारेति (ख, घ) ।

६ विमाणे पत्थडे (ख, ग, घ) ।

७ स० पा०—वाइय जाव रवेण ।

८ क्वचिद् दशविधा एते व्याख्यायन्ते, अस्मा-
भिस्तु स्थानाङ्गानुसारेणैवमभिहिता. (वृ) ।

९. ना० १।८।१६४ ।

१० ना० १।८।१६६ ।

पडिवण्णा सखिखिणियाइ' •दसद्धवण्णाइ ° वत्थाइ पवरं परिहिया करयल'-
 •परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु ° ताहि इट्ठाहि' •कर्ताहि
 पियारिह मणुण्णाहि मणामाहि वग्गूहि ° एव वयासी—वुज्झाहि भगव लोगणाहा!
 पवत्तेहि धम्मतित्थ जीवाण हियसुहनिस्सेयसकर भविस्सइ त्ति कट्टु दोच्चपि
 तच्चपि एव वयति, मल्लि अरह वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव
 दिसि पाउवभूया तामेव दिसि पडिगया ॥

२०४. तए ण मल्ली अरहा तेहि लोगतिएहि देवेहि सवोहिए समाणे जेणेव अम्मा-
 पियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'•परिग्गहिय दसणह सिरसा-
 वत्त मत्थए अजलि कट्टु ° एवं वयासी—इच्छामि ण अम्मयाओ । तुव्भेहि
 अवभणुण्णाए समाणे मुडे भवित्ता' •ण अगाराओ अणगारिय ° पव्वइत्तए ।
 अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवध करेह ॥
२०५. तए ण कुभए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव
 भो देवाणुप्पिया । अट्टसहस्सेण सोवण्णियाण कलसाण जाव" अट्टसहस्सेण
 भोमेज्जाण कलसाण अण्ण च महत्थ' •महग्घ महरिह विउल ° तित्थयराभि-
 सेय उवट्टवेह । तेवि जाव उवट्टवेति ॥
२०६. तेणं कालेण तेण समएण चमरे असुरिदे जाव' अच्चुयपज्जवसाणा आगया ॥
२०७. तए ण सक्के देविदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
 खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । अट्टसहस्सेण सोवण्णियाण कलसाण जाव" °
 अण्ण च" •महत्थ महग्घ महरिह ° विउल तित्थयराभिसेय उवट्टवेह । तेवि
 जाव उवट्टवेति । तेवि कलसा 'तेसु चेव कलसेसु'" अणुपविट्ठा ॥
२०८. तए ण से सक्के देविदे देवराया कुभए य राया मल्लि अरह सीहासणसि
 पुरत्थाभिमुह निवेसेति", अट्टसहस्सेण सोवण्णियाण कलसाण जाव" तित्थयरा-
 भिसेय अभिसिचति ॥
२०९. तए ण मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिल च

१. स० पा०—सखिखिणियाइ जाव वत्थाइ ।
 अत्र वस्तुत 'जाव परिहिए' इति सक्षेपो
 युज्यते । पूर्वसूत्रेष्वपि इत्यमेव लब्धत्वात् ॥

२. विभक्तिरहित पदम् ।

३. स० पा०—करयल ° ।

४. स० पा०—इट्ठाहि जाव एव ।

५. सं० पा०—करयल ° ।

६. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए ।

७. राय० सू० २८० ।

८. स० पा०—महत्थ जाव तित्थयराभिसेय ।

९. जवु० वक्खारो ५ ।

१०. ना० १।८।२०५ ।

११. स० पा०—अण्ण च त विउल ।

१२. ते चेव कलसे (ख, ग) ।

१३. निवेसेइ (क, ख, ग, घ) ।

१४. ना० १।८।२०५ ।

- सर्विभतरवाहिरिय जाव' सव्वओ समता 'आधावति परिधावति'^१ ॥
- २१० तए ण कुभए राया दोच्चपि उत्तरावकमण सीहासण रयावेइ, जाव' सव्वालकारविभूसिय करेइ, करेत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मणोरम सीय उवट्टवेह । तेवि उवट्टवेति ॥
२११. तए ण सक्के देविदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखभसय-सण्णिविट्ठ जाव' मणोरम सीय उवट्टवेह । तेवि जाव उवट्टवेति । सावि सीया त चेव सीय अणुप्पविट्ठा ॥
- २१२ तए ण मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टेत्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरम सीय अणुपयाहिणीकरेमाणे^२ मणोरम सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥
२१३. तए णं कुभए अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी— तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव' सव्वालकारविभूसिया मल्लिस्स सीय परिवहह । तेवि जाव परिवहति ॥
- २१४ तए णं सक्के देविदे देवराया मणोरमाए सीयाए दक्खिणिल्ल^३ उवरिल्ल वाह गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्ल उवरिल्ल वाह गेण्हइ, चमरे दाहिणिल्ल हेट्ठिल्ल, वली उत्तरिल्ल हेट्ठिल्ल, अवसेसा देवा जहारिह मणोरम सीय परिवहति ।

संगहणी-गाहा—

पुंवि उक्खित्ता, माणुसेहि साहट्टरोमकूवेहि^४ ।
पच्छा वहति सीय, असुरिदसुरिदनागिंदा ॥१॥
चलचवलकुडलघरा, सच्छदविउव्वियाभरणधारी ।
देविददानविदा, वहति सीय जिणिदस्स ॥२॥

- २१५ तए ण मल्लिस्स अरहओ मणोरम सीयं दुरुहस्स^५ समाणस्स इमे अट्टमगला पुरओ अहाणुपुव्वीए सपत्थिया— एव निग्गमो जहा जमालिस्स^६ ॥
- २१६ तए ण मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पेगइया देवा मिहिल रायहारिणि

१ राय० सू० २८१, जवु० वक्खारो ५ ।

२ सपरिधावति (क, ख, ग, घ) ।

३ ना० १।१।१२८ ।

४ ना० १।१।१२६ ।

५ × (क), °करेमाणा (ग) ।

६ ना० १।८।१७६ ।

७ दक्खिणिल्लेण (ग) ।

८. °रोमपुलएहि (आयारचूला १५।२८ गा० १२) ।

९ दुरुहस्स (ख, घ) ।

१० भगवत्या (६।३३) यथा जमालेनिष्क्रमण तथेह वाच्य, इहैव यथा मेघकुमारस्य, नवर चमरधारितरुण्यादिषु शक्रेशानादीन्द्रप्रवेशत इह विशेष (वृ) । ओ० सू० ६४-६८ ।

अग्निभतरवाहिर आसिय-संमज्जिय-संमट्ट-सुइ-रत्थंतरावणवीहियं करेति 'जाव परिधावति' ॥

- २१७ तए ण मल्ली अरहा जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सीयाओ पच्चोरुहइ, 'आभरणालकार ओमुयइ ॥
२१८. तए ण पभावई हसलक्खणेणं पडसाडएण आभरणालंकार पडिच्छइ" ॥
- २१९ तए ण मल्ली अरहा सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ ॥
२२०. तए ण सक्के देविदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छिता खीरोदग-समुद्धे साहरइ ॥
- २२१ तए ण मल्ली अरहा नमोत्थु ण सिद्धाण ति कट्टु सामाइयचरित्त पडिवज्जइ । ज समय च ण मल्ली अरहा सामाइयचरित्त पडिवज्जइ, त समय च णं देवाण माणुसाण य निग्घोसे तुडिय-णिणाए' गीय-वाइय'-निग्घोसे य सक्कवयणसदे-सेण निलुक्के यावि होत्या । ज समय च ण मल्ली अरहा सामाइयचारित्त' पडि-वण्णे त समय च मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवणाणं समुप्पण्णे ॥
- २२२ मल्ली ण अरहा जे से हेमताण दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोसमुद्धे तस्स ण पोसमुद्धस्स एककारसीपक्खेण पुव्वण्हकालसमयसि अट्टमेण भत्तेण अपाणएणं अस्सिणीहि नक्खत्तेण जोगमुवागएण तिहि इत्थीसएहि—अग्निभतरियाए परि-साए, तिहि पुरिससएहि—वाहिरियाए परिसाए सद्धि मुडे भवित्ता पव्वइए ॥
- २२३ मल्लि अरह इमे अट्ट नायकुमारा अणुपव्वइसु, तं जहा—

१. आसिय अग्निभतरवासविहि, गाहा जाव परिधावति (क, ख, ग, घ), 'अप्पेगइया देवा मचाइमचकलिय करेतीत्यादिमेघकुमार-निष्क्रमणोक्तनगरवर्णकस्य' तथा 'अप्पेगइया देवा हिरण्णवास वासिसु एव सुवन्नवास वासिसु एव रयण-वइर-पुप्फ-मल्ल-गध-चुण्ण-आभरणवासं वासिसु' इत्यादि वर्षासमूहस्य तथा 'अप्पेगइया देवा हिरण्णविहि भाइसु एव सुवण्णविहि भाइसु' इत्यादिविधिसमूहस्य तीर्थकरजन्माभिषेकोक्त-सग्रहार्था या क्वचिद् गाथा सन्ति ता अनुसृत्य सूत्रमध्येय यावदप्पे-गइया देवा आधावति परिधावतीत्येतदवसान-मित्यर्थं । इदं च राजप्रश्नकृतादौ (सू० २८१) द्रष्टव्यमिति (वृ) ।

वृत्तिकृता निर्दिष्टो नगरवर्णको मेघकुमार-निष्क्रमणप्रकरणे नास्ति, किन्तु जन्मोत्सव-प्रकरणे लभ्यते । द्रष्टव्य १।१।७६ सूत्रम् । वृत्तिकृता पाठान्तररूपेण निर्दिष्टा गाथा आदर्शेषु प्रकटरूपेण न लभ्यन्ते वृत्तावपि लिखिता न सन्ति । ना० १।८।२०६ ।

२. आभरणालकार पभावई पडिच्छइ (क, ख, ग, घ) असौ पाठः सक्षिप्तलिपिपद्धत्या कालक्रमेण अपूर्णो जातः । असौ च १।१।१४८ सूत्रमनुसृत्य पूरितः ।

३. णाए (ग) ।

४. वाइयपणिय (ग, घ) ।

५. सामाइय (क) ।

गाहा—

नदे य नदिमित्ते, सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य ।

अमरवइ अमरसेणे, महसेणे चेव अट्टमए ॥

२२४ तए ण ते भवणवइ-वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया देवा मल्लिस्स अरहओ
निक्खमण-महिम करेति, करेत्ता जेणेव नदीसरे' •दीवे तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता अट्टाहिय महिम करेति, करेत्ता जामेव दिसि पाउढभूया तामेव
दिसि° पडिगया ॥

मल्लिस्स केवलणाण-पदं

२२५ तए णं मल्ली अरहा ज चेव दिवस पव्वइए, तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकाल-
समयसि' असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयसि सुहासणवरगयस्स सुहेण
परिणामेण पसत्थाहि लेसाहि तयावरण-कम्मरय-विकरणकरं अपुव्वकरण
अणुपविट्ठस्स अणते' •अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवल-
वरणाणदसणे समुप्पण्णे ॥

२२६. तेण कालेण तेण समएण सव्वदेवाण आसणाड चलेति, समोसढा धम्म सुणेति,
सुणेत्ता जेणेव नदीसरे दीवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अट्टाहिय' महिम
करेति, करेत्ता जामेव दिसि पाउढभूया तामेव दिसि° पडिगया । कुभए वि
निगच्छइ ।

जियसत्तुपामोक्खाणं पव्वज्जा-पदं

२२७ तए ण ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेट्टपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्स-
वाहिणीयाओ [सीयाओ ?] दुरूढा [समाणा ?] सव्विड्डीए जेणेव मल्ली
अरहा तेणेव उवागच्छति जाव' पज्जुवासति ॥

२२८ तए ण मल्ली अरहा तीसे महइमहालियाए परिसाए, कुभगस्स रण्णो, तेसिं च'
जियसत्तुपामोक्खाण छण्ह राईण धम्म परिकहेइ । परिसा जामेव दिसि
पाउढभूया तामेव दिसि पडिगया । कुभए समणोवासए जाव पडिगए,
पभावई य ॥

२२९ तए ण जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो धम्म सोच्चा निसम्म एव वयासी—
आलित्तए णं भते ! लोए, पलित्तए ण भते ! लोए, आलित्त-पलित्तए णं भते !

१. स० पा०—नदीसरे अट्टाहिय करेति जाव
पडिगया ।

४ स० पा०—अट्टाहिय महानदीसर जामेव
दिस पाउ जाव पडिगए ।

२ पुव्वावरण्ह° (क, ग, घ) ।

५ ओ० सू० ६६ ।

३ स० पा०—अणते जाव समुपण्णे ।

लोए जराए मरणेण य जाव^१ पव्वइया जाव^२ चोद्दसपुव्विणो । अणते वरणाण-
दसणे केवले [समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा ?] सिद्धा ॥

मल्लिस्स सिस्ससपदा-पद

- २३० तए ण मल्ली अरहा सहस्सववणाओ उज्जाणाओ निक्खमइ, निक्खमित्ता
वहिया जणवयविहार विहरइ ॥
- २३१ मल्लिस्स णं अरहओ भिसगपामोक्खा अट्ठावीस गणा अट्ठावीस गणहरा
होत्था ॥
- २३२ मल्लिस्स ण अरहओ चत्तालीस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसपया
होत्था, वधुमइपामोक्खाओ पणपन्न अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जिया-
सपया होत्था, सावयाणं एगा सयसाहस्सी चुलसीइ सहस्सा, सावियाण तिण्णि
सयसाहस्सीओ पण्णट्ठि च सहस्सा, छस्सया चोद्दसपुव्वीण, वीस सया ओहि-
नाणीण, वत्तीस सया केवलनाणीण, पणतीस सया वेउव्वियाण, अट्ठसया
मणपज्जवनाणीण, चोद्दससया वाईण,^३ वीस सया अणुत्तरोववाइयाण ॥
२३३. मल्लिस्स ण अरहओ दुविहा अतकरभूमी^४ होत्था, त जहा—जुगतकरभूमी
परियायतकरभूमी य । जाव वीसइमाओ पुरिसजुगाओ जुगतकरभूमी
दुवासपरियाए^५ अतमकासी ॥
- २३४ मल्ली ण अरहा पणुवीस धणूइ उड्ड उच्चत्तेणं, वण्णेण पियगुसामे समचउरस-
सठाणे वज्जरिसहनाराय-सघयणे मज्झदेसे सुहसुहेणं विहरित्ता जेणेव सम्मेए^६
पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सम्मेयसेलसिहरे पाओवगमणुवन्ने^७ ॥

मल्लिस्स निव्वाण-पद

२३५. मल्ली ण अरहा एग वाससयं अगारवासमज्झे पणपण्ण वाससहस्साइ वाससय-
ऊणाइ केवलपरियाग पाउणित्ता पणपण्ण वाससहस्साइं सव्वाउय पालइत्ता
जे से गिम्हाण पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेतसुद्धे, तस्स ण चेतसुद्धस्स चउत्थीए
पक्खेण^८ भरणीए नक्खत्तेण [जोगमुवागएण ?] अद्धरत्तकालसमयसि पचहिं
अज्जियासएहिं—अब्भितरियाए परिसाए, पचहिं अणगारसएहिं—वाहिरियाए

१ ना० १।१।१४६, १५० ।

२ भग० २।१ ।

३ वातीण (ग) ।

४. अतगड० (घ) ।

५ 'दुमासपरियाए' इति क्वचित् क्वचिच्च
'उमासपरियाए' इति दृश्यते (वृ),

दुवालस० (क) अशुद्ध प्रतिभाति ।

६. सम्मेते (ग, घ) ।

७. पाओवगमणुवण्णे (ख); पाओवगमणुवण्णे
(ग) ।

८. × (ख, ग) ।

परिस्राए, मासिएणं भत्तेण अपाणएणं वग्घारियपाणी 'पाए साहट्टु'^१ खीणे वेयणिज्जे आउए नामगोए सिद्धे । एव परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए,^२ नदीसरे अट्टाहियाओ पडिगयाओ ॥

निक्खेव-पद

२३६. एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स नायज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा—

उग्गतवसजमवओ, पगिट्टफलसाहगस्स वि जयिस्स ।
 घम्मविसए वि सुहमा वि, होइ माया अणत्थाय ॥१॥
 जह मल्लिस्स महावल-भवम्मि तित्थयरत्तामवधे वि ।
 तव-विसय-थेवमाया जाया जुवइत्त-हेउत्ति ॥२॥

१० तए ण सा नावा तेण कालियवाएण आहुणिज्जमाणी-आहुणिज्जमाणी
 संचालिज्जमाणी-संचालिज्जमाणी सखोभिज्जमाणी-संखोभिज्जमाणी सलिल-
 तिकख-वेगेहिं अइअट्टिज्जमाणी'-अइअट्टिज्जमाणी कोट्टिमंसि' करतलाहते विव
 तिदूसए' तत्थेव-तत्थेव ओवयमाणी य उप्पयमाणी य, उप्पयमाणी विव
 धरणीयलाओ सिद्धविज्जा विज्जाहरकन्नगा, ओवयमाणी विव गगणतलाओ
 भट्टुविज्जा विज्जाहरकन्नगा, विपलायमाणी विव महागरुल-वेग-वित्तासिय
 भुयगवरकन्नगा, धावमाणी विव महाजण-रसियसद्-वित्तत्था ठाणभट्टा
 आसकिसोरी, निगुजमाणी विव गुरुजण-दिट्ठावराहा सुजणकुलकन्नगा, घुम्ममाणी
 विव वीचि'-पहार-सय-तालिया', गलिय-लवणा विव गगणतलाओ', रोयमाणी
 विव सलिलगथि'-विप्पइर-माण-थोरसुवाएहि नववहू उवरयभत्तुया, विलवमाणी
 विव परचक्करायाभिरोहिया परममह्वभयाभिद्दुया महापुरवरी, भायमाणी
 विव कवड-च्छोमण-पओगजुत्ता जोगपरिवाइया, नीससमाणी विव महाकंतर-
 विणिग्गय-परिस्सता परिणयवया अम्मया, सोयमाणी विव तव-चरण-खीण-
 परिभोगा चवणकाले देववरवहू, सच्चुण्णियकट्टु-कूवरा, भग्गमेढि-मोडिय-
 सहस्समाला, सूलाइय'-वकपरिमासा', फलहतर-तडतडेत-फुट्ट-सधिवियलंत-
 लोहकीलिया'', सव्वग-वियभिया, परिसडियरज्जुविसरतसव्वगत्ता, आमगमल्ल-
 गभूया, अकयपुण्ण-जणमणोरहो विव चित्तिज्जमाणगुरुई'' हाहाककय'-कण्णधार-
 नाविय-वाणियगजण-कम्मकर'-विलविया नाणाविह-रयण-पणिय-सपुण्ण
 वहूहिं पुरिससएहिं रोयमाणेहिं कंदमाणेहिं सोयमाणेहिं तिप्पमाणेहिं विलव-
 माणेहिं एग मह अतोजलगय गिरिसिहरमासाइत्ता सभग्गकूवतोरणा
 मोडियज्झयदडा वलयसयखडिया करकरस्स तत्थेव विद्व उवगया ॥

११. तए ण तोए नावाए भिज्जमाणीए ते वहवे पुरिसा विपुल-पणिय-भंडमायाए
 अतोजलमि निमज्जाविया'' यावि होत्था ॥

१२ तए ण ते मागदिय-दारगा छेया दक्खा पत्तट्टा कुसला मेहावी'' निउणसिप्पो-

१ अइयट्टि° (क, ख), अइवट्टि° (क्व) ।

८ सूलातित (वृषा) ।

२. कोट्टिम (क, ख, घ) ।

९. °पारिमासा (क, ख) ।

३. तेदूसए (क) ।

१०. °खीलिया (क, ख, ग) ।

४. वीयी (क), वीती (ख, ग) ।

११. °गुस्ती (ख, ग, घ) ।

५ ताडिता हि स्त्री वेदनया घूर्णयन्तीत्येव-
 मुपमान द्रष्टव्यम् (वृ) ।

१२ हाहाकय (क) ।

६ पतितेति गम्यते (वृ); क्वचित्तु 'गलितल-
 वना' इत्येतावदेव दृश्यते ।

१३ कम्मगार (क); कम्मकार (ग, घ) ।

७ °गठि (घ) ।

१४. निवज्जाविया (ख) ।

१५. मेहाविणो (क) ।

वगया बहूसु^१ पोयवहण-सपराएसु कयकरणा लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एग मह फलगखडं आसादेति ॥

रयणदीव-पदं

१३ जसि^२ च ण पएससि से पोयवहणे विवण्णे तंसि^३ च ण पएससि एगे मह रयणदीवे नाम दीवे होत्था—अणेगाइ जोयणाइ आयामविक्खभेण अणेगाइ जोयणाइ परिक्खेवेण नाणादुमसड-मडिउद्देसे सस्सिरीए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

तस्स^४ बहुमज्झदेसभाए, एत्थ^५ ण मह एगे पासायवडेंसए 'यावि होत्था'^६—अव्भुग्गयमूसिय-पहसिए जाव^७ सस्सिरीयरूवे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

तत्थ ण पासायवडेसए रयणदीव'-देवया नाम देवया परिवसइ—पावा चडा रुद्धा खुद्धा साहस्सिया^८ ।

तस्स ण पासायवडेसयस्स चउद्विसि चत्तारि वणसडा—किण्हा किण्होभासा^९ ॥
१४ तए ण ते माकदिय-दारगा तेण फलयखडेण 'ओवुज्झमाणा-ओवुज्झमाणा'^{१०} रयणदीवतेण सवूढा यावि होत्था ॥

१५ तए ण ते मागदिय^{११}-दारगा थाह लभति,^{१२} मुहुत्तर आससति, फलगखड विसज्जेति, रयणदीव उत्तरति, फलाण मग्गण-गवेसण करेति, फलाइ आहारेति, नालिएराण मग्गण-गवेसण करेति, नालिएराइ^{१३} फोडेति, नालिएरतेल्लेण^{१४} अण्णमण्णस्स गायाइ अव्भगेति, पोक्खरणीओ ओगाहेति, जलमज्जण करेति,^{१५} पोक्खरणीओ ° पच्चुत्तरति, पुढविसिलावट्टयसि निसीयति, निसीइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया चप नयरिं अम्मापिउआपुच्छण च लवण-समुद्दोत्तारण च कालियवायसम्मुच्छण च पोयवहणविर्वत्ति च फलयखडस्सा-

१ बहूसु (ग, घ) ।

२ जेसि (क, ग, घ) ।

३. तेमि (ख, ग, घ) ।

४ तस्स ण (क, ख, घ) ।

५. तत्थ (क, ख) ।

६. होत्था (क), × (ख) ।

७ ना० १।१।८६ ।

८ रयणदीव (ख) ।

९ साहसिया (क्व °) ।

१० पू०—ना० १।७।१३ ।

११ ओवु° २ (ख) ।

१२ माकदिय (क्व) ।

१३ लहति (ख, ग) ।

१४ नालियराय (ख) ।

१५ °तिल्लेणं (क), नालियर ° (ख),

नालियरस्स (ग, घ) ।

१६. स० पा०—करेति जाव पच्चुत्तरति ।

नवमं अज्भयणं

मायंदी

उक्खेव-पदं

- १ जइ णं भते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेण अट्टमस्सं नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स ण भते ! नायज्भयणस्सं के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी' । पुण्णभट्ठे चेइए ॥
- ३ तत्थ' ण मायंदी नाम सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे' । तस्स ण भट्ठा नाम भारिया । तीसे ण भट्ठाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था, त जहा - जिणपालिए य जिणरक्खिए य ॥

मागदिय-दारगाणं समुद्द-जत्ता-पद

४. तए ण तेसिं मागदिय-दारगाण अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण' इमेयारुवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एव खलु अम्हे लवणसमुद्द पोयवहणेण एक्कारसवाराओ' ओगाढा । सव्वत्थ वि य ण लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा' पुणरवि नियघर हव्वमागया । त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! दुवालसपिं लवणसमुद्द पोयवहणेण ओगाहित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छत्ति, उवागच्छित्ता

१. ना० १।१।७ ।

२. नायज्भयणस्स समणेण जाव सपत्तेणं (क, ख, ग, घ) ।

३. नयरी पुव्वत्तवन्नण (ख), नयरी पुव्वुत्त (ग) ।

४. एत्थ (ख) ।

५. पू०—ना० १।२।७ ।

६. पू०—ना० १।३।७ ।

७. °वारा (ख, ग, घ) ।

८. अणहसमुग्गा (ख), अणट्ठ ° (ग) ।

९. दुवालसमपि (क) ।

एव वयासी एव खलु अम्हे अम्मयाओ । लवणंसमुद् पोयवहणेण एक्कारसवाराओ^१, ओगाढा । सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि^० नियघर हव्वमागया । त इच्छामो णं अम्मयाओ । तुव्भेहि अरुभणुण्णाया समाणा दुवालसपि^२ लवणंसमुद् पोयवहणेण ओगाहित्तए ॥

- ५ तए ण ते मागदिय-दारए अम्मापियरो एव वयासी—इमे भे जाया । अज्जय^३-
 •पज्जय-पिउपज्जयागए सुवहु हिरण्णे य सुवण्णे य कसे य दूसे य मणि-
 मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव
 आसत्तमाओ कुलवसाओ पगाम दाउं पगाम भोत्तु पगाम^० परिभाएउ । त
 अणुहोह ताव जाया ! विपुले माणुस्सए इड्डीसक्कारसमुदए । कि भे सपच्चा-
 वाएण निरालवणेण लवणंसमुद्दोत्तारेण ? एव खलु पुत्ता । दुवालसमी जत्ता
 सोवसग्गा यावि भवइ । त मा ण तुव्भे दुवे पुत्ता । दुवालसपि^४ लवण^५समुद्
 पोयवहणेण^० ओगाहेह । मा हु तुव्भे सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ ॥
- ६ तए ण ते मागदिय-दारगा अम्मापियरो दोच्चपि तच्चपि एव वयासी—एव
 खलु अम्हे अम्मयाओ । एक्कारसवाराओ लवण^६समुद् पोयवहणेण ओगाढा ।
 सव्वत्थ वि य ण लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघर हव्वमागया ।
 त सेय खलु अम्ह अम्मयाओ । दुवालसपि लवणंसमुद् पोयवहणेण^०
 ओगाहित्तए ॥
- ७ तए ण ते मागदिय-दारए अम्मापियरो जाहे नो सचाएति वहुहि आघवणाहि य
 पणवणाहि य आघवित्तए वा पणवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमद्द
 अणुमणित्था ॥
- ८ तए ण ते मागदिय-दारगा अम्मापिऊहि अरुभणुण्णाया समाणा गणिम च धरिम
 च मेज्ज च पारिज्जेज्ज च भडग गेण्हति, जहा अरहन्नगस्स जाव^७ लवणंसमुद्
 वहुइ जोयणसयाइ ओगाढा ॥

नावा-भग-पदं

- ९ तए ण तेसि मागदिय-दारगाण लवणंसमुद् अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढाण
 समाणाणं अणेगाइ उप्पाइयसयाइ पाउव्वभूयाइ, त जहा—अकाले^८ गज्जिए^९
 •अकाले विज्जुए अकाले^० थणियसद्दे कालियवाए जाव^{१०} समुट्टिए ॥

१ स० पा० वाराओ त चेव जाव नियघर ।

२ दुवालस (क, ख, ग, घ) ।

३ स० पा०—अज्जग जाव परिभाएत्तए ।

४ दुवालसमपि (क, ख) ।

५ स० पा०—लवण जाव ओगाहेह ।

६ स० पा०—लवण जाव ओगाहित्तए ।

७ ना० १।८।६६-७० ।

८ अकाले (क), अयाले (ख) ।

९ स० पा०—गज्जिय जाव थणियसद्दे ।

१० तत्थ (क्व) ।

सायण च रयणदीवोत्तारं^१ च अणुचितेमाणा-अणुचितेमाणा ओह्यमणसंकप्पा^२
 °करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया ° भ्रियायति ॥

रयणदीवदेवया-पदं

१६. तए ण सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए ओहिणा आभोएइ, असि-खेडग^३-
 वग्ग-हत्था सत्तट्टतलप्पमाण उड्ढ वेहास उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए
 जाव^४ देवगईए वीईवयमाणी-वीईवयमाणी जेणेव मागदिय-दारया तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ता^५ ते मागदिय-दारए खर-फरुस-निट्ठुर-
 वयणेहि एव वयासी—हभो मागदिय-दारया^६ । जइ ण तुव्भे मए सद्धि
 विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरह, तो^७ भे अत्थि जीविय । अहण्णं तुव्भे
 मए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणा नो विहरह, तो^८ भे इमेण नीलुप्पल-
 गवलगुलिय^९—°अयसिकुसुमप्पगासेण ° खुरधारेण असिणा रत्तगडममुयाइं
 माउआहि उवसोहियाइ तालफलाणि^{१०} व सीसाइ^{११} एगते एडेमि ॥
- १७ तए ण ते मागदिय-दारगा रयणदीवदेवयाए अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म
 भीया करयल^{१२}—°परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु ° एव वयासी—
 जण्ण देवाणुप्पिया वइस्सति^{१३} तस्स आणा-उववाय-वयण-निहेसे चिट्ठिस्सामो ॥
१८. तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागदिय-दारए गेण्हइ, जेणेव पासायवडेसए
 तेणेव उवागच्छइ, असुभपोग्गलावहार करेइ, सुभपोग्गलपक्खेव करेइ, तओ
 पच्छा तेहि^{१४} सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ, कल्लाकल्लिं च
 अमयफलाइ उवणेइ ॥

रयणदीवदेवयाए मागंदिय-पुत्ताण निहेस-पदं

- १९ तए णं सा रयणदीवदेवया सक्कवयण-सदेसेण सुट्ठिण लवणाहिवइणा लवण-
 समुद्वे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेयव्वे त्ति ज किंचि तत्थ तण वा पत्त वा कट्टु वा

१. रयणुदीवुत्तार (क, ख) ।

७. ता (ग) ।

२. स० पा०—ओह्यमणसकप्पा जाव भ्रिया-
 यति ।

८. ता (ग) ।

३. फलग (ख, ग, घ), वृत्तौ 'खेडग' शब्द-
 स्यार्थं फलकोस्ति । उत्तरवर्त्यादिर्नोपु 'फलक'
 पदस्यैव मूलगाठे स्वीकृतिर्जाता ।

९. स० पा०—गवलगुलिय जाव खुरधारेण ।

१०. तालियफलाणि (क) ।

११. छित्त्वेति वाक्यशेष (वृ) ।

१२. स० पा०—करयल जाव एव ।

४. राय० सू० १० ।

१३. वतिस्सइ (ग) ।

५. आसुरत्ता (क, ख) ।

१४. एहि (ग) ।

६. °दारया अप्पत्थिय मत्थिया (क) ।

कयवर^१ वा असुइ पूइयं^२ दुरभिगधमचोक्ख, त सव्वं आहुणिय-आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्व ति कट्टु निजत्ता ॥

२० तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागदिय-दारए एव वयासी—एवं खलु अह देवाणुप्पिया । सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएण लवणाहिवइणा तं चेव जाव^३ निजत्ता । त जाव^४ अह देवाणुप्पिया । लवणसमुद्दे^५ •तिसत्तखुत्तो अणुपरि-यट्टित्ता ज किञ्चि तत्थ तण वा पत्त वा कट्टु वा कयवरं वा असुइ पूइयं दुरभि-गधमचोक्खं, त सव्व आहुणिय-आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगते^६ एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडेसए मुहसुहेण अभिरममाणा च्चिद्धह । जइ ण तुब्भे एयसि अतरसि उव्विग्गा वा 'उस्सुया वा उप्पुया'^७ वा भवेज्जाह तो ण तुब्भे पुरत्थि-मिल्ल वणसडं गच्छेज्जाह । तत्थ ण दो उऊ सया साहीणा, तं जहा—पाउसे य वासारत्ते य ।

गाहा—

तत्थ उ^१—कदल - सिर्लिध - दतो, निउर - वरपुप्फपीवरकरो ।

कुडयज्जुण-नीव-सुरभिदाणो, पाउसउऊ गयवरो साहीणो ॥१॥

तत्थ य—सुरगोवमणि - विचित्तो, दद्दुरकुलरसिय-उज्झररवो ।

वरहिणवद^२-परिणद्धसिहरो, वासारत्तउऊ पव्वओ साहीणो ॥२॥

तत्थ ण तुब्भे देवाणुप्पिया । बहूसु वावीसु य जाव^३ सरसरपत्तियासु य बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव^४ कुसुमघरएसु य सुहसुहेण अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरिज्जाह । जइ ण तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो ण तुब्भे उत्तरिल्ल वणसडं गच्छेज्जाह । तत्थ ण दो उऊ सया साहीणा, त जहा—सरदो य हेमतो य ।

गाहा—

तत्थ उ—सण - सत्तिवण्ण - कउहो, नीलुप्पल - पउम - नलिण-सिगो ।

सारस - चक्काय - रवियघोसो, सरयउऊ गोवई साहीणो ॥३॥

तत्थ य—'सियकुद-धवलजोण्हो'^१, कुसुमिय-लोद्धवणसड-मडलतलो ।

तुसार-दगघार-पीवरकरो, हेमतउऊ ससी सया साहीणो ॥४॥

१. केयवर (क) ।

(वृ), उप्पुया वा उस्सुया (वृपा) ।

२. पूय (ख) ।

७ य (क) ।

३. ना० १।६।१६ ।

८. °विद (ग) ।

४. जाव ताव (क) ।

९. राय० सू० १७४ ।

५. स० पा०—लवणसमुद्दे जाव एडेमि ।

१०. राय० सू० १८२ ।

६. °उप्पुया (क); उप्पित्था वा उस्सुया ११ °जुण्हो (ख), सितकुइविमलजोण्हो (वृपा) ।

तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वहूसु वावीसु य^१ •जाव सरसरपतियासु य वहूसु
आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेण अभिरममाणा-
अभिरममाणा^० विहरिज्जाह । जइ ण तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा
उप्पुया वा भवेज्जाह तो ण तुब्भे अवरिल्ल वणसडं गच्छेज्जाह । तत्थ ण दो
उऊ सया साहीणां तं जहा—वसते य गिम्हे य ।

गाहा—

तत्थ उ—सहकार - चारुहारो, किंसुय - कण्णियारासोगमउडो ।

ऊसियतिलग - वकुलायवत्तो, वसंतउऊ नरवई साहीणो ॥५॥

तत्थ य—पाडल - सिरीस - सलिलो, मल्लिया-वासतिय-धवलवेलो ।

सीयलसुरभि-निल^२-मगरचरिओ, गिम्हउऊ सागरो साहीणो ॥६॥

तत्थ ण वहूसु^३ •वावीसु य जाव सरसरपतियासु य वहूसु आलीघरएसु य
मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेण अभिरममाणा-अभिरममाणा^०
विहरेज्जाह । जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया
वा भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडेसए तेणेव उवागच्छेज्जाह मम पडिवाले-
माणा-पडिवालेमाणा चिट्ठेज्जाह, मा ण तुब्भे दक्खिणिल्ल वणसडं गच्छेज्जाह ।
तत्थ ण मह एगे उग्गविसे^४ चडविसे^५ घोरविसे^६ अइकाए^७ महाकाए^८ मसि-महिस्-
मूसार्-कालए नयणविसरोसपुण्णे^९ अंजणपुज-नियरप्पगासे रत्तच्छे जमल-जुयल-
चचल-चलतजीहे धरणितल-वेणिभूए उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल^{१०}-कक्कड^{११}-
वियड-फडाडोव^{१२}-करणदच्छे लोहागर-धम्ममाण^{१३}-धमधमेतघोसे अणागलिय-
चंडतिव्वरोसे 'समुहिय-तुरिय-चवल'^{१४} धमते^{१५} दिट्ठीविसे सप्पे परिवसइ । मा णं

१. स० पा०—वावीसु य जाव विहरेज्जाह ।

गोशालकचरिते तथेहाव्येतव्यानीत्यर्थं । तानि

२. अनिल (क, ख, ग, घ); इह वा अनिल-

चैतानि—मसि-महिस्^० ।

शब्दस्य अकारलोपः प्राकृतत्वात् (वृ) ।

८. महिसा (क, ख) ।

३. स० पा०—वहूसु जाव विहरेज्जाह ।

९. मूस (घ) ।

४ भोगविसे (वृपा) ।

१०. पुण्णए (ख) ।

५. घोरविसे महाविसे (क) ।

११. जडिल (क्व०) ।

६ अइकाय (क, ख, ग, घ) ।

१२. कक्कड (क, ख) ।

७. ^०काए जहा तेयनिसग्गे (वृ); वृत्तिगत-

१३ फलाडोव (ख); फणाडोव (घ) ।

व्याख्यया इति प्रतीयते वृत्तिकारस्य

१४. लोहमित्तिगम्यते ।

सम्मुखे ये आदर्शा आसंस्तेषु 'जहा तेय-

१५. समुहिं तुरियचवलं (क, ग), समुहिं तुरिय

निसग्गे' इति सक्षिप्तं. पाठ आसीत्,

चवल (ख) ।

अतएव वृत्तिकृता लिखितम्—जहा

१६. धमधमते (ग) ।

तेयनिसग्गेति—जेवविशेषणानि यथा

तुव्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ—ते मागदिय-दारए दोच्चंपि तच्चपि एवं वदति, वदित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता ताए उक्किट्ठांए^१ देवगईए लवणसमुद्द तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठेउ पयत्ता यावि होत्था ॥

मागदियपुत्ताणं वणसङ्गमण-पदं

२१ तए ण ते मागदिय-दारया तओ मुहुत्तरस्स पासायवडेसए सइ वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा अणमण्ण एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । रयणदीव-देवया अम्हे एव वयासी—एव खलु अह सक्कवयण-सदेसेण सुट्ठिएणं लवणा-हिवइणा^२ निउत्ता जाव^३ मा ण तुव्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ । त सेयं खलु अम्ह देवाणुप्पिया । पुरत्थिमिल्ल वणसङ्ग गमित्तए—अणमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसङ्गे तेणेव उवागच्छति । तत्थ ण वावीसु य जाव^४ आलीघरएसु य जाव^५ सुहसुहेण अभिरममाणा-अभिरम-माणा विहरति ॥

२२ तए णं ते मागदिय-दारगा तत्थ वि सइं वा^६ •रइं वा धिइ वा^७ अलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसङ्गे तेणेव उवागच्छति । तत्थ ण वावीसु य जाव^८ आली-घरएसु य^९ सुहसुहेण अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरति ॥

२३ तए ण ते मागदिय-दारगा तत्थ वि सइं वा^{१०} •रइ वा धिइं वा अलभमाणा^{११} जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसङ्गे तेणेव उवागच्छति । तत्थ ण वावीसु य जाव^{१२} आलीघरएसु य^{१३} सुहसुहेण अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरति ॥

२४ तए ण ते मागदिय-दारगा तत्थ वि सइ वा^{१४} रइं वा धिइ वा^{१५} अलभमाणा अणमण्ण एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हे रयणदीवदेवया एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया । सक्कवयण-सदेसेण सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा^{१६} निउत्ता जाव^{१७} मा ण तुव्भ सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ । त भवियव्व एत्थ कारणेण । त सेय खलु अम्ह दक्खणिल्ल वणसङ्गं गमित्तए त्ति कट्ठु अणमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव दक्खणिल्ले वणसङ्गे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तओ णं गघे निद्धाइ, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव^{१८} अणिट्ठतराए चेव^{१९} ॥

१. पू०—राय० सू० १० ।

२ पू०—ना० १।६।२० ।

३,४,५ ना० १।६।२० ।

६ सं० पा०—सइ वा जाव अलभमाणा ।

७. ना० १।६।२० ।

८ पू०—ना० १।६।२० ।

९. सं० पा०—सइ वा जाव जेणेव ।

१०. ना० १।६।२० ।

११ पू०—ना० १।६।२० ।

१२ सं० पा०—सइ वा जाव अलभमाणा ।

१३. पू०—ना० १।६।२० ।

१४. ना० १।६।२० ।

१५. ना० १।६।२० ।

१६ पू०—ना० १।६।२० ।

२५. तए ण ते मागंदिय-दारगा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं आसाइ 'पिहेति, पिहेत्ता'^१ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसडे तेणेव उवागया । तत्थ ण महं एगं आघयणं^२ पासति—अट्टियरासि-सय-सकुल भीम-दरिस-णिज्ज । एग च तत्थ सूलाइयं^३ पुरिसं कलुणाइ कट्टाइ विस्सराइ कूवमाणं^४ पासति, भीया^५ *तत्था तसिया उव्विग्गा^६ संजायभया जेणेव से सूलाइए पुरिसे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता तं सूलाइयं पुरिसं एवं वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे ? तुम च णं के कओ वा इह हव्वमाणे ? केणं^७ वा इमेयारूव आवय पाविए^८ ?
- २६ तए णं से सूलाइए पुरिसे ते मागंदिय-दारगे एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया । रयणदीवदेवयाए आघयणे । अह ण देवाणुप्पिया । जवुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागदए^९ आसवाणियए विपुलं^{१०} पणियभडमायाए पोयवहणेण लवणसमुद्द ओयाए । तए ण अहं पोयवहण-विवत्तीए निव्वुड्डु-भडसारे एग फलगखड आसाएमि । तए ण अह ओवुज्जमाणे-ओवुज्जमाणे रयणदीवतेण सबूढे । तए णं सा रयणदीवदेवया मम पासइ, पासित्ता मम गेण्हइ, गेण्हित्ता मए सट्ठि विउलाइ भोगभोगाइ भुज्जमाणी विहरइ । तए ण सा रयणदीव-देवया अण्णया कयाइ अहालहुसगसि अवरहसि परिकुविया समाणी मम एयारूव आवय^{११} पावेइ । त न नज्जइ ण देवाणुप्पिया ! तुव्वं पि इमेसिं सरीरगाण का मण्णे आवई भविस्सइ ?
- २७ तए ण ते मागदिय-दारगा तस्स सूलाइगस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म बलियतर भीया^{१२} *तत्था तसिया उव्विग्गा^६ संजायभया सूलाइय पुरिस एव वयासी—कहण्ण देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि नित्थरेज्जामो^{१३} ?
- २८ तए ण से सूलाइए पुरिसे ते मागदिय-दारगे एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया !

१. पेहेति २ (ख) ।

२. आहयण (क), आघतेण (ख, घ) ।

३. सूलाइतय (क), सूलायय (ख), वृत्ती एकस्मिन्नादर्शे 'सूलाइग' अपरस्मिन् च 'सूलाइयग' इति पाठ-सकेतो दृश्यते । शूलिकाभिन्नमिति च व्याख्यातमस्ति ।

४. कुव्वमाण (ख, ग, घ) । वृत्ती—कूजन्तव्यवर्तं शब्दायमान, इति दृश्यते, ततः कुव्वमाण अशुद्ध प्रतिभाति ।

५. स० पा०—भीया जाय संजायभया ।

६. केणइ (क), केणे (ख) ।

७. पाविएसि (क) ।

८. कागदिए (घ), काकदए (क्व) ।

९. विपुल (ख, घ), विउल (ग) ।

१०. आवइ (क, ख), आवति (ग, घ) ।

११. स० पा०—भीया जाव संजायभया ।

१२. नित्थरेज्जामो (ख) ।

पुरत्थिमिल्ले वणसडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसरूवधारी जक्खे परिवसइ । तए णं से सेलए जक्खे चाउद्दसट्टुमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगय-समए पत्तसमए महया-महया सद्देण एव वदइ—क तारयामि ? क पालयामि ? त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरत्थिमिल्ल वणसड सेलगस्स जक्खस्स महरिह पुप्फच्चणियं करेह, करेत्ता जन्नुपायवडिया पजलिउडा^१ विणएण पज्जुवासमाणा विहरह^२ । जाहे ण से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एव वएज्जा—क तारयामि ? क पालयामि ? ताहे तुब्भे 'एव वदह'^३—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि । सेलए भे जक्खे पर रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि नित्थारेज्जा । अण्णहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाण का मण्णे आवई भविस्सइ ?

सेलगजक्ख-पद

- २९ तए ण ते मागदिय-दारगा तस्स सूलाइयस्सें पुरिसस्स अंतिए एयमट्टु सोच्चा निसम्मा सिग्घ चड चवल तुरिय वेइयं जेणेवं पुरत्थिमिल्ले वणसडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोक्खरिणि ओगाहेति, ओगाहेत्ता जलमज्जण करेति, करेत्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव^४ ताइ गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता आलोए पणाम करेति, करेत्ता महरिह पुप्फच्चणिय करेति, करेत्ता जन्नुपायवडिया^५ सुत्सूसमाणा नमसमाणा पज्जुवासति ॥
- ३० तए णं से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एव वयासी—क तारयामि ? क पालयामि ?
- ३१ तए ण ते मागदिय-दारगा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता करयल^६ परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु^७ एव वयासी—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि ॥
३२. तए ण से सेलए जक्खे ते मागदिय-दारए एव वयासी^८—एव खलु देवाणु-प्पिया ! तुब्भ मए सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झमज्झेण वीईवयमाणाण सा रयण-दीवदेवया पावा चडा रुद्धा खुद्धा साहसिया व्हहिं खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं उवसग्ग करेहिइ । त जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्टु आढाह वा परियाणह वा अवयक्खह वा तो भे अह पट्ठाओ^९ विहुणामिं । 'अह ण'^{१०} तुब्भे

१ पजलियडा (ख), अजलिउडा (ग) ।

२ चिट्ठह (क) ।

३. वदह (क), वइज्जह (ख) ।

४ ना० १।२।१४ ।

५. °पडिया य (ग) ।

६ स० पा०—करयल ° ।

७. वदइ (क) ।

८. पट्टतो (ख), पुट्ठाओ (घ) ।

९. विघुणामि (क), विहूणामि (ख) ।

१०. अहण्ण (ग) ।

- रयणदीवदेवयाए एयमट्ट नो आढाह नो परियाणह नो अवयक्खह तो भे
रयणदीवदेवयाए हत्थाओ सार्हत्थि नित्थारेमि ॥
- ३३ तए ण ते मागदिय-दारगा सेलग जक्ख एवं वयासी—जं णं देवाणुप्पिया
वइस्संति^१ तस्स ण [आणा ?] उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठिस्सामो ॥
- ३४ तए णं से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता
वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता संखेज्जाइ जोयणाइं दड निस्सरइ,
दोच्चपि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता एग महं आसख्व
विउव्वइ, विउव्वित्ता मागदिय-दारए एवं वयासी—हं भो मागदिय-दारया !
आरूहह ण देवाणुप्पिया ! मम पट्टसि ॥
३५. तए ण ते मागदिय-दारया हट्ठा सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेति, करेत्ता
सेलगस्स पट्ट दुरूढा ॥
३६. तए ण से सेलए ते मागंदिय-दारए पट्टे दुरूढे जाणित्ता सत्तट्टतलप्पमाणमेत्ताइं
उड्ढ वेहास उप्पयइ^२, उप्पइत्ता ताए उक्किट्टाए तुरियाए चवलाए चडाए
दिक्वाए देवगईए लवणसमुद्द मज्झमज्झेण जेणेव जवुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे
वासे जेणेव चपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

रयणदीवदेवया-उवसग्ग-पदं

३७. तए णं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्द तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टइ, जं तत्थ तणं
वा जाव^३ एगते एडेइ, जेणेव पासायवडेसए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते
मागदिय-दारए पासायवडेसए अपासमाणी जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसडे
तेणेव उवागच्छइ जाव^४ सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ, करेत्ता तेसि
मागदिय-दारगाणं कत्थइ सुइ वा^५ •खुइ वा पउत्ति वा^६ अलभमाणी जेणेव
उत्तरिल्ले, एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउजइ, ते
मागंदिय-दारए सेलएण सद्धि लवणसमुद्द मज्झमज्झेणं वीईवयमाणे पासइ,
पासित्ता आसुरुत्ता असिखेडग गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्ट^७ तलप्पमाणमेत्ताइ उड्ढ
वेहासं^८ उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्टाए^९ देवगईए जेणेव मागंदिय-दारया
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी—हं भो मागदिय-दारगा !
अपत्थियपत्थया ! किण्ण तुव्भे जाणह मम विप्पजहाय सेलएणं जक्खेण सद्धि
लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयमाणा ? त एवमवि गए । जइ ण तुव्भे मम

१. वतति (व); वत्तति (ग, घ) ।

२. पाउप्पयइ (क) ।

३. ना० १।६।१६ ।

४. ना० १।६।२१ ।

५. स० पा०—सुइ वा० ।

६. स० पा०—सत्तट्ट जाव उप्पयइ ।

७. पू०—ना० १।६।३६ ।

अवयक्खह तो भे अत्थि जीविय । अह ण नावयक्खह तो भे इमेण नीलुप्पल-
गवल'गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा रत्तगडमसुयाइ माउ-
आहिं उवसोहियाइ तालफलाणि व सीसाइ एगते° एडेमि ॥

३८ तए ण ते मागदिय-दारगा रयणदीवदेवयाए अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म
अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असभता रयणदीवदेवयाए एयमट्ट नो
आढति' नो परियाणति 'नो अवयक्खति' अणाढामाणा' अपरियाणमाणा
अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेण सद्धि लवणसमुद्द मज्झमज्जेण वीईवयति ॥

३९ तए ण सा रयणदीवदेवया ते मागदिय-दारए जाहे नो सचाएइ वहूहि पडि-
लोमेहिं उवसग्गेहिं' चालित्तए वा 'लोभित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए
वा' ताहे महुरेहि सिगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं' 'उवसग्गेउ पयत्ता'
यावि होत्था—हभो मागदिय-दारगा ! जइ ण तुव्वेहि देवाणुप्पिया ! मए
सद्धि हासियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य हिडियाणि य
मोहियाणि' य ताहे ण तुव्वे सव्वाइ अगणेमाणा मम विप्पजहाय सेलएण
सद्धि लवणसमुद्द मज्झमज्जेण वीईवयह ॥

४० तए ण सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मण ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता
एव वयासी—निच्चपि य ण अह जिणपालियस्स अणिट्टा अकता अप्पिया
अमणुण्णा अमणामा । निच्च मम जिणपालिए अणिट्टे अकते अप्पिए अमणुण्णे
अमणामे । निच्चपि य ण अह जिणरक्खियस्स इट्टा कता पिया मणुण्णा मणामा ।
निच्चपि य ण मम जिणरक्खिए इट्टे कते पिए मणुण्णे मणामे । जइ ण मम
जिणपालिए रोयमाणिं कदमाणिं' सोयमाणिं तिप्पमाणिं'' विलवमाणि नाव-
यक्खइ, किण्ण तुमपि जिणरक्खिया ! मम रोयमाणिं'' •कदमाणि सोयमाणि

१ स० पा०—गवल जाव एडेमि ।

२ आढायति (क) ।

३. नावयक्खति (क) ।

४. अणाढायमाणा (क), अणाढेमाणा (ख),
अणाढामीणा (ग) ।

५. उवसग्गेहि य (ख, ग, घ) ।

६. लोभित्तए वा (क), खोभित्तए वा
विपरिणामित्तए वा लोभित्तए वा (ख) ।

७ °सग्गेहि य (ख) ।

८ उवसग्गेहि य पत्ता (क), उवसग्गे उपयत्ता
(ख), उवसग्गेहि य उपयत्ता (ग) ।

९. एतच्च वाक्य काववा व्याख्येयम्, तत
उपालभ प्रतीयते (वृ) ।

१० × (क) ।

११. × (ख, घ) ।

१२. स० पा०—रोयमाणि जाव नावयक्खति ।

तिप्पमाणि विलवमाणि ° नावयक्खसि' ?

१. अतोअ्रे आदशेषु 'तए ण इति पदमस्ति । ततश्चाष्टौ श्लोकाः उल्लिखिताः सन्ति । वृत्त्यनुसारेण ते श्लोका वाचनान्तरवर्तिनः सन्ति, यथा—तए ण सा रयणदीवेत्यादि सूत्र वाचनान्तरे रूपकविशेषेण द्वय भ्रान्ति करोति' (वृ) । तए ण सा रयणदी-वेत्यस्मिन् सूत्रे 'जिणरक्खियस्स मण ओहिणा आभोएइ', इति वाक्यमस्ति,

'सा पवररयणदीवम्स, देवया ओहिणा जिणरक्खियस्स नाऊण ।'

वधनिमित्त उवरिं, मागदिय-दारगाण दोण्हपि ॥१॥

दोसकलिया सललियं, नाणाविह-चुण्णवास-मीसं दिव्वं ।

घाण-मण-निव्वुइकरं, सव्वोउय-सुरभिकुसुम-वुट्ठिं पमुचमाणी ॥२॥

नाणामणि-कणग-रयण-घटियंखिखिणि नेउर-मेहल-भूसणरवेण ।

दिसाओ विदिसाओ पूरयती वयणमिण वेइ सा सकलुसा ॥३॥

होल! वसुल ! गोल ! नाह ! दइत ! पिय ! रमण ! कत ! सामिय ! निग्घण ! नित्यक्क !^१ ।

थिण्ण ! निक्कव^२ ! अकयण्णुय ! सिडिलभाव !, निल्लज्ज ! लुक्ख !

अकलुण ! जिणरक्खिय ! मज्झ ! हिययरक्खगा^३ ॥४॥

न हु जुज्जसि एककय^४ अणाह, अवधवं तुज्झ चलण-ओवायकारियं उज्झउमधन्न ।

गुणसकर ! ह तुमे विहूणा, न समत्था जीविउं खणपि ॥५॥

इमस्स उ अणेगभस-मगर-विविधसावय-सयाउलघरस्स रयणागरस्स मज्झे^५ ।

अप्पाण वहेमि तुज्झ पुरओ, एहि नियत्ताहि जड सि कुविओ खमाहि एगावराह^६ मे ॥६॥

तुज्झ य 'विगयघण-विमलससिमडलागार'^७-सस्सिरीय,

सारयनवकमल-कुमुद-कुवलय^८-दलनिकरसरिस निभनयण ।

वयण पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउ जे,

अवलोएहि ता इओ मम नाह ! जा ते पेच्छामि वयणकमल ॥७॥

एव सप्पणय-सरल-महुराइ पुणो-पुणो कलुणाइ ।

वयणाइ जपमाणी, सा पावा मग्गओ समण्णेइ पावहियया ॥८॥

एते श्लोकाः सन्ति अथवा गद्यभागोसौ इति

सुनिर्णीत नासीत् । वृत्तिकृता एते श्लोकाः

इति मत प्रदर्शितम्—पद्यवन्धं विना

तुकारादिनिपाताना पादपूर्णार्थानां निर्देशो न

घटते । अपरिमितानि च छन्दशास्त्राणि

(वृ) ।

- १ सा रयणदीवदेवता, ओहिणा ५ निक्कव (ख) ।
जिणरक्खियस्स मण नाऊण(क), ६ ०रक्खग (ख) ।
ज्ञात्वाभावमिति जेष (वृ) । ७ एकिकय (क, ग, घ) ।
२ मनिन्निय (क), नलिलय (घ) । ८ उववाय० (घ) ।
३ मीसिय (क्व०) । ९ मज्जेण [ग] ।
४ नित्यक्क (क) । १० एक्का० (क, ख, घ) ।

११. विगयघण-विउल० (ग), विगय-
घणविमलससिमडल (वृपा) ।
१२. कूवलय-विमउल (क, ख),
कूवलय-विमल (ग, घ), विमउल
(वृपा) ।

जिणरक्खयविवत्ति-पदं

४१. तए णं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेण कण्णसुहमणहरेण तेहि य सप्पणय-सरल-महुर-भणिएहि संजाय-विउण-राए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुदरथण-जहण^१-वयण-कर-चरण-नयण-लावण^२-रूव-जोवणसिरि च दिव्व सरभस-उवगूहियाइ विब्बोय-विलसियाणि^३ य विहसिय-सकडक्खदिट्ठि^४-निस्स-सिय-मलिय^५-उवलिय^६-थिय-गमण-पणयखिज्जिय-पसाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमती अवसे कम्मवसगए^७ अवयक्खइ मग्गतो सविलिय^८ ॥
- ४२ तए ण जिणरक्खय समुप्पणकलुणभाव मच्चु-गलत्थल्ल^९-णोल्लियमइ अवय-क्खत्त तहेव^{१०} जक्खे उ सेलए जाणिरुण सणिय-सणिय^{११} उव्विहइ नियगपट्टाहि विगयसद्धे^{१२} ॥
४३. तए ण सा रयणदीवदेवया निस्ससा कलुण जिणरक्खय सकलुसा^{१३} सेलगपट्टाहि^{१४} ओवयत्त—दास । मओसि त्ति जपमाणी अपत्त सागरसलिल गेण्हिय वाहाहि आरसंत उड्ढ उव्विहइ अवरतले ओवयमाण च मडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण^{१५} असिवरेण खडाखडि करेइ, करेत्ता तत्थेव^{१६} विलवमाणं तस्स य सरस-वहियस्स घेत्तूण अगमगाइं सरुहिराइ उक्खत्तवाल चउट्ठिसि^{१७} करेइ, सा पजली पहिट्ठा^{१८} ॥
- ४४ एवामेव समणाउसो । जो अम्मह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसयइ पत्थयइ पीहेइ अभिलसइ, से ण इहभवे चेव वहूण समाण वहूण समणीण वहूण सांवयाण वहूण सावियाण य हीलणिज्जे जाव^{१९} चाउरत्त ससारकत्तार भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्ठिस्सइ—जहा व से जिणरक्खिए ।

१. जघण (ख) ।

नोपलभ्यते (वृपा) ।

२. लायण (क, ख) ।

१२. विगयसत्थे (वृ); विगयसद्धे (वृपा) ।

३. विलवियाणि (क, ख) ।

१३. अकलुणा (क) ।

४. कडक्ख ° (क, ख) ।

१४. °पुट्टाहि (घ) ।

५. मणिय (वृपा) ।

१५. असीयप्पगासेण (ग) ।

६. ललिय (वृपा) ।

१६. तत्थ (ग, घ) ।

७. कम्मवसवेगनडिए (वृपा) ।

१७. चाउट्ठिसि (क) ।

८. सविलविय (ग) ।

१८. पहट्टा (क, ख) ।

९. गलत्थ (क); गल्लत्थल्ल (ख) ।

१९. ना० १।३।२४ ।

१०, ११ 'तहेव, सणिय' इत्येतत् पदद्वय वाचनान्तरे

गाहा—

छलिओ अवयक्खंतो, निरवयक्खो' गओ अविग्घेण ।
 तम्हा पवयणसारे^१, निरावयक्खेण भवियव्वं ॥१॥
 भोगे अवयक्खता, पडति ससारसागरे घोरे ।
 भोगेहि निरवयक्खा, तरति ससारकतारं ॥२॥

जिणपालियस्स चपागमण-पद

- ४५ तए ण सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छइ, बहूहि अणुलो-
 मेहि य पडिलोमेहि य खरएहि य मउएहि य सिगारेहि य कलुणेहिय उवसग्गेहि
 जाहे नो सचाएइ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सता
 तता परितता निव्विण्णा समाणा^३ जामेव दिसि^४ पाउव्भूया तामेव दिसि
 पडिगया ॥
- ४६ तए ण से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धि लवणसमुद्धं मज्झमज्झेणं वीईवयइ,
 वीईवइत्ता जेणेव चपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चपाए नयरीए
 अग्गुज्जाणसि जिणपालिय पट्टाओ ओयारेइ, ओयारेत्ता एव वयासी—एस ण
 देवाणुप्पिया । चपा नयरी दीसइ त्ति कट्टु जिणपालिय पुच्छइ, जामेव दिसि
 पाउव्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥
४७. तए ण से जिणपालिए चप नयरि अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे
 जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे^५
 •कदमाणे सोयमाणे तिप्पमाणे ° विलवमाणे जिणरक्खिय-वावत्ति^६ निवेदेइ ॥
- ४८ तए ण जिणपालिए अम्मापियरो [य ?] मित्त-नाइ^७—•नियग-सयण-सवधि °
 परियणेण सद्धि 'रोयमाणा कदमाणा सोयमाणा तिप्पमाणा विलवमाणा °
 बहूइ लोइयाइं मयकिच्चाइ करेति, करेत्ता कालेण विगयसोया जाया ॥
- ४९ तए ण जिणपालिय अण्णया कयाइ सुहासणवरगय अम्मापियरो एवं वयासी—
 कहण्ण पुत्ता ! जिणरक्खिए कालगए ?
- ५० तए ण से जिणपालिए अम्मापिऊण लवणसमुद्धोत्तार च कालियवाय-संमुच्छण
 च पोयवहण-विवत्ति च फलहखंड^८-आसायण च रयणदीवुत्तार च रयणदीव-

१. निरवेक्खो (ग) ।

२. °सारेण (ग); चारिन्ने लब्धे सतीति
 गम्यते (वृ) ।

३. समाणी (क) ।

४. दिस (क) ।

५. स० पा०—रोयमाणे जाव विलवमाणे ।

६. वावत्ति (ख, ग) ।

७. स० पा०—नाइ जाव परियणेण ।

८. रोयमाणाइ (क, ख, ग, घ) ।

९. फलगखंड (क) ।

देवया—गिण्हणं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवया-आघयणं^१ च सूलाइयपुरिस-
दरिसणं च सेलगजक्खआरुहणं च रयणदीवदेवया-उवसगं च जिणरक्खय-
वार्त्ति^२ च लवणसमुद्दउत्तरणं च 'चपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च'^३
जहाभूयमवितहमसदिद्धं परिकहेइ ॥

५१. तएणं से जिणपालिए 'अप्पसोगे [जाए ?] जाव'^४ विपुलाइं भोगभोगाइं
भुजमाणे विहरइ ॥

५२. तेण कालेण तेण समएणं 'समणे भगव महावीरे'^५ समोसढे । जिणपालिए^६
धम्मं सोच्चा पव्वडए । एगारसंगवी । मासियाए सलेहणाए अप्पाण भोसेत्ता,
सद्धिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए
उववण्णे । दो सागरोवमाइ ठिई । महाविदेहे वासे सिज्झिह्हिइ जाव' सव्व-
दुक्खाणमत काहिइ ॥

५३. एवामेव समणाउसो^७ ! •जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झा-
याणं अत्तिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वडए समाणे^८ माणुस्सए
कामभोगे नो पुणरवि आसयइ पत्थयइ पीहेइ, सेणं इह भवे चेव बहूण समणाणं
बहूण समणीण बहूण सावयाण बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव' चाउरत
ससारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व से जिणपालिए ॥

निक्खेव-प्रदं

५४. एव खलु जंवू ! समणेण भगवया महावीरेणं आइगरेण तित्थगरेण जाव'^९

१. अप्पाहण (क, ख, ग, घ) । अत्र पूर्वक्रमानु-
सारेण 'आघयण' इति पाठो युज्यते,
द्रष्टव्यम्—२५ सूत्रम् । सम्भवतो लिपिदोषेण
'आघयण' इत्यस्य स्थाने 'अप्पाहण' इति
जातम् । अत्र अस्प्रार्थोपि नावगम्यते ।

२. विवर्त्ति (क, ख, ग, घ) । ४७ सूत्रानुसारेण
अत्र परिवर्तनं कृतम् ।

३. सेलगजक्खआपुच्छणं च चपागमणं च (क),
सेलगजक्खआपुच्छणं च (ग) ।

४. जाव अप्पसोगे जाव (क, ख, ग, घ);
अस्यैवाध्ययनस्य ४८ सूत्रे 'विगयसोया
जाया' इत्युल्लेखोस्ति । अत्र पुनरपि
'अप्पसोगे' इत्युल्लेखो विद्यते । द्वयोरपि
'जाव' पदयोः पूर्तिस्थल एतत् तुल्यप्रकरणेषु

नोपलब्धम् । अत्र प्रथमं 'जाव' पदं अना-
वश्यकं प्रतिभाति । 'अप्पसोगे जाए जाव'
यद्येव पाठः परिकल्पेत तदा 'जाव' पदं न
पूर्तिसूचकं भवति ।

५. समणे भगवया महावीरेण (क), समणे (ख,
ग, घ), समणे भगव महावीरे जाव जेणैव चपा
नयरी पुण्णभद्दे चेइए तेणैव समोसढे परिसा
निग्गया कूणिओ वि राया निग्गओ (घ) ।

६. × (क, ख, ग) ।

७. ना० १।१।२१२ ।

८. स० पा०—समणाउसो जाव माणुस्सए ।

९. ना० १।२।७३ ।

१०. ना० १।१।७ ।

सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण संपत्तेणं नवमस्स नायजंभयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।
—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा—

जह रयणदीवदेवी, तह एत्थ अविर्ड महापावा ।
जह लाहत्थी वणिया, तह सुहकामा इहं जीवा ॥१॥
जह तेहि भीएहिं, दिट्ठो आघायमडले पुरिसो ।
ससारदुक्खभीया, पासति तहेव धम्मकह ॥२॥
जह तेण तेसि कहिया, देवी दुक्खाण कारण घोर ।
तत्तो चिय नित्थारो, सेलगजक्खाउ नन्नत्तो ॥३॥
तह धम्मकही भव्वाण, साहए दिट्ठअविर्डसहावा ।
सयलदुहहेउभूया, विसया विरयति जीवा ण ॥४॥
सत्ताण दुहत्ताण, सरण चरण जिणिदपण्णत्तं ।
आणदरुव-निव्वाण-साहण तह य दसेइ ॥५॥
जह तेसि तरियव्वो, रुद्धसमुद्धो तहेह ससारो ।
जह तेसि सगिहगमणं, निव्वाणगमो तहा एत्थ ॥६॥
जह सेलगपट्ठाओ, भट्ठो देवीए मोहियमई उ ।
सावय-सहस्सपउरम्मि, सायरे पाविओ निहण ॥७॥
तह अविर्डइ नडिओ, चरणचुओ दुक्खसावयाइण्णो ।
निवडइ 'अगाह-ससार-सागर अणतमविकाल' ॥८॥
जह देवीए अक्खोहो, पत्तो सट्ठाण-जीवियसुहाइं ।
तह चरणठिओ साहू, अक्खोहो जाइ निव्वाण ॥९॥

दसमं अज्भयणं

चदिमा

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण नवमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स ण भते । नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

परिहायमाण-पदं

२. एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे^१ गोयमो एव वयासी—
कहण्ण^२ भते ! जीवा वड्ढति वा हायति वा ?
गोयमा ! से जहानामए बहुलपक्खस्स पाडिवय^३-चदे पुण्णिमा-चद पणिहाय
हीणे वण्णेण हीणे सोम्माए^४ हीणे निद्धयाए हीणे कतीए एव—दित्तीए जुत्तीए
छायाए पभाए ओयाए लेसाए^५ हीणे मडलेण ।
तयाणतरं च ण वीयाचदे पाडिवय^६-चद पणिहाय हीणतराए वण्णेण जाव
हीणतराए मडलेण ।
तयाणतर च ण तइया^७-चदे वीया^८-चद पणिहाय हीणतराए वण्णेण जाव हीण-
तराए मडलेण ।
एव खलु एएण कमेण परिहायमाणे-परिहायमाणे जाव अमावसा-चदे चाउट्ठिसि-
चद पणिहाय नट्ठे वण्णेण जाव नट्ठे मडलेण ॥

-
- १ नयरे सामी समोसठे परिसा निग्गया (घ) । ५ लेस्साए (क, ख) ।
२ कहण (ख, ग) । ६ पडिवय (घ) ।
३ पडिवय (क); पडिवया (ख, घ); ७. ततिया (ख, ग, घ) ।
पाडिवया (ग) । ८ वित्तिया (क, ख, ग, घ) ।
४. सम्मेताए (क) ।

३. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा' •आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता |अगाराओ अणगारिय ° पव्वइए समाणे हीणे खतीए एव—मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेणं चियाए अकिंचणयाए हीणे वंभचेरवासेण ।
तयाणतर च ण हीणतराए खतीए जाव हीणतराए वंभचेरवासेणं ।
एवं खलु एएण कमेण परिहायमाणे-परिहायमाणे नट्टे खंतीए जाव नट्टे वंभचेर-वासेण ॥

परिवड्ढमाण-पदं

४. से जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवय^१-चदे अमावसा-चदं पणिहाय अहिए वण्णेण^२ •अहिए सोम्माए अहिए निद्धयाए अहिए कतीए एव—दित्तीए जुत्तीए छायाए पभाए ओयाए लेसाए ° अहिए मडलेण ।
तयाणतर च ण वीया-चदे पाडिवय-चदं पणिहाय अहिययराए वण्णेणं जाव अहिययराए मडलेणं ।
एव खलु एएण कमेण परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे जाव पुण्णिमा-चदे चाउद्दिसि-चद पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेण जाव पडिपुण्णे मडलेण ॥
५. एवामेव समणाउसो^३ ! •जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय ° पव्वइए समाणे अहिए खतीए^४ •एव—मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेण मद्दवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेण चियाए अकिंचणयाए अहिए ° वंभचेरवासेण ।
तयाणतर च णं अहिययराए खतीए जाव अहिययराए वंभचेरवासेण ।
एव खलु एएण कमेण परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे पडिपुण्णे खतीए जाव पडि-पुण्णे वंभचेरवासेणं ।
एव खलु जीवा वड्ढंति वा हायंति वा ॥

निक्खेव-पदं

६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

१. सं० पा०—निग्गंथी वा जाव पव्वइए ।
२. पाडिवया (क, ख), पडिवया (ग, घ) ।
३. सं० पा०—वण्णेण जाव अहिए ।

४. सं० पा०—समणाउसो ! जाव पव्वइए ।
५. सं० पा०—खतीए जाव वंभचेरवासेणं ।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह चदो तह साहू, राहुवरोहो जहा तह पमाओ ।
वण्णाइगुणगणो जह, तहा खमाइसमणघम्मो ॥१॥
पुण्णोवि पइदिण जह, हायतो सब्बहा ससी नस्से ।
तह पुण्णचरित्तो वि हु, कुसीलससग्गिमाईहिं ॥२॥
जणिय-पमाओ साहू, हायतो पइदिण खमाईहिं ।
जायइ नट्टचरित्तो, ततो दुक्खाइ पावेइ ॥३॥
हीणगुणो वि हु होउ, सुहगुरुजोगाइ-जणियसवेगो ।
पुण्णसरूवो जायइ, विवद्धमाणो ससहरोव्व ॥४॥

एककारसमं अज्भयणं

दावद्दे

उक्खेव-पदं

१ जइ ण भते । समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते, एककारसमस्स णं भते । नायज्भयणस्स के अट्टे पण्णत्ते ?

देमविराहय-पदं

२ एव खलु जवू ! तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहे नगरे गोयमो एव वयासी—कहण्ण^१ भते । जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवति ?

गोयमा ! से जहानामए एगसि समुद्दकूलसि दावद्देवा नाम रुक्खा पण्णत्ता—किण्हा जाव^२ निउरवभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा^३ सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठति ।

जया ण दीविच्चगा^४ ईसि^५ पुरेवाया पच्छावाया मदावाया महावाया वायंति, तथा ण वह्वे दावद्देवा रुक्खा पत्तिया^६ •पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा^७ चिट्ठति । अप्पेगइया दावद्देवा रुक्खा जुण्णा भोडा^८ परिसडिय-पडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव मिलाय-माणा-मिलायमाणा चिट्ठंति ॥

३. एवामेव समणाउसो^९ ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा^{१०} •आयरिय-

१. कह ण (ख, ग, घ) ।

२. ना० १।७।१३ ।

३. रेरिज्जमाणा-रेरिज्जमाणा (क, ग) ।

४. दीविच्चगा (ख, ग, घ) ।

५. इसि (क, घ) ।

६. स० पा०—पत्तिया जाव चिट्ठति ।

७. ज्जोडा (क, ख); भोटा (ग) ।

८. समणातोसो (ग) ।

९. स० पा०—निग्गथी जाव पव्वइए ।

उवज्झायाणं अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइए समाणे वहूणं समणाणं वहूणं समणीणं वहूणं सावयाणं वहूणं सावियाणं य सम्मं सहइ^१ •खमइ तितिकखइ ° अहियासेइ, वहूणं अण्णउत्थियाणं वहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहइ जाव नो अहियासेइ—एस ण मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते ॥

देसाराहय-पदं

४. समणाउसो ! जया णं सामुद्दगा^२ ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मदावाया महावाया वायति, तथा णं वहवे दावद्देवा रुक्खा जुण्णा भोडा^३ •परिसडिय-पंडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव ° मिलायमाणा-मिलायमाणा चिट्ठति । अप्पेगइया दावद्देवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया^४ •हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव ° उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥
५. एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा^५ •आयरिय-उवज्झायाणं अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइए समाणे वहूणं अण्णउत्थियाणं वहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ खमइ तितिकखइ अहियासेइ, वहूणं समणाणं वहूणं समणीणं वहूणं सावयाणं वहूणं सावियाणं य नो सम्मं सहइ जाव नो अहियासेइ—एस ण मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते ॥

सव्वविराहय-पद

६. समणाउसो ! जया ण नो दीविच्चगा नो सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायति, तथा ण सव्वे दावद्देवा रुक्खा जुण्णा भोडा परिसडिय-पंडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा-मिलायमाणा चिट्ठति । अप्पेगइया दावद्देवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्ज-माणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥
७. एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे वहूणं समणाणं वहूणं समणीणं वहूणं सावयाणं वहूणं सावियाणं वहूणं अण्णउत्थियाणं वहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहइ जाव^६ नो अहियासेइ—एस णं मए पुरिसे सव्व-विराहए पण्णत्ते ॥

सव्वाराहय-पदं

८. समणाउसो ! जया णं दीविच्चगा वि सामुद्दगा वि ईसिं पुरेवाया पच्छावाया

१. स० पा०—सहइ जाव अहियासेइ ।

२. समुद्दगा (ख, घ) ।

३. स० पा०—भोडा जाव मिलायमाणा ।

४. सं० पा०—फलिया जाव उवसोभेमाणा ।

५. स० पा०—निग्गथी वा जाव पव्वइए ।

६. ना० १।१।३ ।

मदावाया महावाया वायति, तथा णं सव्वे दावद्वा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिद्वृत्ति ॥

- ६ एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथो वा आयरिय-उवज्झायाणं अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे व्हूण समणाण व्हूण समणीण व्हूणं सावयाण व्हूणं सावियाणं व्हूण अण्णउत्थियाणं व्हूणं गिहत्थाण सम्म सहइ खमइ तितिक्वइ अहियासेइ—एस ण मए पुरिसे सव्व-आराहए पण्णत्ते । एव खलु गोयमा । जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवति ॥

निक्खेव-पदं

- १० एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह दावद्दव-‘तरुणो, एव’^१ साहू जहेह दीविच्चा ।
 वाया तह समणा इय, सपक्ख-वयणाइं दुसहाइं ॥१॥
 जह सामुद्दय-वाया, तहण्णतित्थाइ-कडुयवयणाइ ।
 कुसुमाइं सपया जह, सिवमग्गाराहणा तह उ ॥२॥
 जह कुसुमाइ-विणासो, सिवमग्ग-विराहणा तहा पेया ।
 जह दीववायु-जोगे, वहु इड्डी ईसि य अणिड्डी ॥३॥
 तह साहम्मिय-वयणाण, सहणमाराहणा भवे वहुया ।
 इयराणमसहणे, पुण सिवमग्ग-विराहणा थोवा ॥४॥
 जह जलहिवाय-जोगे, थेविड्डी बहुयरा अणिड्डी य ।
 तह परपक्खक्खमणे, आराहणमीसि वहु इयरं ॥५॥
 जह उभयवाय-विरहे, सव्वा तरुसपया विणट्ठत्ति ।
 अणिमित्तोभय-मच्छर-रूवेह विराहणा तह य ॥६॥
 जह उभयवाय-जोगे, सव्वसमिद्धी वणस्स सजाया ।
 तह उभयवयण-सहणे सिवमग्गाराहणा पुण्णा ॥७॥
 ता पुण्णसमणधम्माराहणचित्तो सया महापुण्णो^२ ।
 सव्वेण वि कीरतं, सहेज्ज सव्व पि पडिकूल ॥८॥

१. तरुणमेवं [क्व] ।

२. महासत्तो [क्व] ।

वारसमं अज्भयणं

उदगणाए

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण एक्कारसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, वारसमस्स णं भते । नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जंबू । तेण कालेण तेण समएणं चपा नाम नयरी । पुण्णभट्ठे चेइए । जियसत्तू राया । धारिणी देवी । अदीणसत्तू कुमारे जुवराया वि होत्था । सुवुद्धी अमच्चे जाव' रज्जघुराचितए, समणोवासए ॥

फरिहोदग-पदं

३. तीसे ण चपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमेण एगे फरिहोदए यावि होत्था—
मेय-वसा-रुहिर-मस-पूय-पडल-पोच्चडे मयग-कलेवर-सच्छण्णे अमणुण्णे वण्णेण'
•अमणुण्णे गधेण अमणुण्णे रसेण अमणुण्णे ° फासेण, से जहानामए—अहिमडे
इ वा गोमडे इ वा जाव' मय-कुहिय-विणट्ठ-किमिण-वावण्ण-ट्टुरभिगधे किमि-
जालाउले ससत्ते असुइ-विगय-वीभच्छ-दरिसणिज्जे । भवेयारूवे सिया ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव' •अकततराए चेव अप्पियतराए चेव
अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव ° गधेण पण्णत्ते ॥

जियसत्तुणा पाणभोयणपसंसा-पदं

- ४ तए ण से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए कयवलिकम्मे जाव'

१ ना० १।५।४२ ।

२. स० पा० —वण्णेण जाव फासेण ।

३. ना० १।५।४२ ।

४ स० पा०—अणिट्ठतराए चेव जाव गधेण ।

५ ना० १।१।२७ ।

अप्पमहाग्घाभरणालं कियसरीरे वह्हि ईसर^१ जाव^२ सत्थवाहपभिईहिं सद्धि भोयणमडवसि भोयणवेलाए सुहासणवरगए विउलं असण^३ •पाण खाइम साइम आसाएमाणे विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे एवं च ण^० विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागए^४ वि य ण समाणे आयते चोक्खे परम^० सुइभूए तसि विपुलसि असण-पाण-खाइम-साइमसि जायविम्हए ते वह्वे ईसर जाव^५ सत्थवाहपभिइओ एव वयासी—अहो ण देवाणुप्पिया ! इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे वण्णेणं उववेए^६ •गघेणं उववेए रसेणं उववेए^० फासेणं उववेए अस्सायणिज्जे विसायणिज्जे 'पीणणिज्जे दीवणिज्जे'^७ दप्पणिज्जे मयणिज्जे विहणिज्जे सव्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

५. तए ण ते वह्वे ईसर जाव^६ सत्थवाहपभिइओ जियसत्तु राय एवं वयासी—तहेव ण सामी ! जण्ण तुब्भे^८ वयह—अहो ण इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे वण्णेणं उववेए जाव^९ सव्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं

६. तए ण जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्च एव वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे जाव^{१०} सव्विदियगाय-पल्हाय-णिज्जे ॥
७. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठ नो आढाइ^{११} •नो परियाणाइ^० तुसिणीए सचिट्ठइ ॥
८. तए ण जियसत्तू राया सुबुद्धि दोच्चंपि तच्चपि एव वयासी—अहो णं देवाणु-प्पिया सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे^{१२} •असण-पाण-खाइम-साइमे जाव^{१३} सव्विदियगाय^०-पल्हायणिज्जे ॥
९. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चंपि तच्च पि एव वुत्ते समाणे

१ राईसर (ग) ।

२. ना० १।७।६ ।

३. स० पा०—असण जाव विहरइ ।

४. स० पा०—^०भुत्तुत्तरागए जाव सुइभूए ।

५ ना० १।७।६ ।

६. सं० पा०—उववेए जाव फामेण ।

७ दीवणिज्जे पीणणिज्जे (क, घ); दीवणिज्जे

(ख); वीयणिज्जे दीवणिज्जे परियणिज्जे

(ग) ।

८. ना० १।७।६ ।

९ तुम्हे (ख), तुम्ह (ग, घ) ।

१०. ना० १।१२।४ ।

११ ना० १।१२।४ ।

१२. स० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए ।

१३. स० पा०—मणुण्णे त चेव जाव पल्हाय-

णिज्जे ।

१४. ना० १।१२।४ ।

जियसत्तू राय एवं वयासी—नो खलु सामी ! अम्ह एयसि मणुण्णसि असण-
पाण-खाडम-साइमसि केइ विम्हए ।

एव खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति, दुब्भिसद्दा
वि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमति । सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिण-
मति, दुरूवा वि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमति । सुब्भिगघा वि पोग्गला
दुब्भिगघत्ताए परिणमति, दुब्भिगघा वि पोग्गला सुब्भिगघत्ताए परिणमति ।
सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिण-
मति । सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमति, दुहफासा वि पोग्गला
सुहफासत्ताए परिणमति, पओग-वीससा-परिणया वि य ण सामी ! पोग्गला
पण्णत्ता ॥

- १० तए ण जियसत्तू राया सुवुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स
पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमद्दु नो आढाइ नो परियाणइ तुसिणीए
सच्चिद्दइ ॥

जियसत्तुणा फरिहोदगस्स गरहा-पदं

- ११ तए ण से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए आसखधवरगए महयाभड-
चडगर-आसवाहिणिआए' निज्जायमाणे तस्स फरिहोदयस्स अद्दूरसामतेणं
वीईवयइ ॥
- १२ तए ण जियसत्तू राया तस्स फरिहोदगस्स असुभेण गधेण अभिभूए समाणे
सएण उत्तरिज्जगेण आसग 'पिहेइ, पिहेत्ता'^३ एगत अवक्कमइ, अवक्कमित्ता
वहवे ईसर जाव' सत्यवाहपभियओ एव वयासी—अहो ण देवाणुप्पिया ! इमे
फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण अमणुण्णे गधेण अमणुण्णे रसेण अमणुण्णे फासेण,
से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव' अमणामतराए चैव गंधेण पण्णत्ते ॥
- १३ तए ण ते वहवे ईसर' जाव' सत्यवाहपभियओ एव वयासी—तहेव ण त सामी !
- ज ण तुब्भे^४ वयह—अहो ण इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण अमणुण्णे गधेण
- अमणुण्णे रसेण अमणुण्णे फासेण, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव' अमणाम-
तराए चैव गधेणं पण्णत्ते ॥
- १४ तए ण से जियसत्तू राया सुवुद्धि अमच्च एवं वयासी—अहो ण सुवुद्धी ! इमे
फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण अमणुण्णे गधेण अमणुण्णे रसेण अमणुण्णे फासेण,
से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव' अमणामतराए चैव गधेण पण्णत्ते ॥

१. °वाहणियाए (क) ।

२. पिहइ (क) ।

३. ना० १।७।६ ।^१

४ ना० १।१२।३ ।

५. राईसर (क, ख, घ) ।

६. ना० १।७।६ ।

७. तुब्भे एव (क, ख, ग, घ) ।

८, ९. ना० १।१२।३ ।

सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं

१५. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे^१ °जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठ नो आढाड नो परियाणाइ ° तुसिणीए सच्चिट्ठइ ॥
१६. तए ण से जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्च दोच्चपि तच्चंपि एव वयासी—अहो णं °सुबुद्धी । इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेण अमणुण्णे गघेणं अमणुण्णे रसेण अमणुण्णे फासेण, से जहानामए—अहिमडे ड वा जाव^२ अमणामतराए चेव गघेण पण्णत्ते ° ॥
१७. तए ण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चंपि तच्चंपि एव वुत्ते समाणे एव वयासी—नो खलु सामी ! अम्ह एयसि फरिहोदगसि केइ विम्हए । एव खलु सामी ! सुव्विभसद्दा वि पोग्गला दुव्विभसद्दत्ताए परिणमति^३, °दुव्विभसद्दा वि पोग्गला सुव्विभसद्दत्ताए परिणमति । सुख्खा वि पोग्गला दुख्खत्ताए परिणमति, दुख्खा वि पोग्गला सुख्खत्ताए परिणमति । सुव्विभगधा वि पोग्गला दुव्विभगधत्ताए परिणमति, दुव्विभगधा वि पोग्गला सुव्विभगधत्ताए परिणमति । सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसा वि पोग्गला मुरसत्ताए परिणमति । सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमति, दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमति ° । पओग-वीससा-परिणया वि य ण सामी ! पोग्गला पण्णत्ता ॥

जियसत्तुस्स विरोध-पद

१८. तए ण जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्च एव वयासी—मा ण तुम देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च पर च तदुभय च वहूणि य असव्भावुवभावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि ॥

सुबुद्धिणा जलसोधण-पदं

१९. तए ण सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं जियसत्तू राया सते^४ तच्चे तहिए अवितहे सव्वभूए जिणपण्णत्ते भावे नो^५ उवलभइ । त सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताण तच्चाण तहियाणं अवितहाण सव्वभूयाण जिणपण्णत्ताण भावाण अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठ उवाइणावेत्ताए—एव संपेहेड, संपेहेत्ता पच्चइएहिं पुरिसेहिं सद्धि अतरावणाओ^६

१. सं० पा०—अमच्चे जाव तुसिणीए ।

२. सं० पा०—अहो ण त चेव ।

३. ना० १।१२।३ ।

४. सं० पा०—परिणमति तं चेव ।

५. सच्चे (ख) ।

६. नो सदहइ (क) ।

७. अविभतरावणाओ (क) ।

नवए घडए य पडए य गेण्हइ, गेण्हित्ता संभाकालसमयसि विरलमणूससि निसंत-पडिनिसतसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त फरिहोदग गेण्हावेइ, गेण्हावित्ता नवएसु पडएसु^१ गालावेइ^२, गालावेत्ता नवएसु घड-एसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता सज्जखार पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लच्छिय^३-मुद्दिए कारावेइ^४, कारावेत्ता सत्तरत्त परिवसावेइ^५, परिवसावेत्ता दोच्चपि नवएसु पडएसु^६ गालावेइ, गालावेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवा-वेत्ता सज्जखार पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लच्छिय-मुद्दिए कारावेइ, कारावेत्ता सत्तरत्त परिवसावेइ^७, परिवसावेत्ता तच्चपि नवएसु पडएसु^८ गालावेइ, गाला-वेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता सज्जखार पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लच्छिय-मुद्दिए कारावेइ, कारावेत्ता सत्तरत्त^९ संवसावेइ^{१०} । एवं खलु एण उवाएण अतरा गालावेमाणे अतरा पक्खिवावेमाणे अतरा य सवसा-वेमाणे^{११} सत्तसत्त य राइदियाइ परिवसावेइ । तए ण से फरिहोदए सत्तमसि^{१२} सत्तरयंसि परिणममाणसि उदगरयणे जाए यावि होत्था—अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे वण्णेण उववेए गघेण उववेए रसेण उववेए फासेण उव-वेए आसायणिज्जे^{१३} • विसायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे विहणिज्जे^{१४} । सन्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

सुबुद्धिणा जलपेसण-पदं

२०. तए ण सुबुद्धी जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलसि आसादेइ, आसादेत्ता तं उदगरयण वण्णेण उववेय गघेण उववेय रसेण उववेयं फासेण उववेय आसायणिज्जे^{१५} • विसायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे विहणिज्जे^{१६} । सन्विदियगाय-पल्हायणिज्जे जाणित्ता हट्टुट्टे बहूहि

१ घडएसु (क, ख, ग, घ) । अस्मिन्नेव सूत्रे 'अतरावणाओ नवए' घडए य पडए य गेण्हइ' इति पाठोस्ति तथा 'गालावेइ' इति क्रियापदस्यार्थोऽपि 'पडए' इति पदेन सम्बद्धोस्ति, तेन 'घडएसु गालावेइ' इत्यस्य स्थाने सर्वत्र 'पडएसु गालावेइ' इति पाठो युज्यते । सम्भवतो लिपिदोषेण अत्र वर्ण-विपर्ययो जातः ।

२. गालावेइ (ख) ।
३. लच्छिए (ख) ।
४. करावेइ (ख) ।
५. परिसवेइ (ख) ।

६ पडएसु (क, ख, ग, घ) ।

७ परिसावेइ (ख) ।

८. सं० पा०—घडएसु जाव सवसावेइ । सर्वासु प्रतिषु 'घडएसु' इत्येव पाठो लभ्यते ।

९ पूर्व 'परिवसावेइ' पाठो विद्यते, अत्र 'सव-सावेइ' पाठोस्ति । एतत् परिवर्तन किमर्थं कृतमिति न ज्ञायते ।

१०. वसावेमाणे (ख, ग, घ) ।

११. सत्तम (ख) ।

१२. सं० पा०—आसायणिज्जे जाव सन्विदिय० ।

१३ सं० पा०—आसायणिज्जे जाव सन्विदिय० ।

उदगसभारणिज्जेहिं दव्वेहिं सभारेइ, संभारेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो पाणिय-
घरिय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुम ण देवाणुप्पिया ! इम उदगरयणं
गेण्हाहि, गेण्हत्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि ॥

जियसत्तुणा उदगरयणपसंसा-पदं

२१. तए ण से पाणिय-घरिए सुवुद्धिस्स एयमट्ट पडिसुणेइ^१, पडिसुणेत्ता त उदगरयण
गेण्हइ, गेण्हत्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्टवेइ ॥
२२. तए ण से जियसत्तू राया त विपुल असण-पाण-खाइम-साइम आसाएमाणे^२
•विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे एव च ण^३ विहरइ । जिमियभुत्तु-
त्तरागए वि य णं^४ •समाणे आयते चोक्खे^५ परमसुइभूए तसि उदगरयणसि
जायविम्हए ते वहवे राईसर जाव^६ सत्थवाहपभिइओ एव वयासी—अहो णं
देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव^७ सन्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥
२३. तए ण ते वहवे राईसर जाव^८ सत्थवाहपभिइओ एव वयासी—तहेव णं सामी !
जण्ण तुव्वे वयह^९—इमे उदगरयणे अच्छे जाव^{१०} सन्विदियगाय^{१०}-
पल्हायणिज्जे ॥

जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा-पद

२४. तए ण जियसत्तू राया पाणिय-घरिय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एस ण
तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ^१ आसादिते ?
२५. तए ण से पाणिय-घरिए जियसत्तु एव वयासी—एस णं सामी ! मए
उदगरयणे सुवुद्धिस्स अतियाओ आसादिते ॥
२६. तए ण जियसत्तू सुवुद्धि अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—अहो ण
सुवुद्धी ! केण कारणेण अह तव अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे जेणं
तुम मम कल्लाकल्लि भोयणवेलाए इमं उदगरयण न उवट्टवेसि ? त एस णं
तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ उवलद्धे ?

सुवुद्धिस्स उत्तर-पदं

२७. तए ण सुवुद्धी जियसत्तु एव वयासी—एस णं सामी ! से फरिहोदए ॥

१. पडिसुणाति (ख) ।

२. स० पा०—आसाएमाणे जाव विहरइ ।

३. स० पा०—य ण जाव परमसुइभूए ।

४. ना० १।७।६ ।

५. ना० १।१२।१६ ।

६. ना० १।७।६ ।

७. सं० पा०—जाव एव चैव पल्हायणिज्जे ।

८. ना० १।१२।१६ ।

९. कत्तो (ख), कतो (ग) ।

२८. तए णं से जियसत्तू सुवुद्धि एवं वयासी—केणं कारणेण सुवुद्धी ! एस से फरिहोदए ?
- २९ तए णं सुवुद्धी जियसत्तुं एव वयासी—एव खलु सामी ! तुव्भे तथा मम एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ट नो सदहह । तए ण मम इमेयारूवे अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुपज्जित्था—अहो ण जियसत्तू राया सते' •तच्चे तहिए अवितहे सव्भूए जिणपण्णत्ते ° भावे नो सदहहइ नो पत्तियइ नो रोएइ । त सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो सताण' •तच्चाण तहियाण अवितहाण ° सव्भूयाण जिणपण्णत्ताण भावाणं अभिगमणट्टयाए एयमट्ट उवाडणावेत्ताए—एव सपेहेमि, सपेहेत्ता त चेव जाव' पाणिय-घरिय सदावेमि, सदावेत्ता एव वदामि—तुम णं देवाणुप्पिया ! उदगरयण जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेहि । त एएण कारणेण सामी ! एस से फरिहोदए ॥

जियसत्तुणा जलसोधण-पद

- ३० तए ण जियसत्तू राया सुवुद्धिस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ट नो सदहहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, असदहहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे अविभतरठाणिज्जे पुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुव्भे देवाणुप्पिया ! अतरावणाओ नवए घडए पडए य गेण्हह जाव' उदगसभारणिज्जेहिं दव्वेहिं सभारेह । तेवि तहेव संभारेति, सभारेत्ता जियसत्तुस्स उवणेति ॥

जियसत्तुस्स जिण्णासा-पद

- ३१ तए ण से जियसत्तू राया त उदगरयण करयलसि आसाएइ, आसाएत्ता आसायणिज्ज जाव' सव्विदियगाय-पल्हायणिज्ज जाणित्ता सुवुद्धि अमच्च सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—सुवुद्धी ! एए ण तुमे सता तच्चा' तहिया अवितहा ° सव्भूया भावा कओ उवलद्धा ?

सुवुद्धिस्स उत्तर-पदं

३२. तए ण सुवुद्धी जियसत्तु एवं वयासी—एए ण सामी ! मए सता° •तच्चा तहिया अवितहा सव्भूया ° भावा जिणवयणाओ उवलद्धा ॥

१. स० पा०—सते जाव भावे ।

५. ना० १।१२।४ ।

२. सं० पा०—सताण जाव सव्भूयाण ।

६. स० पा०—तच्चा जाव सव्भूया ।

३. ना० १।१२।१६,२० ।

७. सं० पा०—सता जाव भावा ।

४. ना० १।१२।१६,२० ।

३३ तए ण जियसत्तू सुबुद्धि एवं वयासी—त इच्छामि ण देवाणुप्पिया । तव अतिए जिणवयण निसामित्तए ॥

जियसत्तुस्स समणोवासयत्त-पदं

- ३४ तए ण सुबुद्धी जियसत्तुस्स विचित्त केवलपण्णत्त चाउज्जामं धम्म परिकहेइ^१ ।
 ३५ तए ण जियसत्तू सुबुद्धिस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुत्तुट्टे सुबुद्धि अमच्च एव वयासी—सद्दहामि ण देवाणुप्पिया । निग्गथं पावयणं^२ । •पत्तियामि ण देवाणुप्पिया । निग्गथं पावयण । रोएमि ण देवाणुप्पिया । निग्गथं पावयण । अबुद्धेमि ण देवाणुप्पिया ! निग्गथ पावयणं । एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय देवाणुप्पिया ! अवित्तहमेय देवाणुप्पिया । इच्छियमेय देवाणुप्पिया । पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया । इच्छिय-पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया । ° से जहेय तुव्भे वयह । त इच्छामि ण तव अतिए 'चाउज्जामियं गिहिधम्म'^३ उवसपज्जिता ण विहरित्तए ।
 अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवव करेह ॥
 ३६ तए ण से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अतिए चाउज्जामियं गिहिधम्म पडिवज्जइ ॥
 ३७. तए ण जियसत्तू समणोवासए जाए—अहिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

पव्वज्जा-पदं

- ३८ तेण कालेण तेणं समएण थेरागमण । जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ^४ । सुबुद्धी धम्म सोच्चा निसम्म एव वयासी^५—ज नवर—जियसत्तू आपुच्छामि^६ •तओ पच्छा मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय ° पव्वयामि ।
 अहासुह देवाणुप्पिया !
 ३९ तए ण सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी—एव खलु सामी ! मए थेराण अतिए धम्मे निसते । से वि य धम्मे 'इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए'^७ । तए ण अह सामी ! ससारभउव्विग्गे भीए^८ •जम्मण-

१. परिकहेइ तमाइक्कइ, जहा—जीवा वज्जंति जाव पचाणुव्वयाइ । द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य प्रथम पादटिप्पणम् ।
 २. सं० पा०—पावयण जाव से जहेयं ।
 ३. पचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइय जाव (क, ख, ग, घ) । द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५. ना० १।५।४७ ।

६. निग्गच्छति (क, ग) ।

७. पू०—ना० १।१।१०१ ।

८. सं० पा०—आपुच्छामि जाव पव्वयामि ।

९. इच्छिए पडिच्छिए ३ (क), इच्छियपडिच्छिए (ख, ग) ।

४. पचाणुव्वइय जाव दुवालसविह (क, ख, ग, घ) । १०. सं० पा०—भीए जाव इच्छामि ।

जर-मरणाण० इच्छामि ण तुव्भेहिं अवभणुण्णाए^१ •समाणे थेराण अतिए मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय० पव्वइत्तए ॥

४०. तए णं जियसत्तू राया सुवुद्धि एव वयासी—अच्छसु^२ ताव देवाणुप्पिया ! कइवयाइ^३ वासाइ उरालाइ^४ •माणुस्सगाइ भोगभोगाइ० भुजमाणा तओ पच्छा एगयओ^५ थेराण अतिए मुडे भवित्ता^६ •ण अगाराओ अणगारिय० पव्वइस्सामो ॥

४१. तए ण सुवुद्धी जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ट पडिसुणेइ ॥

४२. तए ण तस्स जियसत्तुस्स रण्णो सुवुद्धिणा सिद्धि विपुलाइ माणुस्सगाइ काम-भोगाइ^७ पच्चणुवभवमाणस्स दुवालस वासाइ वीइक्कताइ ॥

४३. तेणं कालेण तेण समएण थेरागमण । जियसत्तू राया धम्म सोच्चा निसम्म एव वयासी—जं नवर—देवाणुप्पिया । सुवुद्धि अमच्च आमतेमि, जेट्टपुत्त रज्जे ठावेमि^८, तए ण तुव्भण्णं^९ •अतिए मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय० पव्वयामि ।

अहामुहं देवाणुप्पिया ।

४४. तए ण जियसत्तू राया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवुद्धि सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु मए थेराण अतिए धम्मे निसते जाव^{१०} पव्वयामि । तुम ण कि करेसि^{११} ?

४५. तए ण सुवुद्धी जियसत्तू राय एव वयासी^{१२}—•जइ ण तुव्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विगा जाव^{१३} पव्वयह, अम्ह ण देवाणुप्पिया ! के अण्णे आहारे वा आलवे वा ? अह वि य ण देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विगे जाव० पव्वयामि^{१४} । त जइ ण देवाणुप्पिया ! जाव पव्वाहि । गच्छह ण देवाणुप्पिया ! जेट्टपुत्त^{१५} कुडुवे ठावेहि, ठावेत्ता पुरिससहस्सवार्हिणि सीय दुरुहित्ता ण मम अतिए पाउवभवउ । सो वि तहेव पाउवभवइ ॥

१. सं० पा०—अवभणुण्णाए जाव पव्वइत्तए । १० ना० १।१२।३६ ।

२. तत्थ (क), अच्छासु (ख, ग), अच्छ (घ) । ११. पू०—ना० १।५।८६ ।

३. कतिवयाति (ख, ग) । १२ सं० पा०—वयासी जाव के अन्ने आहारे

४. सं० पा०—उरालाइ जाव भुजमाणा । वा जाव पव्वयामि ।

५. एगओ (ख, ग) । १३ ना० १।५।८६ ।

६. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइस्सामो । १४. पव्वामि (क, ग) ।

७. जाव (क) । १५. °पुत्त च (क, ख, ग) ।

८. ठावेमि (ख, ग, घ) ।

९. तुव्भे ण (ख, घ), सं० पा०—तुव्भण्ण जाव पव्वयामि ।

४६. तए णं जियसत्तू राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह
ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेय उवट्टवेह । ते वि
तहेव उवट्टवेति जाव' अभिसिंचति^३ जाव' पव्वडए ॥
- ४७ तए ण जियसत्तू रायरिसी' एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता', वहूणि
वासाणि सामण्णपरियाग पाडणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता
जाव' सिद्धे ॥
- ४८ तए ण सुवुद्धी एक्कारस अगाइ अहिज्जित्ता, वहूणि वासाणि सामण्णपरियाग
पाडणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता जाव' सिद्धे ॥

निक्खेव-पद

४९. एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण वारसमस्स नायज्झयणस्स
अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा—

मिच्छत्त-मोहियमणा, पावपसत्ता वि पाणिणो विगुणा ।
फरिहोदग व गुणिणो, हवति वरगुरूपसायाओ ॥१॥

१. ना० १।५।६३, ६४ ।
२. अभिसिंचति (क, ख, ग) ।
३. ना० १।५।६५-६६ ।
४. × (क, ख, ग) ।

५. अहिज्जिऊण (ख) ।
६. ना० १।५।१०५ ।
७. ना० १।५।१०५ ।

तेरसमं अज्भयणं

मंडुक्के

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भते ! समणेणं भगवया महावीरेण बारसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तेरसमस्स ण भंते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एव खलु जव्वु ! तेण कालेण तेण समएण 'रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । समोसरण' । परिसा निग्गया ॥
३. तेण कालेण तेण समएण सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए दद्दुरंसि सीहासणसि दद्दुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्ग-महिंसीहिं सपरिसाहिं एव जहा सूरियाभे जाव' दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ । इम च ण केवलकप्प जव्वुदीव दीव विउलेण ओहिणा आभोएमाणे जाव' नट्टविहिं उवदसित्ता पडिगए, जहा—सूरियाभे ॥

गोयमस्स पुच्छा-पद

४. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अहो ण भते ! दद्दुरे देवे महिड्ढिए महज्जुईए महव्वले महायसे महासोक्खे महाणुभागे ॥
५. दद्दुरस्स ण भते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे कहिं गए ? कहिं अणुपविट्ठे ? गोयमा ! सरीर गए सरीरं अणुपविट्ठे कूडागारदिट्ठतो' ॥

१. 'घ' प्रती अत्र विस्तृत पाठो विद्यते ।

३. राय० सू० ७-१२० ।

२. राय० सू० ७ ।

४. राय० सू० १२३ ।

६ दद्दुरेण भते! देवेण सा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ?

भगवओ उत्तरे दद्दुरदेवस्स नंदभव-पदं

७ एव खलु गोयमा ! इहेव जवुद्धीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ॥

८ तत्थ णं रायगिहे नदे नाम मणियारसेट्ठी—अड्ढे दित्ते ॥

नंदस्स धम्मपडिवत्ति-पदं

९ तेण कालेण तेण समएण अह गोयमा ! समोसढे । परिसा निग्गया । 'सेणिए वि निग्गए' ॥

१० तए ण से नदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धे समणे पायविहारचारेणं जाव^१ पज्जुवासइ ॥

११. नदे मणियारसेट्ठी धम्म सोच्चा समणोवासए जाए ॥

१२ तए णऽह रायगिहाओ पडिनिकखते वहिया जणवयविहारेणं^२ विहरामि ॥

मिच्छत्तपडिवत्ति-पदं

१३ तए ण से नदे मणियारसेट्ठी अण्णया कयाइ असाहुदसणेण य अपज्जुवासणाए य अण्णुसासणाए य असुस्सूसाणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं-परिहाय-माणेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं-परिवड्ढमाणेहिं मिच्छत्त विप्पडिवण्णे जाए यावि होत्था ॥

१४ तए ण नदे मणियारसेट्ठी अण्णया कयाइ^३ गिम्हकालसमयंसि जेट्टामूलंसि माससि अट्टमभत्त परिणेण्हइ, परिणेण्हत्ता पोसहसालाए^४ •पोसहिए वभचारी उमुक्क-मणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खत्तसत्थमुसले एगे अबीए दवभ-सथारोवगए^५ विहरइ ॥

पोक्खरिणी-निम्माण-पदं

१५ तए ण नदस्स अट्टमभत्तसि परिणममाणसि तण्हाए^६ छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था-घण्णा ण ते^७ •ईसरपभियओ, सपुण्णा ण ते ईसरपभियओ, कयत्था णं ते

१. पू०—राय० सू० ६६७ ।

२ पू०—ना० १।५।७ ।

३. सेणिए राया निग्गए (क); राया निग्गओ (ख), राया निग्गए (ग) ।

४. पायचारेण (क, ख, ग) ।

५ उवा० १।२० ।

६. ० विहार (ख) ।

७. X (क, ख, ग) ।

८. स० पा०—पोसहसालाए जाव विहरइ ।

९. तण्हा (ग) ।

१०. स० पा०—घण्णा णं ते जाव ईसरपभियओ ।

ईसरपभियओ, कयपुण्णा णं ते ईसरपभियओ, कयलर्कखणा ण ते ईसरपभियओ
 कयविभवा ण ते ° ईसरपभियओ, जेसि ण रायगिहस्स वहिया बहूओ वावीओ
 पोक्खरिणीओ' •दीहियाओ गुजालियाओ सरपतियाओ ° सरसरपतियाओ,
 जत्थ ण बहुजणो 'ण्हाइ य पियइ य' पाणिय च सवहइ । त सेय खलु मम
 कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे
 तेयसा जलते सेणिय राय आपुच्छित्ता रायगिहस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे
 दिसीभागे वेवभारपव्वयस्स अदूरसामते वत्थुपाढग-रोइयसि भूमिभागसि नद
 पोक्खरिणिं खणावेत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए
 रयणीए जाव उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते पोसह
 पारेइ, पारेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-सवधि-परियणेण
 सद्धि ° सपरिवुडे महत्थ' •महग्घ महरिह रायारिह ° पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता
 जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ जाव पाहुड उवट्टुवेइ, उवट्टुवेत्ता एव
 वयासी—इच्छामि ण सामी । तुवभेहिं अब्भणुण्णाए समाणे रायगिहस्स
 वहिया' •उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे वेवभारपव्वयस्स अदूरसामते वत्थुपाढग-
 रोइयसि भूमिभागसि नदं पोक्खरिणिं ° खणावेत्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ।

१६ तए ण से नदे मणियारसेट्ठी सेणिएण रण्णा अब्भणुण्णाए समाणे हट्टुट्टे रायगिह
 नगर मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता वत्थुपाढग-रोइयसि भूमिभागसि
 नद पोक्खरिणिं खणावेउ पयत्ते यावि होत्था ॥

१७ तए ण सा नदा पोक्खरणी अणुपुव्वेण खम्ममाणा-खम्ममाणा पोक्खरणी जाया
 यावि होत्था—चाउक्कोणा' समतीरा अणुपुव्व सुजायवप्पसीयलजला सच्छन्न'-
 पत्त-भिसमुणाला' बहुउप्पल-पउम-कुमुद-नलिण-सुभग-सोगधिय-पुडरीय-महा-
 पुडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-पप्फुल्लकेसरोववेया' परिहत्थ-भमत-मत्तच्छप्पय'^{१३}-

१. स० पा०—पोक्खरिणीओ जाव सरसर- ७ स० पा०—वहिया जाव खणावेत्तए ।
 पतियाओ । ८. खणमाणा (घ) ।

२. ण्हायइ पियइ (क, ख) । ९ चउक्कोणा (क) ।

३ ना० १।१।२४ । १०. सच्छन्न (क, ख, ग, घ) ।

४. स० पा०—नाइ जाव सपरिवुडे । ११ विस० (ख, ग) ।

५ स० पा०—महत्थं जाव पाहुडं रायारिह १२ पुप्फफलकेसरोविया (क); प्फुल्लप्पलकेसरो-
 (क, ख, ग, घ); पाहुड रायारिह— वचिया (ख); फुल्लकेसरोववेया (घ) ।

अत्र लिपिदोषेण व्यत्ययो जात इति संभाव्यते । १३ महच्छप्पय (क) ।

६. ना० १।५।२० ।

अणेग-सउणगण-मिहुण-वियरिय-सद्दुन्नइय^१-महुरसरनाइया पासाईया दरिस-
णिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

वणसड-पदं

- १८ तए णं से नदे मणियारसेट्ठी नदाए पोक्खरिणीए चउदिंसि चत्तारि वणसंडे
रोवावेइ ॥
- १९ तए ण ते वणसंडा अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा सगोविज्जमाणा संवड्ढिज्ज-
माणा य वणसडा जाया—किण्हा जाव^२ महामेह-निउरवभूया पत्तिया पुप्फिया^३-
•फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव^४ उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा
चिट्ठति ॥

चित्तसभा-पदं

- २० तए ण नदे मणियारसेट्ठी पुरत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं कारावेइ^५-
अणेगखमसयसण्णिविट्ठं^६ पासाईय दरिसणिज्ज अभिरूवं पडिरूवं । तत्थ ण
बहूणि किण्हाणि य^७ •नीलाणि य लोहियाणि य हालिदाणि य^८ सुक्कलाणि
य कट्टकम्माणि य पोत्थकम्माणि य चित्त-लेप्प-गथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमाइ^९
उवदसिज्जमाणाइ-उवदसिज्जमाणाइं चिट्ठति ।
तत्थ ण बहूणि आसणाणि य सयणाणि य अत्थुय-पच्चत्थुयाइं चिट्ठति ।
तत्थ ण बहवे 'नडा य'^{१०} नट्टा य^{११} •जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंवग-कहग-पवग-लासग-
आइक्खग-लख-मख-तूणइल्ल-तुववीणिया य^{१२} दिन्नभइ-भत्त-वेयणा तालायर-
कम्म करेमाणा-करेमाणा विहरति ।
रायगिहविणिग्गओ एत्थ^{१३} ण बहुजणो तेसु पुव्वन्नत्येसु आसण-सयणेसु सण्ण-
सण्णो^{१४} य सतुयट्ठो य सुयमाणो य 'पेच्छमाणो य'^{१५} 'साहेमाणो य'^{१६} सुहंसुहेणं
विहरइ ॥

१ सद्दुन्नइय (क, ग), सद्दुन्नइय (ख, घ) ।
असौ पाठ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति (मुद्रित प्रति सू०
७४) राघारेण स्वीकृत ।

२. ना० १।७।१३ ।

३. सं० पा०—पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा ।

४ करावेइ (ख) ।

५ पू०—ना० १।१।८६ ।

६. सं० पा०—किण्हाणि य जाव सुक्कलाणि ।

७. सघातिम (क, ख, ग, घ) ।

८. × (ग, घ) ।

९. सं० पा०—नट्टा य जाव दिन्न^० ।

१०. तत्थ (क) ।

११. उच्चत्थुयसंनिसण्णो (क) ।

१२. × (ख, ग, घ) ।

१३. × (ख, ग), सोहेमाणो य (घ) ।

महाणससाला-पद

२१. तए ण नदे मणियारसेट्टी दाहिणिल्ले वणसडे एगं मह महाणससालं कारावेइ—
अणेगखभसयसण्णिविट्ठ जाव' पडिरूवं । तत्थ ण वहवे पुरिसा दिन्नभइ-भत्त-
वेयणा' विउल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेति, बहूण समण-माहण-
अतिहि-किवण-वणीमगाण परिभाएमाणा-परिभाएमाणा विहरंति ॥

तिगिच्छियसाला-पद

२२ तए ण नदे मणियारसेट्टी पच्चत्थिमिल्ले वणसडे एग महं तिगिच्छियसाल
कारावेइ^१—अणेगखभसयसण्णिविट्ठ जाव' पडिरूव । तत्थ ण वहवे वेज्जा य
वेज्जपुत्ता य 'जाणुया य जाणुयपुत्ता य'^२ कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइ-
भत्त-वेयणा बहूण वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छ-
कम्म करेमाणा-करेमाणा विहरति । अण्णे य एत्थ वहवे पुरिसा दिन्नभइ-
भत्त-वेयणा तेसि बहूण वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य
ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेण पडियारकम्म करेमाणा विहरति ॥

अलंकारियसभा-पदं

२३ तए णं नदे मणियारसेट्टी उत्तरिल्ले वणसडे एग महं अलंकारियसभ
कारावेइ^३—अणेगखभसयसण्णिविट्ठ जाव' पडिरूव । तत्थ ण वहवे अलंकारिय-
मणुस्सा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा बहूण समणाण य' अणाहाण य गिलाणाण य
रोगियाण य दुब्बलाण य अलंकारियकम्म करेमाणा-करेमाणा विहरति ॥

नंदस्स पसंसा-पदं

२४ तए ण तीए नदाए पोक्खरिणीए वहवे सणाहा य अणाहा य पथिया य पहिया
य करोडिया' य तणहारा य पत्तहारा य कट्टहारा य—अप्पेगइया ण्हायति अप्पे-
गइया पाणिय पियति अप्पेगइया पाणिय सवहति'^४ अप्पेगइया विसज्जियसेय-
जल्ल-मल-परिस्सम-निद्-खुप्पिवासा सुहसुहेण विहरति । रायगिहविणिग्गओ'^५

१ ना० १।१।८६ ।

२. दिन्नभय० (ग) सर्वत्र ।

३ कारेइ (क, ग, घ) ।

४ ना० १।१।८६ ।

५. × (क) ।

६. करेइ (ख, ग); कारेति (घ) ।

७. ना० १।१।८६ ।

८ य माहणाण य सनाहाण य (क्व०) ।

९. करोडिकारवा (ख, ग) ।

१० सवाहति (क, ख) ।

११. रायगिहनिग्गओ (ख, ग) ।

वि यत्थ' बहुजणो 'किं ते'^१ जलरमण-विविहमज्जण-कयलिलयाहरय'-कुसुम-सत्थरय-अणोगसउणगण-कयरिभियसकुलेसु सुहसुहेण अभिरममाणो-अभिरम-माणो^२ विहरइ ॥

२५ तए ण नदाए पोक्खरिणीए' बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च' सवहमाणो य अण्णमण्ण एव वयासी—घण्णे' ण देवाणुप्पिया । नदे मणियारसेट्ठी, कयत्थे^३ •ण देवाणुप्पिया । नदे मणियारसेट्ठी, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया । नदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया ! नदे मणियारसेट्ठी, कया ण लोया । सुलद्धे माणुस्सए^४ जम्मजीवियफले [नदस्स मणियारस्स ?] ? जस्स ण इमेयारूवा नदा पोक्खरिणी चाउक्कोणा जाव' पडिरूवा^५ जाव'^६ रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सण्णिसण्णो य सतुयट्ठी य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहसुहेण विहरइ । त घन्ने ण देवाणुप्पिया । नदे मणियारसेट्ठी, कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! नदे मणियारसेट्ठी, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया । नदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया । नदे मणियारसेट्ठी, कया ण लोया । सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नदस्स मणियारस्स ?

२६ तए णं रायगिहे सिंघाडग'^७ •तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेमु^८ बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ -घन्ने ण देवाणुप्पिया । नदे मणियारसेट्ठी सो चेव गमओ जाव सुहसुहेण विहरइ ॥

२७. तए ण से नदे मणियारसेट्ठी बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्टुट्ठे 'धाराहत - कलवग विव'^९ समूसवियरोमकूवे पर सायासोक्खमणुभवमाणे विहरइ ॥

नदस्स रोगुप्पत्ति-पदं

२८ तए ण तस्स नदस्स मणियारसेट्ठिस्स अण्णया कयाइ सरीरगसि सोलस रोगा-यका^{१०} पाउव्भूया । [त जहा—

१ जत्थ (क, ख); तत्थ (घ) ।

२ किं तत् 'यत् करोति' इति शेष ।

३ °घरय (क) ।

४. अभिरममाणे (क) ।

५ पुक्खरणीए (क), पोक्खरणीए (ख) ।

६ वा (क) ।

७ घण्णेसि (क, घ) ।

८. स० पा०—कयत्थे जाव जम्म० ।

९. ना० १।१३।१७ ।

१०. पडिरूवा जस्स ण पुरत्थिमिल्ले त चेव चउसु वि वणसडेसु (क, ख, ग, घ) ।

११. ना० १।१३।१८-२४ ।

१२. स० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो ।

१३ धाराहयकलंबक पिव (ख, ग), °कयवक पिव (घ) ।

१४. रोगातका (क), रोयायका (ख) ।

गाहा—

सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले भगदरे ।
अरिसा' अजीरण दिट्टी-मुद्धिसूले' अकारण ॥
अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कडू दउदरे' कोढे' ॥१॥]

तिगिच्छा-पदं

२६ तए णं से नदे मणियारसेट्टी सोलसहिं रोयायकेहि अभिभूए समाणे कोडुविय-
पुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम्भे देवाणुप्पिया । रायगिहे
नयरे सिंघाडग'-●तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु महया-महया
सहेण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया । नदस्स
मणियारस्स सरीरगसि सोलस रोयायका पाउवभूया । [त जहा—सासे जाव
कोढे'] । त जो ण इच्छइ देवाणुप्पिया । विज्जो वा विज्जपुत्तो वा जाणुओ
वा जाणुअपुत्तो वा कुसलो वा कुसलपुत्तो वा नदस्स मणियारस्स तेसि च ण
सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, तस्स ण नदे मणियार-
सेट्टी विउल अत्थसपयाण दलयइ ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसण' घोसेह,
घोसेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणति ॥

३० तए ण रायगिहे नगरे इमेयारूव घोसण सोच्चा निसम्म वहवे वेज्जा य° ●वेज्ज-
पुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य° कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया
य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह-भेसज्जहत्थगया य सएहि-
सएहि गिहेहितो निक्खमति, निक्खमित्ता रायगिह मज्झमज्झेण जेणेव नदस्स
मणियारसेट्टिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता नदस्स मणियारमेट्टिस्स
सरीर' पासति, पासित्ता तेसि रोगायकाण नियाण पुच्छति, पुच्छित्ता नदस्स
मणियारसेट्टिस्स वहूहि उव्वलणेहि° य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहि° य वमणेहि
य विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणेहि° य अवण्हावणेहि° य अणुवासणाहि° य
वत्थिकम्मोहि य निरुहेहि° य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य

१ आयारो ६।८ सूत्रे पोडगरोगविवरणे भिन्न
क्रमो विद्यते ।

२ मुद्धिसूले (क), पुडुसूले (ग) ।

३ दओदरे (ख) ।

४. असी कोण्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते ।

५ स० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

६. असी कोण्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते ।

७ उग्घोसण (क)

८. स० पा०—वेज्जा य जाव कुसलपुत्ता ।

९ सरीर हस्स (क) ।

१० उव्वलणेहि (ग) ।

११. सिणेहि य पाणेहि य (ख) ।

१२, अवट्टाणाहि (क); अववहणेहि (ख) ।

अवदवेयणाहि (ग) ।

१३ अवण्हावणाहि (क), अवण्हाणेहि (ख, घ) ।

१४. °वासणेहि (घ) ।

१५. निरुहेहि (ख) ।

सिरावत्थीहि' य तप्पणाहि य पुडवाएहि य 'छल्लीहि य वल्लीहि य' मूलेहि य कदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य वीणहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य' इच्छति तेसि सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायकं उवसामित्तए, नो चेव ण सचाएति उवसामेत्तए ॥

३१. तए ण ते वहवे वेज्जा' य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य जाहे नो सचाएति तेसि सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, ताहे सता तता परितता' •निव्विण्णा समाणा जामेव दिस पाउव्भूया तामेव दिसं° पडिगया ॥

भगवओ उत्तरे दद्दुरदेवस्स दद्दुरभव-पदं

३२. तए ण नदे मणियारमेट्ठी तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूए समाणे नदाए पुक्खरिणीए मुच्छिणए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे तिरिक्खजोणिएहिं निवद्धाउए बद्धपएसिए अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे कालमासे काल किच्चा नदाए पोक्खरिणीए दद्दुरीए कुच्छिसि दद्दुरत्ताए उववण्णे ॥

३३ तए ण नदे° दद्दुरे' गवभाओ विणिमुक्के समाणे उम्मुक्कवालभावे' विण्णय-परिणयमित्ते'° जोव्वणगमणुप्पत्ते नदाए पोक्खरिणीए अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ॥

३४. तए ण नदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणिय च सवहमाणो य अण्णमण्ण' एवमाइक्खइ एव भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—घन्ने ण देवाणुप्पिया ! नदे मणियारे, जस्स ण इमेयारूवा नदा पुक्खरिणी—चाउक्कोणा जाव'° पडिरूवा'° ॥

दद्दुरस्स जाइसरण-पद

३५. तए ण तस्स दद्दुरस्स त अभिक्खण-अभिक्खण बहुजणस्स अतिए एयमट्ट

- | | |
|--|---|
| १. सिरावेहेहि (क), अवरहसिरावत्थीहि (ख); सिरावेहेहि य (ग) । | ७ नदे जीवे (घ) । |
| २ छल्लीहि य (ख), वल्लीहि य छल्लीहि-य (घ) । | ८ दद्दुरीए (घ) । |
| ३. य आसज्जेहि य (क, ग); आइज्जेहि य (घ) । | ९. उमुक्क° (ख, घ) । |
| ४. रोगातक (क, ग) । | १०. विण्णाय° (घ) । |
| ५ विज्जा (क, ख, ग) । | ११. अण्णमण्णस्स (क, ग, घ) । |
| ६ स० पा०—परितता जाव पडिगया । | १२. ना० १।१३।१७ । |
| | १३. पडिरूवा जस्स ण पुरत्थिमिल्ले वणसडे चित्तसभा अणेगखंभ(क, ख, ग, घ), पू०—ना० १।१३।१८-२४ । |

सोच्चा निसम्म^१ इमेयारूवे अज्भयण चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्प-
ज्जित्था—कहिं^२ मन्ने मए इमेयारूवे सहे निसतपुव्वे^३ त्ति कट्ठु सुभेण परिणामेण^४
•पसत्थेण अज्भयसाणेण लेसाहिं^५ विसुज्जमाणीहिं^६ तयावरणिज्जाण कम्माण
खओवसमेण ईहापूह-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स सण्णिपुव्वे^७ जाईसरणे समु-
प्पण्णे, पुव्वजाइ सम्म समागच्छइ ॥

३६ तए ण तस्स दद्दुरस्स इमेयारूवे अज्भयण चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे
समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इहेव रायगिहे नयरे नदे नाम मणियारे—अड्ढे^८ ।
तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसडे । तए ण मए समणस्स
भगवओ महावीरस्स अत्तिए पचाणुव्वयाइ^९ सत्तसिक्खावयाइ^{१०}—•दुवालसविहे
गिहिधम्मे^{११} पडिवण्णे । तए ण अह अण्णया कयाइ असाहुदसणेण य जाव^{१२}
मिच्छत्त विप्पडिवण्णे ।

तए ण अह अण्णया कयाइ गिम्हकालसमयसि जाव^{१३} पोसह उवसपज्जित्ता ण
विहरामि । एव जहेव चित्ता । आपुच्छणा । नदापुक्खरिणी । वणसडा ।
सभाओ । त चेव सव्व जाव^{१४} नंदाए दद्दुरत्ताए उववण्णे । त अहो ण अह
अधण्णे^{१५} अपुण्णे^{१६} अकयपुण्णे^{१७} निग्गथाओ पावयणाओ नट्टे भट्टे परिव्वभट्टे । त सेय
खलु मम सयमेव पुव्वपडिवण्णाइ पचाणुव्वयाइ^{१८} उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए—
एव सपेहेइ, सपेहेत्ता पुव्वपडिवण्णाइ पचाणुव्वयाइ आरुहेइ^{१९}, आरुहेत्ता इमेयारूव
अभिग्गह अभिग्गहइ—कप्पइ मे जावज्जीव छट्ठुछट्टेणं अणिक्खित्तेण तवो-
कम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्टुस्स वि य ण पारणगसि कप्पइ मे
नदाए पोक्खरिणीए परिपेरतेसु फासुएण ण्हाणोदएण उम्मदणालोलियाहिं^{२०} य^{२१}
वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए—इमेयारूव अभिग्गह अभिग्गहइ, जावज्जीवाए
छट्टुछट्टेणं •अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे^{२२} विहरइ ॥

भगवओ रायगिहे समवसरण-पद

३७ तेण कालेण तेण समएण अह गोयमा ! गुणसिलए समोसडे । परिसा निग्गया ॥

१. निसम्मा (ख, ग) ।

२. से कहिं (वव०) ।

३. ० पुव्व (ख) ।

४. स० पा०—परिणामेण जाव जाईसरणे ।

५. पू०—ना० १।५।७ ।

६. स० पा०—सिक्खावयाइ जाव पडिवण्णे ।

७. ना० १।१३।१३ ।

८. ना० १।१३।१४ ।

९. ना० १।१३।१५-३२ ।

१०. अहन्ने (ख, ग) ।

११. अकयत्थे (घ) ।

१२. पचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ (घ) ।

१३. आरुहइ (ख) ।

१४. उम्मदणो^० (क, ख, ग), उम्मदणाइ
लोलियाहिं (घ) ।

१५. 'मट्टियाए' इति शेषः ।

१६. स० पा०—छट्टुछट्टेणं जाव विहरइ ।

३८. तए ण नदाए पोक्खरिणीए बहुजणो 'ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणिय च सबहमाणो य' अण्णमण्ण' •एवमाडक्खइ—एव खलु° समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे । त गच्छामो ण देवाणुप्पिया । समणं भगवं महावीर वदामो' •णमसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मंगलं देवय चेइयं° पज्जुवासामो । एय णे इहभवे परभवे य हियाए' •सुहाए खमाए निस्सेयसाए° आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥

दद्दुरस्स समवसरणं पइ गमण-पदं

३९. तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म अयमेयाह्वे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्या—एवं खलु समणे भगव महावीरे समोसढे । त गच्छामि ण समण भगवं महावीर वदामि'—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता नदाओ पोक्खरिणीओ सणिय-सणिय पच्चुत्तरेइ', जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए' दद्दुरगईए वीईव-यमाणे-वीईवयमाणे जेणेव मम अतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४०. इम च ण सेणिए राया भभसारे' ण्हाए जाव' सव्वालकारविभूसिए हत्थिखंध-वरगए सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामरेहि य उद्धुव्व-माणेहि महयाहय-गय-रह-भड-चडगर-[कलियाए?] चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे मम पायवदए हव्वमागच्छइ ॥

दद्दुरस्स मच्चु-पदं

४१. तए ण से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आसकिसोरएण वामपाएणं अक्कते समाणे अतनिग्घाइए कए यावि होत्था ॥

४२. तए ण से दद्दुरे अथामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु एगंतमवक्कमइ, करयलपरिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अज्जलि कट्टु एव वयासी—नमोत्थु णं अरहताणं जाव'° सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं सपत्ताण । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव'° सिद्धिगइनामधेज्जं ठाण

१. ण्हाइ ३ (क, ख, ग), ण्हाणे य ३ (घ) ।

असौ पाठ ३४ सूत्रेण पूरितः ।

२. स० पा०—अण्णमण्ण जाव समणे ।

३. स० पा०—वदामो जाव पज्जुवासामो ।

४. हिययाए (क, ख, ग) स० पा०—हियाए

जाव आणुगामियत्ताए ।

५. पू०—ना० १।१३।३७ ।

६. उत्तरेइ, २ (ख) ।

७. उक्किट्ठाए ५ (क, ख) ।

८. भिभिसारे (क), भिभिसारे(ख); भिभासारे (घ) ।

९. ना० १।१।८१ ।

१०, ११. ओ० सू० २१ ।

सपाविउकामस्स । पुर्व्विपि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए^१, •थूलए मुसावाए पच्चक्खाए, थूलए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए, थूलए मेहुणे पच्चक्खाए^०, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए । त इयाणि पि तस्सेव अतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव सव्व परिग्गह पच्चक्खामि जावज्जीव, सव्व असण-पाण-खाइम-साइम पच्चक्खामि जावज्जीव । जपि य इम सरीर इट्टु कत जाव^३ मा ण विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसतु एयपि य ण चरिमेहि ऊसासेहि वोसिरामि त्ति कट्टु ॥

४३. तए ण से ददुदुरे कालमासे काल किच्चा जाव^३ सोहम्मे कप्पे ददुदुरवडिसए विमाणे उववायसभाए ददुदुरदेवत्ताए उववण्णे । एव खलु गोयमा ! ददुदुरेण सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥

४४. ददुदुरस्स ण भते ! देवस्स केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता । से ण ददुदुरे देवे महाविदेहे वासे सिज्जिभ्हिइ बुज्जिभ्हिइ^४ •मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण^० अत करेहिइ ॥

निक्खेव-पदं

४५ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^४ सपत्तेण तेरसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

सपन्नगुणो वि जओ^१, सुसाहु-संसग्गवज्जिओ पाय ।
पावइ गुणपरिहाणि, ददुदुरजीवोव्व मणियारो ॥१॥

अथवा—

तित्थयर-वदणत्थ, चलिओ भावेण पावए सग्ग ।
जह ददुदुरदेवेण, पत्त वेमाणिय-सुरत्त ॥२॥

१. स० पा०—पच्चक्खाए जाव थूलए ।

२. ना० १।१।२०६ ।

३. ना० १।१।२११ ।

४. स० पा०—बुज्जिभ्हिइ जाव अत ।

५. ना० १।१।७ ।

६. जिओ (ख, ग) ।

चोद्दसमं अज्भयणं तेयली

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' संपत्तेण तेरसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स ण भते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एव खलु जंबू ! तेण कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुर नाम नयरं । पमयवणे उज्जाणे । कणगरहे राया ॥
३. तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी ॥
४. तस्स ण कणगरहस्स तेयलिपुत्ते नामं अमच्चे—'साम-दड'^१-●भेय-उवप्पयाण-नीति-सुपउत्त-नयविहण्णू' विहरइ ॥
५. तत्थ ण तेयलिपुरे कलादे नाम मूसियारदारए होत्था—अड्ढे जाव' अपरिभूए ॥
६. तस्स ण भद्दा नाम भारिया ॥
७. तस्स ण कलायस्स मूसियारदारगस्स घूया भद्दाए अत्तिया' पोट्टिला नाम दारिया होत्था—रूवेण य जोव्वणेण^२ य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ-सरीरा ॥

पोट्टिलाए कीडा-पदं

८. तए णं सा पोट्टिला दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया चेडिया-चक्कवाल-संपरिवुडा उप्पि पासायवरगया आगासतलगंसि कणग'-तिंदूसएण कीलमाणी-कीलमाणी विहरइ ॥

१. ना० १।१।७ ।

४. ना० १।५।७ ।

२. स० पा०—साम-दड० । असौ अपूर्णं.

५. अत्तिया (क, ख, ग) ।

पाठ 'जाव' आदिपूर्तिसकेन-रहितोस्ति ।

६. × (ग) ।

३. पू०—ना० १।१।१६ ।

७ कणगमयेण (घ) ।

तेयलिपुत्तस्स आसत्ति-पदं

६. इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखधवरगए महया-भड-चडगर-आसवाह-
णियाए निज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण
वीईवयइ ॥
१०. तए ण से तेयलिपुत्ते अमच्चे मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीईवयमाणे-
वीईवयमाणे पोट्टिलं दारिय उप्पि आगासतलगसि कणग-तिदूसएण कीलमाणि
पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य अज्जोववण्णे
कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! कस्स
दारिया कि नामधेज्जा वा ?
११. तए ण कोडुवियपुरिसा तेयलिपुत्त एव वयासी—एस ण सामी ! कलायस्स
मूसियारदारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया—रूवेण य^१
•जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्टा उक्किट्टु^२ सरीरा ॥

पोट्टिलाए वरण-पदं

१२. तए णं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिणियत्ते समाणे अविभतरठाणिज्जे
पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुव्वे देवाणुप्पिया !
कलायस्स मूसियारदारयस्स धूय भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारिय मम भारिय-
त्ताए वरेह ॥
१३. तए ण ते अविभतरठाणिज्जा पुरिसा तेयलिणा एव वुत्ता समाणा हट्टुट्टु
करयल^३ परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अज्जलि कट्टु “एव सामी” ।
तहत्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तेयलिस्स अतियाओ
पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता^४ जेणेव कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहे
तेणेव उवागया ॥
१४. तए ण से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्टुट्टु
आसणाओ अम्भुट्टेइ, अम्भुट्टेत्ता सत्तट्टुपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेण
उवणिमतेइ, उवणिमतेत्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एव वयासी—सदिसत्तु
ण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयण ?
१५. तए ण ते अविभतरठाणिज्जा पुरिसा कलाय मूसियारदारयं एव वयासी—
अम्हे ण देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारिय तेयलिपुत्तस्स
भारियत्ताए वरेमो । त जइ ण जाणसि^५ देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्त वा

१. स० पा०—रूवेण य जाव सरीरा ।

३. जाणासि (ग) ।

२. स० पा०—करयल तहत्ति जेणेव ।

- सलाहणिज्ज वा सरिसो वा सजोगो वा दिज्जउ ण पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स । तो' भण देवाणुप्पिया । किं दलामो सुक' ॥
- १६ तए ण कलाए मूसियारदारए ते अविभतरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—एस चेव ण देवाणुप्पिया । मम सुके जण्ण तेयलिपुत्ते मम दारियानिमित्तेण अणुग्गह करेइ । ते अविभतरठाणिज्जे पुरिसे विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पुप्फ-वत्थ-गध'-मल्लालकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
- १७ [तए ण ते अविभतरठाणिज्जा पुरिसा' ?] कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनियत्तति', जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छत्ता तेयलिपुत्त अमच्च एयमदुं निवेइति' ॥

पोट्टिलाए विवाह-पद

- १८ तए ण कलाए मूसियारदारए अण्णया कयाइ सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तसि पोट्टिल दारिय ण्हाय सव्वालकारविभूसिय सीयं दुरुहेत्ता मित्त-नाइ'-
•नियग-सयण-सवधि-परियणेण सद्धि° सपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए' तेयलिपुर नयर मज्झमज्झेण जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, पोट्टिल दारिय तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ ॥
- १९ तए ण तेयलिपुत्ते पोट्टिल दारिय भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता हट्टुट्टे पोट्टिलाए सद्धि पट्टय दुरुहइ, दुरुहत्ता सेयापीएहि' कलसेहि अप्पाण मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोम कारेइ, कारेत्ता पाणिग्गहण करेइ, करेत्ता पोट्टिलाए भारियाए'° मित्त-नाइ''-•नियग-सयण-सवधि°-परियण विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण पुप्फ-वत्थ''-•गध-मल्लालकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता° पडिविसज्जेइ ॥
- २० तए ण से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइ'' •माणु-स्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे° विहरइ ॥

१. ता (क, घ) ।

२. सुक्क (घ) ।

३. जाव (ख, घ) ।

४. कोष्ठकान्तर्गत पाठ प्रतिपु नोपलभ्यते ।

५. नियत्तति २ (क, ख, ग), पडिनिक्खमइ (घ) ।

६. निवेयति (ख); निवेत्तेति (ग) ।

७. स० पा०—नाइ० ।

८. पू०—ना० १।१।३३ ।

९. सेयपीएहि (ग) ।

१०. भारियाए सद्धि (घ) ।

११. स० पा०—नाइ जाव परियण ।

१२. स० पा०—वत्थ जाव पडिविसज्जेइ ।

१३. स० पा०—उरालाइ जाव विहरइ ।

कणगरहस्स रज्जासत्ति-पदं

२१ तए ण से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य वले य वाहणे य कोसे य कोट्टागारे य 'पुरे य' अतेउरे य मुच्छिए गट्ठिए गिट्ठे अज्भोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियगेइ—अप्पेगइयाण हत्थगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाण हत्थगुट्ठए छिदइ, *अप्पेगइयाण पायगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाण पायगुट्ठए छिदइ, अप्पेगइयाण कण्णसक्कुलीओ छिदइ, अप्पेगइयाण० नासापुडाइ फालेइ, अप्पेगइयाण अगोवगाइ वियत्तेइ' ॥

पउमावईए अमच्चेण मतणा-पदं

२२. तए ण तीसे पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अयमेयारूवे अज्भत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु कणगरहे राया रज्जे य *रट्ठे य वले य वाहणे य कोसे य कोट्टागारे य पुरे य अतेउरे य मुच्छिए गट्ठिए गिट्ठे अज्भोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियगेइ—अप्पेगइयाण हत्थगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाण हत्थगुट्ठए छिदइ, अप्पेगइयाण पायगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाण पायगुट्ठए छिदइ, अप्पेगइयाण कण्णसक्कुलीओ छिदइ, अप्पेगइयाण नासापुडाइ फालेइ, अप्पेगइयाण० अगमगाइ वियत्तेइ' । त जइ ण अह दारय पयायामि, सेय खलु मम त दारग कणगरहस्स रहस्सियय' चेव सारक्खमाणीए सगोवेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता तेयलिपुत्त अमच्च सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य *रट्ठे य वले य वाहणे य कोसे य कोट्टागारे य पुरे य अतेउरे य मुच्छिए गट्ठिए गिट्ठे अज्भोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियगेइ—अप्पेगइयाण हत्थगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाण हत्थगुट्ठए छिदइ, अप्पेगइयाण पायगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाण पायगुट्ठए छिदइ, अप्पेगइयाण कण्णसक्कुलीओ छिदइ, अप्पेगइयाण नासापुडाइ फालेइ, अप्पेगइयाण अगोवगाइ० वियत्तेइ' । त जइ ण अह देवाणुप्पिया ! दारग पयायामि, तए ण तुम कणगरहस्स रहस्सियय चेव अणुपुव्वेण सारक्खमाणे सगोवेमाणे सवड्ढेहि । तए ण से

१. X (क, ख, ग, घ) । १।१।१६ सूत्रवद् अत्रापि 'पुरे य' इति पाठो युज्यते ।

२ स० पा०—एवं पायगुलियाओ पायगुट्ठए वि कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाइ ।

३ वियगेइ (क, घ) ।

४. स० पा०—रज्जे य जाव वियगेइ जाव

अगमंगाइ ।

५. वियगेइ (क, ख, ग, घ), २१ सूत्रानुसारेण अत्र 'वियत्तेइ' त्ति पाठेन भवित्तव्यम् । अतोऽस्माभि स एव स्वीकृत ।

६. रहस्सिगत (क); रहसिययं (ख, ग) ।

७. स० पा०—रज्जे य जाव वियत्तेइ ।

दारए उम्मक्कवालभावे' •विण्णय-परिणयमेत्ते° जोव्वणगमणुप्पत्ते 'तव मम य'^१ भिक्खाभायणे' भविस्सइ ॥

२३. तए ण से तेयलिपुत्ते अमच्चे पउमावईए देवीए एयमट्ट पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता पडिगए ॥

अवच्च-परिवत्तण-पद

२४ तए ण पउमावई देवी पोट्टिला य अमच्ची सममेव गव्वभ गेण्हंति, सममेव परिवहति ॥

२५ तए णं सा पउमावई देवी नवण्ह मासाणं बहुपडिपुण्णाण जाव'^२ पियदसण सुख्ख दारग पयाया । ज रयणिं च णं पउमावई देवी दारय पयाया त रयणिं च ण पोट्टिला वि अमच्ची नवण्ह मासाण विणिहायमावन्न दारिय पयाया ॥

२६ तए ण सा पउमावई देवी अम्मघाई सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम अम्मो । तेयलिपुत्त रहस्सिययं' चैव सद्दावेहि ॥

२७ तए ण सा अम्मघाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता अतेउरस्स अवदारेण'^३ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव तेयलिस्स गिहे जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'^४परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । पउमावई देवी सद्दावेइ ॥

२८. तए ण तेयलिपुत्ते अम्मघाईए अतिए एयमट्ट सोच्चा हट्टुट्टे अम्मघाईए सद्धि साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता अतेउरस्स अवदारेण रहस्सियय चैव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'^५परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—सदिसतु णं देवाणुप्पिया ! ज' मए कायव्व ॥

२९ तए ण पउमावई देवी तेयलिपुत्त एव वयासी—एव खलु कणगरहे राया जाव'^६ पुत्ते वियगेइ । अहं च णं देवाणुप्पिया ! दारग पयाया । त तुम ण देवाणु-प्पिया । एय दारग गेण्हाहि जाव'^७ तव मम य भिक्खाभायणे'^८ भविस्सइ त्ति कट्टु तेयलिपुत्तस्स हत्थे दलयइ ॥

१ स० पा०—उम्मक्कवालभावे जाव जोव्वण-गमणुप्पत्ते ।

२. तव य मम य (क), तव मम (ग, घ) ।

३ भिक्खायभातणे (ग) ।

४. ओ० सू० १४३ ।

५. रहस्सिय (क, ग) ।

६. अवदारेण (ग) ।

७. स० पा०—करयल जाव-एवं ।

८. स० पा०—करयल जाव एव ।

९ देवाणुप्पिए (घ) ।

१०. ना० १।१४।२१ ।

११. ना० १।१४।२३ ।

१२. भिक्खायभायणे (ग) ।

३० तए ण तेयलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारग गेण्हइ, उत्तरिज्जेण पिहेइ, अतेउरस्स रहस्सियय अरुवदारेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! कणगरहे राया जाव' पुत्ते वियगेइ । अय च ण दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए । तन्न तुम देवाणुप्पिए ! इम दारग कणगरहस्स रहस्सियय चए अणुपुव्वेण सारक्खाहि य सगोवेहिं य सवड्ढेहि य । तए णं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्ठु पोट्टिलाए पासे निक्खवइ, निक्खवित्ता पोट्टिलाए पासाओ तं विणिहायमावणिय दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहेत्ता अतेउरस्स अरुवदारेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ जाव पडिनिग्गए ॥

दारियाए मयकिच्च-पदं

३१. तए ण तीसे पउमावईए देवीए अगपडियारियाओ पउमावइ देविं विणिहाय-मावणियं च दारिय पयाय पासति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल^१परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अर्जलि कट्ठु^२ एव वयासी—एव खलु सामी ! पउमावई देवी मएल्लिय दारिय पयाया ॥

३२ तए ण कणगरहे राया तीसे मएल्लियाए दारियाए नोहरण करेइ, बहूइ लोगियाइ मयकिच्चाइ करेइ, करेत्ता कालेण विगयसोए जाए ॥

अमच्चपुत्तस्स उस्सव-पद

३३ तए ण से तेयलिपुत्ते कल्ल कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चारगसोहणं^४ करेह जाव' ठिइपडिय दसदेवसिय करेह, कारवेह य, एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

३४. तेवि तहेव करेति, तहेव पच्चप्पिणति^५ ॥

३५ जम्हा ण अम्ह एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए त होउ ण दारए नामेण कणगज्भए जाव' अलभोगसमत्थे जाए ॥

पोट्टिलाए अप्पियत्त-पद

३६ तए णं सा पोट्टिला अण्णया कयाइ तेयलिपुत्तस्स अणिट्ठा अकत्ता अप्पिया

१ ना० १।१।४।२१ ।

२ सगोवाहि (ख, ग, घ) ।

३ सं० पा०—करयल^० ।

४ सं० पा०—चारगसोहण जाव ठिइपडिय ।

५ ना० १।१।७६-७८ ।

६ ना० १।१।८१-८८ ।

अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था—नेच्छइ ण तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दसणं वा परिभोग वा ?

- ३७ तए ण तीसे पोट्टिलाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अह तेयलिस्स पुव्वि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया । नेच्छइ णं तेयलिपुत्ते मम नाम' गोयमवि सवणयाए, किं पुण दसणं वा परिभोग वा ? [ति कट्ठु ?] ओह्यमणसकप्पा' करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया ° भियायइ ॥

पोट्टिलाए दाणसाला-पदं

- ३८ तए ण तेयलिपुत्ते पोट्टिल ओह्यमणसंकप्प' करतलपल्हत्थमुहि अट्टज्झाणो-वगय ° भियायमार्णि पासइ, पासित्ता एवं वयासी—मा ण तुम देवाणुप्पिए । ओह्यमणसकप्पा' करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया ° भियाहि । तुम ण मम महाणससि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावेत्ता व्हूण समण-माहणं-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी' य विहराहि ॥
- ३९ तए ण सा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं अमच्चेण एव वुत्ता समाणी' हट्ठा तेयलि-पुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कल्लाकल्लि महाणसंसि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता व्हूण समण-माहण-अतिहि किवण-वणीमगाण देयमाणी य ° दवावेमाणी य विहरइ ॥

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

- ४० तेण कालेण तेण समएण सुव्वयाओ नाम अज्जाओ इरियासमियाओ' भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमियाओ उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमियाओ मणसमियाओ वइसमियाओ कायसमियाओ मणगुत्ताओ वइगुत्ताओ कायगुत्ताओ गुत्ताओ गुत्तिदियाओ ° गुत्तवंभचारिणीओ वहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि

१. स० पा०—नाम जाव परिभोग ।

२. स० पा०—ओह्यमणसकप्पा जाव भियायइ ।

३. स० पा०—ओह्यमणसकप्प जाव भियाय-मार्णि ।

४. स० पा०—ओह्यमणसकप्पा ° ।

५. स० पा०—माहण जाव वणीमगाण ।

६. देवावेमाणी (क) ।

७. समाणा (ख, ग) ।

८. स० पा०—असण जाव दवावेमाणी ।

९. स० पा०—इरियासमियाओ जाव गुत्तवंभ-चारिणीओ ।

चरमाणीओ जेणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अहापडिख्वं ओग्गह ओगिण्हति, ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणीओ विहरति ॥

४१. तए ण तारिं सुव्वयाणं अज्जाण एगे सघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ', •वीयाए पोरिसीए भाण भियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवल-मसभते मुहपोत्तिय पडिलेहेइ, भायणवत्थाणि पडिलेहेइ, भायणाणि पमज्जेइ, भायणाणि ओग्गाहेइ, जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, सुव्वयाओ अज्जाओ वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामो ण तुव्भेहि अज्झणुणाए तेयलीपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खारियाए अडित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवध करेहि ॥

४२. तए ण ताओ अज्जाओ सुव्वयाहिं अज्जाहि अज्झणुणाया समाणीओ सुव्वयाण अज्जाणं अतियाओ पडिस्सयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता अतुरियम-चवलमसंभताए गतीए जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय सोहेमाणीओ तेयलीपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खारियं अडमाणीओ तेयलिस्स गिह अणुपविट्ठाओ ॥

पोट्टिलाए अमच्चपसायोवाय-पुच्छा-पद

४३. तए णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणोओ पासइ, पासित्ता हट्टतुट्टा आसणाओ अब्भट्टेइ, वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एव वयासी—एव खलु अह अज्जाओ ! तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स पुंवि इट्ठा कता पिया मणुणा मणामा आसि, इयारिं अणिट्ठा' •अकता अप्पिया अमणुणा अमणामा जाया । नेच्छइ ण तेयलीपुत्ते मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुणं दसण वा परिभोग वा ? त तुव्भे ण अज्जाओ वहुनायाओ वहुसिक्खियाओ' वहुपडियाओ वहुणि गामागर'-•णगर - खेड-कव्वड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-सण्ण-वेसाइं •आहिडह, वहुण राईसर'-•तलवर-माडविय-कोडुविय-इवभ-सेट्टि-सेणा-वइ-सत्थवाहपभिईणं • गिहाइ अणुपविसह । त अत्थियाइ भे अज्जाओ ! केइ कहिचि चुण्णजोए वा 'मतजोगे वा कम्मणजोए' वा 'कम्मजोए वा'°

१. स० पा०—करेइ जाव अडमाणीओ ।

२. स० पा०—अणिट्ठा जाव दसण ।

३. × (क) ।

४. स० पा०—गामागर जाव आहिडह ।

५. स० पा०—राईसर जाव गिहाइं ।

६. × (ग) ।

७. × (क, ख) ।

हियउड्ढावणे वा काउड्ढावणे^१ वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले वा कदे वा छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे, जेणाह तेयलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणामा भवेज्जामि ?

अज्जा-संघाडगस्स उत्तर-पदं

४४ तए णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एव वुत्ताओ समाणीओ दोवि कण्णे ठएंति^२, ठवेत्ता पोट्टिल एवं वयासी—अम्हे ण देवाणुप्पिए ! समणोओ निग्गंथीओ जाव^३ गुत्तवभचारिणीओ । नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पगार कण्णेहिं वि निसामित्तए, किमग पुण उवदसित्तए वा आयरित्तए वा ? अम्हे णं तव देवाणुप्पिए! विचित्त केवलपण्णत्त धम्मं परिकहिज्जामो ॥

पोट्टिलाए साविया-पदं

४५ तए ण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी—इच्छामि ण अज्जाओ ! तुव्भ अतिए केवलपण्णत्त धम्म निसामित्तए ॥

४६ तए ण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्त केवलपण्णत्त धम्म परिकहेति ॥

४७ तए ण सा पोट्टिला धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठा एवं वयासी—सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गथ पावयण जाव^४ से जहेयं तुव्भे वयह । इच्छामि ण अह तुव्भ अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जित्तए ।
अहासुह देवाणुप्पिए !

४८ तए ण सा पोट्टिला तासिं अज्जाण अतिए पचाणुव्वइयं जाव^५ गिहिधम्म पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता पडिविसज्जेइ ॥

४९ तए ण सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव^६ •समणे निग्गथे फासुएण एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुच्छणेण ओसहभेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं० पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

पोट्टिलाए पव्वज्जा-पदं

५० तए ण तीसे पोट्टिलाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंवजागरियं

१. कायउड्ढावणे वा निण्हवणे वा (क, ख);

× (ग) ।

२. अंगुलिय ठावेति (क्व), अंगुलिय छाएति (क्व०) ।

३. ना० १।१४।४० ।

४. ना० १।१।१०१ ।

५. ना० १।१४।४७ ।

६. ना० १।१।४७ । सं० पा०—जाया जाव पडिलाभेमाणी ।

जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्जत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था—एव खलु अह तेयलिपुत्तस्स पुर्व्वि इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयारिण अणिट्ठा' •अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया । नेच्छइ ण तेयलीपुत्ते मम नामगोयमवि सवणयाए किं पुण दसणं वा ° परिभोगं वा ? त सेय खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'- •परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अज्जलि कट्ठु° एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । मए सुव्वयाणं अज्जाणं अतिए धम्मे निसते', •से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । त इच्छामि ण तुब्भेहिं° अब्भणुण्णाया पव्वइत्तए ॥

५१ तए ण तेयलिपुत्ते पोट्टिल एव वयासी—एव खलु तुम देवाणुप्पिए ! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे काल किच्चा अणयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि । त जइ ण तुम देवाणुप्पिए । मम ताओ देवलोगाओ आगम्म केवलपण्णत्ते धम्मे बोहेहि, तो' ह विसज्जेमि । अह ण तुम मम न सबोहेसि, तो ते न विसज्जेमि ॥

५२ तए ण सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥

५३. तए ण तेयलिपुत्ते विउल असणं पाण खाइमं साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-सवधि-परियण° आमतेइ जाव' सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पोट्टिल ण्हाय' •सव्वालकारविभूसिय° पुरिससहस्स-वाहिणीय सीय दुरुहित्ता मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-सवधि-परियणेण सद्धि° सपरिवुडे सव्विड्डीए जाव'° दुदुहिनिग्घोसनाइय-रवेण तेयलिपुर मज्जमज्जेण जेणेव सुव्वयाण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुइइ, पच्चोरुहित्ता पोट्टिल पुरओ कट्ठु जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणु-प्पिया । मम पोट्टिला भारिया इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणामा । एस णं संसारभउव्विग्गा" •भीया जम्मण-जर-मरणाणं इच्छइ देवाणुप्पियाणं अतिए

१ स० पा०—अणिट्ठा जाव परिभोग ।

७. ना० १।७।६ ।

२. ना० १।१।२४ ।

८ स० पा०—ण्हाय जाव पुरिससहस्सवाहिणीय ।

३. स० पा०—करयल° ।

९. स० पा०—नाइ जाव सपरिवुडे ।

४. स० पा०—निसते जाव अब्भणुण्णाया ।

१०. ना० १।१।३३ ।

५. ता (क, ख, ग) ।

११. स० पा०—ससारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए ।

६. स० पा०—नाइ जाव आमतेइ ।

मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तए । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया !
सिस्सिणिभिव्व ।

अहासुह, मा पडिवघ करेहि ॥

५४. तए ण सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणी हट्ठा उत्तरपुरत्थिमं
दिसीभाग अवक्कमड, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लानकारं ओमुयड,
ओमुइत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ, जेणेव मुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव
उवागच्छइ, वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयानी—आलित्ते ण अज्जा !
लोए एव जहा देवाणदा जाव' एक्कारस अगाइं अहिज्जइ, वट्ठणि वासाणि
सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सनेहणाए अत्ताणं भोमेत्ता,
सट्ठि भत्ताइं अणसणेण छेएत्ता आलोइय-पडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे काल
किच्चा अणयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववणा ॥

कणगरहस्स मच्चु-पदं

५५. तए ण से कणगरहे राया अण्णया कयाइ कालधम्मणा सजुत्ते यावि होत्था ॥
५६ तए ण ते ईसर^१-•तलवर-माडविय-कोडुविय-इट्ठभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्यवाह-
पभिइणो रोयमाणा कदमाणा विलवमाणा तस्स कणगरहस्स सरीरस्स महया
इड्ढी-सक्कार-समुदएणं० नीहरण करेति, करेत्ता अण्णमण्णं एव वयासी—एव
खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव' मुच्छिए पुत्ते वियंगित्था ।
अम्हे ण देवाणुप्पिया ! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा । अयं च ण
तेयली अमच्चे कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेषु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्न-
वियारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था । त सेय खलु अम्ह तेयलिपुत्त अमच्च
कुमारं जाइत्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव
तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्त एव वयासी—
एव खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव मुच्छिए पुत्ते वियंगित्था ।
अम्हे ण देवाणुप्पिया ! रायाहीणा^२• रायाहिट्ठिया० रायाहीणकज्जा । तुम च
ण देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो सव्वठाणेषु^३• सव्वभूमियासु लद्धपच्चए
दिन्नवियारे० रज्जघुराचित्तए होत्था । त जइ णं देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ

१. भग० ६।१५२, १५४, १५५ ।

२. स० पा०—ईसर जाव नीहरण ।

३. ना० १।१४।२१ ।

४. वियगेइ (क, ख, ग, घ) । यद्यपि सर्वासु प्रतिषु
अत्र 'वियगेइ' इति पाठः उपलभ्यते ।
अस्मिन्नेव सूत्रे 'वियंगित्था' इति पाठः

वर्तते, तदनुसारेण स एव पाठः अस्माभिरत्र
स्वीकृतः ।

५. स० पा०—रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा ।

६ स० पा०—सव्वठाणेषु जाव रज्जघुरा-
चित्तए ।

कुमारे रायलक्खणसपण्णे अभिसेयारिहे तण्ण तुमं अम्ह^१ दलाहि, जण्ण^२ अम्हे महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिचामो ॥

कणगज्जयस्स रायाभिसेय-पदं

- ५७ तए ण तेयलिपुत्ते तेसिं ईसरपभिईणं एयमट्ट पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कणगज्जयं कुमारं ण्हाय जाव^३ सस्सिरीय करेइ, करेत्ता तेसिं ईसरपभिईणं उवणेइ, उवणेत्ता एव वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए कणगज्जए नामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसपण्णे, मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सिययं सवड्डि^४ए^५ । एयं ण तुब्भे महया-महया रायाभिसेएण अभिसिचह । सव्व च से^६ उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ ॥
५८. तए णं ते ईसरपभिइओ कणगज्जयं कुमार महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिचति ॥
- ५९ तए ण से कणगज्जए कुमारे राया जाए—महयाहिमवत-महत-मलय-मंदर-महिदसारे जाव^७ रज्ज पसासेमाणे^८ विहरइ ॥

तेयलिपुत्तस्स सम्माण-पदं

- ६० तए ण सा पउमावई देवी कणगज्जय राय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एस ण पुत्ता ! तव रज्जे^९ • य रट्टे य वले य वाहणे य कोसे य कोट्टागारे य पुरे य^{१०} अतेउरे य, तुम च तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स पभावेण^{११} । त तुम ण तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि, इत अब्भुट्टेहि, ठियं पज्जुवासेहि^{१२}, वच्चत^{१३} पडिससाहेहि^{१४}, अद्दासणेण उवणिमतेहि, भोग च से अणुवड्ढेहि ॥
- ६१ तए ण से कणगज्जए पउमावईए तहत्ति वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तेयलिपुत्तं अमच्च आढाइ^{१५} • परिजाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ, इत अब्भुट्टेइ, ठिय पज्जुवासेइ, वच्चत पडिससाहेइ, अद्दासणेण उवणिमंतेइ^{१६}, भोग च से अणुवड्ढेइ ॥

१. X (ग, घ) ।

२. जाण (ग, घ) ।

३. ओ० सू० ६३ ।

४. सच्चिद्विए (ग) ।

५. तेसिं (क, ख, ग) ।

६. वण्णओ जाव (क, ख, ग, घ) । ओ० सू०

१४ ।

७. पसाहेमाणे (क) ।

८. स० पा०—रज्जे जाव अतेउरे ।

९. पहावेण (क, घ) ।

१०. पज्जुवासाहि (ख, ग) ।

११. वयतं (ग, घ) ।

१२. पडिसाहेहि (क, ख) ।

१३. स० पा०—आढाइ जाव भोगं ।

पोट्टि लदेवेण तेयलिपुत्तस्स सवोह-पदं

- ६२ तए ण से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्त अभिक्खण-अभिक्खणं केवनिपण्णत्ते धम्मं सवोहेइ, नो चेव ण से तेयलिपुत्ते सबुज्झइ ॥
- ६३ तए ण तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयाख्वे अज्झत्थिए च्चिणिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्त आढाइ जाव' भाग च ने प्रगुवइइइ, नए ण से तेयलिपुत्ते अभिक्खण-अभिक्खणं सवोहिज्जमाणे वि धम्मं ना सबुज्झइ । त सेव खनु मम कणगज्झए तेयनिपुत्ताओ विपरिणा-मित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विपरिणामेइ ॥
६४. तए ण तेयलिपुत्ते कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिग्गयरे तेयसा जलते ण्हाए' *कयवलिकम्मं कयकाउय-मगल-पाय-च्छित्त आसव्वव्वरगए व्हहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
- ६५ तए ण तेयलिपुत्त अमच्च जे जहा वह्वे राईसर-तलवर' *माडविय-कोडुविय-इव्व-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-पभियओ' पासति ते तहेव आढायति परियाणति अब्भुट्ठेति, अजलिपग्गह' करेति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव' वग्गहिं 'आलवमाणा य सलवमाणा' य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य' ममणुगच्छंति ॥
- ६६ तए ण से तेयलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ ॥
- ६७ तए ण से कणगज्झए तेयलिपुत्त एज्जमाण पासइ, पासित्ता नो आढाइ" नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे" अपरियाणमाणे अणव्वभुट्ठेमाणे परम्मुहे सच्चिट्ठइ ॥
- ६८ तए ण से तेयलिपुत्ते अमच्चे कणगज्झयस्स रण्णो अजलि करेइ । 'तओ य ण'" से कणगज्झए राया अणाढायमाणे" अपरियाणमाणे अणव्वभुट्ठेमाणे तुसिणीए परम्मुहे सच्चिट्ठइ ॥

१ ना० १।१४।६० ।

२. वड्ढेइ (क, ख, ग, घ) ।

३ ना० १।१।२४ ।

४ स० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

५ स० पा०—तलवर जाव पभियओ ।

६ पभितयो (क), पभिइओ (ग, घ) ।

७ °परिग्गहिए (क), °परिग्गहिय (घ); °परिग्गह (ख, ग) ।

८ ना० १।१।४८ ।

९ आलवमाणे य सलवमाणे (ग) ।

१०. य मग्गओ (क, ख, ग, घ) । अत्र 'मग्गओ य' इति पाठोऽतिरिक्त मग्गभाव्यते । पिट्ठओ य मग्गओ य' एते द्वे अपि पदे समानार्थके स्तः । अस्याध्ययनस्यैव ७० सूत्रे 'मग्गओ य' इति पाठो नोपलभ्यते ।

११ आयाणति (क) ।

१२. अणाययणमाणे ३(क), अणाढामीणे ३ (ग) ।

१३. तए ण (क, ख, घ) ।

१४. अणाढाइज्जमाणे ३ (क); अणाढामीणे (ख, ग), अणादिज्जमाणे (घ) ।

- ६६ तए ण तेयलिपुत्ते कणगज्भयं रायं विप्परिणयं जाणित्ता भीए^१ •तत्थे तसिए उव्विग्गे^२ सजायभए एव वयासी—रुद्धे ण मम कणगज्भए राया । हीणे^३ ण मम कणगज्भए राया । अवज्भए^४ ण मम कणगज्भए राया । त न नज्जइ ण मम केणइ कु-मारेण मारेहिइ त्ति कट्ठु भीए तत्थे जाव सणिय-सणियं 'पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता'^५ तमेव आसखघ दुरूहइ, दुरूहित्ता तेयलिपुर मज्जमज्जणे जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
- ७० तए ण तेयलिपुत्त जे जहा ईसर जाव^६ सत्थवाहपभियञ्चो पासति ते तहा नो आढायति नो परियाणति नो अब्भुट्ठेति नो अजलिपग्गह करेति, इट्ठाइ जाव^७ वग्गूहि नो आलवति नो सलवति नो पुरञ्चो य पिट्ठञ्चो य पासञ्चो य समणु-गच्छति ॥
- ७१ तए ण तेयलिपुत्ते अमच्चे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए । जा वि य से तत्थ वाहिरिया परिसा भवइ, त जहा - दासे इ वा पेसे इ वा भाइल्लए इ वा, सा वि य ण नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ । जा वि य से अविभतरिया परिसा भवइ, त जहा—पिया इ वा माया इ वा^८ •भाया इ वा भगिणी इ वा भज्जा इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वा^९ सुण्हा इ वा, सा वि य ण नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ ॥

तेलियपुत्तस्स मरणचेट्ठा-पदं

- ७२ तए ण से तेयलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ, निसीइत्ता एव वयासी—एव खलु अह सयाञ्चो गिहाञ्चो निग्गच्छामि त चेव जाव^{१०} अविभतरिया परिसा नो आढाइ नो परिया-णाइ नो अब्भुट्ठेइ । तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाञ्चो ववरोवित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता तालउड विस आसगसि पक्खवइ । से य विसे नो कमइ ॥
७३. तए ण से तेयलिपुत्ते अमच्चे नीलुप्पलं-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुर-धार^{११} अंसि खघसि ओहरइ । तत्थ वि य से धारा ओएल्ला^{१२} ॥
७४. तए ण से तेयलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासग गीवाए वधइ, वधित्ता रुक्ख दुरूहइ, दुरूहित्ता पासग रुक्खे वधइ, वधित्ता अप्पाण मुयइ । तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना ॥

१. स० पा०—भीए जाव सजायभए ।

२. प्रीत्येति गम्यते (वृ) ।

३. पाठान्तरेण दुर्घ्यातोह (वृ) ।

४. पच्चोरुहइ २ (ग) ।

५. ना० १।१४।६५ ।

६. ना० १।१।४८ ।

७. स० पा०—माया इ वा जाव सुण्हा ।

८. ना० १ १४।६४-७१ ।

९. सं० पा०—नीलुप्पल जाव अंसि ।

१०. ओइल्ला (ख), ओपल्ला (ग, घ), अवदीर्णा कुठीभूता इत्यर्थं. (वृ) ।

७५. तए णं से तेयलिपुत्ते महइमहालिय सिल गीवाए बंधइ, वधित्ता अत्थाहमतारम-पोरिसीयंसि उदगसि अप्पाण मुयइ । तत्थ वि से थाहे जाए ॥
७६. तए ण से तेयलिपुत्ते सुक्कसि तणकूडसि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अप्पाण मुयइ । तत्थ वि य से अगणिकाए विज्झाए' ।

१ आवश्यकचूर्णों (पृष्ठ ४६६, ५००) समुद्धृते प्रस्तुताध्ययने अरण्यगमनस्य निर्देशोऽस्ति । तथा अन्योपि क्रमभेदो वर्तते । स च अतीव मननीयोऽस्ति, यथा—

ताहे तणकूडे अग्गि दातु पविट्ठो, तत्थवि न डज्झति, ताहे अडविं पविसति, तत्थ पुरतो छिण्णगिरिसिहरकदरप्पवाते पिट्ठतो कपेमाणेव्व मेदिणितल आकड्ढतव्व पादवगणे विफोडेमाणेव्व अवरतल सव्वतमोरासिव्व पिडिते पच्चक्खमिव सतं कतते भीमे भीमारवं करते महावारणे समुद्धृते, दोसु चक्खुनिवातेसु पयडधणुजुत्तविप्पमुक्को पुखमेत्तवसेसा धरणितलपवेमाणि सराणि पतति हुतवहजालासहस्ससकुलं समततो पलित्तव घगघगेति सव्वारण्णं, अइरुगतवालसूरगुजद्धपुजनिगरप्पगास भियाति इंगालभूत गिह, ताहे चित्तेति—पोट्टिला जदि मे नित्थारेज्जति, एव वयासी—आउसो पोट्टिला ! आहता आयाणाहि ।

ततेण सा पोट्टिला पचवण्णाइ सखिखिणीयाइ जाव एव वयासी—आउसो तेतलिपुत्ता ! एहि ता आदाणाहि, पुरतो छिण्णगिरिसिहरकंदरप्पवाते त चेव जाव इगालभूत गिह त आउसो तेतलिपुत्ता ! कहि वयामो ?

ततेण से तेतली एवं वयासी—सद्धेतं खलु भो समणा वयंति, मद्धेय खलु भो माहणा वयंति, अहमेगो असद्धेय वदिस्सामि, एवं खलु अह सह पुत्तेहि अपुत्तो को मे त सद्धिस्सति ? एवं सह मित्तेहि° सह

दारेहि° सह वित्तेण°, सह परिग्गहेण° सह दासेहि जाव दाणमाणसक्कारोवयारसगहिते तेतलिपुत्तस्स सयणपरियणेवि तग गते को मे त सद्धिस्सति ?

एव खलु तेतलिपुत्ते कणगज्झत्तेण अवज्झातके को मे त सद्धिस्सति ?

कानक्कमणीतिसत्थविसारदे तेतलिपुत्ते विसाद गतेति को मे तं सद्धिस्सति ?

ततेण तेतलिपुत्तेणं तालपुडे विसे खइते सेविय पडिहतेत्ति को मे त सद्धिस्सति ?

एव असी वेहासे जले अग्गी जाव रण्णेवि पुरतो पवाने एमादि को मे त सद्धिस्सति ? जातिकुलरुवविणओवयारसालिणी पोट्टिला मुसिकारघूता मिच्छ विपडिवण्णा को मे त सद्धिस्सति ?

ताहे पोट्टिला भणति—एहि ता आदाणाहि, भीतस्स खलु भो पवज्जा ताण, आतुरस्स भेसज्ज किच्च अभिउत्तस्स पच्चयकरण सतस्स वाहणकिच्च महाजले वाहणकिच्च माइस्स रहस्सकिच्च उक्कठितस्स देसगमणकिच्च छुहितस्स भोयणकिच्च पिवासितस्स पाणकिच्चं सोहातुरस्स जुवतिकिच्च पर अभियुजितुकामस्स सहायकिच्च खतस्स दंतस्स गुत्तस्स जितेंदियस्स एत्तो एगमवि न भवति । सुट्ठु-सुट्ठु तण्ण लुम तेतलिपुत्ता । एयमट्ठ आदाणाहित्ति कट्ठु दोच्चपि तच्चपि एव वयति, वइत्ता जामेव दिंसि पाउव्भूया तामेव दिंसि पडिगता ।

तेयलिपुत्तस्स विम्हयकरण-पदं

७७. तए ण से तेयलिपुत्ते एव वयासी—सद्धेय खलु भो ! समणा वयति । सद्धेय खलु भो ! माहणा वयति । सद्धेयं खलु भो ! समण-माहणा वयति । अह एगो असद्धेय वयामि । एव खलु—

अह सह पुत्तेहि अपुत्ते । को मेद सद्धिस्सइ ?
 सह मित्तेहि अमित्ते । को मेद सद्धिस्सइ ?
 *सह अत्थेण अणत्थे । को मेदं सद्धिस्सइ ?
 सह दारेण अदारे । को मेद सद्धिस्सइ ?
 सह दासेहि अदासे । को मेद सद्धिस्सइ ?
 सह पेसेहि अपेसे । को मेद सद्धिस्सइ ?
 सह परिजणेण अपरिजणे । को मेद सद्धिस्सइ ? °

एव खलु तेयलिपुत्तेणं अमच्चेण कणगज्झएण रण्णा अवज्झाएण समाणेण तालपुडगे विसे आसगसि पक्खित्ते । से वि य नो कमइ । को मेय सद्धिस्सइ ?
 तेयलिपुत्तेणं नीलुप्पल°-•गवलगुलिय-अयसि-कुसुमप्पगासे खुरधारे असी °
 खधसि ओहरिए । तत्थ वि य से धारा ओएल्ला । को मेय सद्धिस्सइ ?
 तेयलिपुत्तेणं पासग गीवाए बधित्ता° •रुक्ख दुरूढे, पासग रुक्खे बधित्ता अप्पा मुक्के । तत्थ वि य से ° रज्जू छिन्ना । को मेय सद्धिस्सइ ?
 तेयलिपुत्तेण महइमहालिय° •सिल गीवाए बधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसीयसि °
 उदगसि अप्पा मुक्के । तत्थ वि य ण से थाहे जाए । को मेय सद्धिस्सइ ?
 तेयलिपुत्तेण सुक्कसि तणकूडसि° •अगणिकाय पक्खिवित्ता अप्पा मुक्के । तत्थ वि य से ° अग्गी विज्झाए । को मेय सद्धिस्सइ ?—ओहयमणसकप्पे°
 •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए ° भियायइ° ॥

पोट्टिलदेवस्स संवाद-पदं

७८ तए ण से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूव विउव्वइ, विउव्वित्ता तेयलिपुत्तस्स अदूर-सामते ठिच्चा एव वयासी—ह भो तेयलिपुत्ता ! पुरओ पवाए, पिट्टओ हत्थि-भय, दुहओ अचक्खुफासे, मज्जे सराणि वरिसति° । गामे पलित्ते रण्णे भियाइ, रण्णे पलित्ते गामे भियाइ । आउसो तेयलिपुत्ता ! कओ वयामो ?

१. सं० पा०—एव अत्थेण दारेण दासेहि पेसेहि परिजणेण ।

२. सं० पा०—नीलुप्पल जाव खधंसि ।

३. सं० पा०—बधित्ता जाव रज्जू ।

४. सं० पा०—महालिय जाव बधित्ता अत्थाह

जाव उदगसि ।

५. सं० पा०—तणकूडे °

६. सं० पा०—ओहयमणसकप्पे जाव भियायइ ।

७. भियाति (क, ख, ग) ।

८. पतति (वृ) ।

७९. तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिल एवं वयासी—भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा^१, उवकट्टियस्स सदेसगमणं, छुहियस्स^२ अन्न, तिसियस्स पाण, आउरस्स भेसज्जं माइयस्स रहस्स, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धानपरिसतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणकिच्च, परं अभिउजिउकामस्स सहायकिच्चं । खतस्स दतस्स जिइदियस्स एत्तो एगमवि न भवइ ॥
८०. तए ण से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्त अमच्च एवं वयासी—सुट्ठु णं तुमं तेयलिपुत्ता । एयमट्ठु आयाणाहि त्ति कट्ठु दोच्चपि तच्चंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसि पाउव्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

तेयलिपुत्तस्स जाईसरणपुव्वं पव्वज्जा-पदं

८१. तए ण तस्स तेयलिपुत्तस्स सुभेण परिणामेणं जाईसरणे समुप्पन्ने ॥
८२. तए ण तेयलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए च्चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावईए विजए पोडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था । तए ण ह थेराणं अतिए मुडे भवित्ता^३ •पव्वइए सामाइयमाइयाइं^४ चोइसपुव्वाइ अहिज्जित्ता वहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए महासुक्के कप्पे 'देवत्ताए उववण्णे'^५ । तए ण हं ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए । तं सेय खलु मम पुव्वुद्धिद्दाइ^६ महव्वयाइ^७ सयमेव उवसंपज्जित्ता ण विहरित्तए—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता सयमेव महव्वयाइ^८ आरुहेइ, आरुहेत्ता जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवग्गच्छित्ता असोमवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनिसण्णस्स अणुचितेमाणस्स पुव्वाहीयाइ सामाइयमाइयाइ चोइसपुव्वाइ सयमेव अभिसमण्णागयाइं ॥

केवलणाण-पदं

८३. तए ण तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेण परिणामेणं^९ •पसत्थेण अज्झवसाणेणं लेसाहि विसुज्झमाणीहिं^{१०} तयावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमेण कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरण पविट्टस्स केवलवरणाणदसणे समुप्पण्णे ॥

१. सरण इति गम्यते (वृ) ।

२. दायस्स (क, ख, ग) ।

३. स० पा०—भवित्ता जाव चोइसपुव्वाइ ।

४. देवे (क, ख, ग) ।

५. पुव्वदिद्दाइ (ख) ।

६. पंच महव्वयाइं (घ) ।

७. पच महव्वयाइं (घ) ।

८. स० पा०—परिणामेण जाव तयावरणिज्जाण ।

८४ तए णं तेयलिपुरे नयरे अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य देवदुदु-
हीओ समाहयाओ, दसद्धवण्णे कुसुमे निवाइए, चेलुक्खेवे' दिव्वे गीयगधव्व-
निनाए कए यावि होत्था ॥

कणगज्जयस्स सावगधम्म-पदं

८५ तए ण से कणगज्जए राया इमीसे^१ कहाए लद्धट्टे समाणे एव वयासी—एव
खलु तेयलिपुत्ते मए अवज्जाए मुडे भवित्ता पव्वइए । त गच्छामि ण तेयलि-
पुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ट विणएण भुज्जो-
भुज्जो खामेमि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए चाउरगिणीए सेणाए सिद्धि जेणेव
पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेयलिपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
तेयलिपुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ट 'च ण'^२ विणएण भुज्जो-
भुज्जो खामेइ, खामेत्ता नच्चासण्णे^३ • नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे पज्जलिउडे
अभिमुहे विणएण^४ पज्जुवासइ ॥

८६. तए ण से तेयलिपुत्ते अणगारे कणगज्जयस्स रण्णो तीसे य महइमहालियाए
परिसाए धम्म परिकहेइ ॥

८७ तए ण से कणगज्जए राया तेयलिपुत्तस्स केवलस्स अतिए धम्मं सोच्चा
निसम्मा पचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जइ,
पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे^५ ॥

तेयलिपुत्तस्स सिद्धि-पदं

८८ तए ण तेयलिपुत्ते केवली वहूणि वासाणि केवलिपरियाग पाउणित्ता जाव
सिद्धे ॥

निक्खेव-पदं

८९. एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^६ सपत्तेण चोद्दसमस्स
नायज्जयणस्स अयमट्टे पणत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जाव न दुक्ख पत्ता, माणव्वसं च पाणिणो पाय ।
ताव न धम्म गेण्हति भावओ तेयलिसुयव्व ॥१॥

१. × (ग, घ) ।

२ इमीसे कहाए लद्धट्टे कणगज्जए माताए सम
निगते सन्विड्डीए (आवश्यकचूर्णि पृ०
५०१) ।

३. × (ख, ग, घ) ।

४. स० पा०—नच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ।
५. पू०-ता० १।५।४७ ।
६. ता० १।१।७ ।

पण्णरसमं अज्झयण

नंदीफले

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भते ! समणेणं भगवया महावीरेण चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पण्णरसमस्स ण भते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएणं चपा नाम नयरी होत्था । पुण्णभट्ठे चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. तत्थ ण चपाए नयरीए घणे नाम सत्थवाहे होत्था—अड्ढे जाव' अपरिभूए ॥
४. तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम^१ नयरी होत्था—रिद्धत्थिमिय-समिद्धा वण्णओ^२ ॥
५. तत्थ ण अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नाम राया होत्था—महया वण्णओ^३ ॥

घणस्स घोसणा-पदं

६. तए ण तस्स घणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—सेय खलु मम विपुलं पणियभडमायाए अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता गणिम च घरिम च मेज्जं च पारिच्छेज्ज च - चउव्विह भडं गेण्हइ, गेण्हत्ता सगडी-सागड सज्जेइ, सज्जेत्ता सगडी-सागडं भरेइ, भरेत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । चपाए नयरीए सिघाडग जाव' महापहपहेसु [उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा ?]

१. ना० १।५।७ ।

२. नाम (ख, घ) ।

३. ओ० नू० १ ।

४. ओ० सू० १४ ।

५. ना० १।१।६५ ।

एवं वयह—एव खलु देवाणुप्पिया । घणे सत्थवाहे विपुलं पणियं आदाय इच्छइ अहिच्छत्त नयरि वाणिज्जाए गमित्तए । त जो ण देवाणुप्पिया । चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोयमे वा गोव्वतिए वा 'गिह्घम्मे वा धम्मचित्तए'^१ वा अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्डुसावग-रत्तपड'^२-निग्गथप्पभिई पासडत्थे वा गिहत्ये वा घणेण सत्थवाहेण सिद्धि अहिच्छत्तं नयरि गच्छइ, तस्स ण घणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलयइ, अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ, अकुडियस्स कुडिय दलयइ, अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ, अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ, अतरा वि य से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्ज दलयइ, सुहसुहेण य अहिच्छत्त सपावेइ त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

७. तए ण ते कोडुवियपुरिसा^३ • घणेण सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणा हट्टुट्टा चपाए नयरीए सिंघाडग जाव^४ महापहपहेसु^५ एव वयासी—हंदि सुणतु भगवतो । चपानयरीवत्थव्वा ! वह्वे चरगा ! वा^६ जाव^७ • गिहत्या ! वा, जो ण घणेण सत्थवाहेण सिद्धि अहिच्छत्त नयरि गच्छइ, तस्स ण घणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलयइ जाव^८ सुहसुहेण य अहिच्छत्त सपावेइ त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसण घोसेत्ता तमाणत्तिय^९ पच्चप्पिणत्ति ॥^१
८. तए ण तेसि कोडुवियपुरिसाण अत्तिए एयमट्टु सोच्चा चपाए नयरीए वह्वे चरगा य जाव^{१०} गिहत्या य जेणेव घणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति ॥
९. तए ण घणे सत्थवाहे तेसि चरगाण य जाव^{११} गिहत्याण य अच्छत्तगस्स छत्त दलयइ जाव^{१२} अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ, दलयित्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । चपाए नयरीए वहिया अग्गुज्जाणसि मम पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह ॥
१०. तए ण ते चरगा य जाव^{१३} गिहत्या य घणेण सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणा^{१४} • चपाए नयरीए वहिया अग्गुज्जाणसि घण सत्थवाह पडिवालेमाणा-पडिवाले-माणा^{१५} चिट्ठत्ति ॥

१. पडुरगे (क, ख), पडुरागे (घ) ।

६. ना० १।१।६५ ।

२. गिहत्यधम्मचित्तए (क), गिह्घम्मचित्तए (ख, ग) ।

७. स० पा०—चरगा वा जाव पच्चप्पिणत्ति ।

८. ना० १।१।६ ।

३. रत्तपडी (क) ।

९. १०, ११, १२. ना० १।१।६ ।

४. घोसणय (क); X (ख, ग), उग्घोसण (घ) ।

१३. ना० १।१।६ ।

१४. स० पा०—समाणा जाव चिट्ठत्ति ।

५. स० पा०—कोडुवियपुरिसा जाव एव ।

घणस्स निद्देस-पदं

११. तए ण घणे सत्थवाहे सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्तसि विउल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-सवधि-परियण° आमतेइ, आमतेत्ता भोयण भोयावेइ, भोयावेत्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडी-सागड जोयावेइ^३, जोयावेत्ता चपाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता नाडविप्पगिट्ठेहि अद्धाणेहि वसमाणे-वसमाणे मुहेहि वसहि-पायरा-सेहि अग जणवयं मज्झमज्झेण जेणेव देसग्ग तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडी-सागड मोयावेइ, सत्थनिवेस करेइ, करेत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एय वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया । मम सत्थनिवेससि महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे आगामियाए^४ छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए, एत्य ण वहवे नदिफला नाम रुक्खा^५—किण्हा जाव^६ पत्तिया पुप्फिया फलिया हरिया रेरिज्ज-माणा सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणा चिट्ठति—मणुण्णा वण्णेण मणुण्णा गंधेणं मणुण्णा रसेण मणुण्णा फासेण मणुण्णा छायाए ।

त जो ण देवाणुप्पिया । तेसि नदिफलाण रुक्खाणं मूलाणि वा कदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि^७ वा वीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ, तस्स ण आवाए भद्दए भवइ । तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेति । तं मा ण देवाणुप्पिया । केइ तेसि नदिफलाणं मूलाणि वा जाव हरियाणि वा आहरउ, छायाए वा वीसमउ, मा ण से वि अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सउ^८ । तुब्भे ण देवाणुप्पिया । अण्णेसि रुक्खाण मूलाणि य जाव हरियाणि य आहारेह, छायासु वीसमह त्ति घोसण घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह । ते वि तहेव घोसण घोसेत्ता तमाणत्तिय पच्चप्पिणत्ति ।

१२ तए ण घणे सत्थवाहे सगडी-सागड जोएइ, जोएत्ता जेणेव नदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसि नदिफलाण अदूरसामते सत्थनिवेस करेइ, करेत्ता दोच्चपि तच्चपि कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया । मम सत्थनिवेससि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयह—एए ण देवाणुप्पिया । ते नदिफला रुक्खा किण्हा जाव^९ मणुण्णा छायाए ।

१. स० पा०—नाइ० ।

२. जोएइ (क) ।

३. द्रष्टव्यम्—१।१।८।४ सूत्रम् ।

४. रुक्खा पणत्ता (क, ख, ग, घ) ।

५. ना० १।१३।१६ ।

६. ववरोविज्जिस्सइ (क, ख, ग) ।

७. ना० १।१५।११ ।

तं जो णं देवाणुप्पिया ! एएसि नंदिफलाण रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा वीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ जाव' अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ । त मा ण तुब्भे तेसि नदिफलाणं मूलाणि वा जाव आहारेह, छायाए वा वीसमह, मा ण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सह', अण्णेसि रुक्खाणं मूलाणि य जाव' आहारेह, छायाए वा वीसमह त्ति कट्ठु घोसण घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव घोसण घोसेत्ता तमाणत्तिय पच्चप्पिणत्ति ॥

निद्दसपालणस्स निगमण-पदं

१३. तत्थ ण अत्थेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठु सदहति' •पत्तियत्ति • रोयत्ति, एयमट्ठु सदहमाणा पत्तियमाणा रोयमाणा तेसि नदिफलाण दूरंदूरेण परिहरमाणा-परिहरमाणा अण्णेसि रुक्खाण मूलाणि य जाव' आहारत्ति, छायामु वीसमत्ति । तेसि ण आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छ परिणममाणा-परिणममाणा सुभरूवत्ताए' •सुभगधत्ताए सुभरसत्ताए सुभफासत्ताए सुभछायत्ताए • भुज्जो-भुज्जो परिणमत्ति ॥
१४. एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा' •निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अत्तिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए समाणे • पचसु कामगुणेषु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोव-वज्जइ, से ण इहभवे चेव वहूण समणाण वहूण समणीण वहूण सावगाण वहूण सावियाण य अच्चणिज्जे' भवइ, परलोए' •वि य ण नो वहूणि हत्थेयणाणि य कण्णेयणाणि य नासाहेयणाणि य एव—हियउप्पायणाणि य वसणुप्पा-यणाणि उल्लवणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमट्ठ चाउरंतं ससारकतार • वीईवइस्सइ—जहा व ते पुरिसा ॥

निद्दसाऽपालणस्स निगमण-पद

१५. तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धणस्स एयमट्ठु नो सदहति नो पत्तियत्ति नो रोयत्ति, धणस्स एयमट्ठु असदहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जेणेव ते नदिफला तेणेव उवागच्छत्ति, उवागच्छित्ता तेसि नदिफलाण मूलाणि य जाव'

१. ना० १।१५।११ ।

२. ववरोविज्जिस्सत्ति(क,ग),ववरोविस्सत्ति(न)।

३. ना० १।१५।११ ।

४. सं० पा०—सदहति जाव रोयत्ति ।

५. ना० १।१५।११ ।

६. सं० पा०—सुभरूवत्ताए ।

७. सं० पा०—निग्गथो वा जाव पत्तमु ।

८. पू०—ना० १।२।७६ ।

९. सं० पा०—पन्नोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ (क, ग, क, घ) ।

१०. ना० १।१५।११ ।

आहारति, छायासु वीसमंति । तेषि ण आवाए भद्दए भवड, तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा' •अकाले चैव जीवियाओ ° ववरोवेंति ॥

१६. एवामेव समणाउसो । जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गथो वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पचसु कामगुणेषु सज्जइ' •रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोववज्जइ, सेणं इहभवे जाव' अणादियं च ण अणवयगं दीहमद्धं संसारकंतार भुज्जो-भुज्जो ° अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व ते पुरिसा ॥

घणस्स अहिच्छत्ताऽऽगमण-पदं

१७. तए ण से घणे सत्थवाहे सगडी-सागड जोयावेइ, जोयावेत्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए वहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेशं करेइ, करेत्ता सगडी-सागडं मोयावेइ ॥
१८. तए णं से घणे सत्थवाहे महत्थं महग्घं महरिह रायारिह पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुपुरिसेहिं सद्धि संपरिवुडे अहिच्छत्त नयारि मज्झमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल' •परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएणं विजएण ° वद्धावेइ, वद्धावेत्ता त महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ ॥
१९. तए ण से कणगकेऊ राया हट्टुट्टे घणस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं महग्घं महरिह रायारिहं पाहुडं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता घण सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुक्क वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ, भडविणिमय करेइ, करेत्ता पडिभड गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहसुहेण जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ' •नियग-सयण-सवधि-परियणेण सद्धि ° अभिसमण्णागए विपुलाइं माणुस्सगाइं' •भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणे ° विहरइ ॥

घणस्स पव्वज्जा-पदं

२०. तेणं कालेण तेणं समएण थेरागमणं ॥
२१. घणे सत्थवाहे धम्म सोच्चा जेट्टुपुत्त कुडुवे ठावेत्ता पव्वइए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अगाइं अहिज्जित्ता, वहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसेत्ता, अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे ।

१. सं० पा०—परिणममाणा जाव ववरोवेंति ।

२. सं० पा०—सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ ।

३. ना० १।३।२४ ।

४. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेइ ।

५. सं० पा०—नाइ० ।

६. सं० पा०—माणुस्सगाइ जाव विहरइ ।

महाविदेहे वासे सिज्झिह्हिइ' •बुज्झिह्हिइ मुच्चिह्हिइ परिनिव्वाहिइ
सव्वदुक्खाण •मत करेहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२२ एवं खलु जंतू । समणेण भगवया महावीरेण जाव^२ सपत्तेण पण्णरसमस्स
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

चपा इव मणुयगई, धणोव्व भयव जिणो दएक्करसो ।
अहिच्छत्ता नयरिसम, इह निव्वाण मुणेयव्व ॥१॥
घोसणया इव तित्थकरस्स सिवमग्गदेसणमहग्घ ।
चरगाइणो व्व एत्थ, सिवसुहकामा जिया वहवे ॥२॥
नदिफलाइ व्व इह, सिवपहपडिपण्णगाण विसया उ ।
तव्वभक्खणाओ मरणं, जह तह विसएहि ससारो ॥३॥
तव्वज्जणेण जह इट्ठपुरगमो विसयवज्जणेण तहा ।
परमानदनिवधण-सिवपुरगमण मुणेयव्व ॥४॥

सोलसमं अज्भयणं

अवरकंका

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भते । समणेणं भगवया महावीरेण जाव' संपत्तेण पण्णरसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सोलसमस्स णं भते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एव खलु जवू । तेणं कालेणं तेणं समएण चंपा नाम नयरी होत्था ॥
- ३ तीसे ण चपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभागे नामं उज्जाणे होत्था ॥

नागसिरी-कहाणग-पदं

- ४ तत्थ ण चपाए नयरीए तओ माहणा भायरो परिवसति, त जहा —सोमे सोमदत्ते सोमभूई—अड्ढा जाव' अपरिभूया रिउव्वेय-जउव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेय जाव' वंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिनिट्ठिया ॥
- ५ तेसि ण माहणाण तओ भारियाओ होत्था, तं जहा—नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी—सुकुमालपाणिपायाओ जाव' तेसि ण माहणाणं इट्ठाओ, तेहि माहणेहि सद्धि विउले माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणीओ विहरति ॥

नागसिरीए तित्तालाउय-उवक्खडण-पदं

६. तए ण तेसि माहणाण अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाण जाव' इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विउले

१ ना० १११७ ।

२. ना० ११५७ ।

३. ना० ११५१३६ ।

४. ना० ११११७ ।

५. पू०—ना० ११११७ ।

६. ना० ११३१७ ।

घण^१-कणग - रयण - मणि - मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार^०-
सावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ पकाम भोत्तु
पकाम परिभाएउ । त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया । अण्णमण्णस्स गिहेसु
कल्लाकल्लि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेउ परिभुजेमाणणं
विहरित्तए । अण्णमण्णस्स एयमट्टु पडिसुणेति, कल्लाकल्लि अण्णमण्णस्स
गिहेसु^२ विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेति, परिभुजेमाणा
विहरति ॥

७. तए ण तीसे नागसिरीए माहणीए अण्णया कयाइ भोयणवारए जाए यावि
होत्था ॥

८. तए ण सा नागसिरी विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडेइ, एग मह
सालइय तित्तालाउय^३ बहुसभारसजुत्त नेहावगाढ उवक्खडेइ^४, एगं विंदुयं
करयलसि आसाएइ^५, त खार कडुय अखज्ज विसभूय^६ जाणित्ता एव वयासी—
धिरत्थु ण मम नागसिरीए अधन्नाए अपुण्णाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगनिबो-
लियाए^७, जाए ण मए सालइए तित्तालाउए बहुसभारसभिए नेहावगाढे उवक्ख-
डिए^८, सुबहुदक्खए नेहक्खए य कए । त जइ ण मम जाउयाओ जाणिस्सति
तो^९ ण मम खिसिस्सति । त जाव^{१०} मम जाउयाओ न जाणति ताव मम सेय
एयं सालइय तित्तालाउय 'बहुसभारसभियं नेहावगाढ'^{११} एगते गोवित्तए, अण्ण
सालइय महुरालाउयं^{१२} •बहुसभारसभियं नेहावगाढ उवक्खडित्तए—एव
सपेहेइ, सपेहेत्ता त सालइय^{१३} •तित्तालाउयं बहुसभारसभियं नेहावगाढ एगते^०
गोवेइ, गोवेत्ता अण्ण सालइय महुरालाउय बहुसभारसभियं नेहावगाढं
उवक्खडेइ, उवक्खडेत्ता तेसि माहणाण ण्हायाण^{१४} •भोयणमडवसि^० सुहासण-
वरगयाण तं विपुल असण-पाण-खाइम-साइम परिवेसेइ ॥

९. तए ण ते माहणा जिमियभुत्तुत्तरागया समाणा आयता चोक्खा परमसुइभूया
सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था ॥

१०. तए ण ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव^{१५} विभूसियाओ त विपुल असण-पाण-

१ स० पा०—घण जाव सावएज्जे ।

२. गिहे (ग) ।

३. तित्त^० (ग) ।

४. उवक्खडावेइ (क, ख, ग, घ) ।

५. आसाएइ (ग) ।

६. विसभूयमिति (क); विसब्भूय (ख, ग) ।

७. दूभगलिवोलियाए (ग) ।

८. उवक्खडियाए (ख, ग) ।

९. ता (ख), ताओ (घ) ।

१०. जावताव (क, ख, घ) ।

११. बहुसभारनेहकय (क, ख, ग, घ) ।

१२. स० पा०—महुरालाउय जाव नेहावगाढ ।

१३. स० पा०—सालइय जाव गोवेइ ।

१४. स० पा०—ण्हायाण जाव सुहासण^० ।

१५. ना० १।१।८१ ।

खाइम-साइम आहारेति, जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता सकम्मसपउत्ताओ जायाओ ॥

धम्मरुइस्स तित्तालाउय-दाण-पदं

११. तेण कालेण तेण समएणं धम्मघोसा नाम थेरा जाव' बहुपरिवाग जेणेव चंपा नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता अहापडि-रुव' •ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अण्पाण भावेमाणा° विहरंति । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा पडिगया ॥
१२. तए ण तेसिं धम्मघोसाण थेराण अतेवासी धम्मरुई' नाम अणगारे ओरादे' •घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवभचेरवासी उच्छूढसरीरे सखित्त-विउल°-तेयलेस्से मासमासेण खममाणे विहरइ ॥
१३. तए ण से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए' सज्झाय करेइ, वीयाए पोरिसीए भाण भियाइ, एवं जहा गोयमसामी तहेव' भायणाइं ओगाहेइ, तहेव धम्मघोस थेर आपुच्छइ जाव' चंपाए नयरीए उच्च-नीअ-मज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे ॥
१४. तए ण सा नागसिरी माहणी धम्मरुइ एज्जमाण पासइ, पासित्ता तस्स सालइ-यस्स तित्तालाउयस्स' बहुसंभारसभियस्स नेहावगाढस्स एडणट्टयाए हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता त सालइयं 'तित्तालाउय बहुसंभारसभियं नेहावगाढ' धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहसि' सव्वमेव निसिरइ' ॥
१५. तए ण से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झमज्झेण पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव

१. ना० १।१४।४० ।

२. स० पा०—अहापडिरुव जाव विहरति ।

३. धम्मरुती (ग) ।

४. स० पा०—उराले जाव तेयलेस्से ।

५. पोरुसीए (क); पोरसीए (ख); पोरसी-याए (ग) ।

६. पू०—भग० २।१०७ ।

७. भग० २।१०७-१०९ ।

८. तित्तकडुयस्स (क, ख, ग, घ), पूर्ववतिसूत्रेषु 'तित्तालाउय' इति पाठोऽस्ति । अस्मिन् सूत्रे तस्य परिवर्तनं जातम् । अत्रापि 'अला-उय' पदमपेक्षितमस्ति, तेनात्र पूर्ववतिपाठ एव स्वीकृत ।

९. तित्तकडुय च बहुनेहावगाढ (क, ख, ग, घ)।

१०. पडिग्गहणे (ख, ग), पडिग्गहए (घ) ।

११. निस्सरइ (घ) ।

उवागच्छइ, धम्मघोसस्स [धम्मघोसाणं ?] अदूरसामते^१ अन्नपाणं पडिलेहेइ,
पडिलेहेत्ता अन्नपाण करयलसि पडिदसेइ ॥

तित्तालाउय-परिट्ठावण-पदं

१६. तए ण धम्मघोसा थेरा तस्स सालइयस्स तित्तालाउयस्स बहुसभारसभियस्स
नेहावगाढस्स गंधेण अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ तित्तालाउयाओ
बहुसंभारसंभियाओ नेहावगाढाओ एग विदुय गहाय करयलसि आसादेत्ति^२,
तित्तं^३ खारं कडुय अखज्जं अभोज्जं^४ विसभूय^५ जाणित्ता धम्मरुइ अणगार
एव वयासी—जइ ण तुम देवाणुप्पिया । एय सालइय^६ •तित्तालाउय बहुसभार-
सभिय^० नेहावगाढ आहारेसि तो ण तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरो-
विज्जसि । तं मा ण तुम देवाणुप्पिया । इम सालइय^७ •तित्तालाउय बहुसभार-
सभियं नेहावगाढ^० आहारेसि, मा णं तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरो-
विज्जसि । त गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया । इमं सालइयं तित्तालाउय बहुसंभार-
सभियं नेहावगाढ एगतमणावाए अचित्ते थडिले^८ परिट्ठवेहि, अण्ण फासुय
एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइम पडिगाहेत्ता आहार आहारेहि ॥

१७. तए ण से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेण थेरेण एव वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स
थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ
अदूरसामते थडिल पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता तओ^९ सालइयाओ तित्तालाउयाओ
बहुसभारसभियाओ नेहावगाढाओ एग विदुग^{१०} गहाय थडिलसि निसिरइ ॥

१८. तए ण तस्स सालइयस्स 'तित्तालाउयस्स बहुसभारसभियस्स नेहावगाढस्स'^{११}
गंधेणं वहुणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाणि^{१२} । जा जहा य ण पिपीलिगा
आहारेइ, सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ ॥

अहिंसट्ठं तित्तालाउय-भक्खण-पदं

१९ तए ण तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए
मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था - जइ ताव इमस्स सालइयस्स^{१३} •तित्तालाउयस्स
बहुसभारसभियस्स^० एगमि विदुगमि पक्खत्तमि अणेगाइ पिपीलिगासहस्साइं

१. अदूरसामते इरियावहिय पडिक्कमइ (घ) ।

८. थडिल्ले (ख) ।

२. आसाएत्ति (क) • आसाइत्ति (घ) ।

९. ताओ (क, ख) ।

३. तित्तं (ख) ।

१०. विदु (क, ख) ।

४. अपिज्ज (क) ।

११. तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स (क, ख, ग, घ) ।

५. विसभूयमित्ति (ख) ।

१२. पाउ (क, ग, घ), पाउब्भूया (ख) ।

६. स० पा०—सालइय जाव नेहावगाढ ।

१३. स० पा०—सालइयस्स जाव एगमि ।

७. स० पा०—सालइय जाव आहारेसि ।

ववरोविज्जंति, तं जइ णं अहं एय सालइय तित्तालाउय वहुसभारसभियं नेहावगाढ थडिलसि सव्व निसिरामि तो^१ ण वहूण पाणाणं भूयाणं जीवाण सत्ताण वहकरण भविस्सइ । त सेय खलु ममेय सालइय^२ •तित्तालाउय वहुसभारसभियं नेहावगाढ सयमेव आहारित्तए, मम चेव एएण सरीरण निज्जाउ त्ति कट्टु एव सपेहेइ सपेहेत्ता मुहपोत्तियं पडिनेहेइ, ससीसोवरिय काय पमज्जेइ, त सालइय 'तित्तालाउय वहुसभारसभिय नेहावगाढ'^३ विलमिव पत्तगभूएण अप्पाणेणं सव्व सरीरकोट्टगसि पक्खिवइ ॥

धम्मरुइस्स समाहिमरण-पदं

- २० तए ण तस्स धम्मरुइस्स त सालइय^४ •तित्तालाउय वहुसंभारसभियं^५ नेहावगाढ आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तरेण परिणममाणसि सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला^६ •विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा^७ दुरहियासा ॥
- २१ तए ण से धम्मरुइ अणगारे अथामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे^८ अधारणिज्जमित्ति कट्टु आयारभडगं एगते ठवेइ, थडिल पडिनेहेइ, दव्वसंथारग संथरेइ^९, दव्वसथारग दुरूहइ, पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसण्णे करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अज्जलि कट्टु एव वयासी—नमोत्थु ण अरहंताणं जाव^{१०} सिद्धिगडनामधेज्ज ठाण सपत्ताणं । नमोत्थु ण धम्मघोसाणं थेराण मम धम्मायरियाण धम्मोवएसगाण । पुंवि पि ण मए धम्मघोसाण थेराण अतिए^{११} सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव^{१२} वहिद्धादाणे^{१३} [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], इयारिणि पि ण अह तेसि चेव भगवताण अतियं सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जाव वहिद्धादाणं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जहा खदओ जाव^{१४} चरिमेहि उस्सासेहि वोसिरामि त्ति कट्टु आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालगए ॥

साहूहि धम्मरुइस्स गवेसणा-पदं

- २२ तए ण ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइ अणगार चिरंगय जाणित्ता समणे निग्गथे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! 'धम्मरुइ अणगारे'^{१५}

१ ता (क, ग), तए (ब) ।

६. अतिय (क) ।

२ स० पा०—सालइय जाव नेहावगाढ ।

१०. ना० १।५।५६ ।

३. तित्तकडुय वहुनेहावगाढ (क, ख, ग, घ) ।

११. परिग्गहे (क, ख, ग, घ) अत्रापि १।५।५६

४ स० पा०—सालइय जाव नेहावगाढ ।

वत् पाठरचना समालोचनीयास्ति । द्रष्टव्यम्—

५ स० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

६. अपुरिसक्कार^० (ग) ।

१२. भग० २।६८, ६९ ।

७. सथारेइ (ग) ।

१३. धम्मरुइस्स अणगारस्स (ख) ।

८ ओ० सू० २१।

मासक्खमणपारणगसि सालइयस्स^१ •तित्तालाउयस्स बहुसभारसभियस्स^० नेहावगाढस्स निसिरणट्टयाए वहिया निग्गए चिरावेइ^३ । त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेह ॥

साहूहि धम्मरुइस्स समाहिमरण-निवेदण-पदं

२३. तए ण ते समणा निग्गथा^१ •धम्मघोसाण थेराण जाव^२ तहत्ति आणाए विणएणं वयण^० पडिसुणेंति, पडिसुणेंत्ता धम्मघोसाण थेराण अतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणा जेणेव थडिले तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरग निप्पाण निच्चेट्टु जीवविप्पजढ पासति, पासित्ता हा हा अहो ! अकज्जमिति कट्टु^४ धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तिय काउस्सग्ग करेति, धम्मरुइस्स आयारभडग गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एव वयासी—एवं खलु अम्हे तुब्भ अतियाओ पडिनिक्खमामो, सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरतेण धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ^५ •समता मग्गण-गवेसण^० करेमाणा जेणेव थडिले तेणेव उवागच्छामो जाव इह हव्वमागया । त कालगए ण भते । धम्मरुई अणगारे । इमे से आयारभडए ॥

धम्मरुइस्स सइसभा-पदं

२४ तए ण ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छति, समणे निग्गथे निग्गथीओ य सहावेति, सहावेत्ता एव वयासी—एव खलु अज्जो । मम अतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे पगइभट्टए^६ •पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउ-मद्व-सपण्णे अल्लीणे भट्टए^० विणीए मासमासेण अणिक्वत्तेण तवोकम्भेण अप्पाण भावेमाणे जाव^७ नागसिरीए माहणीए गिह अणुपविट्टे । तए ण सा नागसिरी माहणी^८ जाव^९ •त सालइय तित्तालाउय बहुसभारसभिय नेहावगाढ धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहसि सव्वमेव^० निसिरइ । तए ण से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ जाव^{१०} 'समाहिपत्ते कालगए'^{११} ।

१. स० पा०—सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स ।

६ ना० १।१६।१४ ।

२. चिराइते (क), चिरगए (घ) ।

१०. ना० १।१६।१५-२१ ।

३ स० पा०—निग्गथा जाव पडिसुणेंति ।

११. अत्र 'काल अणवकखमाणे विहरइ' इति

४. ना० १।१।२६ ।

पाठो लभ्यते, किन्तु जाव शब्दसमर्पिते २१

५. स० पा०—सव्वओ जाव करेमाणा ।

सूत्रे 'समाहिपत्ते कालगए' इति पाठो

६. स० पा०—पगइभट्टए जाव विणीए ।

वर्तते । तदनुसारेण अत्रास्माभि स एव

७ ना० १।१६।१३ ।

पाठ. स्वीकृत. ।

८. स० पा०—माहणी जाव निसिरइ ।

से ण धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता अलोइय-
पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा उड्ढं जाव' सव्वट्टसिद्धे
महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ ण अजहन्नमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरो-
वमाइ ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं धम्मरुइस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइ ठिई
पण्णत्ता । से ण धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ' •आउक्खएणं ठिइक्खएण
भवक्खएण अणतर चय चइत्ता ° महाविदेहे वासे सिज्झिहइ ॥

नागसिरीए गरिहा-पदं

२५. त धिरत्थु ण अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुण्णाए' •दूभगाए
दूभगसत्ताए दूभग°निवोलियाए, जाए ण तहारूवे साहू साहुरूवे धम्मरुई
अणगारे मासक्खमणपारणगसि सालइएण' •तित्तालाउएण बहुसभारसभिएण °
नेहावगाढेण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ॥
२६. तए ण ते समणा निग्गथा धम्मघोसाणं थेराणं अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म'
चपाए सिंघाडग-तिग' •चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु ° बहुजणस्स
एवमाइक्खति एवं भासति एव पण्णवेति एव परूवेति—धिरत्थु णं
देवाणुप्पिया ! नागसिरीए जाव' दूभगनिवोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू
साहुरूवे धम्मरुई अणगारे सालइएण' •तित्तालाउएण बहुसभारसभिएण °
नेहावगाढेण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ॥
- २७ तए ण तेसि समणाण अतिए एयमट्टं सोच्चा निसम्म बहुजणो अण्णमण्णस्स
एवमाइक्खइ एव भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धिरत्थु णं नागसिरीए
माहणीए जाव' जीवियाओ ववरोविए ॥

नागसिरीए गिहनिव्वासण-पदं

२८. तए ण ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म
आसुरुत्ता'° •रुट्ठा कुविया चडिक्किया ° मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी
माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता नागसिरीं माहणीं एवं वयासी—
“हंभो नागसिरी ! अपत्थियपत्थिए ! दुरंतपतलक्खणे ! हीणपुण्णचाउइसे !
[सिरि-हिरि-धिइ-कित्तिपरिवज्जिए ?] धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुण्णाए

१. ना० १।१।२११ ।

२. स० पा०—देवलोगाओ जाव महाविदेहे ।

३. स० पा०—अपुण्णाए जाव निवोलियाए ।

४. स० पा०—सालइएण जाव नेहावगाढेणं ।

५. निसम्मा (क, ख, ग) ।

६. स० पा०—तिग जाव बहुजणस्स ।

७. ना० १।१६।२५ ।

८. स० पा०—सालइएण जाव नेहावगाढेण ।

९. ना० १।१६।२६ ।

१०. स० पा०—आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा ।

दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगनिबोलियाए, जाए ण तुमे तहारूत्रे साहू साहुरूवे घम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएण तित्तालाउएणं जाव' जीवियाओ ववरोविए ।" उच्चावयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसति, उच्चावयाहिं उद्धसणाहिं उद्धसेति, उच्चावयाहिं निब्भच्छणाहिं निब्भच्छेति,^३ उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेति, तज्जेति तालेति, तज्जित्ता तालित्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभति ॥

२६. तए ण सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणो चपाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणेण हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी^१ धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाण वा निलय वा अलभमाणी दडीखड-निवसणा^४ खडमल्लय-खडघडग-हत्थगया फुट्ट^५-हडाहड-सीसा मच्छियाचडगरेण अन्निज्जमाणमग्गा गेहेगेहेण देहवलियाए^६ वित्ति कप्पेमाणी विहरइ ॥

नागसिरीए भवभमण-पदं

३०. तए ण तीसे नागसिरीए माहणीए तवभवसि चैव सोलस रोगायका' पाउव्भूया ।
[त जहा—

सासे कासे^७ •जरे दाहे, जोणिसूले भगदरे ।

अरिसा अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले अकारए ॥

अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कडू दउदरे ° कोढे' ॥१॥]

३१. तए ण सा नागसिरी माहणी सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे काल किच्चा छट्टाए पुढवीए उक्कोस वावीससागरोवमट्टिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ।

सा ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववण्णा^८ । तत्थ ण सत्थवज्जभा दाहवक्कतीए कालमासे काल किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए 'उक्कोस तेत्तीस-सागरोवमट्टिइएसु'^९ नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ।

१. ना० १।१६।२५ ।

२. १।१८।८ सूत्रे निब्भच्छेइ ।

३. तालिज्जमाणी वहिज्जमाणी (घ) ।

४. वसणा (क, ख, ग) ।

५. फट्ट (ख) ।

६. देहवलियाए (क, ख, ग, घ), देहवलिका

तया, अनुस्वारो नैपातिक (वृ) ।

७. रोयायका (ख) ।

८. स० पा०—कासे जोणिसूले जाव कोढे ।

९. असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते ।

१०. उववज्जइ (क, ख) ।

११. उक्कोससागरोवम^० (क, ख) ।

सा ण तओणतर उव्वट्टिता दोच्चपि मच्छेसु उववज्जड' । तत्थ वि य ण सत्थवज्झा दाहवक्कतीए कालमासे काल किच्चा दोच्चपि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोस तेत्तीससागरोवमट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जड । सा ण तओहिंतो' उव्वट्टिता तच्चपि मच्छेसु उववण्णा । तत्थ वि य णं सत्थवज्झा' •दाहवक्कतीए° कालमासे काल किच्चा दोच्चपि छट्टाए पुढवीए उक्कोस' वावीससागरोवमट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा । तओणतर उव्वट्टिता उरगेसु, एव जहा गोसाले' तहा नेयव्व जाव रयणप्पभाओ पुढवीओ उव्वट्टिता 'सण्णीसु उववण्णा । तओ उव्वट्टिता असण्णीसु उववण्णा । तत्थ वि य ण सत्थवज्झा दाहवक्कतीए कालमासे काल किच्चा दोच्च पि रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असखेज्जडभागट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा । तओ उव्वट्टिता जाइ इमाइ खहयरविहाणाइ'^६ जाव' अदुत्तर च खरवायर-पुढविकाइयत्ताए, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो ॥

सुमालिया-कहाणग-पदं

- ३२ सा ण तओणतर उव्वट्टिता इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे चपाए नयरीए सागर-दत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया ॥
- ३३ तए ण सा भद्दा सत्थवाही नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण' दारियं पयाया—सुकुमालकोमलिय गयतालुयसमाणं ॥
३४. तए ण तीसे ण दारियाए निव्वत्तवारसाहियाए अम्मापियरो इम एयारूवं गोण्ण गुणनिप्फण्ण नामधेज्ज करेति—जम्हा ण अम्ह एसा दारिया सुकुमाल-कोमलिया गयतालुयसमाणा, त होउ णं अम्ह इमीसे दारियाए नामधेज्ज सुकुमालिया-सुकुमालिया ॥

१. अत्रापि पूर्वोक्तक्रमानुसारेण भूतकालक्रिया-प्रयोगो युज्यते, किन्तु आदर्शेषु तथा नोप-लभ्यते ।

२. तओहिंतो जाव (क, ख, ग, घ) । एतत् पदमनावश्यक प्रतिभाति ।

३. सं० पा०—सत्थवज्झा जाव कालमासे ।

४. उक्कोसेण (क, ख, ग, घ) ।

५. भग० १५।१८६ ।

६. सण्णीसु उववण्णा तओ उव्वट्टिता जाइ

इमाइ खहयरविहाणाइ (क, ख, ग, घ) एष सक्षिप्तपाठोऽस्ति । भगवत्यनुसारेण अस्य स्थाने पाठ पूरितोऽस्ति । समर्पणसूत्रे प्रायः पाठस्य सक्षेप कृतो लभ्यते । अत्रापि स एव क्रम अनुसृतोऽस्ति, किन्तु संज्ञिभवान-न्तर खेचरयोनी जन्म नाभूत् । स्वीकृतपाठा-वलोकनेन एतत् स्पष्ट भवति ।

७. भग० १५।१८६ ।

८. पा०—ना० १।१६।१२४ ।

- ३५ तए ण तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्ज करेति सूमालियत्ति ॥
 ३६ तए ण सा सूमालिया दारिया पचघाईपरिग्गहिया [त जहा—खीरघाईए^१
 •मज्जणघाईए मडावणघाईए खेलावणघाईए अकघाईए]^२ अकाओ अक
 साहरिज्जमाणी रम्मे मणिकोट्टिमतले^३ गिरिकदरमल्लीणा इव चपगलया
 निवाय^४-निव्वाघायसि^५ •सुहंसुहेण^६ परिवड्ढइ ॥

सूमालियाए सागरेण सद्धिं विवाह-पदं

- ३७ तए ण सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कवालभावा^७ •विण्णय-परिणयमेत्ता
 जोव्वणगमणुपत्ता^८ रुवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्टा उक्किट्टसरीरा
 जाया यावि होत्था ।
 ३८ तत्थ ण चपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे—अड्ढे ॥
 ३९ तस्स ण जिणदत्तस्स भद्दा भारिया—सूमाला इट्ठा^९ माणुस्सए कामभोगे
 पच्चणुव्वभवमाणा विहरइ ॥
 ४० तस्स ण जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए—
 सुकुमालपाणिपाए जाव^{१०} सुरूवे ॥
 ४१ तए ण से जिणदत्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ सयाओ^{११} गिहाओ पडिनिक्खमइ,
 पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स अदूरसामतेण वीईवयइ ।
 इम च ण सूमालिया दारिया ण्हाया चेडिया-‘चक्कवाल-सपरिवुडा’^{१२} उप्पि
 आगासतलगसि कणग-तिदूसएण ‘कीलमाणी-कीलमाणी’^{१३} विहरइ ॥
 ४२ तए ण से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालिय दारिय पासइ, पासित्ता सूमालियाए
 दारियाए रुवे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ,
 सद्दावेत्ता एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया ? किं वा नाम-
 धेज्ज से ?
 ४३ तए ण ते कोडुवियपुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणा हट्टुट्टा
 करयल^{१४} •परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु^{१५} एव वयासी—एस ण
 देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए भारियाए अत्तया

१. स० पा०—खीरघाईए जाव गिरिकदर- ६. इट्ठा जाव (ख, घ) ।
 मल्लीणा । ७. ना० १।१।१७ ।
 २. अमो कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते । ८. साओ (क, ख, ग) ।
 ३. X (ख) । ९. सघपरिवुडा (ग) ।
 ४. स० पा०—निव्वाघायसि जाव परिवड्ढइ । १०. कीलमाणी (ख, ग) ।
 ५. स० पा०—उम्मुक्कवालभावा जाव रुवेण । ११. स० पा०—करयल जाव एव ।

सूमालिया नाम दारिया—सुकुमालपाणिपाया जाव' रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा ॥

- ४४ तए ण जिणदत्ते सत्थवाहे तेसि कोडुवियाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए मित्त-नाइ-परिवुडे चपाए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागए ॥
४५. तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्त सत्थवाह एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अंबुट्ठेइ, अंबुट्ठेत्ता आसणेण उवनिमतेइ, उवनिमंतेत्ता आसत्थं वीसत्थ सुहासणवरगयं एव वयासी—भण देवाणुप्पिया ! किमागमण-पओयण ?
४६. तए ण से जिणदत्ते सागरदत्त एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! तव धूय भद्दाए अत्तिय सूमालिय सागरस्स^१ भारियत्ताए वरेमि । जइ णं जाणह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा सजोगो, ता दिज्जउ ण सूमालिया सागरदारगस्स । तए ण देवाणुप्पिया ! भण कि दलयामो^२ सुकं^३ सूमालियाए ?
४७. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्त सत्थवाहं एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया एगा^४ एगजाया^५ इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा जाव^६ उवरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? त नो खलु अह इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओग । तं जइ ण देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, तो ण अहं सागरस्स सूमालिय दलयामि ॥
४८. तए ण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेणं एव वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरग^७ दारग सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया—इट्ठा^८ कता पिया मणुण्णा मणामा जाव^९ उवरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? त नो खलु अह इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओग^{१०} । त जइ णं सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, 'तो णं'^{११} दलयामि ॥

१. ना० १।८।६० ।

२. सागरदत्तस्स दारगस्स (ख, ग) ।

३. दलामो (क) ।

४. सुकं (ख), सुक्क (घ) ।

५. मम एगा धूया (क)

६. एगा जाया (ख, घ) ।

७. ना० १।१।१०६ ।

८. सागर (ग, घ) ।

९. स० पा०—इट्ठा तं चेव ।

१०. ना० १।१।१०६ ।

११. जाव (ख, घ) ।

- ४६ तए णं से सागरए दारए जिणदत्तेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए ॥
५०. तए ण' जिणदत्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ'-●नियग-सयण-संबधि-परियण° आमतेइ, जाव' सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता सागर दारग ण्हाय जाव' सव्वालकारविभूसिय करेइ, करेत्ता पुरिससहस्स-वाहिणीय सीय दुरूहावेइ', मित्त-नाइ'-●नियग-सयण-सबधि-परियणेण सद्धि° परिवुडे सव्विद्धीए सयाओ° गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता चप नयारि मज्झमज्झेण जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता सागरग दारग सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स उवणेइ ॥
- ५१ तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे विपुल असण-पाण-खाइम-साडम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता जाव' सम्माणेत्ता सागरग दारग सूमालियाए दारियाए सद्धि पट्टयं दुरूहावेइ, दुरूहावेत्ता सेयापीएहि' कलसेहि मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोम'° करावेइ, करावेत्ता 'सागरग दारय'° सूमालियाए दारियाए पाणि गेण्हावेइ ॥

सागरस्स पलायण-पदं

- ५२ तए ण सागरए सूमालियाए दारियाए इम एयारूव 'पाणिफास पडिसवेदेइ'°, से जहानामए—असिपत्ते इ वा'° ●करपत्ते इ वा खुरपत्ते इ वा कलवचीरिगा-पत्ते इ वा सत्तिअग्गे इ वा कोतग्गे इ वा तोमरग्गे इ वा भिडिमालग्गे इ वा सूचिकलावए इ वा विच्छुयडंके इ वा कविकच्छू इ वा इगाले इ वा मुम्मुरे इ वा अच्ची इ वा जाले इ वा अलाए इ वा सुद्धागणी इ वा भवे एयारूवे ? नो इणट्टे समट्टे । एत्तो अणिट्टतराए चेव अकततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुणतराए चेव अमणामतराए चेव ° पाणिफास संवेदेइ ॥
- ५३ तए ण से सागरए अकामए अवसवसे'° मुहुत्तमेत्त सच्चिट्टइ ॥
- ५४ तए ण सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स अम्मापियरो मित्त-नाइ'-●नियग-सयण-

१ ण से (ख, घ) ।

२ स० पा०—नाइ० ।

३. ना० १।१४।५३ ।

४. ना० १।१४।७ ।

५. दुरूहावेइ (क, ख) ।

६ सं० पा०—नाइ जाव पडिवुडे ।

७ सातो (क, ख, ग, घ) ।

८. ना० १।१६।५० ।

९. सीयापीएहि (ख, ग); सीयापीएहि (घ) । १५ स० पा०—नाइ० ।

१०. होमं (क, ख, ग, घ) ।

११ सागरस्स (क) ।

१२. सपडिवेदेति (ख), पाणि फासेति सपडिवेदेति (ग), सवेदेइ (क्व) ।

१३. स० पा०—असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा एत्तो अणिट्टतराए चेव ।

१४ अवसवसे (ख, ग), अपस्ववशः अपगतात्म-तत्र इत्यर्थं. (वृ) ।

सर्वंधि-परियण^० विपुलेण' असण-पाण-खाइम-साइमेण पुप्फ-वत्थं'-गध-
मल्लालकारेण य सक्कारेत्ता^० सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

- ५५ तए ण सागरए सूमालियाए सद्धि जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सूमालियाए दारियाए सद्धि तलिमंसि' निवज्जइ ॥
- ५६ तए ण से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूवं अगफासं
पडिसवेदेइ, से जहानामए—असिपत्ते इ वा जाव' एत्तो अमणामतराग चेव
अगफास पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥
- ५७ तए ण से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए अगफास असहमाणे अवसवसे'
मुहुत्तमेत्त सच्चिट्ठइ ॥
- ५८ तए ण से सागरदारए सूमालिय दारिय सुहपसुत्त जाणित्ता सूमालियाए
दारियाए पासाओ उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता सयणिज्जसि' निवज्जइ ॥
५९. तए ण सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिवुद्धा समाणी पडिव्वया'
पडमणुरत्ता पइ पासे अपस्समाणी तलिमाओ' उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव से सयणिज्जे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ ॥
- ६० तए ण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए दोच्चपि इम एयारूवं अंगफासं
पडिसवेदेइ जाव' अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं सच्चिट्ठइ ॥
- ६१ तए ण से सागरदारए सूमालिय दारिय सुहपसुत्त जाणित्ता सयणिज्जाओ
उट्टेइ, उट्टेत्ता वासघरस्स दार विहाडेइ, विहाडेत्ता मारामुक्के विव काए
जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

सूमालियाए चित्ता-पदं

- ६२ तए ण सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्ततरस्स पडिवुद्धा पतिव्वया'^० •पडमणु-
रत्ता पइ पासे^० अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्टेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ
समता मग्गण-गवेसण करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडिय पासइ,
पासित्ता एव वयासी—गए ण से सागरए त्ति कट्टु ओह्यमणसंकप्पा'^० •करतल-
पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया^० भियायइ ॥

१ विपुल (क, ख, ग, घ) ।

२ स० पा०—वत्थं जाव सम्माणेत्ता ।

३. तलिगमि (ख, ग) ।

४. ना० १।१६।५२ ।

५. अवसव्वमे (क, ख, ग) ।

६. सयणीयसि (क, ख, घ) ।

७ पतिवया (ख, ग, घ) ।

८ तलिगाओ (ख), तलियग्गतो (ग) ।

९. ना० १।१६।५२, ५३ ।

१० स० पा०—पतिवया जाव अपासमाणी ।
पतिवया० (ग, घ) ।

११ स० पा०—ओह्यमणसकप्पा जाव भियायइ ।

- ६३ तए णं सा भद्दा सत्थवाही कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए^१ उट्टियम्मि सूरे सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह
ण तुम देवाणुप्पिए ! बहूवरस्स मुहधोवणिय^२ उवणेहि ॥
६४. तए ण सा दासचेडी भद्दाए सत्थवाहीए एव वुत्ता समाणी-एयमट्ट तहत्ति पडि-
सुणेइ, पडिसुणेत्ता मुहधोवणिय गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं^३ •ओह्यमणसकप्प करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झा-
णोवगय ° भियायमाणिं पासइ, पासित्ता एव वयासी—किण्ण तुम देवाणुप्पिए !
ओह्यमणसकप्पा^४ •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया ° भियाहि ?
- ६५ तए ण सा सूमालिया दारिया त दासचेडिं एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए !
सागरए दारए मम सुहपसुत्त जाणित्ता मम पासाओ उट्टेइ, उट्टेत्ता वासघरदुवार
अवगुणेइ^५ •अवगुणेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिंसि पाउव्भूए तामेव
दिसि ° पडिगए । तए णह तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा^६ •पतिव्वया पइमणुरत्ता
पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्टेमि सागरस्स दारगस्स सव्वओ समता
मगण-गवेसण करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दार ° विहाडिय पासामि,
पासित्ता गए ण से सागरए ति कट्टु ओह्यमणसकप्पा^७ •करतलपल्हत्थमुहा
अट्टज्झाणोवगया ° भियायामि ॥
- ६६ तए ण सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ट सोच्चा जेणेव सागरदत्ते
सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ट निवेदेइ ॥

सागरदत्तेण जिणदत्तस्स उवालभ-पद

- ६७ तए ण से सागरदत्ते दासचेडीए अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्टे
कुत्रिए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणदत्त सत्थवाह एव वयासी—किण्ण देवाणु-
प्पिया ! एय जुत्त वा पत्त वा कुलाणुरूव वा कुलसरिस वा जण्ण सागरए
दारए सूमालिय दारिय अदिट्टदोसवडिय^८ पइव्वय^९ विप्पजहाय इहमागए ?
वहूहिं खिज्जणियाहि य रुट्टणियाहि^{१०} य उवालभइ ॥

१ पू०—ना० १।१।२४ ।

२ मुहसोवणिय (क), °सोहणिय (ख),
°सोयणिय (ग) ।

३. स० पा०—दारिय जाव भियायमाणि ।

४ स० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव भियाहि ।

५. अपगुणेइ (ग) । स० पा०—अवगुणेइ-जाव
पडिगए ।

६ स० पा०—पडिबुद्धा जाव विहाडिय ।

७ स० पा०—ओह्यमणसकप्पा जाव भिया-
यामि ।

८ अदिट्टदोस (क, ग) ।

९ पइव्वय (क, ख, ग, घ) ।

१०. × (क), कट्टणियाहि (ग), रुट्टणियाहि
(घ) ।

सागरस्स पुणोगमण-व्वदास-पदं

- ६८ तए ण जिणदत्ते सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरय दारय एव वयासी—दुट्ठु ण पुत्ता । तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागच्छतेण^१ । त गच्छह णं तुम पुत्ता ! 'एवमवि^२ गए'^३ सागरदत्तस्स गिहे ॥
- ६९ तए ण से सागरए दारए जिणदत्तं सत्थवाहं एव वयासी—अवियाइ अह ताओ । गिरिपडण वा तरुपडण वा मरुप्पवाय^४ वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडण वा वेहाणस^५ वा गिद्धपट्ट^६ वा पव्वज्ज वा विदेसगमण वा अव्वभुवगच्छेज्जा, नो खलु अह सागरदत्तस्स गिहं गच्छेज्जा^७ ॥

सूमालियाए दमगेण सद्धि पुणव्विवाह-पद

- ७० तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुंतरियाए सागरस्स एयमट्ठ निसामेइ, निसामेत्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारिय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता अके निवेसेइ, निवेसेत्ता एव वयासी—किण्ण तव पुत्ता ! सागरएण दारएण^८ ? अह ण तुम तस्स दाहामि, जस्स ण तुम इट्ठा^९ कता पिया मणुण्णा^{१०} मणामा भविस्ससि त्ति सूमालिय दारियं ताहि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि वग्गूहि^{११} समासासेइ, समासासेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
- ७१ तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे अण्णया उप्पि आगासतलगसि सुहनिसण्णे राय-मग्ग ओलोएमाणे-ओलोएमाणे चिट्ठइ ॥
- ७२ तए ण से सागरदत्ते एग महं दमगपुरिसं पासइ—दडिखंड-निवसण^{१२} खडमल्लग-खडघडग-हत्थगयं 'फुट्ट-हडाहड-सीस मच्छियासहस्सेहि'^{१३} अन्नज्जमाणमग्ग ॥
७३. तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण

१ हव्वमागए (ख, घ) ।

२. एयमवि (क) ।

३ इत्थमपिगते—अस्मिन् कार्यो (१।१६।२६६ सूत्रस्य वृत्ति.) ।

४ मरुप्पवेस (क)

५ विहणस (ख) ।

६. गेद्धपट्ट (ख, ग) ।

७ अणुगच्छेज्जा (क) ।

८. दारएण मुक्का (घ) ।

९. स० पा०—इट्ठा जाव मणामा ।

१० बहूहि वग्गूहि (घ) ।

११ वसण (ख, ग) ।

१२. मच्छियासहस्सेहि जाव (क, ख, ग, घ) ।

आदर्शेषु पाठान्तररूपेण निर्दिशितः पाठ उपलभ्यते, किन्तु अस्मिन् 'जाव' पदस्य विपर्ययो जातः । हत्थगयं जाव' इति पाठ-रचना युक्तास्ति । प्रस्तुताध्ययनस्य २६ सूत्रावलोकनेन एतत् स्पष्टं जायते ।

पलोभेह^१, गिहं अणुप्पवेसेह^२, अणुप्पवेसेत्ता खंडमल्लग खंडघडगं च से एगंते एडेह, एडेत्ता अलकारियकम्म करेह, ण्हाय कयवलिकम्म^३ •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्त^० सव्वालंकारविभूसिय करेह, करेत्ता मणुण्ण असण-पाण-खाइम-साइम भोयावेह, मम अतिय उवणेह ॥

७४. तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव^४ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता त दमग असण-पाण-खाइम-साइमेण उवप्प-लोभेति^५, उवप्पलोभेत्ता सय गिह अणुप्पवेसति, अणुप्पवेसेत्ता त खडमल्लग खडघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडेति ॥

७५. तए ण से दमगे तसि खडमल्लगसि खडघडगसि य एडिज्जमाणसि महया-महया सद्देण आरसइ ॥

७६. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे तस्स दमगपुरिसस्स त महया-महया आरसिय-सद्द सोच्चा निसम्म कोडुवियपुरिसे एव वयासी—किन्न देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया-महया सद्देण आरसइ ?

७७. तए ण ते कोडुवियपुरिसा एव वयति—एस ण सामी ! तसि खडमल्लगसि खडघडगसि य एडिज्जमाणसि महया-महया सद्देण आरसइ ॥

७८. तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे ते कोडुवियपुरिसे एव वयासी—मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स त खड^६•मल्लग खडघडग च एगते^० एडेह, पासे से ठवेह जहा 'अपत्तिय न'^७ भवइ । ते वि तहेव ठवेति^८, ठवेत्ता तस्स दमगस्स अलकारियकम्मं करेति, करेत्ता सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहि अब्भगेति, अब्भ-गिए^९ समाणे सुरभिणा गधट्टएण^{१०} गाय उव्वटेति, उव्वट्टेत्ता उसिणोदग-गघो-दएण ण्हाणेति, सीओदगेण ण्हाणेति, पम्हल-सुकुमालाए गधकासाईए गायाइं लूहेति, लूहेत्ता हसलक्खण पडगसाडग परिहेति, सव्वालकारविभूसिय करेति, विपुल असण-पाण-खाइम-साइम भोयावेति, भोयावेत्ता सागरदत्तस्स उवणेति^{११} ॥

१ पडिलाभेह (घ) अशुद्धं प्रतिभाति ।

२. अणुपविसेह (ग) ।

३. स० पा०—कयत्रलिकम्म जाव सव्वालकार-विभूसिय ।

४. ना० १।१।१२६ ।

५. उवलोभेति (क) ।

६. स० पा०—खड जाव एडेह ।

७. ण पत्तिय (ख, ग, घ) ।

८. ठवेति (ख, ग) ।

९. अब्भगिए (ग) ।

१०. गघोट्टएण (क, घ), गघुदएण (ख), गघ-ट्टएण (ग), गघट्टएण (क्व०) । अत्र लिपिदोषेण वर्णपरिवर्तनं जातम् । उद्वर्तन-प्रकरणे उद्वर्तकवस्तुनिर्देशो युज्यते । अत एवात्र 'गघट्टएण' इति पाठः स्वीकृतः । स्थानाङ्गे (३।८७) पि एतत् तुल्यप्रकरणे असौ पाठ उपलभ्यते ।

११. समीवे उवणेति (क्व) ।

७६ तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारिय ण्हाय जाव' सव्वालंकारविभू-
सिय करेत्ता त दमगपुरिस एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया । मम धूया इट्ठा
कता पिया मणुण्णा मणामा । एय ण अह तव भारियत्ताए दलयामि', भद्दियाए
भद्दओ भवेज्जासि' ॥

दमगस्स पलायण-पदं

- ८० तए ण से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ट पडिसुणेड, पडिसुणेत्ता सूमालियाए
दारियाए सद्धि वासघर अणुपविसड, सूमालियाए दारियाए सद्धि तलिमंमि
निवज्जइ ॥
८१. तए ण से दमगपुरिसे सूमालियाए इमेयारूवं अगफास पडिसवेदेड', •से जहा-
नामए—असिपत्ते इ वा जाव' एत्तो अमणामतराग चेव अगफास पच्चणुवभव-
माणे विहरइ ॥
- ८२ तए ण से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए अगफास असहमाणे अवसवसे
मुहुत्तमेत्त सच्चिट्ठइ ॥
- ८३ तए ण से दमगपुरिसे सूमालिय दारिय सुहपसुत्त जाणित्ता सूमालियाए दारि-
याए पासाओ उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता सयणिज्जसि निवज्जइ ॥
- ८४ तए ण सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया
पइमणुरत्ता पइ पासे अपस्समाणी तलिमाओ उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव से सयणिज्जे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दमगपुरिसस्स पासे णुवज्जइ ॥
- ८५ तए ण से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए दोच्चपि इम एयारूव अगफास
पडिसवेदेइ जाव' •अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्त सच्चिट्ठइ ॥
८६. तए ण से दमगपुरिसे सूमालिय दारिय सुहपसुत्त जाणित्ता ° सयणिज्जाओ
'अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टेत्ता' वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खडमल्लग खड-
घडग च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसि' पाउव्भूए तामेव दिसि
पडिगाए ॥

सूमालियाए पुणोचिता-पदं

८७. तए ण सा सूमालिया' •दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणु-

१ ना० १।१।४७ ।

२ दलामि (क) ।

३. भवेज्जाहि (ग) ।

४ स० पा०—सेस जहा सागरस्स जाव सय-
णिज्जाओ ।

५ ना० १।१६।५२ ।

६. ना० १।१६।५२, ५३ ।

७ पव्भुट्टेइ २ (क, ग) ।

८ दिस (क, ख) ।

९. स० पा०—सूमालिया जाव गए ।

रत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्टेइ, दमगपुरिसस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसण करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दार विहाडियं पासइ, पासित्ता एव वयासी°—गए ण से दमगपुरिसे त्ति कट्ठु ओह्यमणसकप्पा' •करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° भियायइ ॥

८८ तए ण सा भद्दा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए^१ उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव^२ •वयासी—गच्छह णं तुम देवाणुप्पिए । वहूवरस्स मुहधोवणिय उवणेहि ॥

८९ तए ण सा दासचेडी भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ट तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता मुहधोवणिय गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालिय दारिय ओह्यमणसकप्प करतलपल्हत्थमुहि अट्टज्झाणोवगय भियायमार्णिं पासइ, पासित्ता एव वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिए । ओह्यमणसकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भियाहि ?

९० तए ण सा सूमालिया दारिया त दासचेडिं एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! दमगपुरिसे मम सुहपसुत्त जाणित्ता मम पासाओ उट्टेइ, उट्टेत्ता वासघरदुवारं अरवगुणेइ, अरवगुणेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिंसि पाउब्भूए तामेव दिंसि पडिगए । तए णह तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्टेमि, दमगपुरिसस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दार विहाडिय पासामि, पासित्ता गए णं से दमगपुरिसे त्ति कट्ठु ओह्यमणसकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भियायामि ॥

९१. तए ण सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ट सोच्चा जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° सागरदत्तस्स एयमट्टं निवेदेइ ॥

सूमालियाए दाणसाला-पदं

९२ तए ण से सागरदत्ते तहेव सभते समाणे जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालिय दारिय अके निवेसेइ, निवेसेत्ता एव वयासी—अहो णं तुम पुत्ता । पुरापौराणाण^४ •दुच्चिण्णाण दुप्परक्कताण कडाण पावाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस° पच्चणुब्भवमाणी विहरसि । त मा ण तुमं पुत्ता । ओह्यमणसकप्पा' •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° भियाहि ।

१ स० पा०—ओह्यमणसकप्पा जाव भिया-
यइ ।

२ पू०—ना० १।१।२४ ।

३ स० पा०—एव जाव सागरदत्तस्स ।

४ स० पा०—पुरापौराणाण जाव पच्चणुब्भ-
माणी ।

५ स० पा०—ओह्यमणसकप्पा जाव भियाहि ।

तुम ण पुत्ता ! मम महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइम *उवक्खडा-वेहि, उवक्खडावेत्ता वहूण समण-माहण-अतिहि-क्खिण-वणीमगाण देयमाणी य द्वावेमाणी य ° परिभाएमाणी विहराहि ॥

६३ तए ण सा सूमालिया दारिया एयमट्ट पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता [कल्लाकल्लि ?] महाणससि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइम* उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता वहूणं समण-माहण-अतिहि-क्खिण-वणीमगाण देयमाणी य द्वावेमाणी य ° परिभाएमाणी^१ विहरइ ॥

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

६४ तेणं कालेण तेण समएण गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ *बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणीओ जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता अहापडिरूव ओग्गहं ओगिण्हति, ओगिण्हत्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावे-माणीओ विहरति ।

६५ तए ण तासि गोवालियाणं अज्जाणं एगे सघाडए^१ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता गोवालियाओ अज्जाओ वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामो ण तुव्भेहि अब्भणुण्णाए चंपाए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवंध करेहि ॥

६६ तए ण ताओ अज्जाओ गोवालियाहि अज्जाहि अब्भणुण्णाया समाणीओ^२ भिक्खायरिय अडमाणीओ सागरदत्तस्स गिहं अणुप्पविट्ठाओ ।

सूमालियाए सागरपसायोवाय-पुच्छ-पदं

६७ तए ण सूमालिया ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्टुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेइ °, पडिलाभेत्ता एव वयासी—एवं खलु अज्जाओ ! अह सागरस्स अणिट्ठा^३ *अकता अप्पिया अमणुण्णा ° अमणामा ! नेच्छइ णं सागरए दारए मम नाम^४ *गोयमवि सवणयाए, किं पुण दसण वा ° परिभोग वा ?

१. स० पा०—जहा पोट्टिला जाव परिभाए-माणी ।

२. स० पा०—साइमं जाव परिभाएमाणी ।

३. दलयमाणी (क, ग), दलमाणी (ख, घ) ।

४. पू०—ना० १।१४।४० ।

५. स० पा०—एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

तहेव समोसढाओ तहेव सघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया ।

६. पू०—ना० १।१४।४१ ।

७. पू०—ना० १।१४।४२ ।

८. सं० पा०—अणिट्ठा जाव अमणामा ।

९. स० पा०—नाम वा जाव परिभोगं ।

जस्स-जस्स वि य ण देज्जामिं तस्स-तस्सं वि य णं अणिट्ठा^१ -●अकंता अप्पिया अमणुण्णा^० अमणामा भवामि ।

तुब्भे य ण अज्जाओ ! बहुनायाओ^१ ●वहुसिक्खियाओ बहुपट्टियाओ बहूणि गामागर-णगर - खेड-कव्वड - दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-सण्णि-वेसाइं आहिंडह, बहूण राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहपभिर्डण गिहाइ अणुपविसह । त अत्थियाइ भे अज्जाओ ! केइ कहिंचि च्चुण्णजोए वा मंतजोगे वा कम्मणजोए वा कम्मजोए वा हियउड्डावणे वा काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले वा कदे वा छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा^० उवलद्धपुव्वे, जेण अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कता^१ ●पिया मणुण्णा मणामा^० भवेज्जामि ?

अज्जा-संघाडगस्स उत्तर-पदं

६८ "तए ण ताओ अज्जाओ सूमालियाए एव वुत्ताओ समाणीओ दोवि कण्णे ठएत्ति, ठएत्ता सूमालिय एव वयासी—अम्हे ण देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गथीओ जाव^१ गुत्तवभचारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पगार कण्णेहिं वि निसामित्तए, किमंग पुण उवदसित्तए वा आयरित्तए वा अम्हे ण तव देवाणुप्पिए ! विचित्त केवलपण्णत्त धम्म परिकहिज्जामो ॥

सूमालियाए साविया-पदं

६९ तए ण सा सूमालिया ताओ अज्जाओ एव वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भ अतिए केवलपण्णत्त धम्म निसामित्तए ॥

१०० तए ण ताओ अज्जाओ सूमालियाए विचित्त केवलपण्णत्त धम्म परिकहेत्ति ॥

१०१ तए ण सा सूमालिया धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठा एव वयासी—सट्ठहामि ण अज्जाओ ! निग्गथं पावयण जाव^१ से जहेय तुब्भे वयह । इच्छामि ण अहं तुब्भ अतिए पचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइय—दुवालसविहं गिहिधम्म पडिवज्जित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिए !

१०२ तए ण सा सूमालिया तासिं अज्जाण अतिए पचाणुव्वइय जाव^१ गिहिधम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता पडिविसज्जेइ ॥

१. देज्जाहि (क) ।

साविया जाया तहेव चित्ता तहेव सागरदत्त

२. सं० पा०—अणिट्ठा जाव अमणामा ।

आपुच्छति ।

३. सं० पा०—बहुनायाओ एव जहा पोट्टिला जाव उवलद्धे ।

६. ना० १।१४।४० ।

७. ना० १।१।१०१ ।

४. सं० पा०—कंता जाव भवेज्जामि ।

८. ना० १।१४।४७ ।

५. सं० पा०—अज्जाओ तहेव भणति तहेव

१०३ तए ण सा सूमालिया समणोवासिया जाया जाव' समणे निग्गथे फासुएणं एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुच्छेण ओसहभेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

सूमालियाए पव्वज्जा-पदं

१०४ तए ण तोसे सूमालियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुबजागरिय जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह सागरस्स पुव्व इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयारिणं अणिट्ठा अकता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा । तेच्छइ ण सागरए मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दसण वा परिभोग वा ? जस्स-जस्स वि य ण देज्जामि तस्स-तस्स वि य ण अणिट्ठा अकता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा भवामि । त सेय खलु मम गोवालियाणं अज्जाणं अत्तिए पव्वइत्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्ठु^० एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । मए गोवालियाण अज्जाण अत्तिए घम्मे निसते, से वि य मे घम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि ण तुव्वेहि अग्गणुण्णाया पव्वइत्तए जाव' गोवालियाण अज्जाणं अत्तिए पव्वइया ॥

१०५ तए ण सा सूमालिया अज्जा जाया—इरियासमिया जाव' गुत्तवंभयारिणी बहूहि चउत्थ-छट्ठुम^१—दसम दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि अप्पाण भावेमाणी^० विहरइ ॥

सूमालियाए आतावणा-पदं

१०६ तए ण सा सूमालिया अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण अज्जाओ । तुव्वेहि अग्गणुण्णाया समाणी चपाए नयरीए वाहि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठुच्छेण अणिक्खत्तेण तवोकम्मेण सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए ॥

१०७ तए ण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय अज्ज एवं वयासी—अम्हे ण

१ ना० १।५।४७ ।

२ ना० १।१।२४ ।

३ ना० १।१।५३,५४ ।

४. ना० १।१।४० ।

५. स० पा०—छट्ठुम जाव विहरइ ।

अञ्जो । समणीओ निग्थीओ इरियासमियाओ जाव' गुत्तवभचारिणीओ ।
नो खलु अम्ह कप्पइ वहिया गामस्स वा जाव' सण्णवेसस्स वा छट्ठछट्ठेण'
•अणिक्खत्तेण तवोकम्मेण सुराभिमुहीण आयावेमाणीण° विहरित्तए । कप्पइ
णं अम्ह अतोउवस्सयस्स वइपरिक्खत्तस्स सघाडिबद्धियाए ण समतलपइयाए'
आयावेत्तए ॥

१०८ तए ण सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ,
एयमट्ठ असद्दहमाणी अपत्तियमाणी अरोयमाणी सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स
अदूरसामते छट्ठंछट्ठेण° •अणिक्खत्तेणं तवोकम्मेण सुराभिमुही आयावेमाणी°
विहरइ ॥

सूमालियाए नियाण-पदं

१०९ तत्थ ण चपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ—'नरवइ-दिन्न-पयारा'° अम्मापिइ°-
नियण-निप्पिवासा वेसविहार-कय-निकेया' नाणाविह-अविणयप्पहाणा अड्ढा
जाव' बहुजणस्स अपरिभूया ॥

११०. तत्थ ण चपाए देवदत्ता नाम गणिया होत्था—सूमाला जहा अड-नाए° ॥

१११ तए ण तीसे ललियाए गोट्ठीए अण्णया कयाइ पच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए
गणियाए सद्धि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स° उज्जाणसिंरि पच्चणुब्भवमाणा
विहरति ॥

११२ तत्थ ण एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छगे धरेइ, एगे पिट्ठओ आयवत्त
धरेइ, एगे पुप्फपूरग रएइ, एगे पाए रएइ°, एगे चामरुक्खेव करेइ ॥

११३. तए णं सा सूमालिया अज्जा देवदत्त गणिय तेहिं° पचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धि
उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणिं° पासइ, पासित्ता इमेयारूवे
संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमा इत्थिया पुरापोराणाण° •सुचिण्णाण
सुपरक्कताण कडाण कल्लाणाण कम्माण कल्लाण फलवित्तिविसेस पच्च-

१ ना० १।१४।४० ।

निक्किया (ग) ।

२. ना० १।१।११८ ।

६. ना० १।५।७ ।

३. स० पा०—छट्ठछट्ठेण जाव विहरित्तए ।

१० ना० १।३।८ ।

४ समतलवइयाए (क); °पतियाए (ख, घ),
°वत्तियाए (ग) ।

११ × (ख, घ) ।

१२ पाठान्तरे पाए रोवेइत्ति घृतजलाभ्या
आद्रयति (वृ) ।

५. स० पा०—छट्ठछट्ठेण जाव विहरइ ।

१३. एहिं (क) ।

६. नरवइविदिण्णवियारा (क, ख) ।

१४. भुजमाणी (क, ख, ग, घ) ।

७. अम्मापिई° (क, ख, ग) ।

८. निक्केया (क), विक्किया (ख),

१५ स० पा०—पुरापोराणाण जाव विहरइ ।

णुवभवमाणी • विहरइ । त जइ णं केइ डमस्स सुचरियस्स तव-नियम-
बभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि, तो ण अहमवि आगमिस्सेणं
भवग्गहणेण इमेयारूवाइ उरालाईं •माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुजमाणी •
विहरिज्जामि त्ति कट्टु नियाण करेइ, करेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ ॥

सूमालियाए बाउसियत्त-पदं

- ११४ तए ण सा सूमालिया अज्जा सरीरवाउसिया^१ जाया यावि होत्था—अभिकखणं-
अभिकखण हत्थे घोवेइ, पाए घोवेइ, सीसं घोवेइ, मुह घोवेइ, थणंतराइ घोवेइ,
कक्खतराइ घोवेइ, गुज्झतराइ घोवेइ, जत्थ ण ठाणं वा सेज्ज वा निसीहिय वा
चेएइ, तत्थ वि य ण पुव्वामेव उदएण अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं
वा निसीहिय वा चेएइ ॥
११५. तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय अज्ज एवं वयासी—एवं खलु
अज्जे ! अम्हे समणीओ निग्गथीओ इरियासमियाओ जाव^२ वंभचेरधारिणीओ ।
नो खलु कप्पइ अम्ह सरीरवाउसियाए^३ होत्तए । तुम च ण अज्जे !
सरीरवाउसिया^४ अभिकखण-अभिकखण हत्थे घोवेसि^५, •पाए घोवेसि, सीस
घोवेसि, मुह घोवेसि, थणतराइ घोवेसि, कक्खतराइ घोवेसि, गुज्झंतराइ घोवेसि,
जत्थ ण ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेएसि, तत्थ वि य ण पुव्वामेव उदएण
अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा^६ चेएसि । त तुमं णं
देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि^७ •निंदाहि गरिहाहि पडिक्कमाहि
विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्टेहि, अहारिह तवोकम्म पायच्छित्तं^८
पडिवज्जाहि ॥
११६. तए णं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्टं नो आढाइ नो परियाणाइ,
'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी'^९ विहरइ ॥
- ११७ तए ण ताओ अज्जाओ सूमालिय अज्ज अभिकखण-अभिकखण हीलेति^{१०} •निंदेति
खिसेति गरिहंति^{१०} परिभवन्ति, अभिकखण-अभिकखणं एयमट्टं निवारेति ॥

१. स० पा०—उरालाइ जाव विहरिज्जामि ।

२. •भूमीए (ख, ग, घ) ।

३. •वाउसा (क), •पाउसा (ख, ग),
पाउसिया (घ) ।

४. ना० १।१४।४० ।

५. •पाउसिया (ख, ग, घ) ।

६. पाउसिया (ख, घ) ।

७. स० पा०—घोवेसि जाव चेएसि ।

८. स० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि ।

९. अणाढाइमाणा अपरियाणमाणा (क, घ);
अणाढायमाणा अपरियाणमाणा (ख);
अपरियाणमाणा (ग) ।

१०. स० पा०—हीलेति जाव परिभवति ।

सूमालियाए पुढोविहार-पदं

११८. तए ण तीसे सूमालियाए समणीहिं निग्गथीहि हीलिज्जमाणीए^१ •निदिज्ज-
माणीए खिसिज्जमाणीए गरिहिज्जमाणीए परिभविज्जमाणीए अभिक्खण-
अभिक्खण एयमट्ठ^२ • निवारिज्जमाणीए इमेयारूवे अञ्जत्थिए^३ • चित्थिए पत्थिए
मणोगए सकप्पे^४ • समुप्पज्जित्था—जया ण अहं अगारमञ्जे^५ वसामि^६, तथा
ण अहं अप्पवसा । जया ण अहं मुडा भवित्ता पव्वइया, तथा ण अहं परवसा ।
पुंवि च णं मम समणीओ आढति परिजाणति, इयाणि नो आढति नो परिजा-
णति । त सेय खलु मम कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए^७ उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते गोवालियाण अज्जाण अतियाओ पडिनिक्ख-
मित्ता पाडिएक्क उवस्सय उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ,
सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे
तेयसा जलते गोवालियाणं अज्जाण अतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता
पाडिएक्क उवस्सय उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

११९ तए णं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्ठिया^१ अनिवारिया सच्छदमई अभिक्खण-
अभिक्खण हत्थे धोवेइ^२, •पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुह धोवेइ, थणतराइ
धोवेइ, कक्खतराइ धोवेइ, गुज्जतराइ धोवेइ, जत्थ ण ठाण वा सेज्ज वा
निसीहिय वा चेएइ, तत्थ वि य ण पुव्वामेव उदएण अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा
ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा^३ चेएइ ।

तत्थ वि य ण पासत्था पासत्थविहारिणी ओसन्ना ओसन्नविहारिणी कुसीला
कुसीलविहारिणी ससत्ता ससत्तविहारिणी वहुणि वासाणि सामण्णपरियाग
पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अप्पाण भोसेत्ता, तीस भत्ताइं
अणसणाए छेएत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा
ईसाणे कप्पे अण्णयरसि विमाणसि देवगणियत्ताए उववण्णा । तत्थेगइयाणं^४
देवीण नवपलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता । तत्थ ण सूमालियाए देवीए नवपलि-
ओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

दोवई-कहाणग-पदं

१२० तेण कालेण तेणं समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासं पच्चालेसु जणवएसु
कपिल्लपुरे नाम नयरे होत्था--वण्णओ^१ ॥

१. स० पा०—हीलिज्जमाणीए जाव निवा-
रिज्जमाणीए ।

२. स० पा०—अञ्जत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

३. अगारवासं (ख) ।

४. परिवसामि (क) ।

५. पू०—ता० १।१।२४ ।

६. अणाहट्ठिया (ख, घ) ।

७. स० पा०—धोवेइ जाव चेएइ ।

८. तत्थगतियाणं (क, ग) ।

९. ओ० सू० १ ।

- १२१ तत्थ ण दुवए नामं राया होत्था—वण्णओ^१ ॥
१२२. तस्स ण चुलणी देवी । घट्टुज्जुणे कुमारे जुवराया ॥
- १२३ तए ण सा सूमालिया देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएण^२ •ठिइक्खएणं भवक्खएण अणतर चय^३ चइत्ता इहेव जंवुद्दीवे दीवे भारहे वासे पचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स^४ रण्णो चुलणीए देवीए कुच्चिसि दारियत्ताए पच्चायाया^५ ॥
- १२४ तए णं सा चुलणी देवी नवण्ह मासाण^६ •वहुपडिपुण्णाण अट्टट्टमाण य राइं-दियाण वीडक्कताण सुकुमाल-पाणिपाय जाव^७ दारियं पयाया ॥
- १२५ तए ण तीसे दारियाए निव्वत्तवारसाहियाए इम एयारूव नाम—जम्हा ण एसा दारिया दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया, त होउ ण अम्ह इमीसे दारियाए नामघेज्जे^८ दोवई ॥
१२६. तए ण तीसे अम्मापियरो इम एयारूवं गोण्ण गुणनिप्फन्नं नामघेज्जं करेति—दोवई-दोवई ॥
- १२७ तए ण सा दोवई दारिया पचघाईपरिग्गहिया जाव^९ गिरिकदरमल्लीणा इव चपगलया निवायं-निव्वाघायसि सुहंसुहेणं परिवड्डइ ॥
१२८. तए ण सा दोवई रायवरकण्णा उम्मुक्कवालभावा^{१०} •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्टा^{११} उक्किट्टुसरीरा जाया यावि होत्था ॥
१२९. तए ण त दोवइ रायवरकण्णं अण्णया कयाइ अतेउरियाओ ण्हाय जाव^{१२} सव्वालकारविभूसिय करेति, करेत्ता दुवयस्स रण्णो पायवदिय पेसेति ॥
- १३० तए ण सा दोवई रायवरकण्णा जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहण करेइ ॥

दोवईए सयंवर-संकप्प-पदं

१३१. तए ण से दुवए राया दोवइ दारिय अके निवेसेइ, निवेसेत्ता दोवईए रायवरकण्णाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए दोवइं रायवरकण्ण एव वयासी—जस्स ण अह तुम पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए

१. ओ० सू० १४ ।

७ नामघेज्जं (ख, घ) ।

२. सं० पा०—आउक्खएण जाव चइत्ता ।

८ ना० १।१६।३६ ।

३. दुपयस्स (ख, ग) ।

९. निव्वाय (क) ।

४. पयाया (क) ।

१०. सं० पा०—उम्मुक्कवालभावा जाव उक्किट्टुसरीरा ।

५. सं० पा०—मासाण जाव दारिय ।

६. ना० १।१।२० ।

११. ना० १।१।४७ ।

सयमेव दलइस्सामि, तत्थ णं तुम सुहिया वा दुहिया वा भवेज्जासि । तए ण मम जावज्जीवाए हिययदाहे भविस्सइ । त ण अह तव पुत्ता ! अज्जयाए सयवरं वियरामि । अज्जयाए ण तुम दिन्नसयंवरा । ज ण तुम सयमेव राय वा जुवराय वा वरेहिसि, से ण तव भत्तारे भविस्सइ त्ति कट्ठु ताहिं इट्ठाहिं^१ •कताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं^२ आसासेइ, आसासेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

वारवईए दूयपेसण-पदं

१३२ तए ण से दुवए राया दूय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! वारवइ नयरिं । तत्थ ण तुम कण्हं वासुदेव समुद्धविजयपामोक्खे दस दसारे, वलदेवपामोक्खे पच महावीरे, उग्गसेणपामोक्खे सोलस रायसहस्से, पज्जुन्नपामोक्खाओ अट्ठुआओ कुमारकोडीओ, सवपामोक्खाओ सट्ठि दुद्ध-साहस्सीओ, वीरसेणपामोक्खाओ एककवीस वीरपुरिससाहस्सीओ^३, महासेण-पामोक्खाओ छप्पन्न वलवगसाहस्सीओ, अण्णे य बह्वे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्ठु जएण विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ता एव वयाहिं^४—एव खलु देवाणुप्पिया । कपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णे धूयाए, चूलणीए अत्तयाए, घट्टुज्जुणकुमारस्स^५ भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयवरे भविस्सइ । तं ण तुव्भे दुवय राय अणुगिण्हेमाणा^६ अकालपरिहीण^७ चेव कपिल्लपुरे नयरे समोसरह ॥

१३३. तए ण से दूए करयल^८ परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलिं^९ कट्ठु दुवयस्स रण्णे एयमट्टु पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । चाउग्घट आसरह जुत्तामेव उवट्टवेह । 'ते वि तहेव उवट्टवेति'^{१०} ॥

१३४ तए ण से दूए ण्हाए जाव^{११} अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे चाउग्घट आसरह

१. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव आसासेइ ।

२. रायवरवीर^० (ख, ग); वीरसाहस्सीण (१।५।६) ।

३. वयह (क) ।

४. घिट्टु^० (ग) ।

५. ते (ख) ।

६. अणुगिण्हेमाणा (क, ग, घ) ।

७. परिहीणा (ख, घ) ।

८. सं० पा०—करयल जाव कट्ठु ।

९. सो वि तहेव उवट्टवेति (क, ख, ग, घ), 'कोडुवियपुरिसे' तथा 'उवट्टवेह' एते क्रियापदे बहुवचनान्ते स्तः, तेनात्रापि बहुवचनान्ते क्रियापदे युज्येते । एव प्रतीयते पाठपूरणे कश्चिद् विपर्ययो जातः ।

१०. ना० १।१।२७ ।

दुरुहइ, दुरुहिता बहूहि पुरिसेहिं—सण्णद्ध'-●वद्ध-वम्मिय-कवएहि उप्पीलिय-सरासण-पट्टिएहि पिणद्ध-गेविज्जेहिं आविद्ध-विमल-वरचिध-पट्टेहिं ° गहियाउह-पहरणेहिं—सिद्धि संपरिवुडे कपिल्लपुर नयर मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, पचाल-जणवयस्स मज्झमज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सुरट्टाजणवयस्स' मज्झमज्झेणं जेणेव वारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छिता वारवइ नयारि मज्झमज्झेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसत्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स वाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता चाउघट आसरह ठावेइ, ठावेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता मणुस्स-वग्गुरापरिक्खित्ते पायचारविहारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता कण्ह वासुदेव, समुद्धविजयपामोक्खे य दस दसारे जाव' 'छप्पन्तं वलवगसाहस्सीओ' करयल'●परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णे घयाए, चुलणीए अत्तयाए, घट्टज्जुणकुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयवरे अत्थि । त ण तुव्भे दुवय रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीण चेव कपिल्लपुरे नयरे ° समोसरह ॥

१३५ तए ण से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्टं सोच्चा निसम्म हट्टुट्ट-^१ ●चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण °-हियए त दूय सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

कण्हस्स पत्थाण-पदं

१३६ तए ण से कण्हे वासुदेवे कोडुंविणपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया । सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरि तालेहि ॥

१३७. तए ण से कोडुंविणपुरिसे करयल'●परिग्गहिय दसणहं सिरसावत्त मत्थए अजलि ° कट्टु कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ट पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया' भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सामुदाइय भेरि महया-महया सद्देण तालेइ ॥

१३८ तए ण ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्धविजयपामोक्खा दस

१. स० पा०—सण्णद्ध जाव गहिया ° ।

२. मुट्टु ° (क, घ) ।

३. ना० १।१६।१३२ ।

४. १३२ सूत्रानुसारेणाऽत्र 'सत्थवाहप्पभिइओ' इति पाठ. सगच्छते ।

५. स० पा०—करयल त चेव जाव समोसरह ।

६. स० पा०—हट्टुट्ट जाव हियए ।

७. सं० पा०—करयल० ।

८. सामुदाणिया (ख, घ) ।

दसारा जाव' 'महासेणपामोक्खाओ छप्पन्त वलवगसाहस्सीओ'^१ ण्हाया जाव'^२
सव्वालकारविभूसिया जहाविभवइड्डिसक्कारसमुदएण अप्पेगइया ह्यगया'^३
•एव गयगया रह-सीया-सदमाणीगया° अप्पेगइया पायविहारचारेण' जेणेव
कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल'^४परिग्गहिय दसणह
सिरसावत्त मत्थए अज्जलि कट्टु° कण्ह वासुदेव जएण विजएण वद्धावेति ॥

१३६. तए ण से कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्क° हत्थिरयण पडिकप्पेह ह्य-गय'-
•रह-पवरजोहकलिय चाउरंगिणि सेण सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता एयमाणत्तिय
पच्चप्पिणह । ते वि तहेव° पच्चप्पिणति ॥

१४०. तए ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
समत्तजालाकुलाभिरामे' •विचित्तमणि-रयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमड-
वसि णाणामणि-रयण-भत्ति-चित्तसि ण्हाणपीढसि सुहणिसण्णे सुहोदएहिं
गधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहिं पुणो-पुणो कल्लाणग-पवर मज्जणविहीए
मज्जिए जाव''° अजणगिरिकूडसन्निभ गयवइ नरवई दुरूढे ॥

१४१. तए ण से कण्हे वासुदेवे समुद्धविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव'' अणग-
सेणापामोक्खाहिं अणगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सच्चिद्धीए जाव''^५
दुदुहि-निग्घोसनाइयरवेण वारवइ नयारिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता
सुरट्टाजणवयस्स मज्झमज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
पचालजणवयस्स मज्झमज्झेण जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

हत्थिणाउरे दूयपेसण-पदं

१४२. तए ण से दुवए राया दोच्च पि दूय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह
ण तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं'' नयर । तत्थ ण तुम पडुराय सपुत्तय—

१ ना० १।१६।१३२ ।

८ स० पा०—ह्यगय जाव पच्चप्पिणति ।

२. १३२ सूत्रानुसारेणाञ्च 'सत्थवाहप्पमिइओ'
इति पाठ समच्छते ।

९ स० पा०—समत्तजालाकुलाभिरामे जाव
अजणगिरि० ।

३. ना० १।१।४७ ।

१० ओ० सू० ६३ ।

४. स० पा०—ह्यगया जाव अप्पेगइया ।

११. ना० १।५।६ ।

५. पायचारविहारेण (क, ख, ग) ।

१२. ना० १।१।३३ ।

६. स० पा०—करयल जाव कण्ह ।

१३. हत्थिणपुरं (ख, घ) ।

७. अभिसेक्कं (क, ख, घ) ।

जुहिद्विल' भीमसेण अज्जुण नउल सहदेव, दुज्जोहणं भाइसय'-समग्ग, गगेयं विदुर दोण जयद्दह सउणि कीव आसत्थाम करयल' परिग्गहियं दसनह सिरसावत्त मत्थए अर्जलि कट्टु जएण विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ताएव वयाहि—एव खलु देवाणुप्पिया । कपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो घूयाए, चुलणीए अत्तयाए घट्टज्जुणकुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयवरे भविस्सइ । त ण तुब्भे दुवय राय अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चैव कपिल्लपुरे नयरे° समोसरह ॥

१४३ तए ण से दूए° जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव पडुराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता पडुराय सपुत्तय—जुहिद्विल भीमसेण अज्जुणं नउल सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसय-समग्ग, गगेयं विदुर दोण जयद्दहं सउणि कीव आसत्थाम' एव वयइ—एव खलु देवाणुपिया । कपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो घूयाए, चुलणीए अत्तयाए, घट्टज्जुणकुमारस्स भइणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयवरे अत्थि । त ण तुब्भे दुवय राय अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चैव कपिल्लपुरे नयरे समोसरह ॥

१४४ तए ण से पडुराया जहा वासुदेवे नवर—भेरी नत्थि जाव'° जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

द्वयपेसण-पदं

१४५ एएणेव कमेण—

तच्चं द्वय° एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! चप नयरिं । तत्थ ण

१. जुहिद्विल्ल (घ) ।

२. भायसय° (ख, घ) ।

३. स० पा०—करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरह ।

४. स० पा०—तए ण से दूए एव वयासी जहा वासुदेवे नवर भेरी नत्थि जाव जेणेव, पू०—ना० १।१६।१३३, १३४ ।

५. पू०—ना० १।१६।१३४ ।

६. ना० १।१६। १३५-१४१ ।

७. स० पा०—तच्च द्वय चप नयरिं । तत्थ ण तुम कण्ण अग्राय सल्ल नदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह । चउत्थं द्वय सोत्तिमइ नयरिं । तत्थ णं तुम सिसुपाल दमघोससुय पचभाइसयसपरिवुड करयल तहेव जाव

समोसरह । पचम द्वय हत्थिसीस नयरिं । तत्थ ण तुम दमदत्त राय करयल जाव समोसरह । छट्ठ द्वय महुर नयरिं । तत्थ ण तुमं घर राय करयल जाव समोसरह । सत्तमं द्वय रायगिह नयर । तत्थ ण तुम सहदेव जरासघसुय करयल जाव समोसरह । अट्ठम द्वय कोडिण्ण नयर । तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समोसरह । नवम द्वयं विराटं नयरिं । तत्थ णं तुम कीयग भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह । दसमं द्वय अवसेसेसु गामागर-नगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह । तए ण से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर तहेव जाव समोसरह ।

तुम कण्णं' अगाराय, सल्ल नंदिरायं एव वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरहं ।
चउत्थ दूय एव वयासी—गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया । सोत्तिमइ नयरिं ।
तत्थ ण तुम सिंसुपाल दमघोससुय पचभाइसय-सपरिवुड एव वयाहि—
कपिल्लपुरे नयरे समोसरहं ।

पचम दूय एव वयासी—गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया । हत्थिसीस नयरिं । तत्थ
ण तुम दमदत्त राय एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे समोसरहं ।

छट्ठं दूय एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया । महुर नयरिं । तत्थ ण
तुम धरं राय एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे समोसरहं ।

सत्तम दूयं एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! रायगिह नयरिं । तत्थ
ण तुम सहदेव जरासघसुय एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे समोसरहं ।

अट्ठमं दूय एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! कोडिण्ण नयर । तत्थ
ण तुम रुप्पि भेसगसुयं एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे समोसरहं ।

नवम दूय एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! विराट नयर । तत्थ ण
कीयग भाउसय-समग्ग एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे समोसरहं ।

दसम दूय एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! अवसेसेसु गामागर-
नगरेसु । तत्थ ण तुम अणेगाइ रायसहस्साइ एव वयाहि—कपिल्लपुरे नयरे
समोसरहं ।

रायसहस्साण पत्थाणं-पदं

१४६ तए ण ते" वहवे रायसहस्सा पत्तेय-पत्तेय ण्हाया सण्णद्ध-वद्ध-वम्मिय-

१. कण्ह (क्व) ।

२. शेष १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम् ।

३-८. शेष १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम् ।

९. शेष १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम् । अन्ति-
मात् 'समोसरहं' इति पदादग्रे निम्नलिखित
पाठो लभ्यते, किन्तु पूर्वक्रमानुसारेण असौ
सक्षिप्तपाठपद्धतावेव गर्भितोस्ति, तेना-
त्रास्माभि पाठान्तररूपेण स्वीकृत । 'तए
ण से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर-
नगराइ जेणेव अणेगाइ रायसहस्साइ तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छिता एव वयासी—
कपिल्लपुरे नयरे समोसरहं । तए ण ताइ
अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए
एयमद्व सोच्चा निसम्म हद्दा तं दूयं सक्का-

रेंति सम्माणेति, सक्कारेत्ता मम्माणेत्ता
पड्डिविसज्जेति' [ख, ग, घ] । १३४ सूत्रात्
१४५ सूत्रपर्यन्त 'क' प्रती एतावान् एव पाठ
उपलभ्यते - गच्छह ण तुम देवाणु रायागिह
नयर । तत्थ ण तुम सहदेव रायाण अण्णे य
जाव वहवे जाव वद्धावेत्ता एव वयह—एव
खलु देवाणुप्पिया । कपिल्लपुरे जाव समो-
सरहं । एवं महुराए उग्गेण उग्गसेण वा
राय । हत्थिणाउरे पड्डु सपुत्तय । वइराडए
णगरे दुज्जोहण भाइसत्तसमग्ग सउण्णि
सल्लगिं च जयद्दह दोण आसत्थाम अण्णे य ।
दत्तपुरी दत्तवक्को । चपाए पउमराया । तए
ण से दूए तहत्ति जाव पड्डिसुणेइ ।

१०. ते वासुदेवपामोक्खा [क, ख, ग, घ] ।

कवया' हत्थिखधवरगया' हय-गय-रह'-●पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खित्ता° सएहि-सएहि नगरेहितो अभिनिग्गच्छति, अभिनिग्गच्छित्ता जेणेव पचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

दुवयस्स श्रातित्थ-पद

- १४७ तए ण से दुवए राया कोडुवियपुरिसे सदावेड, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया । कपिल्लपुरे नयरे वहिया गंगाए महानईए अदूरसामते एग मह सयवरमडव करेह—अणेगखंभ-सयसन्निविट्टं लीलट्टिय-सालिभजियागं जाव' पासाईयं दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूव—करेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणति ॥
- १४८ तए ण से दुवए राया [दोच्चपि ?] कोडुवियपुरिसे सदावेड, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामोक्खाणं बहूण रायसहस्साणं आवासे करेह, करेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणति ॥
१४९. तए ण से दुवए राया वासुदेवपामोक्खाण बहूण' रायसहस्साण आगमण जाणेत्ता पत्तेय-पत्तेयं हत्थिखंध'●वरगए सकोरेटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्ज-माणेण सेयवरचामराहि वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरि-क्खित्ते° अग्घं च पज्ज च गहाय सव्विड्डीए कपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइ वासुदेवपामोक्खाइ अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेड सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तेसिं वासुदेवपामोक्खाण पत्तेय-पत्तेय आवासे वियरइ ॥
- १५० तए ण ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हत्थिखधेहितो पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं-पत्तेयं खंधावार-निवेस करेति, करेत्ता सएसु-सएसु आवासेसु अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता सएसु-सएसु आवासेसु' आसणेसु य सयणेसु य सन्निसण्णा य सतुयट्टा य बहूहि गधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य विहरंति ॥
- १५१ तए ण से दुवए राया कपिल्लपुर नयरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता विपुलं

वासुदेवस्य प्रस्थानविषयक सूत्र पूर्वं साक्षात् उल्लिखितमस्ति, तथैव पाण्डुराजस्यापि, तेनासौ पाठः पाठान्तररूपेण स्वीकृतः ।

१. पू०—ना० १।१६।१३४ ।

३. पू०—ना० १।८।५७, १।१६।१५३ ।

३. स० पा०—रह महया ।

४. ना० १।१ ८६ ।

५. × (ग, घ) ।

६. स० पा०—हत्थिखध जाव परिवुडे ।

७. आवासेसु य (क, ख, ग, घ) ।

असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । विपुल असण-पाण-खाइम-साइमं सुर च मज्ज च मस च सीघु च पसन्न च सुबहु पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकारं च वासुदेवपामोक्खाण रायसहस्साण आवासेसु साहरह । तेवि साहरति ॥

१५२. तए ण ते वासुदेवपामोक्खा त विपुलं असण^१-पाण-खाइम-साइम सुर च मज्ज च मस च सीघु च^२ पसन्नं च आसाएमाणा विसादेमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा विहरति । जिमियभुत्तुरागया वि य ण समाणा आयता चोक्खा^३ परमसुइभूया^४ सुहासणवरगया व्हूहि गधव्वेहि य^५ नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य^६ विहरति ॥

दोवईए सयंवर-पदं

१५३ तए णं से दुवए राया पच्चावरण्ह^१-कालसमयसि कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । कपिल्लपुरे सिघाडग^२-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह^३-पहेसु वासुदेवपामोक्खाण रायसह-स्साण आवासेसु हत्थिखधवरगया महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया । कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए^४ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए देवीए अत्तियाए, धट्टज्जुणस्स भगिणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयवरे भविस्सइ । त तुब्भे ण देवाणुप्पिया । दुवय रायाण अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव^५ सव्वालकारविभूसिया हत्थिखधवरगया सकोरेट^६ मल्लदामेण छत्तेण धरिज्ज-माणेण सेयवरचामराहि वीइज्जमाणा ह्य-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउर-गिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विद^७ परिक्वित्ता जेणेव सयवरामडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छिता पत्तेय-पत्तेय नामकिएसु^८ आसणेसु निसीयह, निसीइत्ता दोवइ रायवरकण्ण पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिद्वह त्ति^९ घोसण घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

१५४ तए ण ते कोडुवियपुरिसा तहेव जाव^{१०} पच्चप्पिणति ॥

१ स० पा०—असण जाव पसन्न ।

७ ना० १।१४७ ।

२ स० पा०—चोक्खा जाव सुहासणवरगया ।

८ स० पा०—सकोरेट^० सेयचामर ह्य-गय-

३ स० पा०—गधव्वेहि य जाव विहरति ।

रह-महयाभडचडगरेण जाव परिक्वित्ता ।

४ पुच्चावरण्ह (ख, ग, घ) ।

९ नामकेसु (क, ख, ग, घ) ।

५ सं० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

१० × (क, ख, ग) ।

६ पू०—ना० १।१२४ ।

११ ना० १।१६।१५३ ।

- १५५ तए णं से दुवए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह
ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सयवरमडवं आसिय-संमज्जिओवलित्त पच्चवण्ण^१-
पुप्फोवयारकलियं कालागरु-पवरकुटुखक-तुखक^२-^३धूव-डज्भत्त-सुरभि-
मघमघेत-गधुद्ध्याभिराम सुगधवरगधगधियं • गंधवट्टिभूय मचाइमचकलियं
करेह कारवेह, करेत्ता कारवेत्ता वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेय-
पत्तेय नामकियाइ^३ आसणाइ अत्थुयपच्चत्थुयाइ रएह, रएत्ता एयमाणत्तिय
पच्चप्पिणह । तेवि जाव पच्चप्पिणत्ति ॥
- १५६ तए ण ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए^४
उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ण्हाया जाव^५ सव्वालकार-
विभूसिया हत्थिखधवरगया सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेणं
सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणा ह्य-गय^६-^७रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए
सेणाए सद्धि सपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खत्ता ° सव्वि-
ड्डीए जाव^८ दुदुहि-निग्घोस-नाइयरवेण जेणेव सयवरामडवे तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता पत्तेय-पत्तेय नामकिएसु^९
आसणेसु निसीयति दोवइ रायवरकण्णं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठत्ति ॥
- १५७ तए ण से दुवए राया कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए^{१०} उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ण्हाए जाव^{११} सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंध-
वरगए सकोरेट^{१२} • मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं
वीइज्जमाणे ह्य-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि
सपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खत्ते ° कपिल्लपुरं नगरं
मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, जेणेव सयवरामडवे जेणेव वासुदेवपामोक्खा बहवे
रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसि वासुदेवपामोक्खाण करयल^{१३}-
• परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अंजलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेइ °,
वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामर गहाय उववीयमाणे चिट्ठइ ॥
- १५८ तए ण सा दोवई रायवरकण्णा कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए^{१४} उट्ठियम्मि सूरे

१. सुगव-वरगंधिय पच्चवण्ण (क ख, ग, घ) ।

८. नामकेसु (ख, घ) ।

२. स० पा०—तुखक जाव गधवट्टिभूय ।

९. पू०—ना० १।१।२४ ।

३. नामकाइ (क, ख, ग, घ) ।

१०. ना० १।१।४७ ।

४. पू०—ना० १।१।२४ ।

११. स० पा०—सकोरेट ह्यगय ।

५. ना० १।१।४७ ।

१२. म० पा०—करयल वद्धावेत्ता ।

६. स० पा०—ह्यगय जाव परिवुडा ।

१३. पू०—ना० १।१।२४ ।

७. ना० १।१।३३ ।

सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव मज्जणघरे तेणेव उव छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया मज्जणघराओ पडिनिकखमइ, पडिनिकखमित्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता जिणघर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जिणपडिमाणं अच्चण करेइ, करेत्ता' जिणघराओ पडिनिकखमइ, पडिनिकखमित्ता जेणेव अतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥

१५६ तए ण त दोवइ रायवरकण्ण अंतेउरियाओ सव्वालकारविभूसिय करेति । 'किं ते' ? वरपायपत्तनेउरा जाव' चेडिया-चक्कवाल-'महयरग-विद'-परिक्खित्ता अंतेउराओ पडिनिकखमइ, पडिनिकखमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धि चाउग्घट आसरह दुरूहइ ॥

१६० तए णं से घट्टुज्जुणे कुमारे दोवईए रायवरकण्णाए सारत्थ करेइ ॥

१६१ तए ण सा दोवई रायवरकण्णा कपिल्लपुर नयर मज्झमज्झेण जेणेव सयवरा-मडवे' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रह ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चो-रुहित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धि सयवरामडव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल'परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अज्जलि कट्टु° तेसि वासुदेव-पामोक्खाण वहुण रायवरसहस्साण पणाम करेइ ॥

१६२ तए ण सा दोवई रायवरकण्णा एग मह सिरिदामगइ—किं ते ? पाडल-

१ जिणपडिमाण अच्चण करेइ त्ति एकस्या वाचनायामेतावदेव दृश्यते (वृ) । वाचनान्तरे तु—ण्हाया जाव सव्वालकारविभूमिया मज्जणघराओ पडिनिकखमइ जेणामेव जिण-घरे तेणामेव उवागच्छति जिणघर अणुपवि-सइ, अणुपविसित्ता जिणपडिमाण आलोए पणाम करेइ, करेत्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता एव जहा सूरियाभे जिणपडिमाओ अच्चेत्ति तहेव भाणियव्व जाव धूव डहइ २ वामं जाणु अचेइ, दाहिण जाणु घरणितलसि निहट्टु तिकखुत्तो मुद्धाण घरणितलसि निवेसइ [निमेइ (क, ग), निसीयइ (घ); निवाडेइ (राय० सू० २६२)] ईसि पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता करयलपरिग्गहिय अज्जलि मत्थए

कट्टु एव वयासी—नमोत्थु ण अरहताण जाव सपत्ताण वदइ नमसइ नमसित्ता जिण-घराओ पडिनिकखमइ (वृपा, क, ख, ग, घ) ।

२ किं तत 'यत् करोति' इति शेष ।

३. ना० १।१।३३ ।

४. मयहरिग० (क), मयहरग० (ख, घ); मयहरयद (ग), यद्यपि पाठसशोधन-प्रयुक्तेषु आदर्शेषु 'मयहरग०' इतिपाठो लभ्यते किन्तु 'ओवाइय' ७० सूत्रे 'महत्तरवद' इति पाठो-स्ति, तदनुसारेण 'महयरगवद' इति पाठोऽ-स्माभि स्वीकृत । लिपिदोषेण यकार-हकारयोर्विपर्यय सजातः इति सभाव्यते ।

५. सयवरमडवे (क, ख, ग, घ) ।

६. स० पा०—करयल० ।

मल्लिय-चंपय जाव^१ सत्तच्छयाईहिं^२ गंधद्धणि मुयंतं परमसुहफास दरिसणिज्जं—
गेण्हड ॥

१६३. तए ण सा किड्ढाविया सुरूवा^३ •साभावियघंस वोद्दहजणस्स उस्सुयकर विचित्त-
मणि-रयण-वद्धच्छरूहं^४ वामहत्येण चिल्लगं दप्पणं गहेऊण सललिय दप्पण-
संकतविब^५-सदंसिए^६ य से दाहिणेणं हत्येण दरिसए^७ पवररायसीहे । फुडविसय-
विसुद्ध-रिभिय-गभीर-महुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं^८ पत्थिवाणं अम्मापिड-
वस-सत्त-सामत्थ-गोत्त-विक्कति-कति^९-वहुविहआगम-माहप्प-रूव - कुलसीलजा-
णिया कित्तण करेइ । पढमं ताव वणिहपुगवाण दसारवरं^{१०}-वीरपुरिस-तेलोक्क-
वलवगाण^{११}, सत्तु^{१२}-सयसहस्स-माणावमद्दगाणं^{१३} 'भवसिद्धिय-वरपुडरीयाणं'^{१४}
चिल्लगाणं वल-वीरिय-रूव-जोवण्ण-गुण-लावण्णकित्तिया कित्तण करेइ ।
तओ पुणो उग्गसेगमाईण^{१५} जायवाण भणइ—सोहग्गरूवकलिए वरेहि
वरपुरिसगधहत्यीण जो हु ते होइ हियय-दइओ ॥

दोवईए पडव-वरण-पदं

१६४. तए ण सा दोवई रायावरकण्णगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झमज्झेणं
समइच्छमाणी-समइच्छमाणी^{१६} पुव्वकयनियाणेण चोडज्जमाणी-चोडज्जमाणी
जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पंच पडवे तेणं दसद्ध-
वण्णेण कुसुमदामेण आवेढियपरिवेढिए करेइ, करेत्ता एव वयासी—एए ण मए
पच पडवा वरिया ॥
१६५. तए ण ताइ वासुदेवपामोक्खाइं वहूणिं रायसहस्साणि महया-महया सद्देण
उग्घोसेमाणाइ-उग्घोसेमाणाइ एवं वयति—सुवरिय खलु भो ! दोवईए
रायवरकण्णाए त्ति कट्टु सयंवरमडवाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता
जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छति ॥
१६६. तए ण धट्टज्जुणे कुमारे पच पंडवे दोवइं च^{१७} रायवरकण्णं चाउग्घंटं आसरहं

१ ना० १।५।३० ।

२ १।५।३० सूत्रे 'सत्तच्छयाईहिं' इति पाठो
नोपलभ्यते तथा येषां पदानामपि क्रमभेदो
वर्तते ।

३ सं० पा०—सुरूवा जाव वामपत्येण ।

४. °विब (व, ग) ।

५. दसिए (घ) ।

६. दरिसीएइ (ख), दरसिए (घ) ।

७. सव्व (क, ख, ग) ।

८ कित्ति (वृषा) ।

९. दसदसार (ग) । पूर्णपाठ अस्याध्ययनस्य

१३२ सूत्रे द्रष्टव्य ।

१०. तिल्लोक ° (क) ।

११ सक्क (घ) ।

१२ माणोवमद्दगाणं (ख, घ) ।

१३. भवसिद्धिपवर ° (क्व) ।

१४. °माडयाणं (क) ।

१५. ममतिच्छमाणी (ख, ग, घ) ।

१६. × (ग) ।

‘दुरुहावेड, दुरुहावेत्ता’ कपिल्लपुर नयर मज्झमज्झेण^१ •उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता ° सय भवण अणुपविसइ ॥

पाणिग्गहण-पदं

१६७. तए ण से दुवए राया पच पडवे दोवइ च^१ रायवरकण्ण पट्टय ‘दुरुहावेइ,
दुरुहावेत्ता’^२ सेयापीयएहि कलसेहि मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोम करावेइ,^३
पचण्ह पडवाण दोवईए य पाणिग्गहण कारावेड^४ ॥
१६८. तए ण से दुवए राया दोवईए रायवरकण्णाए इम एयारूव पीइदाण दलयइ,
तं जहा—अट्ट हिरण्णकोडीओ जाव^५ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्ण च
विपुलं घण-कणग^६—•रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार-
सावएज्ज अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ पकाम भोत्तु
पकाम परिभाएउ ° दलयइ ॥
- १६९ तए ण से दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाइ वहुइ रायसहस्साइ विपुलेण
असण-पाण-खाडम-साडमेण पुप्फ-वत्थ-गघ^७—•मल्लालकारेण सक्कारेइ सम्मा-
णेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता ° पडिविसज्जेइ ॥

पंडुरायस्स निमंतण-पदं

- १७० तए ण से पडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण वहुण रायसहस्साण करयल^८—
•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु ° एवं वयासी—एव खलु
देवाणुप्पिया । हत्थिणाउरे नयरे पचण्हं पडवाण दोवईए य देवीए कल्लाण-
कारे^९ भविस्सइ । तं तुवभे ण देवाणुप्पिया । मम अणुगिण्हमाणा अकालपरि-
हीण चेव समोसरह ॥
१७१. तए ण ते वासुदेवपामोक्खा वहुवे रायसहस्सा पत्तेय-पत्तेय^{१०} •ण्हाया सण्णद्ध-
वद्ध-वम्मिय-कवया^{११} हत्थिखधवरगया जाव^{१२} जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव •
पहारेत्थ गमणाए ॥

१. दुरुहेइ २ (क, ख, ग, घ) । अस्मिन्नर्थप्रसंगे
प्रेरणार्थक क्रियापद युज्यते । आदर्शेषु तथा
नोपलभ्यते । १।१६।५१ सूत्रस्य सदर्थेण
एतत् क्रियापद मूलपाठे स्वीकृतम् ।

२ म० पा०—मज्झमज्झेण जाव सय ।

३ × (ख, ग) ।

४. दुरुहेइ २ (क, ख, ग, घ) । द्रष्टव्यम्—१६६
सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५ करेइ (ख, घ), कारवेड (ग) ।

६ कारेइ (क, घ); करेइ (ग) ।

७. ना० १।१।६१ टिप्पणगाथा ।

८ स० पा०—कणग जाव दलयइ ।

९ स० पा०—गघ जाव पडिविसज्जेइ ।

१०. सं० पा०—करयल जाव एव ।

११ कल्लाणकारी (क), कल्लाणकारे (घ) ।

१२ स० पा०—पत्तेय जाव पहारेत्थ ।

१३. पू०—ना० १।१६।१३४ ।

१४ ना० १।१६।१४६ ।

पंडुरायस्स आतित्थ-पदं

- १७२ तए ण से पडू राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । हत्थिणाउरे नयरे पच्चण्ह पडवाण पंच पासायवडिसए कारेह—अब्भुग्गयमूसिय जाव' पडिरूवे ॥
- १७३ तए णं ते कोडुवियपुरिसा पडिसुणेति जाव कारवेति ॥
१७४. तए ण से पडू राया पच्चहिं पडवेहिं दोवईए देवीए सद्धि हय-गय^२-^३रह-पवर-जोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महयाभडचडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खत्ते^४ ° कपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिता जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ॥
- १७५ तए ण से पडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमण जाणित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया । हत्थिणाउरस्स नयरस्स वहिया वासुदेवपामोक्खाण वहूण रायसहस्साण आवासे—अणेगखभ-सयसण्णिविट्ठे^५ कारेह, कारेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ॥
१७६. तए ण ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ॥
- १७७ तए ण से पडू राया ते वासुदेवपामोक्खे^६ °वहवे रायसहस्से ° उवागए^७ जाणित्ता हट्टतुट्ठे ण्हाए कयवलिकम्मे जहा दुवए जाव^८ जहारिहं आवासे दलयड ॥
- १७८ तए ण ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छति तहेव जाव^९ विहरति ॥
- १७९ तए ण से पडू राया हत्थिणाउरं नयर अणुपविसड, अणुपविसित्ता कोडुविय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइम^{१०} आवासेसु उवणेह । तेवि तहेव उवणेति ॥
१८०. तए ण ते वासुदेवपामोक्खा वहवे रायसहस्सा ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ता तं विपुल असण-पाण-खाइम-साइम आसाएमाणा तहेव जाव^{११} विहरति ॥

कल्लाणकार-पद

१८१. तए ण से पडू राया ते पच पडवे दोवइं च देवि पट्टय 'दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता'^{१२} सेया-

- १ वण्णओ जाव(क, ख, ग, घ), ना० १।१।८६ । ७. ना० १।१६।१५० ।
 २. सं० पा०—हयगय संपरिवुडे । ८. पू०—ना० १।१६।१५१ ।
 ३. पू०—ना० १।१।८६ । ९. ना० १।१६।१५२ ।
 ४. सं० पा०—वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए । १०. दुरुहेइ २(क, ख, ग, घ)। द्रष्टव्यम्—१६६
 ५. आगए (ग) । सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
 ६. ना० १।१६।१४६ ।

पीएहि^१ कलसेहि^२ ण्हावेइ, ण्हावेत्ता कल्लाणकार^३ करेइ^३, करेत्ता ते वासुदेवपामोक्खे
वहवे रायसहस्से विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्ला-
लकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१८२. तए ण ताइ वासुदेवपामोक्खाइ वहूइ^४ • रायसहस्साइ पडूएण रण्णा विसज्जिया
समाणा जेणेव साइ-साइ रज्जाइ जेणेव साइ-साइ नगराइ तेणेव^५ पडिगयाइ^६ ॥
१८३ तए ण ते पच्च पडवा दोवईए देवीए सद्धि कल्लाकल्लि वारवारेण उरालाइ
भोगभोगाइ^७ • भुजमाणा^८ विहरति ॥

नारदस्स आगमण-पदं

१८४. तए ण से पडू राया अण्णया कयाइ पच्चहि पडवेहि^९ कोतीए^{१०} देवीए दोवईए
य सद्धि अतोअतेउरपरियालसद्धि सपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ ॥
१८५. इम च ण 'कच्छुल्लनारए—दसणेण अइभद्दए विणीए अतो-अतो य कलुस
हियए 'मज्झत्थ-उवत्थिए'^{११} य अल्लीण-सोमपियदसणे सुख्वे अमइल-सगल-
परिहिए कालमियचम्म-उत्तरासग-रइयवच्छे दड-कमडलु-हत्थे जडामउड-
दित्तिसिए जन्नोवइय-गणेत्तिय-मुजमेहला-वागलघरे हत्थकय-कच्छभीए^{१२}
पियगधव्वे घरणिगोयरप्पहाणे सवरणावरणि-ओवयणुप्पयणि-लेसणीसु य
सकाणि-आभिओगि^{१३}-पणत्ति-गमणि^{१४}-थभिणीसु य वहूसु विज्जाहसुरी^{१५}
विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्न-पईव-सव-अनिरुद्ध-
निसढ-उम्मय-सारण-गय-सुमुह-दुम्महाईण^{१६} जायवाण अद्धट्ठाण य कुमारकोडीण
हियय-दइए सथवए कलह-जुद्ध-कोलाहलप्पिए^{१७} भडणाभिलासी वहूसु य समर-
सयसपराएसु दसणरए समतओ कलह सदक्खण अणुगवेसमाणे असमाहिकरे
दसारवर^{१८}-वीरपुरिस-तेलोककवलवगाण आमतेऊण त भगवइ पक्कमणि गगण-
गमणदच्छ उप्पइओ गगणमभिलघयतो गामागर-नगर-खेड-कव्वड-मडव-
दोणमुह-पट्टण-सवाह-सहस्समडिय थिमियमेइणीय^{१९} निवभर^{२०}-जणपद वसुह

१ सीया^० (क, ख, ग) ।

पाठोऽपि लभ्यते ।

२ कल्लाणालकार (क) कल्लाणलकारं (ख),
कल्लाणकरं (घ) ।

१० अभिओग (क, ख, ग, घ) ।

११. गमण (ख), गमणी (घ) ।

३ कारेइ (ख) ।

१२ × (ख) ।

४ सं० पा०—वहूइ जाव पडिगयाइ ।

१३ दुमुहा^० (घ) ।

५ परिगयाइ (क) ।

१४ कोउहल^० (ख) ।

६ सं० पा०—भोगभोगाइ जाव विहरति ।

१५ पूर्णपाठ अस्याध्ययनस्थ १३२ सूत्रे द्रष्टव्य ।

७ कुतीए (ख) ।

१६. थिमियमेयणीतल (ग) ।

८ मज्झत्थोवत्थिए (ग) ।

१७. निभय (ख) ।

९. एकस्या हस्तलिखितवृत्तौ 'कच्छवीए' इति

ओलोइते रम्म हत्थिणाउर उवागए पडुरायभवनसि^१ 'भक्ति-वेगेण'^२ समो-
वइए ॥

१८६ तए ण से पडू राया कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ, पासित्ता पचहिं पडवेहिं
कुतीए य देवीए सद्धिं आसणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टेत्ता कच्छुल्लनारय सत्तट्टु-
पयाइ पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता
वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता महुरिहेण 'अग्घेण पज्जेण'^३ आसणेण य उवन्ति-
मतेइ ॥

१८७ तए ण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए
निसीयइ, निसीइत्ता पडुरायं रज्जे य^४ •रट्टे य कोसे य कोट्टागारे य वले य
वाहणे य पुरे य^० अतेउरे य कुसलोदत पुच्छइ ॥

१८८ तए ण से पडू राया कोती देवी पच य पडवा कच्छुल्लनारय आढति^५ •परिया-
णति अब्भुट्टेति^० पज्जुवासति ।

१८९ तए ण सा दोवई देवी कच्छुल्लनारय 'अस्सजयं अविरय अप्पडिहयपच्चखाय-
पावकम्मति'^६ कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्टेइ नो पज्जुवासइ ॥

१९० तए ण तस्स कच्छुल्लनारयस्स इमेयारूवे अज्जभत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए
सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण दोवई देवी रूवेण य^७ •जोव्वणेण य^० लावण्णेण
य पचहिं पडवेहिं अवत्थद्धा^८ समाणी ममं नो आढाइं •नो परियाणइ नो
अब्भुट्टेइ^० नो पज्जुवासइ । तं सेय खलु मम दोवईए देवीए विप्पिय करेत्तए
त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता पडुराय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता उप्पर्याणिं^९
विज्ज आवाहेइ, आवाहेत्ता ताए उक्किट्टाए^{१०} •तुरियाए चवलाए चडाए सिग्घाए
उद्धुयाए जइणाए छेयाए^० विज्जाहरगईए लवणसमुद्द मज्जमज्जेण पुरत्थाभि-
मुहे वीईवइउ पयत्ते यावि होत्था ।

नारदस्स अवरकका-गमण-पदं

१९१. तेण कालेण तेण समएण धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्ध-दाहिणड्डु-भरहवासे अवर-
कका नाम रायहाणी होत्था ॥

१. कच्छुल्लनारए जाव पडुस्स रण्णो भवनसि
(क) अम्य सक्षिप्तपाठस्य परम्पराया
उल्लेखो वृत्तावपि लभ्यते, यथा—इह
क्वचिद् यावत् करणादिदृश्यम् (वृ) ।

२. अइवेगेण (ख, ग, घ) ।

३. × (ग, घ) ।

४. सं० पा०—रज्जे य जाव अतेउरे ।

५. सं० पा०—आढति जाव पज्जुवासति ।

६. अस्सजय-अविरय-अप्पडिहयअपच्चखायपाव-
कम्मति (क, ग) ।

७. सं० पा०—रूवेण य जाव लावण्णेण ।

८. अट्टुद्धा (ख) ।

९. सं० पा०—आढाइ जाव नो पज्जुवासइ ।

१०. उप्पर्याणि (ख, ग) ।

११. सं० पा०—उक्किट्टाए जाव विज्जाहरगईए ।

- १६२ तत्थ ण अवरककाए रायहाणीए पउमनाभे नामं राया होत्था—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिदसारे वण्णओ' ॥
- १६३ तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सत्त देवीसयाइ ओरोहे होत्था ॥
- १६४ तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नाम पुत्ते जुवरायावि होत्था ॥
- १६५ तए ण से पउमनाभे राया अतोअतेउरसि ओरोह-सपरिवुडे सीहासणवरगए विहरइ ॥
- १६६ तए ण से कच्छुल्लनारए जेणेव अवरकका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स रण्णो भवणसि भक्ति-वेगेण समोवडए ॥
- १६७ तए ण से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टेत्ता अग्घेण^१ °पज्जेण ° आसणेण उवनिमतेइ ॥
- १६८ तए ण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ^२, °निसीइत्ता पउमनाभ राय रज्जे य रट्ठे य कोसे य कोट्टागारे य बले य वाहणे य पुरे य अतेउरे य ° कुसलोदत आपुच्छइ ।
- १६९ तए ण से पउमनाभे राया नियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लनारय एव वयासी—तुम देवाणुप्पिया ! बहूणि^३ °गामागर-नगर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-सण्णिवेसाइ आहिंडसि, बहूण य राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईण ° गिहाइ अणुपविससि, त अत्थि-याइ ते कहिचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिसए ण मम ओरोहे ?
२००. तए ण से कच्छुल्लनारए पउमनाभेण एव वुत्ते समाणे ईसि विहसिय करेइ, करेत्ता एव वयासी—सरिसे ण तुम पउमनाभा ! तस्स अगडदद्दुरस्स । के ण देवाणुप्पिया ! से अगडदद्दुरे ? °पउमनाभा ! से जहानामए अगडदद्दुरे सिया । सेण तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्ण अगड वा तलाग वा दह वा सर वा सागर वा अपासमाणे मण्णइ—अय चेव अगडे वा तलागे वा दहे वा सरे वा सागरे वा । तए ण त कूव अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए । तए ण से कूवदद्दुरे त सामुद्दय दद्दुर एव वयासी—से के तुम देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ? तए ण से सामुद्दए दद्दुरे त कूवदद्दुर एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अह सामुद्दए दद्दुरे ।

१ ओ० सू० १४ ।

२. स० पा०—अग्घेण जाव आसणेण ।

३ स० पा०—निसीयइ जाव कुसलोदत ।

४. स० पा०—बहूणि गामाणि जाव गिहाइ ।

५ सं० पा०—एव जहा मल्लिणाए ।

तए णं से कूवदद्दुरे त सामुद्दय दद्दुर एव वयासी—केमहालए ण देवाणुप्पिया !
से समुद्दे ?

तए ण से सामुद्दए दद्दुरे त कूवदद्दुर एव वयासी—महालए ण देवाणुप्पिया !
समुद्दे ।

तए ण से कूवदद्दुरे पाएण लीह कड्ढेइ, कड्ढेत्ता एव वयासी—एमहालए ण
देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे । महालए ण से समुद्दे ।

तए ण से कूवदद्दुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिट्ठित्ता ण पच्चत्थिमिल्ल
तीर गच्छइ, गच्छित्ता एव वयासी—एमहालए ण देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे । एवामेव तुम पि पउमनाभा ! अण्णेसि वहुणं राईसर जाव'
सत्थवाहप्पभिईण भज्ज वा भगिणि वा धूय वा सुण्ह वा अपासमाणे जाणसि
जारिसए मम चेव णं ओरोहे, तारिसए णो अण्णेसि° ।

एव खलु देवाणुप्पिया ! जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नयरे दुपयस्स
रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पचण्ह पंडवाण भारिया
दोवई नाम देवी रूवेण य° •जोवण्णेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा° उक्किट्ठ-
सरीरा । दोवईए ण देवीए छिन्नस्सवि पायगुट्ठस्स अय तव ओरोहे सयपि कल
न अग्घड त्ति कट्ठु पउमनाभ आपुच्छइ°, •आपुच्छित्ता जामेव दिसि पाउव्भूए
तामेव दिसि° पडिगए ॥

दोवईए साहरण-पदं

२०१. तए ण से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म
दोवईए देवीए रूवे य जोवण्णे य लावण्णे य मुच्छिए गट्ठिए गिट्ठे अजभोवण्णे
जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं° •अणुप्पविसइ,
अणुप्पविसित्ता पुव्वसगइय देव मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ॥

२०२ तए ण पउमनाभस्स रण्णो अट्ठमभत्तसि परिणममाणसि पुव्वसगइओ देवो
जाव' आगओ ।

भणतु ण देवाणुप्पिया ! ज मए कायव्वं ॥

२०३. तए ण से पउमनाभे° पुव्वसगइय देवं एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया !
जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे' •नयरे दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए
देवीए अत्तया पडुस्स सुण्हा पचण्ह पंडवाण भारिया दोवई नाम देवी रूवेण य

१. ना० १।१।६ ।

२. सं० पा०—रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा ।

३. सं० पा०—आपुच्छइ जाव पडिगए ।

४. सं० पा०—पोसहसाल जाव पुव्वसगइय ।

५. ना० १।१।५४-५७ ।

६. सं० पा०—हत्थिणाउरे जाव सरीरा ।

जोवण्णेण य लावण्णेण य उक्किट्टा उक्किट्टु °सरीरा । त इच्छामि ण देवाणु-
प्पिया । दोवइं देवि 'इह हव्वमाणीय' ॥

२०४. तए ण से पुव्वसगइए देवे पउमनाभ एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया । एव
भूय वा भव्व वा भविस्सं वा जण्ण दोवई देवी पच पडवे मोत्तूण अण्णेण
पुरिसेण सद्धि उरालाइ °माणुस्सगाइ भोगभोगां भुजमाणी ° विहरिस्सइ ।
तहावि य ण अह तव पियट्टयाए दोवइ देवि इह हव्वमाणेमि त्ति कट्टु पउम-
नाभ आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्टाए °तुरियाए चवलाए चडाए
जवणाए सिग्घाए उट्टयाए दिव्वाए ° देवगईए लवणसमुद् मज्झमज्झेण जेणेव
हत्थिणाउरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

२०५. तेण कालेण तेण समाएण हत्थिणाउरे नयरे जुहिट्टिल्ले राया दोवईए देवीए सद्धि
उप्पि आगासतलगसि सुहप्पसुत्ते यावि होत्था ॥

२०६ तए ण से पुव्वसगइए देवे जेणेव जुहिट्टिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणिं दलयइ, दलइत्ता दोवइ
देवि गिण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्टाए °तुरियाए चवलाए चडाए जवणाए
सिग्घाए उट्टयाए दिव्वाए ° देवगईए जेणेव अवरकका° जेणेव पउमनाभस्स
भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स भवणसि असोगवणियाए
दोवइं देवि ठावेइ, ठावेत्ता ओसोवणि अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमनाभे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया । मए
हत्थिणाउराओ दोवई देवी इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठइ । अओ
पर तुम जाणसि त्ति कट्टु जामेव दिंसि° पाउव्भूए तामेव दिंसि° पडिगए ॥

दोवईए चिता-पदं

२०७ तए ण सां दोवइ देवी तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवण असोगवणिय
च अपच्चभिजाणमाणी एव वयासी—नो खलु अम्ह 'एसे सए भवणे'° नो खलु
एसा अम्ह सगा असोगवणिया । त न नज्जइ ण अह केणइ देवेण वा दाणवेण
वा किण्णरेण वा किपुरिसेण वा महोरगेण वा गधव्वेण वा अण्णस्स रण्णो
असोगवणिय साहरिय त्ति कट्टु ओहयमणसकप्पा° °करतलपल्हत्थमुही अट्ट-
ज्झाणोवगया ° भियायइ ॥

१. माणीय (क, ख, ग) ।

२. स० पा०—उरालाइ जाव विहरिस्सइ ।

३. स० पा०—उक्किट्टाए जाव देवगईए ।

४. ओसोवणिय (ख) ।

५. स० पा०—उक्किट्टाए जाव देवगईए ।

६. अमरकका (ख, ग, घ) ।

७,८. दिस (क) ।

९. इमे सए पासाए (घ) ।

१०. स० पा०—ओहयमणसकप्पा जाव भियायइ ।

पउमनाभस्स आसासण-पदं

२०८. तए ण से पउमनाभे राया ण्हाए जाव^१ सव्वालकारविभूसिए अतेउर-परियाल-सपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव, दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छत्ता दोवइ देवि ओह्यमणसकप्प^२ •करतलपल्हत्थमुहि अट्टज्झाणोवगयं^३ • भियायमाणि पासइ, पासित्ता एव वयासी — किन्न तुम देवाणुप्पिए ! ओह्य-मणसकप्पा^४ •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया^५ • भियाहि^६ ? एव खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मम पुव्वसगइएण देवेण जवुद्धीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्टिलस्स रण्णो भवणाओ साहरिया । त मा ण तुम देवाणुप्पिया ! ओह्यमणसकप्पा^७ •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया^८ • भियाहि । तुम ण मए सद्धि विपुलाइ भोगभोगाइ^९ •भुजमाणी^{१०} विहराहि ॥
- २०९ तए ण सा दोवई देवी पउमनाभ एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! जवुद्धीवे दीवे भारहे वासे बारवईए नयरीए कण्हे नाम वासुदेवे मम पियभाउए परिवसइ । त जइ ण से छण्ह मासाण मम कूव नो हव्वमागच्छइ, तए ण अह^१ देवाणुप्पिया ! ज तुम वदसि, तस्स आणा-ओवाय-वयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामि ॥
- २१० तए ण से पउमनाभे दोवईए देवीए एयमट्ट पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता दोवइ देवि कण्णतेउरे^२ ठवेइ^३ ॥
- २११ तए ण सा दोवई देवी छट्ठछट्टेण अणिक्वत्तेण आयविल-परिग्गहिएण^४ तवो-कम्मेण अप्पाण भावेमाणी विहरइ ॥

दोवईए गवेसणा-पदं

- २१२ तए ण से जुहिट्टिल्ले राया तओ मुहुत्तरस्स पडिवुद्धे समाने दोवइ देवि पासे अपासमाणे सयणिज्जाओ उट्टेइ, उट्टेत्ता दोवईए देवीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेइ, करेत्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा खुइ वा पवत्ति वा अलभ-माणे जेणेव पडू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता पडु राय एव वयासी—एव खलु ताओ ! मम आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा 'किण्णरेण वा किंपुरिसेण'^१ वा महोरगेण

१. ना० १।१।४७ ।

२. स० पा०—ओह्यमणसंकप्प जाव भियाय-माणि ।

३. स० पा०—ओह्यमणसकप्पा जाव भियाहि ।

४. भियासि (क) ।

५. स० पा०—ओह्यमणसकप्पा जाव भियाहि ।

६. स० पा०—भोगभोगाइ जाव विहराहि ।

७. ह (क, ख) ।

८. कण्णतेउरसि (क) ।

९. ठवेइ (ग) ।

१०. पग्गहिएण (ग) ।

११. किंपुरिसेण वा किन्नरेण (ख, ग, घ) ।

वा गधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता वा । त इच्छामि ण ताओ !
दोवईए देवीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करित्तए^१ ॥

२१३ तए ण से पडू राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह
ण तुव्वे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-
चउम्महु-महापहपहेसु महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयह—
एव खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्टिलस्स^२ रण्णो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ
दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण^३ वा किंपुरिसेण
वा महोरगेण वा गधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता^४ वा । त जो ण
देवाणुप्पिया ! दोवईए देवीए सुइ वा खुइ वा पवत्ति वा परिकहेइ, तस्स ण
पडू राया विउल अत्थसपयाण दलयइ त्ति कट्टु घोसण घोसावेह, घोसावेत्ता
एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

२१४ तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव^५ पच्चप्पिणति ॥

२१५ तए ण मे पडू राया दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा^६ •खुइ वा पवत्ति वा^७
अलभमाणे कोत्ति देविं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणु-
प्पिए ! वारवइ नयरि कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ट निवेदेहि—कण्हे ण^८
वासुदेवे दोवईए मग्गण-गवेसण करेज्जा, अण्णहा न नज्जइ दोवईए देवीए
'सुई वा खुई वा पवत्ती वा'^९ ॥

२१६ तए ण सा कोती देवी पंडुणा एव वुत्ता समाणी जाव^{१०} पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता
ण्हाया कयवलिकम्मा हत्थिखधवरगया हत्थिणाउर^{११} नयर मज्झमज्झेण
निगच्छइ, निगच्छित्ता कुरुजणवयस्स^{१२} मज्झमज्झेण जेणेव सुरट्टाजणवए जेणेव
वारवई नयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ
पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
गच्छह ण तुव्वे देवाणुप्पिया ! वारवइ नयरि^{१३}, •जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स
गिहे तेणेव^{१४} अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्ह वासुदेव करयल^{१५} परिग्गहिय
दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु^{१६} एव वयह—एव खलु सामी ! तुव्वे

१. कय (ख, ग) ।

२. जुहिट्टिल्लस्स (घ) ।

३. किंनरेण (ग, घ) ।

४. अवक्खित्ता (क, ख, ग, घ) । २२० सूत्रा-
नुसारी पाठ स्वीकृत ।

५. ना० १।१६।२१३ ।

६. स० पा०—सुइ वा जाव अलभमाणे ।

७. ण परं (क, ग, घ) ।

८. सुइ वा खुइ वा पवत्ति वा उवलभेज्जा (क,
ख, घ) ।

९. ना० १।५।१३ ।

१०. हत्थिणउरं (घ) ।

११. कुरुजणवय (ग, घ) ।

१२. स० पा०—नयरि अणुपविसह ।

१३. स० पा०—करयल^० ।

- पिउच्छा कोती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया तुव्भं दसणं कखइ ॥
- २१७ तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव' कहेति ॥
- २१८ तए ण कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसाण अतिए एयमट्टु सोच्चा निसम्म हट्टुट्टे हत्थिखधवरगए' वारवईए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव कोती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखघाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता कोतीए देवीए पायग्गहण करेइ, करेत्ता कोतीए देवीए सद्धि हत्थिखध दुरुहइ, दुरुहिता वारवईए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सय गिह अणुप्पविसइ ॥
- २१९ तए ण से कण्हे वासुदेवे कोत्तिं देवि ण्हाय कयवलिकम्म जिमियभुत्तुत्तरागय' •वि य ण समाणि आयत चोक्ख परमसुडभूय° सुहासणवरगय एव वयासी—सदिसउ ण पिउच्छा ! किमागमणपओयण ?
२२०. तए ण सा कोती देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु पुत्ता ! हत्थिणा-उरे नयरे जुहिट्टिलस्स रण्णो आगासतलए सुहप्पसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ अवहिया' •निया° अवक्खित्ता वा । त इच्छामि ण पुत्ता ! दोवईए देवीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण कय ॥
- २२१ तए ण से कण्हे वासुदेवे कोत्तिं पिउच्छ एव वयासी—ज नवर—पिउच्छा ! दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा' •खुइ वा पवत्ति वा° लभामि, तो ण अह पायालाओ वा भवणाओ वा अद्धभरहाओ वा समतओ दोवइ देवि साहत्थि उवणेमि त्ति कट्टु कोत्तिं पिउच्छ सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
२२२. तए णं सा कोती देवी कण्हेण वासुदेवेण पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिंसि पाउवभूया तामेव दिंसि पडिगया ॥
- २२३ तए ण से कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुव्भे देवाणुप्पिया ! वारवईए' •नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्टिलस्स रण्णो आगासतलगसि

१. ना० १।१६।२१६ ।

२ °वरगए हयगय (क), °वरगए हयगय जाव (ख, घ) । पूर्णपाठ. अस्याध्ययनस्य १५७ सूत्रे द्रष्टव्य ।

३. स० पा०—जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहा-सण० ।

४. स० पा०—अवहिया वा जाव अवक्खित्ता ।

५. सं० पा०—सुइ वा जाव लभामि ।

६. स० पा०—वारवइ एव जहा पइ तहा घोसण घोसावेइ जाव पच्चप्पिणति पंडुस्स जहा ।

सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जड केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता वा । त जो ण देवाणुप्पिया । दोवईए देवीए सुइ वा खुइ वा पवत्ति वा परिकहेइ, तस्स ण कण्हे वासुदेवे विउल अत्थसपयाण दलयइ त्ति कट्टु घोसण घोसावेह, घोसावेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

२२४. तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव^१० पच्चप्पिणति ॥

२२५. तए ण से कण्हे वासुदेवे अण्णया अतोअतेउरगए ओरोह^२-•सपरिवुडे सीहासण-वरगए^३ विहरइ ॥

दोवईए उवलद्धि-पदं

२२६. इम च ण कच्छुल्लनारए जाव^१ भक्ति-वेगेण समोवडए^४ ॥

२२७. •तए ण से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टेत्ता अग्घेण पज्जेण आसणेण उवनिमतेइ ॥

२२८. तए ण कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दवभोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ^०, निसीइत्ता कण्ह वासुदेव कुसलोदत पुच्छइ ॥

२२९. तए ण से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारय एव वयासी—तुम ण देवाणुप्पिया । वहूणि गामागर^५-•नगर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-सण्णिवेसाइ आहिंडसि, वहूण य राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इठभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईण गिहाइ^० अणुपविससि, त अत्थियाइ ते कहिचि दोवईए देवीए सुई वा^६ •खुई वा पवित्ती वा^० उवलद्धा ?

२३०. तए ण से कच्छुल्लनारए कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । अण्णया धायडसडदीवे पुरत्थिमद्ध दाहिणड्डु-भरहवास अवरकका^७-रायहाणि गए । तत्थ ण मए पउमनाभस्स रण्णो भवणसि दोवई-देवी-जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था ॥

२३१. तए ण कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारय एव वयासी—तुवभ चेव ण देवाणुप्पिया ! एय पुव्वकम्म ॥

२३२. तए ण से कच्छुल्लनारए कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे उप्पयणि विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता जामेव दिंसि पाउवभूए तामेव दिंसि पडिगए ॥

१. ना० १।१६।२२३ ।

२. स० पा०—ओरोह जाव विहरइ ।

३. ना० १।१६।१८५ ।

४. स० पा०—समोवडए चाव निसीइत्ता ।

५. स० पा०—गामागर जाव अणुपविससि ।

६. सं० पा०—सुई वा जाव उवलद्धा ।

७. अवरकक (ग) ।

सपंडवस्स कण्हस्स पयाण-पदं

२३३ तए ण से कण्हे वासुदेवे दूयं सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह णं तुप देवाणुप्पिया । हत्थिणाउर नयर पडुस्स रण्णो एयमट्टं निवेएहि—एव खलु देवाणुप्पिया । घायइसडदीवे पुरत्थिमद्धे दाहिणडु-भरहवासे अवरकंकाए रायहाणीए पउमनाभभवणसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा, त गच्छतु पच पडवा चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा पुरत्थिम-वेयालीए मम पडिवाले-माणा चिट्ठतु ॥

२३४ तए ण से दूए भणइ जाव' पडिवालेमाणा चिट्ठह । तेवि जाव' चिट्ठति ॥

२३५ तए ण से कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुव्भे देवाणुप्पिया । सन्नाहिय भेरि तालेह । तेवि तालेति ॥

२३६ तए ण तीए सन्नाहियाए भेरीए सद् सोच्चा समुट्टविजयपामावखा दस दसारा जाव' छप्पन्न बलवगसाहस्सीओ सण्णद्ध-वद्ध'-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया पिणद्ध-नेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिध-पट्टा° गहियाउह-पहरणा अप्पेगइया ह्यगया अप्पेगइया गयगया जाव' पुरिसवग्गुरापेरिक्खत्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल'परिगहिय सिरसावत्त मत्थए अर्जलि कट्टु जएण विजएण° वद्धावेति ॥

कण्हस्स देवाराधण-पदं

२३७ तए ण से कण्हे वासुदेवे हत्थिखधवरगए सकोरेटमल्लदामेण छत्तेणं धरिज्ज-माणेण सेयवर'चामराहि वीइज्जमाणे ह्य-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरि-क्खत्ते° वारवईए नयरीए मज्झमज्झेण निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचहि पडवेहि सद्धि एगयओ मिलइ, मिलित्ता खधावारनिवेस करेइ, करेत्ता पोसहसाल' अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुट्ठिय देव मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ॥

२३८ तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्टमभत्तसि परिणममाणसि सुट्ठिओ जाव' आगओ । 'भणतु ण'° देवाणुप्पिया ! ज मए कायव्वं ॥

१,२. ना० १।१६।२३३ ।

३. ना० १।१६।१३२ ।

४. स० पा०—सण्णद्धवद्ध जाव गहियाउह ।

५. ओ० सू० ५२ ।

६. स० पा०—करयल जाव वद्धावेति ।

७. स० पा०—सेयवर ह्यगय महया भडचडगर-पहकरेण ।

८. पोसहसाल करेइ, करेत्ता पोसहसाल (ग,घ) ।

९. ना० १।१।५४-५७ ।

१०. भण (ख, ग, घ) ।

कणहस्स मग्गजायणा-पदं

- २३६ तए ण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय देव एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! दोवई देवी' •घायईसडदीवे पुरत्थिमद्धे दाहिणड्ढ-भरहवासे अवरककाए रायहाणीए° पउमनाभभवणसि' साहिया' तण्णं तुम देवाणुप्पिया ! मम पंचहिं पडवेहिं सद्धि अप्पच्छट्टस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियराहि, जेणाह' 'अवरकक रायहाणि'° दोवईए कूव गच्छामि ॥
- २४० तए ण से सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एवं वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगइएण देवेण दोवई देवी' •जवुद्धीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ° साहिया, तथा चेव दोवइ देविं घायईसडाओ दीवाओ भारहाओ' •वासाओ अवरककाओ रायहाणीओ पउमनाभस्स रण्णो भवणाओ° हत्थिणाउर साहरामि ? उदाहु--पउमनाभं राय सपुरवलवाहण लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?
- २४१ तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय देव एव वयासी—मा ण तुम देवाणुप्पिया' ! •जहा चेव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगइएण देवेण दोवई देवी जवुद्धीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहिया, तथा चेव दोवइ देविं घायईसडाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ अवरककाओ रायहाणीओ पउमनाभस्स रण्णो भवणाओ हत्थिणाउर° साहराहि । तुम ण देवाणुप्पिया ! मम लवणसमुद्दे पंचहिं पडवेहिं सद्धि अप्पच्छट्टस्स छण्ह रहाण मग्ग वियराहि । सयमेव ण अह दोवईए कूव गच्छामि' ॥
- २४२ तए ण से सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव होउ । पचहिं पडवेहिं सद्धि अप्पच्छट्टस्स छण्हं रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियरइ ॥

कण्हेण दूयपेसण-पदं

- २४३ तए ण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणिं सेण पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता पचहिं पडवेहिं सद्धि अप्पच्छट्टे छहिं र्हेहिं लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव अवरकका रायहाणी जेणेव अवरककाए रायहाणीए अग्गुज्जाणे

१. स० पा०—देवी जाव पउमनाभ° ।

६. स० पा०—देवी जाव साहिया ।

२. नाभस्स भवणसि (ख, ग, घ) ।

७. स० पा०—भारहाओ जाव हत्थिणाउर ।

३. साहरिया (घ) ।

८. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव साहराहि ।

४. जेण अह(ख) जाण ह (ग), जण्ण अह (घ) ।

९. गच्छिस्सामि (ख) ।

५. अवरकक° (क), अवरकका रायहाणी (ख) ।

तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता रहं ठवेड, ठवेत्ता दारुयं सारहिं सदावेड, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया । अवरककं रायहाणि अणुप्पविसाहि, अणुप्पविसित्ता पउमनाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं पायपीढ अक्कमित्ता' कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि, पणामेत्ता तिवलिय भिर्डिं निडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुढे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे एव वयाहि— हभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरतपतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउट्टसा ! सिरि-हिरि-धिड-कित्ति-परिवज्जिया ! अज्ज न भवसि । किण्ण तुमं न याणासिं कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवडं देविं इह हव्वमाणेमाणे' ? तं 'एवमवि गए' पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवडं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे निग्गच्छाहि । एस ण कण्हे वासुदेवे पंचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पच्छट्टे दोवईए देवीए कूव हव्वमागए ॥

२४४. तए ण से दारुए सारही कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे हट्टुत्तुट्टे' पडिसुणेड, पडिसुणेत्ता अवरककं रायहाणि अणुपविसड, अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता करयल'•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अर्जलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेड,° वद्धावेत्ता एव वयासी—एस ण सामी ! मम विणयपडिवत्ती, इमा अण्णा मम सामिस्स समुहाणत्ति' त्ति कट्टु आसुरुत्ते' वामपाएण पायपीढं अक्कमड', अक्कमित्ता कुंतग्गेण लेहं पणामेड, पणामेत्ता' •तिवलिय भिर्डिं निडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुढे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे एव वयासी—हभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरतपतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउट्टसा ! सिरि-हिरि-धिड-कित्ति-परिवज्जिया ! अज्ज न भवसि । किण्णं तुमं न याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवडं देविं इह हव्वमाणेमाणे ? त एवमवि गए पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवडं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे निग्गच्छाहि । एस ण कण्हे वासुदेवे पंचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पच्छट्टे दोवईए देवीए° कूव हव्वमागए ॥

पउमनाभेण द्वयस्स अवमाण-पदं

२४५. तए ण से पउमनाभे दारुएणं सारहिणा एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुढे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिर्डिं निडाले साहट्टु एवं वयासी—

१. अइक्कमित्ता (ख); अक्कमित्ता (घ) ।

२. याणासि (ख, घ) ।

३. हव्वमाणेमाणे (क, ख); हव्वमाणीते (घ) ।

४. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५. हट्टुजाव (क) ।

६. स० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

७. स्वमुखाऽज्ञप्ति. (वृ) ।

८. आसुरुत्ते ५ (क) ।

९. अवक्कमड (ख, घ) ।

१०. स० पा०—पणामेत्ता जाव कूव ।

णप्पिणामिं^१ णं अहं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं । एस णं अहं सयमेव जुज्भसज्जे निग्गच्छामि त्ति कट्ठु दाख्य सारहि एवं वयासी—केवलं भो ! रायसत्येसु द्दए अवज्भे त्ति कट्ठु असक्कारिय असम्माणिय अवदारेणं निच्छुभावेइ ॥

द्वयस्स पुणो आगमण-पदं

२४६ तए णं से दाखए सारही पउमनाभेण रण्णा असक्कारियं^२ •असम्माणिय अवदारेणं^० निच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता करयलं^३ परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु जएणं विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता^० कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु अहं सामी ! तुव्भं वयणेण अवरकक रायहाणिं गए जाव^४ अवदारेण निच्छुभावेइ ॥

पउमनाभस्स पंडवेहिं जुद्ध-पद

२४७ तए णं से पउमनाभे वलवाउय सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेह ।

तयाणतर च ण छेयायरिय-उवदेस-मइं^५-•कप्पणा-विकप्पेहिं सुणिउणेहिं उज्जलणेवत्थि-हत्थि-परिवत्थिय सुसज्ज जाव^६ आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेइ, पडिकप्पेत्ता^० उवणेति ॥

२४८. तए ण से पउमनाहे सण्णद्धं^७-•वद्ध-वम्मिय-कवए उप्पीलिय-सरासण-पट्टिए पिणद्ध-गेविज्जे आविद्ध-विमल-वरचिध-पट्टे गहियाउह-पहरणे^० 'आभिसेक्कं हत्थिरयणं', दुरुहइं, दुरुहत्ता हय-गयं^८-•रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं सपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खित्ते^० जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

२४९. तए ण से कण्हे वासुदेवे पउमनाभ रायं^९ एज्जमाण पासइ, पासित्ता ते पंच

१ अप्पिणामिं (ख, ग, घ) ।

२ स० पा०—असक्कारिय जाव निच्छूढे ।

३ स० पा०—करयलं^० ।

४ ना० १।१६।२४४-२४६ ।

५ स० पा०—मइविकप्पणाहिं जाव उवणेति ।

आदर्शेषु 'मइविकप्पणाहिं' इति पाठो लभ्यते ।

वृत्तौ 'मइविकप्पणाविकप्पेहिं' इति पाठ

उल्लिखितोस्ति, किन्तु व्याख्याया 'कल्पना-

विकल्पा' इति दृश्यते, तेन कप्पणा-विकप्पेहिं,

इति स्वीकृत पाठ समीचीन प्रतिभाति ।

६ ओ० सू० ५७ ।

७. स० पा०—सण्णद्धं^० ।

८ अभिसेय (क, ख, ग, घ) ।

९ दुरुहइ (ग) ।

१०. स० पा०—हय गयं^० ।

११. रायाण (ख, ग) ।

पडवे एव वयासी—हभो दारगा । किण्ण तुव्भे पउमनाभेणं सद्धि जुज्झिह्हिह' उदाहु' पेच्छिह्हिह' ?

२५० तए ण ते पंच पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी—अम्हे ण सामी ! जुज्झामो, तुव्भे पेच्छह ॥

२५१ तए ण ते पच पडवा सण्णद्ध'-वद्ध-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिधपट्टा गहियाउह°-पहरणा रहे दुरुहति, दुरुहत्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एव वयासी—अम्हे वा पउमनाभे वा रायत्ति कट्टु पउमनाभेण सद्धि सपलग्गा यावि होत्था ॥

घडवाणं पराजय-पदं

२५२ तए णं से पउमनाभे राया ते पच पडवे खिप्पामेव ह्य-महिय-'पवरवीर-घाइय-विवडियचिध-घय'-पडागे' •किच्छोवगयपाणे° दिसोदिंसि पडिसेहेइ ॥

२५३ तए ण ते पच पडवा पउमनाभेण रण्णा ह्य-महिय-पवर'•वीर-घाइय-विवडिय-चिध-घय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसोदिंसि° पडिसेहिया समाणा अत्थामा' •अबला अवीरिया अपुरिसक्कारपरवकमा° अघारणिज्जमिति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति ॥

कण्हेण पराजय-हेउ-कहणपुव्वं जुज्झ पदं

२५४. तए ण से कण्हे वासुदेवे ते पच-पडवे एव वयासी—कहण्ण तुव्भे देवाणुप्पिया । पउमनाभेण रण्णा सद्धि सपलग्गा ?

२५५. तए ण ते पच पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हे तुव्भेहिं अवभणुण्णाया समाणा सण्णद्ध-वद्ध-वम्मिय-कवया' रहे दुरुहामो, दुरुहत्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता एव वयामो—अम्हे वा पउमनाभे वा रायत्ति कट्टु'° •पउमनाभेण सद्धि सपलग्गा । तए ण

१. जुज्झिह्हिह (क, ख), जुज्झिह्ह (ग), जुज्झिह्हिह (घ) ।

२. उयाहु (ग, घ) ।

३. पेच्छिह्हिह (क), पिच्छिह्ह (ख), पच्छिह्हिह (घ) ।

४. स० पा०—सण्णद्ध जाव पहरणा ।

५. पवरपवडियवयचिध (क), पवरविडिय° (ख, ग, घ) । असौ लेखनपद्धतौ पाठसक्षेप-कृतोन्ति । १।८।१६५ सूत्रे असौ पूर्णं पाठ उपलभ्यते । अत्रासौ तमनुसृत्य पूर्णता नीत

वृत्तिकारेण अष्टमाध्ययने पूर्णः पाठो व्याख्यातः । अत्र च आदर्शेषु यथा पाठसक्षेपो लब्धस्तथैव व्याख्यातः ।

६ स० पा०—पडागे जाव दिसोदिंसि ।

७ स० पा०—पवरविवडिय जाव पडिसेहिया ।

८. स० पा०—अत्थामा जाव अघारणिज्ज° । अयामा° (ग, घ) ।

९ पूर्णपाठ अस्याध्ययनस्य २५१ सूत्रे द्रष्टव्यः ।

१० स० पा०—कट्टु जाव पडिसेहेइ ।

से पउमनाभे राया अम्ह खिप्पामेव ह्य-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिध-
धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसि ° पडिसेहेइ ॥

२५६ तए ण से कण्हे वासुदेवे ते पच पंडवे एव वयासी —जइ ण तुव्भे देवाणुप्पिया ।
एव वयता—‘अम्हे’ णो पउमनाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेण सद्धि सपलग्गता
तो ण तुव्भे नो पउमनाभे ह्य-महिय-पवर^१वीर-घाइय-विवडियचिध-धय-
पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसि ° पडिसेहित्था । त पेच्छह^२ ण तुव्भे
देवाणुप्पिया ! ‘अह’ णो पउमनाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेण रण्णा सद्धि
जुज्झामि [त्ति ?] रह दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता सेय’ गोखीरहार-धवल तगसोल्लिय-सिदुवार-कुदेदु-
सण्णिगास निययस्स वलस्स हरिस-जणण रिउसेण्ण-विणासणकर पचजण्ण^३
सख परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ ॥

२५७ तए ण तस्स पउमनाभस्स तेण सखसद्देण वल-तिभाए ह्य^४-महिय-पवरवीर-
घाइय-विवडियचिध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसि ° पडिसेहिए ॥

२५८ तए ण से कण्हे वासुदेवे^५

•अडरुगयवालचद-इदधणु-सण्णिगास,
वरमहिस-दरिय-दप्पिय-दढघणसिगगरइयसार,
उरगवर-पवरगवल-पवरपरहुय-भमरकुल-नीलि-निद्ध-धत-धोय-पट्ट,
निउणोविय-मिसिमिसित-मणिरयण-घटियाजालपरिक्खित्त,
तडितरुणकिरण-तवणिज्जवद्धचिध,
दहरमलयगिरिसिहर-केसरचामरवाल-अद्धचदचिध,
काल-हरिय-रत्त-पीय मुक्किल-वहुणहारुणि-सपिण्णद्धजीव,
जीवियतकर ° धणु परामुसइ, परामुसित्ता धणु पूरेइ, पूरेत्ता धणुसइ करेइ ॥

२५९ तए ण तस्स पउमनाभस्स दोच्चे वल-तिभाए तेण धणुसद्देण ह्य-महिय^६

१. सं० पा०—पवर जाव पडिसेहित्था ।

२. पेच्छतु (क) ।

३. वृत्तौ शङ्खविशेषणानि पाठान्तरत्वेन उल्लि-
खितानि सन्ति, यथा—शङ्खविशेषणानि क्व-
चिद् दृश्यन्ते—‘मेय’ ° ।

४. पचयण्ण (क, ख); पचजण्ण (ग) ।

५. सं० पा०—हए जाव पडिसेहिए ।

६. सं० पा०—व सुदेवे धणु परामुसइ वेढो ।
विस्तृत, पाठो वृत्त्यनुसारेण स्वीकृत. । मूल-

पाठे अस्य सूचना ‘वेढो’ इति पदेन प्रदत्ता-
स्ति । वृत्तिकारेणापि सूचितमिदम्, यथा—
वेष्टन एकवन्तुविषय पदपद्धति । स चेह
वन्तुविषयो जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिप्रसिद्धोऽध्येतव्यः,
तद्यथा—अडरुगय ° (वृ) । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ते-
स्तृतीये वक्षस्कारे मागधनीर्थकुमारसाधने
वृत्तिकारसूचित पाठो लभ्यते । सोपि वृत्ति-
व्याख्यातपाठसवादी एव ।

७. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिए ।

•पवरवीर-घाइय-विवडियचिध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोर्दिसि°
पडिसेहिए ॥

पउमनाभस्स पलायण-पद

२६० तए ण से पउमनाभे राया तिभागवलावसेसे अत्थामे' अवले अवीरिए अपुरि-
सक्कारपरक्कमे अघारणिज्जमिति कट्टु सिग्घ तुरिय चवल चड जइण वेइयं
जेणेव अवरकका' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अवरकक रायहाणिं अणु-
पविसइ, अणुपविसित्ता बाराइ' पिहेइ, पिहेत्ता रोहासज्जे चिट्ठइ ॥

कण्हस्स नरसिंहरूव-पदं

२६१. तए ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव अवरकका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रह
ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरूहइ, पच्चोरूहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ'
एग मह नरसीह-रूव विउव्वइ, विउव्वित्ता महया-महया सट्ठेणं पायदट्ठरिय
करेइ ॥

२६२. तए ण कण्हेण वासुदेवेण महया-महया सट्ठेण पायदट्ठरणं कएण समाणेण
अवरकका रायहाणी सभग्ग-पागार'-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-
पवरभवन-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले सण्णिवइया ॥

पउमनाभस्स सरण-पदं

२६३ तए ण से पउमनाभे राया अवरकक रायहाणिं सभग्ग'-•पागार-गोउराट्टालय-
चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवन-सिरिघर सरसरस्स धरणियले सण्णिवइय°
पासित्ता भीए दोवइ देविं सरणं उवेइ ॥

२६४. तए ण सा दोवई देवी पउमनाभं राय एव वयासी—किण्ण तुम देवाणुप्पिया ।
न' जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पिय करेमाणे ? 'मम इह
हव्वमाणेमाणे' त 'एवमवि गए' गच्छ'° णं तुम देवाणुप्पिया । ण्हाए उल्लपड-
साडए ओचूलगवत्थनियत्थे अंतेउर-परियालसपरिवुडे' अग्गाइ वराइ रयणाइं
गहाय मम पुरओकाउं कण्ह वासुदेव करयल'°परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त
मत्थए अजलि कट्टु° पायवडिए सरण उवेहि । पणिवइय-वच्छला ण देवाणु-
प्पिया । उत्तमपुरिसा ॥

१. अत्थामे (ग, घ) ।

२. अवरकका (क) ।

३. दाराड (ख) ।

४. समोहणइ (क, ख, घ) ।

५. पागार (क, घ); पागार (ख) ।

६. स० पा०—सभग्ग जाव पासित्ता ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. × (ख, ग, घ) ।

९. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१०. गच्छह (ग, घ) ।

११. परियाल° (क) ।

१२. स० पा०—करयल° ।

२६५ तए ण से पउमनाभे दोवईए देवीए 'एव वुत्ते समाणे' ण्हाए^१ •उल्लपडसाडए ओचूलगवत्थनियत्थे अतेउर-परियालसपरिवुडे अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय दोवइ देविं पुरओकाउ कण्ह वासुदेव करयलपरिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु पायवडिए सरण उवेइ, उवेत्ता^२ एव वयासी—दिट्ठा णं देवाणुप्पियाण इड्डी^३ •जुई जसो बल वीरिय पुरिसक्कार^४—परक्कमे । त खामेमि णं देवाणुप्पिया । खमतु ण देवाणुप्पिया ।^५ •खतुमरहति ण देवाणु-प्पिया । ° नाइ^६ भुज्जो एवकरणयाए त्ति कट्टु पजलिउडे पायवडिए कण्हस्स वामुदेवस्स दोवइ देविं साहत्थि उवणेइ ॥

सदोवई-पंडवस्स कण्हस्स पच्चावट्टण-पदं

२६६ तए ण से कण्हे वासुदेवे पउमनाभ एव वयासी—हभो पउमनाभा । अपत्थिय-पत्थिया । दुरतपतलक्खणा । हीणपुण्णचाउट्टसा । सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जया । किण्ण तुम न^१ जाणसि मम भगिणिं दोवइ देविं इह हव्वमाणे-माणे^२ ? त 'एवमवि गए'^३ नत्थि ? ते ममाहितो डयाणि भयमत्थि^४ ? त्ति कट्टु पउमनाभ पडिविसज्जेइ, दोवइ देविं गेण्हइ, गेण्हित्ता रह दुरुहेइ, दुरुहित्ता जेणेव पच्च पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच्चण्ह पडवाण दोवइ देविं साहत्थि उवणेइ ॥

२६७ तए ण से कण्हे वासुदेवे पच्चिं पडवेहिं सद्धि अप्पच्छट्टे छहिं रहेहिं लवणसमुद्ध मज्झमज्झेण जेणेव जवुट्टीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

वासुदेव-जुयलस्स संखसट्टेण मिलण-पद

२६८ तेण कालेण तेण समएण धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्धे भारहे वासे चपा नाम नयरी होत्था । पुण्णभट्टे चेइए ॥

२६९ तत्थ ण चपाए नयरीए कविले नाम वासुदेवे राया होत्था—महताहिमवत्त-महत-मलय-मदर-महिंदसारे वण्णओ^{१०} ॥

२७०. तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए अरहा^{११} चपाए पुण्णभट्टे समोसडे । कविले वासुदेवे धम्म सुणेइ ॥

१. एयमट्ट पडिसुणेइ २ (ख, ग, घ) ।

६ × (ग, घ) ।

२. स० पा०—ण्हाए जाव सरण उवेइ २ करयल एव व ।

७. हव्वमाणे (ख, ग, घ) ।

८. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

३. स० पा०—इड्डी जाव परक्कमे ।

९. अभयमत्थि (घ) ।

४. स० पा०—देवाणुप्पिया जाव नाइ ।

१०. ओ० सू० १४ ।

५. नाह (क, ख, ग, घ) । एतत् पद १।५।१२३

११. अरिहा (क) ।

सूत्रस्याधारेण स्वीकृतम् ।

- २७१ तए ण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतिए धम्म सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसद्द सुणेइ ॥
- २७२ तए ण तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—किमण्णे धायइसडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे, जस्स ण अय सखसद्दे मम पिव मुहवायपूरिए वियभइ^१ ? कविला वासुदेवा भद्दाइ^२ ! मुणिसुव्वए अरहा कविल वासुदेव एवं वयासी—से नूण कविला वासुदेवा ! मम अतिए धम्म निसामेमाणस्स (ते ?) सखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्भत्थिए^३ चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—किमण्णे धायइसडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे, जस्स ण अय सखसद्दे मम पिव मुहवायपूरिए^४ वियभइ ? से नूण कविला वासुदेवा ! अट्ठे समट्ठे ?
- हता ! अत्थि । त नो खलु कविला ! एव भूय वा भव्व वा भविस्स वा जण्ण एगखेत्ते एगजुगे एगसमए ण दुवे अरहता वा चक्कवट्ठी वा वलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा ।
- एव खलु वासुदेवा ! जबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ पडुस्स रण्णो सुण्हा पचण्ह पंडवाणं भारिया दोवई देवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगइएण देवेण अवरकक नयरिं साहरिया । तए ण से कण्हे वासुदेवे पचहि पडवेहिं सद्धिं अप्पच्छट्ठे छहिं रहेहिं अवरककं रायहारिणं दोवईए देवीए कूव हव्वमागए । तए ण तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमनाभेण रण्णा सद्धिं सगाम सगामेमाणस्स अय सखसद्दे तव 'मुहवायपूरिए इव'^५ वियभइ ॥
- २७३ तए ण से कविले वासुदेवे मुणिमुव्वय अरह वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—गच्छामि ण अह भते ! कण्ह वासुदेव उत्तमपुरिस सरिसपुरिस^६ पासामि ॥
- २७४ तए ण मुणिसुव्वए अरहा कविल वासुदेवं एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा भव्वं वा भविस्स वा जण्ण अरहता वा अरहत पासति, चक्कवट्ठी वा चक्कवट्ठी पासति, वलदेवा वा वलदेव पासति, वासुदेवा वा वासुदेवं

१. वियभेइ (क) ।

२. सद्दाति (ख), सद्दाइ सुणेइ (घ) ।

३. अकिण्णित्ता (ख) ।

४. स० पा०—अज्भत्थिए किमण्णे जाव वियभइ ।

५. मुहवायाउट्ठे इव (क), मुहवायउट्ठे एवं

(ख), मुहवायउट्ठे कते इहेव (ग), मुहवाया

इव (घ), अस्मिन्नेव सूत्रे कपिलवासुदेव-

चित्तनसमये 'मम पिव मुहवायपूरिए' इति

पाठोस्ति । तस्याधारेणैवासी पाठ स्वीकृतः ।

६ × (क) ।

पासति । तहवि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ^१ पासिहिसि ॥

२७५. तए ण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता हत्थिखध दुरुहइ, दुरुहित्ता 'सिग्घ तुरिय चवल चड जइण वेइय'^२ जेणेव वेलाउले^३ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयमाणस्स सेयार्प याइ धयग्गाइ पासइ, पासित्ता एव वयइ — एस ण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीईवयइ त्ति कट्टु पचयण्ण सख परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ ॥
- २७६ तए ण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वामुदेवस्स सखसद्द 'आयण्णेइ, आयण्णेत्ता'^४ पचयण्ण^५ •संख परामुसइ, परामुसित्ता मुहवाय^६ पूरिय करेइ ॥
- २७७ तए ण दोवि वासुदेवा सखसद्द-सामायारि^७ करेति ॥

कविलेण पउमनाभरस निव्वासण-पद

- २७८ तए ण से कविले वासुदेवे जेणेव अवरकका रायहाणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अवरकक रायहाणि सभग्ग'-•पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघर सरसरस्स धरणियले सण्णिवइया^८ ° पासइ, पासित्ता पउमनाभ एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया । एसा अवरकका रायहाणी सभग्ग'-•पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले ° सण्णिवइया ?
- २७९ तए ण से पउमनाभे कविल वासुदेव एव वयासी—एव खलु सामी ! जबुद्धी-वाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुब्भे परिभूय अवरकका^९ •रायहाणी सभग्ग-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-पवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले ° सण्णिवाडिया^{१०} ॥
- २८० तए ण से कविले वासुदेवे पउमनाभस्स अत्तिए एयमट्ट सोच्चा पउमनाभ एव वयाणी—हभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरतपतलक्खणा ! हीण-पुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! किण्ण तुम न^{११} जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमाणे ?—आसुरुत्ते^{१२} •रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिय भिउडिडि निलाडे साहट्टु^{१३} °

१ घयाइ (घ) ।

२ सिग्घ (क, घ) ।

३ वेलाकूले (क्व) ।

४ आकण्णेइ २ (क) ।

५. स० पा०—पचयण्ण जाव पूरिय ।

६ समायारि (ख, ग) ।

७ स० पा०—सभग्ग तोरण जाव पासइ ।

८. स० पा०—सभग्ग जाव सण्णिवइया ।

९ स० पा०—अवरकका जाव सण्णिवाडिया ।

१० सण्णिवाडिया (घ) ।

११. × (क, ग, घ) ।

१२. स० पा०—आसुरुत्ते जाव पउमनाभ ।

पउमनाभ निव्विसय आणवेइ, पउमनाभस्स पुत्त अवरककाए रायहाणीए महया-महया रायाभिसेएण अभिसिचड', *अभिसिचित्ता जामेव दिसि पाउव्भूए तामेव दिसि ° पडिगए ॥

अपरिक्खणीयपरिक्खा-पद

- २८१ तए ण से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झमज्झेण 'वीईवयमाणे-वीईवयमाणे गग उवागए'^१ [उवागम्म ?] ते पच पडवे एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । गग महानइ उत्तरह जाव ताव अह सुट्ठिय लवणाहिवइ पासामि ॥
- २८२ तए ण ते पच पडवा कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए^२ मग्गण-गवेसण करेति, करेत्ता एगट्ठियाए गग महानइ उत्तरति, उत्तरित्ता अण्णमण्णं एव वयति—पहू ण देवाणुप्पिया । कण्हे वासुदेवे गग महानइ वाहाहि उत्तरित्ते, उदाहू नो पहू उत्तरित्ते ? त्ति कट्ठु एगट्ठिय^३ 'णूमेति, णूमेत्ता' कण्ह वासुदेव पडिवाले-माणा-पडिवालेमाणा चिट्ठति ॥
- २८३ तए ण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय लवणाहिवइ पासइ, पासित्ता जेणेव गगा महानई तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेइ, करेत्ता एगट्ठिय अपासमाणे एगाए वाहाए रह सतुरां ससारह गेण्हइ, एगाए वाहाए गग महानइ वासट्ठि जोयणाइ अद्धजोयण च वित्थिण्ण उत्तरिउं पयत्ते यावि होत्था ॥
२८४. तए ण से कण्हे वासुदेवे गगाए महानईए बहुमज्झदेसभाए सपत्ते समाणे सते तते परितते वद्धसेए जाए यावि होत्था ॥
- २८५ तए ण तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए^४ *चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे ° समुप्पज्जित्था—अहो ण पच पडवा महावलवगा जेहि गगा महानई वासट्ठि^५ जोयणाइ अद्धजोयण च वित्थिण्णा वाहाहि उत्तिण्णा ।

१ स० पा०—अभिसिचड जाव पडिगए ।

२. वीईवयइ २ (क, ख, ग), वीईवयइ गग ° (घ) ।

३. एगट्ठियाए नावाए (क, ख, ग, घ) । वृत्तौ 'एगट्ठियति नौ' इति व्याख्यानमस्ति । अस्यानुसारेण 'एगट्ठिया' पद नौ वाचकमस्ति । प्रतिपु 'नावाए' इति पदस्यापि उल्लेखो

लभ्यते । स च बहुषु स्थानेषु सारल्यार्थं परिवर्तितपदवद् विद्यते ।

४ एगट्ठियाओ (ग) ।

५. ण मुयंति (क), ण मुचति (ख), मुस्संति २ (घ) ।

६. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

७. वावट्ठि (क, ग) ।

इच्छतएहिं ण पचहिं पडवेहिं पउमनाभे ह्य-महियं-पवरवीर-घाइय-विवडिय-चिध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं ° नो पडिसेहिए ॥

२८६. तए ण गगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इम एयारूव अज्भत्थियं ° चित्थिय पत्थिय मणोगय सकप्प ° जाणित्ता थाह वियरइ ॥

२८७ तए ण से कण्हे वासुदेवे मुहुत्ततर समासासेइ, समासासेत्ता गग महानदि वासट्ठिं ° जोयणाइ अद्धजोयण च वित्थिण्ण वाहाए ° उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी—अहो ण तुब्भे देवाणु-प्पिया ! महावलवगा, जेहिं ण तुब्भेहिं गगा महानई वासट्ठिं ° जोयणाइ अद्ध-जोयण च वित्थिण्णा वाहाहिं ° उत्तिण्णा । इच्छंतएहिं ण तुब्भेहिं पउमनाहे ° ह्य-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसो-दिसिं ° नो पडिसेहिए ॥

२८८ तए ण ते पच पडवा कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा कण्ह वासुदेव एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गगा महानई तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गण-गवेसण करेमो, ° करेत्ता एगट्ठियाए गग महानइ उत्तरेमो, उत्तरेत्ता अण्णमण्ण एव वयामो—पहू ण देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गग महानइ वाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहु नो पहू उत्तरित्तए ? त्ति कट्ठु एगट्ठिय ° णूमेमो, तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो ॥

कण्हेण पंडवाणं निव्वासण-पदं

२८९ तए ण से कण्हे वासुदेवे तेसिं पचपडवाण एयमट्ठु सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते ° रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिय भिउडिं निडाले साहट्ठु ° एव वयासी—अहो ण जया मए लवणसमुद्दुवे जोयणसयसहस्सवित्थिण्ण वीईवइत्ता पउमनाभ ह्य-महियं-पवरवीर-घाइय-विवडियचिध-धय-पडाग किच्छोवगय-पाण दिसोदिसिं ° पडिसेहित्ता अवरकका सभग्गा, दोवई साहत्थि उवणीया, तया ण तुब्भेहिं मम माहप्प न विण्णायं, इयाणि जाणिस्सह त्ति कट्ठु लोहदड परामुसइ, पचण्ह पडवाण रहे सुसूरेइ°, सुसूरेत्ता [पच पडवे ?] निव्विसए आणवेइ । तत्थ ण रहमट्ठणे नाम कोट्ठे निविट्ठे ॥

१. इत्यतएहिं (ख, घ), एत्यतएहिं (ग) ।

२. सं० पा०—ह्यमहिय जाव नो पडिसेहिए ।

३. सं० पा०—अज्भत्थिय जाव जाणित्ता ।

४. सं० पा०—वासट्ठिं जाव उत्तरइ ।

५. सं० पा०—वासट्ठिं जाव उत्तिण्णा ।

६. सं० पा०—पउमनाहे जाव नो पडिसेहिए ।

७. सं० पा०—करेमो तं चेव जाव णूमेमो ।

८. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव तिवलिय एव ।

९. सं० पा०—ह्यमहिय जाव पडिनेहित्ता ।

१०. सुमुचूरेइ (ख), सुसुसूरेइ (ग) चूरेइ (घ) ।

- २६० तए ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खधावारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएण खधावारेण सँद्धि अभिसमण्णागए यावि होत्था ।
२६१. तए ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव वारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता [सय भवण ?]' अणुप्पविसइ ।।
- २६२ तए ण ते पच पडवा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जेणेव पडू राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल' •परिग्गहियं दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एवं खलु ताओ ! अम्हे कण्हेण निव्विसया आणत्ता ।।
- २६३ तए ण पडू राया ते पच पडवे एव वयासी—कहण्ण पुत्ता ! तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेण निव्विसया आणत्ता ?
- २६४ तए णं ते पच पडवा पडु राय एव वयासी—एव खलु ताओ ! अम्हे अवरककाओ पडिनियत्ता लवणसमुद्द दोण्णि जोयणसयसहस्साइ वीईवइत्था । तए ण से कण्हे वासुदेवे अम्हे एव वयइ—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! गग महानई उत्तरह जाव ताव अह सुट्ठिय लवणाहिवइ पासामि, एव तहेव जाव' चिट्ठामो ।।
- २६५ तए ण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय लवणाहिवइ दट्ठूण जेणेव गगा महानई तेणेव उवागच्छइ, तं चेव सव्व नवर कण्हस्स चित्ता न बुज्झइ' जाव' निव्विसए आणवेइ ।।
२६६. तए ण से पडू राया ते पच पडवे एव वयासी—दुट्ठु ण' पुत्ता ! कय कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमाणेहि ।।
- २६७ तए ण से पडू राया कोत्ति देवि सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिए ! वारवइ नयरि कण्हस्स वासुदेवस्स एव' निवेएहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुमे पच पडवा निव्विसया आणत्ता । तुम च ण देवाणुप्पिया ! दाहिणड्ढभरहस्स सामी । त सदिसतु ण देवाणुप्पिया । ते पच पडवा कयर देस वा दिस वा 'विदिस वा'° गच्छतु ?
- २६८ तए ण सा कोती पडुणा एव वुत्ता समाणी हत्थिखघ दुरुहइ, जहा हेट्ठा जाव' सदिसतु ण पिउच्छा ! किमागमणपओयण ?
- २६९ तए ण सा कोती देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु तुमे पुत्ता ! पचपडवा निव्विसया आणत्ता । तुम च ण दाहिणड्ढभरहस्स'° •सामी । तं

१. द्रष्टव्यम्—अस्यैवाध्ययनस्य १६६ सूत्रम् ।

२. स० पा०—करयल जाव एव ।

३. ना० १।१६।२८२ ।

४. वुच्चइ (घ) ।

५. ना० १।१६।२८३, २८४, २८६-२९० ।

६. ण तुमं (ख) ।

७. × (क, ग, घ) ।

८. × (क, ख, ग) ।

९. ना० १।१६।२१६-२१९ ।

१०. स० पा०—दाहिणड्ढभरहस्स जाव दिसं ।

सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! ते पच पडवा कयर देस वा ° दिस वा विदिसिं वा गच्छंतु ?

- ३०० तए ण से कण्हे वासुदेवे कोत्ति देवि एव वयासी—अपूइवयणा^१ ण पिउच्छा । उत्तमपुरिसा—वासुदेवा वलदेवा चक्कवट्टी । त गच्छतु ण पच पडवा दाहिणिल्ल वेयालिं तत्थ पडुमहुर निवेसतु, मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्ति कट्ठु कोत्ति देवि सक्कारेइ सम्माणेइ^२, •सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता ° पडिविसज्जेइ ॥
३०१. तए ण सा कोती देवी^३ •जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ° पंडुस्स एयमट्ठ निवेएइ ॥
३०२. तए णं पडू राया पच पडवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुब्भे पुत्ता । दाहिणिल्ल वेयालिं । तत्थ ण तुब्भे पडुमहुर निवेसेह ॥

पडुमहुरा-निवेसण-पद

- ३०३ तए ण ते पच पडवा पडुस्स रण्णो^४ •एयमट्ठ ° तहत्ति पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता सबलवाहणा हय-गय^५-•रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ता ° हत्थिणाउराओ पडिनिक्खमत्ति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरि^६ निवेसति । तत्थवि^७ ण ते विपुलभोग-समित्ति-समण्णागया यावि होत्था ॥

पंडुसेण-जम्म-पदं

- ३०४ तए ण सा दोवई देवी अण्णया कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि^८ होत्था ॥
- ३०५ तए ण सा दोवई देवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण जाव^९ सुरूव दारग पयाया—सूमाल^{१०} •कोमलय गयतालुयसमाण ॥
- ३०६ तए ण तस्स ण दारगस्स निव्वत्तवारसाहस्स अम्मापियरो इम एयारूव गोण्णं गुणनिप्फण्ण नामधेज्ज करेत्ति ° जम्हा ण अम्ह एस दारए पचण्ह पडवाण पुत्ते दोवईए देवीए अत्तए, त होउ ण इमस्स दारगस्स नामधेज्ज 'पडुसेणे-पडुसेणे'^{११} ॥

१ अपूइवयणा (ख, ग) ।

२ स० पा०—सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ ।

३. स० पा०—देवी जाव पडुस्स ।

४ स० पा०—रण्णो जाव तहत्ति ।

५ स० पा०—हयगय जाव हत्थिणाउराओ ।

६ नगर (ख) ।

७. तत्थ (ग, घ) ।

८ वि (ख, घ) ।

९ ओ० सू० १४३ ।

१०. स० पा०—सूमाल निव्वत्तवारसाहस्स इम एयारूव । सर्वास्वपि प्रतिपु एतावानेव पाठो विद्यते, किन्तु १।१६।३३,३४ सूत्रानुसारेण अस्य पूति कृता ।

११. पडुसेणे (ग) ।

- ३०७ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामघेज्जं करेति' पडुसेणत्ति ॥
 ३०८ °तए ण त पंडुसेण दारय अम्मापियरो साइरेगट्टुवासजायग चैव सोहणसि
 तिहि-करण-मुहुत्तसि कलायरियस्स उवणेति ॥
 ३०९ तए ण से कलायरिए पडुसेण कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सडणरुय-
 पज्जवसाणाओ वावत्तरि कलाओ सुत्तओ य अत्यओ य करणओ य सेहावेइ
 सिक्खावेइ° जाव° अलभोगसमत्ये जाए । जुवराया जाव° विहरइ ॥

पंडवाणं दोवईए य पव्वज्जा-पदं

- ३१० थेरा समोसढा । परिसा निग्गया । पडवा निग्गया । धम्मं सोच्चा एवं
 वयासी—जं नवर—देवाणुप्पिया ! दोवइ देवि आपुच्छामो । पंडुसेण च कुमारं
 रज्जे ठावेमो । तओ पच्छा देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता° ण अगाराओ
 अणगारिय° पव्वयामो° ।
 अहासुह देवाणुप्पिया !
 ३११. तए ण ते पच पडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दोवइ
 देवि सदावेति, सदावेत्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हेहि थेराण
 अतिए धम्मे निसते जाव° पव्वयामो । तुम णं देवाणुप्पिए ! कि करेसि ?
 ३१२. तए ण सा दोवई ते पच पडवे एवं वयासी—जइ ण तुम्हे देवाणुप्पिया !
 ससार-भउव्विग्गा जाव° पव्वयह, मम के अण्णे आलवे वा° आहारे वा
 पडिवघे वा° भविस्सइ ? अह पि य ण ससारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहि सद्धि
 पव्वइस्सामि ॥
 ३१३. तए ण ते पच पंडवा° °कोडुवियपुरिमे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—
 खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! पडुसेणस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं
 विउल रायाभिसेहं उवट्टवेह° । पडुसेणस्स अभिसेओ जाव° राया जाए
 जाव° रज्ज पसाहेमाणे विहरइ ॥
 ३१४. तए णं ते पच पडवा दोवई य देवी अण्णया कयाइ पंडुसेण रायाणं आपुच्छंति ॥
 ३१५. तए ण से पडुसेणे राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—

१. कय (क); X (ख, ग) ।

७. ना० १।५।८६ ।

२. स० पा०—वावत्तरि कलाओ जाव अलभोग-
 समत्ये ।

८. ना० १।५।९० ।

९. स० पा०—आलवे वा जाव भविस्सइ ।

३. ना० १।१।८५-८८ ।

१०. स० पा०—पडवा° ।

४. राय० सू० ६७४ ।

११. ना० १।१।११७-११९ ।

५. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामो ।

१२. ओ० सू० १४ ।

६. पव्वामो (क, ग) ।

खिप्पामेव भो । देवाणुप्पिया । निक्खमणाभिसेय करेह जाव' पुरिससहस्स-
वाहिणीओ सिवियाओ उवट्टवेह जाव' सिवियाओ पच्चोरुहति', जेणेव थेरा'
•भगवतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेर भगवत तिक्खुत्तो आयाहिण-
पयाहिण करेति, करेत्ता वदति नमंसंति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी°—
आलित्ते ण भते । लोए जाव' समणा जाया, चोद्दस्स पुव्वाइ अहिज्जति,
अहिज्जित्ता वहूणि वासाणि छट्ठम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि
अप्पाण भावेमाणा विहरति ॥

३१६ तए णं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ जाव' पव्वइया । सुव्वयाए अज्जाए
सिस्सिणियत्ताए दलयति,^१ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, वहूणि वासाणि छट्ठम-
दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि अप्पाण भावेमाणी विहरइ ॥

३१७ तए ण ते थेरा भगवतो अण्णया कयाइ पडुमहुराओ नयरीओ सहस्सववणाओ'
उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरति ॥

अरिट्ठनेमिस्स निव्वाण-पदं

३१८ तेण कालेण तेण समएण अरहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्टाजणवए तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्टाजणवयसि सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे
विहरइ ॥

३१९ तए ण बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एव खलु
देवाणुप्पिया । अरहा अरिट्ठनेमी सुरट्टाजणवए' •सजमेण तवसा अप्पाण
भावेमाणे° विहरइ ॥

३२० तए ण ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा
अण्णमण्ण सदावेति, सदावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । अरहा
अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुंवि चरमाणे गामाणुगाम द्दइज्जमाणे'^२•सुहसुहेण विहरमाणे
सुरट्टाजणवए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ । त सेय खलु अम्ह
[थेरे भगवते ?] आपुच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमि वदणाए गमित्तए, अण्णमण्णस्स
एयमट्ट पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता थेरे भगवन्ते वदति नमंसंति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

१. ना० १।१।१२१-१२६ ।

२. ना० १।१।१३०-१४४ ।

३. द्रष्टव्यम्—ना० १।१।१४५-१४८ सूत्रम् ।

४. स० पा०—थेरा जाव आलित्ते ।

५. ना० १।१।१४६ ।

६. ना० १।१६।३१५ ।

७. दलयइ (क, ख, ग, घ) ।

८. सहसव° (ख, ग) ।

९. स० पा०—सुरट्टाजणवए जाव विहरइ ।

१०. स० पा०—द्दइज्जमाणे जाव विहरइ ।

इच्छामो ण तुव्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं' •वदणाए°
गमित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया !

३२१ तए ण ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पच अणगारा थेरेहिं अब्भणुण्णाया समाणा थेरे
भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता थेराण अतियाओ पडिनिक्खमति,
पडिनिक्खमित्ता मासमासेण अणिक्खत्तेण तवोकम्मेण गामाणुगाम दूइज्ज-
माणा° •सुहसुहेण विहरमाणा° जेणेव हत्थकप्पे° नयरे तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता हत्थकप्पस्स वहिया सहस्सववणे उज्जाणे° •सजमेण तवसा
अप्पाण भावेमाणा° विहरति ॥

३२२. तए ण ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासक्खमणपारणए पढमाए पोरि-
सीए सज्झाय करेति, वीयाए भाण भायति एव जहा गोयमसामी°, नवर—
जुहिट्ठिल आपुच्छति जाव° अडमाणा बहुजणसद्द निसामेंति —एव खलु देवाणु-
प्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जतसेलसिहरे मासिएण भत्तेण अपाणएण
पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सिद्धिं कालगए° •सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे
परिनिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

षंडवाणं निव्वाण-पदं

३२३ तए ण ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा
निसम्म हत्थकप्पाओ नयराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहस्सव-
वणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिले अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता
भत्तपाणं पच्चुवेक्खति°, पच्चुवेक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति, पडिक्क-
मित्ता एसणमणेसण आलोएति, आलोएत्ता भत्तपाण पडिदंसेति, पडिदसेत्ता
एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया° । •अरहा अरिट्ठनेमी उज्जतसेलसिहरे
मासिएण भत्तेण अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सिद्धिं° कालगए । त
सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया । इम पुव्वगहिय भत्तपाण परिट्ठवेत्ता सेत्तुज्ज
पव्वय सणिय-सणियं दुरुहित्तए, सलेहणा-भूसणा-भोसियाण काल अणवेक्ख-
माणान° विहरित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता त
पुव्वगहिय भत्तपाण एगंते परिट्ठवेति, परिट्ठवेत्ता जेणेव सेत्तुज्जे° पव्वए तेणेव

१. स० पा०—अरिट्ठनेमि जाव गमित्तए ।

२. स० पा०—दूइज्जमाणा जाव जेणेव ।

३. हत्थीकप्पे (क) ।

४. स० पा०—उज्जाणे जाव विहरति ।

५. भ० २।१०७ ।

६. भ० २।१०८, १०९ ।

७. स० पा०—कालगए जाव प्पहीणे ।

८. पच्चुवेक्खडति (ख); पच्चक्खति (घ) ।

९. स० पा०—देवाणुप्पिया जाव कालगए ।

१०. अणवकंखमाणान (घ) ।

११. सेत्तु जे (क्व) ।

उवागच्छति, उवागच्छिता सेत्तुज्ज पव्वय सणिय-सणिय दुरुहति', •दुरुहिता सेलेहणा-भूसणा-भोसिया ° काल अणवकखमाणा विहरति ॥

३२४. तए ण ते जुहिट्टिलपामोक्खा पच अणगारा सामाइयमाइयाइ चोइसपुव्वाइ अहिज्जिता, वहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता, दोमासियाए सलेहणाए अत्ताण भोसेत्ता जस्सट्टाए कीरइ नग्गभावे जाव' तमट्टुमारहेति, आराहेत्ता अणत' •केवलवरनाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धा बुद्धा मुत्ता अंतगडा परिनिव्वुडा सव्वदुक्खप्पहीणा ° ॥

दोवईए देवत्त-पद

३२५. तए ण सा दोवई अज्जा सुव्वयाण अज्जियाण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जिता' वहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए [अत्ताण भोसेत्ता ?] आलोइय-पडिक्कता कालमासे काल किच्चा वभलोए उववण्णा । तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण दस सागरोवमाइ ठिई पणत्ता । तत्थ ण दुवयस्स वि देवस्स दससागरोवमाइ ठिई ॥

३२६. से ण भते ! दुवए देवे ताओ' •देवलोगाओ आउक्खएण ठिइक्खएण भवक्खएण अणतरं चय चइत्ता जाव' महाविदेहे वासे सिज्झिह्मिइ बुज्झिह्मिइ मुच्चिह्मिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण ° मत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३२७ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण जाव' सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं सपत्तेण सोलसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्टे पणत्ते ।
—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

सुवहू वि तव-किलेसो, नियाण-दोसेण दूसिओ सतो ।
न सिवाय दोवईए, जह किल सूमालिया-जम्मे ॥१॥

अथवा—

अमणुण्णमभत्तीए, पत्ते दाण भवे अणत्थाय ।
जह कडुय-तुव-दाण, नागसिरि-भवम्मि दोवईए ॥२॥

१. स० पा०—दुरुहति जाव काल ।

२. ओ० सू० १५४ ।

३. स० पा०—अणत्ते णाणे समुप्पण्णे जाव सिद्धा ।

४ अहिज्जइ २ (क, ख, ग, घ) ।

५. स० पा०—ताओ जाव विदेहे वासे जाव अत

६. ना० १।१।२१२ ।

७ ना० १।१।७ ।

सत्तरसमं अज्भयणं

आइण्णे

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण सोलसमस्स नायज्भ-
यणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तरसमस्स ण भते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एव खलु जवू । तेणं कालेण तेण समएण हत्थिसीसे नाम नयरे होत्था—
वण्णओ' ॥
३. तत्थ ण कणगकेऊ नाम राया होत्था—वण्णओ' ॥
- ४ तत्थ ण हत्थिसीसे नयरे बहवे सजत्ता'-नावावाणियगा परिवसत्ति—अड्ढा
जाव' बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था ॥

कालियदीव-जत्ता-पदं

- ५ तए ण तेसिं 'सजत्ता-नावावाणियगाण'^६ अण्णया कयाइ एगयओ' •सहियाण
इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—सेय खलु अम्ह गणिम च धरिमं
च मेज्ज च परिच्छेज्ज च भडगं गहाय लवणसमुद्द पोयवहणेण ओगाहेत्तए
त्ति कट्ठु^७ जहा अरहन्ने जाव' लवणसमुद्द अणेगाइ जोयणसयाइ ओगाढा
यावि होत्था ॥
६. तए णं तेसिं' •सजत्ता-नावावाणियगाण लवणसमुद्द अणेगाइं जोयणसयाइं

१ ना० १।१।७ ।

२. ओ० सू० १ ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. सजुत्ता (ग) ।

५. ना० १।५।७ ।

६ सजुत्ता वाणियगाण (ख, ग) ।

७ स० पा०—एगयओ जहा अरहन्ने जाव
लवणसमुद्द ।

८. ना० १।८।६६-७० ।

९. स० पा०—तेसिं जाव वृहणि ।

- ओगाढाण समाणाण ° वहूणि उप्पाइयसयाइं ° पाउट्भूयाइ, तं जहा —अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे ° कालियवाए य^१ समुत्थिए ॥
- ७ तए ण सा नावा तेण कालियवाएण आहुणिज्जमाणी^२-आहुणिज्जमाणी सचालिज्जमाणी-सचालिज्जमाणी सखोहिज्जमाणी-सखोहिज्जमाणी^३ तत्थेव परिभमइ ॥
- ८ तए ण से निज्जामए नट्टमईए नट्टसुईए नट्टसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था—न जाणइ कयर देस वा दिस वा 'विदिस वा'^४ पोयवहणे 'अवहिए त्ति'^५ कट्टु ओह्यमणसकप्पे^६ ° करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्भाणोवगए ° भियायइ ॥
- ९ तए ण ते वहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गव्भेल्लगा य सजत्ता-नावावाणियगा य जेणेव से निज्जामए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छता एव वयासी—किण्ण तुम देवाणुप्पिया ! ओह्यमणसकप्पे^७ ° करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्भाणोवगए ° भियायसि ?
- १० तए ण से निज्जामए ते वहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गव्भेल्लगा य सजत्ता-नावावाणियगा य एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! नट्टमईए^८ ° नट्टसुईए नट्टसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था—न जाणइ कयरं देस वा दिस वा विदिस वा पोयवहणे ° अवहिए त्ति कट्टु तओ ओह्यमणसकप्पे^९ ° करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्भाणोवगए ° भियामि ॥
- ११ तए ण से कुच्छिधारा य कण्णधारा य गव्भेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य तस्स निज्जामयस्सतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा ण्हाया कयवलिकम्मा करयल^{१०} ° परिग्गहिय दसण्ह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु ° वहूण इदाण य खघाण य^{११} ° रुदाण य सिवाण य वेसमणाण य नागाण य भूयाण य जक्खाण य अज्ज-कोट्टकिरियाण य बहूणि उवाइय-सयाणि ° उवायमाणा^{१२}-उवायमाणा चिट्ठति ॥
१२. तए ण से निज्जामए तओ मुहुत्तरस्स लद्धमईए लद्धसुईए लद्धसण्णे अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था ॥

१. स० पा०—जहा माकदियदारगाण जाव कालियवाए ।
- २ यत्थ (ग, घ) ।
- ३ अणुत्तिज्जमाणी (ख), आघुलिज्जमाणी (ग), आहुणियमाणी (घ) ।
- ४ सखोभेज्जमाणी (क) ।
- ५ × (क) ।
- ६ अवहित्ति (क), अवहित्ति त्ति (ख) ।
- ७ स० पा०—ओह्यमणसकप्पे जाव भियायइ ।
- ८ स० पा०—ओह्यमणसकप्पे जाव भियायसि ।
- ९ स० पा०—नट्टमईए जाव अवहिए ।
१०. स० पा०—ओह्यमणसकप्पे जाव भियामि ।
११. स० पा०—करयल ° ।
१२. स० पा०—जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा ।
- १३ उवाइमाणा (१।५।७२)

१३ तए ण स निज्जामए ते बह्वे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गव्भेल्लगा य सजत्ता-
नावावाणियगा य एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया । लद्धमईए^१
°लद्धसुईए लद्धसण्णे ° अमूढदिसाभाए जाए । अम्हे ण देवाणुप्पिया । कालिय-
दीवतेण सखूढा^२ । एस ण कालियदीवे आलोककइ^३ ॥

कालियदीवे आस-पेच्छण-पदं

१४ तए ण ते कुच्छिधारा य कण्णधारा य गव्भेल्लगा य सजत्ता-नावावाणियगा य
तस्स निज्जामगस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा हट्टतुट्टा पयक्खिणाणुकूलेण वाएणं
जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहण लवेति, लवेत्ता
एगट्टियाहिं कालियदीव उत्तरति । तत्थ ण बह्वे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य
रयणागरे य वइरागरे य, बह्वे तत्थ आसे पासति, किं ते ?—

हरिरेणु-सोणिसुत्तग-^४°सकविल-मज्जार-पायकुक्कुड-वोडसमुग्गयसामवण्णा ।

गोहूमगोरग-गोरपाडल-गोरा, पवालवण्णा य धूमवण्णा य केइ ॥१॥

तलपत्त - रिट्ठवण्णा य, सालिवण्णा य भासवण्णा य केइ ।

जपिय-तिल-कीडगा य, सोलिय-रिट्ठगा य पुड-पइया य कणग पिट्ठा य केइ ॥२॥

चक्कागपिट्ठवण्णा, सारसवण्णा य हसवण्णा य केइ ।

केइत्थ अबभवण्णा, पक्कतल^५ - मेघवण्णा य वाहुवण्णा^६ केइ ॥३॥

सभाणुरागसरिसा, सुयमुह - गुजद्धराग- सरिसत्थ केइ ।

एलापाडल - गोरा, सामलया - गवलसामला पुणो केइ ॥४॥

बह्वे अण्णे अणिद्देसा, सामा कासीसरत्तपीया, अच्चतविसुद्धा वि य ण आइण्णग-
जाइ-कुल-विणीय-नयमच्छरा ।

हयवरा जहोवएस-कम्मवाहिणो वि य ण ।

सिक्खा विणीयविणया,

लघण-वग्गण-धावण-घोरण-तिवई जईण-सिक्खिय-गई ।

किं ते ? मणसा वि उव्विहतःइ अणेगाइ आससयाई पासति ° ॥

१५ तए ण ते आसा^७ वाणियए पासति, तेसि गधं आघायति^८, आघाइत्ता भीया

१ स० पा०—लद्धमईए जाव अमूढदिसायाए ।

२ सबूढा (ख), सबूढा (ग) ।

३ ओलोकिज्जइ (घ) ।

४ स० पा०—आइण्णवेढो । विस्तृत पाठो
वृत्त्यनुसारेण स्वीकृत । मूलपाठे अस्य सूचना
'आइण्णवेढो' इति पदेन प्रदत्तास्ति । वृत्ति-

कारेणापि सूचितमिदम् यथा—वेढो त्ति
वर्णनार्था वाक्यपद्धति (वृ) ।

५. पविरल (वृपा) ।

६ बहु० (वृपा) ।

७. आसा ते(क, घ),आसाए(ग),आसाओ(क्व)।

८. अघायति (ख, ग) ।

तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उव्वमति । ते णं तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निव्वभया^१ निरुव्विग्गा^३ सुहसुहेण विहरति ॥

संजत्तियाणं पुणरागमण-पदं

१६ तए ण ते सजत्ता-नावावाणियगा अण्णमण्णं एवं वयासी—किण्णं अम्हं देवाणु-प्पिया । आसेहिं ? इमे णं वहवे हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वइरागरा य । त सेय खलु अम्ह हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य पोयवहण भरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्टु पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य तणस्स य कट्टुस्स य अन्नस्स य पाणियस्स य पोयवहणं भरेति, भरेत्ता पयक्खिणाणुकूलेण^३ वाएण जेणेव गभीरए^४ पोयपट्टणे^५ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहण लवेति, लवेत्ता सगडी-सागड सज्जेति, सज्जेत्ता त हिरण्णं^६ •च सुवण्ण च रयणं च^७ वइर च एगट्टियाहिं पोयवहणाओ सचारेति, सचारेत्ता सगडी-सागडं सजोएति^८, जेणेव हत्थिसीसए^९ नयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयरस्स वहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेस करेति, करेत्ता सगडी-सागड मोएति, मोएत्ता महत्थं^{१०} महग्घ महरिह विउल रायारिह^{११} पाहुड गेण्हति, गेण्हित्ता हत्थिसीसयं नयर अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता जेणेव से कणगकेऊ राया तेणेव उवा-गच्छति, उवागच्छित्ता त महत्थं^{१२} •महग्घ महरिह विउलं रायारिह^{१३} पाहुडं उवणेति ॥

आसाण आणयण-पदं

१७ तए णं से कणगकेऊ राया तेसिं सजत्ता-नावावाणियगाणं तं महत्थं^{१४} •महग्घ महरिहं विउल रायारिह पाहुड^{१५} पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते संजत्ता-नावा-वाणियगे एव वयासी—तुव्वे ण देवाणुप्पिया । गामागर^{१६} •नगर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-सण्णवेसाडं^{१७} आहिंडह, लवणसमुद्धं च अभिक्खण-अभिक्खण पोयवहणेण ओगाहेह । तं अत्थियाइ च केइ भे^{१८} कहिंचि अच्छेरए दिट्टुपुव्वे ?

१. निव्वभया निव्वभेया (ग) ।

२. निउव्विग्गा (ख) ।

३. दक्खिणाणुं (ख, ग) ।

४. गभीर (ख, ग, घ) ।

५. पोयवहणपट्टणे (ग) ।

६. स० पा०—हिरण्ण जाव वइर ।

७. जोएति (क, ख, घ) ।

८. हत्थिसीसे (घ) ।

९. स० पा०—महत्थ जाव पाहुड ।

१०. स० पा०—महत्थ जाव पाहुड ।

११. स० पा०—महत्थ जाव पडिच्छइ ।

१२. सं० पा०—गामागर जाव आहिंडह ।

१३. हे (ग) ।

- १८ तए ण ते सजत्ता-नावावाणियगा कणगकेउं एव वयासी—एव खलु अम्हे देवाणुप्पिया । इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो त चेव जाव' कालियदीवतेण सच्छूढा । तत्थ णं वहवे हिरण्णागरे य^३ •सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य^०, वहवे तत्थ' आसे पासामो^४ ।
कि ते ? हरिरेणु जाव' अम्ह गंध आघायति, आघाइत्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइ जोयणाइ उव्वभमति । तए ण सामी ! अम्हेहि कालियदीवे 'ते आसा' अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ॥
- १९ तए णं से कणगकेऊ तेसि सजत्ता-नावावाणियगाणं अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म ते सजत्ता-नावावाणियए एव वयासी—गच्छह ण तुव्वे देवाणुप्पिया ! मम कोडुवियपुरिसेहि सिद्धि कालियदीवाओ ते आसे आणेह ॥
२०. तए णं ते सजत्ता-नावावाणियगा^५ एव सामि ! त्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणेति ॥
२१. तए ण से कणगकेऊ कोडुवियपुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह णं तुव्वे देवाणुप्पिया । सजत्ता-नावावाणियएहि सिद्धि कालियदीवाओ मम आसे आणेह । तेवि पडिसुणेति ॥
२२. तए ण ते कोडुवियपुरिसा सगडी-सागड सज्जेति, सज्जेत्ता तत्थ ण वहूण वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भभाण य छव्वभामरीण य चित्तवीणाण य अण्णेसि च वहूण सोइदिय-पाउग्गाण दव्वाण सगडी-सागड भरेति । वहूण किण्हाण य^६ •नीलाण य लोहियाण य हालिद्दाण य^० सुक्किलाण य कट्ठकम्माण य चित्तकम्माण य पोत्थकम्माण य लेप्पकम्माण य गथिमाण य वेढिमाण य पूरिमाण य सघाइमाण य अण्णेसि च वहूण चक्खदिय-पाउग्गाणं दव्वाण सगडी-सागड भरेति । वहूण कोट्टपुडाण य^७ •पत्तपुडाण य चोयपुडाण य तगरपुडाण य एलापुडाण य हिरिवेरेपुडाण य उसीरपुडाण य चपगपुडाण य मरुयगपुडाण य दमगपुडाण य जातिपुडाण य जुहियापुडाण य मल्लियापुडाण य वासतियापुडाण य केयइपुडाण य कप्पूरपुडाण य पाडलपुडाण य^० अण्णेसि च वहूण घाणिदिय-पाउग्गाण दव्वाण सगडी-सागड

१. ना० १।१७।४-१३ ।

२. स० पा०—हिरण्णागरे य जाव वहवे, हिरण्णागरा^० (ख, ग) ।

३ यत्थ (ख); अत्थि (घ) ।

४. एतत् क्रियापद १४ सूत्रानुसारेण स्वीकृतम् ।

५. ना० १।१७।१४, १५ ।

६. नावावाणियगा कणगकेउ एव वयासी (क,

ख, ग, घ) । यद्यपि सर्वेष्वपि आदर्शेषु असौ पाठो विद्यते, तथापि अर्थमीमांसया नासौ सगच्छते । एतादृशप्रसंगे तथा अदर्शनात् । द्रष्टव्यम्—१।८।१०४ सूत्रम् । तेनासौ पाठः पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः ।

७. स० पा०—किण्हाण य जाव सुक्किलाण ।

८. स० पा०—कोट्टपुडाण य जाव अण्णेसि ।

भरेति । वहुस्स खडस्स य गुलस्स य 'सक्कराए य मच्छडियाए य'^१ पुप्फुत्तर-
पउमुत्तराए अण्णेसि च जिन्भिदिय-पाउग्गाणं दव्वाण सगडी-सागड भरेति ।
वहूण कोयवाण^२ य कवलाण य पावाराण य नवतयाण य 'मलयाण य'^३ ममूराण
य 'सिलावट्टाण य जाव हसगव्भाण य'^४ अण्णेसि च फासिदिय-पाउग्गाण दव्वाण
सगडी-सागड भरेति, भरेत्ता सगडी-सागड जोयति, जोइत्ता जेणेव गभीरए
पोयट्टाणे तेणेव उवागच्छति, सगडी-सागड मोएति, मोएत्ता पोयवहूण सज्जेति,
सज्जेत्ता तेसि उक्किट्टाण सद्-फरिस-रस-रूव-गधाण कट्टस्स य 'तणस्स य'^५
पाणियस्स य तदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव^६ अण्णेसि च वहूण
पोयवहूणपाउग्गाण पोयवहूण भरेति, भरेत्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव
कालियदीवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहूण लवेति, लवेत्ता ताइ
उक्किट्टाइ सद्-फरिस-रस-रूव-गधाइ, एगट्टियाहि कालियदीव उत्तरेति ।
जहि-जहि च ण ते आसा आसयति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्टति वा तहि-
तहि च ण ते कोडुवियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तवीणाओ य अण्णाणि
य वहूणि सोइदिय पाउग्गाणि य^७ दव्वाणि समुदीरेमाणा-समुदीरेमाणा ठवेति,
तेसि च परिपेरतेण पासए^८ ठवेति, ठवेत्ता निच्चला निप्फदा तुसिणीया
चिट्ठति ।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयति वा^९ •सयति वा चिट्ठति वा^{१०} तुयट्टति वा तत्थ-
तत्थ ण ते कोडुवियपुरिसा वहूणि किण्हाणि य नीलाणि य लोहियाणि य
हालिहाणि य सुक्किलाणि य कट्टकम्माणि य जाव सघाइमाणि य अण्णाणि य
वहूणि चक्खिदिय-पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेति, तेसि परिपेरतेण पासए ठवेति,
ठवेत्ता निच्चला निप्फदा तुसिणीया चिट्ठति ।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्टति वा तत्थ-तत्थ
ण ते कोडुवियपुरिसा तेसि वहूण कोट्टपुडाण य जाव पाडलपुडाण य अण्णेसि

१. सक्करा तणस्स य पाणियस्स य गोरसस्स य
तदुलाण य समियस्स य^३ जाव अण्णेसि च
पोयवहूणपाउग्गाण य (क), °मुच्छडियाए
य तणस्स य पाणियस्स य गोरसस्स य तदुलाण
य समियस्स य जाव अण्णेसि च पोयवहूण-
पाउग्गाण य (ख) ।

२. कोयगाण (वृ), कोयहा (वा ?) णि
(आवारचूला ५।१४) ।

३. मसगाण य (वृपा) ।

४. 'सिलावट्टाण य जाव हसगव्भाण य' अस्य

पूतिमथल नोपलभ्यते । प्रज्ञापनाया प्रथमपदे
हसगव्भ' इति पद मध्यवर्ति विद्यते । अन्तिम
पद 'सूरकते' अस्ति । उत्तराध्ययनस्य ३६
अध्ययनेपि एवमेव ।

५ × (ख, ग, घ) ।

६ ना० १।८।६६ ।

७ × (ख, घ) ।

८. पासे (ख, घ) ।

९. स० पा०—आसयति वा जाव तुयट्टति ।

च वहूण घाणिंदिय-पाउग्गाण दव्वाण पुजे य नियरे य करेति, करेत्ता तेसि परिपेरतेण^१ •पासए ठवेति, ठवेत्ता निच्चला निप्फदा तुसिणीया^० चिट्ठति । जत्थ-जत्थ ते आसा आसयति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तत्थ-तत्थ ण ते कोडुवियपुरिसा गुलस्स जाव पुप्फुत्तर-पउमुत्तराए अण्णेसिं च वहूण जिब्भदिय-पाउग्गाण दव्वाण पुजे य नियरे य करेति, करेत्ता वियरए खणति, खणित्ता गुलपाणगस्स 'खडपाणगस्स वोरपाणगस्स'^२ अण्णेसिं च वहूण पाणगाणं वियरए भरेति, भरेत्ता तेसिं परिपेरतेणं पासए ठवेति^३, •ठवेत्ता निच्चला निप्फदा तुसिणीया^० चिट्ठति ।

जहिं-जहिं च ण ते आसा आसयंति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं-तहिं च ण ते कोडुवियपुरिसा वहवे 'कोयवया जाव सिलावट्ठया'^४ अण्णाणि य फांसिदिय-पाउग्गाइ अत्थुय-पच्चत्थुयाइ ठवेति, ठवेत्ता तेसिं परिपेरतेणं^५ •पासए ठवेति, ठवेत्ता निच्चला निप्फदा तुसिणीया^० चिट्ठति ॥

२३. तए ण ते आसा जेणेव ते उक्किट्ठा सद्-फरिस-रस-रूव-गधा तेणेव उवागच्छति ॥
अमुच्छिय-आसाणं सायत्त-विहार-पदं

२४. तत्थ ण अत्येगइया आसा अपुव्वा ण इमे सद्-फरिस-रस-रूव-गंधत्ति^६ कट्ठु तेसु उक्किट्ठेसु सद्-फरिस-रस-रूव-गधेसु अमुच्छिया अगढिया अगिद्धा अणज्भोववण्णा तेसिं उक्किट्ठाण सद्^७-•फरिस-रस-रूव^०-गधाण दूरदूरेण अवक्कमति । ते ण तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निवभया निरुव्विग्गा सुहंसुहेण विहरति ॥

निगमण-पदं

२५. एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा^८ •निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे^० सद्-फरिस-रस-रूव-गंधेसु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोववज्झइ, से ण इहलोए चेव वहूण समणाण वहूण समणीण वहूणं सावयाण वहूण सावियाण य अच्चणिज्जे जाव^९ चाउरत ससारकत्तार वीईवइस्सइ ॥

१. सं पा०—परिपेरतेण जाव चिट्ठति ।

संक्षेपीकरणेऽस्य विपर्ययो जात ।

२. खडपाणगस्स पोरपाणगस्स (क), वोरपाण-गस्स य खडपाणगस्स य (ख) खडपाणगस्स (ग) ।

५. सं पा०—परिपेरतेण जाव चिट्ठति ।

६. गधाति (ख, घ) ।

३. सं पा०—ठवेति जाव चिट्ठति ।

७. सं पा०—सद् जाव गधाणं ।

८. सं पा०—निग्गथो वा^० ।

४. अस्य नूत्रम्य पूर्वपाठापेक्षया 'कोयवया जाव हंसगन्भा' एव पाठो युज्यते । सभवतः

९. ना० १।२।७६ ।

मुच्छिय-आसाणं परायत्त-पद

- २६ तत्थ ण अत्थेगइया आसा जेणेव उक्किट्ठा सद-फरिस-रस-रुव-गधा तेणेव उवागच्छति । तेसु उक्किट्ठेसु सद-फरिस-रस-रुव-गधेसु मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्भोववण्णा आसेविड पयत्ता यावि होत्था ॥
२७. तए ण ते आसा ते उक्किट्ठे सद-फरिस-रस-रुव-गधे आसेवमाणा तेहि वहीहि कूडेहि य पासेहि य गलएमु य पाएसु य वज्भति ॥
- २८ तए णं ते कोडुवियपुरिसा ते आमे गिण्हति, गिण्हित्ता एगट्ठियाहि पोयवहणे सचारेति, कट्टस्स य^१ •तणस्स य पाणियस्स य तदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव^२ अण्णेसि च ब्रहूण पोयवहणपाउग्गाण पोयवहण^३ भरेति ॥
२९. तए ण ते सजत्ता-नावावाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहण लवेति, लवेत्ता ते आसे उत्तारेति, उत्तारेत्ता जेणेव हत्थिसीसे नयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल^४ परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण^५ वद्धावेति ते आसे उवणेति ॥
- ३० तए ण से कणगकेऊ राया तेसि सजत्ता-नावावाणियगाण उस्सुक^६ वियरइ, सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
- ३१ तए ण से कणगकेऊ राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
- ३२ तए ण से कणगकेऊ राया आसमद्दए सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—तुव्भे ण देवाणुप्पिया । मम आसे विणएह ॥
- ३३ तए ण ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता ते आसे वहीहि मुहवधेहि य कणवधेहि य नासावधेहि य वालवधेहि य खुरवधेहि य 'कडगवधेहि य खलिणवधेहि य'^७ ओवीलणाहि^८ य 'पडयाणेहि य'^९ अकणाहि य वेत्तप्पहारेहि^{१०} य लयप्पहारेहि^{११} य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयति, विणइत्ता कणगकेउस्स रण्णे उवणेति ॥
३४. तए ण से कणगकेऊ राया ते आसमद्दए सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१ स० पा०—कट्टस्स य जाव भरेति ।

२ ना० १।८।६६ ।

३ स० पा०—करयल जाव वद्धावेति ।

४. उस्सुकक (क, ग, घ) ।

५. × (क), °खलीण° (ख, ग) ।

६. अधिलाणेहि (क), आवलणेहि (ख), अहिलाणवधेहि (ग), अहिलाणेहि (घ, वृषा) ।

७ × (क), पलियाणेही य (ख) ।

८. वित्त° (ख, ग, घ) ।

९. × (ख, ग) ।

३५ तए ण ते आसा व्हूहि मुह्वघेहि य जाव' छिवप्पहारेहि य व्हूणि सारीर-
माणसाइ दुक्खाइ पावेति ॥

निगमण-पदं

३६. एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निगथो वा^१ *निगथो वा आयरिय-उवज्झायाण
अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय^२ ° पव्वइए समाणे इट्ठेसु सह-फरिस-
रस-रुव-गधेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोवज्झइ, से ण इहलोए
चेव व्हूण समणाण^३ °व्हूण समणीण व्हूण सावगाण व्हूण^४ ° सावियाण य
हीलणिज्जे जाव' चाउरत ससारकतार भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्ठिस्सइ ।

गाहा —

कल-रिभिय-महुर-तती-तल-ताल-वस-कउहाभिरामेसु^१ ।
सहेसु रज्जमाणा^२, रमति सोइदिय - वसट्टा ॥१॥
सोइदिय-दुद्धतत्तणस्स अह 'एत्तिओ हवइ'^३ दोसो ।
दीविग-रुयमसहतो,^४ वहवध तित्तिरो पत्तो ॥२॥
थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु^५ ।
रुवेसु रज्जमाणा, रमति चक्खिदिय-वसट्टा ॥३॥
चक्खिदिय-दुद्धतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
ज^६ जलणमि जलते, पडइ पयगो अबुद्धीओ ॥४॥
अगरुवर-पवरधूवण - उउयमल्लानुलेवणविहीसु ।
गधेसु रज्जमाणा, रमति घाणिदिय-वसट्टा ॥५॥
घाणिदिय-दुद्धतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
ज ओसहिगधेण, विलाओ निद्धावई उरगो ॥६॥
तित्त-कट्टुय^७ कसाय, महुर^८ वहुखज्ज-पेज्ज-लेज्जेसु ।
आसायमि^९ उ गिद्धा, रमति जिम्भिदिय-वसट्टा ॥७॥
जिम्भिदिय-दुद्धतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
ज गललग्गुक्खित्तो, फुरइ थलविरेल्लिओ^{१०} मच्छो ॥८॥

१. ना० १।१७।३३ ।

२. स० पा०—निगथो वा पव्वइए ।

३. स० पा०—समणाण जाव सावियाण ।

४. ना० १।३।२४ ।

५. कट्टुहा^० (क), ककुहा^० (ख); ककुदा^०
(घ, वृ) ।

६. रुयमाणा (ख) ।

७. तत्तियो हवति (क, ग), हवइ एत्तिओ (ख) ।

८. भयममहंतो (ग), खमसहंतो (घ, वृ) ।

९. °मईसु (क) ।

१०. स (क) ।

११. कट्टुय (घ) ।

१२. अविलमहुरं (घ) ।

१३. आसायति (ख) ।

१४. °विरिल्लिओ (क, ख, ग), °विरिल्लिओ(घ) ।

उउ-भयमाणमुहेसु^१ य, सविभव^२-हिययमण-निव्वुडकरेसु^३ ।
 फासेसु रज्जमाणा, रमति फासिदिय-वसट्टा ॥६॥
 फासिदिय-दुद्धतत्तणस्स अह एत्तिआं हवड दोसो ।
 ज खणड मत्थय कुजरस्स लोहकुसो तिक्खो ॥१०॥
 कल-रिभिय-महुर-तती-तल-ताल-वस-कडहाभिरामेसु ।
 महेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरण न ते मरण ॥११॥
 थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु^४ ।
 ह्वेसु जे न रत्ता, वसट्टमरण न ते मरण ॥१२॥
 अग्रहवर - पवर - धूवण - उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
 गधेसु^५ जे न गिद्धा, वसट्टमरण न ते मरण ॥१३॥
 तित्त-कडुय, कसाय, महुर बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्जेसु ।
 आसायमि 'न गिद्धा',^६ वसट्टमरण न ते मरण ॥१४॥
 उउ-भयमाणसुहेसु य, सविभव-हिययमण-निव्वुडकरेसु^३ ।
 फामेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरण न ते मरण ॥१५॥
 महेसु य भद्दय^७-पावएसु सोयविसयमुवगएसु ।
 तुट्टेण व रुट्टेण व, समणेण सया न होयव्व ॥१६॥
 ह्वेसु य भद्दय^७ - पावएसु चक्खुविसयमुवगएसु ।
 तुट्टेण व रुट्टेण व, समणेण सया न होयव्व ॥१७॥
 गधेसु य भद्दय-पावएसु घाणविसयमुवगएसु ।
 तुट्टेण व रुट्टेण व, समणेण सया न होयव्व^८ ॥१८॥
 रसेसु य भद्दय-पावएसु जिव्वभिसयमुवगएसु ।
 तुट्टेण व रुट्टेण व, समणेण सया न होयव्व ॥१९॥
 फामेसु य भद्दय-पावएसु कायविसयमुवगएसु ।
 तुट्टेण व रुट्टेण व, समणेण सया न होयव्व^९ ॥२०॥

१. ०मुहेहि (क, व) ।

२. सविहव (क, ग) ।

३. ०करेहि (क, न, ग) ।

४. ०मईसु (ग) ।

५. घाणेसु (ग) ।

६. अगिद्धा (क, न, ग) ।

७. पेव्वुय^० (क) ।

८. भद्देसु य (ग) ।

९. भद्दय (ग, न) ।

१०. होउव्व (ग) ।

११. एतद् गाथा-विंगतिक वृत्तिवृत्ता प्रस्तुतवाच-
 नाया न न्वोम्भियते—यथा—अपेन्द्रियामवृ-
 त्तानां स्वप्नस्य इन्द्रियामवगदोपस्य चानि-
 धापतः गाथासंज्ञकं याननान्तरेऽपि कमुन-
 तन्वते ।

३७ एव खलु जवू । समणेणं भगवया महावीरेण जाव' संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो कालियदीवो, अणुवमसोक्खो तहेव जइ-धम्मो ।
 जह आसा तह साहू, वणियव्व अणुकूलकारिजणा ॥१॥
 जह सद्दाइ-अगिद्धा, पत्ता नो पासवधण आसा ।
 तह विसएमु अगिद्धा, वज्झति न कम्मणा साहू ॥२॥
 जह सच्छदविहारो, आसाण तह इहं वरमुणीणं ।
 जर-मरणाइ-विवज्जिय, सायत्ताणंदनिव्वाण ॥३॥
 जह सद्दाइसु गिद्धा, वद्धा आसा तहेव विसयरया ।
 पावेति कम्मवध, परमामुह-कारणं घोरं ॥४॥
 जह ते कालियदीवा, णीया अण्णत्थ दुहगणं पत्ता ।
 तह धम्म-परिव्वहट्ठा, अधम्मपत्ता इह जीवा ॥५॥
 पावेति कम्म-नरवइ-वसया ससारवाहियालीए^१ ।
 आसप्पमद्दएहि व, नेरइयार्इहि दुक्खाइ ॥६॥

अट्टारसमं अज्भयणं

सुसुमा

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भंते । समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते, अट्टारसमस्स ण भते नायज्भयणस्स के अट्टे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जंवू । तेणं कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे होत्था—वण्णओ' ॥
- ३ तत्थ ण धणे नाम सत्थवाहे । भट्टा भारिया ॥
- ४ तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भट्टाए अत्तया पच्च सत्थवाहदारगा होत्था, त जहा—धणे धणपाले' धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए ॥
- ५ तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स धूया भट्टाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताण अणुमग्गजाइया सुसुमा नाम दारिया होत्था—सूमालपाणिपाया ॥

चिलाय-दासचेडस्स विग्गह-पद

- ६ तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स चिलाए नाम दासचेडे होत्था—अहीणपच्चिदिय-सरीरे मसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था' ॥
- ७ तए ण से दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था, सुसुम दारिय कडीए गिण्हड, गिण्हत्ता बहूहि दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ॥
- ८ तए ण से चिलाए दासचेडे तेसि बहूण दारयाण य दारियाण य डिंभयाण य

१ ना० १।१।७ ।

३ धणवाले (क, ख) ।

२ ओ० सू० १ ।

४. होत्था सूमालपाणिपाया (ख, ग) ।

डिभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाण खुल्लए' अवहरइ',
 °अप्पेगइयाण वट्टए अवहरइ, अप्पेगइयाण आडोलियाओ' अवहरइ,
 अप्पेगइयाणं तिदूसए अवहरइ, अप्पेगइयाण पोत्तुल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाण
 साडोल्लए अवहरइ, ° अप्पेगइयाण आभरणमल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइए
 आउसइ अवहसइ निच्छोडेइ निब्भच्छेइ तज्जेइ तालेइ ॥

६ तए ण ते वहवे दारगा य दारिया य डिभया य डिभिया य कुमारया य कुमारिया
 य रोयमाणा य कदमाणा य सोयमाणा य तिप्पमाणा य विलवमाणा य साण-
 साण अम्मापिऊण निवेदेति ॥

चिलायस्स गिहाओ निक्कासण-पदं

१० तए ण तेसिं वहूण दारयाण य दारियाण य डिभयाण य डिभियाण य कुमारयाण
 य कुमारियाण य अम्मापियरो जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति,
 उवागच्छिता धण सत्थवाह वहूहि खिज्जणियाहि य रुटणाहि य उवलभणाहि'
 य खिज्जमाणा य रुटमाणा य उवलभमाणा" य धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ट
 निवेदेति ॥

११. तए ण से धणे सत्थवाहे चिलाय दासचेड एयमट्ट भुज्जो-भुज्जो निवारेइ, नो
 चेव ण चिलाए दासचेडे-उवरमइ ॥

१२ तए ण से चिलाए दासचेडे तेसिं वहूण दारयाण य दारियाण य डिभयाण
 य डिभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ'
 अप्पेगइयाण वट्टए अवहरइ, अप्पेगइयाण आडोलियाओ अवहरइ, अप्पेगइयाण
 तिदूसए अवहरइ, अप्पेगयाणं पोत्तुल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाण साडोल्लए
 अवहरइ, अप्पेगइयाण आभरणमल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइए आउसइ
 अवहसइ निच्छोडेइ निब्भच्छेइ तज्जेइ ° तालेइ ॥

१३ तए ण ते वहवे दारगा य दारिया य डिभया य डिभिया य कुमारया य
 कुमारिया य रोयमाणा य° •कदमाणा य सोयमाणा य तिप्पमाणा य
 विलवमाणा य साण-साण ° अम्मापिऊण निवेदेति ॥

१४ तए ण ते आसुरुत्ता रुट्टा कुविया चडिक्किया मिसिमिसेमाणा जेणेव धणे
 सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता वहूहि खिज्जणाहि य° •रुटणाहि य

१ खल्लए (ग) ।

२ स० पा०—एव वट्टए आडोलियाओ तिदूसए
 पोत्तुल्लए माडोल्लए ।

३ अप्पोडियाओ (ख) आलोडियाओ (क्व) ।

४. उवलभणियाहि (ख), उवलभणायाहि (ग) ।

५ उवालभमाणा (क), उवलभमाणा (ख, ग) ।

६. स० पा०—अवहरइ जाव तालेइ ।

७. स० पा०—रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण ।

८. स० पा०—खिज्जणाहि य जाव एयमट्ट ।

उवलभणाहि य खिज्जमाणा य रुटमाणा य उवलभमाणा य धणस्स सत्थवाहस्स ° एयमट्ट निवेदेति ॥

१५. तए ण से घणे सत्थवाहे बहूण दारगाणं दारियाण डिभयाण डिभियाण कुमारयाण कुमारियाणं अम्मापिरुण अतिए एयमट्ट सोच्चा आसुरुत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे चिलाय दासचेड उच्चावयाहि आउसणाहि आउसइ उद्धसइ निवभच्छेइ निच्छोडेइ तज्जेइ उच्चावयाहि तालणाहि तालेइ साओ गिहाओ निच्छुभइ ॥

चिलायस्स दुव्वसण-पवत्ति-पदं

१६. तए ण से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे नयरे सिघाडग^१-^२तिग-चउक्क चच्चर-चउम्मुह-महापह^३ °पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरएसु य पाणघरएसु य सुहसुहेण परिवट्टइ^४ ॥

१७ तए ण से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए^५ अणिवारिए सच्छदमई सइरप्पयारी 'मज्जप्पसगी चोज्जप्पसगी'^६ जूयप्पसगी वेसप्पसगी परदारप्पसगी जाए यावि होत्था ॥

चोरपल्ली-पद

१८. तए ण रायगिहस्स नयरस्स अद्वारसामते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था—विसम-गिरिकडग-कोलव^७-सण्णिविट्ठा 'वसीकलकपागार'^८-परिक्खत्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय^९-फरिहोवगूढा एगदुवारा अणेगखडी विदित्तजण-निग्गमप्पवेसा अविभतरपाणिया सुदुल्लभजल-पेरता सुवहुस्सवि कूवियवलस्स आगयस्स दुप्पहसा यावि होत्थां ॥

१९ तत्थ ण सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए नाम चोरसेणावई परिवसई—अहम्मिए^{१०} °अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अहम्माणुए अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणे अहम्मसीलसमुदायारे अहम्मेण चैव वित्ति कप्पेमाणे विहरइ । हण-छिद-भिद-वियत्तए लोहियपाणी चडे रुढे खुढे साहस्सिए उक्कचण-वचण-माया-नियडि-कवड-कूड-साइ-सपओग-बहुले निस्सीले निव्वए निग्गुणे निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे बहूण

१ × (ख, ग, घ) ।

२ स० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

३ परिवड्ढइ (घ) ।

४. अणोहट्टिए (ख); अणाहट्टिए (घ), अणोहट्टिए (वृ) ।

५ चोज्जप्पसगी मसप्पसगी (घ) ।

६ कोडव (ग) ।

७ वशीकृतप्राकारा (वृषा) ।

८. °प्पवेस (ख) ।

९. वाचनान्तरे पुनरेव पठ्यते—जत्थ चउरगवलनित्तावि कुविय-वलाहय-महिय-पवर-वीरघाइय-विवडिय-चिधज्भयपडागा कीरति (वृ) ।

१०. स० पा०—अहम्मिए जाव अहम्मकेऊ ।

- दुप्पय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सरिसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणयाए °
अहम्मकेऊ समुट्ठिए वहुनगर-निग्गय-जसे सूरे दढप्पहारी साहसिए सद्वेही ॥
- २० से ण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाणं आहेवच्च' •पोरेवच्चं
सामित्त भट्टित्तं महत्तरगत्त आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे °
विहरइ ॥
- २१ तए ण मे विजए 'तक्कर-सेणावई' वहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेय-
गाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य
वालवायगाण य वीसभघायगाण य जूयकाराण य खंडरवखाण य अण्णेसि च
वहूण छिण्ण-भिण्ण-वाहिराह्याण कुडगे यावि होत्था ॥
- २२ तए ण से विजए चोरसेणावई' रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिम जणवय वहूहिं
गामघाएहि य नगरघाएहि य गोगहणेहि य वदिग्गहणेहि य पथकुट्टणेहि य
खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे-उवीलेमाणे विद्धसेमाणे-विद्धसेमाणे नित्थाणं'
निद्धण करेमाणे विहरइ ॥

चिलायस्स चोरपल्ली-गवण-पदं

- २३ तए ण से चिलाए दासचेडए रायगिहे वहूहिं अत्थाभिसकीहि य चोज्जाभि-
सकीहि' य दाराभिसकीहि य घणिएहि' य जूयकरेहि' य परवभवमाणे-परवभव-
माणे रायगिहाओ नगराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजयं' चोरसेणावइ उवसंपज्जित्ता ण
विहरइ ॥
- २४ तए णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्ग-असिलट्टिग्गाहे
जाए यावि होत्था । जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा'
•नगरघाय वा गोगहणं वा वदिग्गहणं वा ° पथकोट्टि वा काउं वच्चइ" ताहे
वि य ण से चिलाए दासचेडे सुवहुपि कूवियवल ह्य-महिय'
•पवर वीर-
घाइय-विवडियचिध-धय-पडाग किच्छोवगयपाणं दिसोदिसि ° पडिसेहेइ, पडि-
सेहेत्ता पुणरवि लद्धट्टे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लि हव्वमागच्छइ ॥

१. म० पा०—आहेवच्च जाव विहरइ ।

२. तक्करे चोरसेणावइ (घ) ।

३. तक्करसेणावइ (क) ।

४. × (ग) ।

५. कोट्टणेहि (क) ।

६. निद्धाणं (क) ।

७. चोरा ° (घ) ।

८. घणिएहि (ख) ।

९. जुइ ° (ख, ग) ।

१०. सं० पा०—गामघायं वा जाव पंथकोट्टि ।

११. वयड (घ) ।

१२. सं० पा०—ह्यमहिय जाव पडिसेहेइ ।

२५. तए णं से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्कर वहूओ चोरविज्जाओ य चोरमते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ ॥

विजयस्स मच्चु-पदं

२६. तए ण से विजए चोरसेणावई अण्णया कयाइ कालधम्मणा संजुत्ते यावि होत्था ॥
२७. तए ण ताइ पंचचोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स महया-महया इड्डी-सक्कार-समुदएणं नीहरण करेति, करेत्ता वहूइ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेति, करेत्ता^१ •कालेण० विगयसोया जाया यावि होत्था ॥

चिलायस्स चोरसेणावइत्त-पदं

- २८ तए ण ताइ पंचचोरसयाइ अण्णमण्ण सदावेति, सदावेत्ता एव वयासी—एव खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मणा संजुत्ते । अय च ण चिलाए तक्करे विजएण चोरसेणावइणा वहूओ चोरविज्जाओ य^२ •चोरमते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य^० सिक्खाविए । त सेय खलु अम्ह देवाणु-प्पिया ! चिलाय तक्कर सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिच्चि-त्ताए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्टु पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता चिलाय सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिच्चति ॥
२९. तए णं से चिलाए चोरसेणावई जाए—अहम्मिए^३ •अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अहम्माणुए अहम्मपलोड अहम्मपलज्जणे अहम्मसीलसमुदायारे अहम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणे० विहरइ ॥
- ३० तए ण से चिलाए चोरसेणावई चोरनायगे^४ •वहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधार-गाण य वालघायगाण य वीसभघायगाण य जूयकाराण य खडरक्खाण य अण्णेसि च वहूण छिण्ण-भिण्ण-वाहिराहयाण० कुडगे यावि होत्था ॥
३१. से ण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण “आहेवच्च पोरेवच्च सामित्तं भट्टित्त महत्तरगत आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥
३२. तए ण से चिलाए चोरसेणावई० रायगिहस्स नयरस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवय^५ •वहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोगहणेहि य बदिग्गहणेहि य

१. स० पा०—करेत्ता जाव विगयसोया ।

४ स० पा०—चोरनायगे जाव कुडगे ।

२ स० पा०—चोरविज्जाओ य जाव सिक्खा-विए ।

५. स० पा०—एव जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स ।

३. स० पा०—अहम्मिए जाव विहरइ ।

६. स० पा०—जणवय जाव नित्थाण ।

पथकुट्टणेहि य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे-उवीलेमाणे विद्धंसेमाणे-विद्धसेमाणे °
नित्थाण निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥

चिलायस्स घणस्स गिहे चोरिय-पद

३३. तए ण से चिलाए चोरसेणावई अण्णया कयाइ विपुल असण-पाण-खाइम-
साइमं उधक्खडावेत्ता ते पच चोरसए आमतेइ तओ पच्छा ण्हाए कयवलिकम्मे
भोयणमडवसि तेहिं पचहिं चोरसएहिं सद्धि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम
सुर च' °मज्ज च मंस च सीघु च ° पसन्न च आसाएमाणे विसाएमाणे परि-
भाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ, जिमियभुत्तुरागए ते पच चोरसए विपुलेण
धूव-पुप्फ-गध-मल्लालकारेण° सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एव
वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे नयरे घणे नाम सत्थवाहे अड्डे ।
तस्स ण धूया भद्दाए अत्तया पचण्हं पुत्ताण अणुमग्गजाइया सुंसुमा नामं
दारिया'—अहीणा जाव° सुरुवा । त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! घणस्स
सत्थवाहस्स गिह विलुपामो । तुव्भ विपुले घण-कणग'-°रयण-मणि-मोत्तिय-
संख °-सिल-प्पवाले मम सुसुमा दारिया ॥

३४ तए ण ते पच चोरसया चिलायस्स [एयमट्ट ?] पडिसुणेति ॥

३५. तए ण ते चिलाए चोरसेणावई तेहिं पचहिं चोरसएहिं सद्धि अल्ल' चम्मं
दुरुहइ, दुरुहित्ता पच्चावरण्ह°-कालसमयसि पचहिं चोरसएहिं सद्धि सण्णद्ध'-
°वद्ध-वम्मिय-कवए उप्पीलिय-सरासणपट्टिए पिणद्ध-गेविज्जे आविद्ध-विमल-
वरचिघपट्टे° गहियाउह-पहरणे माइय-गोमुहिएहिं फलएहिं, निक्किट्टाहिं
असिलट्टीहिं', असगएहिं° तोणेहिं, सज्जीवेहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं,
समुल्लालियाहिं दाहाहिं', ओसारियाहिं ऊरुघंटियाहिं, छिप्पतूरेहिं° वज्जमाणेहिं
महया-महया उक्किट्ट-सीहनाय°'-°वोल-कलकलरवेणं पक्खुभिय-महा°समुद्ध-
रवभूय पिव करेमाणा सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिक्का
जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता रायगिहस्स अट्टरसामते

१. म० पा०—सुर च जाव पमन्न ।

२. द्रष्टव्यम्—१।७।६ सूत्रम् ।

३. दारिया होत्या (क, ख, ग, घ) ।

४. ना० १।१।१७ ।

५. म० पा० कणग जाव सिलप्पवाले । अस्या-
व्ययनस्य ३८ सूत्रे 'कणग जाव सावएज्ज'

इति पाठोन्मि । अत्राधि तथैव युज्यते, किन्तु
संक्षेपीकरणे नभवत्त. पदभिन्नता जाता ।

६. अल्ल (ख, ग, घ) ।

७. पुच्चावरण्ह (ग, घ) ।

८. म० पा०—मण्णद्ध जाव गहिया० ।

९. असीहिं (क), असिलट्टेहिं (ख) ।

१०. अंसागएहिं (क), अस गएहिं (ग) ।

११. दावाहिं (क) एतत् प्रहरण वगभापाया 'दाव'
इति उच्यते ।

१२. छिप्पतूरेहिं (क), छिप्पतूरेहिं (ग) ।

१३. म० पा०—सीहनाय जाव समुद्धरवभूयं ।

एग मह गहण अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता दिवस खवेमाणा चिट्ठति ॥

३६. तए ण से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्त-कालसमयसि 'निसत-पडिनिसतसि'^१ पचहिं चोरसएहिं सद्धि माडय-गोमुहिएहिं फलएहिं जाव^२ मूडयाहि ऊरुघटियाहिं जेणेव रायगिहे नयरे पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उदगवत्थि परा-मुसइ आयते चोक्खे परमसुडभूए तालुग्घाडणि विज्ज आवाहेइ, आवाहेत्ता रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएण अच्छोडेइ, अच्छोडेत्ता कवाड विहाडेइ, विहा-डेत्ता रायगिह अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणे-उग्घोसेमाणे एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! चिलाए नाम चोर-सेणावई पंचहिं चोरसएहिं सद्धि सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए घणस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे । त जे ण नवियाए माउयाए दुद्ध पाउकामे, से ण निगच्छउ त्ति कट्टु जेणेव घणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता घणस्स गिह विहाडेइ ॥

३७ तए ण से घणे चिलाएण चोरसेणावडणा पचहिं चोरसएहिं सद्धि गिह घाइज्ज-माण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विगे सजायभए पचहिं पुत्तेहिं सद्धि एगत अवक्कमइ ॥

३८. तए णं से चिलाए चोरसेणावई घणस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ, घाएत्ता सुवहुं घण-कणग^३—^४रायण-मणि-मोत्तिय - सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार^५—साव-एज्जं सुमुम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिनिक्खमई, पडिनिक्ख-मित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

नगरगुत्तिएहिं चोरनिगह-पदं

३९ तए ण से घणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवहु घण-कणग^३ सुमुम च दारिय अवहरिय जाणित्ता महत्थ महग्घ महरिह पाहुड गहाय जेणेव नगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त महत्थ महग्घ महरिह पाहुड उवणेइ, उवणेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चारसेणावई^६ सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पचहिं चोरसएहिं सद्धि मम गिह घाएत्ता सुवहु घण-कणग^३ सुमुम च दारिय गहाय^७ ^८रायगिहाओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव^९ पडिगए । तं इच्छामो

१ निमण्णपडिनिसण्णसि (क) ।

२ ना० १।१८।३५ ।

३ स० पा०—कणग जाव सावएज्ज ।

४ वसू पाठ ३८ सूत्रस्य सक्षेपोस्ति ।

५. चोरसेणावई ५ (ख, ग) ।

६ असौ पाठ ३८ सूत्रस्य सक्षेपोस्ति ।

७ स० पा०—गहाय जाव पडिगए ।

ण देवाणुप्पिया ! सुसुमाए दारियाए कूव गमित्तए । तुब्भ णं देवाणुप्पिया !
से विपुले धण-कणगे, मम सुसुमा दारिया ॥

- ४० तए ण ते नगरगुत्तिया धणस्स एयमट्ठ पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता सण्णद्ध-वद्ध-
वम्मिय-कवया जाव' गहियाउहपहरणा महया-महया उक्किट्ठ'-सीहनाय-वोल-
कलकलरवेण पक्खुभिय-महा°समुद्ध-रवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ
निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरसेणावई तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता चिलाएण चोरसेणावइणा सद्धि सपलग्गा यावि होत्था ॥
- ४१ तए ण ते नगरगुत्तिया चिलाय चोरसेणावइ हय-महिय'-पवरवीर-घाइय-
विवडियचिध-धय-पडाग किच्छोवगयपाण दिसोदिसि° पडिसेहेति ॥
- ४२ तए ण ते पच चोरसया नगरगुत्तिएहि हय-महिय'-पवरवीर-घाइय-विवडिय-
चिध-धय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसोदिसि° पडिसेहिया समाणा त विपुल
धण-कणग विच्छड्डुमाणा य विप्पकिरमाणा य सव्वओ समता विप्पलाइत्था ॥
- ४३ तए ण ते नगरगुत्तिया त विपुल धण-कणग गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे
नगरे तेणेव उवागच्छति ॥

चिलायस्स चोरपल्लीतो पलायण-पदं

४४. तए ण से चिलाए तं चोरसेन्न तेहिं नगरगुत्तिएहि हय-महिय-पवर'वीर-
घाइय-विवडियचिध-धय-पडागं किच्छोवगयपाण दिसोदिसि पडिसेहिय
[पासित्ता ?]° भीए तत्थे' सुसुम दारिय गहाय एग मह अगामियं' दीहमद्ध
अडविं अणुप्पविट्ठे ॥
४५. तए ण से धणे सत्थवाहे सुसुमं दारिय चिलाएण अडवीमुहिं' अवहीरमाणिं
पासित्ता ण पंचहिं पुत्तेहिं सद्धि अप्पच्छट्ठे सण्णद्ध-वद्ध-वम्मिय-कवए' चिलायस्स
पयमग्गविहिं 'अणुगच्छमाणे अभिगज्जते'° हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जे-
माणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ ॥
- ४६ तए ण से चिलाए त धण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धि अप्पच्छट्ठे सण्णद्ध-वद्ध-
वम्मिय-कवय'' समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले अवीरिए
अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे नो सचाएइ सुसुम दारियं निव्वाहित्तए ताहे सते

१ ना० १।१८।३५ ।

२ स० पा०—उक्किट्ठ जाव समुद्धरवभूय ।

३ स० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहेति ।

४. स० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिया ।

५ स० पा०—पवर जाव भीए ।

६. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३७ सूत्रम् ।

७ आगामिय (ख, ग, घ) ।

८. अडवीमुहं (घ) ।

९. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम् ।

१०. अभिगच्छते अणुगिज्जमाणे (ख, ग) ।

११. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम् ।

तते परितते^१ नीलुप्पल^२-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं^३ असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसुमाए दारियाए उत्तमग छिदड, छिदित्ता त गहाय त अगामिय^४ अडवी अणुप्पविट्ठे ॥

४७ तए ण से चिलाए तीसे अगामियाए अडवीए तण्हाए [छुहाए ?] अभिभूए समाणे पम्हट्ट-दिसाभाए सीहगुह चोरपल्लि असपत्ते अतरा चेव कालगए ॥

निगमण-पदं

४८. एवामेव समणाउसो^१ । •जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झा-याण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय^२ पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरी^३स्स वतासवस्स पित्तासवस्स खेलासवस्स सुक्कासवस्स सोणिया-सवस्स^४ •दुरुय-उस्सास-निस्सासस्स दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-वहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिघाणग-वत-पित्त-सुकक-सोणियसभवस्स अघुवस्स अणित्तियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धसणधम्मस्स पच्छा पुर च ण अवस्स-विप्पजहणिज्जस्स^५ वण्णहेउ वा^६ •रुवहेउ वा वलहेउ वा विसयहेउ वा आहार^७ आहारेइ, से ण इहलोए चेव वहूण समणाण वहूणं समणीण वहूणं सावथाण वहूण सावियाण य हीलणिज्जे जाव^८ चाउरत ससारकतार अणुपरि-यट्ठिस्सइ—जहा व से चिलाए तक्करे ॥

घणस्स सुसुमाकए कदण-पद

४९ तए ण से घणे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं [सद्धि ?] अप्पच्छट्टे चिलाय तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समता परिघाडेमाणे-परिघाडेमाणे सते तते परितते नो सचाएइ चिलाय चोरसेणावइ साहर्त्थि गिण्हित्तए । से ण तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसुमा चिलाएण जीवियाओ ववरो-विया^१ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुसुम दारिय चिलाएण जीवियाओ ववरोविय पासड, पासित्ता परसुनियत्ते व्व चपगपायवे^२ •निव्वत्तमहे व्व इदलट्ठी विमुक्क-सधिवंधणे धरणितलसि सव्वगेहिं धसत्ति पडिए^३ ॥

५०. तए ण से घणे सत्थवाहे [पचहिं पुत्तेहिं सद्धि ?] अप्पच्छट्टे आसत्थे कूवमाणे कदमाणे विलवमाणे महया-महया सदेण कुहुकुहुस्स परुन्ने सुचिरकालं वाहप्पमोक्ख^४ करेइ ॥

१. परिसते (ख, ग) ।

२. स० पा०—नीलुप्पल^० ।

३. आगामिय (ख, ग, घ) ।

४. स० पा०—समणाउसो जाव पव्वइए ।

५. स० पा०—सोणियासवस्स जाव विद्धसण-

धम्मस्स ।

६. स० पा०—वण्णहेउ वा जाव आहारेइ ।

७. ना० १।३।२४ ।

८. ववरोविएल्लिया (ग, घ) ।

९. स० पा०—चपगपायवे^० ।

१०. वाहमोक्ख (क, ग, घ) ।

घणेणं अडवि-लघणट्ठं सुया-मंससोणियाहार-पदं

५१. तए ण से घणे सत्थवाहे पच्चीहिं पुत्तेहिं [सद्धि ?] अप्पच्छट्ठे चिलाय तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समता परिघाडेमाणे' तण्हाए छुहाए य परवभाहते' समाणे तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समता उदगस्स मग्गण-गवेसण करेमाणे' सते तते परित्तने निव्विण्णे तीसे अगामियाए अडवीए' उदग अणासाएमाणे जेणेव सुसुमा जीवियाओ ववरोविएल्लिया' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेट्ठ पुत्त घण' सद्दावेड, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु पुत्ता । सुसुमाए दारियाए अट्टाए चिलाय तक्कर सव्वओ समता परिघाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसण करेमाणा नो चेव ण उदग आसादेमो । तए ण उदग अणासा-एमाणा नो सचाएमो रायगिह सपावित्तए । तण्ण तुब्भे मम देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मम मस च सोणियं च आहारेह, तेण आहारेण अवथद्धा' समाणा तओ पच्छा इम अगामिय अडवि नित्थरिहिह', रायगिह च सपावेहिह', मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-सवधि-परियण ° अभिसमागच्छिहिह'', अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ॥

५२ तए ण से जेट्ठे पुत्ते घणेण सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे घण सत्थवाह एव वयासी—तुब्भे ण ताओ । अम्ह पिया गुरुजणया देवयभूया ठवका पइट्ठवका सरक्खगा सगोवगा । त कहण्ण अम्हे ताओ । तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भ ण मसं च सोणिय च आहारेमो ? त तुब्भे ण ताओ । 'ममं जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अगामिय'' अडवि नित्थरिहिह',
•रायगिह च सपावेहिह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणं अभिसमा-गच्छिहिह °, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ॥

१ परिघावेमाणे (घ) ।

दोषात् 'घणे' इति जातमिति सभाव्यते ।

२. परिव्वभमते (क), परव्वभते (ख, घ); परव्वभए

७. अव्ववद्धा (ख) ।

३ - (घ) । द्रष्टव्यम्—१।१।१८४ ।

८. नित्थरिहह (क), नित्थरेहिह (ग) ।

३ करेइ (क, ख, ग, घ) !

९. सपावेहह (क) ।

४ × (क, ख, ग), अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणे नो चेव ण उदग आसाएइ तए ण (घ) ।

१०. स० पा०—नाइ० ।

११. अभिसमागच्छिहह (क, ख, घ) ।

५ ववरोविया (घ) ।

१२. चिन्हाद्धितपाठ ५१ सूत्रात् किञ्चित् सक्षिप्तोऽस्ति ।

६ घणे (क, ख, ग, घ); यद्यपि सर्वासु प्रतिषु 'घणे' इति पाठ उपलभ्यते, पर ज्येष्ठपुत्रस्य विशेषणत्वेन 'घण' इत्येव उपयुज्यते । लिपि-

१३. नित्थरेह (क), नित्थरह (ख, ग) ।

स० पा०—तं चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स ।

- ५३ तए ण धण सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एवं वयासी—मा ण ताओ अम्हे जेट्ट भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तस्स ण मस च सोणिय च आहारेमो । त तुब्भे ण ताओ । ममं जीवियाओ ववरोवेह^१, •मस च सोणिय च आहारेह, अगामिय अडवि नित्थरिहिह, रायगिह च सपावेहिह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य^० आभागी भविस्सह । एव जाव पचमे पुत्ते ॥
- ५४ तए ण से धणे सत्थवाहे पचपुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता ते पचपुत्ते एव वयासी—मा ण अम्हे पुत्ता । एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो । एस ण सुसुमाए दारियाए सरीरे निप्पाणे^२ •निच्चेट्टे^३ जीवविप्पजडे । त सेय खलु पुत्ता । अम्ह सुसुमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेत्तए । तए ण अम्हे तेण आहारेण अवथद्धा समाणा रायगिह सपाउणिस्सामो ॥
- ५५ तए ण ते पचपुत्ता धणेण सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणा एयमट्ट पडिसुणेति ॥
- ५६ तए ण धणे सत्थवाहे पचहि पुत्तेहि सद्धि अरणिं करेइ, करेत्ता सरग करेइ, करेत्ता सरएण अरणिं महेइ, महेत्ता अग्गि पाडेइ, पाडेत्ता अग्गि सधुक्केइ^४ सधुक्केत्ता दारुयाइ पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गि पज्जालेइ, सुसुमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेइ । तेण आहारेण अवथद्धा समाणा रायगिह नयर सपत्ता मित्त-नाइ^५-•नियग-सयण-सवधि-परियण^० अभिसमण्णागया, तस्स य विउलस्स धण-कणग-रयण^६-•मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सत-सार-सावएज्जस्स^० आभागी जाया^७ ॥
- ५७ तए ण से धणे सत्थवाहे सुसुमाए दारियाए बहूइ लोइयाइ^८ •मयकिच्चाइ करेइ, करेत्ता कालेण^० विगयसोए जाए यावि होत्था ॥
- ५८ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए समोसडे ॥
- ५९ तए ण धणे सत्थवाहे सपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वइए । एक्कारसगवी । मासियाए सलेहणाए सोहम्मे कप्पे उववण्णे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निगमण-पद

६० जहा वि य ण जवू । धणेण सत्थवाहेण नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउं वा नो

१ स० पा०—ववरोवेह जाव आभागी ।

५ स० पा०—रयण जाव आभागी ।

२ स० पा०—निप्पाणे जाव जीवविप्पजडे ।

६ जाया यावि होत्था (ख, ग) ।

३ सधुक्केइ २ (क) ।

७ स० पा०—लोइयाइ जाव विगयसोए ।

४ स० पा०—नाइ^० ।

वलहेउं वा नो विसयहेउ वा सुसुमाए दारियाए मससोणिए आहारिए, नन्नत्थं एगाए रायगिहं-सपावणट्टयाए ॥

६१ एवामेव समणाउसो । जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गथी वा' •दायरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वडए ममाणे ° इमस्स ओरालियसरीरस्स वतासवस्स पित्तामवस्स [खेलामवस्स ?] सुक्कासवस्स सोणियासवस्स' •दुर्य-उस्साम-निस्सासस्स दुर्य-मुत्त-पुरीस-पूय-वहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिघाणग-वत्त-पित्त-मुक्क-सोणियसंभवस्स अधुवस्स' अणितियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धसणधम्मस्स पच्छा पुरं च ण ° अवस्सविप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउ वा नो रुवहेउं वा नो वलहेउ वा नो विसयहेउ वा आहारं आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमण-सपावणट्टयाए, से ण इहभवे चेव वहूण समणाण वहूण समणीण वहूण सावयाण वहूण सावियाण य अच्चणिज्जे जाव' चाउरंतं ससारकतार वीईवडस्सड—जहा व से सपुत्ते घणे सत्थवाहे ॥

६२ एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेणं अट्टारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो चिलाडपुत्तो सुसुमगिद्धो अकज्ज-पडिवद्धो ।
 घण-पारद्धो पत्तो, महाडवि वसण-सयकलियं ॥१॥
 तह जीवो विसय-सुहे, लुद्धो काऊण पावकिरियाओ ।
 कम्मवसेण पावइ, भवाडवीए महादुक्ख ॥२॥
 घणसेट्ठी विव गुरुणो, पुत्ता इव साहवो भवो अडवी ।
 सुयमसमिवाहारो, रायगिह इह सिव नेय ॥३॥
 जह अडवि-नियर-नित्थरण-पावणत्थं तएहि सुयमस ।
 भुत्त तहेह साहू, गुरुण आणाइ आहार ॥४॥
 भव-लघण-सिव-साहणहेउ भुजति ण मेहीए ।
 वण्ण-वल-रुव-हेउं, च भावियप्पा महासत्ता ॥५॥

१. अण्णत्थ (ख, ग) ।

२. रायगिह (क्व) ।

३. सं० पा०—निग्गथी वा ।

४. सं० पा०—सोणियासवस्स जाव अवस्स ° ।

५. ना० १।२।७६ ।

६. ना० १।१।७ ।

एगूणवीसइमं अज्भयणं

पुंडरीए

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण अट्टारसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एगूणवीसइमस्स ण भते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू । तेण कालेणं तेण समएण इहेव जवुद्धीवे दीवे पुव्वविदेहे, सीयाए महानईए उत्तरिल्ले कूले, नीलवतस्स [वासहरपव्वयस्स ?] दाहिणेण, उत्तरिल्लस्स सीयामुहवणसडस्स पच्चत्थिमेण, एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेण, एत्थ ण पुक्खलावई नाम विजए पण्णत्ते ॥
- ३ तत्थ ण पुंडरीगिणी^१ नामं रायहाणी पण्णत्ता—नवजोयणवित्थिण्णा दुवालस जोयणायामा जाव' पच्चक्ख देवलोगभूया पासार्इया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा ॥
- ४ तीसे ण पुंडरीगिणीए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए नलिणिवणे नाम उज्जाणे ॥
५. तत्थ ण पुंडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे नाम राया होत्था ॥
- ६ तस्स ण पउमावई नाम देवी होत्था ॥
- ७ तस्स ण महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, त जहा—पुंडरीए य कडरीए य-- सुकुमालपाणिपाया^२ । पुंडरीए जुवराया ॥

कंडरीयस्स पव्वज्जा-पद

८. तेण कालेण तेण समएण थेरागमण । महापउमे राया निग्गए । धम्म सोच्चा

१ ना० १।१।७ ।

३. ना० १।५।२ ।

२ पुंडरिगिणी (क, ख, ग) ।

४. पू०—ओ० सू० १४३ ।

पुडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पुडरीए राया जाए, कडरीए जुवराया । महा-
पउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ ॥

६ तए ण थेरा वहिया जणवयविहार विहरति ॥

१०. तए ण से महापउमे बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता जाव' सिद्धे ॥

११. तए ण थेरा अण्णया कयाइ पुणरवि पुडरीगिणीए^१ रायहाणीए नलिण [णि ?]
वणे उज्जाणे समोसढा । पुडरीए राया निग्गए । कडरीए महाजणसद् सोच्चा
जहा महाबलो जाव^२ पज्जुवासइ । थेरा धम्म परिकहेति । पुडरीए समणोवासए
जाए जाव^३ पडिगए ॥

१२ तए ण कडरीए^४ •थेराण अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुट्टे उट्टाए उट्टेइ,
उट्टेत्ता थेरे तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता
नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते । निग्गथ पावयण जाव^५ से जहेय
तुव्भे वयह । ज नवर—पुडरीय राय आपुच्छामि^६ । •तओ पच्छा मुडे भवित्ता ण
अगाराओ अणगारिय^७ पव्वयामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया ।

१३. तए ण से कडरीए^८ थेरे वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता थेराण अतियाओ
पडिनिक्खमइ, तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ^९ •महयाभड-चडगर-पहकरेण
पुडरीगिणीए नयरीए मज्झमज्झेण जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता चाउग्घटाओ आसरहाओ^{१०} पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव
पुडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल^{११} •परिग्गहिय दसणह
सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु^{१२} एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । मए
थेराण अतिए धम्मे निसते, से^{१३} •वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ।
त इच्छामि ण देवाणुप्पिया । तुव्भेहि अन्भणुण्णाए समाणे थेराण अतिए
मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय^{१४} पव्वइत्तए ॥

१४. तए ण से पुडरीए राया कडरीय एव वयासी—मा ण तुम भाउया । इयाणि

१. ना० १।५।८४ ।

२. पुडरगिणीए (ग) ।

३. भग० ११।१६४-१६६ ।

४. उवा० १।५२ ।

५. स० पा०—कडरीए उट्टाए उट्टेइ उट्टेत्ता
जाव से जहेयं ।

६. ना० १।१।१०१ ।

७. स० पा०—आपुच्छामि तए ण जाव पव्व-
यामि ।

८. कंडरीए जाव [क, ख, ग, घ] ।

९. स० पा०—दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ ।

१०. स० पा०—करयल जाव एव ।

११. स० पा०—से धम्मे अभिरुइए । तए ण
देवा जाव पव्वइत्तए ।

मुडे' • भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय° पव्वयाहि । 'अह ण'^३ तुम महाराया-
भिसेएण^३ अभिसिच्चामि ॥

- १५ तए णं से कडरीए पुडरीयस्स रण्णो एयमट्ट नो आढाइ^५ • नो परियाणाइ^५ •
तुसिणीए सच्चिट्ठइ ॥
- १६ तए ण से पुडरीए राया कडरीय दोच्चपि तच्चपि एव वयासी^६—• मा ण तुम
भाउया ! इयाणि मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय पव्वयाहि । अह ण
तुम महारायाभिसेएण अभिसिच्चामि ॥
- १७ तए ण से कडरीए पुडरीयस्स रण्णो एयमट्ट नो आढाइ नो परियाणाइ°
तुसिणीए सच्चिट्ठइ ॥
- १८ तए ण पुडरीए कडरीय कुमार जाहे नो सचाएड व्हूहिं आघवणाहि य पण्णव-
णाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्ण-
वित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामए चेव एयमट्ट अणुमन्तिथा जाव°
निक्खमणाभिसेएण अभिसिच्चइ जाव° • थेराण सीसभिक्ख दलयइ । पव्वइए ।
अणगारे जाए । एक्कारसगवी ॥
१९. तए ण थेरा भगवतो अण्णया कयाइ पुडरीगिणीओ नयरीओ नलिणिवणाओ
उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, वहिया जणवयविहार विहरति ॥

कंडरीयस्स वेयणा-पदं

२०. तए ण तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहि अतेहि य पतेहि य^७ • तुच्छेहि य
लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाइक्कतेहि य पमा-
णाइक्कतेहि य निच्च पाणभोयणेहि य पयइसुकुमालस्स सुहोचियस्स सरीरगसि
वेयणा पाउब्भूया—उज्जला विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा दुरहियासा ।
पित्तज्जर-परिगयसरीरे° दाहवक्कतीए^८ यावि विहरइ ॥
२१. तए ण थेरा अण्णया कयाइ जेणेव पोडरीगिणी नयरी तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छिता नलिणीवणे समोसढा । पुडरीए निग्गए । घम्म सुणेइ ॥

कंडरीयस्स तिगिच्छा-पदं

२२ तए ण पुडरीए राया घम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ,

१ स० पा०—मुडे जाव पव्वयाहि ।

७ ना० १।५।२८ ।

२ अहण्ण (ग) ।

८. ना० १।५।३० ।

३ महयामहया रायाभिसेएण (ख, ग) ।

९ स० पा०—जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कतीए ।

४. स० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए ।

१०. शेलकाव्ययने 'कडु-दाह-पित्तज्जर-परिगय-
सरीरे' इति पाठो लभ्यते ।

५ द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम् ।

६. स० पा०—वयासी जाव तुसिणीए ।

उवागच्छत्ता कडरीय वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरग सव्वावाह सरोग पासइ, पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता थेरे भगवते वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते । कडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहि' ओसह-भेसज्ज'-●भत्त-पाणेहि° तेगिच्छ आउटामि । त तुव्भे ण भते । मम जाणसालासु समोसरह ॥

२३ तए ण थेरा भगवतो पुडरीयस्स [एयमट्ट ?] पडिसुणेति^१, ●पडिसुणेत्ता जेणेव पुडरीयस्स रण्णो जाणसाला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता फासु-एसणिज्ज पीढ-फलग-सेज्जा-मथारग ° उवसपज्जित्ता ण विहरति ॥

२४ तए ण पुडरीए राया °तेगिच्छिए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुव्भेण देवाणुप्पिया । कडरीयस्स फासु-एसणिज्जेण ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेण तेगिच्छ आउट्टेह ॥

२५. तए ण ते तेगिच्छिया पुडरीएण रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्टा कडरीयस्स अहापवत्तेहि ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहि तेगिच्छं आउट्टेति, मज्जपाणग च से उवदिसति ॥

२६ तए ण तस्स कडरीयस्स अहापवत्तेहि ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहि मज्जपाणएण य से रोगायके उवसते यावि होत्था—हट्टे वलियसरीरे^५ जाए ववगयरोगायके ° ॥

कंडरीयस्स पमत्तविहार-पदं

२७ तए ण थेरा भगवतो 'पुडरीय रायं आपुच्छति, आपुच्छित्ता'^६ वहिया जणवय-विहार विहरति ॥

२८ तए ण से कडरीए ताओ रोयायकाओ विप्पमुक्के समाणे तसि मणुण्णसि असण-पाण-खाडम-साइमसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्जभोववण्णे नो सचाएइ पुडरीय आपुच्छित्ता वहिया अब्भुज्जएण' ●जणवयविहारेण ° विहरित्तए तत्थेव ओसन्ने जाए ॥

पुडरीएण पडिवोह-पद

२९ तए ण से पुडरीए इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे ण्हाए अतेउर-परियाल'-सपरिवुडे जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवाच्छइ, उवागच्छित्ता

१. अहापवत्तेहि (ख), अहावत्तेहि (ग), अहा-पवत्तेहि (घ) ।

२. म० पा०—भेसज्जेहि जाव तेगिच्छ ।

३. म० पा०—पडिसुणेति जाव उवसपज्जित्ता ।

४. स० पा०—जहा मडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए ।

५. १।५।११६ सूत्रे 'गल्लसरीरे' इति पाठोस्ति ।

६. पोडरीयं पुच्छति २ (ख, ग) ।

७. स० पा०—अब्भुज्जएण जाव विहरित्तए ।

८. परियाल सद्धि (क, घ) ।

कडरीय तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता एव वयासी—धन्नेसि ण तुम देवाणुप्पिया । कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे । सुलद्धे ण देवाणुप्पिया । तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले जे ण तुम रज्ज च^१ •रट्ट च कोस च कोट्टागार च वल च वाहण च पुर च^२ अतेउर च विच्छुत्ता विगोवइत्ता,^३ •दाण च दाइयाण परिभायइत्ता, मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय^४ पव्वइए, अहण्ण अघन्ने अकयत्थे अकयपुण्णे अकयलक्खणे रज्जे य^५ •रट्टे य कोसे य कोट्टागारे य वले य वाहणे य पुरे य^६ अतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए^७ •गिद्धे गट्ठिए^८ अज्झोववण्णे नो सचाएमि जाव पव्वइत्तए । त धन्नेसि ण तुम देवाणुप्पिया^९ ! •कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे^{१०} । सुलद्धे ण देवाणुप्पिया । तव माणुस्सए जम्मजीवियफले ॥

३०. तए ण से कडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ट नो आढाइ^{११} •नो परियाणाइ^{१२} तुसिणीए^{१३} सच्चिट्ठइ ॥

३१. तए ण से कडरीए अणगारे पोडरीएण दोच्चपि तच्चपि एव वुत्ते समाणे-अकामए अवसवसे^{१४} लज्जाए गारवण य पुंडरीय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहि सद्धि वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

कंडरीयस्स पव्वज्जा-परिच्चाय-पद

३२. तए ण से कडरीए थेरेहि सद्धि कच्चि काल उग्गउग्गेण विहरित्ता तओ पच्छा समणत्तण-परितते समणत्तण-निव्विण्णे समणत्तण-निव्वभच्छिए समणगुण-मुक्क-जोगी थेराण अतियाओ सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुंडरीगिणी नयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगसि निसीयइ, नीसी-इत्ता ओहयमणसकप्पे^{१५} •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए^{१६} भियायमाणे सच्चिट्ठइ ॥

३३. तए ण तस्स पोडरीयस्स अम्मघाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगसि ओहयमणसकप्प जाव^{१७} भियायमाण पासइ, पासित्ता जेणेव पुंडरीए राया

१ म० पा०— रज्ज च जाव अतेउर ।

७ स० पा०— आढाइ जाव सच्चिट्ठइ ।

२ स० पा०— विगोवइत्ता जाव पव्वइए ।

८ द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम् ।

३ स० पा०— रज्जे य जाव अतेउरे ।

९ अवसव्वसे (ग) ।

४ स० पा०— मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे ।

१० स० पा०— ओहयमणसकप्पे जाव भियाय-माणे ।

५ राय० सू० ६६५ ।

६ स० पा०— देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे ।

११ ना० १।१।३२ ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुडरीय राय एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया । तव पियभाउए^१ कडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवर-पायवस्स अहे पुढविसिलापट्टे ओह्यमणसंकप्पे जाव भियायइ ॥

३४. तए ण से पुडरीए अम्मधाईए एयमट्ट सोच्चा निसम्म तहेव सभते समाणे उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता अतेउर-परियालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया^२ •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ° कडरीय अणगार तिवखुत्तो^३ •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता ° एव वयासी—धन्नेसि ण तुमं देवाणुप्पिया^४ । °कयत्ये कयपुण्णे कयलक्खणे सुलद्धे ण देवाणुप्पिया । तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले जाव^५ अगाराओ अणगारिय ° पव्वइए, अह ण अधन्ने अकयत्ये अकयपुण्णे अकयलक्खणे जाव^६ नो सचाएमि^७ पव्वइत्तए । त धन्नेसि ण तुमं देवाणुप्पिया । जाव^८ सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले ॥

३५ तए ण कडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सच्चिट्ठइ । दोच्चपि तच्चपि^९ •पुडरीएण एव वुत्ते समाण तुसिणीए ° सच्चिट्ठइ ॥

३६ तए ण पुडरीए कडरीय एव वयासी—अट्ठो भते^{१०} ! भोगेहिं ? हता ! अट्ठो ॥

३७ तए ण से पुडरीए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कडरीयस्स महत्थ^{११} •महग्घ महुरिह विउल ° रायाभिसेय उवट्टवेह जाव^{१२} रायाभिसेएण अभिसिंचति ॥

पुडरीयस्स पव्वज्जा-पदं

३८. तए ण से पुडरीए सयमेव पंचमुट्ठिय लोय करेइ, सयमेव चाउज्जामं धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कडरीयस्स सतिय आयारभडग गेण्हइ, गेण्हित्ता इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ—कप्पइ मे थेरे वदित्ता नमंसित्ता थेराण अतिए चाउज्जाम धम्म उवसपज्जित्ता ण तओ पच्छा आहार आहारित्तए त्ति कट्टु इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हित्ता णं पुडरीगिणीए^{१३} पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

१ पिउभाउए (ख, ग), भाउए (घ) ।

२. स० पा०—असोगवणिया जाव कडरीय ।

३ म० पा०—तिवखुत्तो जाव एव ।

४ म० पा०—देवाणुप्पिया जाव पव्वतिए ।

५,६. ना० १।१६।२६ ।

७. द्रष्टव्यम्—२६ सूत्रम् ।

८. ना० १।१६।२६ ।

९. स० पा०—तच्च पि जाव सच्चिट्ठइ ।

१०. हते (ग) ।

११. स० पा०—महत्थ जाव रायाभिसेय ।

१२. ना० १।१।१७,११८ ।

१३. पोडरिगिणीए (क, ख) ।

कंडरीयस्स मच्चु-पदं

३९. तए णं तस्स कडरीयस्स रण्णो त पणीय पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स अइजागरएण य अइभोय^१-प्पसगेण य से आहारे नो सम्म परिणमइ^२ ॥
४०. तए ण तस्स कडरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणसि पुव्वरत्ता-वरत्तकालसमयसि सरीरगसि वेयणा पाउव्वभूया—उज्जला विउला^३ *कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा^४ दुरहियासा । पित्तज्जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ ॥
४१. तए ण से कडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अतेउरे य^५ *माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिण्णं गिद्धे गढिण्णं^६ अज्झोववण्णे अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवसवसे कालमासे काल किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

निगमण-पदं

४२. एवामेव समणाउसो^१ । *जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा आयरिय-उवज्झायाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय^२ पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोए आसाएइ^३ *पत्थयइ पीहेइ अभिलसइ, से ण इह भवे चेव वहूण समणाण वहूण समणीण वहूण सावयाण वहूण सावियाण य हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे, परलोए वि य ण आगच्छइ वहूणि दडणाणि य मुडणाणि य तज्जणाणि य तालणाणि य जाव^४ चाउरत्त ससार-कतार भुज्जो-भुज्जो^५ अणुपरियट्टिस्सइ - जहा व से कडरीए राया ॥

पुडरीयस्स आराहणा-पदं

४३. तए ण से पुडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता थेराण अतिए दोच्चपि चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, वीयाए पोरिसीए भाण भियाइ, तइयाए पोरिसीए जाव^६ उच्च-नीय-मज्झि-माइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरिय अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयण पडिगाहेइ, पडिगाहेत्ता अहापज्जत्तमित्ति कट्टु पडिनियत्तेइ, जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाण पडिदसेइ, पडिदसेत्ता थेरेहिं भगवतेहिं अठ्ठभणुण्णाए समाणे अमुच्छिण्णं अगिद्धे अगढिण्णं अणज्झोववण्णे

१. भोय (ख, ग) ।

२. परिणए (ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—विउला पगाढा जाव दुरहियासा ।

४. सं० पा०—अतेउरे य जाव अज्झोववण्णे ।

५. सं० पा०—समणाउसो जाव पव्वइए ।

६. सं० पा०—आसाएइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ ।

७. ना०—१।३।२४ ।

८. ना० १।१६।१३ ।

- विलमिव पण्णगभूएण अप्पाणेण' तं फासु-एसणिज्जं असण-पोण-खाइम-साइमं
सरीरकोट्टुगंसि पक्खवइ ॥
- ४४ तए ण तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स त कालाइकत अरसं विरसं सीयलुक्ख
पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय
जागरमाणस्स से आहारे नो सम्म परिणमइ ॥
- ४५ तए ण तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउव्भूया --उज्जला'
•विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा° दुरहियासा । पित्तज्जर-परिगय-सरीरे
दाहवक्कतीए विहरइ ॥
४६. तए ण से पुंडरीए अणगारे अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे
करयल'•परिग्गहिय दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अर्जलि कट्टु° एव वयासी —
नमोत्थु णं अरहताण भगवंताणं जाव' सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण संपत्ताणं ।
नमोत्थु ण थेराण भगवताण मम धम्मायरियाण धम्मोवएसयाणं । पुव्वि पि
य ण मए थेराणं अतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव' वहिद्धादाणे'
पच्चक्खाए', •इयारिणि पि णं अह तेसि चेव अतिए सव्व पाणाइवाय
पच्चक्खामि जाव वहिद्धादाण पच्चक्खामि । सव्व असण-पाण-खाइम-साइम
पच्चक्खामि चउव्विह पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जपि य इमं
सरीर इट्टु कत' त पि य ण चरिमेहि उस्सास-नीसासेहि वोसिरामि त्ति
कट्टु° आलोइय-पडिक्कते कालमासे काल किच्चा सव्वट्टुसिद्धे उववण्णे ।
तओ अणतर उव्वट्टिता महाविदेहे वासे सिज्जिह्हिइ' •बुज्जिह्हिइ मुच्चिह्हिइ
परिनिव्वाहिइ° सव्वदुक्खाणमंत काहिइ ॥

निगमण-पदं

४७. एवामेव समणाउसो° ! •जो अम्ह निगथो वा निगथो वा आयरिय-उवज्जभायाणं
अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे माणुस्सएहि

१. अत्तणेण (ख) ।

२. सं पा० —उज्जला जाव दुरहियासा ।

३. सं पा०—करयल जाव एव ।

४. ओ० मू० २१ ।

५. ना० १।५।५६ ।

६. मिच्छादमणसल्ले (क, ख, ग, घ) अस्या-

ध्ययनस्य ३८,४३ सूत्रे 'चाउज्जामं धम्म

पडिक्कज्ज' इति पाठोऽस्ति । उपलब्धपाठश्च

अस्य विसवादी वर्तते । मेघकुमाराधिकारात्

पूरितोसौ पाठ तेनात्रापि विसवादो जात ।

द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

७ सं पा०—पच्चक्खाए जाव आलोइय० ।

चिह्नान्ति. पाठः १।१।२०६ सूत्रेण पूरित. ।

८. पू०—ना० १।१।२०६ ।

९ सं पा०—सिज्जिह्हिइ जाव सव्वदुक्खाण ।

१०. सं० पा०—समणाउसो जाव पव्वइए ।

कामभोगेहि नो सज्जइ नो रज्जइ^१ •नो गिज्भइ नो मुज्भइ नो अज्भोवज्भइ^०
 नो विप्पडिघायमावज्जइ^२, से ण इहभवे चेव बहूण समणाण बहूण समणीण
 बहूण सावगाण बहूण सावियाण य अच्चणिज्जे वदणिज्जे [नमसणिज्जे ?]
 पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मगल देवय चेइय [विण-
 ण ?] पज्जुवासणिज्जे^३ भवइ,
 परलोए वि य ण नो आगच्छइ बहूणि दडणाणि य मुडणाणि य तज्जणाणि य
 तालणाणि य जाव^४ चाउरत ससारकतार वीईवइस्सइ—जहा व से पुडरीए
 अणगारे ॥

निकखेव-पद

४८ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण सयसबुद्धेण
 जाव^५ सिद्धिगइनामघेज्ज ठाण सपत्तेण एगूणवीसइमस्स नायज्भयणस्स अयमट्टे
 पण्णत्ते ॥

वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा—

वाससहस्सपि जइ, काऊण सजम सुविउलपि ।
 अते किलिट्टुभावो, न विसुज्भइ कडरीउ व्व ॥१॥
 अप्पेण त्ति कालेण, केइ जहा गहिय-सील-सामण्णा ।
 साहति नियय-कज्ज, पुडरीय-महारिसि व्व जहा ॥२॥

४९. एवं खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^६ सपत्तेण छट्टस्स अगस्स
 पढमस्स सुयखधस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ।

परिसेसो

एयस्स^७ सुयखधस्स एगूणवीस अज्भयणाणि^८ एक्कासरगाणि^९ एगूणवीसाए
 दिवसेसु समप्पति ।

१ स० पा०—रज्जइ जाव नो विप्पडिघाय० ।

२. विणिग्घाय० (क) ।

३. 'पज्जुवासणिज्जे' इति पदानन्तर सर्वासु
 प्रतिपु 'त्ति कट्टु' इति पाठोस्ति, किन्तु
 [१।२।७३] सूत्रानुसार अत्र 'भवइ' इति
 पाठो युज्यते ।

४. ना० १।३।२४ ।

५. ना० १।१।७ ।

६. ना० १।१।७ ।

७. तस्स ण (ख, ग) ।

८. नायज्भयणाणि (क) ।

९. एक्कारसाणि (ख), एक्करसाणाणि (ग) ।

बीओ सुयखंधो

पढमो वगो

पढमं अज्जयणं

काली

उक्खेव-पदं

- १ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे होत्था—वण्णओ^१ ॥
- २ तस्स ण रायगिहस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ^२ ण गुण-सिलए नाम चेइए होत्था—वण्णओ^३ ।
- ३ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्जसुहम्मा नाम थेरा भगवतो जाइसंपण्णा कुलसपण्णा जाव^४ चोइसपुव्वी चउनाणोवगया पच्चहि अणगारसएहि सिद्धि सपरिवुडा पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगाम दूइज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुणसिलए चेइए^५ •तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हिता^६ सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरंति । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा जामेव दिसि पाउव्वभूया, तामेव दिसि पडिगया ॥
४. तेण कालेण तेण समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स [जेट्टे ?] अतेवासी अज्जजंवू नामं अणगारे^७ जाव^८ •अज्जसुहम्मस्स थेरस्स नच्चासण्णे नाइदूरे

१ ओ० मू० १ ।

२ तत्थ (स, ग) ।

३ ओ० मू० २-१३ ।

४ ना० १।१।४ ।

५. सं० पा०—चेइए जाव सजमेण ।

६. म० पा०—अणगारे जाव पज्जुवासमाणे ।

७. ना० १।१।६,७ ।

सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएण० पज्जुवासमाणे एव वयासी—जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण छट्टेस्स अगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स नायाण अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भते ! सुयक्खधस्स धम्मकहाण समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

५ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण धम्मकहाण दस वग्गा पण्णत्ता त जहा—

१. चमरस्स अग्गमहिंसीण पढमे वग्गे ।

२ वलिस्स वइरोयणिदस्स' वइरोयणरण्णो अग्गमहिंसीण वीए वग्गे ।

३ असुरिंदवज्जियाण दाहिणिल्लाण 'इदाण अग्गमहिंसीण' तईए वग्गे ।

४ उत्तरिल्लाण असुरिंदवज्जियाण भवणवासि'-इदाण अग्गमहिंसीण चउत्थे वग्गे ।

५ दाहिणिल्लाण वाणमतराण इदाण अग्गमहिंसीण पचमे वग्गे ।

६ उत्तरिल्लाण वाणमतराण इदाणं अग्गमहिंसीण छट्ठे वग्गे ।

७. चदस्स अग्गमहिंसीण सत्तमे वग्गे ।

८ सूरस्स अग्गमहिंसीण अट्ठमे वग्गे ।

९ सक्कस्स अग्गमहिंसीण नवमे वग्गे ।

१०. ईसाणस्स य अग्गमहिंसीणं दसमे वग्गे ।

६ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण धम्मकहाणं दस वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

७. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा—काली, राई, रयणी, विज्जू", मेहा ॥

८ जइ ण भते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव'" संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव'" संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

९ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । चेल्लणा देवी । सामी समोसडे । परिसा निग्गया जाव'" परिसा पज्जुवासइ ॥

१, २, ३. ना० १।१।७ ।

४. × (क, ख, ग) ।

५. × (क, ख, ग) ।

६. भवणवइ (क) ।

७, ८, ९ ना० १।१।७ ।

१०. विज्जा (क, ग) ।

११, १२. ना० १।१।७

१३. ओ० सू० ५२ ।

कालीदेवी-पद

१० तेण कालेण तेण समएण काली देवी चमरचचाए रायहाणोए कालिवडेंसगभवणे कालसि सीहासणसि चउर्हि सामाणियसाहस्सीर्हि चउर्हि महयरियार्हि^१ सपरिवाराहि, तिर्हि परिसार्हि सत्तहि अणिएर्हि सत्तहि अणियाहिर्वईर्हि सोलसर्हि आयरक्खदेवसाहस्सीर्हि अण्णेहि य वहूर्हि कालिवडिसय^२-भवणवासीर्हि असुरकुमारेर्हि देवेर्हि देवीहि य सद्धि सपरिवुडा महयाहय^३-^४नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइग-पडुप्पवादियरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणी^५ विहरइ । इम च ण केवलकप्प जबुद्धीवं दीव विउलेण ओहिणा 'आभोएमाणी-आभोएमाणी'^६ पासइ ॥

कालीए भगवओ वंदण-पदं

११ एत्थ^७ समणं भगव महावीर जबुद्धीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हत्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाण पासइ, पासित्ता हट्टुट्टु-चित्तमाणदिया पीइमणा^८ •परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाण^९-हियया सीहासणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्टु पयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वाम जाणु अचेइ, अचेत्ता दाहिण जाणु घरणियलसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणियलसि निवेसेइ^{१०}, ईसि पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता कडग-तुडिय-थभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयल^{११} •परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि^{१२} कट्टु एव वयासी—नमोत्थु ण अरहताण भगवताण जावं सिद्धिगइनामधेज्जं ठाण सपत्ताण । नमोत्थु ण समणस्स भगवओ महावीरस्स जावं^{१३} सिद्धिगइनामधेज्जं ठाण सपाविउकामस्स । वंदामि ण भगवत तत्थगय इहगया, पासउ मे समणे भगव महावीरे तत्थगए इहगय ति कट्टु वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता सीहासणवरसि पुरत्था-भिमुहा निसण्णा ॥

१२ तए ण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे^{१४} •अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^{१५} समुप्पज्जित्था—सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्तए^{१६}

१. मयहरियाहि (क, ख, ग, घ), महरियाहि (वव) । ८ स० पा०—करयल जाव कट्टु ।

द्रष्टव्यम्—१।१६।१५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् । ९, १० ओ० सू० २१ ।

२ °वडेंसय (ख, ग) ।

११. स० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

३. स० पा०—महयाहय जाव विहरइ ।

१२. वदित्ता (क, ख, ग, घ), सं० पा०—वंदि-

४ आभोएमाणी (क, ख, ग, घ) ।

त्तए जाव पज्जुवामित्तए । असौ पाठ 'राय-

५. जत्थ (क, घ), यत्थ (ग) ।

पसेणइय' सूत्रस्य वृत्त्यनुसारेण पूरित ।

६. स० पा० पीइमणा जाव हियया ।

द्रष्टव्यम्—'रायपसेणइय' वृत्ति पृ० ५१, ५२ ।

७ निमेइ (क, ग) ।

●नमसित्तए सक्कारित्तए सम्माणित्तए कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं °
पज्जुवासित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ,
सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव महावीरे^१
विहरइ एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिय देइ जाव^२ दिव्व सुरवराभिगमण-
जोग करेह^३ ●य कारवेह य करेत्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव एवमाणत्तिय °
पच्चप्पिणह । ते वि तहेव करेत्ता जाव^४ पच्चप्पिणत्ति, नवर—जोयणसहस्स-
वित्थिण्ण जाण । सेस तहेव । तहेव नामगोय साहेइ, तहेव नट्टविहि उवदसेइ
जाव^५ पडिगया ॥

गोयमस्स पसिण-पदं

१३ भतेति । भगव गोयमे समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता
एव वयासी—कालीए णं भते । देवीए सा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई
दिव्वे देवाणुभाए कहिं गए ? कहिं अणुप्पविट्ठे ?
गोयमा । सरीर गए सरीर अणुप्पविट्ठे । कूडागारसाला दिट्ठतो^६ ।
अहो ण भते । काली देवी महिड्ढिया महज्जुइया महव्वला महायसा महासोक्खा
महाणुभागा ॥

१४ कालीए णं भते । देवीए सा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभागे
किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए^७ ?

भगवओ उत्तरे काली-पदं

१५. ●गोयमात्ति । समणे भगव महावीरे भगव गोयम आमतेत्ता एव वयासी—
एव ° खलु गोयमा । तेण कालेण तेण समएण इहेव ज्जुदीवे दीवे भारहे वासे
आमलकप्पा नामं नयरी होत्था—वण्णओ^८ । अवसालवणे चेइए । जियसत्तू राया ॥

१६ तत्थ ण आमलकप्पाए नयरीए काले नाम गाहावई होत्था—अड्ढे जाव^९
अपरिभूए ॥

१७. तस्स ण कालस्स गाहावइस्स कालसिरी नाम भारिया होत्था—सुकुमाल-
पाणिपाया जाव^{१०} सुरूवा ॥

१८ तस्स ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली नामं

१. पू०—राय० सू० ६ ।

७. पू०—राय० सू० ६६७ ।

२. राय० सू० ६ ।

स० पा०—एव जहा सूरियाभस्स जाव एव ।

३. स० पा०—करेह करेत्ता जाव पच्चप्पिणह ।

८. ओ० सू० १ ।

४. राय० सू० १०-४६ ।

९. ना० १।५।७ ।

५. राय० सू० ४७-१२० ।

१०. ना० १।१।१७ ।

६. राय० सू० १३३ ।

दारिया होत्था—वड्ढा वड्ढुकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी^१
निव्विण्णवरा वरगपरिवज्जिया^२ वि होत्था ॥

कालीए पव्वज्जा-पदं

१६ तेणं कालेणं तेणं समएण पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे^३ •तित्थगरे
सहसबुद्धे पुरिसोत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुडरीए पुरिसवरगधहत्थी
अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए जीवदए दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा
धम्मवरचाउरत-चक्कवट्ठी अप्पडिहय-वरनाणदंसणधरे वियट्ठच्छउमे अरहा
जिणे केवली जिणे जाणए तिण्णे तारए मुत्ते मोयए बुद्धे वोहए सव्वण्णू सव्व-
दरिसी नवहत्थुस्सेहे समचउरससठाणसंठिए वज्जग्गिसहनारायसघयणे जल्ल-
मल्लकलकसेयरहियसरीरे सिवमयलमख्यमणतमक्खयमव्वावाहमपुणरावत्तग
सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण संपाविउकामे^४ सोलसहिं समणसाहस्सीहि अट्ठत्तीसाए
अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम
दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे आमलकप्पाए नयरीए वहिया^५ अवसालवणे
समोसढे । परिसा निग्गया जाव^६ पज्जुवासइ ॥

२०. तए णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठं^७•तुट्ठ-चित्तमाणदिया
पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण^८ हियया जेणेव अम्मापियरो
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलं^९ परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त
मत्थए अज्जलि कट्ठुं^{१०} एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा
पुरिसादाणीए आइगरे^३ •तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव
आमलकप्पाए नयरीए अवसालवणे अहापडिरुवं ओग्गह ओग्गिण्हित्ता सजमेण
तवसा अप्पाणं भावेमाणे^{११} विहरइ । त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुव्भेहिं
अव्वभणुण्णाया समाणी पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवदिया
गमित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिए ! मा पडिवघ करेहि ॥

२१. तए ण सा काली दारिया अम्मापिईहिं अव्वभणुण्णाया समाणी हट्ठं^७•तुट्ठ-चित्त-
माणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण^८ हियया ण्हाया
कयवलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाई वत्थाइ

१. •पुत्तयणी (ग) ।

२. वरपरिवज्जिया (घ), वरवज्जिया (वृ) ।

३. स० पा०—जहा वद्धमाणसामी नवर नव-
हत्थुस्सेहे^{१०} (क, ख, ग, घ) ।

४. पू०—ओ० सू० १६ ।

५. ओ० सू० ५२ ।

६. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

७. स० पा०—करयल जाव एव ।

८. स० पा०—आइगरे जाव विहरइ ।

९. स० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा चेडिया-चक्कवाल-परिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिक्का जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिक्का धम्मिय जाणपवर दुरूढा ॥

२२ तए ण सा काली दारिया धम्मिय जाणप्पवर दुरूढा समाणी एवं जहा देवई^१ तहा^२ पज्जुवासइ ॥

२३ तए ण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्म कहेइ ॥

२४. तए ण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ^३•तुट्ठ-चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण^४ हियया पास अरह पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्धामि ण भते । निग्गथ पावयण, जाव^५ से जहेय तुब्भे वयह । ज नवर—देवाणुप्पिया । अम्मापियरो आपुच्छामि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिए^६•मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय^७ पव्वयामि ।

अहासुह देवाणुप्पिए ।

२५ तए ण सा काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एव वुत्ता समाणी हट्ठ^३•तुट्ठ-चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण^४ हियया पास अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता तमेव धम्मिय जाणप्पवर दुरूहइ, दुरूहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिक्का जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिक्का आमलकप्प नयारि मज्झमज्झेण जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिक्का धम्मिय जाणप्पवर ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिक्का करयलपरिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अर्जलि कट्ठु एव वयासी—एव खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स अरहओ अतिए धम्मे निसते । से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए^८ । तए ण अह अम्मयाओ^९ ! ससारभउव्विग्गा भीया जम्मण-मरणाण इच्छामि ण तुब्भेहि

१. देवइ (क, घ) ।

२. अत^० ३।५।१५ ।

३. स० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

४. ना० १।१।१०१ ।

५. स० पा०—अतिए जाव पव्वयामि ।

६. स० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

७. अभिरुत्तिए (ख), अभिरुत्तित्ते (ग), अभिरुत्तिए (घ) ।

८. अम्मापियातो (ग) ।

अवभणुणाया समाणी पासस्स अरहओ अतिए मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिए ! मा पडिवध करेहि ॥

२६ तए ण से काले गाहावई विउल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण आमतेइ, आमतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव' विपुलेण पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणस्स पुरओ कालि दारिय सेयापीएहिं कलसेहि ण्हावेइ, ण्हावेत्ता सव्वालकार-विभूसिय करेइ, करेत्ता पुरिससहस्सवार्हिण सीय दुरुहेइ, दुरुहेत्ता मित्तनाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणेण सद्धि सपरिवुडे सव्विड्डीए जाव' दुदुहि-निग्घोस-नाइयरवेण आमलकप्प नयारि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव अवसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थगराइ-सए पासइ, पासित्ता सीय ठवेइ, ठवेत्ता कालि दारिय सीयाओ पच्चोरुहेइ' ॥

२७ तए ण त कालि दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा-दाणीए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वदति नमसति, वदित्ता नम-सित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता जाव' उवरपुप्फ पिव दुल्लहा सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? एस ण देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाण अतिए मुडा भवित्ता' • ण अगाराओ अणगारिय ° पव्वइत्तए । त एय ण देवाणुप्पियाण सिस्सिणिभिव्व दलयामो । पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिव्व । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि ॥

२८. तए ण सा काली कुमारी पास अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता उत्तर-पुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव लोय करेइ, करेत्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पास अरह तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते णं भते ! लोए'

१ ना० १।७।६ ।

२ ना० १।१।३३ ।

३. पच्चोरुहेइ (क, ख, ग, घ) ।

४. ना० १।१।४५ ।

५ स० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए ।

६ 'लोए' अतोअे "एव जहा देवाणदा जाव"

समर्पणवाक्यमस्ति, किन्तु भगवतीसूत्रे (६।१५२) देवाणदा-प्रकरणे समर्पित. पाठः सक्षिप्तोस्ति, तेन एतद्वाक्य पाठान्तररूपेण स्वीकृतमस्माभि । अस्य पूर्तिस्थलनिर्देश प्रस्तुतसूत्रादेव कृत. ।

- जाव' त इच्छामि ण देवाणुप्पिएहि सयमेव पव्वाविय' जाव' धम्मसाइक्खिय ॥
 २९ तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कार्लि सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सि-
 णियत्ताए दलयइ ॥
 ३० तए ण सा पुप्फचूला अज्जा कार्लि कुमार्रि सयमेव पव्वावेइ' जाव' •धम्म-
 माडक्खइ ॥
 ३१ तए ण सा काली पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए इम एयारूव धम्मिय उवएस
 सम्म° उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥
 ३२ तए ण सा काली अज्जा जाया—इरियासमिया जाव' गुत्तवभयारिणी ॥
 ३३ तए ण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस
 अगाइ अहिज्जइ, वहीहि चउत्थ'-•छट्टट्टम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि
 अप्पाण भावेमाणी° विहरइ ॥

कालीए वाउसियत्त-पदं

३४. तए ण सा काली अज्जा अणया कयाइ सरीरवाउसिया जाया यावि' होत्था ।
 अभिक्खण-अभिक्खण हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीस धोवेइ, मुह धोवेइ, थणत-
 राणि धोवेइ, कक्खतराणि धोवेइ, गुज्झतराणि धोवेइ, जत्थ-जत्थ वि य ण
 ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेएइ, त पुव्वामेव अठ्भुक्खित्ता तओ पच्छा
 आसयइ वा सयइ वा ॥
 ३५ तए ण सा पुप्फचूला अज्जा कार्लि अज्ज एव वयासी—नो खलु कप्पइ देवाणु-
 प्पिए ! समणीण निग्गथीण सरीरवाउसियाण होत्तए । तुम च ण देवाणुप्पिए !
 सरीरवाउसिया' जाया अभिक्खण-अभिक्खण हत्थे धोवसि', •पाए धोवसि, सीस
 धोवसि, मुह धोवसि, थणतराणि धोवसि, कक्खतराणि धोवसि, गुज्झतराणि
 धोवसि, जत्थ-जत्थ वि य ण ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेएसि, त पुव्वामेव
 अठ्भुक्खित्ता तओ पच्छा° 'आसयसि वा सयसि' वा । त तुम देवाणुप्पिए !
 एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव' पायच्छित्त पडिवज्जाहि' ॥

१ ना० १।१।१४६ ।

२ पव्वाविउ (ख, ग) ।

३ ना० १।१।१४६ ।

४ स० पा०—पव्वावेइ जाव उवसपज्जित्ता ।

५ ना० १।१।१५० ।

६ ना० १।१।४।४० ।

७ स० पा०—चउत्थ जाव विहरइ ।

८ × (ख) ।

९ °पाउसिया (ख, ग, घ) ।

१० स० पा—धोवसि जाव आसयसि ।

११ आमयाहि वा सयाहि (क, ख, ग, घ);

आदर्शेषु तुवाद्यर्थवाचक क्रियापदमस्ति, किन्तु

प्रसगापातेनात्र तिवाद्यर्थवाचक क्रियापद

युज्यते, तेन तथा परिगृहीतम् ।

१२ ना० १।१६।११५ ।

१३. पडिवज्जेहि (ख); पडिवज्जिहि (ग)

३६ तए ण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्टु नो आढाइ' •नो परिया-
णाइ° तुसिणीया सच्चिट्ठइ ॥

३७. तए ण ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्ज अभिक्खण-अभिक्खणं हीलेति
निंदति खिसति गरहति अवमन्नति अभिक्खण-अभिक्खणं एयमट्टु निवारेति ॥

कालीए पुढोविहार-पद

३८ तए ण तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं अभिक्खण-अभिक्खण
हीलिज्जमाणीए जाव' निवारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्भत्थिए' •चित्थिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जया णं अहं अगारमज्जे' वसित्था
तया ण अह सयवसा, जप्पभिइ च ण अह मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वइया तप्पभिइ च ण अह परवासा' जाया । त सेय खलु मम कल्लं पाउप्प-
भायाए रयणीए' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते
पाडिक्कय' उवस्सय उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ,
सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे
तेयसा जलते पाडिक्क उवस्सयं गेण्हइ । तत्थ ण अणिवारिया अणोहट्ठिया
सच्छट्टमई अभिक्खण - अभिक्खण हत्थे घोवेइ', •पाए घोवेइ, सीस घोवेइ,
मुह घोवेइ, थणतराणि घोवेइ, कक्खतराणि घोवेइ, गुज्जतराणि घोवेइ, जत्थ-
जत्थ त्रि य ण ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेएइ, त पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता
तओ पच्छा° आसयइ वा सयइ वा ॥

कालीए मच्चु-पदं

३९. तए ण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना ओसन्नविहारी
कुसीला कुसीलविहारी अहाछदा अहाछदविहारी ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि
वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए
अप्पाणं भूसेइ, भूसेत्ता तीसं भत्ताइ अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स
अणालोइयपडिक्कता° कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए कालि-
वडिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अगुलस्स
'असखेज्जाए भागमेत्ताए'° ओगाहणाए कालीदेवित्ताए उववण्णा ॥

१. स० पा०—आढाइ जाव तुसिणीया ।

एक्कयं (घ) ।

२. ना० २।१।३७ ।

८. पू०—ना० १।१।२४ ।

३. स० पा०—अज्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९. स० पा०—घोवेइ जाव आसयइ ।

४. अगारवास° (ख, ग, घ) ।

१०. अपडिक्कता (ख) ।

५. परव्वसा (क, ख, घ) ।

११. असखेज्जाए° (ख); असखेज्जाए भागमेत्ताए

६. पू०—ना० १।१।२४ ।

(ग); असखेज्जाइ° (घ) ।

७. पाडिक्कं (क), पडिक्कय (ख, ग); पाडि-

- ४० तए ण सा काली देवी अहुणोववण्णां समाणी पचविहाए पज्जत्तीए^१ •पज्जत्तभाव गच्छति [त जहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इदियपज्जत्तीए आणपाण-पज्जत्तीए^० भासमणपज्जत्तीए^१] ॥
- ४१ तए ण सा काली देवी चउण्ह सामाणिय-साहस्सीण जाव^१ सोलसण्ह आयरक्ख-देवसाहस्सीण अण्णेसिं च वहूण कालिवडेसगभवणवासीण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य आहेवच्च^४ कारेमाणी जाव^५ विहरइ ॥
४२. एव खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ॥
- ४३ कालीए ण भते ! देवीए केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अड्ढाइज्जाइ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥
४४. काली ण भते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्जिभहिइ वुज्जिभहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण अत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

- ४५ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^१ सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

— त्ति वेमि ॥

१. स० पा०—जहा सूरियाभो जाव भासमण-पज्जत्तीए ।

२. असौ कोष्ठकवर्त्तिपाठ व्याख्याश प्रतीयते ।

३ ना० २।१।१० ।

४. द्रष्टव्यम्—१।१।११८ सूत्रम् ।

५. ना० १।१।११८ ।

६. ना० १।१।७ ।

वीञ्चं अज्भयणं

राई

४६. जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण धम्मकहाण पढमस्स वग्गस्स पढमज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, विइयस्स ण भते ! अज्भयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- ४७ एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए । सामी समोसढे । परिसा निग्गया जाव' पज्जुवासइ ॥
४८. तेण कालेण तेण समएण राई देवी चमरचचाए रायहाणीए एव जहा काली तहेव' आगया, नट्टविहि उवदसित्ता पडिगया ॥
४९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता पुव्वभवपुच्छा' ॥
- ५० •गोयमाति । समणे भगव महावीरे भगव गोयम आमतेत्ता एव वयासी° — एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण आमलकप्पा नयरी अवसालवणे चेइए । जियसत्तू राया । राई गाहावई । राइसिरी भारिया । राई दारिया । पासस्स समोसरण । राई दारिया जहेव काली तहेव' निकखता ॥
- ५१ °तए ण सा राई अज्जा जाया' ॥
- ५२ तए ण सा राई अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइयमाइयाईं एक्कारस अगाइ अहिज्जइ' ॥

१,२. ना० १।१।७ ।

३. ओ० सू० ५२ ।

४. ना० २।१।१०-१२ ।

५ स० पा०—पुव्वभवपुच्छा एव । पू०—ना० २।१।१३,१४ ।

६. ना० २।१।१८-३१ ।

७. स० पा०—तहेव सरीरवाउसिया त चेव सव्व जाव अत ।

८ पू०—ना० २।१।३२ ।

९. पू०—ना० २।१।३३ ।

- ५३ तए ण सा राइ अज्जा अण्णया कयाइ सरीरवाउसिया जाया या वि होत्था^१ ॥
५४. तए ण सा राई अज्जा पासत्था^२ तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए रायवडिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिया अगुलस्स असखेज्जाए भागमेत्ताए ओगाहणाए राईदेवित्ताए उववण्णा जाव^३ अत काहिइ ॥
- ५५ एव खलु जवू ! *समणेण भगवया महावीरेण जाव^४ सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स विइयज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

तइयं अज्झयणं रयणी

५६. जइ ण भते ! *समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण पढमस्स वग्गस्स विइयज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तइयस्स ण भते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ? °
५७. एव खलु जवू ! रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । *सामी समोसठे^५ ॥
५८. तेणं कालेण तेणं समएण रयणी देवी चमरचचाए रायहाणीए आगया^६ ॥
५९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता पुव्वभवपुच्छा^७ ॥
६०. गोयमात्ति ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम आमतेत्ता एव वयासी— एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण ° आमलकप्पा नयरी । अवसालवणे चेइए । जियसत्तू राया । रयणे गाहावई । रयणसिरी भारिया । रयणी दारिया । सेस तहेव जाव^८ अत काहिइ ॥

१. पू०—ना० २।१।३४-३८ ।

२. पू०—ना० १।१।३६ ।

३. ना० २।१।४०-४४ ।

४ स० पा०—विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ।

५ ना० १।१।७ ।

६ स० पा०—तइयज्झयणस्स उक्खेवओ ।

७ स० पा०—एव जहेव राई तहेव रयणी वि ।

८. पू०—ना० २।१।४७ ।

९ पू०—ना० २।१।४८ ।

१० पू०—ना० २।१।४९ ।

११ ना० २।१।५०-५४ ।

चउत्थं अज्भयणं

विज्जू

६१. एव विज्जू वि—आमलकप्पा नयरी । विज्जू गाहावई । विज्जूसिरी भारिया ।
विज्जू दारिया । सेस तहेव' ॥
-

पंचमं अज्भयणं

मेहा

६२. एव मेहा वि—आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई । मेहसिरी भारिया । मेहा
दारिया । सेस तहेव' ॥
६३. एवं खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण धम्मकहाण
पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥
-

१. ना० २।१।४६-५४ ।

३. ना० १।१।७ ।

२. ना० २।१।४६-५४ ।

वीथ्रो वग्गो

पढमं अज्झयणं

सुभा

- १ जइ ण भते ! समणेणं ^१भगवया महावीरेण धम्मकहाण पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ? °
- २ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण दोच्चस्स वग्गस्स पच्च अज्झयणा पण्णत्ता, तजहा—सुभा, निसुभा, रभा, निरभा, मदणा ॥
- ३ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण दोच्चस्स वग्गस्स पच्च अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स ण भते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
४. एव खलु जवू ! तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सामी समोसढे । परिसा निग्गया जाव^२ पज्जुवासइ ॥
- ५ तेण कालेण तेण समएण सुभा देवी वलिच्चचाए रायहाणीए सुभवडेसए भवणे सुभसि सीहासणसि^३ विहरइ । काली गमएण जाव^४ नट्टविहि उवदसेत्ता पडिगया ॥
६. पुव्वभवपुच्छा ॥
- ७ सावत्थी नयरी । कोट्टुए चेइए । जियसत्तू राया । सुभे गाहावई । सुभसिरी भारिया । सुभा दारिया । सेस जहा कालीए^५ नवर अद्धट्टाइ पलिओवमाइ ठिई ॥
८. एव खलु जवू ! ^६समणेण भगवया महावीरेण दोच्चस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

२-५ अज्झयणाणि

- ९ एव^७—सेसा वि चत्तारि अज्झयणा । सावत्थीए । नवर—माया पिया धूया-सरिनामया ।
- १० एव खलु जवू ! ^८समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण विइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ °

१ स० पा०—दोच्चस्स वग्गस्स उवक्खेवओ ।

२ ओ० सू० ५२ ।

३ पू०—ना० २।१।१० ।

४. ना० २।१।११, १२ ।

५. ना० २।१।१८-४४ ।

६ स० पा०—निक्खेवओ अज्झयणस्स ।

७. ना० २।२।१-८ ।

८. स० पा०—निक्खेवओ विइयवग्गस्स ।

तइयो वग्गो

पढमं अज्झयणं

अला

- १ 'जइ णं भते । समणेणं भगवया महावीरेण घम्मकहाणं विइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तइयस्स णं भंते । वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ? ०
२. एवं खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्ण अज्झयणा पण्णत्ता तजहा—पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे ॥
- ३ जइ ण भते समणेण भगवया महावीरेणं घम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्ण अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- ४ एव खलु जवू । तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव^१ पज्जुवासइ ॥
- ५ तेण कालेण तेण समएण अला देवी घरणाए रायहाणीए अलावडेसए भवणे अलसि सीहासणसि एव कालीगमएण जाव^१ नट्टविहि उवदसेत्ता पडिगया ॥
- ६ पुव्वभवपुच्छा ॥
७. वाणारसीए नयरीए काममहावणे चेइए । अले गाहावई । अलसिरी भारिया । अला दारिया । सेसं जहा कालीए^२, नवरं—घरणअग्गमहिसित्ताए उववाओ । साइरेग अट्टपलिओवमं ठिई सेस तहेव ॥
- ८ एव खलु जवू । 'समणेण भगवया महावीरेणं तइयस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ० ।

१. सं० पा०—उक्खेवओ तइयवग्गम्म ।

४. ना० २।१।१८-४४ ।

२. ओ० सू० ५२ ।

५. सं० पा०—निक्खेवओ पढमज्झयणस्स ।

३. ना० २।१।१०-१२ ।

२-६ अज्झयणाणि

६ एव^१—कमा^२, सतेरा, सोयामणी^३, इदा, घणविज्जुया वि सव्वाओ एयाओ घरणस्स अग्गमहिंसीओ ।

७-१२ अज्झयणाणि

१०. एए^४ छ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा ।

१३-५४ अज्झयणाणि

११ एव^५—●हरिस्स अग्गिसिहस्स पुण्णस्स जलकतस्स अमियगतिस्स वेलवस्स^० घोसस्स वि एए^६ चेव छ-छ अज्झयणा । एवमेते दाहिणिल्लाण चउपण्ण अज्झयणा भवति । सव्वाओ वि वाणारसीए काममहावणे चेइए ।

१२ ●एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण तइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते^० ॥



१ ना० २।३।१-८ ।

२ सक्का (ठाण ६।५५, भ० १०।७६) ।

३ सोयमणी (क, ख); सोयमाणी (ग, घ);

सोतामणी (ठाण ६।५५) ।

४. ना० २।३।१-८ ।

५ स० पा०—एव जाव घोमस्स ।

६ ना० २।३।१-८ ।

७. म० पा०—तइयवग्गस्स निक्खेवओ ।

पंचमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

कमला

- १ 'जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स ण भते । वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण पचमस्स वग्गस्स^० वत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—
- १ कमला २ कमलप्पभा चेव, ३ उप्पला य ४ सुदसणा ।
५. रूववई ६ वहुरूवा, ७ सुरूवा ८ सुभगावि य ॥१॥
९ पुण्णा १०. वहुपुत्तिया^१ चेव, ११ उत्तमा १२ तारयावि^२ य ।
१३ पउमा १४ वसुमई चेव, १५ कणगा १६ कणगप्पभा^३ ॥२॥
१७ वडेसा १८ केउमई चेव, १९ 'वइरसेणा २० रइप्पिया'^४ ।
२१ रोहिणी २२ नवमिया चेव, २३ हिरी २४ पुप्फवईवि य ॥३॥
२५ 'भुयगा २६ भुयगावई'^५ चेव, २७ महाकच्छा २८ फुडा इय ।
२९ सुघोसा ३० विमला चेव, ३१ सुस्सरा य ३२ सरस्सई ॥४॥
- ३ 'जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण पचमस्स वग्गस्स वत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, पचमस्स ण भते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ०
- ४ एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव^६ परिसा पज्जुवासइ ॥

१ सं० पा०—पचम वग्गस्स उक्खेवओ । एव खलु जवू । जाव वत्तीस ।
२. वहुपुण्णिया (क, ख, घ) ।
३. भारियावि (क, घ) ।
४. रतणप्पभा (ठाण ४।१६५) ।
५. रतिसेणा रतिप्पभा (ठाण ४।१६७), रतिसेणा रइप्पिया (भ० १०, ८६) ।
६. सुभगा सुभगावती (ख) ।
७. सं० पा०—उक्खेवेओ पढमज्झयणस्स ।
८. ओ० सू० ५२ ।

५. तेण कालेण तेणं समएणं कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेसए भवणे कमलसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहेव^१, नवर—पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसववणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पासस्स अतिए निक्खता । कालस्स पिसायकुमारिदस्स अग्गमहिंसी । अद्धपलिओवमं ठिई ।

२-३२ अज्झयणाणि

- ६ एव सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाण इदाण^१ भाणियव्वाओ । नागपुरे सहसववणे उज्जाणे । मायापियरो धूया—सरिनामया । ठिई अद्धपलिओवम ।

छट्ठो वग्गो

१-३२ अज्झयणाणि

- १ छट्ठो वि वग्गो पचमवग्ग-सरिसो, नवर—महाकालाईण^१ उत्तरिल्लाणं इदाण^१ अग्गमहिंसीओ । पुव्वभवे सागेए नगरे । उत्तरकुरु-उज्जाणे । मायापियरो धूया—सरिनामया । सेस त चेव ॥

सत्तमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

सूरप्पभा

- १ *जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण घम्मकहाण छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स ण भते । वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण सत्तमस्स वग्गस्स० चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा ॥
- ३ *जइ णं भते । समणेण भगवया महावीरेण घम्मकहाण सत्तमस्स वग्गस्स चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, सत्तमस्स ण भते । वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?०

१. ना० २।१।१०-४४ ।

२ ठाण २।३६४-३७० ।

३ महाकायाई ण (ख) ।

४. ठाण २।३६४-३७० ।

५. सं० पा०—सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एव खलु जवू जाव चत्तारि ।

६ सं० पा०—पढमज्झयणस्स उक्खेवओ ।

चउत्थो वग्गो

पढमं अज्झयणं

रूया

१. 'जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेणं धम्मकहाण तइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स ण भते । वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?'
२. एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेणं धम्मकहाण चउत्थस्स वग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा—पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइमे अज्झयणे ॥
३. 'जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण चउत्थस्स वग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भंते । अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?'
४. एव खलु जंबू । तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे समोसरणं जाव^३ परिसा पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेण तेणं समएण रूया देवी भूयाणंदा रायहाणी रूयगवडेसए भवणे रूयगसि सीहासणसि जहा कालीए^४ तथा, नवर—पुव्वभवे चपाए पुण्णभट्ठे चेइए रूयगगाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया । सेस तहेव, नवर—भूयाणद-अग्गमहिसित्ताए उववाओ । देसूण पलिओवमं ठिई ॥
६. 'एव खलु जंबू । समणेणं भगवया महावीरेण चउत्थस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ° ॥

१. म० पा०—चउत्थस्स उक्खेवओ ।

२. × (क, ख, ग, घ) । पूर्वक्रमेण एतत् सूत्रं युज्यते ।

३. ओ० सू० ५२ ।

४. ना० २।१।१०-४४ ।

५. सं० पा०—निक्खेवओ ।

२-६ अज्झयणाणि

७ एव^१— सुख्यावि, ख्यसावि, ख्यगावईवि, ख्यकतावि, ख्यप्पभावि ॥

७-५४ अज्झयणाणि

८ एयाओ^२ चेव उत्तरिल्लाण इदाण^३—^०वेणुदालिस्स हरिस्सहस्स अग्गिमा-
ण्वस्स विसिट्ठस्स जलप्पभस्स अमितवाहणस्स पभजणस्स महाघोसस्स
भाणियव्वाओ ॥ ०

९ ^४एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण चउत्यस्स वग्गस्स
अयमट्ठे पण्णत्ते ० ॥



१ एव खलु (क, ख, ग, घ) । ना० २।४।१-६ ।

३ स० पा०—भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स ।

२ ना० २।४।१-६ ।

४ स० पा०—निक्खेवओ चउत्यवग्गस्स ।

- ४ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव' परिसा पज्जुवासड ॥
- ५ तेण कालेण तेण समएण सूरप्पभा देवी सूरसि' विमाणसि सूरप्पभसि सीहासणसि । सेस जहा कालीए तहा', नवर—पुव्वभवो ग्ररक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया । सूरस्स अग्गमहिंसी । ठिई अद्धपलिओवम पचहिं वाससएहि अव्वभहिय । सेस जहा कालीए ॥

२-४ अज्झयणाणि

६. एव'—^०आयवा, अच्चिमाली, पभकरा ° । सव्वाओ अरक्खुरीए नयरीए ॥

अट्ठमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

चंदप्पभा

- १ ° जइ ण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण धम्मकहाण सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स वग्गस्स ° चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा ॥
- ३ ^०जइण भते ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण अट्ठमस्स वग्गस्स चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, अट्ठमस्स ण भते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °
- ४ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे समोसरण जाव' परिसा पज्जुवासड ॥
- ५ तेण कालेण तेण समएण चंदप्पभा देवी चदप्पभंसि विमाणंसि चदप्पभसि सीहासणसि । सेसं जहा कालीए', नवरं—पुव्वभवो महुराए नयरीए भडिवडेसए

१ ओ० सू० ५२ ।

२ २।८।५ नूत्रपद्धत्या अत्रापि 'सूरप्पभसि' इति पाठो युज्यते ।

३. ना० २।१।१०-४४ ।

४. स० पा०—एव मेमाओवि ।

५ स० पा०—अट्ठमस्स उक्खेवओ । एव खलु जवू जाव चत्तारि ।

६. स० पा०—पढमज्झयणस्स उक्खेवओ ।

७. ओ० सू० ५२ ।

८. ना० २।१।१०-४४ ।

उज्जाणे । चदप्पभे गाहावई । चदसिरी भारिया । चदप्पभा दारिया । चदस्स अग्गमहिंसी । ठिई अट्ठपलिओवम पण्णासवाससहस्सेहि अट्ठभहिय ॥

२-४ अज्झयणाणि

- ६ एव'—^०दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा^०, महुराए नयरीए । मायापियरो धूया-सरिसनामा ॥

नवमो वग्गो

१-८ अज्झयणाणि

- १ ^०जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण अट्ठमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स ण भते । वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण नवमस्स वग्गस्स^० अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

गाहा—

१ पउमा २ सिवा^१ ३ सई^२ ४. अजू,
५ रोहिणी ६ नवमिया^३ इ य ।
७ अयला^४ ८ अच्छरा ॥

- ३ ^०जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण नवमस्स वग्गस्स अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, नवमस्स ण भते । वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?^०
- ४ एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव^५ परिसा पज्जुवासइ ॥
- ५ तेण कालेण तेण समएण पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमसि सीहासणसि जहा कालीए^६ ॥

१ स० पा०—एव सेसाओवि ।

२ स० पा०—नवमस्स उक्खेवओ । एव खलु जवू । जाव अट्ठ ।

३ सिया (क, ग) ।

४. सुती (क, ख, ग), सची (ठाण ८।२७) ।

५ नमिया (घ) ।

६. अमला (ठाण ८।२७; अ० १०।६२) ।

७ स० पा०—पढमज्झयणस्स उक्खेवओ ।

८ ओ० सू० ५२ ।

९ ना० २।१।१०-४४ ।

- ६ एव अट्ट वि अज्झयणा काली-गमएण नायव्वा, नवर—सावत्थीए दोजणीओ । हत्थिणाउरे दोजणीओ । कपिल्लपुरे दोजणीओ । साएए दोजणीओ । पउमे पियरो विजया मायराओ । सव्वाओ वि पासस्स अतिय पव्वड्याओ । सक्कस्स अग्गमहिंसीओ । ठिई सत्त पलिओवमाइ । महाविदेहे वासे अत काहित्ति ॥

दसमो वग्गो

१-८ अज्झयणाणि

१. १०जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण नवमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण दसमस्स वग्गस्स ० अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

- १ कण्हा य २. कण्हराई, ३. रामा तह ४ रामरक्खिया ।
 ५. वसू या ६ वसुगुत्ता ७ वसुमित्ता ८ वसुधरा चेव ईसाणे ॥१॥
३. १०जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण दसमस्स वग्गस्स अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, दसमस्स ण भते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ०
४. एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव' परिसा पज्जुवासड ॥
५. तेण कालेण तेण समएण कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हसि सीहासणसि, सेसं जहा कालीए ॥
- ६ एव अट्ट वि अज्झयणा काली-गमएण नायव्वा, नवर—पुव्वभवो वाणारसीए नयरीए दोजणीओ । रायगिहे नयरे दोजणीओ । सावत्थीए नयरीए दोजणीओ । कोसवीए नयरीए दोजणीओ । रामे पिया धम्मा माया । सव्वाओ वि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वड्याओ । पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए । ईसाणस्स

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ । एव खलु २. सं० पा०—पढमस्स उक्खेवओ ।
 जंजू जाव अट्ट । ३. ओ० नू० ५२ ।

अग्गमहिंसीओ । ठिई नवपलिओवमाइ । महाविदेहे वासे सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदुक्खाण अतं काहिति ॥

७. एव खलु जवू ! १•समणेण भगवया महावीरेण धम्मकहाण दसमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ० ॥
८. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेणं तित्थगरेण सयसवुद्धेण पुरिसोत्तमेण पुरिससीहेण जाव^१ सिद्धिगइ नामधेज्ज ठाण सपत्तेण धम्मकहाण अयमट्ठे पण्णत्ते ।

परिसेसो

धम्मकहा-सुयवखधो सम्मत्तो ।
दसहिं वग्गेहिं नायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर—२२६६४३ ।

अनुष्टुप् श्लोक—७०६१, अक्षर ३१ ।



उवासगदसाञ्चो



पढमं अज्जसुहम्मे

आणंदे

उक्खेव-पदं

१. तेण कालेण तेण समएण चपा नाम^१ नयरी होत्था^२—वण्णओ^३ ॥
२. पुण्णभट्ठे चेइए—वण्णओ^३ ॥
३. तेण कालेण तेण समएण^४ •समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्जसुहम्मे नाम थेरे जातिसपण्णे कुलसपण्णे वलसपण्णे खवसपण्णे विणयसपण्णे नाणसपण्णे दसणसपण्णे चरित्तसपण्णे लज्जासपण्णे लाघवसपण्णे ओयसी तेयसी वच्चसी जससी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियणिट्ठे जिइदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे निच्छयप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जप्पहाणे मतप्पहाणे वभप्पहाणे वेयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवभचेरवासी उच्छूढसरीरे सखित्तविउलतेयनेस्से चउदसपुव्वी चउनाणोवगए पच्चाहि अणगारसएहि सद्धि सपरिवुडे पुट्ठाणुपुट्ठि चरमाणे गामागुणाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव चपा नयरी जेणेव पुण्णभट्ठे चेइए तेणेव उवागच्छइ, चपानयरीए वहिया

१. नाम (ख) ।

२. इत्या (ग) ।

३. ओ० सू० १ ।

४. ओ० सू० २-१३ ।

५. म० पा०—समएण अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव जव्वु अज्जुवासमाणे । असौ विन्दुमध्य-

वर्ती पाठ क्रमशः, रायपसेणइय-ओवाइय-सूत्राभ्या पूरित । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्ती 'नायाधम्मकहाओ' सूत्रात् पूरणस्य सूचना कृतास्ति । अस्माभि पूरिते पाठे तत् किञ्चिद् भेदो विद्यते, नास्ति क्वचिद् मौलिको भेद ।

पुण्णभट्टे चेइए अहापडिख्व ओग्गह ओगिण्हड, ओगिण्हत्ता सजमेण तवसा
अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

४. तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स थेरस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजवू नाम
अणगारे कासव' गोत्तेण सत्तुस्सेहे समच्चउरससंठाणसठिए वडररिसहणाराय-
सघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उगतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले
घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवभचेरवासी उच्छूटसरीरे सखित्तविउलतेयलेस्से
अज्जमुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामते उड्ढजाणू अहोसिरे भाणकोट्टोवगए सजमेणं
तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
५. तए ण से अज्जजवू नाम अणगारे जायसड्ढे जायससए जायकोऊहल्ले,
उप्पणसड्ढे उप्पणससए उप्पणकोऊहल्ले, सजायसड्ढे सजायससए संजाय-
कोऊहल्ले, समुप्पणसड्ढे समुप्पणससए समुप्पणकोऊहल्ले उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता
जेणेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता अज्जसुहम्म थेर
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता
णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्ससमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलिउडे^०
पज्जुवासमाणे^१ एव वयासी—जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^२
सपत्तेण^३ छट्ठस्स अंगस्स नायाधम्मकहाण अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स ण भते !
अगस्स उवासगदसाण समणेण भगवया महावीरेणं जाव^४ सपत्तेण के अट्ठे
पण्णत्ते ?
६. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^५ सपत्तेण सत्तमस्स अगस्स
उवासगदसाण दस अज्जभयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

आणदे कामदेवे य, गाहावत्तिचुलणीपिता ।
सुरादेवे चुल्लसयए, गाहावड्कुडकोलिए ॥
सदालपुत्ते महासतए, नदिणीपिया लेइयापिता^० ।१॥

१ व्या० वि०—विभक्तिरहित पदम् ।

२ पज्जुवासइ (क) ।

३. ना० १।१।७ ।

४ सपाविउकामेण (सभावओ १।२) ।

५,६ ना० १।१।७ ।

७. लेतियापिया (क, ग), सालेइणीपिया (ख) ।

उवासगदसाण दस अज्जभयणा पण्णत्ता, त
जहा—

आणदे कामदेवे अ, गाहावत्तिचुलणीपिता ।

सुरादेवे चुल्लसतए, गाहावत्तिकुडकोलिए ॥

सदालपुत्ते महासतए णदिणीपिया सालेइया-
पिता । (स्थानाग १०।११२) । स्थानाग-
सूत्रे दशमाव्ययनस्य नाम 'सालेइयापिता'
लभ्यते । अत्र एकस्या प्रती 'सालेइणीपिया'
नाम उपलब्धमस्ति, किन्तु 'सालइयापिता'
नाम नोपलभ्यते । स्यादसौ वाचनाभेद
अथवा लिपिदोषेणासौ विपर्ययो जात ; इति
अनुसवेयमस्ति ।

७ जड ण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाणं दस अज्भयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

आणंदगाहावइ-पदं

- ८ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण वाणियगामे नाम नयरे होत्था—
वण्णओ' ॥
- ९ तस्स वाणियगामस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ ण
दूइपलासए नाम चेइए' ॥
- १० तत्थ णं वाणियगामे नयरे जियसत्तू राया होत्था—वण्णओ' ।
- ११ तत्थ ण वाणियगामे नयरे आणदे नाम गाहावई परिवसड—अइडे' •दित्ते वित्ते
विच्छिण्णविउलभवण-सयणासण-जाणवाहणे बहुघण-जायरूव-रयए आओग-
पओगसपउत्ते विच्छडियपउरभत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए
बहुजणस्स ° अपरिभूए ॥
- १२ तस्स ण आणदस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ,
'चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ'° चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थर-
पउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥
- १३ से ण आणदे गाहावई वहूण राईसर'-•तलवर-माडविय-कोडुविय-इवभ-सेट्टि-
सेणावेइ°-सत्यवाहाण वहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुवेसुं य मतेसु य गुज्भेसु
य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स
वि य ण 'कुडुवस्स मेढी पमाण आहारे आलवण चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए
आहारभूए आलवणभूए चक्खुभूए'° सव्वकज्जवड्ढावए" यावि होत्था ॥

१,२ ना० १।१।७ ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. चेतिते (क), चेइए होत्था (घ) ।

५. ओ० सू० १४ ।

६ स० पा०—अइडे जाव अपरिभूए ।

७ × (क) ।

८ ईसर (क,ख,ग), ईसराण (घ), राईसर

(ओ० सू० १८) । स० पा०—राईसर

जाव सत्यवाहाण ।

९. यद्यपि सर्वास्वपि प्रतिपु 'मतेसु य कुडुवेसु

य' इति पाठो लभ्यते, किंतु अर्थसगत्या

'कुडुवेसु य मतेसु य' इति पाठ उपयुक्तोस्ति ।

ज्ञाता (१।१६) सूत्रे तथा रायपसेणइय

(६७५) सूत्रेपि इत्थमेवपाठो विद्यते ।

ज्ञातावृत्तौ अर्थसंगतिरित्य कृतास्ति—कुटुम्बेषु

च स्वकीयपरकीयेषु विषयभूतेषु च मन्नादयो

निश्चयान्तास्तेषु आप्रच्छनीय ।

१०. कुडुवस्स मेढीभूए (क,ग), कुडुवस्स मेढी-

भूए जाव (ख) ।

११ मेढीभूते सव्व ° (घ) ।

- १४ तस्स ण आणदस्स गाहावइस्स सिवणदा' नामं भारिया होत्था—अहीण^१-
 °पडिपुण्ण-पचिदियसरीरा लक्खण-वज्जण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-
 पडिपुण्ण-मुजाय-सव्वग-सुदरगी ससि-सोमाकार-कत-पिय-डसणा° सुह्वा,
 आणदस्स गाहावइस्स इट्ठा, आणदेण गाहावइणा सद्धि अणुरत्ता अविरत्ता,
 इट्ठे' °सद्द-फरिस-रस-रूव-गधे° पचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी
 विहरइ ॥
- १५ तस्स ण वाणियगामस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए, एत्थ ण
 कोल्लाए' नाम सण्णिवेसे होत्था—रिद्धित्थमिए' जाव' पासादिए दरिसणिज्जे
 अभिरूवे पडिरूवे ॥
- १६ तत्थ ण कोल्लाए सण्णिवेसे आणदस्स गाहावइस्स वहवे' मित्त-नाड-नियग-
 सयण-सवधि-परिजणे परिवसइ—अड्ढे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥

महावीर-समवसरण-पदं

- १७ तेण काणेण तेण समएण समणे भगव महावीरे' जाव'° •जेणेव वाणियगामे
 नयरे जेणेव दूइपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव
 ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ° ॥
- १८ परिसा निग्गया ॥
- १९ कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव'' पज्जुवासइ ॥
- २० तए ण से आणदे गाहावई इमोसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—“एव खलु समणे"^{१३}
 °भगव महावीरे"^{१४} पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागए
 इह सपत्ते इह समोसढे इहेव वाणियगामस्स नयरस्स वहिया दूइपलासए चेइए
 अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।”
 त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवंताण
 णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-
 पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग
 पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण

१. सिवानदा (ख,घ) ।

२ स० पा०—अहीण जाव सुह्वा ।

३ स० पा०—इट्ठे जाव पचविहे ।

४ कोलाते (क,ग) ।

५ रिद्धित्थमिए (ख) ।

६ ओ० सू० १ ।

७ वहुवे (ग) ।

८ उवा० १।११ ।

९ स० पा०—महावीरे जाव समोसरिए ।

१० ओ० सू० १६, २२ ।

११. ओ० सू० ५३-६६ ।

१२ स० पा०—समणे जाव विहरइ त महा-
 फल गच्छामि ण जाव पज्जुवासामि ।

१३. पू०—ओ० सू० ५२ ।

भगव महावीर वदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मंगल देवय
 चेइय ° पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहिता ण्हाए' °कयवलिकम्मे कय-कोउय
 मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाड वत्थाइ 'पवर परिहिए' °अप्पमहग्घा-
 भरणालकियरीरे 'सयाओ गिहाओ' पडिणिक्वमइ, पडिणिक्वमित्ता
 सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-
 चारेण 'वाणियगामं नयर'° मज्झमज्जेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव
 दूइपलासए' चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
 समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ
 णमसइ' °वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे
 अभिमुहे विणएण पज्जलिउडे ° पज्जुवासइ ॥

२१ तए ण समणे भगव महावीरे आणदस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए
 परिसाए जाव' धम्म परिकहेइ ॥

२२ परिसा पडिगया, राया य गए' ॥

आणंदस्स गिहिधम्म-पडिबत्ति-पद

२३ तए ण से आणदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा
 निसम्म हट्टुत्तु'-°चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-
 विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो
 आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता ° एव
 वयासी—सद्दहामि ण' °भते । निग्गय पावयण, पत्तियामि ण भते ।
 निग्गथ पावयण, रोएमि ण भते । निग्गथ पावयण, अठ्ठुत्तुमि ण
 भंते । निग्गथ पावयणं । एवमेय भते । तहमेय भते । अविताहमेय भते ।
 असदिद्धमेय भते । इच्छियमेय भते । पडिच्छियमेय भते । इच्छिय-
 पडिच्छियमेय भते । ° हेय तुब्भे वदह' । जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए

१. स० पा०—ण्हाए सुद्धप्पावेसा अप्प ° ।

७ ओ० सू० ७१-७७ ।

२. अत्र नायाधम्मकहाओ (१।१।३३) सूत्रे
 'पवर परिहियाओ' पाठो विद्यते । तत्र
 वृत्तौ—प्रवरमिहानुस्वारलोपो दृश्य, इति
 व्याख्यातमस्ति । एतत् उपयुक्त प्रतिभाति ।

८. पडिगओ (क), गया (ख) ।

९ स० पा०—हट्टुत्तु जाव एव वयासी ।

१० स० पा०—सद्दहामि ण जाव से जहेय ।

३ सयातो गिहातो (ग) ।

४ वाणियागाम नगर (क) ।

५. °पलासे (क,ग) ।

११ वदह त्ति (क), वदह त्ति कट्टु (ख,ग,घ),

रायपसेणइयसूत्रे (६६५) अत्र किञ्चि-

दधिकः पाठो लभ्यते—त्ति कट्टु वदइ

नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

६ स० पा०—णमसइ जाव पज्जुवासइ ।

बहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-डवभ-मेट्टि-सेणावड-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वडया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडे' °भवित्ता अगाराओ अणगारिय ° पव्वडत्तए । अह ण देवाणुप्पियाणं अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविह सावगधम्म^१ पडि-वज्जिस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवध करेहि' ॥

- २४ तए ण से आणदे गाहावई समणस्स भगवओ महावोरस्स अतिए तप्पढमयाए^२ थूलय^३ पाणाडवाय पच्चक्खाड^४ जावज्जीवाए दुविह तिविहेण—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ॥
- २५ तयाणतर^५ च ण थूलय^६ मुसावाय पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविह तिविहेण—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ॥
- २६ तयाणतर च ण थूलय^७ अदिण्णादाण पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविह तिविहेण—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ॥
२७. तयाणतर च ण सदारसतोसोए^८ परिमाण करेड—नन्नत्थ एक्काए सिवनदाए भारियाए, अवसेस^९ सव्व मेहुणविहि^{१०} पच्चक्खाइ ॥
- २८ तयाणतर च ण इच्छापरिमाण करेमाणे—
(१) हिरण्ण-सुवण्णविहिपरिमाण^{११} करेड—नन्नत्थ चउहिं हिरण्णकोडीहिं निहाणपउत्ताहि, चउहिं वड्ढिपउत्ताहि, चउहिं पवित्थरपउत्ताहि, अवसेस सव्व हिरण्ण-सुवण्णविहिं पच्चक्खाइ^{१२} ।

१ स० पा०—मुडे जाव पव्वइत्तए ।

३. करेह (घ) ।

२ गिहिधम्म (क,ख,ग,घ) । दिग्ब्रत-शिक्षाव्रतानामतिचारनिरूपणप्रसंगे वृत्तिकारेण समालोच्यपाठ समुद्धृतोस्ति । तत्र व्रतग्रहणमकल्पावसरे व्रतग्रहणानन्तर च उभयत्रापि 'सावगधम्म' इति पाठो विद्यते, यथा—
“कथमन्यथा प्रागुक्त दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामीति ? कथं वा वक्ष्यति—
दुवालसविह सावगधम्म पडिव्वज्जति त्ति”
(वृ), अग्रिमस्थलेषु 'गिहिधम्म' इत्येवपाठ प्रतिषु लभ्यते । तत्र वृत्तौ नास्ति काचिद् व्याख्या, तेन क्वचित्-क्वचित् गिहिधम्म पाठोऽपि स्वीकृतः । नानयो कश्चिद् अर्थ-भेदोन्ति ।

४ °मताते (ग) ।

५. थूल (क) ।

६. पच्चक्खामि (ख,ग,घ) ।

७ तदा ° (ग) ।

८ थूल (क) ।

९ थूल (क,ग); थूलग (घ) ।

१०. °सतोसिए (क,ख); °सतोसिते(ग,घ), ३५ सूत्रे इकारस्य दीर्घत्व लभ्यते ।

११. असेस (क) ।

१२. मेथुण ° (क), मेथुण ° (घ) ।

१३ सुवण्णपरिमाण (ग,घ) ।

१४. पच्चक्खामि (ख,ग) अग्रे सर्वत्रापि ।

- (२) तयाणतर च ण चउप्पयविहिपरिमाण करेइ—नन्तथ चउहिं वएहिं^१ दसगोसाहस्सिएण वएण^२, अवसेस सव्व चउप्पयविहिं पच्चक्खाइ ।
- (३) तयाणतर च णं खेत्त-वत्थुविहिपरिमाण करेइ—नन्तथ पचहिं हलसएहिं नियत्तणसत्तिएणं हलेण, अवसेस सव्व खेत्त-वत्थुविहिं पच्चक्खाइ ।
- (४) तयाणतरं च ण सगडविहिपरिमाण करेइ—नन्तथ पचहिं सगडसएहिं^३ दिसायत्तिएहिं, पचहिं सगडसएहिं सवहणिएहिं, अवसेस सव्व सगडविहिं^४ पच्चक्खाइ ।
- (५) तयाणतर च णं वाहणविहिपरिमाण करेइ—नन्तथ चउहिं वाहणेहिं दिसायत्तिएहिं, चउहिं वाहणेहिं सवहणिएहिं^५, अवसेस सव्व वाहणविहिं^६ पच्चक्खाइ ॥

२६ तयाणतर च ण उवभोग-परिभोगविहिं पच्चक्खायमाणे—

- (१) उल्लणियाविहिपरिमाण करेइ—नन्तथ 'एगाए गघकासाईए'^७, अवसेस सव्व उल्लणियाविहिं पच्चक्खाइ ।
- (२) तयाणतर च ण दतवणविहिपरिमाण करेइ—नन्तथ एगेण अल्ललट्टीमहु-एण^८, अवसेस सव्व^९ दतवणविहिं पच्चक्खाइ ।
- (३) तयाणतर च ण फलविहिपरिमाण करेइ—नन्तथ एगेण खीरामलएण, अवसेस सव्व फलविहिं पच्चक्खाइ ।
- (४) तयाणतर च ण अग्गणविहिपरिमाण^{१०} करेइ—नन्तथ सयपागसहस्स-पागेहिं तेल्लेहिं^{११}, अवसेस सव्व अग्गणविहिं पच्चक्खाइ ॥
- (५) तयाणतर च णं उव्वट्टणाविहिपरिमाण^{१२} करेइ—नन्तथ एगेण सुरभिणा गघट्टएण^{१३}, अवसेस सव्व उव्वट्टणाविहिं पच्चक्खाइ ।
- (६) तयाणतर च ण मज्जणविहिपरिमाण करेइ—नन्तथ अट्टहिं उट्टिएहिं^{१४}

१ वतेहिं (ग) ।

१०. अग्गि० (घ) ।

२ वतेण (ग) ।

११ तिल्लेहिं (घ) ।

३ सगडसागडेहिं (क), मगडीसएहिं (ख) ।

१२. उव्वट्टण (क्व) ।

४ सगडविह (घ) ।

१३ गघवट्टएण (क,ख,घ) । एतत् परिवर्तन

५ सवा० (ख) ।

सभवतो लिपिदोषेण जातम् । वृत्तौ अस्य

६. वहण० (क) ।

मौलिक रूप सुरक्षितमस्ति, यथा—गन्ध-

७ एगाते गघकासातीते (क,ग) ।

द्रव्याणामुपलकुण्डादीनाम्, 'अट्टो' ति चूर्णं

८ अल्ललट्टो० (ग) ।

गोघूमचूर्णं वा गन्धयुक्तम् । स्थानागे

९. × (क,ग) । अनयोरादर्शयोरग्रे सर्वत्रापि

(३।८७) पि 'गघट्टएण' इति प्रयोगो लभ्यते ।

'सव्व' पाठो नास्ति । अत्र लिपे सक्षेपी-

१४ उव्वट्टिएहिं(क) । उद्वर्तिते इति विशेषणेन

करणमेव कारणं सभाव्यते ।

अरघट्टपरिवर्तिभि उदकघटै. इत्यर्थं सूच्यते।

- ‘उदगस्स घडेहि’^१, अवसेस सव्व मज्जणविहि पच्चक्खाइ ।
- (७) तयाणतर च ण वत्थविहिपरिमाणु करेइ—‘नन्तत्थ एगेण’^२ खोमजुयलेण, अवसेस सव्व वत्थविहि पच्चक्खाइ ।
- (८) तयाणतर च ण विलेवणविहिपरिमाण करेइ—नन्तत्थ अगुरु^३-कुकुम-चदणमादिएहि^४, अवसेस सव्व विलेवणविहि पच्चक्खाइ ।
- (९) तयाणतर च ण पुप्फविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ एगेण सुद्धपजमेण मालइकुमुमदामेण^५ वा, अवसेस सव्व पुप्फविहि पच्चक्खाइ ।
- (१०) तयाणतर च ण आभरणविहिपरिमाण करेइ—नन्तत्थ मट्टकण्णेज्जएहि नाममुद्दाए य, अवसेस सव्व आभरणविहि पच्चक्खाइ ।
- (११) तयाणतर च ण धूवणविहिपरिमाण करेइ—नन्तत्थ अगुरु^६-तुरुक्क-धूवमा-दिएहि, अवसेस सव्व धूवणविहि पच्चक्खाइ ।
- (१२) तयाणतर च ण भोयणविहिपरिमाण करेमाणे—
- (क) पेज्ज-विहिपरिमाण करेइ—नन्तत्थ एगाए कट्टपेज्जाए, अवसेस सव्व पेज्जविहि पच्चक्खाइ ।
- (ख) तयाणतर च ण भक्खविहिपरिमाण^७ करेइ—नन्तत्थ एगेहिं घयपुण्णेहिं खडखज्जएहि वा, अवसेस सव्वं भक्खविहिं^८ पच्चक्खाइ ।
- (ग) तयाणतर च ण ओदणविहिपरिमाण करेइ—नन्तत्थ कलमसालि-ओदणेण, अवसेसं सव्व ओदणविहि पच्चक्खाइ ।
- (घ) तयाणतरं च सूवविहिपरिमाणं^९ करेइ—नन्तत्थ कलायसूवेण^{१०} वा ‘मुग्गसूवेण वा माससूवेण’^{११} वा अवसेस सव्व सूवविहि पच्चक्खाइ ।
- (ङ) तयाणतर च णं घयविहिपरिमाण करेइ—नन्तत्थ सारदिएण गोघय-मडेण, अवसेस सव्वं घयविहि पच्चक्खाइ ।
- (च) तयाणतर च ण सागविहिपरिमाण करेइ—नन्तत्थ वत्थुसाएण^{१२} वा तुवसाएण वा सुत्थियसाएण^{१३} वा मडुक्कियसाएण वा, अवसेस सव्व सागविहि पच्चक्खाइ ॥

१. उदगघडेहि (क) ।

२. नन्तत्थेक्केण (क, ग) ।

३. अगुरु (क, घ) ।

४. °मात्तिरेहि (क), माइतेहि (घ) ।

५. मालई° (घ) ।

६. अगुरु (क, घ) ।

७. भक्खण° (ख) ।

८. भक्खण° (क, ख) ।

९. सूय° (क, ग, घ) ।

१०. कालाय° (क) ।

११. मुग्गमाससूवेण (क) ।

१२. वुसातेण (क), वत्थुसातेण (ग), चुच्चुसाएण (घ) ।

१३. सुत्थिया° (ग); सूवत्थिय° (घ) ।

- (छ) तयाणतरं च ण माहुरयविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेण पालकामाहुरएण^१, अवसेस सव्व माहुरयविहि पच्चक्खाइ ।
- (ज) तयाणतर च ण तेमणविहिपरिमाणं^२ करेइ—नन्नत्थ सेहव-दालियवेहिं, अवसेस सव्व तेमणविहिं पच्चक्खाइ ।
- (झ) तयाणतर च ण पाणियविहिपरिमाणं^३ करेइ—नन्नत्थ एगेण अतलिकखोदएण, अवसेस सव्व पाणियविहिं पच्चक्खाइ ।
- (ञ) तयाणतर च ण मुहवासविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ पंचसोगधि-एण^४ तवोलेण, अवसेस सव्व मुहवासविहिं पच्चक्खाइ ॥

३० तयाणतर च ण चउव्विह अणट्टादड^५ पच्चक्खाइ, त जहा—१. अवज्झाणाचरित^६ २ पमायाचरित^७ ३ हिंसप्पयाण ४. पावकम्मोवदेसे ॥

अतियार-पद

३१. आणंदाइ^८ । समणे भगव महावीरे आणद समणोवासग एव वयासी—एव खलु आणदा । समणोवासएण^९ अभिगयजीवाजीवेण^{१०} •उवलद्धपुण्णपावेण आसव-सवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-वधमोक्खकुसलेण असहेज्जेण, देवासुर-गाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गधव्व-महोरगाइएहि देवगणेहि निग्गथाओ पावयणाओ • अणइक्कमणिज्जेण सम्मत्तस्स पच 'अतियारा पेयाला'^{११} जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१. सका २ कखा ३ वित्तिगिच्छा^{१२} ४ परपासडपससा ५ परपासडसथवो^{१३} ॥

३२. तयाणतर च ण थूलयस्स पाणाइवायवेरमणस्स^{१४} समणोवासएण 'पच अतियारा

- १ °माचुरतेण (क), °माघुरतेण (ग) । १० स० पा०—अभिगयजीवाजीवेण जाव अण-इक्कमणिज्जेण ।
२. जेवण ° (क), जेमण ° (ख,ग,घ) । 'तेमण' इति पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । 'ग' प्रती वारद्वयमपि जेमण' शब्दस्य जकारोपरि सूदमाक्षरेण 'ते' इति लिखितमस्ति । ११ अतियारपेयाला (क,ग), अतिचारा पेयाला (घ) । पेयालत्ति सारा प्रधाना स्थूलत्वेन शक्यव्यपदेशत्वात् (उवासगदसाओ वृत्ति); पेयाल पेज्जल पमाणम्मि (देशीनाममाला ६।५७) ।
३. पाणित ° (ग) । १२. °गिच्छा (क) ।
४. °सोगंघितेण (ग), °सोगघेण (घ) । १३ शङ्काकाइसाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशसा-सस्तवा. सम्यग्दृष्टेरतिचारा (तत्त्वार्थसूत्र ७।१८) ।
- ५ अनत्थ ° (ख) । १४. पाणाधिवाय ° (क), पाणादिवाय ° (ग) ।
- ६ °यरिय (ख) ।
७. °यरियं (क,ख) ।
८. °दि (क), °ति (ग) ।
९. °वासतेण (ग,घ) ।

- पेयाला" जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ वघे २ वहे ३. छविच्छेदे^१
४ अतिभारे^२ ५ भत्तपाणवोच्छेदे^३ ॥
- ३३ 'तयाणतर च ण 'थूलयस्स मुसावायवेरमणस्स'^४ समणोवासएण 'पच
अतियारा'^५ जाणियव्वा', न समायरियव्वा, त जहा—१. सहसाभक्खाणे^६
२. रहस्सव्भक्खाणे^७ ३ 'सदारमतभेए ४ मोसोवएसे'^८ ५ कूडलेहकरणे ॥^९
- ३४ तयाणतर च णं थूलयस्स अदिण्णादाणवेरमणस्स समणोवासएण पंच अतियारा
जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ तेणाहडे २. तक्करप्पओगे^{१०}
३ विरुद्धरज्जातिक्कमे ४. कूडतुल^{११}-कूडमाणे ५. तप्पडिरूवगववहारे ॥
३५. तयाणतर च ण सदारसतोसीए समणोवासएण पंच अतियारा जाणियव्वा, न
समायरियव्वा, त जहा—१ इत्तरियपरिग्गहियागमणे^{१२} २ अपरिग्गहियागमणे
३ अणगकिड्डा^{१३} ४ परवीवाहकरणे^{१४} ५ 'कामभोगे तिक्वाभिलासे'^{१५} ॥
- ३६ तयाणतर च ण इच्छापरिमाणस्स समणोवासएण पच^{१६} अतियारा जाणियव्वा,
न समायरियव्वा, त जहा—१. खेत्तवत्थुपमाणातिक्कमे २ हिरण्णसुवण्ण-
पमाणातिक्कमे ३ धणधण्णपमाणातिक्कमे ४. दुपयचउप्पयपमाणातिक्कमे
५ कुवियपमाणातिक्कमे ॥

१. पचतियारपेयाला (क), पचतियारा पेयाला ११ वाचनान्तरे तु— कन्नालीय, गवालीय, भूमा-
(घ) । लिय, नासावहार, कूडसक्खेज्ज सधिकरणे त्ति
२. °च्छेए (क,ख,घ) । पठ्यते । "आवश्यकादौ पुनरिमे स्थूलमृषा-
३ अयि ° (क), अइ ° (ख,घ) । वादभेदा उक्ताः" ततोयमर्थं सभाव्यते—
४. °वोच्छेए (क,ख), °वोच्छेए (घ) । एत एव प्रमादमहसाकाराऽनाभोगैरभिधीय-
५ थूलगमुसावाय ° (क,ग,घ) । माना मृषावादविरतेरतिचारा भवन्त्याकुट्या
६ पचतियारा (क,ग,घ) । अस्मिन् सूत्रे तथा च भगा इति (वृ) ।
उत्तरवर्तिअतिचारसूत्रेषु 'पेयाला' शब्द. १२ तक्करप्पओगे (क,घ) ।
साक्षात् लिखितो नास्ति । १३ कूडतुल्ल (घ) ।
७ थूलगमुसावायस्स पचविहे पण्णत्ते, तजहा— १४ इत्तरिय ° (क,ग) ।
कण्णालिय, गोवालिय, भोमालियं, णासा- १५ °कीडा (ख,घ) ।
वहारो, कूडसक्खेज्ज सधिकरणे । थूलगमुसा- १६ परविवाह ° (क्व) ।
वायस्स पच अतियारा जाणियव्वा (ख) । १७. कामभोगे तिक्वाभिनिवेसे (क), कामभोएसु
८ सहसव्भक्खाणे (क) तिक्वाभिनिवेसे (ख) ।
९ रहसव्भक्खाणे (क), रहसाभक्खाणे (ख,घ) । १८. इमे पच (क) ।
१०. मोसोवएसे सदारमंतभेए (क) ।

३७. 'तयाणतर च ण दिसित्रयस्स' समणोवासएण पच्च अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा १ उड्ढदिसिपमाणातिक्कमे' २ अहोदिसिपमाणा-
तिक्कमे ३ तिरियदिसिपमाणातिक्कमे ४ वेत्तवुड्ढी ५ सत्तिअतरद्धा' ॥
- ३८ तयाणतर च ण उवभोगपरिभोगे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—'भोयणओ कम्मओ य'^१ ।
भोयणओ' समणोवासएण पच्च अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ सच्चित्ताहारे २ सच्चित्तपडिवद्धाहारे ३ अप्पउलिओसहिभक्खणया^० ४ दुप्पउलिओसहिभक्खणया ५ तुच्छोसहिभक्खणया ।
कम्मओ ण समणोवासएण पण्णरस कम्मादाणाइ जाणियव्वाइ, न समायरि-
यव्वाइ, त जहा—१. इगालकम्मे २ वणकम्मे ३ 'साडीकम्मे ४ भाडीकम्मे ५ फोडीकम्मे'^६ ६. दतवाणिज्जे' ७ लक्खवाणिज्जे ८ रसवाणिज्जे ९ विस-
वाणिज्जे १० केसवाणिज्जे ११ जनपीलणकम्मे १२ निल्लच्छणकम्मे १३ दव-
ग्गिदावणया १४ सरदहत्तलागपरिसोसणया^० १५ असतीजणपोसणया^० ॥
- ३९ तयाणतर च ण अणट्ठादडवेरमणस्स समणोवासएण पच्च अतियारा जाणियव्वा,
न समायरियव्वा, त जहा—१ कदप्पे २ कुक्कुइए'^३ ३ मोहरिए ४ सजुत्ताहि-
करणे ५ उवभोगपरिभोगातिरित्ते^४ ॥

१. वृत्तिकृता अत्र एक महत्त्वपूर्णं सूचन कृत-
मस्ति—दिग्ब्रत शिक्षात्रतानि च यद्यपि पूर्वं
नोक्तानि तथापि तत्र तानि द्रष्टव्यान्यति-
चारभणनभ्यान्यथा निरवकाशता स्यादिहेति,
कथमन्यथा प्रागुक्तम्—दुवालमविह सावग-
धम्म पडिवज्जिस्सामीति ? कथं वा
वक्ष्यति—दुवालसविह सावगधम्मं पडिवज्ज-
इति, अथवा सामायिकादीनामित्तरकालीन-
त्वेन प्रतिनियतकालकरणीयत्वात् न
तदैव तान्यसौ प्रतिपन्नवान्, दिग्ब्रत च
विरतेरभावात् उचितावसरे तु प्रतिपत्स्यते
इति भगवतस्तदतिचारवर्जनोपदेशनमुप-
पन्नम् । यच्चोक्त द्वादशविध गृह्णधर्मं प्रति-
पत्स्ये, यच्च वक्ष्यति द्वादशविध श्रावकधर्मं
प्रतिपद्यते, तद् यथा काल तत्करणाभ्युपग-
मादनवधमवमेयम् (वृ) ।
- २ दिसि विदिसि (ख, घ) ।
३ उड्ढदिसाइक्कमे (वृपा) ।

- ४ सइ° (ख, घ) ।
५. भोयणओ य कम्मओ य (क), भोयणतो
कम्मतो (ख) ।
६. तत्थ ण भोयणओ (ख) ।
७ व्या० वि०—अप्पउलि+ओसहि° =अप्प-
उलिओसहि° ।
८ साडीकम्मे य भाडीकम्मे य फोडीकम्मे
य (ख) ।
९ 'दतवाणिज्जे' इत्यनन्तर पाठभिन्नता दृश्यते—
°केसवाणिज्जे विसवाणिज्जे (क), रस-
वाणिज्जे लक्खवाणिज्जे (ग), केसवाणिज्जे
रसवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे विसवाणिज्जे(घ) ।
१० °तलाय° (क), तडायसोसणया (ख),
तलावसोसणया (घ) ।
११ असति° (क, ग), असइ° (घ) ।
१२. कुक्कुतिए (क) ।
१३. °भोगाइरित्ते (क) ।

- ४० तयाणतर च ण सामाइयस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न
समायरियव्वा, त जहा—१ मणदुप्पणिहाणे २. वइदुप्पणिहाणे ३ कायदुप्पणि-
हाणे ४ सामाइयस्स सतिअकरणया ५ सामाइयस्स अणवद्वियस्स करणया ॥
- ४१ तयाणतर च ण देसावगासियस्स^१ समणोवासएण पच अतियारा जाणियव्वा, न
समायरियव्वा, त जहा—१ आणवणप्पओगे २. पेस[सा ?]णवणप्पओगे^२
३ सद्दाणुवाए ४ ल्वाणुवाए ५ वहियापोगलपक्खेवे^३ ॥
- ४२ तयाणतर च ण पोसहोववासस्स समणोवासएण पंच अतियारा जाणियव्वा,
न समायरियव्वा, त जहा—१ अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-सिज्जासथारे^४
२ अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-सिज्जासथारे ३ अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-
उच्चारपासवणभूमी ४ अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-उच्चारपासवणभूमी ५ पोस-
होववासस्स^५ सम्म^६ अणणुपालणया ॥
- ४३ तयाणतर च ण अहासविभागस्स समणोवासएणं पच अतियारा जाणियव्वा,
न समायरियव्वा, त जहा—१. सच्चित्तनिक्खेवणया^७ २ सच्चित्तपिहणया^८
३ कालातिककमे^९ ४ परववदेसे^{१०} ५. मच्छरियया^{११} ॥
४४. तयाणतर च ण अपच्छिममारणतियसलेहणाभूसणाराहणाए^{१२} पच अतियारा
जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा—१ इहलोगाससप्पओगे २ परलोगा-
ससप्पओगे ३ जीवियाससप्पओगे ४ मरणासंसप्पओगे ५. कामभोगासस-
प्पओगे ॥

आणंद-अभिगह-पदं

- ४५ तए ण से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय
सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविह सावयधम्म पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता समण

१. वय^० (घ) ।

पाठ समीचीन. प्रतिभाति ।

२. ^०काणियस्स (ग) ।

४. ^०पोगलक्खेवे (क) ।

३ क, ख, घ, आदर्शेषु 'पेसवण' इति पाठो
लभ्यते, किन्तु 'पेमवण' शब्दस्यार्थो दुरधि-
गमोन्ति । प्रेषणस्यार्थं 'पेसण' शब्देनापि
नूचितो भवेत् । ग' आदर्शे 'पेसणवण' इति
पाठो विद्यते । वृत्त्यनुसारेण अत्रापि आनयन-
स्यार्थोस्ति, यथा —"बलाद् विनियोज्य.
प्रेष्यन्तम्य प्रयोगो यथाऽभिगृहीतप्रविचारदेश-
व्यतिक्रमभयात् त्वयाऽवश्यमेव तत्र गत्वा मम
गवाद्यानेयम्" (वृ) तेनात्र 'पेसणवण' इति

५ ^०सथारए (ग) ।

६ पोसहस्स (ग) ।

७ वृत्तौ 'सम्म' शब्दो न व्याख्यातो दृश्यते ।

८. ^०निक्खवणयाए (क) ।

९. ^०पिहणयाए (क), ^०पेहणया (ख, घ) ।

१०. कालातिकम्मदाणे (ख) ।

११. परओवदेसे (ख) ।

१२. मच्छरया (ख) ।

१३ ^०राहणयाते (क) ।

भगवं महावीर वंदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—नो खलु मे भते ! कप्पइ अज्जप्पभिइ^१ अण्णउत्थिए^२ वा अण्णउत्थिय-देवयाणि वा अण्ण-उत्थिय-परिग्गहियाणि वा अरहतचेइयाइ^३ वदित्ते वा नमसित्ते वा, पुंवि अणालत्तेण आलवित्ते वा संलवित्ते वा, तेसि असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा दाउ वा अणुप्पदाउ वा, नन्नत्थ रायाभिओगेण गणाभिओगेण वलाभिओगेण देवयाभिओगेण गुरुनिग्गहेण वित्तिकतारेण^४ ।

कप्पइ मे समणे निग्गथे 'फासु-एसणिज्जेण^५ असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुच्छेण पीढ-फल-सेज्जा-सथारएण ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणस्स विहरित्ते—त्ति कट्टु इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ, अभिगिण्हत्ता पसिणाइ पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्टाइ आदियइ, आदित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव वाणियगामे नयरे, [जेणेव सए गिहे जेणेव सिवणदा भारिया^६ ?] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिवणद^७ भारिय एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए^८ । मए^९ समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्ममे निसते । से वि य धम्ममे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए^{१०} । त गच्छाहि^{११} ण तुम देवाणुप्पिए^{१२} । समण भगव महावीर वदाहि^{१३} •णमसाहि सक्कारेहि सम्माणेहि कल्लाण मगल देवय चेइय^० पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जाहि ॥

सिवणदाए वदणट्ट-गमण-पद

४६ तए ण सा सिवणदा भारिया आणदेण समणोवासएण एव वुत्ता समाणा हट्टुट्टु^{१४}—

- | | |
|--|--|
| १. अज्जप्पभिइए (ख), अज्जपभिइं (घ) । | ८. °पिया (घ) । |
| २. °उत्थिया (ग, घ) । | ९. मते (ग) । |
| ३. चेइयाइ (क, ख, ग), कोष्ठकसकेतितासु तिसृष्वपि प्रतिषु अरहतचेइयाइ ^३ पाठस्य स्थाने केवल 'चेइयाइ' इति पाठो लभ्यते । वृत्तौ 'अरहत' शब्दो व्याख्यातोऽस्ति । | १०. अभिरुतिते (ग) । |
| ४. वित्ती ^० (क, ग) । | ११. गच्छ (क, ख, घ), गच्छह (ग) । |
| ५. फासुतेसणिज्जेण (क), फासुएण एसणिज्जेण (ख) । | १२. स० पा०—वदाहि जाव पज्जुवासाहि । |
| ६. सप्तमाध्ययनानुसारेण असौ पाठ उपयुक्त प्रतिभाति । | १३. स० पा०—हट्टुट्टुत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, रत्ता एव वयासी—खिप्पामेव लहुकरण जाव पज्जुवासइ । प्रस्तुतसक्षिप्तपाठस्य सूचकचिन्ह नोपलभ्यते । अस्य पूर्ति औपपातिकस्य (मू०५०), प्रस्तुतसूत्रवत्सप्तमाध्ययनस्य (७।३३) तथा भगवत्या. (६।१४१-१४५) आधारेण कृतास्ति । |
| ७. सिवणदा (क), सिवानद (घ) । | |

- चित्तमाणदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव सामि । त्ति आणदस्स समणोवासगस्स एयमट्ठ विणएण पडिसुणेइ ॥
- ४७ तए ण से आणदे समणोवासए कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो । देवाणुप्पिया । लहुकरणजुत्त-जोइय समखुरवालिहाण-सम- लिहियसिगएहि जवूणयामयकलावजुत्त-पइविसिट्टुएहि रययामयघट-सुत्तरज्जुग- वरकचणखचियनत्थपग्गहोग्गहियएहि नीलुप्पलकयामेलएहि पवरगोणजुवाणएहि नाणामणिक्कणग-घटियाजालपरिगय सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइय- निम्मिय पवरलक्खणोववेय जुत्तामेव धम्मिय जाणप्पवर उवट्टवेह, उवट्टवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥
- ४८ तए ण ते कोडुवियपुरिसा आणदेण समणोवासएण एव वुत्ता समाणा हट्टुट्टु- चित्तमाणदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव सामि ! त्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइय जाव^१ धम्मिय जाणप्पवर उवट्टवेत्ता तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ॥
- ४९ तए ण सा सिवणदा भारिया ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मगलपायच्छिता सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मिय जाणप्पवर दुरुहइ, दुरुहिता वाणियगामं नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छिता जेणेव दूडपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे मुसूसमाणा णमसमाणा अभिमुहे विणएण पजलियडा^० पज्जुवासइ ॥
- ५० 'तए ण'^२ समणे भगव महावीरे सिवणदाए तीसे य^३ महइमहालियाए^४ परिसाए जाव^५ धम्म परिकहेइ^६ ॥

सिवणंदाए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

५१. तए ण सा सिवणदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु^७-•चित्तमाणदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-

१. उवा० १।४७ ।

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

२. ततो (क, ख) ।

६. कहेइ (क, ख, ग, घ) ।

३. × (क) ।

७. स० पा०—हट्टुट्टु जाव गिहिधम्म ।

४. महत्ति० (क) ।

विसप्पमाणहियया उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण, रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण, अट्ठभुट्टेमि णं भते ! निग्गथ पावयण । एवमेय भते ! तहमेय भते ! अविहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से जहेय तुब्भे वदह । जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए वह्वे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इव्वभ-सेट्टि-सेणावड-सत्थवाहप्पभि इया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए । अह ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि ॥

५२. तए ण सिवणदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह^० गिहिधम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता तमेव धम्मिय जाणप्पवर दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिस^१ पाउव्वभूया, तामेव दिस^२ पडिगया ॥

गोयमपुच्छा-पदं

- ५३ भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—पहू ण भते ! आणदे समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिए मुडे^१ •भवित्ता अगाराओ अणगारिय^० पव्वइत्तए^२ ?

नो इणट्टे^३ समट्टे ।

गोयमा ! आणदे ण समणोवासए वहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग^४ पाउणि-हिति^५, पाउणित्ता^६ •एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्टि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलो-इय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा^० सोहम्मि कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उव्वज्जिहिति । तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि

१. दिसि (ख, घ) ।

२. दिसि (क, ख, घ) ।

३. स० पा०—मुडे जाव पव्वइत्तए ।

४. पव्वत्तित्ते (ग) ।

५. तिणट्टे (क, ग) ।

६. ०परियाय (घ) ।

७. पाहुणीहिति (क) ।

८. स० पा०—पाउणित्ता जाव सोहम्मि ।

पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता^१ । तत्थ ण आणदस्स वि समणोवासगस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता^२ [भविस्सई ?] ॥

भगवओ जणवयविहार-पद

५४ तए ण समणे भगव महावीरे 'अण्णदा कदाइ' •वाणियगामाओ नयरओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिकखमइ, पडिणिकखमित्ता वहिया जणवयविहारं^० विहरइ ॥

आणदस्स समणोवासग-चरिया-पदं

५५ तए ण से आणदे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे^३ •उवलद्धपुण्णपावे आसव-सवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-वधमोक्खकुसले असहेज्जे, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गधव्व-महोरगाइएहि देव-गणेहि निग्गथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गथे पावयणे णिस्सकिए णिककखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्टे गहियट्टे पुच्छियट्टे अभिगयट्टे विणिच्छियट्टे अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो ! निग्गथे पावयणे अट्टे अय परमट्टे सेसे अणट्टे ऊसियफलिहे अवगुयदुवारे चियत्ततेउर-परघरदार-प्पवेसे चाउद्धसट्टमुद्धि-पुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्म अणुपालेत्ता समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएण^० पडिलाभे-माणे विहरइ ॥

सिवणंदाए समणोवासिय-चरिया-पदं

५६ तए ण सा सिवणदा भारिया समणोवासिया जाया^४—•अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-सवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-वधमोक्खकुसला असहेज्जा, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गधव्व-महोरगाइएहि देवगणेहि निग्गथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, निग्गथे पावयणे णिस्सकिया णिककखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्टा गहियट्टा पुच्छियट्टा अभिगयट्टा विणिच्छियट्टा अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ता, अयमाउसो ! निग्गथे

१. अतोग्रवर्ती 'पण्णत्ता' पर्यन्त पाठ अत्र अनावश्यक प्रतीयने, असौ चतुरशीतितमे सूत्रे प्रासंगिकोन्ति । किन्तु सर्वासु प्रतिपु कथमपि समागतोसौ लभ्यते ।

२. पूर्ववाक्ये 'उववज्जिहति' इति भविष्यत्-कालीन क्रियापद युज्यते ।

३. सं० पा०—अण्णदा कदाइ वहिया जाव विहरइ । ^०कयायि (क); अन्नया कयाइ (ख), अन्नया कयाइ (घ) ।

४. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव पडि-लाभेमाणे ।

५. सं० पा०—जाया जाव पडिलाभेमाणी ।

पावयणे अट्टे अय परमट्टे सेसे अणट्टे ऊसियफलिहा अवगुयदुवारा चियत्ततेउर-
परघरदार-प्पवेसा चाउद्दसट्टमुद्धिट्टपुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह सम्म अणुपा-
लेत्ता समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-
कवल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथार-
एण० पडिलाभेमाणी विहरड ॥

आणंदस्स धम्मजागरिया-पदं

५७ तए ण तस्स आणदस्स समणोवासगस्स उच्चावएहि^१ 'सील-व्वय-गुण'^२-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि^३ अप्पाण भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छराइ वीइक्क-
ताइ । पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा^४ वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए चित्तिए
पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह वाणियगामे नयरे बहूण
राईसर^५—●तलवर-माडविय-कोडुविय-इव्भ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहाण बहूसु
कज्जेसु य कारणेसु य कुडुवेसु य मतेसु य गुज्भेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य
व्वहारेमु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे०, सयस्स वि य ण कुडुवस्स^६ ●मेढी
पमाणं आहारे आलवण चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलवणभूए
चक्खुभूए सव्वकज्जवड्ढावए०, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स
भगवओ महावीरस्स अतिय^७ धम्मपण्णत्ति उवसर्पज्जित्ता ण विहरित्तए । त
सेय खलु मम^८ कल्ल^९ ●पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलि-
यम्मि अह पडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुजद्धरागसरिसे कमला-
गरसडवोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा० जलते विपुलं
असण-पाण-खाइम-साइम^{१०} ●उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-
परिजण आमतेत्ता, त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण विपुलेण असण-
पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गधमल्लालकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव
मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणस्स पुरओ० जेट्टपुत्त कुडुवे ठवेत्ता,
त मित्त^{११}—●नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण० जेट्टपुत्त च आपुच्छित्ता,

१. ०वर्तेहि (ग) ।

२. सीलगुणव्वय (क) ।

३ अतरे (क, ग) ।

४ स० पा०—राईसर जाव सयस्स ।

५. म० पा०—कुडुवस्स जाव आघारे तं ।

६. अतित (ग) ।

७ मम (घ) ।

८. स० पा०—कल्ल जाव जलते ।

९ विउल (ख) ।

१० स० पा०—साइम जहा पूरणो जाव जेट्टपुत्त ।

११ स० पा०—मित्त जाव जेट्टपुत्त ।

‘कोल्लाए सण्णिवेसे’ नायकुलसि^१ पोसहसाल पडिलेहिता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए—एव सपेहेड, सपेहेत्ता कल्ल^२ *पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ° विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेड, उवक्ख-डावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण आमतेड, आमतेत्ता ततो पच्छा ण्हाए^३ *कयवलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सुट्टप्पावेसाइं मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए ° अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे भोयणवेलाए भोयण-मडवसि सुहासणवरगए, तेण मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परिजणेण सट्ठि त विपुल असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे विसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागए ण आयते चोक्खे परमसुइब्भूए, त मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परिजण विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गधमल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणस्स ° पुरओ जेट्टपुत्त सट्टावेइ, सट्टावेत्ता एव वयासी—एव खलु पुत्ता ! अह वाणियगामे नयरं वहूणं^४ *जाव’ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव’ सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म-पण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण ° विहरित्तए । त सेय खलु मम इदाणि तुम सयस्स कुडुवस्स मेढि पमाण आहार आलवणं चक्खु ठावेत्ता^५, *तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण तुमं च आपुच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे नायकुलसि पोसहसाल पडिलेहिता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण ° विहरित्तए ॥

५८. तए ण [से ?] जेट्टपुत्ते आणदस्स समणोवासगस्स तह त्ति एयमट्ट विणएणं पडिसुणेति ॥

५९. तए ण से आणदे समणोवासए तस्सेव मित्त’-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणस्स ° पुरओ जेट्टपुत्तं कुडुवे^६ ठावेति, ठावेत्ता एव वयासी—मा णं

१. कोल्लागसण्णि ° (ग) ।

पुरओ ।

२. नातकुलसि (ग) ।

६. स० पा०—वहूणं राईसर जहा चित्तिय जाव विहरित्तए ।

३. स० पा०—कल्ल विउल असण । कल्ल विउल तहेव जिमियभुत्तुत्तरागए (क, ख) ।

७,८. उवा० १।१३ ।

४. स० पा०—ण्हाए जाव अप्पमहग्घा ° ।

९. स० पा०—ठावेत्ता जाव विहरित्तए ।

५. स० पा०—त मित्त जाव विउलेण पुप्फ ५ सक्कारेइ सम्माणेइ, रत्ता तस्सेव मित्त जाव

१०. सं० पा०—मित्त जाव पुरओ ।

११. कुट्टवे (ग), कुडवे (घ) ।

देवाणुप्पिया ! तुब्भे अज्जप्पभिइ केइ मम बहूसु कज्जेसु' य •कारणेषु य मतेसु य कुडुवेसु य गुज्भेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य० आपुच्छउ वा पडिपुच्छउ वा, मम अट्टाए असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा उवक्खडेउ वा उवक्करेउ वा ॥

६०. तए ण से आणदे समणोवासए जेट्टपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिकखमइ, पडिणिकखमित्ता वाणियगाम नयरं मज्झमज्झेण' निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे, जेणेव नायकुले, जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दव्वभसथारय सथरेइ, सथरेत्ता दव्वभसथारय दुरुहइ', दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए' •वभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्त-सत्थमुसले एगे अवीए० दव्वभसथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अत्तिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

आणदस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पद

६१. तए ण से आणदे समणोवासए पढम उवासगपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥
 ६२. [तए ण से आणदे समणोवासए' ?] पढम उवासगपडिम' अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फामेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
 ६३. तए ण से आणदे समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्च, चउत्थ, पचम, छट्ठ, सत्तम, अट्ठम, नवम, दसम, एक्कारसम' •उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फामेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ० आराहेइ ॥
 ६४ तए णं से आणदे समणोवासए इमेण एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के' •लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडिया-भूए० किसे धमणिसतए जाए ॥

आणंदस्स अणसण-पद

६५ तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता' •वरत्तकाल-

- | | |
|---|--|
| १. स० पा०—कज्जेसु य आपुच्छउ वा । | ६ उपासकप्रतिमाना विवरण ज्ञातु द्रष्टव्या दशाश्रुतकन्धस्य सप्नमीदशा । |
| २. मज्झ मज्झ (क) । | ७ स० पा०—एक्कारसम जाव आराहेइ । |
| ३ द्रुहति (क) । | ८ स० पा०—मुक्के जाव किमे । |
| ४ स० पा०—पोसहिए० । | ९ स० पा०—पुव्वरत्ता जाव धम्मजागरिय । |
| ५ भगवती (२।५६) सूत्रानुसारेण कोण्डकान्त-र्गतपाठक्रम. सभाव्यते । | |

समयसि० धम्मजागरियं जागरमाणस्स अय अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अहं इमेण' •एयारूवेणं ओरालेणं विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे० धम्मणिसतए जाए । त अत्थि ता' मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिड-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिड-सवेगे, जाव 'य मे' धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे' सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा-जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए - एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतिय'•सलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए० काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

आणंदस्स ओहिणाणुप्पत्ति-पदं

६६ तए ण तस्स आणदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ सुभेणं अज्भवसाणेण, सुभेण' परिणामेण, लेसाहि विसुज्जमाणीहि, तदावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमेण ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे ण लवणसमुद्दे' पंचजोयणसयाइ' खेत्त जाणइ पासइ । '•दक्खिणे ण लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ खेत्त जाणइ पासइ । पच्चत्थिमे ण लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ खेत्त जाणइ पासइ० । उत्तरे ण जाव चुल्लहिमवत वासधरपव्वय जाणइ पासइ । उड्ढ जाव सोहम्म कप्प जाणइ पासइ । अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुत'' नरय चउरासीतिवाससहस्सट्ठित्तिय जाणइ पासइ ॥

गोयमस्स आगमण-पदं

६७ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसरिए ॥
६८. परिसा निग्गया जाव'' पडिगया ॥

१. स० पा०—इमेण जाव धम्मणिसतए ।

२. जा (ग) ।

३. सयमेव (क) ।

४. णो (क) ।

५. उवा० १।५७ ।

६. सं० पा०—मारणनिय जाव काल ।

७ सुहेण (क), सोभणेण (ग) ।

८. °समुद्दे ण (क) ।

९. °सत्तिय (क, ख), °सइय (ग) ।

१० स० पा०—एव दक्खिणे ण पच्चत्थिमे ण च ।

११. लोलुय अच्चुत (ख) ।

१२. ओ० सू० ५२, ७८-८० ।

६६. तेण कालेण तेणं समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे^१ अतेवासी इदभूई नाम अणगारे गोयमसगोत्ते ण सत्तुस्सेहे समचउरससठाणसठिए वज्जरिसह-नारायसघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवभचेरवासी उच्छूढसरीरे सखित्त-विउलतेयलेस्से छट्टुछट्टेण अणिक्वित्तेण तवोकम्मेण सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
७०. तए ण से भगव गोयमे छट्टुक्खमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्भाय करेइ, विइयाए पोरिसीए भाण भियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसभते मुहपोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइ, पडिलेहेइ पडिलेहेत्ता भाय-णाइ^२ पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइ उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए [समाणे ?] छट्टुक्खमणपारणगसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीच-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खारियाए अडित्तए । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेह ॥
७१. तए ण भगव गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्वमइ, पडि-णिक्वमित्ता अतुरियमचवलमसभते जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय^३ सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव वाणियगामे नयरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खारिय अडइ ॥
७२. तए ण से भगव गोयमे वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घर-समुदाणस्स भिक्खारियाए अडमाणे अहापज्जत्त भत्तपाण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छइ, पडिणिग्गच्छित्ता कोल्लायस्स सण्णिवेसस्स अदूरसामतेण वीईवयमाणे बहुजणसद् निसामेड । बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एव भासइ, एव पण्णवेइ, एव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी आणदे नाम समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिम^४ •मारणतिय-सलेहणा-भूसणा-भूसिए, भत्तपाणपडियाइक्खिए काल ° अणवकखमाणे विहरइ ॥

१ जेट्ठे जहा पण्णत्तीए तथा भिक्खारियाए ३ इरिय (क्व) ।

जाव अडमाणे (क, ग) ।

४. स० पा०—अपच्छिम जाव अणवकखमाणे ।

२. भायणवत्थाइ (क्व) ।

एवं वयासी—एव खलु भते । अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए' •समाणे वाणियगामे नयरे भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेमि, पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छामि, पडिणिग्गच्छित्ता कोल्लायस्स सण्णिवेसस्स अदूरसामतेणं वीईवयमाणे बहुजणसद्द निसामेमि । बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एव भासइ, एव पण्णवेड, एव परूवेड—एव खलु देवाणुप्पिया । समणस्स भगवओ महारवीस्स अतेवासी आणदे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ।

तए ण मम बहुजणस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—त गच्छामि णं आणंद समणोवासय पासामि—एव सपेहेमि, सपेहेत्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे, जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणदे समणोवासए तेणेव उवागच्छामि ।

तए ण से आणदे समणोवासए मम एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्टुत्तुट्ट-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए मम वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—एवं खलु भते । अह इमेण ओरालेण विउलेण पयत्तेणं पग्गट्टिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्टिचम्मावणद्धे किडिक्किडियाभूए किसे धमणिसतए जाए, णो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अंतिय पाउवभवित्ता ण तिक्खुत्तो मुद्धानेण पादे [सु ?] अभिवदित्तए । तुब्भे ण भते । इच्छक्कारेण अणभिओगेण इओ चेव एह, जेण देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धानेण पादेसु वदामि णमसामि ।

तए ण अह जेणेव आणदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छामि । तए ण से आणदे समणोवासए मम तिक्खुत्तो मुद्धानेण पादेसु वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अत्थि ण भते । गिहिणो गिहमज्झावसतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ ?

हता अत्थि ।

जइ ण भते ! गिहिणो गिहमज्झावसतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, एव खलु भते ! मम वि गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे ण लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ खेत्त जाणामि पासामि । दक्खिणे ण लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ खेत्त जाणामि पासामि । पच्चत्थिमे ण लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ खेत्त जाणामि पासामि । उत्तरे ण जाव चुल्लहिमवत्तं वासघरपव्वय जाणामि पासामि । उड्ढं जाव सोहम्म कप्प जाणामि पासामि । अहे जाव

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीतिवाससहस्सट्ठितिय जाणामि पासामि ।

तए णं अहं आणद समणोवासय एवं वइत्था—अत्थि ण आणदा ! गिहिणो गिहमज्झावसतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ । नो चेव ण एमहालए । त ण तुमं आणदा ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव^१ अहारिह पायच्छित्त तवोकम्मं पडिवज्जाहि ।

तए ण से आणदे मम एवं वयासी—अत्थि ण भते ! जिणवयणे संताण तच्चाणं तहियाण सव्भूयाण भावाण आलोइज्जइ जाव^२ अहारिह पायच्छित्त तवोकम्मं पडिवज्जिज्जइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

जइ ण भते ! जिणवयणे सताणं तच्चाणं तहियाण सव्भूयाण भावाण नो आलोइज्जइ जाव^३ अहारिह पायच्छित्त तवोकम्मं नो पडिवज्जिज्जइ, त णं भंते ! तुभे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह जाव^४ अहारिह पायच्छित्त तवोकम्मं पडिवज्जेह^० ॥

- ८० तए ण अहं आणदेण समणोवासएणं एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए वित्ति-गिच्छसमावण्णे आणंदस्स समणोवासगस्स अतियाओ पडिणिक्खमामि, पडिणिक्खमित्ता जेणेव इह तेणेव हव्वमागए । 'त ण'^५ भते ! किं आणदेण समणोवासएण तस्स ठाणस्स आलोएयव्वं^६ •पडिक्कमेयव्वं निंदेयव्वं गरिहेयव्वं विउट्ठेयव्वं विसोहेयव्वं अकरणयाए अठ्ठुट्ठेयव्वं अहारिह पायच्छित्त तवोकम्मं पडिवज्जेयव्वं ? उदाहु मए ?

भगवओ उत्तर-पदं

- ८१ गोयमाइ ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—गोयमा ! तुम चेव ण तस्स ठाणस्स आलोएहि^७ जाव^८ •अहारिह पायच्छित्त तवोकम्मं पडिवज्जाहि, आणद च समणोवासय एयमट्ठु खामेहि ॥

गोयमस्स खामणा-पदं

- ८२ तए ण से भगव गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठु विणएण पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स ओलाएइ^९ •पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ

१. उवा० १।७७ ।

२,३,४. उवा० १।७८ ।

५. तए ण (ख); ते ण (घ) ।

६. सं० पा०—आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं ।

७. सं० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि ।

८. उवा० १।७७ ।

९. सं० पा०—आलोएइ जाव पडिवज्जइ ।

- ७३ तए णं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं' सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे' अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जितथा—त गच्छामि णं आणद समणोवासय पासामि—एव सपेहेड, सपेहेत्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे 'जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणदे समणोवासए', तेणेव उवागच्छइ ॥
७४. तए ण से आणदे समणोवासए भगव गोयम एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठं-•चित्तमाणदिए पीडमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं हियए भगव गोयम वदइ णमसइ, वदित्ता णममित्ता एव वयासी— एवं खलु भते ! अह इमेण ओरालेण' •विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्के निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे ° धमणिसतए जाए, णो सच्चाएमि देवाणुप्पियस्स अतिय पाउवभित्ता ण तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादे (सु ?) अभिवदित्तए । 'तुब्भे ण भते ! इच्छाक्कारेण' अणभिओएण' इओ चेव एह, जेण' देवाणुप्पियाण तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वदामि णमसामि ॥
- ७५ तए ण से भगव गोयमे जेणेव आणदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

आणंद-गोयम-संवाद-पद

- ७६ तए ण से आणदे समणोवासए भगवओ गोयमस्स तिक्खुत्तो मुद्धाणेण पादेसु वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अत्थि ण भंते ! गिहिणो गिहमज्झावसतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ ?
- हता अत्थि ।
- जइ ण भते ! गिहिणो' •गिहमज्झावसतस्स ओहिणाणे ° समुप्पज्जइ, एव खलु भते ! मम वि गिहिणो गिहमज्झावसतस्स ओहिणाणे'° समुप्पण्णे—पुरत्थिमे ण लवणसमुद्धे पच्चजोयणसयाइ" •खेत्त जाणामि पासामि । दक्खिणे ण लवणसमुद्धे पच्च जोयणसयाइ खेत्त जाणामि पासामि । पच्चत्थिमे ण लवणसमुद्धे पच्च जोयणसयाइ खेत्त जाणामि पासामि । उत्तरे ण जाव चुल्लहिमवतं वासधरपव्वय जाणामि पासामि । उड्ढ जाव सोहम्म कप्प जाणामि पासामि ।

१. एव (ख) ।

२. अतमेयारूवे (क), अय इमेयारूवे (ख) ।

३. जेणेव आणंदे समणोवासए जेणेव पोसहसाला (क, ख, ग, घ), महाशतकाव्ययने—'जेणेव महासयगस्स समणोवासगस्स गिहे जेणेव महासयए समणोवासए' अय क्रमो विद्यते । अत्राप्यसौ क्रमो युज्यते ।

४. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

५. स० पा०—उरालेण जाव धमणिसतए ।

६. इच्छाकारेण (घ) ।

७. अभिओगेण (क,ख) ।

८. जा ण (क,ख,ग), जहा ण (घ) ।

९. स० पा०—गिहिणो जाव समुप्पज्जइ ।

१०. ओहिणाणे (ग) ।

११. स० पा०—पच्चजोयणसयाइ जाव लोलुय-च्चुय ।

- अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए° लोलुयच्चुत^१ नरय जाणामि पासामि ॥
- ७७ तए णं से भगव गोयमे आणद समणोवासय एव वयासी—अत्थि णं आणदा ! गिहिणो^२ °गिहमज्झावसतस्स ओहिणाणे° समुपज्जइ । नो चेव ण एमहालए । त णं तुम आणदा ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि^३ °पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणाए अब्भुट्टाहि अहारिह पायच्छित्त° तवोकम्म पडिवज्जाहि ॥
- ७८ तए ण से आणदे समणोवासए भगव गोयम एव वयासी—अत्थि ण भते ! जिणवयणे सताणं^४ तच्चाण तहियाण सब्भूयाण भावाण आलोइज्जइ^५ °निदिज्जइ गरिहिज्जइ विउट्टिज्जइ विसोहिज्जइ अकरणयाए अब्भुट्टिज्जइ पडिक्कमिज्जइ अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म° पडिवज्जिज्जइ ? नो इणट्टे समट्टे । जइ ण भते ! जिणवयणे सताणं^६ °तच्चाण तहियाण सब्भूयाण° भावाणं नो आलोइज्जइ^७ °नो पडिक्कमिज्जइ नो निदिज्जइ नो गरिहिज्जइ नो विउट्टिज्जइ नो विसोहिज्जइ अकरणयाए नो अब्भुट्टिज्जइ अहारिह पायच्छित्त° तवोकम्म^८ नो पडिवज्जिज्जइ, तं ण भते ! तुभे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएहं^९ °पडिक्कमेह निंदेह गरिहेह विउट्टेह विसोहेह अकरणाए अब्भुट्टेह अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म° पडिवज्जेह^{१०} ॥
- ७९ तए ण मे भगव गोयमे आणदेण समणोवासएण एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए वितिगिच्छसमावण्णे^{११} आणदस्स समणोवासगस्स अतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दूइपलासे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे^{१२}, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते गमणा-गमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसण आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदसेइ, पडिदसित्ता समण भगव महावीर वदइ णमंसइ, वदित्ता णमंसित्ता

१. लोलुय अच्चुत (ख) ।

२. स० पा०—गिहिणो जाव समुपज्जइ ।

३. स० पा०—आलोएहि जाव तवोकम्म । अत्र स्थानागे प्रस्तुतवृत्तौ च किञ्चित् पाठभेदो विद्यते—गायच्छित्त तवोकम्म (स्थानाग ३।३३८) तवोकम्म पायच्छित्त (वृत्ति अद्ययन ३) प्रतिपु 'आलोएहि जाव तवोकम्म' इति पाठसंक्षेपो लभ्यते, तेन स्थानागानुसारी पाठ एव भूले स्वीकृत ।

४. सच्चाण (क), सभासे (ख) ।

५. स० पा०—आलोइज्जइ जाव पडिवज्जि-ज्जइ ।

६. स० पा०—सताण जाव भावाण, सच्चाण (ग), सभासे (ख) ।

७. स० पा०—आलोइज्जइ जाव तवोकम्म ।

८. तवे° (क) ।

९. स० पा०—आलोएह जाव पडिवज्जेह ।

१०. पडिवज्जह (क, ख, घ) ।

११. वितिगिच्छ° (क), वितिगिच्छा° (ख, घ) ।

१२. महावीरे जाव भत्तपाण (ग) ।

विजट्टइ विसोहइ अकरणयाए अब्भुट्टइ अहारिह पायच्छित्त तवोकम्मं०
पडिवज्जइ, आणद च समणोवासय एयमट्टु खामेइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

८३ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ वहिया जणवयविहार' विहरइ ॥

आणंदस्स समाहिमरण-पदं

८४. तए ण से आणदे समणोवासए वहुहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेत्ता, वीस वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ' अणसणाए छेदेत्ता, आलोडय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, कालमासे काल किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेसगस्स' महा-विमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे ण 'अरुणाभे विमाणे'^६ देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता । तत्थ ण आणदस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८५. आणदे' ण भते । देवे ताओ' देवलोगाओ' आउक्खएणं भवक्खएण ठिइक्खएणं अणतर चय चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निकखेव-पद

८६. ^{१०}एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ० ॥

१ जणवत विहारं (घ) ।

२. अप्पाण (ग) ।

३. भत्ताति (क, ग) ।

४. ० वडिसगस्स (घ) ।

५. अरुणे विमाणे (क), अरुणेहिं विमाणेहिं (ख) ।

६ तत्थ णं आणदे (क) ।

७ ततो (ख) ।

८. देवलोगलोगाओ (क) ।

९. स० पा—निकखेवो पढमस्स ।

वीर्यं अज्भयणं

कामदेवे

उक्खेव-पद

- १ जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव^१ सपत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाणं पढमस्स अज्भयणस्स^२ अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भते ! अज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

कामदेवगाहावइ-पदं

- २ एव खलु जवू ! तेणं कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी । पुण्णभद्दे चेइए । जियसत्तू राया ॥
- ३ ^१तत्थ ण चपाए नयरीए कामदेवे नाम गाहावई परिवसइ—अइडे जाव^२ वहुजणस्स अपरिभूए ॥
- ४ तस्स ण कामदेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ^३, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥
- ५ से ण कामदेवे गाहावई वहुण जाव^४ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव^५ सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. ना० १।१।७ ।

२. वग्गस्स (क) ।

३. सं० पा०—कामदेवे गाहावई । भद्दा भारिया ।

छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्ढि-
पउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया

दसगोसाहस्सिएण वएणं ।

४. उवा० १।११ ।

५. वुड्ढि^० (ख,घ) ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

६ तस्स ण कामदेवस्स गाहावइस्स भद्दा नाम भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ° ॥

महावीर-समवसरण-पद

७. °तेण कालेण तेण समएण समणे भगवं महावीरे जाव' जेणेव चपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिख्वं ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
- ८ परिसा निग्गया ॥
- ९ कूणिए राया जहा, तथा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
- १० तए ण से कामदेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे—“एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसठे इहेव चपाए नयरीए वहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिख्व ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।”
- त महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवंताण णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेटमल्ल-दामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेण चप नयारिं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे गाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलिउडे पज्जुवासइ ॥
११. तए ण समणे भगव महावीरे कामदेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव' धम्म परिकहेइ ॥
- १२ परिसा पडिगया, राया य गए ॥

१. उवा० १।१४ ।

३. ओ० सू० १६,२२ ।

२. स० पा०—समोसरण जहा वाणदो तथा निग्गओ । तहेव सावयधम्म पडिवज्जइ । सा चेव वत्तव्वया जाव जेदुपुत्त ।

४. ओ० सू० ५३-६९ ।

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

कामदेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३ तए ण कामदेवे गाहावई सैमणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुत्तुट्ट-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समण भगव महावीर तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासो—सद्दहामि ण भते । निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भते । निग्गथ पावयण, रोएमि ण भते । निग्गथ पावयण, अठ्ठुट्टेमि ण भते । निग्गथ पावयण । एवमेय भते । तहमेय भते । अवित्तहमेय भते । असदिद्धमेय भते । इच्छियमेय भते । पडिच्छियमेय भते । इच्छिय-पडिच्छियमेय भते । से जहेय तुब्भे वदह । जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए बहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तथा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए । अह ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि ॥

१४ तए ण से कामदेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए^१ सावयधम्म पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ चपाए नयरीए पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

कामदेवस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए ण से कामदेवे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव^२ समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा सथारएण पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

भद्दाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७ तए ण सा भद्दा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव^३ समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-

१. पू०—उवा० १।२४-५३ ।

३. उवा० १।५६ ।

२. उवा० १।५५

कवल-पायपुच्छेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पोढ-फलग-सेज्जा-सथार-
एण पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

कामदेवस्स धम्मजागरिया-पदं

१८ तए ण तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स उच्चावएहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण भावेमाणस्स चोदस सवच्छराइं वीइक्क-
ताइ । पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए
पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह चपाए नयरीए वहूणं
जाव^१ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी जाव^२
सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए^३ ॥

१९. तए ण से कामदेवे समणोवासए^० जेट्टपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-
परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता^४ सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ,
पडिणिक्खमित्ता चप नयारिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव
पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता
उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दवभसथारय सथरेइ, सथरेत्ता
दवभसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वभयारी उम्मुक्कमणि-
सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दवभसथारो-
वगए^० समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता णं
विहरइ ॥

कामदेवस्स पिसायरूव-कय-उवसग्ग-पद

२०. तए ण तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि एगे देवे
मायी मिच्छदिट्ठी^५ अतिय पाउव्वभूए ॥

२१. तए ण से देवे एग मह पिसायरूव विउव्वइ । तस्स ण दिव्वस्स^६ पिसायरूवस्स
इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते—सीस से गोकिलज-सठाण-सठिय^७, सालि-

१,२. उवा० १।१३ ।

३. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

४ स० पा०—आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला
तेणेव उवागच्छइ, २ ता जहा आणदो जाव
समणस्स ।

५. मिच्छा० (क,घ) ।

६ देवस्स (ख,घ) ।

७. पुस्तकान्तरे विशेषणातरमुपलभ्यते—
'विगयकप्पयनिभ', क्वचित्तु, 'वियडकोप्पर-
निभ' (वृ) ।

भसेल्ल-सरिसा से केसा कविलतेएण^१ दिप्पमाणा, 'उट्टिया-कभल्ल-सठाण-सठिय'^२ निडालं, मुगुसपुच्छ व तस्स भुमकाओ^३ फुग्गफुग्गाओ^४ विगय-वीभत्स^५-दसणाओ, सीसघडिविणिग्गयाइ अच्चीणि विगय-वीभत्स^६-दसणाइ, कण्णा जह^७ सुप्प-कत्तरं चेव विगय-वीभत्स^८-दसणिज्जा, उरवभपुडसंनिभा^९ से नासा, भुसिरा जमल-चुल्ली-सठाण-सठिया दो वि तस्स नासापुडया^{१०}, 'घोडयपुच्छ'^{११} व तस्स मसूइ कविल-कविलाइ विगय-वीभत्स^{१२}-दसणाइ^{१३}, 'उट्टा उट्टस्स चेव लवा'^{१४}, फालसरिसा से दता, जिब्भा जह सुप्प-कत्तर चेव 'विगय-वीभत्स-दंसणिज्जा'^{१५}, हल-कुडाल^{१६}-सठिया से हणुया, गल्ल-कडिल्ल व तस्स खड्डु^{१७} फुट्ट 'कविल फरस महल्ल'^{१८}, मुइगाकारोवमे से खघे, पुरवरकवाडोवमे से वच्चे, कोट्टिया-सठाण-सठिया दो वि तस्स वाहा, निसापाहाण-सठाण-सठिया दो वि तस्स अग्गहत्था, निसालोढ-संठाण-सठियाओ हत्थेसु अगुलीओ, सिप्पि-पुडग-सठिया से नखा^{१९}, ण्हाविय-पसेवओ^{२०} व्व उरम्मि^{२१} लवति दो वि तस्स थणया, पोट्ट अयकोट्टओ व्व वट्ट, 'पाण-कलद'^{२२}-सरिसा से नाही^{२३}, सिक्कग-सठाण-सठिए से नेत्ते, किण्णपुड-सठाण-सठिया दो वि तस्स वसणा, जमल-कोट्टिया-

- १ कविला तेएण (क,ग,घ) । (वृपा) ।
 २ महल्लउट्टिया^० (क,ख,ग), महल्लउट्टिया-कभल्लसरिसोवमं (वृपा) । १५. वृत्तावत्र अतिरिक्तपाठस्य उल्लेखोस्ति, पाठान्तरे—'हिगुलयघाउकदरविल व तस्स वयण'^१ ।
 ३ भुमगाओ (ख); भुम्मकाओ (घ) ।
 ४ फग्गुपुग्गाओ (क); जडिलजडिलाओ, जडिल कुडिलाओ (वृपा) । १६. कुडा (क); कुडाल (ख), कूडा (ग); कुडाल (घ) ।
 ५. वीभच्छ (ख,घ) । १७ खड (क,ख) ।
 ६. वीभच्छ (ख,घ) । १८ कविलफरस महल्ल (क,ग), कविलफरिस-महल्ल (घ) ।
 ७. जहा (ख) । १९ नहा (ख), नखा (ग,घ), वाचनान्तरे तु इदमपरमधीयते—अडियालसठिओ उरो तस्स रोमगुविलो (वृ) ।
 ८ वीभच्छ (ख,घ) । २०. पसेवउ (क) ।
 ९ हरप्पपुडसठाणसठिया (वृपा) । २१. उरसि (ख,घ) ।
 १० वृत्तावत्र अतिरिक्तपाठस्य उल्लेखोस्ति, वाचनान्तरे—महल्लकुव्व [कुच्च] सठिया दो वि से कवोला । २२ पाणालद (क,ग) ।
 ११. ^०पुच्छ (क्व) । २३. नाभी (क,घ); वाचनान्तरेऽधीतं—भग्गकडी विगयवक्कपिट्ठी असरिसा दो वि तस्स फिसगा (वृ) ।
 १२ वीभच्छ (ख,घ) ।
 १३ घोडयपुच्छ व तस्स कविलफरसाओ उड्डलो-माओ दाडियाओ (वृपा) ।
 १४. उट्टा से घोडगस्स जह दोवि विलवमाणा

सठाण-सठिया दो वि तस्स ऊरु, 'अज्जुण-गुट्टु' व तस्स जाणुड कुडिल-कुडि-
लाड विगय-वीभत्स-दसणाइ, जघाओ कक्खडीओ लोमेहि उवचियाओ, अहरी-
सठाण-सठिया दो वि तस्स पाया, अहरी-लोढ-सठाण-सठियाओ पाएसु अगु-
लीओ, सिप्पि-पुडसठिया से नखा^१ ॥

२२ लडह-मडह-जाणुए^२, विगय-भग्ग-भुग्ग-भुमए^३, अवदालिय-वयण-विवर-
निल्लालियग्गजाहे^४, सरड-कयमालियाए 'उट्टुरमाला-परिणद्ध-सुकयचिंधं,
नउल^५-कयकण्णपूरे, सप्प-कयवेगच्छे^६', अप्फोडते, अभिगज्जते, भीम-मुक्कट्ट-
हासे^७, 'नाणाविह-पचवण्णेहि लोमेहि उवचिए' एग मह नीलुप्पल-गवलगुलिय-
अयसिकुसुमप्पगास खुरधार अंसि गहाय जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे
समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता आसुरत्ते^८ रुट्टे कुविए चडिक्किए
मिसिमिसीयमाणे कामदेव समणोवासय एव वयासी—हभो ! कामदेवा !
समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया^९ ! दुरंत^{१०}-पत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउट्ट-
सिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया !
सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकखिया ! पुण्णकखिया ! सग्गकखिया !
मोक्खकखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया !
मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइ^{११} वयाइ वेरम-
णाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खडित्तए वा
भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, त जइ ण तुम अज्ज सीलाइं^{१२}
•वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ ° पोसहोववासाइ न छडुंसि^{१३} न भजेसि^{१४},
'तो ते'^{१५} अह अज्ज इमेण नीलुप्पल^{१६}-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण
खुरधारेण ° असिणा खडाखडिं करेमि, जहा ण तुमं देवाणुप्पिया^{१७} ! अट्ट-दुहट्ट-

१ अज्जुणागुट्टुं (क) ।

२ नखा (ग,घ) ।

३ जण्णुए (क) ।

४ इह अन्यदपि विशेषणचतुष्टय वाचनान्तरे तु
अभिधीयते—मसिमूसगमहिसकालए भरिय-
मेहवन्ने लंबोट्टे निगयदते (वृ) ।

५. निदालिय अगगीहे (ख) ।

६. नेउल (क) ।

७ पाठान्तरेण—सप्पकयवेगच्छे मूसगकयभूभ-
लए विच्छुयकयवेयच्छे सप्पकयजण्णोवईए
अभिन्नपुहनयणनखवरवग्घचित्तकत्तिनियंसणे
(वृ) ।

८ भीममुक्कट्टट्टहासे (ख,घ) ।

९ × (क) ।

१०. आसुरत्ते (क) ।

११ °पत्थया (क) ।

१२ दुरत ४ जाव परिवज्जिया (क,ग) ।

१३. ज सीलाइ (क्व) ।

१४. स० पा०—सीलाइ जाव पोसहोववासाइ ।

१५. छडुंसि (ख); छडेसि (घ) ।

१६ भजेसि (क) ।

१७ तो ते (क,ग,घ), तो (ख) ।

१८. स० पा०—नीलुप्पल जाव असिणा ।

१९ × (क,ख) ।

वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२३. तए ण से कामदेवे समणोवासए तेण दिव्वेण^१ पिसायरूवेण एव वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥
२४. तए ण से दिव्वे^२ पिसायरूवे कामदेवं समणोवासय अभीय^३ •अतत्थ अणुव्विग्ग अखुभिय अचलिय असभत तुसिणीय^० धम्मज्झाणोवगय विहरमाण पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि कामदेव समणोवासय एव वयासी—हभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव^४ जइ ण तुम अज्ज सीलाइ^५ •वयाइ वेरमणाइ, पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो त अह अज्ज इमेण नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खडाखडि करेमि, जहा णं तुम देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव^० जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
२५. तए ण से कामदेवे समणोवासए तेण दिव्वेण पिसायरूवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^६ विहरइ ॥
२६. तए ण से दिव्वे पिसायरूवे कामदेव समणोवासय अभीय जाव^७ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तिवलिय^८ भिउडि निडाले साहट्टु कामदेव समणोवासय नीलुप्पल^९ •गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण^० असिणा खडाखडि करेइ ॥
- २७ तए णं से कामदेवे समणोवासए त उज्जल^{१०} •विउल कक्कस पगाढ चड दुक्ख^० दुरहियास वेयण सम्म सहइ^{११} •खमइ तित्तिक्खइ^० अहियासेइ ॥

कामदेवस्स हत्थिरूव-कय-उवसग्ग-पदं

- २८ तए ण से दिव्वे पिसायरूवे कामदेव समणोवासय अभीय^{१२} •अतत्थ अणुव्विग्ग अखुभियं अचलियं असभत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगय^० विहरमाण पासइ, पासित्ता जाहे^{१३} नो सचाएइ कामदेव समणोवासय निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे सते तते परित्तते सणिय-

१ देवेण (ख,घ) ।

२ देवेण (ख,घ) ।

३ स० पा०—अभीय जाव धम्मज्झाणोवगय ।

४ उवा० २।२२ ।

५ स० पा०—सीलाइ वयाइ न छड्डेसि तो जीवियाओ ।

६ उवा० २।२३ ।

७ उवा० २।२४ ।

८ तिउडिय (क) ।

९ स० पा०—नीलुप्पल जाव असिणा ।

१० स० पा०—उज्जल जाव दुरहियास ।

११ स० पा०—सहइ जाव अहियासेइ ।

१२ सं० पा०—अभीय जाव विहरमाण ।

१३ जाव (ग,घ,) अशुद्ध प्रतिभाति ।

सणिय पच्चोसवकइ, पच्चोसविकत्ता पोसहसालाओ पडिणिवखमइ, पडिणिवख-
मिक्ता दिव्व पिसायरूव विप्पजहइ', विप्पजहिक्ता एग मह दिव्व हत्थिरूव
विउव्वइ—सत्तगपइट्ठियं सम्म सठिय सुजात पुरतो^२ उदग्ग पिट्ठतो वराह'
अयाकुच्छि अलंक्कुच्छि^३ पलव-लवोदराधरकर अब्भुग्गय-मउल-मल्लिया-
विमल-धवलदत्त कचणकोसी-पविट्ठदत्त आणामिय^४-चाव-ललिय-सवेत्तिलियग्ग-
सोड कुम्म-पडिपुण्णचलण वीसतिनख^५ अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छ मत्त मेहमिव
गुलुगुलेत्^६ मण-पवण-जइणवेग—दिव्व हत्थिरूव विउव्वित्ता जेणेव पोसह-
साला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काम-
देव समणोवासय एव वयासी—हभो ! कामदेवा ! समणोवासया !
•अप्पत्थियपत्थिया ! दुरत-पत्त-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउट्ठसिया ! सिरि-हिरि-
धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया !
मोक्खकामया ! धम्मकखिया ! पुण्णकखिया ! सग्गकखिया ! मोक्खक-
खिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवा-
सिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ
पोसहोववासाइ चालित्तए वा खोभित्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झि-
त्तए वा परिच्चइत्तए वा, त जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ
पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्ढेसि^७ न भजेसि, तो^८ त 'अहं अज्ज'^९
सोडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढं वेहास उव्वि-
हामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दत्तमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणि-
तलसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुम देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे
अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२६ तए ण से कामदेवे समणोवासए तेण दिव्वेण हत्थिरूवेण एव वुत्ते समाणे
अभीए^{१०} •अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असभते तुसिणीए धम्मज्झाणो-
वगए^{११} विहरइ ॥

३० तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेव समणोवासय अभीयं^{१२} •अतत्थ अणुव्विग्गं

१. विप्पहयति (क) सर्वत्र, विप्पयहती (ग)

सर्वत्र ।

२. पुरखो (क) ।

३. वसहं (ग) ।

४. × (क, ग); अइया (अजिया) कुच्छी

(ना० १।१।१५६) ।

५. अणोमिय (क) ।

६. °नक्ख (ग) ।

७. गुलुगुलेत्त (घ)

८. सं० पा०—समणोवासया तहेव भणइ जाव
न भजेसि ।

९. × (क, ख, ग, घ) ।

१०. अज्ज अह (क, ख, ग, घ) ।

११. सं० पा०—अभीए जाव विहरइ ।

१२. सं० पा०—अभीय जाव विहरमाण ।

अखुभिय अचलिय असभंत तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगय ° विहरमाण पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्च पि कामदेव समणोवासय एव वयासी—हभो । कामदेवा । •समणोवासया । जाव^१ जइ णं तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छुट्ठेसि न भजेसि, तो तं अज्ज अह सोडाए गेण्हामि, गेण्हत्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढ वेहास उव्विहामि, उव्विहत्ता तिकखेहि दतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छेत्ता अहे घरणितलसि तिकखुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा ण तुम देवाणुप्पिया । अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३१ तए ण से कामदेवे समणोवासए तेण दिव्वेण हत्थिरूवेण दोच्च पि तच्च पि एवं वुत्ते समणे अभीए जाव^१ ° विहरइ ॥

३२. तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेव समणोवासय अभीय जाव^१ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेव समणोवासय सोडाए गेण्हेत्ति^२, गेण्हत्ता उड्ढं वेहास उव्विहइ^३, उव्विहत्ता तिकखेहिं दतमुसलेहिं पडिच्छइ, पडिच्छत्ता अहे घरणितलसि तिकखुत्तो पाएसु लोलेइ ॥

३३ तए ण से कामदेवे समणोवासए त उज्जल^४ •विउल कक्कस पगाढ चड दुक्ख दुरहियास वेयण सम्म सहइ खमइ तितिकखइ ° अहियासेइ ॥

कामदेवस्स सप्परूव-कय-उवसग-पद

३४. तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेव समणोवासयं अभीय अतत्थ अणुव्विगग अखुभिय अचलिय असभत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगय विहरमाण पासइ, पासित्ता जाहे नो सचाएइ^५ •कामदेव समणोवासय निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे सते तते परितते ° सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिकखमइ, पडिणिकखमित्ता दिव्व हत्थिरूव विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एग मह दिव्व सप्परूव विउव्वइ—उग्गविस^६ चडविस घोरविस महाकाय मसीमूसाकालग नयणविसरोसपुण्ण अजणपुज-निगरप्पगास रत्तच्छ लोहियलोथण जमलजुयल-चचलचलतजीह^{१०} वरणीयलवेणिभूय उक्कड-फुड-कुडिल-जडिल-कक्कस-वियड-

१. सं० पा—कामदेवा तहेव जाव सो वि विहरइ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. गिण्हइ (ख,घ) ।

६. उव्वहइ (क) ।

७. सं० पा०—उज्जल जाव अहियासेइ ।

८. सं० पा०—सचाएइ जाव सणिय ।

९. उग्गविस दिट्ठिविस जाव सप्परूव (क,ग),

उग्गविस दिट्ठिविस (घ) ।

१०. चचलजीह (ख) ।

फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमधमेतघोस अणागलियदिव्वपचंडरोस-
दिव्वं सप्परूव विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए,
तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता कामदेव समणोवासय एवं वयासी—हभो !
कामदेवा ! समणोवासया^१ ! अप्पत्थियपत्थिया ! दुरत-पत-लक्खणा !
हीणपुण्णचाउट्टसिया । सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया !
पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकखिया ! पुण्णकखिया !
सग्गकखिया ! मोक्खकखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया !
सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पड तव देवाणुप्पिया !
सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइ चालित्तए वा खोभित्तए
वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, त जइ ण तुम
अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइं न छड्डेसि^२ न
भजेसि^३, तो ते अज्जेव अह सरसरस्स काय दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेण
भाएण तिक्खुत्तो गीव वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहि विसपरिगताहि^४ दाढाहि उरसि
चेव निकुट्टेमि, जहा ण तुम देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव
जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३५. तए ण से कामदेवे समणोवासए तेण दिव्वेण सप्परूवेण एव वुत्ते समाणे अभीए^५
•अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असभते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए^६
विहरइ ॥

३६. •तए ण से दिव्वे सप्परूवे कामदेव समणोवासय अभीय अतत्थ अणुव्विग्ग
अखुभिय अचलिय असभत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगयं विहरमाण पासइ,
पासित्ता दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—हभो ! कामदेवा ! समणोवासया !
जाव^७ जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइ
न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अज्जेव अह सरसरस्स काय दुरुहामि, दुरुहित्ता
पच्छिमेण भाएण तिक्खुत्तो गीव वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहि विसपरिगताहि
दाढाहि उरसि चेव निकुट्टेमि, जहा ण तुम देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे
अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३७. तए ण से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेण सप्परूवेण दोच्च पि तच्चं पि एव
वुत्ते समाणे अभीए जाव^८ विहरइ ॥

१ स० पा० — समणोवासया जाव न भजेसि ।

२ भजसि (क,ग) ।

३. विसमपरिगताइ (क) ।

४. स० पा०—अभीए जाव विहरइ ।

५. स० पा०—सो वि दोच्च पि तच्च पि

भणइ, कामदेवो वि जाव विहरइ ।

६. उवा० २।२२ ।

७. उवा० २।२३ ।

- ३८ तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेव समणोवासय अभीय जाव^१ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेवस्स सरसरस्स काय दुरुहइ, दुरुहिता पच्छिमेण भाएण तिकखुत्तो गीव वेढेइ, वेढित्ता तिकखाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरसि चैव निकुट्टेइ ॥
- ३९ तए ण से कामदेवे समणोवासए त उज्जल^२ •विउल कक्कस पगाढ चड दुक्ख दुरहियास वेयण सम्म सहइ खमइ तितिकखइ^३ अहियासेइ ॥

देवरूव-विउव्वण-पद

- ४० तए ण से दिव्वे सप्परूवे कामदेव समणोवासय अभीय^४ •अतत्थ अणुव्विग्ग अखुभिय अचलिय असभंत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगय विहरमाण^५ पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ कामदेव समणोवासय निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे सते तते परित्तते सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख-मित्ता दिव्व सप्परूव विप्पजहइ, विप्पजहिता एग मह दिव्व देवरूव विउव्वइ — हार-विराइय-वच्छ^६ •कडग-तुडिय-थभियभुय अगय-कुडल-मट्ट-गड-कण्णपीढ-धारिं विचित्तहत्थाभरण विचित्तमाला-मउलि-मउड कल्लाणग-पवरवत्थपरिहिय कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवण भासुरवोदि पलववणमालधर दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण रूवेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सघाएण दिव्वेण सठाणेण दिव्वाए डड्डीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए^७ दसदिसाओ उज्जोवेमाण पभासेमाण पासाईय^८ 'दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूव—दिव्व देवरूव विउव्वित्ता'^९ कामदेवस्स समणोवासयस्स पोसहसाल अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता अतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइ पचवण्णाइ वत्थाइ पवर परिहिए कामदेव समणोवासय एव वयासी—हभो । कामदेवा । समणोवासया । घण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया । पुण्णेसि^{१०} •ण तुम देवाणुप्पिया । कयत्थेसि ण तुम देवाणुप्पिया । कय-लक्खणेसि ण तुम देवाणुप्पिया ।^{११} सुलद्धे ण तव देवाणुप्पिया । माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स ण तव निग्गथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।

१ उवा० २।२४ ।

२. स० पा०—उज्जल जाव अहियासेइ ।

३. स० पा०—अभीय जाव पासइ ।

४. स० पा०—हारविराइयवच्छ जाव दस-दिसाओ ।

५. पासति (ख) ।

६ × (ख) ।

७. सपुण्णे (क,ग) । स० पा०—पुण्णे कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे ।

एव खलु देवाणुप्पिया । सक्के देविदे देवराया' •वज्जपाणी पुरदरे सयक्कञ्ज
सहस्सक्खे मधव पागसासणे दाहिणड्डुलोगाहिवई वत्तीस-विमाण-सयसहस्सा-
हिवई एरावणवाहणे सुरिदे अरयवर-वत्थधरे आलइय-मालमउडे नव-हेम-चारु-
चित्त-चचल-कुडल-विलिहिज्जमाणगडे भासुरवोदी पलंववणमाले सोहम्मे
कप्पे सोहम्मवडेसए विमाणे सभाए सोहम्माए° सक्कसि सीहासणसि
चउरासीईए सामाणियमाहस्सीण', •तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं, चउण्ह
लोगपालाणं, अट्टण्ह अग्गमहिस्सीणं सपरिवाराण, तिण्ह परिसाण, सत्तण्हं
अणियाण, सत्तण्ह अणियाहिवईणं, चउण्ह चउरासीणं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं°,
अण्णेसि च वहूण देवाण य देवीण य मज्झगए एवमाइक्खइ, एव भासइ, एव
पण्णवेइ, एवं परूवेइ—एवं खलु देवा ! जवुद्धीवे दीवे भारहे वासे चपाए
नयरीए कामदेवे समणोवासाए पोसहसालाए पोसहिए वंभचारी' •उम्मुक्क-
मणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए
दवभसथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति
उवसपज्जित्ता ण विहरइ । नो खलु से सक्के' केणइ देवेण वा 'दाणवेण वा'
जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण
वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा ।
तए ण अह सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो एयमट्टं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे
अरोएमाणे इहं हव्वमागए । त अहो ण देवाणुप्पियाणं इड्डी जुई जसो वलं
वीरिय पुरिसक्कार-परक्कमे 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।'° तं दिट्ठा ण
देवाणुप्पियाणं इड्डी° •जुई जसो वल वीरिय पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते°
अभिसमण्णागए । तं खामेमि ण देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया !
खतुमरिहत्ति' ण देवाणुप्पिया ! नाइं भुज्जो करणयाए त्ति कट्टु पायवडिए
पजलियडे' एयमट्टं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिस पाउवभूए,
तामेव दिसं पडिगए ॥

कामदेवस्स पडिमा-पारण-पदं

४१. तए णं से कामदेवे समणोवासाए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ ॥

- | | |
|--|---|
| १. देवराया सतक्कतु जाव सक्कमि (क), देव-
राया सतक्कत्त जाव सक्कंसि (ग),
स० पा० --देवराया जाव सक्कसि । | ५. दाणवेण वा जा गंधव्वेण वा (क); दाणवेण
वा गंधव्वेण वा (ग) । |
| २. सं० पा०—साहस्सीण जाव अण्णेसि । | ६. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क्व) । |
| ३. सं० पा०—वंभचारी जाव दवभसथारोवगए । | ७. सं० पा०—इड्डी जाव अभिसमण्णागए । |
| ४. सक्का (क, ख, ग, घ) । | ८. °मरुहती (क) । |
| | ९. पजलियडे (क) । |

कामदेवस्स भगवओ पज्जुवासणा-पदं

४२ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे' •जाव' जेणेव चपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिख्व ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे० विहरइ ॥

४३ तए ण से कामदेवे समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे — “एव खलुं समणे भगव महावीरे' •पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम द्दइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव चपाए नयरीए वहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिख्वं ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे० विहरइ ।” त सेय खलु मम समण भगव महावीर वदित्ता नमसित्ता ततो पडिणियत्तस्स पोसह पारेत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता [पोसहसालाओ पडिणिक्वमइ पडिणिक्वमित्ता ?] सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ' पवर परिहिए मणुस्सवगुरापारिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्वमित्ता चप' नयारि मज्जमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए", •जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए० पज्जुवासइ ॥

१ स० पा०—महावीरे जाव विहरइ ।

२ ओ० सू० १६,२२ ।

३. स० पा०—महावीरे जाव विहरइ ।

४ 'सपेहेत्ता' इति पाठस्याग्रे कोष्ठकान्तर्गतपाठो युज्यते । १६ सूत्रे—'पयाओ गिहाओ पडिणिक्वमइ, पडिणिक्वमित्ता चप नयारि मज्जमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, इति पाठोस्ति, तेन अत्रापि 'पोसहसालाओ पडिणिक्वमित्ता' एष पाठ आवश्यकोस्ति । भगवती (१२।१५) सूत्रेपि इत्यमेव पाठयोजना विद्यते—पोसहसालाओ पडिणिक्वमइ, पडिणिक्वमित्ता सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए साओ गिहाओ पडिणिक्वमइ ।

५ सुद्धप्पा अप्प मणुस्सवगुरा (क), सुद्धप्प-वेमाइ अप्पमहग्घा मणुस्सवगुरा (ख, घ), सुद्धपावेसाइ वत्थाइ अप्पमहग्घाइ जाव अप्प-

मणुस्सवगुरा (ग), प्रनिपु ऊर्चमुट्टकित पाठो विद्यते, किन्तु नासौ प्रसगानुसारी प्रति-भानि । कामदेव सप्रति पौषधिको वर्तते । अतएव 'अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे' नासौ पाठ पौषघावस्थाया सगच्छते । शखश्राव-केणापि पौषघावस्थाया भगवतो दर्शनं कृतम् । तत्र 'मुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए', (भगवती १२।१५) एतावान् एव पाठो विद्यते । भगवतीवृत्तावपि एतावत्, पाठस्यैव व्याख्या समुपलभ्यते । प्रस्तुताध्ययने (सू० १६) 'उम्मुक्कमणिसुवण्णे' एव पाठो-स्ति, तदा आभरणालकरण कथं प्रासंगिक स्यात् ? असावत्र प्रवाहरूपेण आयात् इति सभाव्यते ।

६ चपा (ख) ।

७. स० पा०—चेइए जहा सखे जाव पज्जुवासइ ।

४४ तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य' •महइमहा-
लियाए परिसाए जाव' घम्म परिकहेइ° ॥

भगवया कामदेवस्स उवसग्ग-वागरण-पद

४५ कामदेवाइ ! समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासय एवं वयासी—से
नूणं कामदेवा ! तुव्भ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अतियं पाउव्भूए ।
तए ण से देवे एग महं दिव्वं पिसायरूवं' विउव्वइ, विउव्वित्ता आनुरत्ते रुट्टे
कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एगं मह नीलुप्पल'-•गवलगुलिय-अयसि-
कुसुमप्पगास खुरधार° अंसि गहाय तुम एव वयासी हभो ! कामदेवा !
•समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइं पच्चक्खा-
णाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भंजेसि, तो त अज्ज अहं इमेण नीलुप्पल-
गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खडाखंडि करेमि, जहा
ण तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव° जीवियाओ ववरो-
विज्जसि ।

तुम तेणं दिव्वेण पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरसि ।

•तए ण से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्च पि
तच्च पि तुमं एव वयासी—हभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव'° जइ णं
तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि
न भंजेसि, तो त अह अज्ज इमेण नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण
खुरधारेण असिणा खडाखंडि करेमि, जहा णं तुम देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-
वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेण दिव्वेणं पिसायरूवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे
अभीए जाव'° विहरसि ।

तए ण से दिव्वे पिसायरूवे तुम अभीय जाव'° पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे
कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तिवलियं भिउडि निडाले साहट्टु तुम

१. सं० पा०—तीमे य जाव घम्म कहा सम्मत्ता ।

२. ओ० मू० ७१-७७ ।

३. पिसातरूव (ग) ।

४. न० पा०—नीलुप्पल जाव अमि ।

५. सं० पा०—कामदेवा जाव जीवियाओ ।

६. उवा० २।२२ ।

७. उवा० २।२३ ।

८. सं० पा०—एव वण्णगरहिया तिण्णि वि
उवसग्गा तहेव पडिउच्चारयेव्वा जाव देवो
पडिगओ ।

९. उवा० २।२४ ।

१०. उवा० २।२२ ।

११. उवा० २।२३ ।

१२. उवा० २।२४ ।

नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसि कुसुमप्पगासेण खुरघारेण असिणा खडाखडिं करेइ ।

तए ण तुमे त उज्जल जाव^१ वेयण सम्म सहसि खमसि तित्तिक्खसि अहियासेसि । तए ण से दिव्वे पिसायरूवे तुम अभीयं जाव^२ पासइ, पासित्ता जाहे नो सचाएइ, तुम निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे सते तते परित्तते सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसह-सालाओ पडिणिक्खमड, पडिणिक्खमित्ता दिव्व पिसायरूव विप्पजहइ, विप्प-जहित्ता एग मह दिव्व हत्थिरूव विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुमे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एव वयासी—हभो । काम-देवा । समणोवासया । जाव^३ जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो त अह अज्ज सोडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढ वेहास उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा ण तुम देवाणुप्पिया । अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण तुमे तेण दिव्वेण हत्थिरूवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^४ विहरसि । तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे तुम अभीय जाव^५ पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि तुम एव वयासी—हभो । कामदेवा । समणोवासया । जाव^६ जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो त अज्ज अह सोडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, निणित्ता उड्ढ वेहास उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा ण तुम देवाणु-प्पिया । अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण तुमे तेण दिव्वेण हत्थिरूवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^७ विहरसि ।

तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे तुम अभीय जाव^८ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तुम सोडाए गेण्हति, गेण्हित्ता उड्ढ वेहास उव्विहइ, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दतमुसलेहिं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अहे धरणि-तलसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ ।

१ उवा० २।२७ ।

२ उवा० २।२४ ।

३ उवा० २।२२ ।

४ उवा० २।२३ ।

५ उवा० २।२४ ।

६ उवा० २।२२ ।

७ उवा० २।२३ ।

८ उवा० २।२४ ।

तए णं तुमे त उज्जलं जाव' वेयण सम्मं सहसि खमसि तितिक्वसि अहियासेसि ।
 तए ण से दिव्वे हत्थिरूवे तुम अभीय जाव' पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएत्ति
 निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे
 सते तते परित्तते सणिय-सणिय पच्चोसक्कड, पच्चोसक्कत्ता पोसहसालाओ
 पडिणिक्वमड, पडिणिक्वमित्ता दिव्व हत्थिरूव विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एग
 मह दिव्व सप्परूव विउव्वड, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुम, तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुम एव वयासी—हभो । कामदेवा । समणोवा-
 सया । जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ
 पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स काय दुरुहामि,
 दुरुहित्ता पच्छिमेण भाएण तिक्वुत्तो गीव वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहि विसपरि-
 गताहि दाढाहि उरसि चैव निकुट्टेमि, जहा ण तुम देवाणुप्पिया । अट्ट-दुहट्ट-
 वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण तुमे तेण दिव्वेण सप्परूवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरसि ।
 तए ण से दिव्वे सप्परूवे तुम अभीय जाव' पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि
 तुम एवं वयासी—हभो । कामदेवा । समणोवासया । जाव' जइ ण तुम
 अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न
 भजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स काय दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेण
 भाएण तिक्वुत्तो गीव वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहि विसपरिगताहि दाढाहि
 उरंसि चैव निकुट्टेमि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ
 ववरोविज्जसि ।

तए ण तुमे तेण दिव्वेण सप्परूपेण दोच्चं पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए
 जाव' विहरसि ।

तए ण से दिव्वे सप्परूवे तुम अभीय जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे
 कुविए चडिक्कए मिसिमिसीयमाणे तुव्वभ सरसरस्स काय दुरुहइ, दुरुहित्ता
 पच्छिमेण भाएण तिक्वुत्तो गीव वेढेइ, वेढित्ता तिक्खाहि विसपरिगताहि
 दाढाहि उरसि चैव निकुट्टेइ ।

तए ण तुमे त उज्जल जाव' वेयण सम्मं सहसि खमसि तितिक्वसि अहियासेसि ।
 तए ण से दिव्वे सप्परूवे तुम अभीय जाव' पासइ, पासित्ता जाहे नो सचाएइ

१. उवा० २।२७ ।
२. उवा० २।२४ ।
३. उवा० २।२२ ।
४. उवा० २।२३ ।
५. उवा० २।२४ ।

६. उवा० २।२२ ।
७. उवा० २।२३ ।
८. उवा० २।२४ ।
९. उवा० २।२७ ।
१०. उवा० २।२४ ।

तुम निग्गथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे सते तते परित्तते सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसह-सालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्व सप्परूव विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एग मह दिव्व देवरूव विउव्वइ, विउव्वित्ता पोसहसाल अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता अतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइ पचवण्णाइ वत्थाइ पवर परिहिए तुम एव वयासी—हभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! धण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! पुण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! कयत्थेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! कयलक्खणेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! सुलद्धे ण तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स ण तव निग्गथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।

एव खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया जाव' एवमाइक्खइ, एव भासइ, एव पण्णवेइ, एव परूवेइ एव खलु देवा ! जवुद्धीवे दीवे भारहे वासे चपाए नयरीए कामदेवे समणोवामए पोसहसालाए पोसहिए वभचारी उम्मक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दव्वभसथा-रोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरइ । नो खलु से सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गधव्वेण वा निग्गथाओ पावय-णाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा ।

तए ण अहं सक्कस्स देविंदस्स देवरणो एयमट्ठु असइहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे इह हव्वमागए । त अहो ण देवाणुप्पियाण इड्डी जुई जसो वल वीरिय पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए । त दिट्ठा ण देवाणुप्पियाण इड्डी जुई जसो वल वीरिय पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए । त खामेमि ण देवाणुप्पिया ! खमतु ण देवाणुप्पिया ! खतुमरिहति ण देवाणु-प्पिया ! नाइ भुज्जो करणयाए त्ति कट्टु पायवडिए पजलिउडे एयमट्ठु भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिस पाउव्वभूए, तामेव दिस पडिगए० । से नूण कामदेवा ! अट्ठे समट्ठे ?
हता अत्थि ॥

भगवया कामदेवस्स पसंसा-पदं

४६ अज्जोत्ति ! समणे भगव महावीरे वहवे समणे निग्गथे य निग्गथीओ य आम-तेत्ता एव वयासी—जइ ताव अज्जो ! समणोवासगा गिहिणो गिहमज्भावसता दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्म सहति^३ •खमति तित्तिक्खति०

अहियासेति, सवका पुणाइं अज्जो । समणेहि निग्गथेहि दुवालसग गणिपिडग
अहिज्जमाणेहि दिव्व-माणुस-तिरिखखजोणिए उवसग्गे सम्म सहित्तए^१ खमि-
त्तए तित्तिखित्तए^० अहियासित्तए ॥

४७ ततो ते वहवे समणा निग्गथा य निग्गथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स
तह त्ति एयमट्ठ विणएण पडिसुणेति ॥

कामदेवस्स पडिगमण-पदं

४८ तए ण से कामदेवे समणोवासए हट्ठतुट्ठ^१-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमण-
स्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए^० समण भगव महावीर पसिणाइ पुच्छइ,
अट्ठमादियइ, समण भग महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ,
करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता जामेव दिस पाउव्भूए, तामेव दिस
पडिगए ॥

भगवओ जणवयविहार-पद

४९ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ चपाओ नयरीओ पडिणिवखमइ,
पडिणिवखमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवित्ति-पद

५० तए^१ ण से कामदेवे समणोवासए पढम उवासगपडिम उवसंपज्जित्ता ण
विहरइ^१ ॥

५१ •तए ण से कामदेवे समणोवासए पढम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प
अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥

५२ तए ण से कामदेवे समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्च, चउत्थ,
पचम, छट्ठ, सत्तम, अट्ठम, नवम, दसम, एक्कारसमं उवासगपडिम अहासुत्त
अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
आराहेइ ॥

५३ तए ण से कामदेवे समणोवासए इमेण एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण
पग्गहिणएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए
किसे घमणिसतए जाए ॥

कामदेवस्स अणसण-पद

५४. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

१. स० पा०—सहित्तए जाव अहियासित्तए ।

२. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव समण ।

३. तओ (क, ग, घ) ।

४. स० पा०—विहरइ तएण ।

समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अय अज्भत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—‘एव खलु अह इमेण एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पगगहिणं तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडि-याभूए किसे धमणिसतए जाए । त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिड-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिड-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोव-एसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव’ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए एव सपेहेड, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥ °

कामदेवस्स समाहिमरण-पदं

५५ तए ण से कामदेवे समणोवासए वूर्हहिं ° सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण ° भावेत्ता वीस वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूमित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते, समाहि-पत्ते, कालमासे काल किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिमगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे ण अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता । कामदेवस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

५६ से ण भते । कामदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कर्हि गमिहिइ ? कर्हि उववज्जिहिइ ? गोयमा । महाविदेहे वासे सिज्जिभहिइ बुज्जिभहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पद

५७ ° एव खलु जंवू । समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण दोच्चस्स अज्भ-यणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

१. उवा० १।५७ ।

२. स० पा०—वूर्हहिं जाव भावेत्ता ।

३. अप्पाणं (क, ख, ग, घ) ।

४. तओ चव (ख) ।

५. स० पा०—निक्खेवो ।

तइयं अज्भयण

चुलणीपिता

उक्खेव-पदं

१. 'जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण दोच्चस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स ण भंते ! अज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °

चुलणीपियगाहावइ-पदं

२. एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएणं वाणारसी नाम नयरी । कोट्टए' चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. 'तत्थ णं वाणारसीए नयरीए चुलणीपिता' नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स ण चुलणीपियस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥
५. से ण चुलणीपिता गाहावई वहुणं जाव' आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. स० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. क्वचित् कोष्ठक चैत्यमधीत क्वचिन्महा-
कामघनमिति (वृ) ।

४. स० पा०—तत्थ ण वाणारसीए चुलणीपिया
नाम गाहावई परिवसई अड्ढे सामा भारिया
अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ

वड्ढिय ° अट्ठ पवित्थरप ° । अट्ठ वया दसगो-
साहस्सिएणं वएण जहा आणदो ईसर जाव
सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।

५. चुलणीपिता (ग, घ) ।

६. उवा० १।११ ।

७,८. उवा० १।१३ ।

६. तस्स ण चुलणीपियस्स गाहावइस्स सामा' नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ° ॥

महावीर-समवसरण-पदं

- ७ °तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव' जेणेव वाणारसी नयरी जेणेव कोट्टए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
- ८ परिसा निग्गया ॥
- ९ कूणिए राया जहा, तथा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
- १० तए ण से चुलणीपिया गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे—“एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव वाणारसीए नयरीए वहिया कोट्टए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।”
- त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताण णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्प-महग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिवखमइ, पडिणिवखमित्ता सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेण वाणारसि नयारि मज्भमज्भेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णम-सइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्ससमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे पज्जुवासइ ॥

१. सोमा (ख) ।

२. उवा० १।१४ ।

३. स० पा०—सामी समोसढे । चुलणीपिया वि जहा आणदे तथा निग्गओ । तहेव गिहिधम्म

पडिवज्जइ । गोयमपुच्छा । तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव पोसहसालाए ।

४. ओ० सू० १६, २२ ।

५. ओ० सू० ५३-६६ ।

- ११ तए ण समणे भगव महावीरे चुलणीपियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहा-
लियाए परिसाए जाव' धम्म परिकहेइ ॥ .
- १२ परिसा पडिगया, राया य गए ॥

चुलणीपियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद

- १३ तए ण से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म
सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-
विसप्पमाणहियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समण भगव महावीर तिव्खुत्तो आया-
हिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—
सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण,
रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्टेमि ण भते ! निग्गथ पावयण ।
एवमेय भते ! तहमेय भते ! अविहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छिय-
मेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से जहेय
तुब्भे वदह । जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए बहवे राईसर-तलवर-माडविय-
कोडुविय-इवभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ
अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ
अणगारिय पव्वइत्तए । अह ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खा-
वइय—दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामि ।
अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिबघ करेहि ॥
- १४ तए ण से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए^३ सावय-
धम्म पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

- १५ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्टयाओ
चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

चुलणीपियस्स समणोवासग-चरिया-पद

- १६ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' समणे
निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-
पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण
पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

१. ओ० सू० ७१-७७ ।

३ उवा० १।५५ ।

२ पू०—उवा० १।२४-५३ ।

सामाए समणोवासिय-चरिया-पद

१७ तए ण सा सामा^१भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव^२ समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

चुलणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८ तए ण तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स उच्चावएहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण भावेमाणस्स चोइस सवच्छराइ वीइक्कताइं । पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जिथा—एव खलु अह वाणारसीए नयरीए वहूण जाव^३ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव^४ सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए^५ ॥

१९ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए जेट्टपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडि-णिक्खमित्ता वाणारसि नयरि मज्भमज्भेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दव्वभसथारय सथरेइ, सथरेत्ता दव्वभसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता^६ पोसहसालाए पोसहिए वभयारी^७ उम्मुकमणिमुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दव्वभसथारोवगए^८ समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

चुलणीपियस्स देव-कय-उवसग-पदं

२० तए ण तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि एगे देवे^९ अतिय पाउव्वभूए ॥

० जेट्टपुत्त

२१ तए ण से देवे एग मह नीलुप्पल^{१०}—गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुरधार^{११} ०

१. उवा० १।५६ ।

२,३ उवा० १।१३ ।

४ पू०—उवा० १।५७-५९ ।

५ स० पा०—वभयारी समणस्स ।

६ द्वितीयाध्ययनस्य विशतितमे सूत्रे अस्याग्रे 'मायी मिच्छदिट्ठी' एतद् विशेषणद्वय विद्यते ।

७. स० पा०—नीलुप्पल जाव असि ।

असि गहाय चुलणीपिय समणोवासय एव वयासी—हभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया' ! •अप्पत्थियपत्थिया ! दुरत्त-पत्त-लक्खणा ! हीणपुण्ण-चाउट्टसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकखिया ! पुण्णकखिया ! सग्गकखिया ! मोक्खकखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्ग-पिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ चालत्तए वा खोभित्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, त जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्ढेसि न भजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्टुपुत्त 'साओ गिहाओ' नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयसि अद्दहेमि', अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि', जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२२. तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए' •अतत्थे अणुव्विग्गे अखाभए अर्चालिए असभते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए ° विहरइ ॥

२३. तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय' •अतत्थ अणुव्विग्ग अखुभिय अचलिय असभत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगय ° विहरमाण पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुलणीपिय समणोवासय एव वयासी हभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया' ! •जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्ढेसि न भजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्टुपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२४ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' ° विहरइ ॥

१. स० पा०—समणोवासया जहा कामदेवो जाव न भजेसि ।

२. ततो (क), तओ (ख) ।

३. सातो गिहातो (क, ग), सयातो गिहाओ (घ) ।

४. ततो (क) ।

५. दहेमि (ख) ।

६. आसिचामि (ख, ग) ।

७. स० पा०—अभीए जाव विहरइ ।

८. स० पा०—अभीय जाव पासइ ।

९. स० पा०—समणोवासया । त चैव भणइ सो जाव विहरइ ।

१०. उवा० २।२२ ।

११. उवा० २।२३ ।

- २५ तए ण से देवे चुलणीपियं समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुद्धे कुविए चडिक्कए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणो-वासयस्स जेट्टपुत्त गिहाओ' नीणेड, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेड, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिणय य आइचइ ॥
- २६ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए त उज्जल' •विउल कक्कस पगाढ चड दुक्ख दुरहियास वेयण सम्म सहइ खमइ तित्तिक्खइ° अहियासेइ ॥

°मज्झिमपुत्त

- २७ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता चुलणी-पिय समणोवासय एव वयासी—हभो । चुलणीपिता । समणोवासया । जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, 'तो ते' अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता' •तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिणय य आइंचामि, जहा ण तुम अद्द-दुहद्द-वसद्द अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
- २८ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समणे अभीए जाव विहरइ ॥
- २९ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुलणीपिय समणोवासय एव वयासी— हभो । चुलणीपिया । समणो-वासया । जाव'° जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य

१ उवा० २।२४ ।

२ यत्र उत्तमपुरुषक्रियाप्रयोगस्तत्र सर्वत्रापि 'साओ गिहाओ' इतिपाठो लभ्यते । यत्र च प्रथमपुरुषक्रियाप्रयोगोस्ति तत्र केवल 'गिहाओ' पाठो लभ्यते, किन्तु यत्र श्रमणो-पासकाः घटितघटना मनसि चिन्तयन्ति श्राव-यन्ति च तत्र 'साओ गिहाओ' पाठो युज्यते ।

३ स० पा० — उज्जल जाव अहियासेइ ।

४ उवा० २।२४ ।

५ उवा० २।२२ ।

६ ततो ते (क), ततो (ख) ।

७. स०पा० — घाएत्ता जहा जेट्टपुत्त तहेव भणइ, तहेव करेइ । एवं कणीयसपि जाव अहियासेइ ।

८ उवा० २।२३ ।

९ उवा० २।२४ ।

१० उवा० २।२२ ।

सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

- ३० तए ण से चुलणीपिया समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
- ३१ तए ण से देवे चुलणीपियं समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स मज्झिम पुत्त गिहाओ नीणेइ, नःणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अट्टहेइ, अट्टहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ ॥
- ३२ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए त उज्जलं जाव' वेयण सम्म सहइ खमइ तितिकखइ अहियासेइ ॥

० कणीयसपुत्त

- ३३ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता चुलणीपिय समणोवासय एवं वयासी—हभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भजसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अट्टहेमि, अट्टहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
- ३४ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
- ३५ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुलणीपिय समणोवासय एवं वयासी—हभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइं पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अट्टहेमि, अट्टहेत्ता तव गाय मसेण

१ उवा० २।२३ ।

२ उवा० २।२४ ।

३ उवा० २।२७ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७ उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२२ ।

य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३६ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण दोच्चं पि तच्च पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥

३७ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए चडिविकए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स कणी-यस पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अट्टहेइ, अट्टहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचइ ॥

३८ तए ण से चुलणीपिता समणोवासए त उज्जल जाव' वेयण सम्म सहइ खमइ तितिकखइ० अहियासेइ ॥

० भद्दा सत्थवाही

३९ तए ण से देवे चुलणीपियं समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता चउत्थ पि चुलणीपिय समणोवासयं एव वयासी—हभो । चुलणीपिया । समणो-वासया । जाव' जइ ण तुम' •अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि० न भजेसि, 'तो ते'० अह अज्ज जा इमा' माया भद्दा सत्थवाही देवत 'गुरु-जणणी' 'दुक्कर-दुक्करकारिया'० त' साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अट्टहेमि, अट्टहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरो-विज्जसि ॥

४० तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२७ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. स० पा०—तुम जाव न भजेसि ।

७. तओ (ख, ग) ।

८. इमा तव (क्व) ।

९. गुरुजणणी (क), गुरु जणणी (ख, ग) ।

१०. दुक्करकारिया (ग) ।

११. त ते (क, ख, ग, घ), डा० ए० एफ० रुडोल्फ होरनल द्वारा प्रस्तुतसूत्रस्य पाठ-सशोधनप्रयुक्तादर्शेषु एकस्मिन् आदर्शे 'ते' पाठो नोपलभ्यते । तदाधारेण अस्माभिरत्र तस्याग्रहण कृतम् ।

१२. उवा० २।२३ ।

४१ तए ण से देवे चुलणीपिय समणोवासय अभीय जाव^१ पासड, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुलणीपिय समणोवासय एव वयासी—हभो^२ । चुलणीपिता । समणोवासया^३ । •जाव^४ जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाड पच्चक्खाणाड पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जा इमा माया भद्दा सत्थवाही देवत गुरु-जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-डुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ^५ ववरो-विज्जसि ॥

चुलणीपियस्स कोलाहल-पद

४२ तए ण तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे^६ •अज्जभत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^७ समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियवुद्धी अणारियाइ पावाइ कम्माइ समाचरति^८, 'जे ण'^९ मम जेट्ट पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता^{१०} •तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाण-भरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम^{११} गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, 'जे ण मम'^{१२} मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ^{१३} •नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य^{१४} सोणिएण य आइचइ, जे ण मम कणीयसं पुत्त साओ गिहाओ^{१५} •नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य^{१६} सोणिएण य आइचइ, जा वि य ण इमा^{१७} मम माया भद्दा सत्थवाही देवत 'गुरु-जणणी'^{१८} दुक्कर-दुक्करकारिया, त पि य ण इच्छइ^{१९} साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए—त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हित्तए

१. उवा० २।२४ ।

२. स० पा०—समणोवासया तहेव जाव ववरो-विज्जसि ।

३. उवा० २।२२ ।

४. स० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

५. समातरति (क, ग), समायरइ (ख, घ) ।

६. जेण (ग) ।

७. स० पा०—घाएत्ता जहा कय तहा विचित्तेइ जाव गाय ।

८. जेणेव मम (क, ख, ग, घ) ।

९. स० पा०—गिहाओ जाव सोणिएण ।

१०. स० पा०—गिहाओ तहेव जाव आइचइ ।

११. इम (ख) ।

१२. गुरु जणणी (क, ख, ग, घ) ।

१३. इच्छेति (ग) ।

त्ति कट्टु उद्धाविए', से वि य आगासे उप्पइए, तेण च' खभे आसाइए, महया-
महया सट्टेण कोलाहले कए ॥

भट्टाए पसिण-पदं

४३. तए ण सा भट्टा सत्थवाही त कोलाहलसट्टं सोच्चा निसम्म जेणेव चुलणीपिया
समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ', उवागच्छित्ता चुलणीपियं समणोवासयं एव
वयासी—किण्ण पुत्ता । तुम महया-महया सट्टेण कोलाहले कए ?

चुलणीपियस्स उत्तर-पदं

४४. तए ण से चुलणीपिया समणोवासए अम्मय भट्ट सत्थवाहि एव वयासी—एव
खलु अम्मो । न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते' रुट्टे कुविए चडिक्किए
मिसिमिसीयमाणे एग मह नीलुप्पल'-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुर-
घारं° असि गहाय मम एव वयासी—हभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया' !
जाव' जइ णं तुम' अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववा-
साइ न छट्टेसि न भंजेसि, तो ते अह अज्ज जेट्टपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि,
नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाण-
भरियसि कडाहयसि अट्टहेमि, अट्टहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइ-
चामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि ।
तए ण अह तेण पुरिसेण' एव वुत्ते समाणे अभीए जाव'° विहरामि ।
तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव'' पासइ, पासित्ता मम दोच्च पि तच्च पि
एव वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया'' । •जाव'' जइ ण तुम
अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छट्टेसि न
भजेसि, तो जाव'' तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

१ उद्धाइए (ख), उद्धाएइत्ते (घ); डा० ए०
एफ० रुडोल्फ होरनल सपादिते पुस्तके
प्रस्तुतसूत्रे 'उद्धाइए' इति पाठ स्वीकृतोऽस्ति,
लिपिजनितभ्रमकारणेन बहुषु आदर्शेषु मुद्रित-
पुस्तकेषु च 'उद्धा' स्थाने 'उट्टा' एव लभ्यते ।
अग्रे 'भग्गवए' इति पाठस्य व्याख्याया वृत्ति-
कारेणापि 'उद्धावनात्' इति उल्लिखितमस्ति ।

२ य (घ) ।

३. उवागते (क) ।

४. आसुरत्ते (ग, घ) ।

५ स० पा०—नीलुप्पल जाव असि ।

६ समणोवासया अपत्थिय-पत्थिया ! ४ (क) ।

७. उवा० २।२२ ।

८. स० पा०—तुम जाव ववरोविज्जसि ।

९. देवेण (क, ख, ग, घ); अस्मिन् सूत्रे सर्वत्र ।

१०. उवा० २।२३ ।

११. उवा० २।२४ ।

१२. स० पा०—समणोवासया तहेव जाव गाय
आइचइ ।

१३. उवा० २।२२ ।

१४. उवा० २।२२ ।

तए ण अह तेण पुरिसेण दोच्च पि तच्चं पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^१ विहरामि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव^२ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुद्धे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे मम जेट्टुपुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य^३ आइचइ ।

तए ण अह त उज्जल^४ •जाव^५ वेयण सम्म सहामि खमामि तित्तिक्खामि^६ अहियासेमि ।

“एव मज्झिम पुत्त जाव^७ वेयण सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि ।

एवं कणीयस पुत्त जाव^८ वेयण सम्म सहामि खमामि तित्तिक्खामि^९ अहियासेमि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव^{१०} पासइ, पासित्ता मम चउत्थ पि एवं वयासी—हभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया^{११} ! जाव^{१२} •जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि^{१३} न भजेसि, तो ते अह अज्ज जा इमा माया देवत गुरु^{१४}—•जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया, त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट अकाले चेव जोवियाओ^{१५} ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण पुरिसेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^{१६} विहरामि ।

तए णं से पुरिसे मम अभीयं जाव^{१७} पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्चं पि मम एव वयासी—हभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! जाव^{१८} जइ णं तुमं अज्ज^{१९} •सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न

१ उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. सं० पा०—उज्जलं जाव अहियामेमि ।

४ उवा० २।२७ ।

५. सं० पा०—एव तहेव उच्चारयेव्व सव्वं जाव कणीयम जाव आइचइ । अह त उज्जल जाव अहियामेमि ।

६. उवा० ३।२७-३२ ।

७ उवा० ३।३३ ३८ ।

८. उवा० २।२४ ।

९. सं० पा०—समणोवासया अप्पत्थियपत्थिया जाव न भजेसि ।

१०. उवा० २।२२ ।

११ सं० पा०—गुरु जाव ववरोविज्जसि ।

१२ उवा० २।२३ ।

१३. उवा० २।२४ ।

१४. उवा० २।२२ ।

१५. सं० पा०—अज्ज जाव ववरोविज्जसि ।

भजेसि, ती जाव तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जोवियाओ ° ववरो-विज्जसि ॥

तए ण तेण पुरिसेण दोच्च पि तच्च पि मम एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे अणारिए' •अणारियवुद्धी अणारियाइ पावाइ कम्माइ ° समाचरति, जे ण मम जेट्टु पुत्त साओ गिहाओ' •नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाह्यसि अदहेइ, अदहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, जे ण मम मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाह्यसि अदहेइ, अदहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, जे ण मम कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाह्यसि अदहेइ, अदहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य ° आइचइ, तुव्भे वि य ण डच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हत्तए त्ति कट्टु उद्धाविए । से वि य आगासे उप्पइए मए वि य खभे आसाइए, महया-महया सहेण कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पद

४५. तए ण सा भद्दा सत्थवाही चुलणीपिय समणोवासय एव वयासी—नो खलु केइ पुरिसे तव' •जेट्टुपुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव ° कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्ग करेइ, एस ण तुमे विहरिसणे' दिट्ठे । त ण तुम इयाणिं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । 'त ण' तुम पुत्ता ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि' •पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्टाहि अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म ° पडिवज्जाहि ॥

४६. तए ण से चुलणीपिता समणोवासए अम्माए' भद्दाए सत्थवाहीए तह त्ति एयमट्टु विणएण पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ' •पडिक्कमइ

१ स० पा०—अणारिए जाव समाचरति ।

५. तण्ण (क), तेण (घ) ।

२ स० पा०—गिहाओ तहेव जाव कणीयस जाव आइचइ ।

६. स० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि ।

३. स० पा०—तव जाव कणीयस ।

७. अम्मगाते (ग, घ) ।

४ विहरिसणे (ग) ।

८ स० पा०—आलोएइ जाव पडिवज्जइ ।

निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अठ्भुट्टेइ अहारिहं पायच्छित्त
तवोकम्म ° पडिवज्जइ ॥

चुलणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

- ४७ तए णं से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिम उवसपज्जित्ता ण
विहरइ ॥
- ४८ १०तए ण से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्त अहाकप्पं
अहामग्गं अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
४९. तए ण से चुलणीपिता समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्च, चउत्थ,
पंचम, छट्ठ, सत्तमं, अट्ठम, नवम, दसम एक्कारसमं उवासगपडिम अहासुत्तं
अहाकप्प अहामग्ग अहातच्चं सम्मं काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
आराहेइ ° ॥
- ५० तए ण से चुलणीपिता समणोवासए तेण^१ ओरालेण^३ विउलेण पयत्तेण
पग्गहिणण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए
किसे धमणिसतए जाए ॥

चुलणीपियस्स अणसण-पदं

- ५१ तए ण तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-
समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अय अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए
सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेणं एयारूवेण ओरालेण विउलेण
पयत्तेणं पग्गहिणणं तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडि-
किडियाभूए किसे धमणिसतए जाए । त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए
पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले
वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए
धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल
पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा
जलते अर्पाच्छममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाडक्खि-
यस्स, काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल
पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा

१. स० पा०—पढम उवासगपडिमं अहासुत्त ४
जहा आणदो जाव एक्कारस वि ।

२ अस्य स्थाने १।६४ सूत्रे 'इमेणं एयारूवेण'
पाठो विद्यते ।

३. स० पा०—उरालेण जहा कामदेवे जाव
सोहम्मे ।

४ उवा० १।५७ ।

जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाडक्खिए
काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

चुलणीपियस्स समाहिमरण-पदं

५२ तए णं से चुलणीपिता समणोवासए व्हूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-
पोसहोववासिंहि अप्पाण भावेत्ता, वीस वासाड समणोवासगपरियाग
पाडणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए
सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-
पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा ° सोहम्मि कप्पे सोहम्मवडिस-
गस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे ण अरुणप्पभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे ।
चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता । महाविदेहे वासे सिज्जिक्कहिइ वुज्जिक्कहिइ
मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पद

५३ 'एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं तच्चस्स
अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

चउत्थं अज्भयणं

सुरादेवे

उवखेव-पदं

- १ १०जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव^३ सपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाण तच्चस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स ण भते ! अज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ० ?

सुरादेवगाहावइ-पद

- २ एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण वाणारसी नाम नयरी । कोट्टए^१ चेइए । जियसत्तू राया ॥
- ३ १०तत्थ ण वाणारसीए नयरीए सुरादेवे नामं गाहावइ परिवसइ—अड्ढे जाव^४ वहुजणस्स अपरिभूए ॥
- ४ तस्स ण सुरादेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥
- ५ से ण सुरादेवे गाहावई वहूण जाव^५ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव^६ सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१ स० पा०—उवखेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३ कामधनम् (वृषा) ।

४ मं० पा०—सुरादेवे गाहावइ अड्ढे । छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाहस्सिएण वएण तस्स घन्ना भारिया सामी समो-

सडे । जहा आणदो तहेव पडिवज्जइ गिहि-

धम्म । जहा कामदेवो जाव समणस्स ।

५ उवा० १।११ ।

६ उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

६ तस्स ण सुरादेवस्स गाहावइस्स धन्ना नाम भारिया होत्था— अहीण-पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव' जेणेव वाणारसी नयरी जेणेव कोट्टए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

८ परिसा निग्गया ॥

९ कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥

१०. तए णं से सुरादेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे—“एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसडे इहेव वाणारसीए नयरीए वहिया कोट्टए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥”

त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पम-हग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेण वाणारसिं नयारिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाडदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलि-उडे पज्जुवासइ ॥

११ तए ण समणे भगव महावीरे सुरादेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव' धम्म परिकहेइ ॥

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

१. उवा० १।१४।

२. ओ० सू० १६, २२।

३. ओ० सू० ५३-६६।

४. ओ० सू० ७१-७७।

सुरादेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३ तए ण से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए घम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुत्तुट्टु-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एवं वयासी—सद्धामि णं भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि णं भते ! निग्गथ पावयणं, रोएमि णं भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्टेमि णं भते ! निग्गथ पावयण । एवमेय भंते ! तहमेयं भते ! अवितहमेयं भते ! असदिद्धमेयं भते ! इच्छियमेयं भते ! पडिच्छियमेयं भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भते ! से जहेय तुब्भे वदह । जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इवभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मूडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अह ण देवाणुप्पियाण अतिए पंचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावगघम्म पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवंध करेहि ॥

१४. तए ण से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए^१ सावयधम्म पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्टयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

सुरादेवस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६ तए ण से सुरादेवे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव^२ समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुंछणेण ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीठ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

घन्नाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए ण सा घन्ना भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव^३ समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-

१. पू०—उवा० १।२४-५३ ।

३. उवा० १।५६ ।

२. उवा० १।५५ ।

कवल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-
सथारएण पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

सुरादेवस्स घम्मजागरिया-पदं

१८ तए ण तस्स सुरादेवस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-
पच्चक्खण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छराइ वीइक्क-
ताइ । पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयसिं घम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए चितिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह वाणारसीए नयरीए
वहूण जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी
जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अतिय घम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए' ॥

१९ तए ण सुरादेवे समणोवासए जेट्टपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण
च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणक्खमइ, पडिणक्खमित्ता
वाणारसिं नयरिं मज्झमज्जेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला,
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-
पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दव्वभसथारय सथरेइ, सथरेत्ता दव्वभसथा-
रय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे
ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दव्वभसथारोवगए °
समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय घम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

सुरादेवस्स देव-कय-उवसग-पदं

२० तए ण तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसिं एगे देवे
अतिय पाउव्वित्था ॥

° जेट्टपुत्त

२१ तए ण से देवे एग मह नीलुप्पल'-●गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुरधार °
असिं गहाय' सुरादेवं समणोवासय एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणो-
वासया ! अप्पत्थियपत्थिया' ! दुरत-पत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया !

१ उवा० १।१३ ।

२ उवा० १।१३ ।

३. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

४ स० पा०—नीलुप्पल जाव असिं ।

५ द्वितीयाध्ययनस्य द्वाविंशतितमे सूत्रे निम्न-

लिखित पाठोतिरिक्तो विद्यते—'जेणेव पोसह-
साला जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ते रुद्धे कुविए
चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेव' ।

६. °पत्थिया ४ (क, ख, ग, घ) ।

- सि रि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्ग-
कामया ! मोक्खकामया ! धम्मकखिया ! पुण्णकखिया ! सग्गकंखिया !
मोक्खकखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया !
मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पड तव देवाणुप्पिया ! सीलाइ वयाइ वेरम-
णाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ चालित्तए वा खोभित्तए वा खडित्तए वा
भजित्तए वा उज्जित्तए वा परिच्चइत्तए वा, त जइ ण तुमं अज्ज सीलाइ'
•वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि ° न भजेसि, तो
ते अह अज्ज जेट्टुपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि,
घाएत्ता पच्च मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि,
अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम 'अट्ट-दुहट्ट-
वसट्टे'^१ अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
२२. 'तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए अतत्ये
अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असभते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥
२३. तए ण से देवे सुरादेव समणोवासय अभीय अतत्य अणुव्विग्ग अखुभिय अच-
लिय असभत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगय विहरमाण पासइ, पासित्ता दोच्च
पि तच्च पि सुरादेव समणोवासय एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणो-
वासया ! जाव^२ जइ ण तुमं अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइं
पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्टुपुत्त साओ गिहाओ
नीणमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पच्च मससोल्ले करेमि, करेत्ता
आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मसेण य सोणिएण
य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरो-
विज्जसि ॥
- २४ तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे
अभीए जाव विहरइ ॥
२५. तए ण से देवे सुरादेव समणोवासयं अभीय जाव^३ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते
रुट्ठे कुविए चड्डिकए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स जेट्टुपुत्त
गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच्च मससोल्ले करेइ, करेत्ता
आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं
मसेण य सोणिएण य आइचइ ॥

१. स० पा०—सीलाइं जाव न भजेसि ।

चुलणीपियस्स, नवर एक्केक्के पच्च सोल्लया ।

२. × (क, ख, ग, घ) ।

४. उवा० २।२२ ।

३. स० पा०—एवं मज्झिमय, कणीयस, एक्के-
क्के पच्च सोल्लया । तहेव करेइ, जहा

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

२६. तए ण से सुरादेवे समणोवासए त उज्जल विउल कवकस पगाढ चड दुक्ख
दुरहियास वेयण सम्म सहइ खमइ तित्तिक्खइ अहियासेइ ॥

० मज्झिमपुत्त

२७ तए ण से देवे सुरादेवं समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता सुरादेव
समणोवासय एव वयासी—हभो । सुरादेवा । समणोवासया ! जाव' जइ
ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि
न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता
तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पच मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि
कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचामि, जहा
ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२८. तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव'
विहरइ ॥

२९ तए ण से देवे सुरादेव समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता दोच्च पि
तच्च पि सुरादेव समणोवासय एव वयासी—हभो । सुरादेवा । समणोवा-
सया । जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोस-
होववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ
नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पच मससोल्ले करेमि, करेत्ता
आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिण्ण य
आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरो-
विज्जसि ॥

३० तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे
अभीए जाव' विहरइ ॥

३१ तए ण से देवे सुरादेव समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता
आसुरत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स
मज्झिम पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच मससोल्ले
करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स
समणोवासयस्स गायं मसेण य सोणिण्ण य आइचइ ॥

३२ तए ण से सुरादेवे समणोवासए त उज्जल जाव' वेयण सम्म सहइ खमइ
तित्तिक्खइ अहियासेइ ॥

१ उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२२ ।

३ उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५ उवा० २।२२ ।

६ उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२७ ।

० कणीयसपुत्त

३३. तए णं से देवे सुरादेव समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता सुरादेव समणोवासय एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइं पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्ढेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पच मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मसेण य सोणिण्ण य आइचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
- ३४ तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
- ३५ तए ण से देवे सुरादेव समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि सुरादेव समणोवासय एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्ढेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पच मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
- ३६ तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेण दोच्चं पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
३७. तए ण से देवे सुरादेव समणोवासय अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्कए मिसिमिसोयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचइ ।
- ३८ तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयण सम्मं सहइ खमइ तित्तिक्खइ ० अहियासेइ ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२७ ।

°सोलसरोगायंक

३६. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासय अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चउत्थं पि सुरादेवं समणोवासय एव वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भजेसि', तो ते अहं अज्ज सरीरसि' जमगसमगमेव सोलस रोगायके पक्खिवामि, [त जहा—१ सासे २ कामे' ३. •जरे' ४ दाहे ५ कुच्छिसूले ६ भगदरे ७. अरिसए ८. अजीरए ९. दिट्ठिसूले १०. मुद्धसूले ११ अकारिए १२ अच्छिवेयणा १३ कण्णवेयणा १४ कडुए १५. उदरे° १६ कोढे ।]' जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
४०. तए ण से सुरादेवे समणोवासए° •तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' ° विहरइ ॥
४१. °तए णं से देवे सुरादेव समणोवासय अभीयं जाव'° पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्च पि सुरादेव समणोवासय एव वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणो-वासया ! जाव'' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइं वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरसि जमगसमगमेव सोलस रोगायके पक्खिवामि जाव'' जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि ॥

सुरादेवस्स कोलाहल-पदं

४२. तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्जकथिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे अणारिए'' •अणारियबुद्धी अणारियाइ पावाइ कम्माइ° समाचरति, जे ण मम जेट्टुपुत्त'' •साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच मससोल्ले'' करेइ, करेत्ता आदाण-

१. उवा० २।२४ ।

भणइ जाव ववरोविज्जसि ।

२. उवा० २।२२ ।

१०. उवा० २।२४ ।

३ परिच्चयसि (क, ख, ग, घ) ।

११. उवा० २।२२ ।

४ सरीरस्स (क, ख, ग, घ) ।

१२. उवा० ४।३६ ।

५. स० पा०—कासे जाव कोढे ।

१३ स० पा०—अणारिए जाव समाचरति ।

६ असी कोष्ठकवतिपाठ व्याख्याश प्रतीयते ।

१४ स० पा०—जेट्टुपुत्त जाव कणीयस जाव

७. स० पा०—समणोवासए जाव विहरइ ।

आइचइ ।

८. उवा० २।२३ ।

१५. मससोल्लया (क, ख, ग, घ) ।

९ स० पा०—एव देवो दोच्च पि तच्च पि

भरियसि कडाहयसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मसेण य सोणिण्ण य आइचड, जे ण मम मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच्च मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्देइ, अद्देत्ता मम गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचड, जे ण मम कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच्च मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्देइ, अद्देत्ता मम गाय मसेण य सोणिण्ण य० आइचइ, जे वि य इमे सोलस रोगायका, ते वि य डच्छइ मम सरीरसि पक्खवित्तए, त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, तेण य खभे आसाइए, महया-महया सद्देण कोलाहले कए ॥

धन्नाए पसिण-पदं

४३ तए ण सा धन्ना भारिया कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव मुरादेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी—किण्ण^१ देवाणुप्पिया ! तुब्भे ण महया-महया सद्देण कोलाहले कए ?

सुरादेवस्स उत्तर-पद

४४ तए ण से सुरादेवे समणोवासए धन्नं भारिय एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे^२ •आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्कए मिसिमिसीयमाणे एग महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधार अंसि गहाय मम एवं वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव^३ जइ ण तुम अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जेदुपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पच्च मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए ण अह तेण पुरिसेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^४ विहरामि । तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव^५ पासइ, पासिता मम दोच्च पि तच्च पि

१ मरीरगसि (क) ।

२ कोलाहल (क, ख, ग, घ); ३।४३ सूत्रे 'कोलाहलसद्दं' इति पाठो विद्यते । अत्रापि तथैव युज्यते । आदर्शेषु सक्षिप्तलेखने 'कोलाहल' पाठो जातः इति प्रतीयते ।

३. किण्ण तुम (ग) ।

४ सं० पा०—पुरिसे तहेव वहेइ जहा चुलणी-पिया धन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयस ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइं वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो जाव तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण पुरिसेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आमुरत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसोयमाणे मम जेट्टपुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अगओ घाएइ, घाएत्ता पच मससोत्ते करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अट्टहेइ, अट्टहेत्ता मम गायं मसेण य सोणिएण य आइचइ । तए ण अह त उज्जल जाव' वेयण सम्म सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एव मज्झिम पुत्त जाव' वेयण सम्म सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एव कणीयस्स पुत्त जाव' वेयण सम्म सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव' पासइ, पासित्ता मम चउत्थ पि एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज सरीरसि जमगसमगमेव सोलस रोगायके पक्खिवामि जाव' जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण पुरिसेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव' पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि मम एव वयासी—हभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज सरीरसि जमगसमगमेव सोलस रोगायके पक्खिवामि जाव' जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण तेण पुरिसेण दोच्च पि तच्च पि मम एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे

१. उवा० २।२२ ।

२. उवा० २।२३ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२७ ।

५. उवा० ४।२७-३२ ।

६. उवा० ४।३३-३८ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२२ ।

९. उवा० ४।३६ ।

१०. उवा० २।२३ ।

११. उवा० २।२४ ।

१२. उवा० २।२२ ।

१३. उवा० ४।३६ ।

अज्भक्तिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे अणारिए अणारियवुद्धी अणारियाइ पावाइं कम्माइं समाचरति, जे ण मम जेट्टु पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच्च मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइच्चइ, जे ण मम मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच्च मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइच्चइ, जे ण मम कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पच्च मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइच्चइ, जे वि य इमे सोलस रोगायंका, ते वि य इच्छइ मम सरीरसि पक्खवित्तए, त सेय खलु मम एय पुरिसि गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देण कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पदं

४५. तए ण सा घन्ना भारिया सुरादेव समणोवासयं एवं वयासो—तो खलु केइ पुरिसे तव जेट्टुपुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भ' के वि पुरिसे सरीरसि^१ जमगसमग सोलस रोगायके पक्खवइ, एस ण के वि पुरिसे तुब्भ उवसगं करेइ^२, •एस ण तुमे विदरिसणे दिट्ठे । त ण तुम इयारिण भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । त ण तुम पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्टाहि अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जाहि ॥

४६. तए ण से सुरादेवे समणोवासए घन्नाए भारियाए तह त्ति एयमट्टु विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्टेइ अहारिह पायच्छित्त तवोकम्मं पडिवज्जइ ॥

१ यद्यपि 'तुब्भे, तुब्भ' इत्यादिवहुवचनान्ता. प्रयोगा व्याकरणे दृश्यन्ते, तथापि प्रस्तुतागमे एकवचनान्ता अपि प्रयुक्ता. सन्ति । महाशतकाव्ययने २७ सूत्रे 'तुब्भ, तुमं, विहरमि' एते प्रयोगा. एकस्मिन्नेव प्रसङ्गे प्राप्ता सन्ति ।

२. सरीरसि (क) ।

३. स० पा० —करेइ । सेस जहा चुलणीपियस्स तहा भट्टा भणइ । एव सेस जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव सोहम्मे ।

सुरादेवस्स उवासगपडिमा-पदं

- ४७ तए ण से सुरादेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसपज्जिता ण विहरइ ॥
- ४८ तए ण से सुरादेवे समणोवासए पढम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
- ४९ तए ण मे सुरादेवे समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्च, चउत्थ, पचम, छट्ठ, सत्तम, अट्ठम, नवम, दसमं, एक्कारस उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
- ५० तए ण से सुरादेवे समणोवासए तेणं ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिण्ण तवोकम्मेण मुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसत्तए जाए ॥

सुरादेवस्स अणसण-पद

- ५१ तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अय अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेण एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिण्णं तवोकम्मेण मुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसत्तए जाए । त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स, काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्प-भायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

सुरादेवस्स समाहिमरण-पदं

- ५२ तए ण से सुरादेवे समणोवासए वहरिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेत्ता, वीस वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए

अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते
समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा° सोहम्ममे कप्पे अरुणकते विमाणे
उववण्णे । चत्तारि पलिओवमाड ठिई । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ
मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पद

५३ •'एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण चउत्थस्स
अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

पचमं अज्भयण

चुल्लसयए

उक्खेव-पदं

१. '●जइ ण भते । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' सपत्तेण सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाण चउत्थस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स णं भते ! अज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ० ?

चुल्लसययगाहावइ-पदं

- २ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेणं समएण आलभिया' नामं नयरी । सखवणे उज्जाणे । जियसत्तू राया ॥
- ३ '●तत्थ ण आलभियाए नयरीए चुल्लसयए नाम गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं चुल्लसययस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥
- ५ से ण चुल्लसयए गाहावई वहुण जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥
- ६ तस्स ण चुल्लसययस्स गाहावइस्स बहुला नाम भारिया होत्था—अहीण-

१. स० पा०—उक्खेवो ।

साहस्सिएण बहुला भारिया ।

२ ना० १।१।७ ।

५. उवा० १।११ ।

३ आलभिया (क, घ) ।

६. उवा० १।१३ ।

४ स० पा०—चुल्लसयए गाहावई अड्ढे जाव
छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगो-

७ उवा० १।१३ ।

पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी
विहरइ ० ॥

महावीर-समवसरण-पदं

- ७ तेण कालेणं तेणं समएणं समणे भगव महावीरे जाव' जेणेव आलभिया
नयरी जेणेव संखवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव
ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
- ८ परिसा निग्गया ॥
- ९ कुणिए राया जहा, तथा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
- १० तए ण से चुल्लसयए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे— “एव खलु समणे
भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह
सपत्ते इह समोसढे इहेव आलभियाए नयरीए वहिया सखवणे उज्जाणे
अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।”
त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताण णाम-
गोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-
पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए,
किमग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? त गच्छामि णं देवाणुप्पिया !
समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मंगल
देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-
कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्प-
महग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता
सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-
चारेण आलभिय नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव सखवणे
उज्जाणे, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण
भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ,
वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण
पजलिउडे पज्जुवासइ ॥
११. तए ण समणे भगव महावीरे चुल्लसययस्स गाहावडस्स तीसे य महइमहालि-
याए परिसाए जाव' धम्म परिकहेइ ॥
- १२ परिसा पडिगया, राया य गए ॥

१. उवा० २।२४ ।

३. ओ० सू० १६, २२ ।

२. स० पा०—सामी समोसढे जहा आणदो तथा
गिहिवम्म पडिवज्जइ । सेस जहा कामदेवो
जाव धम्मपण्णात्ति ।

४. ओ० सू० ५३-६६ ।

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

चुल्लसययस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद

१३. तए ण चुल्लसयए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ट-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समण भगव महावीर तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—सट्टहामि ण भंते । निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भते । निग्गथ पावयण, रोएमि णं भते । निग्गथ पावयण, अब्भुट्टेमि ण भते । निग्गथ पावयण । एवमेय भते । तहमेय भते । अवितहमेय भते । असदिद्धमेय भते । इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते । इच्छिय-पडिच्छियमेय भते । से जहेय तुव्वे वदह । जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इव्वभ-सेट्टि-सेणावइ सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए । अहं ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावग-धम्म पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवधं करेहि ॥

१४. तए ण से चुल्लसयए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सावय-धम्म पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पद

१५. तए णं समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ आलभियाए नयरीए सखवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

चुल्लसययस्स समणोवासग-चरिया-पद

१६. तए ण से चुल्लसयए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव^३ समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

बहुलाए समणोवासिय-चरिया-पद

१७ तए ण सा बहुला भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव^३ समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-

कवल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथार-
एण पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पदं

१८. तए ण तस्स चुल्लसययस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छराड वीडक्क-
ताइ । पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारुवे अज्झत्थिए चित्तिए
पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह आलभियाए नयरीए
वहूण जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी
जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए' ॥
१९. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जेट्टुपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-
परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख-
मित्ता आलभिय नयरि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसह-
साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता
उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दव्वभसथारयं सथरेइ, संथरेत्ता
दव्वभसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी उम्मुक्कमणि-
सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दव्वभस्था-
रोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय ° धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता ण
विहरइ ॥

चुल्लसयगस्स देव-कय-उवसग-पदं

२०. तए ण तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि एगे
देवे अंतिय ° पा उव्वभूए ॥

° जेपुट्ट

२१. तए णं से देवे एग महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं °
असि गहाय एवं वयासी—हभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया' ! ° अप्पत्थिय-
पत्थिया ! दुरत-पत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-
कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सगगकामया ! मोक्ख-

१. उवा० १।१३ ।

२. उवा० १।१३ ।

३. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

४. स० पा०—अंतिय जाव असि ।

५. स० पा०—समणोवासया जाव न भ जेसि ।

कामया । धम्मकखिया । पुण्णकखिया । सग्गकखिया । मोक्खकखिया ।
 धम्मपिवासिया । पुण्णपिवासिया । सग्गपिवासिया । मोक्खपिवासिया ।
 नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ
 पोसहोववासाइ चालित्तए वा खोभित्तइ वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झि-
 त्तए वा परिच्चइत्तए वा, त जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खा-
 णाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि^० न भजेसि, तो ते [अह ?] अज्ज जेट्टुपुत्त
 साओ गिहाओ नीणेमि', •नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले
 करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण
 य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवि-
 याओ ववरोविज्जसि ॥

- २२ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे
 अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए अमभते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥
२३. तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय अतत्थ अणुव्विग्ग अखुभिय
 अचलिय असभत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगय विहरमाण पासइ, पासित्ता
 दोच्च पि तच्च पि चुल्लसयय समणोवासय एव वयासी—हभो । चुल्लसयगा ।
 समणोवासया । जाव^१ जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खा-
 णाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जेट्टुपुत्त साओ
 गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेमि,
 करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य
 सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ
 ववरोविज्जसि ॥
- २४ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते
 समाणे अभीए जाव^१ विहरइ ॥
- २५ तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव^१ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते
 रुट्टे कुविए चड्डिककए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स जेट्टुपुत्त
 गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता
 आदाणभरियंसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स
 गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ ॥
- २६ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए त उज्जल विउल कक्कस पगाढ चड दुक्ख
 दुरहियास वेयण सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

१. स० पा० — नीणेमि, एव जहा चुलणीपिय,
 नवर एककेके सत्त मससोल्लया जाव कणी-
 यस जाव आइचामि ।

२ उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४ उवा० २।२४ ।

० मज्झिमपुत्त

- २७ तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव^१ पासइ, पासित्ता चुल्लसयगं समणोवासय एव वयासी—हभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव^२ जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
- २८ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^३ विहरइ ॥
२९. तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव^४ पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुल्लसयग समणोवासय एवं वयासी—हभो ! चुल्लसयया ! समणोवासया ! जाव^५ जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
३०. तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^६ विहरइ ॥
- ३१ तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव^७ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स मज्झिम पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचइ ॥
- ३२ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए त उज्जल जाव^८ वेयण सम्म सहइ खमइ तित्तिक्खइ अहियासेइ ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२७ ।

० कणीयसपुत्त

३३. तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव^१ पासइ, पासित्ता चुल्लसयग समणोवासय एव वयासी—हभो । चुल्लसयगा । समणोवासया । जाव^१ जइ ण तुम अज्ज । सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्ढेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिणय आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
- ३४ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेणं एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^१ विहरइ ॥
- ३५ तए ण से देवे चुल्लसयगं समणोवासय अभीय जाव^१ पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि चुल्लसयगं समणोवासय एव वयासी—हभो । चुल्लसयगा । समणोवासया । जाव^१ जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्ढेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिणय आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
- ३६ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेणं दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^१ विहरइ ॥
- ३७ तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव^१ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसीमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स कणीयस पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिणय य^० आइचइ ॥
३८. तए ण से चुल्लसयए समणोवासए^० त उज्जल जाव^१ वेयण सम्मं सहइ खमइ तित्तिक्खइ^० अहियासेइ ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. स० पा०—समणोवासए जाव अहियासेइ ।

९. उवा० २।२७ ।

० हिरण्णकोडी-विप्पकिरण

३६ तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता चउत्थ पि चुल्लसयग समणोवासय एव वयासी—हभो । चुल्लसयगा । समणोवासिया' ।
 ०जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि ० न भजेसि, तो ते अह अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्डिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग'-०तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह ०पहेमु सव्वओ समता विप्पडरामि', जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरो-विज्जसि ॥

४० तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥

४१ तए ण से देवे चुल्लसयग समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि' ०एव वयासी-- हभो । चुल्लसयगा । समणोवासया । जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाण-पउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्डिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समता विप्पडरामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ० ॥

चुल्लसयगस्स कोलाहल-पदं

४२. तए ण तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे अणारिए' ० अणारियवुद्धी अणारियाइ पावाइ कम्माइ समाचरति, जे ण मम जेट्ठ पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता

१. उवा० २।२४ ।

२. स० पा०—समणोवासया जाव न भजेसि ।

३ उवा० २।२२ ।

४. स० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

५. विप्पयिरामि (क, ग) ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८ स० पा०—तच्च पि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि ।

९. उवा० २।२२ ।

१०. स० पा०—अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चित्तेइ जाव कणीयस जाव आइचइ ।

मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गायं मसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे ण मम मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइंचइ, जे ण मम कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य ° आइंचइ, जाओ वि य ण इमाओ मम छ हिरण्णकोडीओ निहाण-पउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्डिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउ-त्ताओ, ताओ वि य ण इच्छइ मम साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग'-•तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समता ° विप्प-इरित्तए, त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हत्तए त्ति कट्टु उद्धाविए', •से वि य आगासे उप्पइए, तेण य खभे आसाइए, महया-महया सद्देण कोलाहले कए ॥

बहुलाए पसिण-पदं

४३ तए ण सा बहुला भारिया त कोलाहलसद्द सोच्चा निसम्म जेणेव चुल्लसयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चुल्लसयग समणोवासयं एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया । तुब्भे ण महया-महया सद्देण कोलाहले कए ?

चुल्लसयगस्स उत्तर-पद

४४ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए बहुल भारिय एव वयासी—एव खलु बहुले । न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुद्धे कुविए चडिक्कए मिसिमिसीयमाणे एग मह नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुरधार असि गहाय मम एव वयासी—हभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जेट्टुपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण पुरिसेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि ।

१ स० पा०—सिंघाडग जाव विप्पइरित्तए ।

चुलणीपियस्स जाव सोहम्मे ।

२. स० पा०—उद्धाविए जहा सुरादेवो । तहेव

३. उवा० २।२२ ।

भारिया पुच्छइ, तहेव कहेइ । सेस जहा

४ उवा० २।२३ ।

तए णं से पुरिसे मम अभीय जाव' पासड, पासित्ता ममं दोच्च पि तच्चं पि एव वयासी—हंभो । चुल्लसयगा । समणोवासया । जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो जाव तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण पुरिसेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव' पासड, पासित्ता आमुरत्ते स्ट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे मम जेट्टपुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अट्टहेइ, अट्टहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचइ ।

तए ण अह त उज्जल जाव वेयण सम्म सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि ।

एव मज्झिम पुत्त जाव' वेयण सम्म सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि ।

एव कणीयस पुत्त जाव' वेयण सम्म सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीयं जाव' पासड, पासित्ता मम चउत्थ पि एव वयासी—हंभो । चुल्लसयगा । समणोवासया । जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समता विप्पइरामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव' पासड, पासित्ता दोच्च पि तच्चं पि ममं एव वयासी—हंभो । चुल्लसयगा । समणोवासया । जाव' जइ णं तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो जाव तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

१. उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२७ ।

६. उवा० ५।२७-३२ ।

७. उवा० ५।३३-३८ ।

८. उवा० २।२४ ।

९. उवा० २।२२ ।

१०. उवा० २।२३ ।

११. उवा० २।२४ ।

१२. उवा० २।२२ ।

तए णं तेणं पुरिसेण दोच्च पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयाख्वे
 अज्जत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे
 अणारिए अणारियवुद्धी अणारियाइं पावाइ कम्माइ समाचरति, जे ण मम
 जेट्ट पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त
 मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम
 गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, जे ण मम मज्जिभमं पुत्त साओ गिहाओ
 नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता
 आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य
 आइचइ, जे ण मम कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ
 घाएइ, घाएत्ता सत्त मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ,
 अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ, जाओ वि य ण इमाओ मम छ
 हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्ण-
 कोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ वि य ण इच्छइ मम साओ गिहाओ नीणेत्ता
 आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु
 सव्वओ समता विप्पइरित्ताए, त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हित्ताए त्ति कट्टु
 उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खभे आसाइए, महया-महया
 सद्देण कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पदं

४५ तए ण सा बहुला भारिया चुल्लसयग समणोवासयं एव वयासी - नो खलु
 केइ पुरिसे तव जेट्टपुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ,
 नो खलु केइ पुरिसे तव मज्जिभम पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता
 तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयस पुत्त साओ गिहाओ
 नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु देवाणुप्पिया । तुवभ के वि पुरिसे
 तव छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ
 हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए
 नयरीए सिंघाडग-तिय - चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समता
 विप्पइरइ, एस ण केइ पुरिसे तव उवसग्ग करेइ, एस ण तुमे विदरिसणे दिट्ठे,
 त ण तुम इयाणि भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । त ण तुम पिया ।
 एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि
 अकरणयाए अब्भुट्टाहि अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जाहि ॥

४६. तए ण से चुल्लसयए समणोवासए बहुलाए भारियाए तह त्ति एयमट्ट विणएण
 पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ

विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अन्भुट्टेइ अहारिह पायच्छित्तं तवोकम्म
पडिवज्जइ ॥

चुल्लसयगस्स उवासगपडिमा-पदं

- ४७ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए पढम उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ ॥
४८. तए ण से चुल्लसयए समणोवासए पढम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्पं
अहामग्ग अहातच्च सम्म काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
- ४९ तए ण से चुल्लसयए समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्चं, चउत्थ,
पचम, छट्ठ, सत्तम, अट्ठम, नवमं, दसम, एक्कारसमं उवासगपडिम अहासुत्तं
अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
आराहेइ ॥
५०. तए ण से चुल्लसयए समणोवासए तेण ओरालेण विउलेण पयत्तेणं पग्गहिएणं
तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे
धमणिसतए जाए ॥

चुल्लसयगस्स अणसण-पदं

- ५१ तए ण तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-
समयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए
मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं
विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे
किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए । त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले
वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे
कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए
धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ला
पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयस
जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-
यस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं
पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते
अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं
अणवकखमाणे विहरइ ॥

चुल्लसययस्स समाहिमरण-पदं

५२. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेत्ता, वीस वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते, समाहिपत्ते, कालमासे काल किच्चा ° सोहम्मे कप्पे अरुणसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । • तत्थ ण अत्थेगइयाणं देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पणत्ता । चुल्लसयगस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पणत्ता ॥

५३ से ण भते । चुल्लसयए ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा । महाविदेहे वासे ° सिज्जिभहिइ बुज्जिभहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५४ • एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण पचमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ° ॥



१ स० पा०—चत्तारि पलिओवमाइ ठिई । सेस २. स० पा०—निक्खेवो ।
तहेव जाव सिज्जिभहिइति ।

छट्ठं अज्झयणं

कुडकोलिए

उक्खेव-पदं

१. •'जइ ण भते समणेण भगवया महावीरेण जाव' संपत्तेणं मत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण पचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स ण भते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °

कुडकोलियगाहावइ-पदं

- २ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण कपिल्लपुरे नयरे^१ । सहस्सववणे उज्जाणे । जियसत्तू राया ॥
३. •'तत्थ ण कपिल्लपुरे नयरे कुडकोलिए नाम गाहावई परिवसइ—अट्ठे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स ण कुडकोलियस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छव्वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥
- ५ से ण कुडकोलिए गाहावई बहूण जाव^२ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव^३ सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१ स० पा०—उक्खेवो ।

छ वड्ढिपउत्ताओ, छ पवित्थरपउत्ताओ,

२ ना० १।१।७ ।

छव्वया दसगोसाहस्सिएण वएण ।

३ अस्यानन्तरमतिरिक्तपाठः—'पुढविसिलापट्टए चेइए' (ग) ।

५. उवा० १।११ ।

६. उवा० १।१३ ।

४ स० पा०—कुडकोलिए गाहावई । पूसा

७. उवा० १।१३ ।

भारिया छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ,

६ तस्स ण कुडकोलियस्स गाहावइस्स पूसा नाम भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ० ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७ • तेण कालेण तेण समएण समणे भगवं महावीरे जाव' जेणेव कपिल्लपुरे नयरे जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हिता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

८ परिसा निग्गया ॥

९ कूणिए राया जहा, तथा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥

१० तए ण ये कुडकोलिए गाहावई इमीसे कहाए लद्धे संमाणे—“एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम द्दइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव कपिल्लपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्सववणे उज्जाणे अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हिता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।”

तं महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहताणं भगवताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव-महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घा-भरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंट-मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेण कपिल्लपुर नयर मञ्जमञ्जेण निग्गच्छइ, निग्गच्छिता जेणामेव सहस्संववणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समण भगव महावीर तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सुसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥

११ तए ण समणे भगव महावीरे कुडकोलियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहा-लियाए परिसाए जाव' धम्म परिकहेइ ॥

१ उवा० १।१४ ।

३. ओ० सू० १६, २२ ।

२ स० पा०—सामी समोसढे । जहा कामदेवो

४. ओ० सू० २३-६६ ।

तहा सावयधम्म पडिवज्जइ सा मन्वेव

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ।

१२३-परिसा-पडिगया, राया य गए ॥

कुडकोलियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए ण कुडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा
 निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्प-
 माणहियए उट्टाए-उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-
 पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि
 ण भते ! निग्गथ पावयणं, पत्तियामि णं भते ! निग्गथ पावयण, रोएमि ण
 भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्टेमि णं भते ! निग्गथ पावयण । एवमेय भंते !
 तहमेय, भते ! अविहमेय भते ! असंदिद्धमेय भते ! इच्छियमेयं भते !
 पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भते ! से जहेय तुब्भे वदह । जहा
 ण देवाणुप्पियाण अतिए वहवे राईसर-तलवर-माडबिय-कोडुविय-इवभ-सेट्टि-
 सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो
 खलु अह तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए । अह
 णं देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावग-
 धम्म पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिबंध करेहि ॥

१४. तए ण से कुडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सावय-
 धम्म पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ कपिल्लपुराओ नयराओ सहस्सब-
 वणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार
 विहरइ ॥

कुडकोलियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६ तए ण से कुडकोलिए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव^३ समणे
 निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कवल-
 पायपुच्छणेणं ओसहभेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण
 पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

पूसाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७ तए ण सा पूसा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा

जाव' समणे निग्गथे फासु-एसाणज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कंदल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण° पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

देवेण नियतिवाद-समत्थण-पदं

१८ तए णं से कुडकोलिए समणोवासए अण्णदा कदाड पच्चावरण्हकालसमयसि' जेणेव असोगवणिया, जेणेव' पुढविमिलापट्टए, तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता नाममुद्दग' च उत्तरिज्जग च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

१९ तए ण तस्म कुडकोलियस्म समणोवासयस्स एगे देवे अतिय पाउव्ववित्था ॥

२० तए ण से देवे नाममुद्दग' च उत्तरिज्जग' च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हड, गेण्हित्ता 'अतलिव्वपडिवण्णे सखिखिणियाइ'° पच्चवण्णाइ वत्थाइ पवर परिहिए कुडकांनिय समणोवासयं एव वयासी - हभो ! कुडकोलिया ! समणोवासया ! सुदरी ण देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्टाणे इ वा कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता' सव्वभावा', मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे इ वा'° •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार°-परक्कमे इ वा अणियता' सव्वभावा ॥

कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं

२१ तए ण से कुडकोलिए समणोवासए त देव एव वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया ! सुदरी ण गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती'²—नत्थि उट्टाणे इ वा'° •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा° नियता सव्वभावा, मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे इ वा'° •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा° अणियता

१ °उवा १।५६ ।

मूलपाठ. २।४० सूत्रानुसारी स्वीकृत ।

२ पुव्वा° (ख, घ) ।

८ नियया (ख, घ) ।

३ जेणामेव (क) ।

९ सव्वेभावा (ग) ।

४ नामामुद्दग (क, ख, ग) ।

१० म० पा०—उट्टाणे इ वा जाव परक्कमे ।

५ नाममुद्द (क, ख, घ); नामामुद्द (ग) ।

११ अणियता (क, घ), अणियया (ख) ।

६ उत्तरिज्ज (ख, ग, घ) ।

१२ °पण्णत्ति (ग) ।

७ सखिखिणि अतलिव्वपडिवण्णे (क, ख, ग,

१३ स० पा०—उट्टाणे इ वा जाव नियता ।

घ), पाठसंक्षेपकरणेनात्र परिवर्तन जातम् ।

१४ स० पा०—उट्टाणे इ वा जाव अणियता ।

सव्वभावा, तुमे ण देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किण्णा^१ लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? किं उट्टाणेण^२ •कम्मेण वलेण वीरिएण^३ पुरिसक्कार-परक्कमेण ? उदाहु अणुट्टाणेण^४ •अकम्मेण अवलेण अवीरिएण^५ अपुरिसक्कारपरक्कमेण ?

देवेण नियतिवाद-समत्थण-पद

२२. तए ण से देवे कुडकोलिय समणोवामय एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयारूवा^६ दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्टाणेण^७ अकम्मेण अवलेण अवीरिएण अपुरिसक्कारपरक्कमेण 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए'^८ ॥

कुडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं

२३. तए ण से कुडकोलिए समणोवासए त देव एव वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया ! तुमे 'इमा एयारूवा'^९ दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्टाणेण^{१०} •अकम्मेण अवलेण अवीरिएण^{११} अपुरिसक्कारपरक्कमेण 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए', जेसि ण जीवाण नत्थि उट्टाणे इ वा^{१२} •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार^{१३} -परक्कमे इ वा, ते किं न देवा^{१४} ? 'अह तुव्भे'^{१५} इमा एयारूवा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे उट्टाणेण^{१६} •कम्मेण वलेण वीरिएण पुरिसक्कार^{१७} -परक्कमेण लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो ज वदसि सुदरी णं गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्टाणे इ वा^{१८} •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा^{१९} णियता सव्वभावा, मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-

१ किणा (क) ।

परक्कमेण ।

२. स० पा०—उट्टाणेण जाव पुरिसक्कारपरक्कमेण ।

६ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क, ख, ग, घ) ।

३ स० पा०—अणुट्टाणेण जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेण ।

१०. स० पा०—उट्टाणे इ वा जाव परक्कमे ।

४ इमेयारूवा (क, ख, ग, घ) ।

११. 'क' प्रती अस्यानन्तर—'अह ते एवं भवति, तो ज वदसि' एव पाठो विद्यते । 'ग' प्रती 'अह तुव्भे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्डी इ उट्टाणेण जाव परक्कमेण लद्धा इ । त ते एव न भवति, तो ज वदसि' ० ।

५. स० पा०—अणुट्टाणेण जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेण ।

६ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क्व) ।

१२. अह ण देवाणुप्पिया तुमे (ख, घ) ।

७. इमेयारूवा (क, घ), इमे एयारूवा (ग) ।

१३. स० पा०—उट्टाणेण जाव परक्कमेण ।

८ स० पा०—अणुट्टाणेण जाव अपुरिसक्कार-

१४. स० पा०—उट्टाणे इ वा जाव णियता ।

पण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे इ वा' •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिस-
वकार-परवकमे इ वा° अणियता सव्वभावा, त ते मिच्छा ॥

देवस्स पडिगमण-पद

२४ तए ण से देवे कुडकोलिएण समणोवासएण एव वुत्ते समाणे सकिए^१ कखिए
वित्तिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो सचाएइ कुडकोलियस्स समणोवास-
यस्स किञ्चि पमोवखमाइक्खित्तए, नाममुट्ठग च उत्तरिज्जय च पुढविसिलापट्टए
ठवेइ', ठवेत्ता जामेव दिस पाउव्भूए, तामेव दिस पडिगए ॥

महावीर-समवसरण-पदं

२५ तेण कान्हेण तेण समएण सामी समोसढे ॥

२६ तए ण से कुडकोलिए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्टे^२ •समाणे—“एव
खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे
इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव कपिल्लपुरस्स नयरस्स वहिया सहस्सव-
वणे उज्जाण अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण
भावेमाणे विहरइ ।”

तं सेय खलु मम समण भगव महावीर वदित्ता णमसित्ता ततो पडिणियत्तस्स
पोसह पारेत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता [पोसहसालाओ पडिणिक्वमइ,
पडिणिक्वमित्ता ?] सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए मणुस्स-
वग्गुरापारिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्वमइ, पडिणिक्वमित्ता कपिल्लपुर
नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्सववण उज्जाण,
जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खत्तो
आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता तिविहाए
पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

२७. तए ण समणे भगव महावीरे कुडकोलियस्स समणोवासयस्स तीसे य महइ-
महालियाए परिसाए जाव धम्म परिकहेइ° ॥

महावीरेण पुव्ववुत्तत-परूवण-पद

२८ कुडकोलियाइ । समणे भगव महावीरे कुडकोलिय समणोवासय एव वयासी—

१. स० पा०—उट्टाणे इ वा जाव अणियता ।

२. सकिए जाव कलुससमावण्णे (ग) ।

३ ठवेइ (घ) ।

४ लद्धट्टे हट्ट (क, ख, ग, घ), अत्र 'हट्ट' शब्दः

किमर्थमुल्लिखित., इति न ज्ञायते । कामदेव-

वर्णने नासी उपलभ्यते । स० पा—लद्धट्टे

जहा कामदेवो तथा निग्गच्छइ जाव पज्जु-
वासइ । धम्मकहा ।

५ ओ० सू० ७१-७७ ।

से नूणं कुडकोलिया ! कल्लं^१ तुव्भं पच्चावरण्हकालसमयंसि^३ असोगवणियाए एगे देवे अतिय पाउव्भवित्था ।

तए ण से देवे नाममुद्दग च^३ •उत्तरिज्जग च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ, गेण्हत्ता अतलिव्वपडिवण्णे सखिखिणियाइ पचवण्णाइ वत्थाइ पवर परिहिए तुम एव वयासी—हभो ! कुडकोलिया ! समणोवासया ! सुदरी ण देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्टाणे इ वा कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता सव्व-भावा, मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे इ वा कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा अणियता सव्वभावा ।

तए ण तुम त देव एव वयासी—जइ ण देवाणुप्पिया ! सुदरी णं गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्टाणे इ वा जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता सव्वभावा, मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-पण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे इ वा जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा अणियता सव्वभावा, तुमे ण देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? कि उट्टाणेण जाव पुरिसक्कार-परक्कमेण ? उदाहु अणुट्टाणेण जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेण ?

तए ण से देवे तुम एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्टाणेण जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेण लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।

तए ण तुम त देव एवं वयासी जइ णं देवाणुप्पिया ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्टाणेण जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेण लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, जेसि ण जीवाण नत्थि उट्टाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा, ते कि न देवा ?

अह तुव्भे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे उट्टाणेण जाव परक्कमेण लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो ज वदसि सुंदरी ण गोसालस्स मखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्टाणे इ वा जाव नियता सव्वभावा, मगुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे इ वा जाव अणियता सव्वभावा, त ते मिच्छा । तए ण से देवे तुम एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए वितिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो

१ × (ख) ।

२ पुच्चावरण्ह° (ख, घ) ।

३ स० पा०—नामुद्दग च तहेव जाव पडिगए ।

सचाएइ तुब्भे किंचि पमोवखमाइविखत्तए, नाममुद्ग च उत्तरिज्जय च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता जामेव दिस पाउब्भूए, तामेव दिस^० पडिगए । से नूण कुडकोलिया ! अट्टे समट्टे ? हता अत्थि^१ ॥

महावीरेण कुडकोलियस्स पससा-पदं

- २९ अज्जोति ! समणे भगव महावीरे [वहवे ?]^१ समणा निग्गथा य निग्गथीओ य आमतेत्ता एव वयासी—जइ ताव अज्जो ! गिहिणो गिहिमज्जावसता^० अण्णउत्थिए अट्टेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ट-पसिणवागरणे करेति, सक्का पुणाइ अज्जो ! समणेहि निग्गथेहि दुवालसंग गणिपिडग अहिज्जमाणेहि अण्णउत्थिया अट्टेहि य^० हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य^० निप्पट्ट-पसिणवागरणा करेत्तए ॥
- ३० तए ण [ते वहवे ?]^२ समणा निग्गथा य निग्गथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ट विणएण पडिसुणेति ॥
- ३१ 'तए ण से कुडकोलिए समणोवासए समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता पसिणाइ पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्टमादियइ, अट्टमादित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

- ३२ सामी वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कुडकोलियस्स धम्मजागरिया-पद

- ३३ तए ण तस्स कुडकोलियस्स समणोवासयस्स बहूहि^३ •सोल-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण^० भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छराइ

१ हता अत्थि अस्य पाठस्यानन्तरमेतावान् पाठ उलभ्यते, यथा—त धन्ने सि ण तुम जहा कामदेवो तहा पससिओ (क), त धन्नेसि ण तुम जहा कामदेवो (ख, घ); त धन्ने सि ण तुम जहा कामदेवो जाव पडिगता (ग), असौ अत्र अप्रासंगिक प्रतीयते । कामदेवाध्ययने 'त धन्नेसि ण तुम' इत्यादि वाक्यानि देवो ब्रवीति (सू० २।४०) । अत्र च भगवतो महावीरस्य सवादप्रसंगे असौ पाठोस्ति, हिन्दु कामदेवाऽध्ययने 'हता अत्थि'

इति पाठस्यानन्तर—'अज्जोति ! समणे भगव महावीरे' इति सूत्रमस्ति (सू० २।४६) अत्रापि इत्थमेव युज्यते ।

२. महावीरे वहवे (२।४६) ।

३. गिहिमज्जे वसता (क, ग), ^०वसता ण (ख, घृ) ।

४. स० पा०—अट्टेहि य जाव निप्पट्ट^० ।

५. ते वहवे समणा (२।४७) ।

६. २।४८ सूत्रस्य क्रम अस्माद् भिन्नोस्ति ।

७. स० पा०—बहूहि जाव भावेमाणस्स ।

वीइक्कंताइ । पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाड'
 •पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणरस इमेयारूवे
 अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह
 कंपिल्लपुरे नयरे बहूण जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं
 कुडुवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सच्चाएमि
 समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण
 विहरित्तए' ॥

३४. तए ण से कुडकोलिए समणोवासए जेट्टपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-
 परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख-
 मित्ता कपिल्लपुर नयर मज्झमज्जेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसह-
 साला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता
 उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दव्वभसथारय सथरेइ, सथरेत्ता
 दव्वभसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वभयारी उम्मुक्कमणि-
 सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दव्वभस्था-
 रोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय ° धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता
 ण विहरइ ॥

कुडकोलियस्स उवासगपडिमा-पदं

३५. •तए ण से कुडकोलिए समणोवासए पढम उवासगपडिम उवसपज्जित्ता ण
 विहरइ ॥
- ३६ तए ण से कुडकोलिए समणोवासए पढम उवासगपडिमं अहासुत्त अहाकप्प
 अहामग्ग अहातच्च सम्म काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
३७. तए ण से कुडकोलिए समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्च, चउत्थ,
 पचमं, छट्ठ, सत्तम, अट्ठम, नवम, दसम, एक्कारसम उवासगपडिम अहासुत्त
 अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
 आराहेइ ॥
३८. तए ण से कुडकोलिए समणोवासए इमेण एयारूवेण ओरालेणं विउलेण'

१. स० पा०—कदाइ जहा कामदेवो तथा जेट्ट-
 पुत्त ठवेत्ता तथा पोसहसालाए जाव धम्म-
 पण्णत्ति ।

२. उवा० १।१३ ।

३. उवा० १।१३ ।

४. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

५. स० पा०—एव एक्कारस उवासगपडिमाओ ।
 तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे
 जाव अत काहिइ ।

पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्टिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए ॥

कुडकोलियस्स अणसण-पद

३६. तए ण तस्स कुडकोलियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अय अज्भत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्या—एव खलु अह इमेण एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्टिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए । त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वोरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे उट्ठाणे कम्मे वले वोरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

कुडकोलियस्स समाहिमरण पदं

४०. तए ण से कुडकोलिए समणोवासए वूर्हीहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण भावेत्ता, वीस वासाइं समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्टि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते, समाहिपत्त, कालमासे काल किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिसगस्स महा-विमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे ण अरुणज्भए विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

४१. से ण भते ! कुडकोलिए ताओ देवलागाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिडक्खएण अणतरं चय चइत्ता कर्हि गमिहिइ ? कर्हि उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्जिभ्हिइ बुज्जिभ्हिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणं अत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

४२. •एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण छट्टुस्स अज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ० ॥

सत्तमं अज्भयणं

सद्दालपुत्ते

उक्खेव-पदं

१. •'जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^१ संपत्तेण सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाण छट्टस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स ण भते ! अज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

सद्दालपुत्त-पद

२. एव खलु जबू ! तेण कालेण तेणं समएण^० पोलासपुर नामं नयर । सहस्सववण उज्जाण । जियसत्तू राया ॥
३. तत्थ णं पोलासपुरे नयरे सद्दालपुत्ते नामं कुभकारे^१ आजीविओवासए^२ परिवसइ । आजीवियसमयसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ते । “अयमाउसो ! आजीवियसमए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे” त्ति^३ आजीवियसमएण अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
४. तस्स ण सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्का हिरण्णकोडी निहाणपउत्ताओ एक्का हिरण्णकोडी वड्ढिपउत्ताओ, एक्का हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ताओ, एक्के वए दसगोसाहस्सिएण वएण ॥
५. तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स अग्गिमित्ता नाम भारिया होत्था ॥
६. तस्स ण सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया पच्च कुभारावणसया^४ होत्था ॥

१. स० पा०—उक्खेवो ।

(ग); आजीवियओवासगे (घ) ।

२. ना० १।१।७ ।

५. त्ति एव (ग) ।

३. कुभकारे इड्ढे (ख) ।

६. कुभकारा^० (ख, घ) ।

४. आजीवितोवासते (क), आजीवितोवासए

७. तस्स^१ णं वहवे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्तवेयणा कल्लाकल्लि^२ वहवे करए य वारए य पिहडए^३ य घडए य अद्धघडए य कलसए य अलिजरए य जवूलए य उट्टियाओ य करेति । अण्णे य से वहवे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्तवेयणा कल्लाकल्लि^४ तेहि वहूहि करएहि य^५ •वारएहि य पिहडएहि य घडएहि य अद्धघडएहि य कलसएहि य अलिजरएहि य जवूलएहि य^६ उट्टियाहि य रायमगसि वित्ति कप्पेमाणा विहरति ॥

सद्दालपुत्तस्स देवदेसस-पद

- ८ तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अण्णदा कदाइ पच्चावरण्हकाल-समयसि^७ जेणेव असोगवणिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जिता ण विहरइ ॥
- ९ तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एकके^८ देवे अतिय पाउवभवित्था ॥
१०. तए ण से देवे अतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइ^९ •पचवण्णाइ वत्थाइ पवर^{१०} परिहिए सद्दालपुत्त आजीविओवासय एव वयासी—एहिइ^{११} ण देवाणुप्पिया ! कल्ल इह महामाहणे उप्पण्णणाणदसणवरे तीयपडुपण्णाणागग्रजाणए^{१२} अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोककचहिय^{१३}-महिय-पूइए^{१४} सदेवमणुया-सुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे^{१५} वदणिज्जे^{१६} •णमसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मगल देवय चेइय^{१७} पज्जुवासणिज्जे तच्च-कम्मसपया-सपउत्ते । त ण तुम वदेज्जाहि^{१८} •णमसेज्जाहि सक्कारेज्जाहि सम्माणेज्जाहि कल्लाण मगल देवय चेइय^{१९} पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिएण पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण उवनिमतेज्जाहि । दोच्च पि तच्च पि एव वयइ^{२०}, वइत्ता जामेव दिस^{२१} पाउवभूए, तामेव दिस पडिगए ॥

१. डा०होर्नलसपादितपुस्तके 'तत्थ' पाठो लभ्यते। १० तीयपच्चुपण्णाणागय^० (क), तीयपडुपण्णा-गय^० (ख) ।
- २ कल्लाकल्ल (क, ख, ग) ।
- ३ हेमशब्दानुशासन (१।२०१) 'पिठरे हो ११. प्राचीनलिप्या वकार-चकारयो सादृश्यात् केपुचिदादर्शेषु 'वहिय' इति पाठोपि दृश्यते ।
४. कल्लाकल्ल (ग) । १२ पूतिते (क) ।
- ५ स० पा०—करएहि य जाव उट्टियाहि । १३ × (क, ख, ग) ।
- ६ पुव्वा^० (ख, घ) । १४. स० पा०—वदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे ।
- ७ एगे (ख) । १५. स० पा०—वदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि ।
८. स० पा०—सखिखिणियाइ जाव परिहिए । १६. वयासी (ग, घ) ।
९. एहीति (क, ग), एही (ख, घ) । १७. दिसि (ख, घ) ।

सद्दालपुत्तस्स संकप्प-पदं

११. तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेण देवेण एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए च्चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एव खलु मम घम्मायरिए घम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते—से ण महामाहणे उप्पण्णणाणदसणधरे' •तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णु सव्वदरिसी तेलोक्कचहिय-महिय-पूइए सदेवमणूयामुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वदणिज्जे णमसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जे ° तच्च-कम्मसपया-सपउत्ते, से ण कल्ल इह हव्वमागच्छिस्सति । तए ण त अह वदिस्सामि' °णमसिस्सामि सक्कारेस्सामि सम्माणेस्सामि कल्लाण मगल देवय चेइय ° पज्जुवासिस्सामि पाडिहारिएण' •पीढ-फल-सेज्जा-सथारएण ° उवनिमतिस्सामि ॥

महावीर-समवसरण-पदं

१२. तए ण कल्ल' •पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियमि अह पंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास-किमुय-सुयमुह-गुजद्धरागसरिसे कमलागरसडवोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा ° जलते समणे भगव महावीरे' जाव' •जेणेव पोलासपुरे नयरे जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ° ॥

१३. परिस्ता निगया ॥

१४. °कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' °पज्जुवासइ ॥

१५. तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे—“एव खलु समणे भगवं महावीरे' •पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव पोलासपुरस्स नयरस्स वहिया सहस्सववणे उज्जाणे अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ ।” त गच्छामि ण समणं भगवं महावीरं वदामि' ° णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि

१. स० पा०—उप्पण्णणाणदसणधरे जाव तच्च-कम्मसपया ।

२. स० पा०—वदिस्सामि जाव पज्जुवासि-स्सामि ।

३. सं० पा०—पाडिहारिएण जाव उवनिमति-स्सामि ।

४. स० पा०—कल्ल जाव जलते ।

५. स० पा०—महावीरे जाव समोसरिए ।

६. ओ० सू० १६, २२ ।

७. स० पा०—जाव पज्जुवासइ ।

८. ओ० सू० ५३-६६ ।

९. स० पा०—महावीरे जाव विहरइ ।

१०. सं० पा०—वदामि जाव पज्जुवासामि ।

कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं ° पज्जुवासामि—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए'
 •कयवलिकम्मे कय-कोउय-मंगल ° पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ' •मगल्लाइ वत्थाइ
 पवर परिहिए ° अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे मणुस्सवग्गुरापारिगाए साओ'
 गिहाओ पडिणिकखमइ, पडिणिकखमित्ता पोलासपुर नयर मज्झमज्झण
 निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगव
 महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिव्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ,
 करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता' •णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्ससमाणे
 णमसमाणे अभिमुहे विणएण पंजलिउडे ° पज्जुवासइ ॥

१६ तए ण समणे भगव महावीरे सदालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य महइ'-
 •महालियाए परिसाए जाव' धम्म परिकहेइ ° ॥

महावीरस्स देवसदेस-निरूवण-पदं

१७ सदालपुत्ताइ' । समणे भगव महावीरे सदालपुत्त आजीविओवासय एव
 वयासी - से नूण सदालपुत्ता । कल्ल तुम पच्चावरण्हकालसमयसि' जेणेव
 असोगवणिया', •तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स
 अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण ° विहरसि । तए ण तुवभं एगे देवे अतिय
 पाउवभवित्था ।

तए ण से देवे अतलिकखपडिवण्णे'° •सखिखिणियाइ पचवण्णाइ वत्थाइ पवर
 परिहिए तुमं ° एव वयासी— हभो । सदालपुत्ता' । •एहिइ ण देवाणुप्पिया ।
 कल्ल इह महामाहणे जाव' तच्च-कम्मसपया-सपउत्ते । तं ण तुम वदेज्जाहि
 णमसेज्जाहि सक्कारेज्जाहि सम्माणेज्जाहि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवा-
 सेज्जाहि, पाडिहारिएण पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण उवनिमतेज्जाहि । दोच्च
 पि तच्च पि एव वयइ, वइत्ता जामेव दिस पाउवभूए, तामेव दिस पडिगए ।

तए ण तुवभ तेण देवेण एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए
 पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पण्णे—एव खलु मम धम्मायरिए धम्मोवएसए
 गोसाले मखलिपुत्ते—से ण महामाहणे जाव' तच्च-कम्मसपया-सपउत्ते, से ण

१. स० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

८ पुव्वा ° (ख, घ) ।

२ म० पा०—सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा ।

९ स० पा०—असोगवणिया जाव विहरसि ।

३. सयाओ (घ) ।

१० स० पा०—अतलिकखपडिवण्णे एव वयासी ।

४ स० पा०—णमसित्ता जाव पज्जुवासइ ।

११ स० पा०—सदालपुत्ता त चेव सव्व जाव

५ स० पा०—महइ जाव धम्मकहा समत्ता ।

पज्जुवासित्तामि ।

६. ओ० सू० ७१-७७ ।

१२. उवा० ७।१० ।

७. °दि (ग) ।

१३ उवा० ७।११ ।

कल्ल इह ह्व्वमागच्छिस्सति । तए ण तं अह वदिस्सामि णमसिस्सामि सक्का-
रेस्सामि सम्माणेस्सामि कल्लाण मगल देवय चेइयं पज्जुवासिस्सामि, पाडिहारि-
एण पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण उवनिमतिस्सामि ० । से नूण सद्दालपुत्ता ।
अट्टे समट्टे ?

हता अत्थि ।

त नो खलु सद्दालपुत्ता । तेण देवेण गोसालं मखलिपुत्त पणिहाय एवं वुत्ते ॥

सद्दालपुत्तस्स निवेदण-पदं

१८ तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासयस्स समणेण भगवया महावीरेण
एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
समुप्पण्णे - एस ण समणे भगव महावीरे महामाहणे उप्पण्णणाणदसणघरे'
•तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णु सव्वदरिसी तेलोक्क-
चहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वदणिज्जे
णमसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवास-
णिज्जे ० तच्च-कम्मसपया-सपउत्ते । त सेयं खलु मम समण भगवं महावीर
वदित्ता णमसित्ता पाडिहारिएण पीढ-फलग^३ •सेज्जा-सथारएण ० उवनिमंते-
त्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समण भगवं महावीरं वंदइ
णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—एव खलु भते । मम पोलासपुरस्स
नयरस्स वहिया पच्च कुभारावणसया । तत्थ ण तुब्भे पाडिहारियं पीढ^१-•फलग-
सेज्जा ०-सथारय ओगिण्हित्ता^२ णं विहरह ॥

महावीरेण सद्दालपुत्त-संबोधण-पदं

१९. तए ण से समणे भगव महावीरे सद्दालपुत्तस्स अजीविओवासगस्स एयमट्ट
पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स 'पच्चसु, कुभारावण-
सएसु'^४ फासु-एसणिज्ज पाडिहारियं पीढ-फलग^५-•सेज्जा ०-सथारय ओगिण्हित्ता
ण विहरइ ॥

२० तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अण्णदा कदाइ वाताहतय^६ कोलालभड
अतो सालाहितो वहिया नीणेइ, नीणेत्ता आयवसि^७ दलयइ ॥

१. स० पा०—उप्पण्णणाणदसणघरे

जाव

५. पच्चकुभ ० (ख, घ) ।

२. तच्चकम्मसपया ।

६. स० पा०—फलग जाव सथारय ।

३. स० पा०—पीढ-फलग जाव उवनिमंतेत्तए ।

७ वायाहतय (क, ग); वायाहययं (ख) ।

४. स० पा०—पीढ जाव मयारय ।

८. आतपसि (ख) ।

५. तुगिण्हित्ता (क) ।

२१. तए णं समणे भगव महावीरे सदालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—
सदालपुत्ता । एस णं कोलालभंडे कहं कतो ?
२२. तए ण से सदालपुत्ते आजीविओवासए समण भगव महावीरं एवं वयासी—
एस ण भते ! पुंवि मट्टिया आसी, तओ पच्छा उदएणं तिम्मिज्जइ^१,
तिम्मिज्जिता छारेण य करिसेण य एगयओ मीसिज्जइ, मीसिज्जिता चक्के
आरुभिज्जति^२, तओ वहवे करगा य^३ •वारगा य पिहडगा य घडगा य अद्ध-
घडगा य कलसगा य अलिजरगा य जबूलगा य^४ उट्टियाओ य कज्जति ॥
२३. तए ण समणे भगव महावीरे सदालपुत्त आजीविओवासय एव वयासी—
सदालपुत्ता । एस ण कोलालभंडे कि उट्टाणेण^५ •कम्मेण वलेण वीरिएण^६
पुरिसक्कार-परक्कमेण कज्जति, उदाहु अणुट्टाणेण^७ •अकम्मेण अवलेण अवीरि-
एण^८ अपुरिसक्कारपरक्कमेण कज्जति ?
२४. तए ण से सदालपुत्ते आजीविओवासए समण भगव महावीर एव वयासी—
भते ! अणुट्टाणेण^९ •अकम्मेण अवलेण अवीरिएण^{१०} अपुरिसक्कारपरक्कमेण ।
नत्थि उट्टाणे इ वा^{११} •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा^{१२} पुरिसक्कार-
परक्कमे इ वा, नियता सव्वभावा ॥
२५. तए ण समणे भगव महावीरे सदालपुत्त आजीविओवासय एव वयासी—
सदालपुत्ता । जइ ण तुंभ केइ पुरिसे वाताहत वा पक्केल्लय वा कोलालभंड
अवहरेज्ज^{१३} वा विक्खरेज्ज वा भिदेज्ज वा अच्चिदेज्ज^{१४} वा परिट्टवेज्ज वा,
अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरेज्जा,
तस्स ण तुम पुरिसस्स क^{१५} दड वत्तेज्जासि ?
भते ! 'अह ण'^{१६} त पुरिस आओसेज्ज वा हणेज्ज वा वधेज्ज वा महेज्ज^{१७} वा

१. × (क, ख, ग) प्रायो बहुषु आदर्शेषु केवल
'कतो' पाठो लभ्यते, उत्तरसूत्रे 'कज्जति'
इति प्रयोगो विद्यते, तेन प्रश्नसूत्रे 'कह कतो'
इति पाठो उपयुज्यते ।
२. नमिज्जइ (ख), तिमिज्जइ (ग), निमिज्जइ
(घ); आर्द्धीकरणार्थे 'तिम्म' घातुविद्यते ।
तेन 'तिम्मिज्जइ' पाठो स्वीकृतः । 'त-न'
वर्णयो प्राचीनलिप्या सादृश्येन परिवर्तन
जातमिति प्रतीयते ।
३. आरोहिज्जइ (ख), आरुहिज्जति (घ) ।
४. सं० पा०—करगा य जावं उट्टियाओ ।
५. सं० पा०—उट्टाणेण जाव पुरिसक्कार ।
६. सं० पा०—अणुट्टाणेण जाव अपुरिसक्कार ।
७. सं० पा०—अणुट्टाणेण जाव अपुरिसक्कार ।
८. सं० पा०—उट्टाणे इ वा जाव पुरिसक्कार ।
९. 'ख, ग' प्रत्यो 'ज्ज' स्थाने सर्वत्र 'ज्जा'
विद्यते ।
१०. विच्छदेज्ज (वृषा) ।
११. किं (ख, घ) ।
१२. अहण्ण (ग, घ) ।
१३. गहेज्ज (ग) ।

तज्जेज्ज वा तालेज्ज वा निच्छोडेज्ज वा निव्वच्छेज्ज वा, अकाले चैव जीवि-
याओ ववरोवेज्जा ॥

२६ सद्दालपुत्ता । नो खलु तुव्वं केइ पुरिसे वाताहत वा पक्केल्लय^१ वा कोलाल-
भड अवहरइ वा^२ •विक्खिरइ वा भिदइ वा अर्च्छिदइ वा^३ परिट्टुवेइ वा,
अग्गिमित्ताए भारियाए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ; नो
वा तुम त पुरिस आओसेसि^४ वा हणेसि वा^५ •वंधेसि वा महेसि वा तज्जेसि
वा तालेसि वा निच्छोडेसि वा निव्वच्छेसि वा^६ अकाले चैव जीवियाओ
ववरोवेसि, जइ नत्थि उट्टाणे इ वा^७ •कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा
पुरिसक्कार^८-परक्कमे इ वा, नियता^९ सव्वभावा । 'अह ण'^{१०} तुव्वं केइ पुरिमे
वाताहत वा^{११} पक्केल्लय वा कोलालभड अवहरेइ वा विक्खिरेइ वा भिदेइ वा
अर्च्छिदेइ वा^{१२} परिट्टुवेइ वा, अग्गिमित्ताए वा^{१३} •भारियाए सद्धि विउलाइं
भोगभोगाइ भुजमाणे^{१४} विहरइ, तुम वा त पुरिसं आओसेसि वा^{१५} •हणेसि
वा वंधेसि वा महेसि वा तज्जेसि वा तालेसि वा निच्छोडेसि वा निव्वच्छेसि
वा, अकाले चैव जीवियाओ^{१६} ववरोवेसि, तो ज वदसि नत्थि उट्टाणे इ वा^{१७}
•कम्मे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा^{१८}, नियता
सव्वभावा, त ते मिच्छा ॥

२७. एत्थ ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए सबुद्धे ॥

सद्दालपुत्तस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद

२८ तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समण भगव महावीर वंदइ णमसइ,
वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुव्वं अंतिए धम्म निसा-
मेत्तए ॥

२९ तए ण समणे भगव महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तोसे य
महइमहालियाए परिसाए जाव^{१९} धम्म परिकहेइ ॥

३० तए ण से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए
धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु^{२०} •चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए

१ पक्कोल्लय (ग, घ) ।

२. सं० पा०—अवहरइ वा जाव परिट्टुवेइ ।

३ आतोसमि (क, ग) ।

४. सं० पा०—हणेसि वा जाव अकाले ।

५ सं० पा०—उट्टाणे इ वा जाव परक्कमे ।

६. निऱिया (क); णितिया (ग) ।

७. अहण्ण (क, ग, घ) ।

८. सं० पा०—वाताहत वा जाव परिट्टुवेइ ।

९ म० पा०—अग्गिमित्ताए वा जाव विहन्इ ।

१० सं० पा०—आओसेसि वा जाव ववरोवेसि ।

११. सं० पा०—उट्टाणे इ वा जाव नियता ।

१२. ओ० सू० ७१-७७ ।

१३. सं० पा०—हट्टुत्तु जाव हियए जहा आणदो

तहा गिहिधम्म पडिवज्जइ, नवर एगा

हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगव महावीरं
 तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता
 एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भते ! निग्गथ
 पावयण, रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्टेमि ण भते ! निग्गथं
 पावयण । एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेयं भते ! असदिद्धमेय भते !
 इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से
 जहेय तुब्भे वदह । जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए बह्वे राईसर-तलवर-माड-
 विय-कोडुविय-इठभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ
 अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तथा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ
 अणगारिय पव्वइत्तए । अह ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खा-
 वइय—दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवध करेहि ॥

३१ तए ण से सद्वालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए' पंचाणुव्वइय
 सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता° समण
 भगव महावीरं वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता जेणेव पोलासपुरे नयरे^१,
 जेणेव सए गिहे, जेणेव अग्गिमित्ता भारिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
 अग्गिमित्तं भारियं एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए^१ ! •मए समणस्स
 भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मे निसते । से वि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए
 अभिरुइए° । त गच्छाहि ण तुम समण भगव महावीर वदाहि^२ •णमसाहि
 सक्कारेहि सम्माणेहि कल्लाणं मगल देवय चेइय •पज्जुवासाहि, समणस्स
 भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविहं
 गिहिधम्म^३ पडिवज्जाहि ॥

३२ तए ण सा अग्गिमित्ता भारिया सद्वालपुत्तस्स समणोवासगस्स तह त्ति एयमट्ठं
 विणएण पडिसुणेइ ॥

हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा हिरण्णकोडी
 वड्ढिउत्ता एगा हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ता
 एगे वए दसगोसाहस्सिएण जाव ममण ।

१. पू०—उवा० १।२४-४५ ।

२ नयरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोला-
 सपुर नयर मज्झमज्जेण (क, ख, ग, घ),
 प्रथमाध्ययनस्य ४५ सूत्रानुसारेण असौ पाठ
 अनावश्यकः प्रतिभाति । नास्यार्थसगतिरपि
 विद्यते ।

३. स० पा०—देवाणुप्पिए समणे भगव महावीरे
 जाव समोसढे त । अस्य पाठस्य पूर्तिः
 प्रथमाध्ययनस्य ४५ सूत्रेण जायते । तत्र
 'समणे भगव महावीरे जाव समोसढे' एता-
 द्दश पाठो नास्ति । संभवत पाठस्य सक्षेपी-
 करणे किञ्चित् परिवर्तनं जातम् ।

४. स० पा०—वदाहि जाव पज्जुवासाहि ।

५. गिधिधम्म (ग) ।

अग्निमित्ताए वंदणट्ट-गमण-पद

- ३३ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए कोडुवियपुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो । देवाणुप्पिया । लहुकरणजुत्त-जोइयं^१ समखुरवालि-हाण-समलिहियसिगएहि जवूणयामयकलावजुत्त-पइविसिट्टएहि रययामयघंट-सुत्तरज्जुग-वरकंचणखचियं-नत्थपग्गहोग्गहियएहि^२ नीलुप्पलकयामेलएहि^३ पवरगोणजुवाणएहि नाणामणिकणग-घटियाजालपरिगय सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइयनिम्मिय पवरलक्खणोववेय जुत्तामेव धम्मिय जाणप्प-वर उवट्टवेह, उवट्टवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥
३४. तए ण ते कोडुवियपुरिसा •सद्दालपुत्तेण समणोवासएण एवं वुत्ता समाणा हट्टतुट्ट-चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिगहियं सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एवं सामि । त्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइय जाव^४ धम्मिय जाणप्पवर उवट्टवेत्ता तमाणत्तिय ° पच्चप्पिणति ॥
- ३५ तए णं सा अग्निमित्ता भारिया ण्हाया^५ •कयवलिकम्मा कय-कोउय-मगल ° पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइ^६ •मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया ° अप्पमहग्घा-भरणालकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मिय जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोलासपुर नयरं मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्प-वराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिकखुतो^७ •आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ° वंदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे^८ •सुस्सुसमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं ° पंजलियडा^९ ठिइया चैव पज्जुवासइ ॥
- ३६ तए णं समणे भगवं महावीरे अग्निमित्ताए तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव^{१०} धम्म परिकहेइ ॥

१ पुस्तकान्तरे यानवर्णको दृश्यते (वृ) ।

२. ° खडय (ख) ।

३ नत्थापग्गहो° (ख, ग) ।

४. ° कयामलएहि (ख), ° कयमालएहि (ग) ।

५ सं°पा°—कोडुवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणति ।

६ उवा° १।४७ ।

७. सं° पा°—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

८. सं° पा°—सुद्धप्पावेसाइ जाव अप्प-महग्घा° ।

९ सं° पा°—तिकखुत्तो जाव वदइ ।

१०. सं° पा°—णाइदूरे जाव पजलियडा ।

११. पजलिउडा (ख, घ) ।

१२. ओ° सू° ७१-७७ ।

अग्गिमित्ताए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

३७ तए ण सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अत्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु^१ •चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता^२ समण भगव महावीर तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते । निग्गथ पावयण^३, •पत्तियामि ण भते । निग्गथ पावयण, रोएमि ण भते । निग्गथ पावयण, अब्भुट्टेमि ण भते ! निग्गथ पावयण । एवमेय भते । तहमेय भते । अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छियमेय भते । पडिच्छियमेय भते । इच्छिय-पडिच्छियमेय भते । से^४ जहेय तुब्भे वदह । जहा ण देवाणुप्पियाण अत्तिए वहवे उग्गा भोगा^५ •राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई अण्णे य वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इवभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय^६ पव्वइया नो खलु अह तहा सचाएमि देवाणुप्पियाण अत्तिए मुडा भवित्ता^७ •अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए^८ । अह ण देवाणु-प्पियाणं अत्तिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जिस्सामि^९ ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवधं करेहि ॥

३८. तए ण सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अत्तिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता तमेव धम्मिय जाणप्पवर दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिस पाउव्वभूया, तामेव दिस पडिगया ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

३९ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ पोलासपुराओ नगराओ सहस्सववणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवय-विहार विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स समणोवासग-चरिया-पदं

४० तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे^१ जाव^२ •समणे

१. स० पा०—हट्टुत्तुत्ता समण ।

५. पडिवज्जामि (क, ख, ग, घ) ।

२ स० पा०—पावयण जाव जहेय ।

६ स० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ ।

३ स० पा०—भोगा जाव पव्वइया ।

७ उवा० १।५५ ।

४. स० पा०—भवित्ता जाव अह ।

निग्गथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

अग्गिमित्ताए-समणोवासिय-चरिया-पदं

४१ तए ण सा अग्गिमित्ता भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव' समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कबल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएणं पडिलाभेमाणी० विहरइ ॥

गोसालस्स आगमण-पदं

४२ तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे—एव खलु सद्दालपुत्ते आजीवियसमय वमित्ता समणाणं निग्गथाण दिट्ठि पवण्णे^१, तं गच्छामि णं सद्दालपुत्त आजीविओवासय समणाणं निग्गथाणं दिट्ठि वामेत्ता पुणरवि आजीवियदिट्ठि गेण्हावित्तए त्ति कट्टु—एव सपेहेइ, संपेहेत्ता आजीवियसघ-परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे, जेणेव आजीवियसभा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडगनिक्खेव करेइ, करेत्ता कतिवएहि' आजीविएहि सद्धि जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

४३ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसाल मंखलिपुत्त एज्जमाण पासइ, पासित्ता नो आढाति' नो परिजाणति', अणाढामाणे' अपरिजाणमाणे तुसिणीए सच्चिइ ॥

गोसालेण महावीरस्स गुणकित्तण-पदं

४४ तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तेण समणोवासएण अणाढिज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे पीढ-फलग-सेज्जा-सथारट्टयाए समणस्स भगवओ महा-वीरस्स गुणकित्तणं करेइ"—आगए ण देवाणुप्पिया ! इह महामाहणे ?

४५ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—के ण देवाणुप्पिया ! महामाहणे ?

तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—समणे भगव महावीरे महामाहणे ।

१. उवा० १।५६ ।

२. पडिवण्णे (क, घ) ।

३. कतिवतेहि (क); कइवएहि (ख, घ) ।

४. अढाति (क, ग) ।

५. परिजाणाति (घ) ।

६. अणाढामीणे (क); अणाढायमाणे (ख, घ) ।

७. करेमाणे सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी (क्व) ।

से केणट्टेण देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महामाहणे ?
 एव खलु सद्दालपुत्ता ! समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पण्णणाणदसणघरे'
 •तीयप्पडुपण्णणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्ण सव्वदरिसी तेलोक्क-
 च्चहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वदणिज्जे
 नमसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवास-
 णिज्जे० तच्च-कम्मसपया-सपउत्ते । से तेणट्टेण देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—
 समणे भगव महावीरे महामाहणे ॥

४६ आगए ण देवाणुप्पिया ! इह महागोवे ?

के ण देवाणुप्पिया ! महागोवे ?

समणे भगव महावीरे महागोवे ।

से केणट्टेण देवाणुप्पिया ! •एव वुच्चइ -समणे भगव महावीरे० महागोवे ?
 एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे ससाराडवीए बह्वे जीवे
 नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे
 धम्ममएण दडेण सारक्खमाणे सगोवेमाणे निव्वाणमहावाड साहत्थि सपावेइ ।
 से तेणट्टेण सद्दालपुत्ता ! एव वुच्चइ -समणे भगव महावीरे महागोवे ॥

४७ आगए^१ ण देवाणुप्पिया ! इह महासत्थवाहे ?

के^२ ण देवाणुप्पिया ! महासत्थवाहे ?

सद्दालपुत्ता ! समणे भगव महावीरे महासत्थवाहे ।

से केणट्टेण देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—समणे भगव महावीरे महासत्थवाहे ?
 एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे ससाराडवीए बह्वे जीवे
 नस्समाणे विणस्समाणे^३ •खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे०
 विलुप्पमाणे उम्मगपडिवण्णे^४ धम्ममएण^५ पथेण^६ सारक्खमाणे निव्वाणमहा-
 पट्टणे^७ साहत्थि सपावेइ । से तेणट्टेण सद्दालपुत्ता ! एव वुच्चइ—समणे भगव
 महावीरे महासत्थवाहे ॥

४८ आगए^{१०} ण देवाणुप्पिया ! इह महाधम्मकही ?

१ स० पा०—उप्पण्णणाणदसणघरे जाव महि-
 यपूइए जाव तच्च ।

२ स० पा०—देवाणुप्पिया जाव महागोवे ।

३. आगदे (क) ।

४ से के (क, ख, ग, घ) ।

५ स० पा०—विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे ।

६. X (क) ।

७. धम्ममतेण (क, ग) ।

८ पथेणं (घ) ।

९. निव्वाणमहापट्टणाभिमुहे (ख, घ) ।

१० महासार्थवाहालापकानन्तरं पुस्तकान्तरे
 इदमपरमधीयते—वृत्तावस्योल्लेखस्यानुसारेण
 'महाधम्मकही' इत्यालापक पाठान्तररूपेण
 स्वीकृतोऽस्ति ।

के^१ ण देवाणुप्पिया ! महाधम्मकही ?

समणे भगव महावीरे महाधम्मकही ।

से केणट्टेण देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगव महावीरे महाधम्मकही ?

एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे महइमहालयसि ससारंसि वहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवण्णे सप्पहविप्पणट्टे मिच्छत्तवलाभिभूए अट्टविहकम्म-
तमपडल^२-पडोच्छण्णे वहूहि अट्टेहि य^३ •हेऊहि य प्सिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ट-पसिण^४ वागरणेहि य चाउरताओ ससारकताराओ साहत्थि नित्थारेइ । से तेणट्टेण देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—समणे भगव महावीरे महाधम्मकही ॥

४६ आगए ण देवाणुप्पिया ! इह महानिज्जामए ?

के^५ णं देवाणुप्पिया ! महानिज्जामए ?

समणे भगव महावीरे महानिज्जामए ।

से केणट्टेण^६ •देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—समणे भगव महावीरे महानिज्जामए ? °

एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे ससारमहासमुद्वे वहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे^७ •खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे ° विलुप्पमाणे बुड्डमाणे निवुड्डमाणे उप्पियमाणे^८ धम्ममईए^९ नावाए निव्वाण-
तीराभिमुहे साहत्थि सपावेइ । से तेणट्टेण देवाणुप्पिया ! एव वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए ॥

विवाद-पट्टवणा-पसिण-पदं

५०. तए ण से सहालपुत्ते समणोवासए गोसाल मखलिपुत्तं एव वयासी—तुब्भे^{१०} ण देवाणुप्पिया ! इयच्छेया^{११} इयदच्छा इयपट्टा^{१२} इयनिउणा इयनयवादी इयउव-
एसलद्धा^{१३} इयविण्णाणपत्ता । पभू ण^{१४} तुब्भे मम धम्मायरिएण धम्मोवएसएण समणेण भगवया महावीरेण सद्धि विवाद करेत्तए ?
नो इणट्टे समट्टे ।

१. से के (क, ख, ग, घ) ।

२. पडल (क) ।

३. स० पा०—अट्टेहि य जाव वागरणेहि ।

४. से के (क, ख, घ) ।

५. स० पा०—केणट्टेण एव ।

६. स० पा०—विणस्समाणे जाव-विलुप्पमाणे ।

७. उप्पियमाणे (क) ।

८. धम्ममतीते (क, ग) ।

९. तुब्भ (ग) ।

१०. इयच्छेयाओ (ख) ।

११. इयपत्तट्टा (वृपा) ।

१२. अस्यानन्तर वृत्तौ 'इयमेधाविणो' अस्य पाठान्तरस्य उल्लेखोस्ति ।

१३. ण भंते ! (क, ग) ।

से केणट्टेण देवाणुप्पिया । एव वुच्चइ—नो खलु पभू तुब्भे मम धम्मोयारिएण'
 •धम्मोवएसएण समणेणं भगवया° महावीरेण सद्धि विवाद करेत्तए ?
 सद्दालपुत्ता । से जंहानामए केइ पुरिसे तरुणे जुगव' •बलव अप्पायके
 थिरग्गहत्थे पडिपुण्णपाणिपाए पिट्ठतरोरुसघायपरिएण घणनिचियवट्टवलिय-
 खघे लघण-वग्गण-जयण-वायाम-समत्थे चम्मेट्ट-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचिय-
 गत्ते उरस्सवलसम्मन्नागए तालजमलजुयलबाहू छेए दक्खे पत्तट्टे° निउणसिप्पो-
 वगए एग मह अय वा एलय वा सूयर वा कुक्कुड वा तित्तर' वा वट्टय वा लावय
 वा कवोय वा कविजल' वा वायस वा सेणय' वा, हत्थसि वा पायसि वा
 खुरसि वा पुच्छसि वा पिच्छसि वा सिगसि वा विसाणसि वा रोमसि वां
 जहि-जहि गिण्हइ, तहि-तहि निच्चलं निप्पद' करेइ', एवामेव' समणे भगवं
 महावीरे मम वहूहि अट्टेहि य हेऊहि यं •पसिणेहि यं कारणेहि यं वागरणेहि
 य जहि-जहि गिण्हइ, तहि-तहि निप्पट्ट-पसिणवांगरणं करेइ । से तेणट्टेणं सद्दाल-
 पुत्ता । एव वुच्चइ—नो खलु पभू अह तव धम्मोयारिएण'° •धम्मोवएसएणं
 समणेण भगवया° महावीरेणं सद्धि विवाद करेत्तए ॥

५१. तए ण से सद्दालपुत्ते । समणोवासए गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—जम्हा
 ण 'देवाणुप्पिया । तुब्भे'' मम धम्मोयारिस्स'° •धम्मोवएसगस्स समणस्स
 भगवओ° महावीरस्स सतेहि तच्चेहि तहिंएहि सब्भूएहि भावेहि गुणकित्तण
 करेह'', तम्हा ण अह तुब्भे पाडिहारिएण पीढ''-•फलग-सेज्जा°-सथारएण
 उवनिमतेमि, नो चेव ण धम्मो त्ति वा तवो त्ति वा । त गच्छह ण तुब्भे मम
 कुभारावणेसु पाडिहारिय पीढ-फलग''-•सेज्जा-सथारय° ओगिण्हत्ता णं''
 विहरह ॥

५२. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स एयमट्ट पडिसुणेइ,

१ स० पा०—धम्मोयारिएण जाव महावीरेण ।

२. स० पा०—जुगव जाव निउणसिप्पोवगए ।

३ तित्तर (घ) ।

४. कविजलि (घ) ।

५. सण्ह (क), सेणय (ख) ।

६. निप्पद (क) ।

७. घरेइ (क, ख, ग) ।

८. एवमेव (ख, ग) ।

९ सं० पा०—हेऊहि य जाव वागरणेहि ।

१०. स० पा०—धम्मोयारिएण जाव महावीरेण ।

११. तुब्भे देवाणुप्पिया (क) ।

१२ स० पा०—धम्मोयारिस्स जाव महावीरस्स ।

१३ करेसि (ख) ।

१४. स० पा०—पीढ जाव सथारएण ।

१५ स० पा०—फलग जाव ओगिण्हत्ता ।

१६. ण उवसपज्जित्ता ण (क, ख, ग, घ) ।

पडिसुणेत्ता कुभारावणेमु पाडिहारिय पीढ'-●फलग-सेज्जा-सथारय ° ओगि-
ण्हित्ता णं विहरइ ॥

५३ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सद्दालपुत्त समणोवासय जाहे नो सचाएइ व्हूहि
आघवणाहि य पणवणाहि य सणवणाहि य विणवणाहि य निग्गंथाओ
पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे संते तते
परित्ते पोलासपुराओ नयराओ पडिणक्खमइ, पडिणक्खमित्ता व्हिया
जणवयविहार विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया-पदं

५४ तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स व्हूहिं सील'-●व्वय-गुण-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण ° भावेमाणस्स चोदस सवच्छरा वीइ-
क्कता । पणरसमस्स सवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स 'अण्णदा कदाइ'
पुव्वरत्तावरत्तकाल'-●समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झ-
त्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह पोलासपुरे
नयरे व्हूण जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स
मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेणं वक्खेवेणं अह नो संचाएमि समणस्स
भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ॥

५५ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाड-नियग-सयण-सवंधि-परिजणं
च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणक्खमइ, पडिणक्खमित्ता
पोलासपुरं नयर मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवण-
भूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दव्वभसथारयं सथरेइ, संथरेत्ता दव्वभसथारयं दुसहइ,
दुसहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वभयारी उम्मक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-
वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दव्वभसथारोवगए ° समणस्स
भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता ण विहरइ ॥

१. सं० पा०—पीढ जाव ओगिण्हित्ता ।

२. विपरिणावित्तए (ग) ।

३. सं० पा०—सील जाव भावेमाणस्स ।

४. × (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसह-
सालाए समणस्स । संक्षेपीकरणपद्धती प्रायो
नैकरूपता लभ्यते । क्वचित् 'जाव' शब्दा-
नन्तर सक्षिप्तपाठस्य अन्तिमशब्दो निविश्यते

क्वचित्च पूर्ववर्तिशब्द. । अत्रापि इत्यमेव
विद्यते । तेन द्वितीयाव्ययनस्याधारेणात्र
'दव्वभसथारोवगए' इति पर्यन्त पाठ पूरित. ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

८. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

९. धम्म (क) ।

सद्दालपुत्तस्स देवरूढ-कय-उवसग्ग-पदं

५६. तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अतिय पाउव्वभित्था ॥

० जेट्ठपुत्त

५७ तए ण से देवे एगं मह नीलुप्पल^१-●गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगास खुरधार अस्सि गहाय सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया ! दुरत-पत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्द-सिया ! सिरि-हिरि-घिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकखिया ! पुण्णकखिया ! सग्गकखिया ! मोक्खकखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पड तव देवाणुप्पिया ! सीलाइ वयाइ वेरम-णाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खडित्तए वा भजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, त जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जेट्ठपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिणय आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

५८ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असभते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

५९ तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय अभीय अतत्थ अणुव्विग्ग अखुभिय अचलिय असभंत तुसिणीय धम्मज्झाणोवगय विहरमाण पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव^२ जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खा-णाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जेट्ठपुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिणय आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

१. स० पा०—नीलुप्पल एव जहा चुलणीपियस्स तहेव देवो उवसग्गं करेइ नवर एक्केक्के पुत्ते नव मससोल्लए करेइ जाव कणीयस

घाएइ, २ ता जाव आइचइ ।

२. उवा० २।२२ ।

५०६

६०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेण देवेण दोच्चं पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
६१. तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय अभीय जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचइ ॥
- ६२ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए त उज्जल विउल कक्कस पगाढं चड दुक्ख दुरहियास वेयण सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

० मज्झिमपुत्त

- ६३ तए ण से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीय जाव' पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासय एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्ढेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज मज्झिम पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
- ६४ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
- ६५ तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइं पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्ढेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिम पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
- ६६ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेण देवेणं दोच्चं पि तच्च पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

७. उवा० २।२२ ।

८. उवा० २।२३ ।

- ६७ तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय अभीय जाव^१ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स मज्झिम पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवास-यस्स गाय मसेण य सोणिएण य आइचइ ॥
- ६८ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए त उज्जल जाव^१ वेयणं सम्म सहइ खमइ तित्तिक्खइ अहियासेइ ॥

० कणीयसपुत्त

६९. तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय अभीय जाव^१ पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव^१ जइ ण तुम अज्ज सीलाइं वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज कणीयसं पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडा-हयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
७०. तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेण देवेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^१ विहरइ ॥
७१. तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय अभीयं जाव^१ पासइ, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणो-वासया ! जाव^१ जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
- ७२ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेण देवेण दोच्च पि तच्चं पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव^१ विहरइ ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२७ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

७. उवा० २।२२ ।

८. उवा० २।२३ ।

- ७३ तए ण से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय अभीय जाव' पासड, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसीमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स कणीयस पुत्त गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गाय मसेण य सोणिण्ण य० आइच्चइ ॥
७४. तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए त उज्जल जाव' वेयण सम्म सहइ खमड तित्तिक्खइ अहियासेइ ॥

० अग्गमित्ताभारिया

- ७५ तए णं से देवे सद्दालपुत्त समणोवासय अभीयं जाव' पासड, पासित्ता चउत्थ पि सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया' । जाव' •जइ ण तुमं अज्ज सीलाइं वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइ न छड्ढेसि० न भजेसि, 'तो ते'० अह अज्ज जा इमा अग्गमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, त' साओ' गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्लए करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचामि, जहा ण तुमं अट्ट-दुहट्ट'०-•वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ० ववरोविज्जसि ॥
- ७६ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेण देवेण एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
- ७७ तए ण से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासय अभीय जाव' पासड, पासित्ता दोच्च पि तच्च पि सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणो-

१. उवा० २।२४ ।

२ पूर्ववर्ति क्रमानुसारेण (३।३८) स्वीकृत सूत्र-मत्र युज्यते, किन्तु आदर्शेषु नास्य सकेत प्राप्तोस्ति । सभवतः सक्षेपीकरणे परित्यक्त-मिदमभूत् । अस्य स्थाने आदर्शेषु निम्नप्रकार सूत्र लभ्यते—'तए ण से सद्दालपुत्ते समणो-वासए अभीए जाव विहरइ' । नैतद् अत्र उपयुक्तमस्ति ।

३. उवा० २।२७ ।

४. उवा० २।२४ ।

५ स० पा०—समणोवासिया अप्पत्थियपत्थिया जाव न भजसि ।

६. उवा० २।२२ ।

७ तओ (क, ख, ग, घ) ।

८. त ते (क, ख, ग, घ) ।

९. × (क, ख, ग, घ) ।

१०. स० पा०—दुहट्ट जाव ववरोविज्जसि ।

११. उवा० २।२३ ।

१२ उवा० २।२४ ।

वासया^१ । •जाव^२ जइ ण तुम अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइ न छडेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविडज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता तव गाय मसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ° ॥

सद्दालपुत्तस्स कोलाहल-पद

७८ तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स तेण देवेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्तस्स समाणस्स अय अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था^३—•अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियवुद्धी अणारियाइ पावाइ कम्माइ समाचरति, ° जे ण मम जेट्टं पुत्त, जे णं ममं मज्झिमय पुत्तं, जेण मम कणीयस पुत्तं •साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अट्टेइ, अट्टेत्ता मम गाय मसेण य सोणिएण य ° आइचइ, जा वि य णं मम इमा अग्गिमित्ता भारिया^४ •धम्मसहाइया धम्मविडज्जिया धम्माणुरागरत्ता ° समसुहदुक्खसहाइया^५, त पि य इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए । त सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हत्तए त्ति कट्टु उद्धाविए^६, •से वि य आगासे उप्पइए, तेण च खभे आसाइए, महया-महया सट्टेण कोलाहले कए ॥

अग्गिमित्ताए पसिण-पदं

७९ तए ण सा अग्गिमित्ता भारिया त कोलाहलसट्ट सोच्चा निसम्म जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया । तुब्भे ण महया-महया सट्टेण कोलाहले कए ?

सद्दालपुत्तस्स उत्तर-पदं

८०. तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए अग्गिमित्त भारिय एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए

१ स० पा०—समणोवासया त चेव भणइ ।

२ उवा० २।२२ ।

३ स० पा०—समुप्पज्जित्था एव जहा चुलणी-पिया तहेव चित्तेइ ।

४. स० पा०—पुत्त जाव आइचइ ।

५. स० पा०—भारिया जाव सम ° ।

६ ममसुहदुक्ख ° (ख) ।

७ स० पा०—उद्धाविए जहा चुलणीपिया तहेव सव्व भाणियव्व । नवर अग्गिमित्ता भारिया कोलाहलं सुणित्ता भणइ । सेस जहा चुलणी-पिया वत्तव्वया सव्वा नवर अरुणच्चए विमाणे उववातो जाव महाविदेहे ।

मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं
 अंसि गहाय ममं एव वयासी—हभो । सद्दालपुत्ता । समणोवासया । जाव'
 जइ ण तुम अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न
 छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अह अज्ज जेट्टुपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता
 तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि
 कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मसेण य सोणिण्ण य आइचामि,
 जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं
 अह तेणं पुरिसेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि । तए ण से पुरिसे
 मम अभीय जाव' पासइ, पासित्ता ममं दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—
 हभो । सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइं वयाइ
 वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अह अज्ज
 जेट्टुपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव
 मससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव
 गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचामि, जहा ण तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले
 चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एव वुत्ते समाणे अभीए जाव'
 विहरामि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए
 चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्टुपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ
 घाएइ, घाएत्ता नव मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि
 अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गाय मसेण य सोणिण्ण य आइचइ ।

तए णं अह त उज्जल जाव' वेयणं सम्म सहामि खमामि तित्तिक्खामि
 अहियासेमि ।

एव मज्झिम पुत्त जाव' वेयण सम्म सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि ।

एवं कणीयस पुत्त जाव' वेयण सम्म सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव' पासइ, पासित्ता मम चउत्थ पि एवं
 वयासी—हभो । सद्दालपुत्ता । समणोवासया । जाव'' जइ ण तुम अज्ज

१. उवा० २।२२ ।

२. उवा० २।२३ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

७. उवा० २।२७ ।

८. उवा० ७।६२-६७ ।

९. उवा० ७।६८-७३ ।

१०. उवा० २।२४ ।

११. उवा० २।२२ ।

सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्ढेसि न भजेसि, तो ते अह अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया त साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मससोल्ले करेमि करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मसेण य सोणिण्ण य आइत्तामि, जहा ण तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण अह तेण पुरिसेण एव वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि ।

तए ण से पुरिसे मम अभीय जाव' दोच्च पि तच्च पि मम एव वयासी—हभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ ण तुम अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्ढेसि न भजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए ण तेण पुरिसेण दोच्च पि तच्च पि मम एव वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे अणारिए अणारियवुद्धो अणारियाइ पावाइ कम्माइ समाचरति, जे ण मम जेट्टपुत्त, जे ण मम मज्झिमय पुत्त, जे ण मम कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियसि कडाहयसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता मम गाय मसेण य सोणिण्ण य आइत्तइ, तुम पि य ण इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेय खलु मम एय पुरिस गिण्हत्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खभे आसाइए, महया-महया सद्देण कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पदं

८१. तए ण सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्त समणोवासय एव वयासी—नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्टपुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमय पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयस पुत्त साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस ण केइ पुरिसे तव उवसग्ग करेइ, एस ण तुम विदरिसणे दिट्ठे । त ण तुम इयाणि भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । तं ण तुम पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्टाहि अहारिह पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जाहि ॥

८२. तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए अग्गिमित्ताए भारियाए तह त्ति एयमट्ट

विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्टेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्म पडिवज्जइ ॥

सद्दालपुत्तस्स उवासगपडिमा-पदं

- ८३ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥
- ८४ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए पढम उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
- ८५ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एव तच्च, चउत्थं पचम, छट्ठ, सत्तमं, अट्ठम, नवम, दसमं, एक्कारसम उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
- ८६ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेण पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्टिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए ॥

सद्दालपुत्तस्स अणसण-पदं

- ८७ तए ण तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ, पुव्वरत्तावरत्ताकाल-समयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अय अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेण ओरालेणं विउलेणं पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्टिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । त अत्थि ता मे उट्टाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्टाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिम-मारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तापाणपडियाइक्खियस्स, कालं अणव-कखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणतिय-सलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तापाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकखमाणे विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स समाहिमरण-पदं

- ८८ तए ण से सद्दालपुत्ते समणोवासए व्हहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेत्ता वीस वासाइं समणोवासगपरियाग पाउणित्ता,

एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते समाहि-पत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणच्चए विमाणे देवत्ताए उववण्णे । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । ° महाविदेहे वासे सिज्झिह्हिइ बुज्झिह्हिइ मुच्चिह्हिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

८६ १•एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण सत्तमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

अट्ठमं अज्झयणं

महासतए

उक्खेव-पद

- १ '●जइ ण भत्ते । समणेण भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स ण भत्ते । अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ०

महासतयगाहावइ-पदं

२. एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिन्हे चेइए । सेणिए राया ॥
३. तत्थ ण रायगिहे नयरे महासतए' नाम गाहावई परिवसइ—अड्ढे' ●जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स ण महासतयस्म गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकसाओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकसाओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकसाओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था ॥
५. से ण महासतए गाहावई वहुण जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ० ॥
६. तस्स ण महासतयस्स गाहावइस्स रेवतीपामोक्खाओ' तेरस भारियाओ होत्था—

१ स० पा०—उक्खेवो ।

२ ना० १।१।७ ।

३ महासतते (क), महासयय (ख) ।

४. स० पा०—अड्ढे जहा आणदो नवर अट्ठ

हिरण्णकोडीओ सकसाओ निहाणपउत्ताओ

अट्ठ हि वड्ढि अट्ठ हि सकसाओ पवि अट्ठवया दसगोसाहस्सिएण वएण ।

५ उवा० १।११ ।

६,७ उवा० १।१३ ।

८. रेवई ० (ख, घ) ।

अहीण^१-●पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीराओ जाव^२ माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणीओ विहरति °॥

- ७ तस्स ण महासतयस्स रेवतीए भारियाए कोलहरियाओ^३ अट्ट हिरण्णकोडीओ, अट्ट वया दसगोसाहस्सिएण वएण होत्था । अवसेसाण दुवालसण्हं भारियाण कोलहरिया^४ एगमेगा हिरण्णकोडी, एगमेगे य वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥

महावीर-समवसरण-पदं

८ तेणं कालेण तेणं समएण सामी समोसढे ॥

९ परिसा निग्गया ॥

१० ●^५ कूणिए राया जहा, तहा सेणिओ निग्गच्छइ जाव^६ पज्जुवासइ ॥

११. तए ण से महासतए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे—“एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव रायगिहस्स नयरस्स वहिया गुणसिलए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।” त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताण णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स घम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घा-भरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्वमइ, पडिणिक्वमित्ता सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेण रायगिह नयरं मज्जमज्जेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिव्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पज्जलिउडे पज्जुवासइ ॥

१ स० पा०—अहीण जाव सुरूवाओ ।

२ उवा० १।१४ ।

३ कोलघरियाओ (ख) ।

४, कोलघरिया (क, ख, ग, घ) ।

५ स० पा०—जहा आणदो तहा निग्गच्छइ ।

तहेव सावयघम्म पडिवज्जइ ।

६ ओ० सू० ५३-६६ ।

- १२ तए णं समणे भगव महावीरे महासतयस्स गाहावडस्स तीमे य महडमहालियाए परिसाए जाव' धम्म परिकहेइ ॥
- १३ परिसा पडिगया, राया य गए ॥

महासतयस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

- १४ तए ण महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु-चित्तमाणदिए पीडमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी--सद्दहामि णं भते । निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भंते । निग्गथ पावयण, रोएमि ण भते । निग्गथ पावयण, अठ्ठुत्तेमि ण भते । निग्गथ पावयण । एवमेय भते । तहमेय भते । अवितहमेयं भते ! असदिद्धमेयं भते ! इच्छियमेयं भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते । से जहेय तुव्भे वदह । जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इवभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए । अह ण देवाणुप्पियाणं अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवध करेहि ॥

- १५ तए ण से महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए^{१०} सावयधम्म पडिवज्जइ, नवर—अट्टु हिरण्णकोडीओ सकसाओ^३ । अट्टु वया । रेवतीपामोक्खाहिं तेरसहिं भारियाहिं अवसेस मेहुणविहिं पच्चक्खाड^४ । इम च ण एयारूव अभिग्गह अभिगेण्हति—कल्लाकल्लि 'च ण'^५ कप्पइ मे वेदोणियाए^६ कसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए ॥

महासतयस्स समणोवासग-चरिया-पदं

- १६ तए ण से महासतए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे^७ जाव^८ •समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुच्छणेण ओसहभेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणे^९ विहरइ ॥

१. ओ० सू० ७१-७७ ।

२. पू०—उवा० २४-४५ ।

३. सकसाओ उच्चारेति (क, ख, ग) ।

४. पच्चक्खाइ सेस सव्व तहेव (क, ख, ग, घ) ।

५. × (ख) ।

६. वेदोणि० (क) ।

७. स० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ ।

८. उवा० १।५५ ।

भगवओ जणवयविहार-पदं

१७. तए ण समणे भगव महावीरे बहिया जणवयविहार विहरइ' ॥

रेवतीए चिंता-पदं

१८. तए ण तीसे रेवतीए गाहावइणीए अण्णदा कदाइ' पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुव' •जागरिय जागरमाणीए° इमेयारूवे अज्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमांसि दुवालसण्ह सपत्तीण' विघातेण' नो सचाएमि' महासतएण समणोवासएणं सद्धि ओरालाइ माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरित्तए । ते सेय खलु मम एयाओ दुवालस वि सवत्तीओ' अग्गिपओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्ता एतासि' एगमेग हिरण्णकोडि एगमेग वय सयमेव उवसपज्जित्ता ण महासतएण समणोवासएण सद्धि ओरालाइ' •माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणी° विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता तासि दुवालसण्ह सवत्तीण अतराणि य छिद्दाणि य 'विरहाणि य'" पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

रेवतीए सवत्ती-उद्वण-पदं

१९ तए ण सा रेवती गाहावइणी अण्णदा कदाइ तासि दुवालसण्ह सवत्तीण अतर जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेण" उद्वेइ, छ सवत्तीओ विसप्पओगेण उद्वेइ, उद्वेत्ता तासि दुवालसण्ह सवत्तीण कोलघरिय एगमेग हिरण्णकोडि, एगमेग वय सयमेव पडिवज्जित्ता महासतएण समणोवासएण सद्धि ओरालाइ माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ ॥

रेवतीए संसमज्जासायण-पदं

२० तए ण सा रेवती गाहावइणी मसलोलुया मसमुच्छिया" •मसगढिया मसगिद्धा

- | | |
|---|--|
| १ प्राक्तनेपु अद्ययनेपु भगवतो विहारसूत्र पूर्वं तदुत्तर च श्रावकभवनसूत्र लभ्यते । इह च पूर्व श्रावकभवनसूत्र तदुत्तर च भगवतो विहारसूत्र वर्तते । असौ क्रम समीचीन प्रतिभाति । | ७ सवत्तीयाओ (ख) । |
| २ कयाइं (घ) । | ८ एताण (क), एयांसि (ख, घ) । |
| ३ स० पा०—कुडुव जाव इमेयारूवे । | ९ स० पा०—उरालाइ जाव विहरित्तए । |
| ४ पत्तीण (क), सवत्तीण (ख) । | १० विहराणि य विवराणि य (क), विवराणि य (ख) । |
| ५ विघाएण (ख, घ) । | ११ सत्थप्पतोत्तेण (क, ग) । |
| ६ सवादेमि (ख) । | १२ स० पा०—मसमुच्छिया जाव अज्भोववण्णा । मसेसु मुच्छिया (क, ख, घ), मससमुच्छिया (ग) । |

मस °अज्भोववण्णा बहुविहेहि मसेहिं' सोल्लेहि य तलिएहि य' भज्जिएहि य'
'सुर च महु च मेरग च मज्ज च सीधु च पसण्ण च' आसाएमाणी विसाएमाणी
परिभाएमाणी परिभुजेमाणी विहरइ ॥

अमाघाय-पद

- २१ तए ण रायगिहे नयरे अण्णदा कदाइ अमाघाए घुट्टे यावि' होत्था ॥
२२ तए ण सा रेवती गाहावइणी मसलोलुया मसमुच्छिया मसगढिया मंसगिद्धा
मसअज्भोववण्णा कोलघरिए पुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एव वयासी— तुब्भे
देवाणुप्पिया । मम कोलहरिएहिंतो' वएहिंतो कल्लाकल्लि दुवे-दुवे गोणपोयए
उद्देवेह, उद्देत्ता मम उवणेह ॥
२३. तए ण ते कोलघरिया पुरिसा रेवतीए गाहावइणीए तह त्ति एयमट्ट विणएणं
पडिसुणत्ति, पडिसुणत्ता रेवतीए गाहावइणीए कोलहरिएहिंतो' वएहिंतो
कल्लाकल्लि दुवे-दुवे गोणपोयए' वहेत्ति, वहेत्ता रेवतीए गाहावइणीए
उवणेत्ति ॥
२४. तए ण सा रेवती गाहावइणी तेहिं गोणमसेहिं' सोल्लेहि य तलिएहि य
भज्जिएहि सुर च महु च मेरगं च मज्ज च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणी
विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजेमाणी विहरइ ॥

महासतगस्स धम्मजागरिया-पदं

- २५ तए ण तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स वूहि सील-व्वय'^१-•गुण-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण ° भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छरा
वीइक्कता'^२ । •पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ
पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए
चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह रायगिहे नयरे
वहूण जाव'^३ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी
जाव'^४ सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अहं नो सचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए'^५ ॥

१ मयेहि य (क, ख, ग, घ) ।

२ × (क, ग, घ) ।

३ × (घ) ।

४. सुर च पसन्नं च (क) ।

५ वि (क) ।

६ घोलघरिए (क) ।

७ कोल्ल ° (घ) ।

८. गोणपोतलए (क) ।

९ उवहत्ति (ख), गर्हिति (ग, घ) ।

१०. गोमंसेहिं (क, ग) ।

११ स० पा०—सीलव्वय जाव भावेमाणस्स ।

१२ स० पा०—वीइक्कता एवं तहेव जेट्टपुत्त
ठवेइ जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्ति ।

१३. उवा० १।१३ ।

१४. उवा० १।१३ ।

१५. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

२६. तए णं से महासतए समणोवासए जेट्टुपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परि-
जण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता
रायगिह नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला,
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-
पासवणभूमि पडिनेहेइ, पडिनेहेत्ता दवभसथारय सथरेइ, सथरेत्ता दवभसथारय
दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे
ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दवभसथारोवगए
समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय० धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता ण
विहरइ ॥

महासतगस्स अणुकूल-उवसग्ग-पदं

- २७ तए णं सा रेवती गाहावइणी मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जय 'विकड्डु-
माणी-विकड्डुमाणी' जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोहुम्मायजणणाइ सिगारियाइ इत्थिभावाइ उवदंसे-
माणी^१-उवदसेमाणी महासतय समणोवासय एव वयासी—हभो ! महासतया ।
समणोवासया । धम्मकामया । पुण्णकामया । सग्गकामया । मोक्खकामया ।
धम्मकखिया । पुण्णकखिया । सग्गकखिया । मोक्खकखिया । धम्मपिवा-
सिया । पुण्णपिवासिया । सग्गपिवासिया । मोक्खपिवासिया । 'किं ण'
तुव्वं देवाणुप्पिया । धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, ज ण
तुम मए सद्धि ओरालाइ^२ •माणुस्सयाइ भोगभोगाइ० भुजमाणे नो विहरसि ?
- २८ तए ण से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्टु नो आढाइ नो
परियाणाइ, अणाढायमाणे^३ अपरियाणमाणे^४ तुंसिणीए धम्मज्झमाणोवगए
विहरइ ॥
- २९ तए ण सा रेवती गाहावइणी महासतय समणोवासय दोच्च पि तच्च पि एव
वयासी—हभो^५ ! •महासतया । समणोवासया । किं णं तुव्वं देवाणुप्पिया ।
धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, ज णं तुम मए सद्धि ओरालाइ
माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणे नो विहरसि ?

१ कडिड्डज्जमाणी-कडिड्डज्जमाणी (क), विकट्ट-

माणी-विकट्टमाणी (ख) ।

२ दसेमाणी २ (ख) ।

३. किण्ण (घ) ।

४ स० पा०—उरालाइ जाव भुजमाणे ।

५ अणाढाइज्जमीणे (क), अणाढाइज्जमाणे

(ख, ग, घ) ।

६ अपरियाणिज्जमीणे (क), अपरियाणिज्जमाणे

(ख, ग, घ) ।

७ स० पा०—हभो ! त चेव भणइ सो वि तहेव

जाव अणाढायमाणे ।

८ पू०—उवा० ८।२७ ।

३०. तए ण से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावडणीए दोच्च पि तच्चं पि एव वुत्ते समाणे एयमट्ट नो आढाइ नो परियाणाड °, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे विहरइ ॥
३१. तए णं सा रेवती गाहावडणी महासतएणं समणोवासएण अणाढाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

महासतगस्स उवासगपडिमा-पदं

३२. तए णं से महासतए समणोवासए पढम उवासगपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ ।
३३. °तए ण से महासतए समणोवासए पढम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्पं अहामग्ग अहातच्च सम्मं काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
३४. तए ण से महासतए समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एवं तच्चं, चउत्थ, पंचम, छट्ठ, सत्तम, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसम उवासगपडिमं अहासुत्त अहाकप्प अहामग्गं अहातच्च सम्मं काएण फामेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ° ॥
३५. तए ण से महासतए समणोवासए तेणं ओरालेण° •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहि-एण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए ° किसे धमणिसतए जाए ॥

महासतगस्स अणसण-पदं

३६. तए ण तस्स महासतगस्स समणोवासयगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरिय जागरमाणस्स अय अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समु-प्पज्जित्था एव खलु अह इमेण ओरालेण° •विउलेण पयत्तेणं पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परकम्मे सट्ठा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परकम्मे सट्ठा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव° उट्ठियम्मि सूरु सहेस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-

१. स० पा०—पढम अहासुत्त जाव एक्कारस्स वि ।

२. स० पा०—उरालेण जाव किसे ।

३. स० पा०—उरालेण तवोकम्मेण जहा आणदो तहेव अपच्छिम ° ।

४. उवा० १।५७ ° ।

भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ° ‘अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिए’ भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

महासतगस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं

३७ तए ण तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स सुभेण अञ्जवसाणणं °सुभेण परिणामेण लेसाहि विसुज्जमाणीहि, तदावरणिज्जाण कम्माण ° खओवसमेण ओहिणाणे समुप्पण्णे पुरत्थिमे ण लवणसमुद्धे जोयणसाहस्सिय खेत्त जाणइ पासइ, °दक्खिणे ण लवणसमुद्धे जोयणसाहस्सिय खेत्त जाणइ पासइ, पच्चत्थिमे ण लवणसमुद्धे जोयणसाहस्सिय खेत्त जाणइ पासइ ° उत्तरे ण जाव चुल्लहिमवत वासहरपव्वय जाणइ पासइ, [उड्ढ जाव सोहम्म कप्प जाणइ पासइ ?] ° अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुय नरय चउरासीइवाससहस्सट्ठिइय जाणइ पासइ ॥

महासतगस्स पुणर वि अणुकूल-उवसग्ग-पदं

३८ तए ण सा रेवती गाहावइणी अण्णदा कदाइ मत्ता ° लुलिया विडण्णकेसी ° उत्तरिज्जय विकड्डुमाणी-विकड्डुमाणी ‘जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए’, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासतय ° समणोवासय एव वयासी—हभो । महासतया । समणोवासया । किं ण तुव्वभ देवाणुप्पिया । धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं ण तुम मए सद्धि ओरालाइ माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणे नो विहरसि ?

३९ तए ण से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्टु नो आढाइ नो

१. ° सलेहणाए भूसियमरीरे (क,ख,ग,घ) ।

२ स० पा०—अञ्जवसाणेण जाव खओवसमेण ।

३ स० पा०—एव दक्खिणे ण पच्चत्थिमे ण उत्तरे ण ।

४. कोष्ठकान्तर्वर्ती पाठ प्रयुक्तादर्शेषु कस्मिन्नपि नोपलभ्यते । ‘अहे इमीसे रयणप्पभाए...जाणइ पासइ’ एष पाठ ‘क’ प्रती नास्ति । सभवतः सक्षिप्तलिपिपद्धत्या परिवर्तनमिदं जातम् । अत्र द्वावपि पाठौ युज्येते ।

५ स० पा०—मत्ता जाव उत्तरिज्जय ।

६. जेणेव महासतए समणोवासए जेणेव पोसहसाला (क,ख,ग,घ) । अत्र सभवतो लिपिदोषेण क्रमपरिवर्तनं जातम् । किन्तु पूर्वसूत्रस्य (सू २६) अनुसारेण स्वीकृतपाठ एव उपयुज्यते ।

७ स० पा०—महासतय तहेव भणइ जाव दोच्च पि तच्च पि एवं वयासी—हभो । तहेव ।

८. पू०—उवा० ८२७ ।

परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

- ४० तए ण सा रेवती गाहावइणी महासतय समणोवासयं दोच्च पि तच्च पि एवं वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया^१ ! किं ण तुवमं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, ज ण तुम मए सद्धि ओरालाइ माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणे नो विहरसि ? °

महासतगस्स विक्खेव-पदं

- ४१ तए ण से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे आसुरत्ते^२ रुट्ठे कुविए चडिकिए मिसिमिसीयमाणे ओहि पउजइ, पउजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवति गाहावइणि एव वयासी—हंभो ! रेवती ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरत-पत-लक्खणे ! हीणपुण्ण-चाउद्दसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एव खलु तुमं अंत सत्तरत्तस्स अलसएण^३ वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा असमाहि-पत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ॥
- ४२ तए ण सा रेवती गाहावइणी महासतएण समणोवासएण एव वुत्ता समाणी^४—रुट्ठे ण मम महासतए समणोवासए ! हीणे ण ममं महासतए समणोवासए ! अवज्झाया ण अहं महासतएण समणोवासएण, न नज्जइ ण अहं केणावि^५ कु-मारेण मारिज्जिस्सामि—त्ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सजाय-भया सणिय-सणिय पच्चोसंक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहयमणसंकप्पा^६ •चित्तासोगसागरसपविट्टा करयल-पल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठिया ° भियाइ ॥
- ४३ तए ण सा रेवती गाहावइणी अतो सत्तरत्तस्स अलसएण^७ वाहिणा अभिभूया अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुय-च्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ॥

१ पू०—उवा० ८।२७ ।

२ आसुरत्त (क, ख, ग, घ) ।

३. आलस्सएणं (क); आलस्सएण (ख) ।

४ समाणी एव च (क, ग, घ); समाणी एव वयासी (ख), किन्तु प्रकरणानुसारेण नेव युज्यते ।

५ × (ग, घ) ।

६. केणति (क); केण वि (ख, घ) ।

७. स० पा०—ओहयमणसकप्पा जावं भियाइ ।

८ आलस्सएण (क); आलसएण (ख); अलस्सएण (ग) ।

महावीर-समवसरण-पदं

४४ तेणं कालेणं तेण समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए ॥

४५. परिंसा पडिगया ॥

महासतगस्स अतिए गोतम-वेसण-पदं

४६ गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एव खलु गोयमा ! इहेव रायगिहे नयरे मम अतेवासी महासतए नाम समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणतियसलेहणाए भूसियसरीरे भत्तपाण-पडियाइ-क्खिए, काल अणवकंखमाणे विहरइ ॥

तए णं तस्स महासंतगस्स समणोवासगस्स रेवती गाहावडणी मत्ता' •लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जय° विकड्डुमाणी-विकड्डुमाणी जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोहुम्माय' •जणणाइ सिंगारियाइ इत्थिभावाइ उवदसेमाणी-उवदसेमाणी महासतय समणोवासय एव वयासी—हभो ! महासतया ! समणोवासया' ! कि ण तुब्भ देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, ज ण तुम मए सद्धि ओरालाइ माणुस्सयाइ भोगभोगाइ भुजमाणे नो विहरसि ?

तए ण से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावडणीए एयमट्ट नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ । तए ण सा रेवती गाहावडणी महासतय समणोवासय° दोच्च पि तच्च पि एवं वयासी ।

तए ण से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावडणीए दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसीयमाणे ओहिं पउजइ, पउजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवतिं गाहावडणिं एव वयासी'—•हभो ! रेवती ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरत-पत-लक्खणे ! हीणपुण्ण-चाउट्टसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एव खलु तुम अतो सत्त-रत्तस्स अलसएण वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा असमाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए° उववज्जिहिसि ।

नो खलु कप्पइ गोयमा ! समणोवासगस्स अपच्छिम'•मारणतियसलेहणा-

१. स० पा०—मत्ता जाव विकड्डुमाणी ।

३ पू०—उवा० ८।२७ ।

२ स० पा०—मोहुम्माय जाव एव वयासी

४ स० पा०—वयासी जाव उववज्जिहिसि ।

तहेव जाव दोच्चं पि ।

५. स० पा०—अपच्छिम जाव भूसियस्स ।

भूसणा०-भूसियस्स^१ भत्तपाण-पडियाडक्खियस्स^२ परो सतेहि तच्चेहिं तहिएहिं
 सब्भूएहिं^३ अणिट्टेहिं अकतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं
 वागरित्तए । तं गच्छ ण देवाणुप्पिया । तुम महासतय समणोवासय एव
 वयाहि—नो खलु देवाणुप्पिया । कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम^४•मारणतिय-
 सनेहणा-भूसणा-भूसियस्स० भत्तपाण-पडियाडक्खियस्स परो सतेहिं^५
 °तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्टेहिं अकतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणा-
 मेहिं वागरणेहिं० वागरित्तए तुमे य ण देवाणुप्पिया । रेवती गाहावइणी
 सतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्टेहिं अकतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं
 अमणामेहिं वागरणेहिं वागरिया । त ण तुम एयस्स ठाणस्स आलोएहिं^६•पडिक्क-
 माहिं निंदाहिं गरिहाहिं विउट्टाहिं विसोहेहिं अकरणयाए अब्भुट्टाहिं० अहारिहं^७
 पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जाहिं ॥

गोतस्स आगमण-पद

४७ तए ण से भगव गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं
 पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिह नयर
 मज्झमज्झेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव महासतगस्स समणोवासगस्स
 गिहे^८ जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

महासतगस्स वंदण-पदं

४८ तए ण से महासतए समणोवासए भगव गोयम एज्जमाणं पासइ, पासित्ता
 हट्ठं^९ तुट्ठ-चित्तमाणदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण०
 हियए भगव गोयम वदइ नमसइ ॥

महावीरुत्तस्स कहण-पदं

४९ तए ण से भगव गोयमे महासतय समणोवासय एव वयासी—एव खलु
 देवाणुप्पिया । समणे भगव महावीरे एव आइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—
 नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया । समणोवासगस्स अपच्छिम^{१०}•मारणतियसलेहणा-

१ भूमियस्स मरीरस्स (ख, ग, घ) ।

२ पडिगयाडक्खियत्तस्स (क) ।

३ X (ग) ।

४. स० पा०—अपच्छिम जाव भत्तपाण ।

५. ग० पा०—मतेहिं जाव वागरित्तए ।

६. स० पा०—आलोएहिं जाव अहारिह ।

७. जहारिह (क, ख, ग, घ) ।

८. अस्यानन्तर 'जेणेव पोसहसाला' इति पाठः
 अपेक्ष्यते । किन्तु कस्मिन्नप्यादर्शे नोपलब्धो-
 स्ति ।

९ स० पा०—हट्ठ जाव हियए ।

१०. स० पा०—अपच्छिम जाव वागरित्तए ।

भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स परो सतेहिं तच्चेहि त्हिएहिं सव्भू-
एहिं अणिट्ठेहिं अकतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं^१
वागरित्तए । तुमे ण देवाणुप्पिया ! रेवती गाहावडणी सतेहिं^२ °तच्चेहि त्हिएहिं
सव्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं^३
वागरिया । त ण तुम देवाणुप्पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहिं^४ °पडिक्कमाहि
निदाहिं गरिहाहिं विउट्टाहिं विसोहेहिं अकरणयाए अब्भुट्टाहिं अहारिह
पायच्छित्त तवोकम्म^५ ° पडिवज्जाहि ॥

महासतगस्स पायच्छित्त-पदं

५० तए ण से महासतए समणोवासए भगवओ गोयमस्स तह त्ति एयमट्ट विणएण
पडिसुणेड^१, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएड^२ °पडिक्कमइ निदड गरिहइ
विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्टेइ^३ ° अहारिह^४ पायच्छित्त तवोकम्म
पडिवज्जइ ॥

गोयमस्स पडिणक्खमण-पदं

५१. तए ण से भगव गोयमे महासतगस्स समणोवासगस्स अतियाओ पडिणक्खमइ,
पडिणक्खमित्ता रायगिह नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव
समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर
वदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

५२. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ रायगिहाओ नयराओ पडिणि-
क्खमइ, पडिणक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

महासतगस्स अणसण-पदं

५३ तए ण से महासतए समणोवासए बहूहिं सील-व्वय^१-°गुण-वेरमण-पच्चवखाण-
पोसहोववामेहिं अप्पाण^२ ° भावेत्ता वोस वासाइ समणोवासगपरियाय
पाउणित्ता एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए
सनेहणाए अप्पाण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते
समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणवडेसए^३ विमाणे

१. म० पा०—मतेहिं जाव वागरिया !

२. मं० पा०—आलोएहिं जाव पडिवज्जाहि ।

३. पडिच्छित्त (क) ।

४. स० पा०—आलोएइ जाव अहारिह ।

५. जहारिह (क, ख, ग, घ) ।

६. स० पा०—सीलव्वयगुणेहिं जाव भावेत्ता ।

७. °वडिसए (ख, ग, घ) ।

देवत्ताए उववण्णे । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पणत्ता । महाविदेहे वासे
सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निकखेव-पदं

५४ 'एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाणं अट्टमस्स
अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ° ॥

— — —

नवमं अज्भयणं

नंदिणीपिया

उक्खेव-पदं

१. •'जइ ण भते । समणेणं भगवया महावीरेण जाव^१ संपत्तेणं सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाणं अट्टमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स ण भते । अज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °

नंदिणीपियगाहावइ-पद

- २ एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण सावत्थी नयरी । कोट्टुए चेइए । जियसत्तू राया ॥
- ३ तत्थ ण सावत्थीए नयरीए नदिणीपिया नामं गाहावई परिवसइ—अइढे^२ •जाव^३ बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स ण नदिणीपियस्स गाहावइस्स ° चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थर-पउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएण वएणं होत्था ॥
५. •से ण नदिणीपिया गाहावई वहुण जाव^४ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव^५ सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१ स० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. स० पा०—अइढे । चत्तारि ।

४ उवा० १।११ ।

५ स० पा०—अस्सिणी भारिया । सामी

समोसढे जहा आणदो तहेव गिहिघम्म

पडिवज्जइ । सामी वहिया विहरइ ।

६ उवा० १।१३ ।

७ उवा० १।१३ ।

नदिणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए ण तस्स नदिणीपियस्स समणोवासगस्स व्हर्हि सील-व्वय-गुण^१-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं ° भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्क-ताइं^२, *पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-वरत्तकालसमयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सावत्थिए नयरीए व्हूण जाव^३ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव^४ सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए^५ ॥
१९. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए जेट्टुपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख-मित्ता सावत्थि नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारय संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगय-मालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता ण विहरइ ॥

नदिणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

२०. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥
२१. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए पढम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग अहातच्च सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तोरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
२२. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए दोच्च उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पचम, छट्ठ, सत्तम, अट्ठमं, नवमं, दसम, एक्कारसम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामगं अहातच्च सम्मं काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।
२३. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेण पयत्तेण पग्गहिण्णं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धम्मणिसतए जाए ।

१. म० पा०—गुण जाव भावेमाणस्स ।

विदेहे वामे सिज्झहिइ ।

२. म० पा०—वीइक्कताइ तहेव जेट्टुपुत्त ठवेइ । धम्मपण्णत्ति । वीमं वासाइ परियाग नाणत्त अरण्णवे विमाणे उववाओ महा-

३. उवा० १।१३ ।

४. उवा० १।१३ ।

५. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

नंदणीपियस्स अणसण-पदं

२४ तए णं तस्स नदिणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अय अज्भत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेण एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकि-डियाभूए किसे धमणिसतए जाए । त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोव-एसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थो विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्प-भायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिम-मारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

नंदणीपियस्स समाहिमरण-पदं

२५. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए वूर्हहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाण भावेत्ता, वीस वासाइ समणोवासगपरियाय पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणगवे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ ण अत्येगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता । नदिणीपियस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

२६. से ण भते ! नदिणीपिया ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्ख-एण अणंतर चय चइत्ता कर्हि गमिहिइ ? कर्हि उववज्जिहिइ ? गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्जिभिहिइ वुज्जिभिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२७ °एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण उवासगदसाण नवमस्स अज्भय-णस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

६ तस्स ण नदिणीपियस्स गाहावडस्स अस्सिणी नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए' कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे ॥
 ८. परिसा निग्गया ॥
 ९. कूणिए राया जहा, तथा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
 १०. तए ण से नदिणीपिया गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे समणे —“एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुर्व्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नयरीए वहिया कोट्टुए चेइए अहापडि-रुव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।”
 त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताणं भगवंताण णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवय चेइय पज्जुवासामि — एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घा-भरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणक्खमइ, पडिणक्खमित्ता सकोरेट-मल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापखित्ते पादविहारचारेणं सावत्थि नयारि मज्झंमज्जेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्टुए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलिउडे पज्जुवासइ ॥
 ११. तए ण समणे भगवं महावीरे नदिणीपियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहा-लियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥
 १२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

नदिणीपियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पद

१३ तए ण से नदिणीपिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं

१. उवा० १।१४।

३. ओ० सू० ७१-७७।

२. ओ० सू० ५३-६६।

निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-
हियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगव महावीरं तिव्वुत्तो आयाहिण-
पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि
णं भंते । निग्गथं पावयण, पत्तियामि ण भते । निग्गथ पावयण, रोएमि ण
भते । निग्गथ पावयणं, अब्भुट्टेमि णं भते । निग्गथ पावयण । एवमेय भते ।
तहमेय भते । अविहमेय भते । असदिद्धमेय भते । इच्छियमेय भते ।
पडिच्छियमेयं भते । इच्छिय-पडिच्छियमेय भते । से जहेय त्वभे वदह ।
जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इवभ-
सेट्टि-मेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया,
नो खलु अह तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ।
अह ण देवाणुप्पियाण अतिए पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह
सावगघम्म पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवव करेहि ॥

१४ तए ण से नदिणीपिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए^१ सावय-
घम्म पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्टयाओ
चेइयाओ पडिणिकखमड, पडिणिकखमित्ता वहिया जणवयविहार^० विहरइ ॥

नंदिणीपियस्स समणोवासगचरिया-पद

१६ तए ण से नदिणीपिया समणोवासए जाए^२—^०अभिगयजीवाजीवे जाव^३
समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-
कवल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-
सथारएण पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

अस्सिणीए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७ तए ण सा अस्सिणी भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव^४
समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-
कवल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-
सथारएण पडिलाभेमाणी^० विहरइ ॥

१ पू०—उवा० १।२४-५३ ।

३. उवा० १।५५ ।

२. स० पा०—जाए जाव विहरइ ।

४. उवा० १।५६ ।

नंदिणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए ण तस्स नदिणीपियस्स समणोवासगस्स व्हूर्हि सील-व्वय-गुण'-•वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं ° भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइ वीइक्क-ताइ', •पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-वरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अहं सावत्थीए नयरीए व्हूर्णं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मयस्स त्रिय ण कुडुवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेण वक्खेवेण अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए' ॥

१९. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए जेट्टपुत्त मित्त-नाड-नियग-सयण-सवधि-परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख-मित्ता सावत्थि नयारि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं सथरेइ, सथरेत्ता दब्भसंथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगय-मालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता ण विहरइ ॥

नंदिणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

२०. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिम उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥
२१. तए ण से नदिणीपिया समणोवासए पढम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
२२. तए ण से नंदिणीपिया समणोवासए दोच्च उवासगपडिम, एवं तच्चं, चउत्थ, पचम, छट्ठ, सत्तम, अट्ठमं, नवमं, दसम, एक्कारसम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।
२३. तए ण से नंदिणीपिया समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेण पग्गहिएणं तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धम्मणिसतए जाए ।

१ सं० पा०—गुण जाव भावेमाणस्स ।

विदेहे वासे सिज्झिहिइ ।

२ सं० पा०—वीइक्कताड तहेव जेट्टपुत्त ठवेइ । धम्मपण्णत्ति । वीसं वासाइ परियागं नाणत्त अरुणगवे विमाणे उववाओ महा-

३. उवा० १।१३ ।

४. उवा० १।१३ ।

५. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

नंदिणीपियस्स अणसण-पदं

२४ तए णं तस्स नदिणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अयं अज्भत्थिए च्चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेणं एयारूवेण ओरालेण विउलेणं पयत्तेण पग्गहिएण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकि-डियाभूए किसे धमणिसतए जाए । त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोव-एसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थो विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्प-भायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिम-मारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए काल अणवकखमाणे विहरइ ॥

नंदिणीपियस्स समाहिमरण-पदं

२५. तए णं से नदिणीपिया समणोवासए वूर्हि सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेत्ता, वीस वासाइ समणोवासगपरियाय पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्म काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणगवे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता । नदिणीपि-यस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

२६ से ण भते ! नदिणीपिया ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्ख-एण अणतर चय चइत्ता क्किं गमिहिइ ? क्किं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्जिभिहिइ वुज्जिभिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२७ °एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेणं उवासगदसाण नवमस्स अज्भय-णस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

दसमं अञ्भयणं

लेइयापिता

उक्खेव-पदं

१. *जइ णं भते । समणेणं भगवया महावीरेण जाव^३ संपत्तेण सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाण नवमस्स अञ्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स ण भते अञ्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ०

लेइयापितागाहावइ-पदं

२. एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएणं सावत्थी नयरी । कोट्टुए चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. तत्थ ण सावत्थीए नयरीए लेतियापिता^१ नाम गाहावई परिवसइ—अइडे^२ *जाव^३ वहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स ण लेइयापियस्स गाहावइस्स^० चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएण होत्था ॥
५. *से ण लेइयापिता गाहावई वहूण जाव^३ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव^३ सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. स० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. सालिहीयापिया (ख) ।

४. स० पा०—अइडे । चत्तारि ।

५. उवा० १।११ ।

६. स० पा०—फग्गुणी भारिया । सामी समोसडे ।

जहा आणदो तहेव गिहिघम्म पडि-

वज्जइ । जहा कामदेवो तहा जेट्ट पुत्त ।

ठवेत्ता प्रोसहसालाए । समणस्स भगवओ

महावीरस्स घम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण

विहरइ । नवर निरुवसग्गो एक्कारस्स वि

उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वओ ।

एव कामदेवगमेण नेयव्व जाव सोहम्मे ।

७. उवा० १।१३ ।

८. उवा० १।१३ ।

६ तस्स ण लेतियापियरस गाहावडरस फग्गुणी नाम भारिया हात्था—अहीण-पडिपुण्ण-पचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

महावीरं-समवसरण-पद

७. तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे ॥
 ८ परिसा निग्गया ॥
 ९ कूणिए राया जहा, तंहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
 १०. तए ण से लेतियापिता गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे —“एव खलु समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुर्व्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह सपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नयरीए वहिया कोट्टुए चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥”
 त महप्फल खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवंताण णाम-गोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामि—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घा-भरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्वमइ, पडिणिक्वमित्ता सकोरेट-मल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेण सावत्थि नयारि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्टुए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिणं-पर्याहिणं करेइ, करेत्ता वदइ णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पज्जलिउडे पज्जुवासइ ॥

११ तए ण समणे भगव महावीरे लेतियापियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव' धम्म परिकहेइ ॥

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

लेतियापियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३ तए ण से लेतियापिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-

विसप्पमाणहियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समण भगव महावीर तिवखुत्तो आया-
हिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एवं वयासी—
सद्दहामि ण भते । निग्गथं पावयण, पत्तियामि णं भते ! निग्गथ पावयणं,
रोएमि ण भंते ! निग्गथं पावयण, अब्भुट्टेमि ण भते ! निग्गथ पावयण ।
एवमेय भते ! तहमेय भते ! अविहमेय भते ! असदिद्धमेयं भते ! इच्छिय-
मेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! से जहेय तुब्भे
वदह । जहा ण देवाणुप्पियाणं अतिए बहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-
इब्भ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वइया, नो खलु अह तहा सचाएमि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय
पव्वइत्तए । अह ण देवाणुप्पियाण अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइय—
दुवालसविह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबघ करेहि ॥

१४ तए ण से लेतियापिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए^१ सावय-
धम्म पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्टयाओ
चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

लेतियापियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६ तए ण से लेतियापिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव^२ समणे
निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कवल-
पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण
पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

फग्गुणीए समणोवासिय-चरिया-पद

१७ तए ण सा फग्गुणी भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव^३
समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-
कवल-पायपुच्छणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-सथार-
एण पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

लेतियापियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८ तए ण तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स वूर्हीहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-

१. पू०—उवा० १।२४-५३।

३. उवा० १।५६।

२. उवा० १।५५।

पच्चवखाण-पोसहोववासेहि अप्पाण-भावेमाणस्स चोद्दस सवच्छराइ वीइक्क-
ताइ पण्णरसमस्स सवच्छरस्स अतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्त-
कालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अञ्जत्थिए चित्तिए
पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह सावत्थीए नयरीए वहूण
जाव^१ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेढी जाव^२
सव्वकज्जवड्ढावए, त एतेण वक्खेवेण अह नो सचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए^३ ॥

१६ तए ण से लेतियापिता समणोवासए जेट्टपुत्त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-
परिजण च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिव्खमइ, पडिणि-
क्खमित्ता सावत्थि नयारि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव
पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता
उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दव्वसथारय सथरेइ, सथरेत्ता
दव्वसथारय दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वभयारी उम्मक्कमणि-
सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दव्वसथारो-
वगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मपण्णत्ति उवसपज्जित्ता णं
विहरइ ॥

लेतियापियस्स उवासगपडिम-पदं

- २० तए ण से लेतियापिता समणोवासए पढम उवासगपडिम उवसंपज्जित्ता ण
विहरइ ॥
२१. तए ण से लेतियापिता समणोवासए पढम उवासगपडिम अहासुत्त अहाकप्प
अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
२२. तए ण से लेतियापिता समणोवासए दोच्चं उवासगपडिम, एव तच्चं, चउत्थ,
पचम, छट्ट, सत्तम, अट्टम, नवमं, दसम एक्कारसमं उवासगपडिम अहासुत्त
अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च सम्म काएण फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
आराहेइ ॥
- २३ तए ण से लेतियापिता समणोवासए तेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण
पग्गहिएण तवोकम्मणेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए
किसे धमणिसत्तए जाए ॥

लेतियापियस्स अणसण-पदं

२४ तए ण तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

१. उवा० १।१३।

३ पू०—उवा० १।५७-५६।

२. उवा० १।१३।

समयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिणण तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडि-याभूए किसे धमणिसतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-सवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स, काल अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं सपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

लेतियापियस्स समाहिमरण-पदं

२५. तए ण से लेतियापिता समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेत्ता, वीसं वासाइ समणोवासगपरियायं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएण फासित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा° सोहम्मे कप्पे अरुणकीले विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाण देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । लेतियापियस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
२६. से ण भते ! लेतियापितां ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमतं काहिइं ॥

निक्खेव-पदं

२७. एव खलु जंवू ! समणे णं भगवया महावीरेणं उवासगदसाण दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

१ उवा० १।५७ ।

२ अव्ययननिगमनानन्तरमादर्शेषु पाठान्तररूपेण स्वीकृत सग्रहवाक्यमुपलभ्यते । वृत्त्यनुसारेण नैतन् सभाव्यते—दसण्ह वि पण्णरसमे

सवच्छरे वट्टमाणे ण चित्ता । दसण्ह वि वीस वासाइ समणोवासयपरियाओ (क, ख, ग, घ) ।

२८. 'एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेणं सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण अयमट्ठे पणत्ते' ॥

परिसेसो

उवासगदसाण सत्तमस्स अगस्स एगो सुयखधो । दस अज्भयणा एवकसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिस्सति । तथो सुयखधो समुद्दिस्सइ । तत्रो सुयखधो अणुण्ण-विज्जइ दोसु दिवसेसु अग तहेव ॥

ग्रन्थ-परिमाण

अक्षर परिमाण—८७८१२

अनुष्टुप् श्लोक-परिमाण—२७४४

१. आदर्शेषु एतद् निगमनवाक्य नोपलभ्यते, किन्तु वृत्तौ अस्योल्लेखो विद्यते—'एव खलु जवू' । इत्यादि उपामकदशानिगमनवाक्यमध्येयमिति ।
- २ अतोम्रे एता. सग्रहगाथा आदर्शेषु नोपलभ्यन्ते । वृत्तौ पुस्तकान्तरप्राप्तेरुल्लेखोस्ति, यथा—पुस्तकान्तरे सग्रहगाथा उपलभ्यन्ते ताश्चेमा —

वाणियगामे चपा, दुवे य वाणारसीए नयरीए ।
 आलभिया य पुरवरी, कम्पल्लपुर च वोद्धव्व ॥१॥
 पोलास रायगिह, सावत्थीए पुरीए दोन्नि भवे ।
 एए उवासगाण, नयरा खलु होति वोद्धव्वा ॥२॥
 सिवनन्द-भद्-सामा, धन्न-वहुला पूस-अग्गिमित्ता य ।
 रेवइ-अस्सिणि तह, फग्गुणी य भज्जाण नामाइ ॥३॥
 ओहिण्णाण-पिसाए, माया वाहि-धण-उत्तरिज्जे य ।
 भज्जा य सुव्वया, दुव्वया निरुवसग्गया दोन्नि ॥४॥
 अरुणे अरुणाभे खलु, अरुणप्पह-अरुणकत-सिट्ठे य ।
 अरुणज्भए य छट्ठे, भूय-वडिसे गवे कीले ॥५॥

अंतगडदसात्रो

पढमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

गोयमे

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेण समएण चंपा नाम^१ नयरी । पुण्णभट्टे चेइए^२—वण्णओ^३ ॥
२. तेण कालेणं तेण समएणं अज्जसुहम्मस्स समोसरिए । परिसा निग्गया^४ । •धम्मो कहिओ । परिसा जामेव दिस्सि पाउव्भूया तामेव दिस्सि^० पडिगया ॥
३. तेणं कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अतेवासी अज्जजंवू जाव^५ पज्जुवास-माणे^६ एवं वयासी—जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण आदिकरेण जाव^७ सपत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण अयमट्टे पण्णत्ते, अट्टमस्स णं भते ! अंगस्स अतगडदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्टे पण्णत्ते ?
४. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^८ सपत्तेणं अट्टमस्स अगस्स अंतगडदसाण अट्ट वग्गा पण्णत्ता ॥
५. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^९ संपत्तेण अट्टमस्स अगस्स अतगडदसाण अट्ट वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! वग्गस्स अतगडदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

१ नाम (क, ख) ।

२ चेतित्ते (क), चेनिए वणसंडे (ख) ।

३ ओ० सू० २-१३ ।

४. स० पा०—निग्गया जाव पडिगया ।

५. ना० १११६, ७ ।

६. पज्जुवासइ (क, ख, ग); ना० १११७

सूत्रानुसारेण अय पाठः स्वीकृत ।

७ १११७ ।

८, ९ ना० १११७ ।

६ एवं खलु जंबू । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अतगडदसाण पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पणत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

१ गोयम २ समुद्द ३ सागर, ४ गभीरे चेव होइ ५ थिमिए य ।

६ अयले ७ कपिल्ले खलु, ८ अक्खोभ ९ पसेणई १० विण्हू ॥१॥

७ जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण अट्टमस्स अंगस्स अतगडदसाण पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पणत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स अतगडदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्टे पणत्ते ?

गोयम-पदं

८ एव खलु जंबू । तेण कालेण तेण समएण बारवई नाम नयरी होत्था—दुवालस-जोयणायामा नवजोयणवित्थिण्णा धणवति-मड'-णिम्मया चामीकर-पागारा नाणामणि-पच्चवण्ण-कविसीसगमडिया सुरम्मा अलकापुरि-सकासा' पमुदिय-पक्कीलिया पच्चक्ख देवलोगभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडि-रूवा ॥

९ तीसे ण बारवईए' णयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ' ण रेवयए नाम पव्वए होत्था—वण्णओ' ॥

१० तत्थ ण रेवयए पव्वए नंदणवणे नाम उज्जाणे होत्था - वण्णओ' ॥

११. [तस्स ण उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए ?] सुरप्पिए नामं जक्खायतणे होत्था - [चिराइए पुव्वपुरिस-पणत्ते ?] पोराने ॥

१२ से ण एगेण वणसडेण [सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ?] ॥

१३. [तस्स ण वणसडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ ण महं एगे ?] असोगवरपायवे ॥

१४ तत्थ ण बारवईए णयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ—मह्याराय-वण्णओ' ।

से ण तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाण दसण्ह दसाराण वलदेवपामोक्खाण' पच्चण्हं महावीराण', पज्जुण्णपामोक्खाणं अट्टुट्ठाण कुमारकोडीण, सवपामोक्खाण

१,२. ना० १।१।७ ।

३. X (क) ।

४ समा (क) ।

५ बारवती (क) ।

६. तत्थ (ख) ।

७. ना० १।५।३ ।

८. ना० १।५।४ ।

९. ओ० सू० १४ ।

१०. °पामुक्खाण (ख) ।

११. नायाधम्मकहाओ १।५।६ सूत्रात् अस्य क्रमो भिन्नोस्ति ।

सट्ठीए दुदंतसाहस्सीण, महासेणपामोक्खाणं^१ छप्पण्णाए^२ वलवगसाहस्सीणं^३, वीरसेणपामोक्खाण एगवीसाए वीरसाहस्सीणं, उग्गसेणपामोक्खाण सोलसण्हं रायसाहस्सीण, रुप्पिणीपामोक्खाण 'सोलसण्हं देवीसाहस्सीण'^४ अणगसेणा-पामोक्खाण अणेगाणं गणियासाहस्सीण^५, अण्णेसि च वहूण, ईसर^६-•तलवर-माडंविद्य-कोडुबिय-इव्भ-सेट्ठि-सेणावइ^७ •सत्यवाहाण वारवईए नयरीए अद्ध-भरहस्स य समंतस्स^८ आहेवच्च^९ •पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे^{१०} विहरइ ॥

१५ तत्थ ण वारवईए नयरीए अधगवण्णी^१ नाम राया परिवसड—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिंदसारे वण्णओ^{१०} ॥

१६ तस्स ण अधगवण्हस्स रण्णो धारिणी नाम देवी होत्था—वण्णओ^{११} ॥

१७ तए ण सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तसि तारिसगसि सयणिज्जसि जाव^{१२} नियगवयणमइवयंतं सीह सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धा । एव जहा^{१३} महव्वले^{१४}, नवर—गोयमो नामेण । अट्ठण्ह रायवरकण्णाण एगदिवसेण पाणिं गेण्हावेति । अट्ठओ दाओ ॥

१८. तेण कालेण तेण समएण अग्हा अरिट्ठनेमी आदिकरे जाव^{१५} सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ । चउव्विहा देवा आगया । कण्हे वि निग्गए ॥

१९ तए ण तस्स गोयमस्स कुमारस्स^{१६} •त महाजणसद् च जणकलकल च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्प-ज्जित्था^{१७} । जहा मेहे^{१८} तहा णिग्गए । धम्म सोच्चा^{१९} •निसम्म हट्ठुट्ठे^{२०} ज

१ महसेण^० (क, ख) ।

२. छप्पण्णाय (ग) ।

३. वलवय^० (क्व) ।

४. वत्तीसाए महिनसाहस्सीण (ना० १।५।६) ।

५. गणित्ता^० (ख) ।

६. स० पा०—ईसर जाव सत्यवाहाणं ।

७. समत्यस्स (क्व) ।

८ स० पा०—आहेवच्च जाव विहरइ ।

९. •पिण्ह (घ) ।

१०. ओ० सू० १४ ।

११. ओ० सू० १५ ।

१२. म० ११।१३३ ।

१३. भ० ११।१३३-१६१ ।

१४ अतोग्गे सग्रहणीगाथा नभ्यते—

सुमिण्हसण-कहणा,

जम्म वालत्तण कलाओ य ।

जोव्वण-पाणिग्गहण, कण्णा पासायभोगा य ॥

(क, ख, ग, घ) ।

अस्या सग्रहणी-गाथाया केचिद् विषया मूल-पाठे एव समायाता, तेन पुनरुक्तेनिवारणाय नासौ मूले गृहीता ।

१५. ना० १।५।१० ।

१६ स० पा०—कुमारस्स ।

१७ ना० १।१।६५-६६ ।

१८. स० पा०—सोच्चा ।

- नवर—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि' । •तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अतिए मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वयामि ° ॥
२०. तए णं से गोयमे कुमारे एव जहा मेहे जाव^१ अणगारे जाए—इरियासमिए^२ जाव^३ इणमेव निग्गंथ पावयणं पुरओ काउं विहरइ ॥
- २१ तए णं से गोयमे अणया कयाइ अरहओ अरिट्टुनेमिस्स तहाह्वाणं थेराणं अतिए सामाडयमाडयाइं एवकारस अगाइ अहिज्जइ^४, अहिज्जित्ता वहीहि चउत्थ^५—•छट्टुम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि विविहेहि तवोकम्महि अण्णाणं ° भावेमाणे विहरइ ॥
२२. 'तए णं' अरहा^६ अरिट्टुनेमी अणया कयाइ वारवईओ नयरीओ नदणवणाओ पडिणिक्खमइ, वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥
- २३ तए ण से गोयमे अणगारे अणया कयाइ जेणेव अरहा अरिट्टुनेमी तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता अरह अरिट्टुनेमि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—इच्छामि णं भते । तुव्भेहि अब्भणुणाए समाणे मासिय भिक्खुपडिम उवसंपज्जित्ता ण विहरित्तए । एव जहा खदओ^७ तहा वारस भिक्खुपडिमाओ फासेइ । गुणरयण पि तवोकम्म तहेव फासेइ निरवसेस । जहा^८ खदओ तहा^९ चित्तेइ । तहा आपुच्छइ । तहा थेरेहि सद्धि सेत्तुंज^{१०} दुरूहइ ॥
- २४ "•तए ण से गोयमे अणगारे वारस वासाइ^{११} सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासि-याए सलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता सद्धि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव^{१२} केवलवरणाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा ° सिद्धे ॥

निकखेव-पदं

- २५ एव खलु जंवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^{१३} सपत्तेण अट्टमस्स अंगस्स अतगडदसाण पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ॥

१ स० पा०—आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं ।

९. भग० २।५७-६८ ।

२ ना० १।१।१४६-१५१ ।

१०. जघा (ख) ।

३ रियासमिए (क); इरियासमिते (ख), ईरियानमिए (ग) ।

११ तघा (ख, ग) ।

४ ना० १।१।१६४ ।

१२. सेत्तुज्ज (क, ख, ग) ।

५ अहिज्जेइ (ख, ग) ।

१३. स० पा०—मासियाए सलेहणाए वारस-वासाइ परियाए जाव सिद्धे ।

६ स० पा०—चउत्थ जाव भावेमाणे ।

१४. वरिसाइ (ख); वरिसा य (ग) ।

७. ता (क), ते (ख) ।

१५. म० ६।१५१ ।

८. अरिहा (ख, ग) ।

१६. ना० १।१।७ ।

२-१० अजभयणाणि

समुदादि-पदं

२६ एव जहा गोयमो^१ तथा सेसा । अंधगवण्ही^२ पिया, धारिणी माया । समुद्दे, सागरे, थिमिए, गभीरे, अयले, कपिल्ले, अक्खोभे, पसेणई, विण्हू एए एगगमा ॥

वीओ वगो

१-८ अजभयणाणि

उक्खेव-पदं

- १ जइ^१ •ण भते । समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स अगस्स अतगडदसाण पढ-मस्स वग्गस्स अयमट्टे पणत्ते, दोच्चस्स ण भते । वग्गस्स अतगडदसाण समणेण भगवया महावीरेण के अट्टे पणत्ते ?
- २ एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स अगस्स अतगडदसाण दोच्चस्स वग्गस्स अट्ट अजभयणा पणत्ता, त जहा ° —

संगहणी-गाहा^३

१. अक्खोभ २. सागरे खलु, ३ समुद् ४ हिमवत ५ अचलनामे य ।
- ६ धरणे य ७ पूरणे य, ८. अभिचदे चैव अट्टमए ॥ १ ॥

अक्खोभादि-पदं

- ३ तेण कालेण तेण समएण 'वारवई नाम नयरी होत्था'^४ । अंधगवण्ही पिया । धारिणी माया । जहा पढमे वग्गे तथा सव्वे अट्ट अजभयणा । गुणरयण तवो-क्रम्म । सोलस वासाइ परियाओ । सेत्तुजे मासियाए सलेहणाए सिद्धा ॥

१. अ० १।६-२५ ।

२ वण्हि (क, ख, ग), अंधगविण्हु (घ) ।

३ स० पा० — जइ दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवमो ।

४ तृतीयवर्गक्रमतोऽसौ गाथा 'तेण कालेण तेण समएण' इति सूत्रात् प्राग् गृहीता । आदर्शेषु

वसौ गाथा 'धारिणी माया' इति पाठानन्तर-मुल्लिखितमस्ति ।

५. वारवईए नयरीए (क, ख, ग, घ) । अस्य पाठस्य परिवर्तन १।८ आघारेणकृतम् ।

तइओ वग्गो

पढमं अज्भयणं

अणीयसे

उक्खेव-पदं

१. जइ^१ ण भते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अगस्स अतगडदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तच्चस्स ण भते ! वग्गस्स अतगडदसाणं समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ? ०
२. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स अंगस्स अतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्भयणा पण्णत्ता, त जहा—१. अणीयसे २ अणतसेणे अजियसेणे ४. अणिहयरिऊ ५. देवसेणे^२ ६ सत्तुसेणे ७ सारणे ८ गए ९ समुद्धे १० दुम्मुहे ११ कूवए १२ दारुए १३ अणाहिट्ठे^३ ॥
३. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स अगस्स अतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्भयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्भयणस्स अतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

अणीयसादि-पदं

४. एव खलु जवू ! तेण कालेणं तेण समएण भद्विलपुरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ^४ ॥
५. तस्स ण भद्विलपुरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सिरिवणे नाम उज्जाणे होत्था—वण्णओ^५ । जियसत्तू राया ॥

१ स० पा०—ज १ तच्चस्स उक्खेवओ ।

४ ओ० सू० १ ।

२. देवजसे (क) ।

५ ना० १।५।४ ।

३ अणाहिट्ठे (क) ।

- ६ तत्थ ण भद्दिलपुरे नयरे नागे नाम गाहावई होत्था—अड्ढे जाव^१ अपरिभूए ॥
- ७ तस्स ण नागस्स गाहावइस्स सुलसा नाम भारिया होत्था—सूमाला जाव^२ सुख्वा ॥
- ८ तस्स ण नागस्स गाहावइस्स पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए अणीयसे^३ नामं कुमाररे होत्था—सूमाले जाव^४ सुख्वे पचघाइपरिक्खित्ते जहा दढपइण्णे जाव^५ गिरिकदरमल्लीणे विव चपगवरपायवे णिव्वाघायसि सुहसुहेण परिवड्ढइ ॥
- ९ तए ण त अणीयस कुमार सातिरेगअट्ठवासजाय [जाणित्ता ?] अम्मापियरो कलायरियस्स उवणेति जाव^६ भोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥
- १० तए ण त अणीयस कुमारं उम्मुक्कवालभाव जाणित्ता अम्मापियरो सरिसियाणं^७ सिरिव्वयाण सरित्तयाण सरिसलावण्ण-रूव-जोवण्ण-गुणोववेयाणं सरिस-एहिंतो इब्भकुलेहिंतो आणिल्लियाणं^८ वत्तीसाए इब्भवरकण्णगाण एगदिवसेण पाणि गेण्हावेति ॥
- ११ तए ण से नागे गाहावई अणीयसस्स कुमारस्स इम एयारूव पीइदाण दलयइ, त जहा—वत्तीस हिरण्णकोडीओ जहा महब्बलस्स जाव^९ उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइगमत्थएहिं भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥
- १२ तेण कालेण तेण समएण अरहा अरिट्ठनेमीं^{१०} जेणेव भद्दिलपुरे नयरे जेणेव सिरिव्वणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे^{११} विहरइ । परिसा निग्गया ॥
- १३ तए ण तस्स अणीयसस्स कुमारस्स त महा^{१२} जणसद् च जणकलकल च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था । जहा गोयमे^{१३} तहा अणगारे जाए^{१४}, नवर—सामाइयमाइयाइ चोद्दस-पुव्वाइ अहिज्जइ । वीस वासाइ परियाओ । सेसं तहेव जाव^{१५} सेत्तुजे पव्वए मासियाए सलेहणाए^{१६} अत्ताण भूसित्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरणाणदसण समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा^{१७} सिद्धे ॥

१ ना० १५७ ।

२ ओ० सू० १५ ।

३ अणीयसेणे (क) ।

४ ओ० सू० १४३ ।

५ राय० सू० ८०४ ।

६ राय० सू० ८०६-८०९ ।

७ स० पा०—सरिसियाणं जाव वत्तीसाए ।

८ भ० ११।१५९-१६१ ।

९ स० पा०—समोसढे सिरिव्वणे उज्जाणे अहा जाव विहरइ । पू०—ना० १।५।१० ।

१० स० पा०—त महा जहा गोयमे तहा ।

११ अ० १।१९, २० ।

१२ अ० १।२१-२४ ।

१३ स० पा०—सलेहणाए जाव सिद्धे ।

१४. एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

२-६ अज्झयणाणि

१५. एव जहा अणीयसे । एव सेसा वि । अज्झयणा एवकगमा । वत्तीसओ दाओ । वीस वासा परियाओ । चोद्दस पुव्वा । सेत्तुजे सिद्धा ।

सत्तमं अज्झयणं

सारणे

सारण-पदं

१६. तेण कालेण तेण समएण बारवईए नयरीए, जहा पढमे, नवर—वसुदेवे राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । सारणे कुमारे । पण्णासओ दाओ । चोद्दस पुव्वा^१ । वीस वासा परियाओ । सेस जहा गोयमस्स जाव^२ सेत्तुजे सिद्धे ।

अट्ठमं अज्झयणं

गए

उक्खेव-पदं

१७. जइ^३ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । अट्टमस्स णं भते ! अज्झयणस्स अतगडदसाण के अट्ठे पण्णत्ते ? °
१८. एव खलु जवू तेण कालेण तेणं समएणं बारवईए नयरीए, जहा पढमे जाव^३ अरहा अरिद्धनेमी समोसढे ॥

छण्ह अणगाराणं तव-संकप्प-पदं

१९. तेण कालेण तेणं समएण अरहओ अरिद्धणेमिस्स अतेवासी छ अणगारा भायरो^४ सहोदरा होत्था—सरिसया सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पल-गवल-गुलिय-

१. पुव्वी (ग) ।

२. अ० १।२१-२४ ।

३. स० पा०—जइ उक्खेवओ अट्टमस्स ।

४. अ० ३।१२ ।

५. भायरा (क, ख, ग) ।

अयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छकिय-वच्छा कुसुम^१-कुडलभट्टलया नलकूवर^२-समाणा ॥

२० तए ण ते छ अणगारा ज चेव दिवस मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया, त चेव दिवस अरह अरिट्टणेमि वदंति णमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामो ण भते । तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्टंछट्टेणं अणिक्वत्तेण तवोकम्मेण सजमेण^३ तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरित्तए ॥

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेह ॥

२१. तए ण ते छ अणगारा अरहया^४ अरिट्टणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्टंछट्टेणं^५ अणिक्वत्तेण तवोकम्मेणं सजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणा^० विहरति ॥

छण्ह पि देवईए गिहे पवेस-पदं

२२ तए ण ते छ अणगारा अण्णया कयाई छट्टक्खमणपारणयसि पढमाए पोरिसीए सज्जाय करेति, ^६वीयाए पोरिसीए भाण भियायति, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभता मुहपोत्तिय पडिलेहति, पडिलेहित्ता भायणवत्थाइ पडिलेहति, पडिलेहित्ता भायणाइ पमज्जति, पमज्जित्ता भायणाइ उग्गाहेति उग्गाहेत्ता जेणेव अरहा अरिट्टनेमी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अरह अरिट्टनेमि वदति नमसंति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी^०—इच्छामो णं भते । छट्टक्खमणस्स पारणए तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणा तिहि सघाडएहि वारवईए नयरीए^७ उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खाय-रियाए^० अडित्तए ॥

२३. तए ण ते छ अणगारा अरहया अरिट्टणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा अरह अरिट्टनेमि वदति नमसंति, वदित्ता नमसित्ता अरहओ अरिट्टनेमिस्स अतियाओ सहसववणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता तिहि सघाडएहि अतुरियम^८ चवलमसंभता जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय सोहेमाणा-सोहेमाणा जेणेव वारवई नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरिय^० अडति ।

२४ तत्थ ण एगे सघाडए वारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं

१. दब्भकुसुम (वृषा) ।

२. नलकुन्वर (क, ख, ग) ।

३. × (ख, ग) ।

४. अरहा ख, ग) ।

५. स० पा०—छट्टंछट्टेण जाव विहरति ।

६. स० पा०—जहा गोयमो जाव इच्छामो ।

७. स० पा०—नयरीए जाव अडित्तए ।

८. स० पा०—अतुरिय जाव अडति ।

घरसमुदाणस्स^१ भिक्खायरियाए अडमाणे^२ वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे^३ अणुप्पविट्ठे ॥

२५ तए ण सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठु^४•तुट्ट-चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण^० हियया आसणाओ अंबुट्ठेइ, अंबुट्ठेत्ता सत्तट्ट पदाइ अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीह्केसराण मोयगाण थाल भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता पडिविसज्जेइ ॥

२६ तयाणतर च णं दोच्चे सघाडए वारवईए^५ •नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे अणुप्पविट्ठे ॥

२७. तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्टुट्टा आसणाओ अंबुट्ठेइ, अंबुट्ठेत्ता सत्तट्ट पदाइ अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीह्केसराण मोयगाण थाल भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता^० पडिविसज्जेइ ॥

२८. तयाणतर च ण तच्चे सघाडए वारवईए नगरीए उच्च^६-•नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे अणुप्पविट्ठे ॥

देवईए पुणरागमणसंका-पदं

२९. तए ण सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्टुट्टा आसणाओ अंबुट्ठेइ, अंबुट्ठेत्ता सत्तट्ट पदाइ अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीह्केसराण मोयगाण थाल भरेइ, ते अणगारे^० पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे वारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिणाए जाव^७ पच्चक्ख देवलोगभूयाए समणा निग्गथा उच्च^८-•नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए^० अडमाणा

१. °समुदाणस्स (ख, ग, घ) ।

२. अडमाणे २ (क) ।

३. गिह (ख, ग) ।

४. स० पा०—हट्टु जाव हियया ।

५. स० पा०—वारवईए उच्च जाव पडिवि-सज्जेइ ।

६. स० पा०—उच्च जाव पडिलाभेइ ।

७. अ० १।८ ।

८. स० पा०—उच्च जाव अडमाणा ।

भत्तपाणं नो लभति, जण्णं ताइं चेव कुलाइ भत्तपाणाए भुज्जो-भुज्जो
अणुप्पविसति ?

संका-समाधान-पदं

३० तए ण ते अणगारा देवइ देविं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिए ! कण्हस्स
वासुदेवस्स डमीसे बारवईए नयरीए जावं देवलोगभूयाए समणा निग्गथा
उच्चं-नीय मज्झिमाइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणा
भत्तपाण णो लभति, णो चेव ण ताइं चेव कुलाइ दोच्च पि तच्च पि
भत्तपाणाए अणुपविसति ।

एव खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे भद्विलपुरे नगरे नागस्स गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए
भारियाए अत्तया छ भायरो सहोदरा सरिसया° सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पल-
गवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छकिय-वच्छा कुसुम-कुडलभद्वलया°
नलकूवर-समाणा अरहओ अरिट्टनेमिस्स अतिए धम्म सोच्चा ससारभउव्विग्गा
भीया जम्मणमरणाण मुडा° भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइया ।

तए ण अम्हे ज चेव दिवस पव्वइया त चेव दिवम अरह अरिट्टनेमिं वदामो
नमसामो, इम एयाह्व अभिग्गह ओगिण्हामो°—इच्छामो ण भते ! तुब्भेहि
अव्वभणुणाया समाणा° जावज्जीवाए छट्टुछट्टेण अणिक्वत्तेण तवोकम्मेण
सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरित्तए ° ।

अहासुह ।

तए ण अम्हे अरहया अरिट्टणेमिणा अव्वभणुणाया समाणा जावज्जीवाए
छट्टुछट्टेण जावं विहरामो । त अम्हे अज्ज छट्टुक्खमणपारणयसि पढमाए
पोरिसीए° सज्झाय करेत्ता, वीयाए पोरिसीए ऋण भियाइत्ता, तइयाए
पोरिसीए° अरहया अरिट्टनेमिणा अव्वभणुणाया समाणा तिहिं सघाडएहिं
बारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरि-
याए° अडमाणा तव गेह अणुप्पविट्ठा । त णो खलु देवाणुप्पिए ! ते चेव ण
अम्हे । अम्हे ण अण्णे—देवइ देविं एव वदति, वदित्ता जामेव दिस पाउव्वभूया
तामेव दिस पडिगया ॥

१ तेण (घ) ।

२ अ० १।८ ।

३ स० पा०—उच्च जाव अडमाणा ।

४. ताइ ताइ (क) ।

५. स० पा०—सरिसया जाव नलकूवरसमाणा ।

६. सं० पा०—मुडा जाव पव्वइया ।

७ गिण्हामो (क) ।

८. स० पा०—समाणा जाव अहासुह ।

९. अ० ३।२० ।

१०. स० पा०—पोरिसीए जाव अडमाणा ।

११ पू०—अ० ३।२२ ।

पुत्त-बोह-पदं

३१. तए ण तीसे देवईए देवीए अयमेयारूवे अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पण्णे—एव खलु अह पोलासपुरे नयरे अतिमुत्तेण कुमारसमणेण बालत्तणे वागरिआ—तुमण्ण देवाणुप्पिए । अट्ट पुत्ते पयाइस्ससि^१ सरिसए जाव^२ नलकूवर-समाणे, नो चेव ण भरहे^३ वासे अण्णाओ अम्मयाओ तारिसए पुत्ते पयाइस्सति । त ण मिच्छा । इम ण पच्चक्खमेव दिस्सइ—भरहे वासे अण्णाओ वि अम्मयाओ खलु^४ एरिसए^५ पुत्ते पयायाओ । त गच्छामि ण अरह अरिट्ठणेमि वदामि, वंदित्ता इम च ण एयारूव वागरण पुच्छिस्सामीत्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—^६खिप्पा-मेव भो देवाणुप्पिया । धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्टवेह । ते वि तहेव^७ उवट्टवेत्ति । जहा देवाणंदा जाव^८ पज्जुवासइ ॥
- ३२ तए ण अरहा अरिट्ठणेमी देवइ देवि एव वयासी—से नूण तव देवई । इमे छ अणगारे पासित्ता अयमेयारूवे अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पण्णे—एव खलु अह पोलासपुरे नयरे अइमुत्तेणं कुमारसमणेण बालत्तणे वागरिआ तं चेव जाव^९ निग्गच्छित्ता मम^{१०} अतिय हव्वमागया । से नूण देवई ! अट्टे समट्टे ? हता अत्थि ॥
- ३३ एव खलु देवाणुप्पिए । तेणं कालेण तेण समएण भद्दिलपुरे नयरे नागे नाम गाहावई परिवसइ—अइढे ॥
३४. तस्स ण नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था ॥
३५. तए ण सा सुलसा गाहावइणी बालत्तणे चेव नेमित्थिएण वागरिया—एस णं दारिया णिदू भविस्सइ ॥
३६. तए ण सा सुलसा बालप्पभिइं चेव^{११} हरि-णेगमेसिस्स पडिम करेइ, करेत्ता कल्लाकल्लि ण्हाया^{१२} •कयवलिकम्मा कयकोउय-मगल^{१३} -पायच्छित्ता उल्लपड-साडया महरिह पुप्फच्चण^{१४} करेइ, करेत्ता जण्णुपायपडिया पणाम करेइ, करेत्ता तओ पच्छा आहारेइ वा नीहारेइ वा चरइ^{१५} वा ॥

१. पयाइसिसि (घ) ।

२. अ० ३।१६ ।

३. भारहे (ख, ग, घ) ।

४. × (क) ।

५. एदिसए जाव (क, ख, ग, घ) ।

६. स०पा०—लहुकरणजाणपवर जाव उवट्टवेत्ति ।

७. भ० ६।१४४, १४६ ।

८. अ० ३।३१ ।

९. जेणेव मम (क, ख, ग, घ) ।

१०. चेव हरिणेगमेसी देवभत्ता यावि होत्था (ग, घ) ।

११. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

१२. पुप्फच्चणियं (क) ।

१३. वरइ (क्व) ।

३७. तए ण तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिवहुमाणसुस्सुसाए हरि-णेगमेसी देवे आराहिए यावि होत्था ॥
- ३८ तए ण से हरि-णेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकपणट्टयाए सुलस गाहावइणिं तुम च' दो वि समउउयाओ' करेइ ॥
- ३९ तए ण तुब्भे दो वि समामेव' गब्भे गिण्हह, समामेव गब्भे परिवहह, समामेव दारए पयायह' ॥
- ४० तए ण सा सुलसा गाहावइणी विणिहायमावण्णे दारए पयायड' ॥
- ४१ तए ण से हरि-णेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकपणट्टयाए' विणिहाय-मावण्णे' दारए करयल-सपुडेण गेण्हइ, गेण्हत्ता तव अतिय' साहरइ । त समय च णं तुम पि नवण्ह मासाण सुकुमालदारए पसवसि । जे 'वि य ण' देवाणु-प्पिए ! तव पुत्ता ते वि य तव अतिआओ करयल-सपुडेण गेण्हइ, गेण्हत्ता सुलसाए गाहावइणीए अतिए साहरइ । त तव चेव ण देवई । एए पुत्ता । णो सुलसाए गाहावइणीए ॥

देवईए-हरिस-पदं

४२. तए ण सा देवई देवी अरहओ अरिट्टणेमिस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म'^{१०} हट्टुट्ट'^{११}-चित्तमाणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण^०-हियया अरह अरिट्टणेमि वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते छप्पि अणगारे'^{१२} वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता आगयपण्हया'^{१३} पप्पुयलोयणा'^{१४} कचुयपरिक्खित्तया' दरियवलय-वाहा धाराहय-कलव'^{१५}-पुप्फग विव समूससिय'^{१६}-रोमकूवा ते छप्पि अणगारे'^{१७} अणिमि-साए दिट्ठीए पेहमाणी-पेहमाणी सुचिर निरिक्खइ, निरिक्खित्ता वदइ नमसइ,

१ च ण (ग, घ) ।

२ समुदुयाओ (क); समामेव समगब्भयाओ (ख); सगब्भयाओ (ग, घ) ।

३. सममेव (ख) ।

४. पयाह (क) ।

५. पयाति (क, ख) ।

६. °कपणट्टाए (क, ख, ग) ।

७ °मावण्णए (क) ।

८ अतियाओ (क) ।

९. वि अण्णे (क, ख, ग) ।

१० निसम्मा (क, ख, ग) ।

११. स० पा०—हट्टुट्टु जाव हियया ।

१२ अणगारा (ख, ग, घ) ।

१३ पण्हया(क, ख), पण्हयाए (ग); पण्हवा(घ) ।

१४. पप्फुल्ल^० (घ) ।

१५ °पडिक्खित्तिया (क, ख, ग), °पडिणिक्खित्तिया (घ) ।

१६ कयव (वृ) ।

१७. समूसविय (क, ख, ग) ।

१८. अणगारा (ख, ग, घ) ।

वदित्ता नमसित्ता जेणेव अरहा' अरिट्टणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरह अरिट्टणेमिं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता तमेव घम्मिय जाणप्पवर दुरुहइ', दुरुहित्ता जेणेव वारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वारवइ नयारि अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागया, घम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव सए वासघरे' जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागया सयसि सयणिज्जसि निसीयइ ॥

देवईए पुत्ताभिलासा-पद

४३ तए ण तीसे देवईए देवीए अय अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एव खलु अह सरिसए जाव' नलकूवर-समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव णं मए एगस्स वि वालत्तणए' समणुब्भूए' । एस वि य णं कण्हे वासुदेवे छण्ह-छण्ह मासाण मम अतिय पायवदए हव्वमागच्छइ । तं घण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, पुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, जासिं मण्णे णियग-कुच्छि-सभूयाइ' थणदुद्ध-लुद्धयाइ महर-समुल्लावयाइ मम्मण-पजपियाइ' 'थण-मूला' कक्खदेस-भाग अभिसरमाणाइ' मुद्धयाइ' पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हऊण उच्छगे' णिवेसियाइ देति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मज्जुलप्पभणिए । अह ण अघण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो एकतरमवि ण पत्ता—ओहय' •मणसकप्पा' करयलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया ° भियायइ ॥

कण्हस्स चित्ताकारणपुच्छा-पद

४४ इम च ण कण्हे वासुदेवे ण्हाए' •कयवलिकम्मि कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकार° विभूसिए देवईए देवीए पायवदए हव्वमागच्छइ ॥

४५ तए ण से कण्हे वासुदेवे देवइ देविं पासइ, पासित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ, करेत्ता देवइ देविं एव वयासी—अण्णया ण अम्मो । तुब्भे मम पासेत्ता

१. अरिहा (क) ।

२. दुरुहति (क) ।

३. वासघरए (ख, ग) ।

४. अ० ३।१६ ।

५. वालत्तए (ख) ।

६. समुब्भूए (ख, ग, घ) ।

७. संभूययाइ (ख, ग) ।

८. पजंपिराइ (क) ।

९. थणमूल (क, ग, घ) ।

१०. अतिसरमाणाइं (क, ख, ग, घ) ।

११. भवन्तीति गम्यते (वृ), मुद्धयाइ थणिय पियति (ना० १।२।१२), पण्हय पियति (उ०४।६०) ।

१२. उच्छग (ख, ग) ।

१३. सं० पा०—ओहय जाव भियायइ ।

१४. °सकप्पा भूमिगयविट्ठीया (वृ) ।

१५. सं० पा०—ण्हाए जाव विभूसिए ।

हट्टुट्टा जाव' भवह, किण्ण अम्मो ! अज्ज तुब्भे ओह्यमणसकप्पा जाव' भियायह ?

देवईए चिंताकारण-निवेदन-पदं

४६ तए ण सा देवई देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु अह पुत्ता ! सरिसए जाव' नलकूवर-समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव ण मए एगस्स वि बालत्तणे अणुब्भूए । तुमं पि य ण पुत्ता ! छण्ह-छण्ह मासाण मम अतिय पायवदए हव्वमागच्छसि । तं धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव' भियामि ।

कण्हस्स देवाराहण-पदं

४७ तए ण से कण्हे वासुदेवे देवइ देवि एव वयासी—मा ण तुब्भे अम्मो ! ओह्यमणसकप्पा जाव' भियायह । अहण्ण तहा घत्तिस्सामि' जहा ण मम सहोदरे कणीयसे भाउए भविस्सति त्ति कट्टु देवइ देवि ताहि इट्ठाहि' वग्गूहि समासासेइ । तओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' •पोसहसाल पमज्जइ, उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, दव्वसथारग दुरुहइ, दुरुहित्ता अट्टमभत्त पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए वभयारी' हरि-णेगमेसि देव मणसीकरेमाणे-मणसी-करेमाणे चिट्ठइ ॥

४८ तए ण तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स अट्टमभत्ते परिणममाणे हरि-णेगमेसिस्स देवस्स आसण चलइ जाव' अह इह हव्वमागए । सदिसाहि ण देवाणुप्पिया ! कि करेमि ? कि दलयामि ? कि पयच्छामि ? कि वा ते हियइच्छिय ?

४९ तए ण से कण्हे वासुदेवे त हरि-णेगमेसि देव अतलिक्वपडिवण्ण पासित्ता हट्टुट्टे पोसह पारेइ, पारेत्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए° अजलि कट्टु एव वयासी—इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! सहोदर कणीयस भाउयं विदिण्ण ॥

५० तए ण से हरि-णेगमेसी कण्ह वासुदेव एव वयासी—होहिइ ण देवाणुप्पिया ! तव देवलोयचुए सहोदरे कणीयसे भाउए । से ण उम्मुक्क" •वालभावे विण्णय-

१. अ० ३।२५ ।

२. अ० ३।४३ ।

३. अ० ३।१६ ।

४. अ० ३।४३ ।

५. अ० ३।४३ ।

६. जत्तिस्सामि (ग), वत्तिस्सामि (घ), घइ-स्सामि (मुद्रित वृ) ।

७. पू०—अ० ३।५१ ।

८. स० पा०—जहा अभओ । नवर हरिणेगमे-सिस्स अट्टमभत्त पणेहइ जाव अजलि ।

९. पू०—ना० १।१।५३ ।

१०. ना० १।१।५५-५७ ।

११. स० पा०—उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते ।

परिणयमेत्ते जोव्वणग ० मणुप्पत्ते अरहओ अरिट्टणेमिस्स अंतियं मुडे' • भवित्ता अगाराओ अणगारिय ० पव्वडस्सइ—कण्ह वासुदेवं दोच्च पि तच्चं पि एवं वदइ, वदित्ता जामेव दिस पाउव्वभूए तामेव दिसं पडिगए ।

कण्हेण देवईए आसासण-पद

५१. तए ण से कण्हे वासुदेवे पोसहसालाओ पडिणिवत्तइ, पडिणिवत्तित्ता जेणेव देवई' देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवईए देवीए पायग्गहण करेइ, करेत्ता एव वयासी—होहिइ ण अम्मो ! मम सहोदरे कणीयसे भाउए त्ति कट्टु देवइ देवि तार्हि इट्ठार्हि कताइ पियार्हि मण्णुणार्हि मणामार्हि वग्गुर्हि आसासेइ, आसासेत्ता जामेव दिस पाउव्वभूए तामेव दिसं पडिगए ॥

गयसुकुमालस्स जम्म-पदं

५२. तए ण सा देवई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगसि वासघरसि जाव' सीह सुमिणे पासित्ता पडिबुद्धा जाव' गव्वभ परिवहइ ॥

५३. तए ण सा देवई देवी नवण्हं मासाण जासुमण-रत्तवंधुजीवय-लक्खारस-सरसपारिजातक-तरुणदिवायर-समप्पभ सव्वणयणकंत-सुकुमालपाणिपाय' जाव' सुरूव गयतालुसमाण दारय पयाया । जम्मण जहा मेहकुमारं जाव' जम्हा ण अम्ह इमे दारए गयतालुसमाणे', त होउ ण अम्ह एयस्स दारगस्स नामघेज्जे गयसुकुमाले' ॥

५४. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नाम कयं—गयसुकुमालो त्ति । सेस जहा मेहे जाव' अलभोगसमेत्थे जाए यावि होत्था ॥

सोमिलधूयाए कण्णतेउर-पक्खेव-पद

५५. तत्थ ण वारवईए नयरीए सोमिले नाम माहणे परिवसइ—अड्ढे । रिउव्वेय जाव' वभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिए यावि होत्था ॥

५६. तस्स सोमिल-माहणस्स सोमसिरी नामं माहणी होत्था—सूमालपाणिपाया ॥

५७. तस्स ण सोमिलस्स धूया सोमसिरीए माहणीए अत्तया सोमा नाम दारिया

१ स० पा०—मुडे जाव पव्वडस्सइ ।

२. देवती (क, ख) ।

३. जावपाढ्या (क) । भ० ११।१३३ ।

४. भ० ११।१३३-१४५ ।

५. सूमाल (वृ) ।

६. ओ० सू० १४३ ।

७. ना० १।१।७४-८१ ।

८. गयतालुय ० (क) ।

९. गयसुकुमाले, गयसुकुमाले (क, ख) ।

१०. ना० १।१।८२-८८ ।

११. ओ० सू० ६७ ।

होत्था—सूमालपाणिपाया जाव' सुरूवा, रूवेणं^१ •जोव्वणेण^० लावण्णेणं उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था ॥

५८. तए ण सा सोमा दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया जाव' विभूसिया, वूर्ही खुज्जाहिं जाव' महत्तरविंद-परिक्खित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायमग्गसि कणगतिंदूसएण कीलमाणी चिट्ठइ ॥

५९. तेण कालेण तेण समएण अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे । परिसा निग्गया ॥

६०. तए णं से कण्हे वामुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए जाव' विभूसिए गयसुकुमालेण कुमारेणं सद्धि हत्थिखधवरगए सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहिं उद्दुव्वमाणीहिं वारवईए नयरीए मज्झमज्झेण अरहओ अरिट्ठणेमिस्स पायवदए निग्गच्छमाणे सोम दारिय पासड, पासित्ता सोमाए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए^६ कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सोमिलं माहण जायित्ता सोम दारिय गेण्हह, गेण्हित्ता कण्णतेउरसि पक्खिवह । तए ण एसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स भारिया भविस्सइ । तए ण कोडुविय-पुरिसा तहेव पक्खिवति ॥

६१ तए ण से कण्हे वासुदेवे वारवईए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंववणे उज्जाणे^७ •जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सुसमाणे नमसमाणे पज्जलिउडे अभिमुहे विणएण^० पज्जुवासइ ॥

धम्मदेसणा-पदं

६२ तए ण अरहा अरिट्ठणेमी कण्हस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स कुमारस्स तीसे य^८ •महत्तिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जाम धम्म कहेइ, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहातो वेरमण ।^० कण्हे पडिगए ॥

१. ओ० सू० १५ ।

२. स० पा०—रूवेणं जाव लावण्णेण ।

३. अ० ३।४४ ।

४. ओ० सू० ७० ।

५. अ० ३।४४ ।

६. जायविम्हए तएण कण्हे वासुदेवे (घ) ।

७. स० पा०—उज्जाणे जाव पज्जुवासइ ।

पू०—ता० १।१।६६ ।

८. सं० पा०—तीसे य धम्मकहा ।

गयसुकुमालस्स पव्वज्जासंकप्प-पद

तए ण से गयसुकुमाले अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए धम्मं सोच्चा' •निसम्म हट्ठतुट्ठे अरह अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथं पावयणं, पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयणं, रोएमि णं भते ! निग्गथ पावयणं, अठ्ठुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयणं । एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवित्तहमेय भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भते ! से जहेय तुब्भे वयह । नवरि देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि । तओ पच्छा मुडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिय पव्वइस्सामि । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेहि ॥

गयसुकुमालस्स अम्मापिऊणं निवेदण-पदं

- ६४ तए ण से गयसुकुमाले अरह अरिट्ठनेमि वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणामेव हत्थिरयणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखधवरगए महयाभड-चडगर-पहकरेणं बारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊण पायवडण करेइ, करेत्ता एव वयासी—एव खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥
६५. तए ण तस्स गयसुकुमालस्स अम्मापियरो एवं वयासी—धन्तोसि तुम जाया ! सपुण्णोसि तुम जाया ! कयत्थोसि तुम जाया ! कयलक्खणोसि तुम जाया ! जण्ण तुमे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए धम्मे निसते से वि य ते धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥
६६. तए ण से गयसुकुमाले अम्मापियरो दोच्च पि एव वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि अठ्ठणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ॥

१. स० पा०—सोच्चा जं नवर अम्मापियरो आपुच्छामि जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वड्ढियकुले ।

देवईए सोगाकुलदसा-पदं

६७. तए ण सा देवई देवी त अणिट्ठ अकतं अप्पिय अमणुण्ण अमणाम असुयपुव्व फरुस गिर सोच्चा निसम्म इमेण एयारूवेण मणोमाणसिएण महया पुत्तदुक्खेण अभिभूया समाणी सेयागयरोमकूवपगलत-चिलिणगाया सोयभर-पवेवियगी नित्तेया दीण-विमण-वयणा करयल-मलिय व्व कमलमाला तक्खणओलुग-दुव्वलसरीरलावण्णसुन्न-निच्छाय-गयसिरीया पसिठिलभूसण-पडतखुम्मिय-सच्चुण्णियधवलवलय-पवभट्ट-उत्तरिज्जा सूमालविकिण्ण-केसहत्था मुच्छावस-नट्टचेय-गरुई परसुनियत्त व्व चपगलया निव्वत्तमहे व्व इदलट्ठी विमुक्कसधि-वधणा कोट्टिमत्तलसि सव्वगेहि धसत्ति पडिया ॥

देवईए गयसुकुमालस्स य परिसंवाद-पदं

६८. तए णं सा देवई देवी ससभमोवत्तियाए तुरिय कचर्णाभंगारमुहविणिग्गय-सीयल-जलविमलधाराए परिसिचमाणनिव्वावियगायलट्ठी उक्खेवय-तालविट-वीयणग-जणियवाएण सफुसिएण अतेउर-परिजणेण आसासिया समाणी मुत्तावलि-सन्निगास-पवडत-असुधाराहि सिचमाणो पओहरे, कलुण-विमण-दीणा रोय-माणी कदमाणी तिप्पमाणो सोयमाणी विलवमाणी गयसुकुमाल कुमार एव वयासी—तुम सि ण जाया ! अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासिए हियय-णदि-जणणे उवरपुप्फ व दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओग सहि-त्तए । त भुजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वय जीवामो । तओ पच्छा अम्हेहि कालगएहि परिणयवए वड्ढिय-कुलवसततु-कज्जम्म निरावयक्खे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइस्ससि ॥

६९. तए ण से गयसुकुमाले अम्मापिऊहि एव वुत्ते समाणे अम्मापियरो एव वयासी—तहेव ण तं अम्मो ! जहेव ण तुव्वे मम एव वयह—“तुम सि ण जाया ! अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासिए हियय-णदि-जणणे उवरपुप्फ व दुल्लहे सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओग सहित्तए । त भुजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वय जीवामो । तओ पच्छा अम्हेहि

१. देवक्या अन्येषा पुत्राणा बालत्व नानुभूतम् । तेन 'एगे' इति विशेषणस्य सगतिर्भविष्यति । केवल गजसुकुमालस्यैव लालन-पालनं कृतम् ।

कालगएहिं परिणयवए वड्डिय-कुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे अरहओ
अरिट्टुनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।”
एव खलु अम्मयाओ ! माणुस्सए भवे अधुवे अणितिए असासए वसणसओव-
द्वाभिभूते विज्जुलयाचचले अणिच्चे जलवुवुयसमाणे कुसग्गजलविंदुसन्निभे
सक्खभरागसरिसे मुविणदसणोवमे सडण-पडण-विद्धसण-धम्मे पच्छा पुर च णं
अवस्सविप्पजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुंवि गमणाए के
पच्छा गमणाए ? त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुव्भेहिं अव्वभणुण्णाए समाणे
अरहओ अरिट्टुनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारियं पव्व-
इत्तए ॥

७०. तए ण त गयसुकुमाल कुमार अम्मापियरो एव वयासी—इमे य ते जाया ।
अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुवहु हिरण्णे य सुवण्णे य कसे य दूसे य मणि-
मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्त-
माओ कुलवसाओ पगाम दाउं पगाम भोत्तु पगाम परिभाएउ । तं अणुहोही
ताव जाया । विपुलं माणुस्सगं इड्डिसक्कारसमुदय । तओ पच्छा अणुभूय-
कल्लाणे अरहओ अरिट्टुनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वइस्ससि ॥

७१. तए ण मे गयसुकुमाले अम्मापियरं एव वयासी—तहेव णं तं अम्मयाओ । जं
ण तुव्भे मम एव वयह—‘ इमे ते जाया । अज्जग-पज्जग-पिउपज्जयागए सुवहु
हिरण्णे य सुवण्णे य कसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-
सतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगाम दाउ पगाम
भोत्तुं पगाम परिभाएउं । त अणुहोही तव जाया ! विपुल माणुस्सग इड्डि-
सक्कारसमुदय । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे अरहओ अरिट्टुनेमिस्स अतिए
मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।”
एव खलु अम्मयाओ ! हिरण्णे य जाव सावएज्जे य अग्गिसाहिए चोरसाहिए
रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए, अग्गिसामण्णे चोरसामण्णे रायसामण्णे
दाइयसामण्णे मच्चुसामण्णे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे पच्छा पुर च ण अवस्स-
विप्पजहणिज्जे । से के ण जाणइ अम्मयाओ ! के पुंवि गमणाए के पच्छा
गमणाए ? त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुव्भेहिं अव्वभणुण्णाए समाणे अरहओ
अरिट्टुनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

७२. तए ण तस्स गयसुकुमालस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाएति गयसुकुमाल
कुमारं व्हूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहिं य पण्णवणाहिं य सण्णवणाहिं य
विण्णवणाहिं य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा
ताहे विमयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेयकारियाहिं पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एव

वयासी—एस ण जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगतदिट्ठिए, खुरो इव एगतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्धो इव भुयाहिं दुत्तरे, तिक्ख कमियव्व, गरुअ लवेयव्व, असिधारव्वय चरियव्व । नो खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गथाण आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुव्विभक्खभत्ते वा कतारभत्ते वा वहलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कदभोयणे वा फलभोयणे वा वीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुम च ण जाया ! सुहसमुच्चिए नो चेव ण दुहसमुच्चिए, नाल सीय नाल उण्ह नाल खुह नाल पिवासं नाल वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायके, उच्चावए गामकटए, वावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्म अहियासित्तए । भुजाहिं ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे । तओ पच्छा भुत्तभोगी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अत्तिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइस्ससि ॥

७३ तए ण से गयसुकुमाले कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाने अम्मापियर एव वयासी—तहेव ण त अम्मयाओ ! ज ण तुव्वे मम एवं वयह—“एस ण जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगतदिट्ठिए, खुरो इव एगतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्धो इव भुयाहिं दुत्तरे, तिक्ख कमियव्व, गरुअ लवेयव्व, असिधारव्वय चरियव्वं । नो खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गथाण आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुव्विभक्खभत्ते वा कतारभत्ते वा वहलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कदभोयणे वा फलभोयणे वा वीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुम च ण जाया ! सुहसमुच्चिए नो चेव ण दुहसमुच्चिए, नाल सीय नाल उण्ह नाल खुह नाल पिवासं नाल वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायके, उच्चावए गामकटए वावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्म अहियासित्तए । भुजाहिं ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे । तओ पच्छा भुत्तभोगी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अत्तिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइस्ससि ।”

एवं खलु अम्मयाओ ! निग्गथे पावयणे कीवाण कायराण कापुरिसाण इहलोग-पडिवद्धाण परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुचरे पाययजणस्स, नो चेव ण धीरस्स । निच्छियववसियस्स एत्थ किं दुक्कर करणयाए ? तं इच्छामि ण अम्मयाओ !

तुव्भेहि अठभणुणाए समाणे अरहओ अरिट्टुनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वडत्तए ० ॥

७४. तए ण से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे जेणेव गयसुकुमाले तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता गयसुकुमाल आलिगड, आलिगित्ता उच्छगे निवेसेड', निवेसेत्ता एव वयासी—'तुम ण मम'^३ सहोदरे कणीयसे भाया । त मा ण तुम देवाणुप्पिया । इयाणि अरहओ^३ अरिट्टुनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ० पव्वाहि^४ । अहण्ण तुमे वारवईए नयरीए महया-महया रायाभिसेएण अभिसिच्चिस्सामि ॥

७५ तए ण से गयसुकुमाले कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए सच्चिट्टइ ॥

७६ तए ण से गयसुकुमाले कण्ह वासुदेव अम्मापियरो य दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । माणुस्सया काम'^५भोगा असुई वतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा दुरुय-उस्सास-नीसासा दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-वहुपडिपुणा उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वत्त-पित्त-सुक्क-सोणियसभवा अधुवा अणितिया असासया सडण-पडण-विद्धसणधम्मा पच्छा पुर च ण अवस्स ० विप्पजहणिज्जा । से के ण जाणड देवाणुप्पिया । के पुव्वि गमणाए के पच्छा गमणाए ? त इच्छामि ण देवाणुप्पिया । तुव्भेहि अठभ-णुणाए समाणे अरहओ अरिट्टुनेमिस्स अतिए^६ मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय ० पव्वडत्तए ॥

गयसुकुमालस्स एगदिवसरज्ज-पदं

७७ तए ण त गयसुकुमालं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहे नो सचाएइ बहु-याहिं^७ विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य ० आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामाइ चेव गयसुकुमाल कुमार एव वयासी—त इच्छामो ण ते जाया । एगदिवसमवि रज्जसिरि पासित्तए ॥

७८ ०तए ण गयसुकुमाले कुमारे कण्ह वासुदेव अम्मापियर च अणुवत्तमाणे तुसि-णीए सच्चिट्टइ ॥

१. गेण्हति २ (क) ।

२. तुम मम (क, ख) ।

३. स० पा०—अरहओ मुडे जाव पव्वाहि ।

४. पव्वयाहि (क्व) ।

५. स० पा०—कामा खेलासवा जाव विप्पजहि-यव्वा ।

६. स० पा०—अतिए जाव पव्वडत्तए ।

७. स० पा०—वहुयाहि अणुलोमाहि जाव आघ-वित्तए ।

८. स० पा०—निक्खमणं जहा महव्वलस्स जाव तमाणाए तहा जाव संजमइ ।

- ७९ तए ण कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! गयसुकुमालस्स महत्थ महग्घ मह्रिह विउल
रायाभिसेय उवट्टवेह ॥
- ८० तए ण ते कोडुवियपुरिसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स महत्थ महग्घ मह्रिह
विउल रायाभिसेय उवट्टवेत्ति ।
- ८१ तए ण से कण्हे वासुदेवे^१ गयसुकुमाल कुमार^२ महया-महया रायाभिसेएण
अभिसिचइ, अभिसिचित्ता करयलपरिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए
अजलि कट्टु एव वयासी—जय-जय नदा ! जय-जय भद्दा ! जय-जय
नदा भद्द ते, अजिय जिगाहि, जिय पालयाहि, जियमज्झे वसाहि,
इदो इव देवाण चमरो इव अमुराण धरणो इव नागाण चदो इव ताराण
भरहो इव मणुयाण वारवईए नयरीए अण्णेसि च वहूण गामागर-नगर-खेड-
कव्वड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-सण्णिवेसाण आहेवच्च
पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे
महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइग-पडुप्पवाइयरवेण
विउलाड भोगभोगाइ भुजमाणे विहराहि त्ति कट्टु जय-जय-सद्द पउजति ॥
- ८२ तए ण से गयसुकुमाले राया जाए जाव^३ रज्ज पसासेमाणे विहरइ ॥
- ८३ तए ण त गयसुकुमाल राय कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य एव वयासी—
भण जाया ! किं दलयामो ? किं पयच्छामो ? किं वा ते हिय-इच्छिण
सामत्थे ?

गयसुकुमालस्स पव्वज्जा-पद

- ८४ तए ण से गयसुकुमाले राया कण्हं वासुदेव अम्मापियरो य एव वयासी—
इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! कुत्तियावणाओ रयहरण पडिग्गह च आणिय
कासविय च सद्दाविय । निक्खमण जहा महव्वलस्स^४ ॥
- ८५ तए ण से गयसुकुमाले कुमारे अरहओ अरिट्टनेमिस्स अतिए इम एयाख्व
घम्मिय उवएस सम्म पडिवज्जइ—तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, तह
निसीयइ, तह तुयट्टइ, तह भुजइ, तह भासइ, तह उट्टाए उट्टाय पाणेहि भूएहि
जीवेहि सत्तेहि सजमेण^० सजमइ ॥
८६. तए ण ते गयसुकुमाले अणगारे जाए—इरियासमिए जाव^३ गुत्तवभयारी ॥
- ८७ तए ण से गयसुकुमाले ज चेव दिवस पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पच्चावरणह-
कालसमयसि^५ जेणेव अरहा अरिट्टणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरह

१,२. पू०—ना० ११११६ ।

५ ना०—११११६४ ।

३. ना०—१११११६ ।

६ पुव्वावरणह^० (ख, ग, घ) ।

४. भग० ११११६८; ना० १११२२-१५० ।

अरिट्टणेमिं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते । तुव्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे महाकालसि सुसाणसि एगराइय महापडिमं उवसंपज्जित्ता ण विहरित्तए । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवघ करेहि ॥

गयसुकुमालस्स महापडिमा-पदं

८८. तए ण से गयसुकुमाले अणगारे अरहया अरिट्टणेमिणा अब्भणुण्णाए समाणे अरह अरिट्टणेमि वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता अरहओ अरिट्टणेमिस्स अत्तिए सहसववणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव महाकाले सुसाणे तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता थडिल्ल पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता ईसि पवभारगएण काएणं^१ °वग्घारिय-पाणी अणिमिसनयणे सुक्कपोग्गल-निरुद्धदिट्ठी^२ ° दो वि पाए साहट्टु एगराइं महापडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

सोमिलकय-उवसग्ग-पदं

८९ इम च णं सोमिले माहणे सामिधेयस्स अट्टाए वारवईओ नयरीओ वहिया पुव्वणिग्गए । समिहाओ य दव्भे य कुसे य पत्तामोडं य गेण्हइ, गेण्हित्ता तओ पडिणियत्तइ^३, पडिणियत्तित्ता महाकालस्स सुसाणस्स अदूरसामतेणं वीईवय-माणे-वीईवयमाणे सभाकालसमयसि पविरलमणुस्ससि^४ गयसुकुमालं अणगार पासइ, पासित्ता त वेर सरइ, सरित्ता आसुरुत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमि-सेमाणे एवं वयासी—एस ण भो । से गयसुकुमाले कुमारे अपत्थिय^५ °पत्थिए, दुरत-पत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउट्टसिए, सिरि-हिरि-घिइ-कित्ति °-परिवज्जिए, जेण मम धूय सोमसिरीए भारियाए अत्तय सोम दारिय अदिट्टुदोसपत्तिय कालवत्तिणि विप्पजहेत्ता मुडे जाव^६ पव्वइए । त सेयं खलु मम गयसुकुमालस्स कुमारस्स वेरनिज्जायण करेत्तए—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता दिसापडिलेहण करेइ, करेत्ता सरस मट्टियं^७ गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव गयसुकुमाले अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गयसुकुमालस्स^८ अणगारस्स मत्थए मट्टियाए^९ पालि

१. स० पा०—काएण जाव दो वि पाए ।

२. एग० (भ० ३।१०५) ।

३. निविट्टु० (भ० ३।१०५) ।

४. पत्तामोडय (वृ) ।

५. पडिनिक्खमत्ति (क) ।

६. °माणूससि (क) ।

७. सं० पा०—अपत्थिय जाव परिवज्जिए ।

८. अ० ३।२० ।

९. मत्तिय (ख, ग) ।

१०. °सूमालस्स (क, ख) ।

११. × (क), मट्टिया (ख) ।

बंधइ, बंधित्ता जलतीओ चिययाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे खइरिगाले कहल्लेण^१ गेण्हइ, गेण्हित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे सजायभए तओ खिप्पामेव अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जामेव दिसं पाउव्वभूए तामेव दिसं पडिगए ॥

गयसुकुमालस्स सिद्धि-पदं

६०. तए ण तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयसि वेयणा पाउव्वभूया—उज्जला^१ •विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा ° दुरहियासा ॥
६१. तए ण से गयसुकुमाले अणगारे सोमिलस्स माहणस्स मणसा वि अप्पदुस्समाणे त उज्जल जाव^२ दुरहियास वेयण अहियासेइ ॥
६२. तए ण तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स तं उज्जलं जाव^३ दुरहियास वेयणं अहियासेमाणस्स सुभेण परिणामेण पसत्थज्भवसाणेण तदावरणिज्जाण कम्माण खएण कम्मरयविकिरणकर अपुव्वकरण अणुप्पविट्ठस्स अणते अणुत्तरे^४ •निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे ° केवलवरणाणदसणे समुप्पण्णे । तओ पच्छा सिद्धे^५ •बुद्धे मुत्ते अतयडे परिनिव्वुए सव्वदुक्ख °-प्पहीणे ॥
६३. तत्थ ण 'अहासनिहिएहिं देवेहिं सम्म आराहिए' त्ति कट्ठु दिव्वे सुरभिगघोदए वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे निवाडिए, चेलुक्खेवे कए, दिव्वे य गीयगधव्वणिणाए कए यावि होत्था ॥

कण्हेण वुड्ढस्स साहिज्जकरण-पदं

६४. तए ण से कण्हे वासुदेवे कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव^६ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ण्हाए जाव^७ विभूसिए हत्थिखधवरगए सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं महयाभड-चडगर-पहकरवद-परिक्खित्ते वारवइ नयरिं मज्जमज्जेण जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
६५. तए ण से कण्हे वासुदेवे वारवईए नयरीए मज्जमज्जेण निग्गच्छमाणे एक्क पुरिस^८—जुण्ण जरा-जज्जरिय-देह^९ ° आउर भूसिय पिवासिय दुव्वल ° किलत

१. कभल्लेण (ख, ग, घ) ।

२. स० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

३. अ० ३।६० ।

४. अ० ३।६० ।

५. स० पा०—अणुत्तरे जाव केवल ° ।

६. स० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

७. ना० १।१।२४ ।

८. अ० ३।४४ ।

९. पुरिस पासइ (क, ख, ग, घ) ।

१०. स० पा०—देह जाव किलत ।

महडमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय वहिया रत्थापहाओ
अतोगिह अणुप्पविसमाण' पासइ ॥

६६. तए ण से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकपणट्टाए हत्थिखववरगए चेव
एगं इट्टग गेण्हड, गेण्हत्ता वहिया रत्थापहाओ अतोगिहं अणुप्पवेसेड ॥
६७. तए ण कण्हेण वासुदेवेण एगाए इट्टगाए गहियाए समाणीए अणेगेहिं
पुरिससएहि से महालए इट्टगस्स रासी वहिया रत्थापहाओ अतोघरसि
अणुप्पवेसिए ॥

कण्हस्स गयसुकुमाल-दसणाभिलासा-पदं

- ६८ तए ण से कण्हे वासुदेवे वारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता
जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता' अरह अरिट्ठनेमि
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता° वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता
गयसुकुमाल अणगार अपासमाणे अरह अरिट्ठणेमि वदइ नमसइ, वदित्ता
नमसित्ता एव वयासी—कहि ण भते ! से मम सहोदरे कणीयसे भाया गय-
सुकुमाले अणगारे 'ज ण'° अह वदामि नमंसामि ?

गयसुकुमालस्स सिद्धि-सूयणा-पदं

६९. तए ण अरहा अरिट्ठनेमी कण्ह वासुदेवं एवं वयासी—साहिए णं कण्हा ।
गयसुकुमालेण अणगारेण अप्पणो अट्टे ॥
१००. तए ण से कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठनेमि एवं वयासी—कहण्ण' भंते ।
गयसुकुमालेण अणगारेण साहिए अप्पणो अट्टे ?
१०१. तए ण अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एव वयासी—एव खलु कण्हा !
गयसुकुमालेणं अणगारेणं मम कल्लं पच्चावरण्हकालसमयसि' वदइ नमंसइ,
वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण° भते ! तुव्भेहि अट्ठणुणाए
समाणे महाकालसि सुसाणसि एगराइय महापडिम उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए
जाव' एगराइं महापडिम° उवसंपज्जित्ता ण विहरड ।
तए ण त गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते'
°गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए मट्टियाए पालि वधइ, वधित्ता जलंतीओ

१. अणुपविसमाण (ख, ग) ।

२. अण्णेहि (क) ।

३. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव वदइ ।

४. जा णं (क, ख, ग), जेण (ग) ।

५. कह ण (क, ख, ग) ।

६. पुव्वावरण्ह° (ग, घ) ।

७. सं० पा०—इच्छामि ण जाव उवसपज्जित्ता ।

८. अ० ३।८८ ।

९. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव सिद्धे । पू०—
३।८९ ।

चिययाओ फुल्लियकिसुयसमाणे खड्दिरिगाले कहल्लेण गेण्हइ, गेण्हत्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे सजायभए तओ खिप्पामेव अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जामेव दिस पाउव्वभूए तामेव दिस पडिगए ।

तए ण तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स नरीरयसि वेयणा पाउव्वभूआ—उज्जला विउला कक्खडा पगाढा चडा दुक्खा दुरहियासा ।

तए ण से गयसुकुमाले अणगारे तस्स पुरिसस्स मणसा वि अप्पदुस्समाणे त उज्जल जाव दुरहियास वेयण अट्ठियासेइ ।

तए ण तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स त उज्जल जाव दुरहियास वेयण अट्ठियासेमाणस्स सुभेण परिणामेण पसत्थज्जभवसाणेण तदावरणिज्जाण कम्माण खएण कम्मरयविकिरणकर अपुव्वकरण अणुप्पविट्ठस्स अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदसणे समुप्पण्णे । तओ पच्छा^० सिद्धे । त एव खलु कण्हा । गयसुकुमालेण अणगारेण साहिए अप्पणो अट्ठे ॥

१०२ तए ण से कण्हे वामुदेवे अरह अरिट्ठणंमि एव वयासी—केस^१ ण भते । से पुरिसे अपत्थियपत्थिए^२, ^३दुरत-पत-लक्खण, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति^०-परिवज्जिए, जेण मम सहोदर कणीयस भायर गयसुकुमाल अणगार अकाले चैव जीवियाओ ववरोवेइ ?

१०३ तए ण अरहा अरिट्ठनेमी कण्ह वामुदेव एव वयासी—मा ण कण्हा । तुम तस्स पुरिसस्स पदोसमावज्जाहि । एव खलु कण्हा । तेण पुरिसेण गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिण्णे ।

कहण्णं भते । तेण पुरिसेण गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिण्णे ?

१०४ तए ण अरहा अरिट्ठनेमी कण्ह वामुदेव एव वयासी—से नूण कण्हा । तुम मम पायवदए हव्वमागच्छमाणे वारवईए नयरीए एग पुरिस^१—^२जुण्ण जरा-जज्जरिय-देहं आउर भूसिय पिवासिय दुव्वल किलत महइमहालयाओ इट्ठगरासीओ एगमेग इट्ठग गहाय वहिया रत्थापहाओ अतो गिह अणुप्पविसमाण पाससि । तए ण तुम तस्स पुरिसस्स अणुकपणट्ठाए हत्थिखधवरगए चैव एग इट्ठग गेण्हसि, गेण्हत्ता वहिया रत्थापहाओ अतो गिह अणुप्पवेससि । तए ण तुमे एगाए इट्ठगाए गहियाए समाणीए अणेगेहि पुरिससएहि से महलाए इट्ठगस्स रासी वहिया रत्थापहाओ अतो घरसि^० अणुपवेसिए । जहा ण

१ से के ण (घ) ।

३. स० पा०—पुरिस पाससि जाव अणुपवेसिए ।

२. स०पा०—अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए ।

कण्हा ! तुमे तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिण्णे, एवामेव कण्हा ! तेणं पुरिसेण गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभव-सयसहस्स-सचिय कम्मं उदीरेमाणेणं बहुकम्मणिज्जरत्थ साहिज्जे दिण्णे ॥

- १०५ तए ण से कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठनेमि एव वयासी—से णं भते ! पुरिसे मए कंहं जाणियव्वे ?
- १०६ तए ण अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी—जे णं कण्हा ! तुम वारवईए नयरीए अणुप्पविसमाण पासेत्ता ठियए' चेव ठिइभेएण कालं करिस्सइ, तण्ण तुम जाणिज्जासि 'एस ण से पुरिसे' ॥
- १०७ तए ण से कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठनेमि वदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव आभिसेय हत्थिरयण तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थि दुखइ', दुखित्ता जेणेव वारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

सोमिलस्स अकालमच्चु-पदं

- १०८ तए ण तस्स सोमिलमाहणस्स कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए^१ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते अयमेयारूवे अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पण्णे—एव खलु कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठणेमि पायवंदए निग्गए । त नायमेय अरहया, विण्णायमेय अरहया, सुयमेय अरहया, सिट्ठमेयं अरहया भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स । त न नज्जइ ण कण्हे वासुदेवे मम केणइ^२ कु-मारेणं मारिस्सइ त्ति कट्ठु भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे सजायभए सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ । कण्हस्स वासुदेवस्स वारवइ नयरि अणुप्पविसमाणस्स पुरओ सपक्खि सपडिदिसि^३ ह्व्वमागए ॥
- १०९ तए ण से सोमिले माहणे कण्ह वासुदेवं सहसा पासेत्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए ठियए चेव ठिइभेय^४ काल करेइ, घरणितलसि सब्वगेहि 'घस' त्ति सण्णिवडिए ॥
- ११० तए ण से कण्हे वासुदेवे सोमिल माहण पासइ, पासित्ता एवं वयासी—एस ण भो ! देवाणुप्पिया ! से सोमिले माहणे अपत्थियपत्थिए जाव^५ सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए, जेण ममं सहोयरे कणीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए त्ति कट्ठु सोमिल माहणं पाणेहि कड्ढावेइ,

१. ठित्ते (क, घ) ।

२. द्रुहति (क) ।

३. पू०—ना० १।१।२४ ।

४. केणवि (ख, घ) ।

५. °दिस (क, घ) ।

६. ६० सूत्रे 'ठिइभेएण' इति पाठोस्ति । अत्र सम्भवत कालस्य विशेषण कृत स्यात् ।

७. अं० ३।८६ ।

कड्वावेत्ता तं भूमि पाणिण्ण अठभोक्खावेइ, अठभोक्खावेत्ता जेणेव सए गिहे
तेणेव उवागए । सयं गिह अणुप्पविट्ठे ॥

निकखेव-पद

१११ एवं खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' संपत्तेण अट्टमस्स अगस्स
अतगडदसाण तच्चस्स वगस्स अट्टमज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

६-१३ अज्भयणाणि

उक्खेव-पदं

११२. *जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स अगस्स तच्चस्स वगस्स
अट्टमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । नवमस्स ण भते ! अज्भयणस्स
अतगडदसाण के अट्ठे पण्णत्ते ? °

सुमुहादि-पदं

११३ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएणं वारवईए नयरीए कण्हे नाम वासु-
देवे राया जहा पढमए जाव' विहरइ ॥

११४ तत्थ ण वारवईए वलदेवे नाम राया होत्था—वण्णओ' ॥

११५ तस्स ण वलदेवस्स रण्णो धारिणी नाम देवी होत्था—वण्णओ' ॥

११६. तए ण सा धारिणी' °देवी अण्णया कयाइ तसि तारिसगसि सयणिज्जसि जाव'
नियगवयणमइवयत सीह सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धा ° । जहा गोयमे, नवर—
सुमुहे कुमारे । पण्णास कण्णाओ । पण्णासओ दाओ । चोइस पुव्वाइ अहिज्जइ ।
वीस वासाइ परियाओ । सेस त चेव जाव' सेत्तुजे सिद्धे ॥

११७ निकखेवओ ॥

११८ एव—दुम्मुहे वि । कूवए वि । तिण्णि वि वलदेव-धारिणी-सुया ।

दारुए वि एव चेव, नवर—वसुदेव-धारिणी-मुए ।

एव—अणाहिट्ठी वि वसुदेव - धारिणी - सुए ॥

१ ना० १११।७ ।

२ स० पा०—नवमस्स उक्खेवओ ।

३ अ० १११४ ।

४ ओ० सू० १४ ।

५. ओ० सू० १५ ।

६. स० पा०—वारिणी । सीह सुमिणे ।

७ भ० ११११३३ ।

८. अ० ११७-२४ ।

चउत्थो वग्गो

१-१० अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव^१ संपत्तेण तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स वग्गस्स अतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव^२ सपत्तेण चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

१. जालि २ मयालि ३ उवयाली, ४. पुरिससेणे ५ वारिसेणे य ।
६. पज्जुण्ण ७ सव ८ अणिरुद्ध ९ सच्चणेमि य १० दढणेमी ॥१॥
३. जइ ण भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव^३ सपत्तेण चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

जालिपभित्ति-पदं

४. एव खलु जवू ! तेण कालेण तेणं समएणं वारवई नयरी । तीसे ण वारवईए नयरीए जहा पढमे जाव^४ कण्हे वासुदेवे आहेवच्च जाव^५ कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥
५. तत्थ ण वारवईए नगरीए वसुदेवे राया । धारिणी देवी—वण्णओ^६ जहा गोयमो^७, नवर—जालिकुमारे । पण्णासओ दाओ । वारसगी । सोलस वासा परियाओ । सेस जहा गोयमस्स जाव^८ सेत्तुजे सिद्धे ॥

१,२,३. ना० १११७ ।

४. अ० ११६-१४ ।

५. अ० ११४ ।

६. ओ० सू० १५ ।

७. अ० ११७ ।

८. अ० ११७-२४ ।

- ६ एव—मयाली उवयाली पुरिससेणे य वारिसेणे य ।
 एव—पज्जुण्णे वि, नवर—कण्हे पिया^१, रुप्पिणी माया^२ ।
 एव—सवे वि, नवर—जववई माया ।
 एव—अणिरुद्धे वि, नवर—पज्जुण्णे पिया, वेदब्भी माया ।
 एव—सच्चणेमी, नवर—समुट्ठविजए पिया, सिवा माया ।
 एव—दढणेमी वि^३ सव्वे एगगमा ॥

निक्खेव-पद

७. ^१●एवं खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स अंगस्स अतगडदसाण
 चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते^० ॥

— — —

१. से पिया (ख, ग, घ) ।

२. से माया (ख, ग, घ) ।

३. स० पा० —चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवयो ।

पंचमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

पउमावई

उक्खेव-पदं

- १ जइ णं भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स वग्गस्स अतगडदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण पचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

- १ पउमावई य २. गोरी, ३ गघारी ४ लक्खणा ५ सुसीमा य ।
- ६ जववड ७ सच्चभामा, ८. रुप्पिणी ९ मूलसिरि १०. मूलदत्ता वि ॥१॥
- ३ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

पउमावई-पदं

- ४ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण वारवई नगरी । जहा पढमे जाव' कण्हे वासुदेवे आहेवच्च जाव' कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥
५. तस्स ण कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावई नाम देवी होत्था—वण्णओ' ॥

१,२,३. ना० १।१।७ ।

४. अ० १।५-१४ ।

५. अ० १।१४ ।

६. ओ० सू० १५ ।

- ६ तेण कालेण तेण समएण अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे जाव' सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ । कण्हे वासुदेवे निग्गए जाव' पज्जुवासइ ॥
- ७ तए ण सा पउमावई देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठुट्ठा जहा देवई देवी जाव' पज्जुवासइ ॥
८. तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावईए य' •देवीए तीसे महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जाम धम्मं कहेइ, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण, सव्वाओ अदिण्णा-दाणाओ वेरमण, सव्वाओ परिग्गहातो वेरमण ° । परिसा पडिगया ॥
- ९ तए ण कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठणेमि वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इमीसे ण भते ! वारवईए नगरीए नवजोयणवित्थिण्णाए जाव' देवलोगभूयाए किंमूलाए विणासे भविस्सइ ?
१०. कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु कण्हा ! इमीसे वारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए जाव' देवलोगभूयाए सुरग्गि-दीवायणमूलाए विणासे भविस्सइ ॥
११. कण्हस्स वासुदेवस्स अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिए एय सोच्चा निसम्म अय अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—घण्णा ण ते जालि-मयालि-उवयालि-पुरिससेण-वारिससेण - पज्जुण्ण-सव-अणिरुद्ध- 'दढणेमि-सच्च-णेमि'°-प्पभियओ कुमारा जे ण चइत्ता हिरण्ण जाव' दाण दाइयाण परिभाएत्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिय मुडा' •भवित्ता अगाराओ अणगारिय ° पव्व-इया । अहण्ण अधण्णे अकयपुण्णे रज्जे य' ° •रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य ° अतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए गट्ठिए गिद्धे अज्झोववण्णे नो सचाएमि अरहओ अरिट्ठणेमिस्स" •अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय ° पव्वइत्तए ॥
१२. कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी—से नूण कण्हा ! तव अयं अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—घण्णा ण ते

१. अ० १।१८ ।

२. अ० ३।६१ ।

३. अ० ३।३१ ।

४ स० पा०—पउमावईए य धम्मकहा ।

५ अ० १।८ ।

६. अ० १।८ ।

७ चतुर्थवर्ग-प्रथमाध्ययनस्य गाथातश्चात्र द्वयो नमिन्नो व्यत्ययोस्ति ।

८. ना० १।५।४५ ।

९ सं० पा०—मुडा जाव पव्वइया ।

१०. सं० पा०—रज्जे य जाव अतेउरे ।

११. सं० पा०—अरिट्ठणेमिस्स जाव पव्वइत्तए ।

जालिप्पाभइकुमारा जाव^१ पव्वइया । अहणं अघण्णे जाव^२ नो संचाएमि अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । से नूण कण्हा ! अत्थे समत्थे ?

हता अत्थि । त नो खलु कण्हा ! एत भूत वा भव्व वा भविस्सइ वा जण्ण वासुदेवा चइत्ता हिरण्ण जाव^३ पव्वइस्सति ॥

१३. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ 'न एत भूत वा' • भव्व वा भविस्सइ वा जण्णं वासुदेवा चइत्ता हिरण्ण जाव^० पव्वइस्सति ?

१४ कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु कण्हा ! सव्वे वि य ण वासुदेवा पुव्वभवे निदाणकडा । से एतेणट्ठेणं कण्हा ! एव वुच्चइ 'न एतं भूत' • वा भव्वं वा भविस्सइ वा जण्ण वासुदेवा चइत्ता हिरण्ण जाव^० पव्वइस्सति ॥

१५. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठणेमि एव वयासी—अह ण भते ! इतो कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि ? कहि उववज्जिस्सामि ?

१६. तए ण अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एवं वयासी—एवं खलु कण्हा ! तुम वारवईए नयरीए सुरग्गि^६-दीवायण-कोव-निदड्ढाए^७ अम्मापिइ-नियग-विप्पहूणे रामेण वलदेवेण सर्द्धि दाहिणवेयालि अभिमुहे जुहिट्ठिल्लपामोक्खाण पचण्ह पडवाण पडुरायपुत्ताण पासं पडुमहुरं सपत्थिए कोसववणकाणणे^८ नग्गोहवर-पायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए पीयवत्थ-पच्छाडय-सरीरे जराकुमारेण तिवखेण कोदड-विप्पमुक्केण^९ उसुणा वामे पादे विद्धे समाणे कालमासे काल किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उज्जलिए नरए नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ॥

१७. तए ण से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म ओहय^{१०}•मणसकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए^० भियाइ ॥

१८ कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेव एव वयासी—मा णं तुम देवाणु-प्पिया ! ओहयमणसकप्पे जाव^{११} भियाह । एव खलु तुम देवाणुप्पिया ! तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ नरयाओ अणतर उव्वट्टित्ता इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए पडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे

१. अ० ५।११ ।

२. अ० ५।११ ।

३. ना० १।५।४५ ।

४. स० पा०—भूतं वा जाव पव्वइस्सति ।

५. स० पा०—भूत जाव पव्वइस्सति ।

६. सुरदीवायण (क, ख, ग) ।

७. निदद्धाते (ख, ग) ।

८. कोसवकाणणे (क, ख, ग, घ, वृपा) ।

९. मुक्केण (क) ।

१०. स० पा०—ओहय जाव भियाइ ।

११. अ० ५।१७ ।

वारसमे अममे नाम अरहा भविस्ससि । तत्थ तुम वहूइ वासाडं केवलि-
परियाग पाउणेत्ता सिञ्जिभ्हिसि वुञ्जिभ्हिसि मुच्चिहिसि परिनिव्वाहिसि सव्व-
दुक्खाण अत काहिसि ॥

१६. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म
हट्ठतुट्ठे जाव' अप्फोडेइ, अप्फोडेत्ता वग्गइ, वग्गित्ता तिवइ छिदड, छिदित्ता
सीहणाय करेइ, करेत्ता अरह अरिट्ठणेमि वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता
तमेव आभिसेक्क हत्थि दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव वारवई नयरी जेणेव सए गिहे
तेणेव उवागए । आभिसेयहत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव
वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ,
सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । वारवईए नयरीए
सिंघाडग^१ तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु हत्थिखधवरगया महया-
महया सट्ठेण^२ उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया ।
वारवईए नयरीए नवजोयणविच्छिण्णाए जाव' देवलोगभूयाए सुरग्गि-दीवायण-
मूलाए विणासे भविस्सइ, त जो ण देवाणुप्पिया । इच्छइ वारवईए नयरीए
राया वा जुवराया^३ वा ईसरे वा तलवरे वा माडविय-कोडुविय-इव्वभ-सेट्ठी वा
देवी^४ वा कुमारो वा कुमारी वा अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिए मुडे^५ भवित्ता
अगाराओ अणगारिय^६ पव्वइत्तए, त ण कण्हे वासुदेवे विसज्जेइ । पच्छातुरस्स
वि य सेअहापवित्त वित्ति अणुजाणइ । महया इड्डिसक्कारसमुदएण य से निक्ख-
मण करेइ । दोच्च पि तच्च पि घोसणय घोसेह, घोसेत्ता मम एय पच्चप्पिणह ॥

२० तए ण ते कोडुविया जाव' पच्चप्पिणति ॥

२१ तए ण सा पउमावई देवी अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अतिए वम्म सोच्चा निसम्म
हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणदिया जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियया अरह अरिट्ठणेमि
वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते । निग्गथ
पावयण^७, से जहेय तुब्भे वयह । ज नवर—देवाणुप्पिया । कण्ह वासुदेव
आपुच्छामि । तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिए मुडा^८ भवित्ता अगाराओ
अणगारिय^९ पव्वयामि ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवध करेहि ॥

१ अ० ३।२५ ।

२. स० पा०—सिंघाडग जाव उग्घोसेमाणा ।

३. अ० १।८ ।

४ जुगराया (क, ख) ।

५. X (क, ख) ।

६ स० पा०—मुडे जाव पव्वइत्तए ।

७. अ० ५।१६ ।

८. अ० ३।२५ ।

९ पू—ना० १।१।१०१ ।

१०. स० पा०—मुडा जाव पव्वयामि ।

२२ तए ण सा पउमावई देवी धम्मिय जाणप्पवर दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव वारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल^१परिग्गहिय दसणह सिरसावत्तं मत्थए अजलि^२ कट्टु कण्ह वासुदेवं एव वयासी—इच्छामि ण देवाणुप्पिया । तुव्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणां अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुडा^३ • भवित्ता अगाराओ अणगारियं^४ पव्वइत्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिबधं करेहि ॥

२३ तए ण से कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । पउमावईए देवीए महत्थ महग्घ महरिह निक्खमणाभिसेय उवट्टवेह, उवट्टवेत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

२४. तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव^५ तमाणत्तिय पच्चप्पिणत्ति ॥

२५. तए ण से कण्हे वासुदेवे पउमावइ देविं पट्टय^६ दुरुहेइ, अट्टसएण सोवण्णकलसाण जाव^७ महाणिक्खमणाभिसेएण अभिसिच्चइ, अभिसिच्चित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सिवियं दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता वारवईए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवयए पव्वए जेणेव सहसववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीय ठवेइ, 'पउमावइ देविं'^८ सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरह अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एस ण भते । मम अग्गमहिंसी पउमावई नाम देवी इट्ठा कता पिया मणुण्णा मणाभिरामा जाव^९ उवरपुप्फ पिव दुल्लहा सवणयाए, किमग पुण पासणयाए ? तण्ण अहं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्ख दलयामि । पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया । सिस्सिणिभिक्ख ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिबधं करेहि ॥

२६. तए णं सा पउमावई उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव

१. स० पा०—करयल ।

प्रतीयते ।

२. समाणी (घ) ।

४. अ० ५।२३ ।

३. स० पा०—मुडा जाव पव्वयामि । अत्र 'पव्वयामि' इति क्रियापद अशुद्ध प्रतिभाति । 'इच्छामि' क्रियापदस्य योगे सर्वत्रापि 'पव्व-इत्तए' इति पाठो दृश्यते । अर्थदृष्ट्याप्यसौ युक्तः । अत्र लिपिदोषेण परिवर्तनं जातमिति

५. पट्टयसि (घ) ।

६. राय० सू० २८० ।

७. पउमावई देवी (क, ख, ग, घ) ।

८. ना० १।१।१४५ ।

- आभरणालकार ओमुयइ, ओमुयित्ता सयमेव पचमुट्टियं लोय करेइ, करेत्ता जेणेव अरहा अरिट्टणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरह अरिट्टणेमि वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भते । लोए जाव' तं इच्छामि ण देवाणुप्पिएहिं^३ धम्ममाइक्खिय ॥
- २७ तए ण अरहा अरिट्टणेमी पउमावइ देविं सयमेव पव्वावेइ, पव्वावेत्ता सयमेव जक्खिणीए अज्जाए सिस्सिणित्ताए दलयइ ॥
- २८ तए ण सा जक्खिणी अज्जा पउमावइ देविं सयमेव पव्वावेइ' सयमेव मुडावेइ सयमेव सेहावेति' धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिए । गतव्व जाव' सजमेण० सजमियव्व ॥
२९. तए ण सा पउमावई देवी' तमाणाए तह चिट्ठइ जाव' सजमेण सजमइ ॥
३०. तए ण सा पउमावई अज्जा जाया । इरियासमिया जाव' गुत्तवभयारिणी ॥
- ३१ तए ण सा पउमावई अज्जा जक्खिणीए अज्जाए अतिए सामाइयमाइयाइ एवकारस अगाइ अहिज्जइ, व्हहिं चउत्थ-छट्टुट्टम-दसम-दुवालसेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणी विहरइ ॥
३२. तए ण सा पउमावई अज्जा बहुपडिपुण्णाइ वीस वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाण भूसेइ, भूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्टाए कीरइ नग्गभावे मुडभावे जाव' तमट्टं आराहेइ, चरिमुस्सासेहिं सिद्धा ॥

२-८ अज्भयणाणि

गोरिपभित्ति-पदं

- ३३ तेण कालेण तेण समएण वारवई नयरी । रेव्रयए पव्वए । उज्जाणे नदणवणे ॥
३४. तत्थ ण वारवईए नयरीए कण्हे वासुदेवे ॥
- ३५ तस्स ण कण्हस्स वासुदेवस्स गोरी देवी—वण्णओ'^७ ॥
- ३६ अरहा समोसढे । कण्हे णिग्गए । गोरी जहा पउमावई तहा'' निग्गया । धम्म-कहा । परिसा पडिगया । कण्हे वि ॥

१. ना० १।१।१४६ ।

७ ना० १।१।१५१ ।

२. पू०—ना० १।१।१४६ ।

८ ना० १।१।४० ।

३ सं० पा०—पव्वावेइ जाव सजमियव्व ।

९ ओ० सू० १५४ ।

४. पू०—ना० १।१।१५० ।

१०. ओ० सू० १५ ।

५. ना० १।१।१५० ।

११ अ० ५।७ ।

६. पू०—ना० १।१।१५१ ।

- ३७ तए ण सा गोरी जहा पउमावई तहा निक्खता जाव' सिद्धा ॥
 ३८ एवं—गन्धारी, लक्खणा, सुसीमा, जंववई, सच्चभामा, रुप्पिणी । अट्ट वि पउमावईसरिसाओ' ॥

६, १० अज्झयणाणि

मूलसिरी-मूलदत्ता-पद

- ३९ तेणं कालेण तेण समएण वारवईए नयरीए रेवयए पव्वए नंदणवणे उज्जाणे कण्हे वासुदेवे ॥
 ४० तत्थ ण वारवईए नयरीए कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्ते जंववईए देवीए अत्तए सवे नामं कुमारे होत्था—अहीणपडिपुण्णपचेदियसरीरे ॥
 ४१. तस्स ण सवस्स कुमारस्स मूलसिरी नाम भारिया होत्था—वण्णओ' ॥
 ४२. अरहा समोसडे । कण्हे निग्गए । मूलसिरी वि निग्गया, जहा पउमावई । जं नवर—देवाणुप्पिया । कण्ह वासुदेवं आपुच्छामि जाव' सिद्धा ।
 ४३. एव' मूलदत्ता वि ।

छट्ठो वग्गो

१,२ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ' • ण भते ! समणेणं भगवया महावीरेण अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाण पंचमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । छट्ठस्स ण भते । वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
 २. एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अतगडदसाणं छट्ठस्स वग्गस्स° सोलस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

- १ मकाड २. किंकमे चैव, ३. मोग्गरपाणी य ४ कासवे ।
 ५ खेमए' ६. धिइहरे चैव, ७. केलासे ८ हरिचदणे ॥१॥

१. अ० ५।२१-३२ ।

२. अ० ५।७, २१-३२ ।

३. ओ० नू० १५ ।

४. अ० ५।२१-३२ ।

५. अ० ५।३६-४२ ।

६. न० पा०—जइ छट्ठस्स उक्खेवखो नवर सोलस ।

७. खेमे (न) ।

६ वारत्त १० सुदसण ११ पुण्णभद्द तह १२ सुमणभद्द १३ सुपइट्ठे ।

१४. मेहे १५ ऽतिमुत्त १६ अलक्के, अज्झयणाण तु सोलसयं ॥२॥

३. जइ ण भते । समणेणं भगवया महावीरेण अट्टमस्स अगस्स अतगडदसाण छट्टस्स वग्गस्स सोलस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते । अज्झयणस्स अतगडदसाणं के अट्टे पण्णत्ते ?

मकाइ-किकम-पद

- ४ एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ॥
- ५ तत्थ ण मकाई नाम गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव' अपरिभूए ॥
- ६ तेणं कालेण तेणं समएण समणे भगव महावीरे आदिकरे गुणसिलए जाव' सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ । परिसा निग्गया ॥
- ७ तए ण से मकाई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे जहा पण्णत्तीए गगदत्ते' तहेव इमो वि जेट्ठपुत्त कुड्डुवे ठवेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीए सीयाए निक्खते जाव' अणगारे जाए—इरियासमिए' ॥
- ८ तए ण से मकाई अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए समाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ । सेस जहा खदगस्स' गुणरयण तवोकम्म । सोलसवासाइ परियाओ । तहेव विउले सिद्धे ॥
९. किकमे वि एव चेव जाव' विउले सिद्धे ।

तइयं अज्झयणं

मोग्गरपाणी

अज्जुण-मालागार-पदं

१०. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । चेल्लणा देवी ॥
११. तत्थ ण रायगिहे नयरे अज्जुणए नाम मालागारे परिवसइ—अड्ढे जाव' अपरिभूए ॥
- १२ तस्स ण अज्जुणयस्स मालायारस्स वधुमई नाम भारिया होत्था—सूमाल-पाणिपाया ॥
- १३ तस्स ण अज्जुणयस्स मालायारस्स रायगिहस्स नयरस्स वहिया, एत्थ ण

१. ना० १।५।७ ।

२. ना० १।१।६४ ।

३. म० १६।६८-७१ ।

४. ना० १।५।२६-३५ ।

५. पू०—ना० १।५।३५-३७ ।

६. म० २।५७-६६ ।

७. अ० ६।४-८ ।

८. ना० १।५।७ ।

- मह एगे पुष्कारामे होत्था—किण्हे जाव^१ महामेहनिउखभुए दसद्धवण्ण-
कुसुमकुसुमिए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिखूवे ॥
- १४ तस्स ण पुष्कारामस्स अदूरसामते, एत्थ ण अज्जुणयस्स मालायारस्स अज्जय-
पज्जय-पिइपज्जयागए अणेगकुलपुरिस-परंपरागए मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स
जक्खाययणे होत्था—पोराणे दिव्वे सच्चे जहा पुण्णभद्दे^२ ॥
- १५ तत्थ ण मोग्गरपाणिस्स पडिमा एग मह पलसहस्सणिप्फण्णं अओमय मोग्गर
गहाय चिद्वइ ॥

अज्जुणस्स जक्खपज्जुवासणा-पदं

- १६ तए णं से अज्जुणए मालागारे वालप्पभिइ चेव मोग्गरपाणि-जक्खभत्ते^३ यावि
होत्था । कल्लाकल्लि पच्छियपिडगाइं^४ गेण्हइ, गेण्हत्ता रायगिहाओ नयरओ
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव पुष्कारामे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पुष्फुच्चय करेइ, करेत्ता^५ अग्गाइं वराइं पुष्फाइ गहाय, जेणेव
मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स महरिह पुष्फच्चणं^६ करेइ, करेत्ता जण्णुपायपडिए
पणामं करेइ, तओ पच्छा रायमग्गसि विट्ति कप्पेमाणे विहरइ ॥

गोट्टीए अणाचार-पद

- १७ तत्थ ण रायगिहे नयरे ललिया नाम गोट्टी परिवसइ—अड्ढा जाव^७ अपरिभूता ज
कयसुकया यावि होत्था ॥
- १८ तए ण रायगिहे नगरे अण्णया कयाइ पमोदे घुट्टे यावि होत्था ॥
- १९ तए ण से अज्जुणए मालागारे कल्ल पभूयतराएहिं पुष्फेहिं कज्जं इति कट्टु
पच्चूसकालसमयसि वधुमईए भारियाए सद्धि पच्छियपिडयाइ गेण्हइ,
गेण्हत्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिह नगर
मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुष्कारामे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता वधुमईए भारियाए सद्धि पुष्फुच्चयं करेइ ॥
२०. तए णं तीसे ललियाए गोट्टीए छ गोट्टिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिस्स
जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागया अभिरममाणा चिद्वत्ति ॥
२१. तए ण से अज्जुणए मालागारे वधुमईए भारियाए सद्धि पुष्फुच्चयं करेइ,

१. ओ० सू० ४ ।

२. ओ० सू० २ ।

३. जक्खस्स भत्ते (घ) ।

४. पत्तिय० (क्व) ।

५. अतोये १२ सूत्रे 'पत्तिय भरेइ, भरेत्ता' इति
पाठो लभ्यते ।

६. पुष्फुच्चणिय (क) ।

७. ना० १।५।७ ।

‘पत्थियं भरेइ, भरेत्ता’ अग्गाइ वराइ पुप्फाइ गंहायं जेणेवं मोगगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ ॥

- २२ तए ण ते छ गोट्टिल्ला पुरिसा अज्जुणयं मालागार बधुमईए भारियाए सद्धि एज्जमाण पासति, पासित्ता अण्णमण्ण एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे बधुमईए भारियाए सद्धि इह हव्वमागच्छइ । त सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह अज्जुणय मालागार अवओडय-वधणय करेत्ता बधुमईए भारियाए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणाण विहरित्तए त्ति कट्टु एयमट्टु अण्णमण्णस्स पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता कवाडतरेसु निलुक्कति, निच्चला निप्फंदा तुसिणीया पच्छण्णा चिट्ठति ॥
२३. तए ण से अज्जुणए मालागारे बधुमईए भारियाए सद्धि जेणेव मोगगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, आलोए पणाम करेइ, महरिह पुप्फच्चण करेइ, जण्णुपायपडिए पणाम करेइ ॥
२४. तए ण छ गोट्टिल्ला पुरिसा दवदवस्स कवाडतरेहितो निग्गच्छति निग्गच्छित्ता अज्जुणय मालागार गेण्हति, गेण्हित्ता अवओडय^१-वधण करेति । वंधुमईए मालागारीए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणा विहरति ॥

अज्जुणस्स पडिसोध-पदं

- २५ तए ण तस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमज्भत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह बालप्पभिइ चेव मोगगरपाणिस्स भगवओ कल्लाकल्लि जाव^१ पुप्फच्चण करेमि, जण्णुपायपडिए पणाम करेमि, तओ पच्छा रायमग्गसि वित्ति कप्पेमाणे विहरामि । त जइ ण मोगगरपाणी जक्खे इह सण्णिहिए होते, से ण किं मम एयारूव आवइ पावेज्जमाण पासते ? त नत्थि ण मोगगरपाणी जक्खे इह सण्णिहिए । सुव्वत्ते^४ ण एस कट्टे ॥
- २६ तए ण से मोगगरपाणी जक्खे अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमेयारूव अज्भत्थियं जाव^१ वियाणेत्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरय अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता तडतडस्स^५ वधाइ छिदइ, छिदित्ता त पलसहस्सणिप्फण्ण अओमय मोगगर गेण्हइ, गेण्हित्ता ते इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएइ ॥
- २७ तए ण से अज्जुणए मालागारे मोगगरपाणिणा जक्खेण अण्णाइट्टे समाणे रायगिहस्स नगरस्स परिपेइतेण कल्लाकल्लि इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएमाणे घाएमाणे विहरइ ॥

१ × (घ) ।

४ सुव्वत्ते (ख, ग) ।

२ उवउडग (क, ग), अवउड (ख) ।

५ अं० ६।२५ ।

३ अं० ६।१६ ।

६ तडतडतडस्स (ख) ।

रायगिहे आतंक-पदं

- २८ तए ण रायगिहे नयरे सिंघाडग'-●तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह°-महापहपहेसु बहुजणो अणमणस्स एवमाइक्खइ एव भासेइ एव पणवेइ एव परूवेइ -- एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहे नयरे बहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ ॥
- २९ तए ण से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे जाव' घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ । तं मा ण तुब्भे केइ कट्टस्स वा तणस्स वा पाणियस्स वा पुप्फफलाण वा अट्टाए सडर निग्गच्छइ । मा ण तस्स सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु दोच्च पि तच्च पि घोसणय घोसेह, घोसेत्ता खिप्पामेव ममेय पच्चप्पिणह ॥
- ३० तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव' पच्चप्पिणत्ति ॥
- ३१ तत्थ ण रायगिहे नगरे सुदसणे नाम सेट्ठी परिवसइ—अड्ढे ॥
३२. तए ण से सुदसणे समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवाजीवे जाव' विहरइ ॥

भगवओ समोसरण-पदं

- ३३ तेण कालेण समएण समणे भगव' ●महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणु-गाम द्दइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे गुणसिलए चेडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता अहापडिरूव ओग्गहं ओगिण्हत्ता सजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे ° विहरइ ॥
- ३४ तए ण रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणो अणमणस्स एवमाइक्खइ जाव' किमग पुण विपुलस्स अट्टस्स गहणयाए ?

सुदंसणस्स वंदणट्ठ गमण-पदं

- ३५ तए ण तस्स सुदसणस्स बहुजणस्स अतिए एय सोच्चा निसम्म अय अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुपज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे

१. स० पा०—सिंघाडग जाव महापहपहेसु ।

४ ना० १।५।४७ ।

२ अ० ६।२८ ।

५ म० पा०—भगव जाव समोसडे विहरइ ।

३. अ० ६।२९ ।

६ ओ० सू० ५२ ।

जाव' विहरइ । त गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि^१—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता करयल^२—
•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए^३ अजलि कट्टु एव वयासी—एवं खलु अम्मयाओ । समणे भगव महावीरे जाव^४ विहरइ । त गच्छामि ण समण भगव महावीर वंदामि नमसामि^५ •सक्कारेसि सम्माणेमि कल्लाण मंगल देवय चेइयं^६ पज्जुवासामि ॥

३६. तए णं सुदसण सेट्ठि अम्मापियरो एव वयासी—एव खलु पुत्ता । अज्जुणए मालागारे^७ •मोगगरपाणिणा जक्खेण अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहस्स नयरस्स परिपेरतेण कल्लाकल्लि वहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे^८ घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ । त मा ण तुम पुत्ता । समण भगव महावीर वदए निग्गच्छाहि, मा ण तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ । तुमण्ण इह गए चेव समण भगव महावीर वदाहि ॥

३७. तए ण से सुदसणे सेट्ठी अम्मापियर एव वयासी—किण्ण अह अम्मयाओ । समणं भगव महावीर इहमागय इह पत्त इह समोसठ इह गए चेव वदिस्सामि ? तं गच्छामि णं अह अम्मयाओ । तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणं भगव महावीर वदए ॥

३८. तए ण सुदसण सेट्ठि अम्मापियरो जाहे नो सच्चाएति वहीहि आघवणाहि पण्णवणाहि सण्णवणाहि विण्णवणाहि^९ •परूवणाहि आघवेत्तए पण्णवेत्तए सण्णवेत्तए विण्णवेत्तए^{१०} परूवेत्तए ताहे एव वयासी—अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवंध करेहि ॥

३९. तए ण से सुदसणे अम्मापिईहि अब्भणुण्णाए समाणे ण्हाए सुद्धप्पावेसाइ^{११} •मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकिय^{१२} सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पायविहारचारेण रायगिह नगर मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छिता मोगगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामतेण जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

सुदंसणस्स अज्जुणकय-उवसग्ग-पद

४०. तए ण से मोगगरपाणी जक्खे सुदसण समणोवासय अदूरसामतेण वीईवयमाण-

१ ना० १।१।६७ ।

२. द्रष्टव्य. अग्रिम पाठ ।

३ स० पा०—करयल^० ।

४ ना० १।१।६७ ।

५ स० पा०—नमसामि जाव पज्जुवासामि ।

६ स० पा०—मालागारे जाव घाएमाणे ।

७ स० पा०—विण्णवणाहि जाव पत्त्वेत्तए ।

८ 'सुद्धप्प' त्ति शुद्धात्मा यावत्करणात् वेसियाइ पवर वत्थाइ परिहिए^० (वृ),

९ स० पा०—सुद्धप्पावेसाइ जाव सरीरे ।

वीईवयमाण पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे त पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं मोग्गर उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदसणे समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४१ तए ण से सुदसणे समणोवासए मोग्गरपाणिं जक्ख एज्जमाण पासइ, पासित्ता अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असभते वत्थतेण भूमि पमज्जइ, पमज्जित्ता करयल'•परिग्गहिय दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—नमोत्थु ण अरहताण जाव' सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपाविउकामस्स । पुव्वि पि ण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए मुसावाए [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], थूलए अदिण्णादाणे [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], सदारसतोसे कए जावज्जीवाए, इच्छापरिमाणे कए जावज्जीवाए । तं इदाणिं पि ण तस्सेव अतिय सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जावज्जीवाए, मुसावाय अदत्तादाण मेहुण परिग्गह पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्व कोहं जाव' मिच्छादसणसल्ल पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्व असण पाणं खाइम साइम चउव्विह पि आहार पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जइ ण एत्तो उवसग्गाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पइ पारेत्तए । अहण्ण एत्तो उवसग्गाओ न मुच्चिस्सामि 'तो मे तहा' पच्चक्खाए चेव त्ति कट्टु सागार पडिम पडिवज्जइ ॥

४२ तए ण से मोग्गरपाणी जक्खे त पलसहस्सणिप्फण्ण अओमयं मोग्गर उल्लाले-माणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदसणे समणोवासए तेणेव उवागए । नो चेव णं सचाएइ सुदसण समणोवासय तेयसा समभिपडित्तए ॥

उवसग्गनिवारण-पदं

४३ तए ण से मोग्गरपाणी जक्खे सुदसण समणोवासय सव्वओ समता' परिघोले-माणे-परिघोलेमाणे जाहे नो चेव ण सचाएइ सुदसण समणोवासय तेयसा समभिपडित्तए, ताहे सुदसणस्स समणोवासयस्स पुरओ सपक्खि सपडिदिंसि ठिच्चा सुदसण समणोवासय अणिमिसाए दिट्ठीए सुचिर निरिक्खइ, निरिक्खित्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीर विप्पजहइ, विप्पजहित्ता तं पलसहस्सणिप्फण्णं

१. स० पा०—करयल ।

२ ओ० सू० २१ ।

३ ओ० सू० ११७ ।

४. तओ मे (क) ।

५. अयोमय (ख) ।

६ सम्मताओ (क, ख) ।

अओमयं मोगगरं गहाय जामेव दिस^१ पाउव्भूए तामेव दिस पडिगए ॥

४४ तए ण से अज्जुणए मालागारे मोगगरपाणिणा जक्खेण विप्पमुक्के समाणे 'धस'^२ त्ति धरणियलंसि सव्वगेहि निवडिए^३ ॥

४५. तए ण से सुदंसणे समणोवासए 'निख्वसग्ग' मिति कट्टु पडिम पारेइ ॥

सुदंसणस्स अज्जुणस्स य भगवओ पज्जुवासणा-पदं

४६ तए ण से अज्जुणए मालागारे तत्तो मुहुत्ततरेण आसत्थे समाणे उट्टेइ, उट्टेत्ता सुदसण समणोवासय एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया । के कहि वा सपत्थिया ?

४७. तए ण से सुदसणे समणोवासए अज्जुणय मालागार एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । अह सुदसणे नाम समणोवासए—अभिगयजीवाजीवे^४ गुणसिलए चेइए समण भगव महावीर वदए सपत्थिए ॥

४८ तए ण से अज्जुणए मालागारे सुदसण समणोवासय एव वयासी—त इच्छामि^५ ण देवाणुप्पिया । अहमवि तुमए सद्धि समण भगव महावीर वदित्तए जाव^६ पज्जुवासित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेहि ॥

४९ तए ण सुदसणे समणोवासए अज्जुणएण मालागारेण सद्धि जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जुणएण मालागारेण सद्धि समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, वदइ नमसइ जाव^७ पज्जुवासइ ॥

५० तए ण समणे भगव महावीरे सुदसणस्स समणोवासगस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स तीसे य^८ 'महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्त धम्ममाइक्खइ^९ । सुदसणे पडिगए ॥

अज्जुणस्स पव्वज्जा-पदं

५१. तए ण से अज्जुणए मालागारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टु^{१०} 'तुट्टे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदिता नमसित्ता एव वयासी^{११}—सद्धामि ण भते ! निग्गथ पावयण^{१२}, 'पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण, रोएमि ण

१. दिसि (ख, ग) ।

२. सनिवडिए (क) ।

३. पू०—ना० १।५।४७ ।

४. गच्छामि (क) ।

५. अ० ६।३५ ।

६. अ० ६।३५ ।

७. स० पा०—तीसे य धम्मकहा ।

८. पू०—ओ० सू० ७१-७७ ।

९. स० पा०—हट्टु^{१०} ।

१०. स० पा०—पावयण जाव अव्वुट्टेमि ।

भते । निग्गथ पावयणं °, अब्भुट्टेमि ण भते । निग्गथ पावयण ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध करेहि ॥

- ५२ तए ण से अज्जुणए मालागारे उत्तर^१ •पुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्क-
मिक्का ° सयमेव पचमुट्टिय लोय करेइ, करेत्ता जाव^२ अणगारे जाए^३, •से ण
वासीचदणकप्पे समतिणमणि-लेट्ठुकचणे समसुहदुक्खे इहलोग-परलोग-अप्प-
डिवद्धे जीविय-मरण-निरवक्खे ससारपारगामी कम्मनिग्घायणट्ठाए एव च ण °
विहरइ ॥

अज्जुणअणगारस्स तित्तिवखा-पद

- ५३ तए ण से अज्जुणए अणगारे ज चेव दिवस मुडे^४ •भवित्ता अगाराओ अणगा-
रिय ° पव्वइए त चेव दिवस समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता
नमसित्ता इम एयारूव अभिग्गह ओगेण्हइ—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठुछट्टेण
अणिविक्खत्तेण^५ तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु अयमेया-
रूव अभिग्गह^६, ओगेण्हइ^७ ओगेण्हित्ता जावज्जीवाए^८ •छट्ठुछट्टेणं अणिविक्खत्तेण
तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे ° विहरइ ॥
- ५४ तए ण से अज्जुणए अणगारे छट्ठुक्खमणवारणयसि पढमाए पोरिसीए^९ सज्झाय
करेइ^{१०}, •वीयाए पोरिसीए भाण भियाइ, तइयाए पोरिसीए जहा गोयमसामी
जाव^{११} रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खाय-
रिय ° अडइ ॥
- ५५ तए ण त अज्जुणय अणगार रायगिहे नगरे उच्च^{१२}—•नीय-मज्झिमाइ कुलाइ
घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए ° अडमाण वहवे इत्थीओ ये पुरिसा य डहरा
य महल्ला य जुवाणा य एव वयासी—इमेण मे पिता मारिए । इमेण मे माता
मारिया । इमेण मे भाया भगिणी भज्जा पुत्ते धूया सुण्हा मारिया । इमेण मे
अण्णयरे सयण-सवधि-परियणे मारिए त्ति कट्टु अप्पेगइया अक्कोसति, अप्पे-
गइआ हीलति निंदति खिसति गरिहति तज्जति तालेति ॥

१ स० पा०—उत्तर ° ।

२ ना० १।५।३४, ३५ ।

३ स० पा०—अणगारे जाए जाव विहरइ ।

पू०—ना० १।५।३५, ३६ ।

४ स० पा०—मुडे जाव पव्वइए ।

५ ओग्गह (क, ख, ग) ।

६ × (क, ख, ग) ।

७. ओग्गह (क, ख, ग) ।

८ 'अभिग्गह ओगेण्हइ' इति द्विरुक्त पाठोस्ति ।

९ स० पा०—जावज्जीवाए जाव विहरइ ।

१० × (घ) ।

११ स० पा०—करेइ जहा गोयमसामी जाव
अडइ ।

१२ म० २।१०७ १०८ ।

१३ स० पा०—उच्च जाव अडमाण ।

५६ तए णं से अज्जुणए अणगारे तेहिं वहुहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि य महल्लेहि य जुवाणएहि य आओसिज्जमाणे^१ जाव^२ तालेज्जमाणे तेसिं मणसा वि अपउस्समाणे सम्म सहइ सम्म खमइ सम्म तितिक्वइ सम्मं अहियासेइ, सम्मं सहमाणे सम्म खमाणे सम्म तितिक्वमाणे सम्म अहियासेमाणे रायगिहे नयरे उच्च-णीय-मज्झिम-कुलाइ अडमाणे जइ भत्त लभइ तो पाण न लभइ, अह पाण लभइ तो भत्त न लभइ ॥

५७ तए ण से अज्जुणए अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसादी अपरिततजोगी^३ अडइ, अडित्ता रायगिहाओ नगराओ पडिणिक्वमइ, पडिणिक्वमित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगव महावीरे^४ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते गमणागमणाए पडिक्कमेइ, पडिक्कमेत्ता एसणमणेसण आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाण^० पडिदसेइ, पडिदसेत्ता समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुणाए समाणे अमुच्छिंए अगिद्धे अगडिंए अणज्झोववण्णे बिलमिव पण्णगभूएण अप्पाणेण तमाहार आहारेइ ।

५८ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया रायगिहाओ पडिणिक्वमइ, पडिणिक्वमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

अज्जुणअणगारस्स सिद्धि-पदं

५९. तए ण से अज्जुणए अणगारे तेण ओरालेण विपुलेण पयत्तेण पग्गहिएण महाणुभागेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अप्पाण भूसेइ, भूसेत्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्टाए कीरइ नग्गभावे जाव^५ सिद्धे ॥

४-१४ अज्भयणाणि

कासवादि-पदं

६०. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । कासवे नाम गाहावई परिवसइ । जहा मकाई^६ । सोलस वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥

१ आतोसिज्जमाणे (क, ख, ग,) ।

२. अ० ६।५५ ।

३. °जोती (क, ख, ग,) ।

४ स० पा० — जहा गोयमसामी तहा पडिदसेइ ।

५ ओ० सू० १५४ ।

६ अ० ६।५-८ ।

- ६१ एव^१—खेमए वि गाहावई, नवरं—कायंदी नयरी । सोलस वासा परियाओ । विपुले पव्वए सिद्धे ॥
- ६२ एव^२—धिइहरे वि गाहावई कायदीए नयरीए । सोलस वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
- ६३ एव^३—केलासे वि गाहावई, नवर—साएए नयरे । वारस वासाइ परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
- ६४ एव^४—हरिचदणे वि गाहावई साएए नयरे । वारस वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
६५. एव^५—वारत्तए वि गाहावई, नवर—रायगिहे नगरे । वारस वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
- ६६ एव^६—सुदसणे वि गाहावई, नवर—वाणियग्गामे नयरे । दूइपलासए चेइए । पच वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
- ६७ एव^७—पुण्णभद्दे वि गाहावई वाणियग्गामे नयरे । पचवासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
- ६८ एव^८—सुमणभद्दे वि गाहावई सावत्थीए नयरीए । बहुवासाइं परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
- ६९ एव^९—सुपइट्टे वि गाहावई सावत्थीए नयरीए । सत्तावीस वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
- ७० एव^{१०}—मेहे वि गाहावई रायगिहे नयरे । बहूइ वासाइ परियाओ । विपुले सिद्धे ॥

पणरसमं अज्भयणं

अइमुत्ते

अइमुत्तकुमार-पदं

७१. तेण कालेण तेण समएण पोलासपुरे नगरे । सिरिवणे उज्जाणे ॥
७२. तत्थ णं पोलासपुरे नयरे विजये नाम राया होत्था ॥
७३. तस्स ण विजयस्स रण्णो सिरि नाम देवी होत्था—वण्णओ' ॥
७४. तस्स ण विजयस्स रण्णो पुत्ते सिरि ए देवीए अत्तए अतिमुत्ते नाम कुमारे
होत्था—सूमालपाणिपाए' ॥

गोयमस्स भिक्खायरिया-पदं

७५. तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव' सिरिवणे' •उज्जाणे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण
तवसा अप्पाण भावेमाणे ° विहरइ ॥
७६. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूती
अणगारे जहा पण्णत्तीए जाव' पोलासपुरे नयरे उच्च'-•नीय-मज्झिमाइ कुलाइ
घरसमुदाणस्स भिक्खायरिय ° अडइ ॥

गोयम-अइमुत्तकुमार-संवाद-पदं

७७. इम च ण अइमुत्ते कुमारे ण्हाए जाव' सव्वालकारविभूसिए वहूहिं दारएहि-य
दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं

१ ओ० सू० १५ ।

५ भ० २।१०६-१०६ ।

२ पू०—ओ० सू० १४३ ।

६ स० पा०—उच्च जाव अडइ ।

३ अं० ६।३३ ।

७ अ० ३।४४ ।

४. स० पा०—सिरिवणे विहरइ ।

सपरिवुडे साओ गिहाओ पडिणिक्खमड, पडिणिक्खमित्ता जेणेव इदट्टाणे तेणेव उवागए । तेहि वहीहि दारएहि य सपरिवुडे अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ॥

- ७८ तए ण भगव गोयमे पोलासपुरे नयरे उच्च'-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमु-
दाणस्स भिक्खायरियाए ° अडमाणे इदट्टाणस्स अदूरसामतेण वीईवयड ॥
७९. तए ण से अइमुत्ते कुमारे भगव गोयम अदूरसामतेण वीईवयमाणं पासइ,
पासित्ता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागए, भगव गोयम एव वयासी—के णं
भते ! तुव्भे ? कि वा अडह ?
- ८० तए ण भगव गोयमे अइमुत्तं कुमार एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ।
समणा निग्गथा इरियासमिया जाव' गुत्तवभयारी उच्च'-नीय-मज्झिमाइ
कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए ° अडामो ॥
- ८१ तए ण अइमुत्ते कुमारे भगव गोयम एव वयासी—एह णं भंते ! तुव्भे जा णं
अह तुव्भ भिक्ख दवावेमी त्ति कट्टु भगव गोयमं अगुलीए गेण्हइ, गेण्हित्ता
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए ॥
- ८२ तए ण सा सिरिदेवी भगव गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्टुट्टा आसणाओ
अव्भुट्टेइ, अव्भुट्टेत्ता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागया । भगव गोयमं
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता
विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
८३. तए ण से अइमुत्ते कुमारे भगव गोयम एवं वयासी—कहि ण भते ! तुव्भे
परिवसह ?
८४. तए ण से भगव गोयमे अइमुत्त कुमार एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !
मम धम्मोवएसए^५ समणे भगव महावीरे आइगरे जाव' सिद्धिगइ-
नामधेज्जं ठाण सपाविउकामे इहेव पोलासपुरस्स नगरस्स वहिया सिरिवणे
उज्जाणे अहापडिख्व ओगह ओगिण्हित्ता सजमेण^७ ° तवसा अप्पाण ° भावेमाणे
विहरइ । तत्थ ण अम्हे परिवसामो ॥

अइमुत्तकुमारस्स पव्वज्जा-पदं

८५. तए ण से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—गच्छामि ण भते ! अह
तुव्भेहि सिद्धि समणं भगव महावीर पायवंदए ।
अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवघ करेहि ॥

१ स० पा०—उच्च जाव अडमाणे ।

२. ना० १।१।१६४ ।

३ स० पा—उच्च जाव अडामो ।

४. जेणेवह (ख, घ) ।

५ धम्मोवएसए धम्मनेयरी (क); ° धम्मो
नेतारी (ख, घ) ।

६ ओ० सू० १६ ।

७ सं० पा०—सजमेण जाव भावेमाणे ।

- ८६ तए ण से अइमुत्ते कुमारे भगवया गोयमेण सद्धि जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ जाव' पज्जुवासइ ॥
- ८७ तए ण भगव गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागए^१, •उवागच्छिता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते गमणागमणाए पडिक्कमेइ, पडिक्कमेत्ता एसणमणेसण आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाण^२ पडिदसेइ, पडिदसेत्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
- ८८ तए ण समणे भगव महावीरे अइमुत्तस्स कुमारस्स तीसे य^३ •महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममाइक्खइ^४ ॥
- ८९ तए ण से अइमुत्ते कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुट्टे^५ एव वयासी—सद्दहामि ण भते । निग्गथ पावयण जाव' ज नवरं—देवाणुप्पिया । अम्मापियरो आपुच्छामि तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिए जाव' पव्वयामि ।
अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवध करेहि ॥
- ९० तए णं से अइमुत्ते कुमारे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागए जाव' इच्छामि ण अम्मयाओ । तुव्भेहि^६ अट्ठभणुणाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वडत्तए ॥
- ९१ तए ण त अइमुत्त कुमार अम्मापियरो एव वयासी—वाले सि ताव तुम पुत्ता । असवुद्धे, किं ण तुम जाणसि धम्म ?
- ९२ तए ण से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एव वयासी—एव खलु अह^७ अम्मयाओ । ज चेव जाणामि त चेव न जाणामि, ज चेव न जाणामि त चेव जाणामि ॥
- ९३ तए णं तं अइमुत्त कुमार अम्मापियरो एव वयासी—कह ण तुम पुत्ता । ज चेव जाणसिं त चेव न जाणसि ? ज चेव न जाणसि त चेव जाणसि ?
- ९४ तए ण से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एव वयासी—जाणामि अह अम्मयाओ । जहा जाएण अवस्स मरियव्व, न जाणामि अह अम्मयाओ । काहे वा कहिं वा कह वा कियच्चिरेण^८ वा ? न जाणामि ण अम्मयाओ ! केहिं कम्माययणेहिं^९ जीवा नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेसु उववज्जति,

१. अ० ६।३५ ।

२. स० पा०—उवागए जाव पडिदसेइ ।

३. स० पा०—तीसे य धम्मकहा ।

४. पू०—अ० ६।५१ ।

५. ना० १।१।१०१ ।

६. अ० ५।२१ ।

७. अ० ३।६४-६६ ।

८. ×(क) ।

९. जाणामि (ख, ग) ।

१०. केवचिरेण (क, ख, ग, घ) ।

११. कम्मायारेहिं (क), कम्मायाणेहिं (ख, ग), कम्मावयणेहिं (वृषा) ।

जाणामि णं^१ अम्मयाओ ! जहा सएहिं कम्माययणेहिं जीवा नेरइय-^२तिरिक्ख-
जोणिय-मणुस्स-देवेसु^३ उववज्जति ।

एव खलु अहं अम्मयाओ ! ज चेव जाणामि त चेव न जाणामि, ज चेव न
जाणामि त चेव जाणामि । त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुव्भेहिं अवभणुणाए
जाव^४ पव्वइत्तए ॥

६५ तए ण त अइमुत्त कुमार अम्मापियरो जाहे नो सचाएत्ति वहुंहिं आघवणाहिं^५
•य पणवणाहिं य सणवणाहिं य विणवणाहिं य आघवित्तए वा पणवित्तए
वा सणवित्तए वा विणवित्तए वा ताहे अकामकाइं चेव अइमुत्त कुमारं एव
वयासी^६ —त इच्छामो ते जाया ! एगदिवसमवि रायसिरि पासेत्तए ॥

६६ तए ण से अइमुत्ते कुमारे अम्मापिउवयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ।
अभिसेओ जहा महव्वलस्स^७ निक्खमण जाव^८ सामाइयमाइयाइ एक्कारस
अगाइ^९ अहिज्जइ । वहुइ वासाइं सामणपरियाग पाउणइ, गुणरयणं तवोकम्मं
जाव^{१०} विपुले सिद्धे ॥

सोलसमं अज्झयणं

अलक्के

अलक्क-पद

६७ तेण कालेण तेण समएण वाणारसी नयरी, काममहावणे चेइए ॥

६८ तत्थ ण वाणारसीए अलक्के नाम राया होत्था ॥

६९ तेण कालेण तेण समएणं समणे भगव महावीरे जाव^१ विहरइ । परिसा
निग्गया ॥

१०० तए ण अलक्के राया इमीसे कहाए लद्धट्टे हट्टुट्टे जहा कोणिए जाव^२ पज्जुवा-
सइ । धम्मकहा ॥

१. हं (ख) ।

२. स० पा०—नेरइय जाव उववज्जति ।

३. अ० ६।६० ।

४. स० पा०—आघवणाहिं^५ ।

५. महावलस्स (क, घ) । म० ११।१६८ ।

६. म० ११।१६८, १६९ ।

७. × (क, ख ग,) ।

८. अ० १।२३, २४।

९. अ० ६।३३ ।

१०. ओ० सू० ५४-६६ ।

१०१ तए ण से अलक्के राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए जहा उद्दायणे^१
तहा निक्खते, नवर—जेट्टुपुत्त रज्जे अभिसिचइ । एक्कारस अगाइ । बहू
वासा परियाओ जाव^२ विपुले सिद्धे ॥

निक्खेव-पदं

१०२ एव खलु जवू । समणेण^३ भगवया महावीरेण अट्टमस्स अगस्स अतगडदसाण^०
छट्टमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

— — —

१. भग० १३।१०८-११६ ।

२. अं० ६।६६ ।

३. स० पा०—समणेण जाव छट्टमस्स ।

सत्तमो वग्गो

१-१३ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भते^१ । *समणेण भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

- १ नदा तह २. नदवई^२, ३ नदुत्तर ४ नंदिसेणिया चेव
५ मरुता ६. मुमरुता ७ महमरुता ८. मरुदेवा य अट्टमा ॥१॥
९ भद्दा य १०. मुभद्दा य, ११. सुजाया १२. सुमणाडया
१३ भूयदिण्णा य वोधव्वा, सेणियभज्जाण नामाइ ॥२॥
- ३ जइ ण भते^३ *समणेण भगवया महावीरेण अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाण के अट्ठे पण्णत्ते ?

नंदादि-पदं

- ४ एव खलु जवू ! तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया—वण्णओ^४ ॥
- ५ तस्स ण सेणियस्स रण्णो नदा नाम देवी होत्था—वण्णओ^५ । सामी समोसढे । परिसा निग्गया ॥
- ६ तए ण सा नदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा हट्ठुट्ठा कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता जाण दुरुहड, जहा पउमावई जाव^६ एक्कारस अगाइ अहिज्जित्ता वीस वासाइ परियाओ जाव^७ सिद्धा ॥
- ७ एव तेरम वि देवीओ नदागमेण^७ नेयव्वाओ ॥

-
- | | |
|--|----------------|
| १ म० पा० जइ ण भते ^१ सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस । | ५ ओ० सू० १५ । |
| २ नदमती (क), नदमती (ख) । | ६ अ० ५।२१-३१ । |
| ३ म० पा०—जइ ण भते ^३ तेरस । | ७ अं० ५।३२ । |
| ४ ओ० सू० १४ । | ८. अ० ७।३-६ । |

अट्ठमो वग्गो पढमं अज्झयणं काली

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भते' । •समणेण भगवया महावीरेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण अट्ठमस्स वग्गस्स ° दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जइ—

संगहणी-गाहा

- १ काली २ मुकाली ३ महाकाली, ४ कण्हा ५ सुकण्हा ६ महाकण्हा ।
७ वीरकण्हा य बोधव्वा, ८ रामकण्हा तहेव य ।
९ पिउसेणकण्हा नवमी, दसमी १० महासेणकण्हा य ॥१॥
- ३ जइ' •ण भंते । समणेण भगवया महावीरेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण ° दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स अतगडदसाण के अट्ठे पण्णत्ते ?

कालीए रयणावलितव-पदं

- ४ एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण चंपा नाम नयरी होत्था । पुण्णभदे चेइए ॥
- ५ तत्थ ण चपाए नयरीए कोणिए राया—वण्णओ' ॥
- ६ तत्थ ण चपाए नयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया,

१ सं० पा०—जइ ण भते । अट्ठमस्स वग्गस्स २ सं० पा०—जइ दस ।
उक्खेवओ जाव दस । ३ ओ० सू० १४ ।

काली नाम देवी होत्या—वण्णओ^१ । जहा नदा जाव^२ सामाइयमाइयाइं
एक्कारस अगाइ अहिज्जइ । वहुहि चउत्थ^३—छट्टुम-दसम-दुवालसेहि
मासद्धमासखमणेहि विविहेहि तवोकम्मेहि^४ । अप्पाण भावेमाणी^५ विहरइ ॥

७ तए ण सा काली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवा-
गया, उवागच्छित्ता एव वयासी—इच्छामि ण अज्जाओ ! तुव्भेहि अग्गणुण्णयाया
समाणी रयणावलि तव उवसपज्जित्ता ण विहरित्ताए ।

अहासुह देवाणुप्पिए ! मा पडिवधं करेहि ॥

८ तए ण सा काली अज्जा अज्जचदणाए अग्गणुण्णयाया समाणी रयणावलि तव
उवसपज्जित्ता ण विहरइ, त जहा—

चउत्थ	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छट्टु	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टुम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टु छट्टाइं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चउत्थ	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छट्टु	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टुम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चोद्दसम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
सोलसम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टारसम ^६	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
वीसडम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
वावीसडम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चउवीसडम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छव्वीसडम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टावीसडम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
तीसडम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
वत्तीसडम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चोत्तीसडम	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोत्तीस छट्टाइं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

१. ओ० सू० १५ ।

२. अ० ७।५, ६ ।

३. सं० पा०—चउत्थ जाव अप्पाण

४. भावेमाणा (ग) ।

५. अट्टारस (क) ।

चोत्तीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
वत्तीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
तीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्ठावीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छव्वीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चउवीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
वावीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
वीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्ठारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चोद्दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
वारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छट्ठ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चउत्थ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्ठ छट्ठाइ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छट्ठ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चउत्थ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।

एव खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी एगेण सवच्छरेण तिहि मासेहि वावीसाए य अहोरत्तेहि अहासुत्त' •अहाअत्थ अहातच्च अहामग्ग अहाकप्प सम्म काएण फासिया पालिया सोहिया तोरिया किट्टिया ° आराहिया भवइ ॥

- ६ तयाणतर च ण दोच्चाए परिवाडीए चउत्थ करेइ, करेत्ता विगइवज्ज पारेइ । छट्ठ करेइ, करेत्ता विगइवज्ज पारेइ ।
 एव जहा पढमाए परिवाडीए तहा बीयाए वि, नवर—सव्वपारणए^१ विगइवज्ज पारेइ^१ । •एव खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स विइया परिवाडी एगेण सवच्छरेण तिहि मासेहि वावीसाए य अहोरत्तेहि अहासुत्त जाव^२ ° आराहिया भवइ ॥

१ स० पा०—अहासुत्त जाव आराहिया ।

२. सव्वत्थपारणए (ख, ग, घ) ।

३ स० पा०—पारेइ जाव आराहिया ।

४. अ० दादा ।

१०. तयाणतर च ण तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करेत्ता अलेवाडं पारेइ ।
सेस तहेव । नवर अलेवाड पारेइ ॥

११. एव चउत्था परिवाडी । नवर सव्वपारणए आयविल पारेइ । सेस तं चेव ॥

संगहणी-गाहा

‘पढममि सव्वकाम, पारणय’ विइयए विगइवज्ज ।

तइयमि अलेवाड, आयविलमो चउत्थम्मि ॥१॥

१२. तए ण सा काली अज्जा रयणावली-तवोकम्मं पंचहिं सवच्छरेहिं दोहि य
मासेहि अट्टावीसाए य दिवसेहि अहासुत्त जाव^१ आराहेत्ता जेणेव अज्जचदणा
अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचदण अज्ज वदइ नमसइ,
वदित्ता नमसित्ता वहीहि चउत्थ जाव^२ अप्पाण भावेमाणी विहरइ ॥

१३. तए ण सा काली अज्जा तेण ओरालेण^३ विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण
कल्लाणेण सिवेण धण्णेण मगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण
उदारेण महाणुभागेण तवोकम्मेण सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्टिचम्मावणद्धा
किडिकिडियाभूया किंसा^४ धम्मणिसतया जाया यावि होत्था ‘जीवजीवेण
गच्छइ जाव^५ सुहुयहुयासणे’ इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेण, तेएण, तवतेय-
सिरीए अईव-अईव उवसोहेमाणी-उवसोहेमाणी चिट्ठइ ॥

१४. तए ण तीसे कालीए अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले अयमज्जत्थिए
चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खदयस्स चित्ता जाव^६
अत्थि उट्टाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेय कल्ल
पाउप्पभायाए रयणीए जाव^७ उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा
जलते अज्जचदण अज्ज आपुच्छित्ता अज्जचदणाए अज्जाए अठ्ठणुण्णायाए
समाणीए सलेहणा-भूसणा-भूसियाए भत्तपाण-पडियाइक्खियाए काल अणव-
कखमाणीए विहरित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल जेणेव अज्जचदणा
अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचदण अज्ज वदइ नमसइ, वदित्ता
नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण अज्जो ! तुब्भेहिं अठ्ठणुण्णाया समाणी
सलेहणा^८-भूसणा-भूसियाए भत्तपाण-पडियाइक्खियाए काल अणवकख-
माणीए^९ विहरित्तए ।
अहासुह ॥

१. पढमसि सव्वकामपारणयसि (क), पढमसि
सव्वगुणिए पारणक (वृपा) ।

२. अ० ८।८।

३. अ० ८।९ ।

४. म० पा०—उरालेण जाव धम्मणिसतया ।

५. म० २।६४ ।

६. से जहा डगाल जाव सुहुयहुयासणे (क, ख,
ग, घ,) ।

७. म० २।६६ ।

८. ना० १।१।२४ ।

९. स० पा०—सलेहणा जाव विहरित्तए ।

१५. तए ण सा काली अज्जा अज्जचदणाए अठ्ठभणुण्णाया समाणां सलेहणा-भूसणा-भूसिया जाव' विहरइ ॥
१६. तए ण सा काली अज्जा अज्जचदणाए अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइ अट्टु सवच्छराइ सामणपरियाग पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव' चरिमुस्सासेहि' सिद्धा ॥
१७. निक्खेवओ ॥

वीयं अज्झयणं

सुकाली

सुकालीए कणगावलितव-पद

- १८ तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी । पुण्णभट्टे चेइए । कोणिए राया ॥
- १९ तत्थ ण सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया, सुकाली नाम देवी होत्था । जहा काली तहा सुकाली वि निक्खता जाव' बहूहि जाव' तवोकम्मैहि अप्पाण भावेमाणी विहरइ ॥
- २० तए ण सा सुकाली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचदणा अज्जा' •तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता एव वयासी०—इच्छामि ण अज्जाओ । तुवभेहि अठ्ठभणुण्णाया समाणी कणगावली-तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए । एव जहा रयणावली तहा कणगावली वि, नवर—तिसु ठाणेसु अट्टमाइ करेइ, जहि रयणावलीए छट्ठाइ ।
- एक्काए परिवाडीए सवच्छरो पच मासा वारस य अहोरत्ता । चउण्ह पच वरिसा नव मासा अट्टारस दिवसा । सेस तहेव' । नव वासा परियाओ जाव' सिद्धा ॥

१ अ० ८।१४ ।

२ ओ० सू० १५४ ।

३ चरिमुस्सासनिस्सासेहि (ख, ग) ।

४,५. अ० ८।६ ।

६ स० पा०—अज्जा जाव इच्छामि ।

७ अ० ८।१२-१६ ।

८ अ० ८।१६ ।

तइयं अज्भयणं

महाकाली

महाकालीए खुड्डागसीहनिक्कीलियतव-पदं

२१. एव^१—महाकाली वि, नवरं—खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्म उवसपज्जित्ता
ण विहरइ, त जहा—

चउत्थ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दुवालसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चोद्दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालस	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चोद्दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
वीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्ठारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोद्दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
वारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चोद्दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दमम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।

वारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चउत्थ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छट्ठ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चउत्थ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।

तहेव चत्तारि परिवाडीओ । एक्काए परिवाडीए छम्मासा सत्त य दिवसा ।
चउण्ह दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा जाव' सिद्धा ॥

चउत्थं अज्भयणं

कण्हा

कण्हाए महालयसीहणिककीलियतव-पद

२२ एव^३—कण्हा वि, नवर—महालय सीहणिककीलिय तवोकम्म जहेव खुड्ढाग,
नवर—चोत्तीसइम जाव नेयव्व । 'तहेव ओसारेयव्व'^१ । एक्काए वरिस
छम्मासा अट्ठारस य दिवसा । चउण्ह छव्वरिसा दो मासा वारस य अहोरत्ता ।
सेसं जहा कालीए जाव' सिद्धा ॥

पंचमं अज्भयणं

सुकण्हा

सुकण्हाए भिक्खुपडिमा-पदं

२३ एव^४—सुकण्हा वि, नवर—सत्तसत्तमिय भिक्खुपडिम उवसपज्जिता ण
विहरइ ।

१ अ० ८।१२-१६ ।

२. अ० ८।६-८ ।

३. × (क) ।

४ अ० ८।१२-१६ ।

५ अ० ८।६-८ ।

पढमे सत्तए एक्केक्क भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्क पाणयस्स ।

दोच्चे सत्तए दो-दो भोयणस्स दो-दो पाणयस्स पडिगाहेइ ।

तच्चे सत्तए तिण्णि-तिण्णि दत्तीओ भोयणस्स, तिण्णि-तिण्णि दत्तीओ पाणयस्स ।

चउत्थे सत्तए चत्तारि-चत्तारि दत्तीओ भोयणस्स, चत्तारि-चत्तारि दत्तीओ पाणयस्स ।

पचमे सत्तए पच-पच दत्तीओ भोयणस्स, पच-पच दत्तीओ पाणयस्स ।

छट्ठे सत्तए छ-छ दत्तीओ भोयणस्स, छ-छ दत्तीओ पाणयस्स ।

सत्तमे सत्तए सत्त-सत्त दत्तीओ भोयणस्स, सत्त-सत्त दत्तीओ पाणयस्स पडिगाहेइ ।

एवं खलु एय सत्तसत्तमिय भिक्खुपडिम एगूणपण्णाए रातिदिएहि एगेण य छण्णउएण भिक्खासएण अहासुत्त जाव' आराहेत्ता जेणेव अज्जचदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता अज्जचदण अज्ज वदइ नमसइ, वदित्ता नम-सित्ता एव वयासो—इच्छामि ण अज्जाओ ! तुवभेहि अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठमिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरेत्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिए ! मा पडिवध करेहि ॥

२४ तए ण सा सुकण्हा अज्जा अज्जचदणाए अज्जाए अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठमिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ—

पढमे अट्ठए एक्केक्क भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्क पाणयस्स जाव अट्ठमे अट्ठए अट्ठट्ठ भोयणस्स पडिगाहेइ, अट्ठट्ठ पाणयस्स ।

एव खलु एय अट्ठट्ठमिय भिक्खुपडिम चउसट्ठीए रातिदिएहि दोहि य अट्ठासी-एहि भिक्खासएहि अहासुत्त' आराहेत्ता जाव' नवनवमिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरइ—

पढमे नवए एक्केक्क भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्क पाणयस्स' जाव नवमे नवए नव-नव दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेइ, नव-नव पाणयस्स ।

एव खलु एय नवनवमियं भिक्खुपडिम एक्कासीतिए राइदिएहि चउहि य पचुत्तरेहि भिक्खासएहि अहासुत्त' आराहेत्ता जाव' दसदसमिय भिक्खुपडिम उवसंपज्जित्ता ण विहरइ—

पढमे दसए एक्केक्क भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्क पाणयस्स जाव

१ अ० ८१८ ।

२ पू०—अ० ८१२३ ।

३ अ० ८१२३ ।

४. पाणस्स (क, ख, ग, घ) ।

५. पू०—अ० ८१२३ ।

६. अ० ८१२३ ।

दसमे दसए दस-दस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेइ, दस-दस पाणयस्स ।

एवं खलु एयं दसदसमिय भिक्खुपडिम एक्केण राइदियसएणं अद्धछट्ठेहि य भिक्खासएहि अहासुत्त जाव' आराहेइ, आराहेत्ता वहूहि चउत्थ-छट्ठम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि विविहेहि तवोकम्मैहि अप्पाण भावेमाणी विहरइ ॥

२५ तए णं सा सुकण्हा अज्जा तेण ओरालेण' तवोकम्मेण जाव' सिद्धा ॥

२६ निकखेवओ ॥

छट्ठं अज्झयणं महाकण्हा

महाकण्हाए खुड्ढागसव्वओभद्द-पदं -

२७. एवं—महाकण्हा वि, नवर—खुड्ढाग सव्वओभद्द पडिम' उवसपज्जित्ता ण विहरइ--

चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छट्ठ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दुवालसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दुवालसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चउत्थ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छट्ठ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दुवालसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चउत्थ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छट्ठ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।

१. अ० ८।८ ।

४. अ० ८।६-८ ।

२ पू०—अ० ८।१३ ।

५ × (क, ख, ग, घ) ।

३ अ० ८।१३-१६ ।

अट्टुम	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेड ।
दसम	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेड ।
छट्टुं	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेड ।
अट्टुम	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेड ।
दसम	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेड ।
दुवाणसमं	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेड ।
चउत्थं	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेड ।
दसमं	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेड ।
दुवाणसम	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेड ।
चउत्थ	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेड ।
छट्टु	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेड ।
अट्टुम	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेड ।

एव एतु एय सुडुगनव्वओभट्टस्स तवोकम्मस्स पढम परिवाडि तिहि मासेहि
 वनहि य दिवसेहि अहानुत्त जाव' आराहेत्ता दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेड,
 करेत्ता विगडवज्जं पारेड, पारेत्ता जहा रयणावलीए तहा एत्थ वि चत्तारि
 परिवाडीओ । पारणा तहेव । चउत्थ कालो सवच्छरो मासो दस य दिवसा ।
 मेनं तत्रेव जाव' निट्ठा ॥

२८ निस्सेवसो ॥

सत्तमं अज्जकयणं

वीरकण्ठा

वीरकण्ठाए महासवमव्वओभट्टपटिमा-पद

२९ एव'— वीरकण्ठा वि, तवरं—सहानय मव्वओभट्ट तवोकम्म उवगपज्जिता णं
 गित्तद, त लया—

अट्टुम	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेड ।
दसम	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेड ।
अट्टुम	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेड ।
दसम	करेड,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेड ।

एव तहेव ओसारेइ जाव चउत्थ करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणिय पारेइ ।
एक्काए कालो एक्कारस मासा पण्णरस य दिवसा । चउण्ह तिण्णि वरिसा
दस य मासा । सेस जाव' सिद्धा ॥

दसमं अज्झयणं

महासेणकण्हा

महासेणकण्हाए आयविलवड्ढमाणतव-पद

३२. एव^१—महासेणकण्हा वि, नवर—आयविलवड्ढमाण तवोकम्म उवसपज्जिता ण
विहरइ, त जहा—

आयविल	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ ।
वे आयविलाइ	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ ।
तिण्णि आयविलाइ	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ ।
चत्तारि आयविलाइ	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ ।
पच आयविलाइ	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ ।
छ आयविलाइ	करेइ,	करेत्ता	चउत्थ	करेइ ।

एव एककुत्तरियाए वड्ढोए आयविलाइ वड्ढति चउत्थतरियाइ जाव आयविलसय
करेइ, करेत्ता चउत्थ करेइ ॥

३३ तए ण सा महासेणकण्हा अज्जा आयविलवड्ढमाण तवोकम्म चोद्दसहिं वासेहिं
तिहिं य मासेहिं वोसहिं य अहोरत्तेहिं 'अहासुत्त जाव' आराहेत्ता^२ जेणेव
अज्जचदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छिता वदइ नमसइ, वदित्ता
नमसित्ता वूर्हहिं चउत्थ^३—छट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं
तवोकम्मेहिं अप्पाण^४ भावेमाणी विहरइ ॥

३४ तए ण सा महासेणकण्हा^५ अज्जा तेण ओरालेण जाव^६ तवेण तेएण तवतेय-
सिरीए अईव-अईव उवसोहेमाणी चिट्ठइ ॥

१. अ० ८।१२-१६।

२ अ० ८।६-८।

३ अ० ८।८।

४ अहासुत्त जाव सम्म काएण फासेइ जाव

आराहेत्ता (क, ख, ग, घ) ।

५. न० पा०—चउत्थ जाव भावेमाणी ।

६. महमेणकण्हा (क, ख, ग) ।

७ अ० ८।१३।

दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोदसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चउत्थ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दुवालसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चोदसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थ	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
छट्ट	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

एक्काए कालो अट्ट मासा पच य दिवसा । चउण्हं दो वासा अट्ट मासा वीस य दिवसा । सेस तहेव जाव' सिद्धा ॥

अट्ठमं अज्झयणं

रामकण्हा

रामकण्हाए भद्दोत्तरपडिमा-पदं

३० एव^३—रामकण्हा वि, नवरं—भद्दोत्तरपडिमं उवसंपज्जित्ता ण विहरइ, तं जहा—

दुवालसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चोदसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोदसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

वीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चोइसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दुवालसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
अट्टारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
वीसइम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
दुवालसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
चोइसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।
सोलसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणिय	पारेइ ।

एक्काए कालो छम्मासा वीस य दिवसा । चउण्ह कालो दो वरिसा दो मासा
वोस य दिवसा' । सेस तहेव जहा काली जाव' सिद्धा ॥

नवमं अञ्जयणं

पिउसेणकण्हा

पिउसेणकण्हाए मुत्तावलितव-पद

३१ एव'—पिउसेणकण्हा वि, नवर—मुत्तावलिं तवोकम्म उवसपज्जिता ण विहरइ,
त जहा—

१ 'दिवसा' शब्दस्य पञ्चात् वाचनान्तरे प्रतिमा-

त्रयस्य लक्षण-गाथा उपलभ्यते, यथा—

आई दोण्ह चउत्थ,

आई भद्दोत्तराए वारसम ।

वारसम सोलसम,

वीसइम चेव चरिमाइ ॥१॥

पढम तइय तो जाव,

चरिमय ऊणमाइओ पूरे ।

पचय परिवाडीओ,

खुडुग-भद्दुत्तराए य ॥२॥

पढम तु चउत्थ,

जाव चरिमय ऊणमाइओ पूरे ।

सत्त य परिवाडीओ,

महालए सव्वओभद्दे ॥३॥

२ अ० ८।१२-१६ ।

३ अ० ८।६-८ ।

- ३५ तए ण तीसे महासेणकण्हाए अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले चिता जहा खदयस्स जाव' अज्जचदणं अज्ज आपुच्छइ' ॥
- ३६ *तए ण सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचदणाए अज्जाए अवभणुण्णयाया समाणी सलेहणा-भूसणा-भूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया° काल अणवकख-माणी विहरइ ॥
- ३७ तए ण सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अगाइं अहिज्जित्ता, वहुपडिपुण्णाइ सत्तरस वासाइ परियाय पालइत्ता, मासियाए सलेहणाए अप्पाण' भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरड नग्गभावे जाव' तमट्ठ' आराहेइ, आराहेत्ता चरिम-उस्सासनिस्सासेहि' सिद्धा ॥

संगहणी-गाहा

अट्ट य वासा आई, एक्कोत्तरयाए जाव सत्तरस ।
एसो खलु परियाओ, सेणियभज्जाण नायव्वो ॥१॥

निक्खेव-पदं

३८ एव खलु जवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव° संपत्तेण अट्टमस्स अगस्स अंतगडदसाण अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

परिसेसो

अतगडदसाण अगस्स एगो सुयखधो । अट्ट वग्गा । अट्टसु चैव दिवसेसु' उद्दिस्सति' । तत्थ पढमविइयवग्गे दस-दस उद्देसगा । तइयवग्गे तेरस उद्देसगा । चउत्थपचमवग्गे दस-दस उद्देसगा । छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा । सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा । अट्टमवग्गे दस उद्देसगा । सेस जहा नायाधम्मकहाणं ॥

ग्रन्थ परिमाण

कुल अक्षर—४००५१
अनुष्टुप् श्लोक—१२५१ अ० १६

— — —

१ भ० २।६६ ।

२ पृ०—अ० ८।१४ ।

३. न० पा०—जाव सलेहणा काल ।

४. अत्ताण (क) ।

५ ओ० सू० १५४ ।

६. चरिमउस्सामेहि (व, ग) ।

७ ना० १।१।७ ।

८. उद्दिन्सिज्जति (क्व) ।

अणुत्तरोववाइयदसात्रो



पढमो वग्गो

पढमं अज्झयण

जाली

उक्खेव-पदं

- १ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे । अज्जसुहम्मस्स समोसरण । परिसा निग्गया जाव^१ जवू पज्जुवासमाणे^२ एवं वयासी—जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव^३ सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स ण भते ! अगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव^४ सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए ण से सुहम्मे^५ अणगारे जवू-अणगार एव वयासी—एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव^६ सपत्तेण नवमस्स अगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तिण्णि वग्गा पण्णत्ता ॥
- ३ जइ ण भंते । समणेण भगवया महावीरेण जाव^७ सपत्तेण नवमस्स अगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण तत्रो^८ वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते । वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?
- ४ एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव^९ सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

१ ना० १।१।६,७ ।

२. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ), ना० १।१।७

सूत्रानुसारेण अय पाठ स्वीकृतः ।

३,४ अ० ३।७५ ।

५ सुधम्मं (क, ख, ग) ।

६,७ अ० ३।७५ ।

८ तिण्णि (ख) ।

९ अ० ३।७५ ।

संगहणी-गाहा

- १ जालि २. मयालि ३. उवयाली^१, ४. पुरिससेणे य ५. वारिसेणे य ।
 ६ दीहदते य ७. लट्टदते य, ८. 'विहल्ले ९. वेहायसे'^२ १०. अभए इ य कुमारे ॥१॥
 ५. जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेणं जाव^३ सपत्तेणं पढमस्स^४ वग्गस्स
 दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते । अज्झयणस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं
 समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्टे पण्णत्ते ?

जालि-पदं

- ६ एवं खलु जवू ! तेण कालेणं तेण समएणं रायगिहे नयरे—रिद्धत्थिमियसमिद्धे^५ ।
 गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । जाली
 कुमारो । जहा मेहो । अट्टट्टओ दाओ^६ ॥
 ७ •'तए ण से जालोकुमारे उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुइगमत्थएहि जाव^७
 माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे ° विहरइ ॥
 ८ सामीं समोसढे । सेणिओ निग्गओ । जहा मेहो तहा जाली वि निग्गओ^८ । तहेव
 निक्खतो जहा मेहो^९ । एक्कारस अगाइं अहिज्जइ । गुणरयणं तवोकम्मं 'जहा
 खदयस्स'^{१०} । एव जा चेव खदगस्स^{११} वत्तव्वया, सा चेव चित्तणा, आपुच्छणा ।
 थेरेहि सद्धि विउल पव्वय तहेव दुरुहइ, नवरं—सोलस वासाइ सामण्णपरियाग
 पाउणित्ता^{१२}, कालमासे काल किच्चा उड्डं चदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारा-
 रूवाण^{१३} सोहम्मीसाण^{१४}—सणकुमार-माहिंद-बभ-लतग-महासुक्क-सहस्साराणय-
 पाणय °-आरणच्चुए कप्पे नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे उड्ड दूर वीईवइत्ता
 विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥
 ९. तए ण ते थेरा भगवतो जालि अणगार कालगय जाणित्ता परिणिव्वाणवत्तिय
 काउस्सग्ग करेति, करेत्ता पत्त-चीवराइं गेण्हति । तहेव उत्तरंति^{१५} जाव^{१६} इमे से
 आयारभडए ॥

१ उवमालि (क, ख); ओवयाली (ग) ।

महावीरे जाव (घ) ।

२ विहल्ले विहायसे (ग, घ,) ।

१० ना० १।१।६६-१५१ ।

३. अ० ३।७५ ।

११ × (क) । भ० २।६१-६३ ।

४. अणुत्तरोववाइयदसाण पढमस्स (ख, ग, घ) ।

१२. खंदय (क, ख, घ,) । भ० २।६४-६६ ।

५. रिद्धि ° (ख, ग, घ,) ।

१३ पाउणिय (ख) ।

६ पू०—न० १।१।६१-६२ ।

१४ पू०—ना० १।१।२११ ।

७ म० पा०—जाव उप्पि पाना विहरइ ।

१५ म० पा०—सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए ।

८ ना० १।१।६३ ।

१६ ओतरति (ख) ।

९. तेण कालेण तेण समएण ममणे भगव १७. भ० २।७० ।

- १० भतेति । भगव गोयमे^१ •समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता^० एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी जाली नाम अणगारे पगइभद्दए^२ । से ण जाली अणगारे कालगए कहिं गए ? कहिं उववण्णे ?
- ११ एव खलु गोयमा । मम अतेवासी तहेव जहा खदयस्स जाव^३ कालगए उडढ चदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाण जाव^४ विजए विमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥
- १२ जालिस्स ण भते । देवस्स केवइय काल ठिई पणत्ता ? गोयमा । वत्तीस सागरोवमाइ ठिई पणत्ता ॥
- १३ से ण भते । ताओ^५ देवलोयाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा । महाविदेहे वासे सिज्जिहिइ ॥

निक्खेव-पद

- १४ एव खलु जवू^६ । समणेण भगवया महावीरेण जाव^७ सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वगस्स पढमज्भयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥

२-१० अज्भयणाणि

मयालिपभित्ति-पदं

- १५ एव सेसाण वि नवण्ह^८ भाणियव्व, नवर—सत्त^९ धारिणिसुआ, वेहल्लवेहायसा^{१०} चेल्लणाए, अभए नदाए । 'सव्वेसि सेणिओ पिया'^{१०} । आइल्लाण पचण्ह सोलस वासाइ सामणपरियाओ । तिण्ह वारस वासाइ । दोण्ह पच वासाइ^{११} । आइल्लाणं पचण्ह आणुपुव्वीए उववाओ विजए वेजयते जयते अपराजिए

१. स० पा०—गोयमे जाव एव ।

२. पू०—ना० १।१।२०६ ।

३. म० २।७१ ।

४. अ० १।८ ।

५. ततो (ख) ।

६. अ० ३।७५ ।

७. अट्ठण्ह (क, ख,) ।

८. छ (ख, ग) ।

९. °वेहासा (क, ख); विहल्लवेहासे (ग) ।

१०. × (क, ख) ।

११. अतोऽप्रे 'मासियाए सलेहणाए' इति पाठः द्वितीयवर्गस्य ६ सूत्रानुसारेण अध्या-हर्तव्य ।

सव्वडुसिद्धे । 'दीहदते सव्वटुसिद्धे' उक्कमेणं सेसा । अभओ विजए । सेसं जहा पढमे^२ ॥

निक्खेव-पदं

१६. एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव^३ सपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाण पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

—

१. × (क) ।

२. पढमे । अभयस्स नाणत्त, रायग्गिहे नयरे मेणिए राया, नदा देवी, सेसं तहेव [क, ख, ग] । असौ पाठो वाचनान्तरस्य प्रतीयते ।

अस्मिन् नानात्वस्य सकेतोऽस्ति, किन्तु यन्नानात्व प्रदर्शितं तत् सर्वं पूर्वमायातमेव ।
३. अ० ३।७५ ।

दोच्चो वग्गो

१-१३ अज्झयणाणि

उक्खेव-पद

- १ जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भते । वग्गस्स अणुत्तरोव-वाइयदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

- १ दीहसेणे २ महासेणे, ३ 'लट्ठदते य ४ गूढदते य'^१ ५ सुद्धदते य ।
६. हल्ले ७ दुमे ८ दुमसेणे, ९ महादुमसेणे य आहिए ॥१॥
- १० सीहे य ११ सीहसेणे य, १२. महासीहसेणे य आहिए ।
१३. पुण्णसेणे य बोधव्वे, तेरसमे होइ अज्झयणे ॥२॥
- ३ जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-दसाण दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स ण भते । वग्गस्स पढमज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

दीहसेणादि-पदं

४. एव खलु जवू । तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । जहा जाली तहा जम्म बालत्तण

१,२. अ० ३।७५ ।

४ अ० ३।७५ ।

३ गूढदते य लट्ठदते य (क), °गूहदते य (ख) ।

कलाओ, नवर—दीहसेणो कुमारो सव्वेव वत्तव्वया जहा जालिस्स जाव' अत काहिइ ॥

५. एव तेरस वि रायगिहे नयरे । सेणिओ पिया । धारिणी माया । तेरसण्ह वि सोलस वासा परियाओ । आणुपुव्वीए विजए दोण्णि, वेजयते दोण्णि, जयते दोण्णि, अपराजिए दोण्णि, सेसा महादुमसेणमादी पच सव्वट्टसिद्धे ॥

निक्खेव-पदं

- ६ एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेणं जाव' सपत्तेणं अणुत्तरोदवाइय-दसाण दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । मासियाए सलेहणाए दोसु वि वग्गोसु ॥

तच्चो वग्गो पढमं अज्झयणं धण्णे

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^१ सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-
दसाण दोच्चस्स ण वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स ण भते ! वग्गस्स
अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण भगवया महावीरेण जाव^१ सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^१ सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-
दसाण तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

- १ धण्णे य २. सुणक्खत्ते य, ३ इसिदासे य आहिए ।
४. पेल्लए ५ रामपुत्ते य, ६. चदिमा ७ पिट्ठिमा^१ इ य ॥१॥
८ पेढालपुत्ते अणगारे, 'नवमे पोट्टिले वि य'^२ ।
१० वेहल्ले दसमे वुत्ते, इमे य दस आहिया ॥२॥
- ३ जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^१ सपत्तेण अणुत्तरोववाइय-
दसाण तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स
समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

धण्णस्स गिहवास-पद

- ४ एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण काकदी^३ नाम नयरी होत्था—

१,२,३ अ० ३।७५ ।

४. पुट्टिमा (ग, घ,) ।

५. अणगारे पुट्टिले इ य (क) ।

६ अ. ३।७५ ।

७ कागदी (क, ख) ।

रिद्धत्थिमियसमिद्धा' । सहस्रववणे उज्जाणे—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे' ।
जियसत्तू राया ॥

- ५ तत्थ ण काकदीए नयरीए भद्दा नाम सत्थवाही परिवसइ—अड्ढा जाव' अपरि-
भूया ॥
- ६ तीसे ण भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते धण्णे नाम दारए होत्था—अहीणपडिपुण्ण-
पचेदियसरीरे जाव' सुरूवे । पचधाईपरिग्गहिए जहा महव्वलो जाव' वावत्तरिं
कलाओ अहीए जाव' अलभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥
- ७ तए ण सा भद्दा सत्थवाही धण्णं दारय उम्मुक्कवालभाव जाव' अलंभोगसमत्थ
वा वि जाणित्ता वत्तीस पासायवडेसए कारेइ—अव्वभुग्गयमूसिए जाव' पडिरूवे ।
तेसि मज्जे एग च ण मह भवण कारेइ—अणेगखभसयसण्णिविट्ठ जाव'
पडिरूव ॥
- ८ तए ण सा भद्दा सत्थवाही त धण्ण दारय वत्तीसाए इवभवरकण्णगाणं एगदिव-
सेण पाणि गेण्हावेइ । वत्तीसओ दाओ' ॥
- ९ तए ण से धण्णे दारए उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुइगमत्थएहि जाव'
विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

धण्णस्स पव्वज्जा-पद

- १० तेण कालेण तेण समएणं समणे भगवं महावीरे समोसडे । परिसा निग्गया । राया
जहा कोणिओ 'तहा निग्गओ'^{३३} ॥
११. तए ण तस्स धण्णस्स दारगस्स त महया'^{३४} जणसद्द वा जाव'^{३५} जणसन्निवाय वा
सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणो-

- | | |
|---|---|
| १. पू०—ओ० सू० १ । | १२ × (क) । ओ० सू० ५४-६६ । |
| २. पू०—ना० १।५।४ । | १३ स० पा०—जहा जमाली तथा निग्गओ । |
| ३. ना० १।५।७ । | नवर पायचारेण । जाव ज नवरं अम्मय |
| ४. ओ० सू० १४३ । | भद्द सत्थवाहिं आपुच्छामि । तए ण अह |
| ५. भ० ११।१५४-१५६, राय० सू० ८०४-
८०७ । | देवाणुप्पियाण अतिए पव्वयामि जाव जहा |
| ६. राय० सू० ८०८, ८०९, ओ० सू० १४७,-
१४८ । | जमाली तथा आपुच्छइ । मुच्छिया । |
| ७. राय० सू० ८१० । | वुत्तपडिवुत्तया जहा महव्वले जाव जाहे नो |
| ८. ना० १।१।८६ । | सचाएइ जहा थावच्चापुत्तस्स जियसत्तु |
| ९. ना० १।१।८६ । | आपुच्छइ । छत्तचामराओ । सयमेव जियसत्तु |
| १०. पू०—ना० १।१।६०-६२ । | निक्खमण करेति जहा थावच्चापुत्तस्स |
| ११. ना० १।१।६३ । | कण्हो जाव पव्वइए । अणगारे जाए— |
| | डरियासमिए जाव गुत्तवभचारी । |
| | १४. ओ० सू० ५२ । |

गए सकप्पे समुप्पज्जित्था—किण्ण अज्ज काकदीए नयरीए इदमहे इ वा' जण्ण एते वह्वे उग्गा भोगा जाव' निग्गच्छति—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कचुइपुरिस सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया । अज्ज काकदीए नयरीए इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ?

- १२ तए णं से कचुइपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए घण्ण दारय एव वयासी'—एव खलु देवाणुप्पिया । अज्ज समणे भगव महावीरे काकदीए नयरीए वहिया सहसववणे उज्जाणे अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हत्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तए ण एते वह्वे उग्गा भोगा जाव' निग्गच्छति ॥
- १३ तए णं से घण्णे दारए कचुइपुरिसस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्टुट्ठे जाव पायचारेण जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीरे तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥
- १४ तए ण समणे भगव महावीरे घण्णस्स दारयस्स तीसे य महइमहालियाए इसि-परिसाए जाव' धम्म परिकहेइ ॥
१५. तए ण से घण्णे दारए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते । निग्गथं पावयण जाव' अम्मय भद् सत्थवाहि आपुच्छामि, तए ण अह देवा-णुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वयामि । अहासुह देवाणुप्पिया ॥
- १६ जहा जमाली तथा आपुच्छइ' ॥
- १७ तए ण सा भद्दा सत्थवाही त अणिट्ठ अकत अप्पिय अमणुण्ण अमणाम असुय-पुव्व फरुस गिर सोच्चा निसम्म' धसत्ति सव्वगेहिं सनिवडिया । वुत्तपडिवुत्तया जहा महव्वले' ॥
- १८ तए ण त घण्ण दारय भद्दा सत्थवाही जाहे नो सचाएइ जाव'' जियसत्तु

१. पू०—म० ६।१५८ ।

२ म० ६।१५८ ।

३ पू०—म० ६।१५९ ।

४ म० ६।१५९; ओ० सू० ५२ ।

५. म० ६।१६२ ।

६. म० ६।१६३ ।

७ म० ६।१६४ ।

८ पू०—म० ६।१६५-१६७ ।

९ पू०—म० ६।१६८ ।

१० म० ११।१६६, ना० १।१।१०६-११३ ।

११ ना० १।५।१९,२० ।

आपुच्छइ—इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! धण्णस्स दारयस्स निक्खममाणस्स छत्त-
मउड-चामराओ य विदिन्नाओ ॥

- १९ तए ण जियसत्तू राया भद् सत्यवाहिं एवं वयासी—अच्छाहि ण तुम देवाणु-
प्पिए ! सुनिव्वुत्त-वीसत्था, अहण्ण सयमेव धण्णस्स दारयस्स निक्खमण-
सक्कार करिस्सामि । सयमेव जियसत्तू निक्खमण करेइ, जहा थावच्चापुत्तस्स
कण्हो' ॥
- २० तए ण से धण्णे दारए सयमेव पचमुट्टिय लोय करेइ जाव' पव्वइए ॥
२१. तए ण से धण्णे दारए अणगारे जाए—इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए
आयाण-भड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-
पारिद्वावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते
गुत्ते गुत्तिदिए^० गुत्तवभयारी ॥

धण्णस्स तवचरिया-पद

२२. तए ण से धण्णे अणगारे ज चेव दिवस मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वइए, त चेव दिवस समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता
एव वयासी—इच्छामि' ण भते ! तुव्भेहि अठ्ठभणुण्णाए समाणे जावज्जीवाए
छट्ठुत्तुत्तेण अणिक्खित्तेण आयविलपरिग्गहिण्ण तवोकम्मणेण अप्पाण भावेमाणे'
विहरित्तए छट्ठुस्स वि य ण पारणयसि कप्पइ मे' आयविल पडिगाहेत्तए', नो
चेव ण अणायविल । त पि य संसट्ठ, नो चेव ण अससट्ठ । त पि य ण उज्झिय-
धम्मिय, नो चेव ण अणुज्झिय-धम्मिय । त पि य ज अण्णे वहवे समण-माहण-
अतिहि-क्खिण-वणीमगा नावकखति ।
अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवघ करेहि ॥
- २३ तए ण से धण्णे अणगारे समणेण भगवया महावीरेण अठ्ठभणुण्णाए समाणे
हट्ठुत्तुत्ते जावज्जीवाए छट्ठुत्तुत्तेण अणिक्खित्तेण आयविलपरिग्गहिण्ण' तवो-
कम्मणेण अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
- २४ तए ण से धण्णे अणगारे पढम-छट्ठुखमणपारणयसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय
करेइ, जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, जाव' जेणेव काकदी नयरी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काकदीए नयरीए उच्च'-^०नीय-मज्झिमाइ कुलाइ

१. ना० १।५।२२-३३ ।

२. ना० १।५।३४ ।

३ एव खलु इच्छामि (ख, ग) ।

४. भावेमाणस्स (ख, ग) ।

५ × (क, ख) ।

६. पडिगहित्तए (क) ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. भ० २।१०७-१०९ ।

९ स० पा०—उच्च जाव अडमाणे ।

घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए^० अडमाणे आयविल' •पडिगाहेति, नो चेव ण अणायविल । त पि य ससट्ठ, नो चेव ण अससट्ठ । त पि य उज्झिय-धम्मियं, नो चेव ण अणुज्झिय-धम्मिय त पि य ज अण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा^० नावकखति ।

२५. तए णं से घण्णे अणगारे ताए अठ्ठभुज्जयाए पययाए पयत्ताए^३ पग्गहियाए एसणाए एसमाणे जइ भत्त लभइ तो^४ पाण न लभइ, अह पाण लभइ तो भत्त न लभइ ॥
- २६ तए ण से घण्णे अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसादी अपरित्त-जोगी जयण-घडण-जोगचरित्ते अहापज्जत्त समुदाण पडिगाहेइ, पडिगाहेत्ता काक-दीओ नयरीओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जहा गोयमे जाव^५ पडिदसेइ ॥
- २७ तए ण से घण्णे अणगारे समणेण भगवया महावोरेण अठ्ठभणुणाए समाणे अमुच्छिए^६ •अग्गिद्धे अग्गिद्धे^० अणज्झोववण्णे विलमिव पण्णभूएण अप्पाणेण आहार आहारेइ, आहारेत्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
- २८ तए ण समणे भगव महावोरे अण्णया कयाइ कायदीओ नयरीओ सहसववणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥
- २९ तए ण से घण्णे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
- ३० तए ण से घण्णे अणगारे तेण ओरालेण^४ •विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण घन्नेण मगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणुभाणेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था । जीवजीवेण गच्छइ, जीवजीवेण चिट्ठइ, भास भासित्ता वि गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ, भास भासिस्सामीति गिलाइ । से जहानामए कट्टसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा पत्त-तिल-भडग-सगडिया इ वा एरडकट्ठसगडिया इ वा, इगालसगडिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद् गच्छइ, ससद् चिट्ठइ, एवामेव घण्णे अणगारे ससद् गच्छइ, ससद् चिट्ठइ, उवचिए तवेण, अवचिए मस-सोणिएण, हुयासणे विव भासरासिपडिच्छण्णे तवेण, तेएण, तव-तेयसिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे^० चिट्ठइ ॥

१. स० पा०—आयविल नो अणायविल जाव नावकखति ।
 २. × (घ) ।
 ३ अह (क) ।

४. तहा (ख, ग) । भ० २।११० ।
 ५. स० पा०—अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे ।
 ६. सं० पा०—उरालेण जहा खदओ जाव सुहय चिट्ठइ ।

घण्णस्स तवजणिय-सरीरलावण्ण-पद

३१. घण्णस्स ण अणगारस्स पायाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए सुक्कच्छल्ली इ वा कट्टपाउया इ वा जरग्गओवाहणा इ वा, एवामेव घण्णस्स अणगारस्स पाया सुक्का लुक्खा^१ निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मंस-सोणियत्ताए ॥
३२. घण्णस्स णं अणगारस्स पायगुलियाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था--से जहानामए कलसगलिया इ वा मुग्गसगलिया इ वा माससंगलिया इ वा तरुणिया छिण्णा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणो मिलायमाणी^२ चिट्ठति, एवामेव घण्णस्स अणगारस्स पायगुलियाओ^३ सुक्काओ^४ लुक्खाओ^५ निम्मंसाओ^६ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस^०-सोणियत्ताए ॥
३३. घण्णस्स ण अणगारस्स जघाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए काकजघा इ वा ढेणियालियाजघा इ वा^७, एवामेव घण्णस्स अणगारस्स जघाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मंस^०-सोणियत्ताए ॥
३४. घण्णस्स अणगारस्स जाणूण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए कालिपोरे^८ इ वा मऊरपोरे इ वा ढेणियालियापोरे इ वा, एवामेव घण्णस्स अणगारस्स जाणू सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस^०-सोणियत्ताए ॥
३५. घण्णस्स ण अणगारस्स ऊरूण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए 'सामकरिल्ले इ वा'^९ वोरीकरिल्ले^{१०} इ वा सल्लडकरिल्ले^{११} इ वा 'सामलिकरिल्ले इ वा'^{१२} तरुणए^{१३} छिण्णे उण्हे^{१४} दिण्णे मुक्के समाणे मिलायमाणे^{१५}

१ इद पद प्रयुक्तादर्शेषु नोपलभ्यते, ३७ वृत्तौ ७ म० पा०—एव जाव सोणियत्ताए ।

'उदरवर्णने' एवामेव उदर मुक्क लुक्ख ८ × (वृ) ।

निम्मस इत्यादि पूर्ववत् इत्युल्लेखेन तथा ९ पारिकरिल्ले (क) ।

५१ सूत्रे शीर्षस्य वर्णने सर्वेषु आदर्शेषु १० मेल्लत्ति^० (त्त) ।

वृत्तौ च तत्र दर्शनेन अस्माभि सर्वत्र ११. वृत्तिकारेणात्र पाठान्तरनिर्देश. कृत.—
स्वीकृतमिदम् । पाठान्तरेण सामकरिल्ले इ वा (वृ) । आदर्शेषु

२. विलायमाणी (क) ।

३ पायगुलीओ (ख, ग) ।

४ सं० पा०—मुक्काओ जाव सोणियत्ताए ।

१२. तरुणाए (क), तरुणे (ग), तरुणिए (क्व) ।

५ सं० पा०—इ वा जाव नो सोणियत्ताए ।

१३ सं० पा०—उण्हे जाव चिट्ठड ।

६ कानपोरे (क, घ) ।

चिट्टइ, एवामेव घण्णस्स अणगारस्स ऊरू^१ •सुकका लुक्खा निम्मसा अट्टि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस °-सोणियत्ताए ॥

३६. घण्णस्स ण अणगारस्स कडिपत्तस्स^२ अयमेयारूवे^३ तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए उट्टपदे^४ इ वा जरग्गपए^५ इ वा महिसपए^६ इ वा^७, •एवामेव घण्णस्स अणगारस्स कडिपत्ते सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्टि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस °-सोणियत्ताए ॥

३७. घण्णस्स ण अणगारस्स उदर-भायणस्स अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए सुक्क-दिए इ वा भज्जणय-कभल्ले इ वा कट्ट-कोलबए इ वा, एवामेव घण्णस्स अणगारस्स उदर [उदर-भायण^८ ?] सुक्क^९ •लुक्ख निम्मस चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस °-सोणियत्ताए ॥

३८. घण्णस्स ण अणगारस्स 'पासुलिय-कडयाण'^{१०} अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए थासयावली इ वा 'पाणावली इ वा'^{११} मुडावली इ वा^{१२}, •एवामेव घण्णस्स अणगारस्स पासुलिय-कडया सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्टि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए ° ।

३९. घण्णस्स ण अणगारस्स पिट्टि^{१३}-करडयाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए कण्णावली इ वा गोलावली^{१४} इ वा वट्टावली^{१५} इ वा, एवामेव^{१६} •घण्णस्स अणगारस्स पिट्टि-करडया सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्टि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए ° ॥

४०. घण्णस्स ण अणगारस्स 'उर-कडयस्स'^{१७} अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—

१ स० पा०—ऊरू जाव सोणियत्ताए ।

२ कडिपट्टस्स (ख, ग, घ, वृ पा) ।

३ इमेयारूवे (क, ख, ग, घ) ।

४. °पादे (ग) ।

५. °पादे (ग), लाक्षणिकदृष्ट्यात्र

'जरग्गवपए' इति पाठो युज्यते । वृत्तिकारस्य

सम्मुखे 'जरग्गवपए' इति पाठ आसीत्, यथा—

जरग्गवपएत्ति जरद्गवपाद (वृ) । वृत्ति-

कारेण यथा पाठो लब्ध तथा व्याख्यात

इति सम्भाव्यते ।

६. °पादे (ग) ।

७ स० पा०—इ वा जाव सोणियत्ताए ।

८. सूत्रस्य प्रारम्भे 'उदरभायणस्स' इति प्रयुक्तमस्ति । अत्रापि तथैव किं न स्यात् ?

९ स० पा—सुकक ° ।

१० पासुलियकडलाइ (ख) ।

११ × (क), पीणावली ° (ख, ग, घ) ।

१२ स पा०—मुडावली इ वा ।

१३ पिट्ट (ग, वृ) ।

१४ गोणवाली (क) ।

१५ वट्टावली (वृ) ।

१६ स० पा०—एवामेव ° ।

१७ उरकरडयस्स (क, ग), उरकरडस्स (ख) ।

असौ पाठो वृत्त्यावारेण स्वीकृत ।

से जहानामए चित्तकट्टरे' इ वा वीयणपत्ते^३ इ वा तालियंटपत्ते इ वा, एवामेव^४
 •धण्णस्स अणगारस्स उर-कडए सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए
 पण्णायति, नो चेव ण मंस-सोणियत्ताए ° ॥

४१. धण्णस्स ण अणगारस्स वाहाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से
 जहानामए समिसगलिया इ वा वाहायासगलिया^५ इ वा 'अगत्थियसगलिया
 इ वा,' एवामेव^६ •धण्णस्स अणगारस्स वाहाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ
 अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥

४२. धण्णस्स ण अणगारस्स हत्थाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से
 जहानामए सुक्कछगणिया^७ इ वा वडपत्ते इ वा पलासपत्ते इ वा, एवामेव^८
 •धण्णस्स अणगारस्स हत्था सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए
 पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए ° ॥

४३. धण्णस्स ण अणगारस्स हत्थगुलियाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—
 से जहानामए कलसगलिया इ वा मुग्गसंगलिया इ वा माससगलिया इ
 वा तरुणिया छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी 'मिलायमाणी चिट्ठति',
 एवामेव^९ •धण्णस्स अणगारस्स हत्थगुलियाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मसाओ
 अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मस-सोणियत्ताए ° ॥

४४. धण्णस्स ण अणगारस्स गीवाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से
 जहानामए करगगीवा इ वा कुडियागीवा इ वा उच्चत्थवणए^{१०} इ वा, एवामेव^{११}
 •धण्णस्स अणगारस्स गीवा सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए
 पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए ° ॥

४५. धण्णस्स ण अणगारस्स हणुयाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से
 जहानामए लाउफले इ वा हकुवफले^{१२} इ वा अरवगट्ठिया^{१३} इ वा^{१४} •आयवे दिण्णा
 सुक्का समाणी मिलायमाणी चिट्ठइ, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स हणुया

१ चित्तपट्टरे (क), चित्तयकट्टरे (ख),

चित्तयकट्टरे (ग) ।

२. वीडण° (ग); वीयणय° (घ) वियण°
 (वृ) ।

३ स° पा°—एवामेव° ।

४. × (व); पहाया° (ग) ।

५ × (क) ।

६ मं° पा°—एवामेव° ।

७. सुवमत्तमत्तिया(क); सुवमच्छगणिया(ग,ग) ।

८ स° पा°—एवामेव° ।

९. × (क, ख, ग), मिलायति (घ) ।

१०. स° पा°—एवामेव° ।

११. उच्चट्टवणए (क), काच्छवणए (ख) ।

१२. स° पा°—एवामेव° ।

१३. हेकुव° हकुव° हेकुच° हकुन° (क्व) ।

१४. अरवगट्ठिया (क, घ) ।

१५ मं° पा°—अरवगट्ठिया इ वा° एवामेव ।

सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्टि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए ° ॥

४६ घण्णस्स ण अणगारस्स उट्टाण अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए सुक्कजलोया इ वा सिलेस-गुलिया इ वा अलत्त'-गुलिया इ वा, एवामेव' •घण्णस्स अणगारस्स उट्टा सुक्का लुक्खा निम्मसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए ° ॥

४७ घण्णस्स ण अणगारस्स जिब्भाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए वडपत्ते इ वा पलासपत्ते' इ वा सागपत्ते इ वा, एवामेव' •घण्णस्स अणगारस्स जिब्भा सुक्का लुक्खा निम्मसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मस-सोणियत्ताए ° ॥

४८ घण्णस्स ण अणगारस्स नासाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए अवगपेसिया इ वा अवाडगपेसिया इ वा माउलुगपेसिया इ वा तरुणिया' •छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी चिट्ठइ, एवामेव घण्णस्स अणगारस्स नासा सुक्का लुक्खा निम्मसा अट्टि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मंस-सोणियत्ताए ° ॥

४९ घण्णस्स ण अणगारस्स अच्छीणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए वीणाच्छिद्दे इ वा वद्धीसगच्छिद्दे' इ वा पाभाइयतारिगा' इ वा, एवामेव' •घण्णस्स अणगारस्स अच्छीओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मसाओ अट्टि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मस-सोणियत्ताए ° ॥

५० घण्णस्स ण अणगारस्स कण्णाण' अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए मूलाछल्लिया इ वा वालुकल्लिया' इ वा कारेल्लयल्लिया' इ वा, एवामेव' •घण्णस्स अणगारस्स कण्णा सुक्का लुक्खा निम्मसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव ण मस-सोणियत्ताए ° ॥

५१ घण्णस्स ण अणगारस्स सीसस्स अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए तरुणगलाउए इ वा तरुणगएलालुए इ वा सिण्हालए' इ वा तरुणए' इ वा

१. अलत्तग (ग) ।

८ स० पा०—एवामेव ° ।

२. स० पा०—एवामेव ° ।

९ केसाण (क) ।

३. × (क), पलासपत्ते इ वा (ग), उवरपत्ते (घ) ।

१०. वालुका (क) ।

११ क्वचिच्च नीतिपद दृश्यते न चावगम्यते (वृ) ।

४ स० पा०—एवामेव ° ।

१२. स० पा०—एवामेव ° ।

५. स० पा०—तरुणिया ° एवामेव ° ।

१३ मिण्हालुए (क्व) ।

६ पव्वीस ° (क, ख) ।

१४ स० पा०—तरुणए जाव चिट्ठइ ।

७. पभयातारगा (वृ), पाभाइयतारा (वृपा) ।

• छिण्णे आयवे दिण्णे सुक्के समाणे मिलायमाणे° चिट्ठइ, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स सीस सुक्क' लुक्खं निम्मसं अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायइ, नो चेव ण मंस-सोणियत्ताए' ॥

५२ धण्णे ण अणगारे' सुक्केणं भुक्खेणं पायजंघोरुणा, विगय-त्तडि-करान्णेणं कडि-कडाहेण, पिट्ठिमस्सिएण' उदरभायणेण, जोइज्जमाणेहिं पासुलि'-कटएहिं, 'अक्खसुत्तमाला तिव' गणेज्जमाणेहिं पिट्ठिकरडगसधीहिं, गगातरंगभूएण उरकडगदेसभाएण, सुक्कसप्पसमाणाहिं वाहाहिं', सिट्ठिलकडाली' 'विवलवतेहिं' य अग्गहत्थेहिं, कंपणवाइओ विव वेवमाणीए सीसघडीए पम्माणवयणकमले' उव्वभडघडमुहे उच्छुद्धणयणकोसे' जीवजीवेण गच्छइ, जीवजीवेणं चिट्ठइ, भास भासित्ता गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ, भास भासिस्सामि त्ति गिलाइ । से जहानामए इगालसगडिया इ वा'° • कट्टसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा तिलडासगडिया इ वा एरंडसगडिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद् गच्छइ, ससद् चिट्ठइ, एवामेव धण्णे अणगारे ससद् गच्छइ, ससद् चिट्ठइ, उवचिए तवेण, अवचिए मससोणिएणं°, हुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णे तवेण तेएण तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

सेणियस्स महाडुक्करकारय-पुच्छा-पदं

५३. तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ॥
 ५४. तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे समोसडे । परिसा निग्गया । सेणिए निग्गए । धम्मकहा । परिसा पडिगया ॥
 ५५. तए ण से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म समण भगव महावीर वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

१ × (ख, ग) ।

२. 'मस-सोणियत्ताए' अतोये सर्वासु प्रतिसु 'एव सव्वत्थ । नवर उयरभायणं कण्णा जीहा उट्ठा एएसि अट्ठी न भणइ, चम्म-छिरत्ताए पण्णायइ त्ति भणइ इति पाठोस्ति । पर अस्माभिस्तु सर्वत्र पूर्णं पाठ लिखित, अतोनावश्यकत्वेनासौ पाठान्तररूपेण स्वीकृत ।

३. अणगारे ण (क ख, ग, घ) ।

४. पट्ठी ° (क), पिट्ठिमवस्सिएणं (वृ) ।

५. पासुलि (ग, घ) ।

६. अक्खमाला तिवा (क), मालाविव (ग);

°माला तिवा (घ) ।

७ × (क) । -

८. सट्ठिल ° (क, ख, ग) ।

९. विचलतेहिं (क), विचलतेहिं (ख) ।

१०. पव्वात ° (क, ग), पम्माय ° (ख) ।

११. उच्छुद्धु ° (क्व) ।

१२. स० पा०—जहा खघओ तथा जाव हुयासणे; स्कन्दकप्रकरणे(भ० २।६४) प्रारम्भे 'इगालसगडिया' इति पाठो नास्ति । तेनास्य पूर्ति, नायाधम्मकहाओ सूत्रात् कृता ।

इमासि ण भते ! इदभूइपामोक्खाण चोदसण्ह समणसाहस्सीण कतरे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव ?

एव खलु सेणिया ! इमासि ण इदभूइपामोक्खाण चोदसण्ह समणसाहस्सीण घण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव ॥

५६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ, इमासि' •ण इदभूइपामोक्खाण चोदसण्हं समण °साहस्सीण-घण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव ?

भगवओ उत्तर-पदं

५७ एव खलु सेणिया ! तेण कालेण तेण समएण कायदी नाम नयरी होत्था । घण्णे दारए उप्पि पासायवडेसए^१ विहरइ ।

तए ण अह अणया कयाई पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव कायदी नयरी जेणेव-सहसववणे उज्जाणे तेणेव उवागए । अहापडिह्व ओग्गह ओगिण्हत्ता सजमेण' •तवसा अप्पाण भावेमाणे ° विहरामि । परिसा निग्गया । तहेव जाव^२ पव्वइए जाव^३ विलमिव^४ •पण्णगभूएण अप्पाणेण आहार ° आहारेइ । घण्णस्स ण अणगारस्स^५ सरीरवण्णओ सव्वो जाव^६ तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ । से तेणट्ठेण सेणिया ! एव वुच्चइ 'इमासि ण इदभूइपामोक्खाणं चोदसण्ह समणसाहस्सीण घण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव ॥

सेणिएण घण्णस्स थवणा-पद

५८ तए ण से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए-एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव घण्णे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता घण्ण अणगार तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—घण्णे सि ण तुम देवाणुप्पिया ! सुपुण्णे^७ •सि ण तुमं देवाणुप्पिया ! सुकयत्ये^८ सि ण तुम देवाणुप्पिया ! °कयलक्खणे सि ण तुम देवाणुप्पिया ! सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीविय-फले त्ति कट्ठु वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे

१. स० पा०—इमासि जाव साहस्सीण ।

२. पू०—अ ३।४-६ ।

३. स० पा०—सजमेण जाव विहरामि ।

४. अ० ३।११-२१ ।

५. अ० ३।२१-२७ ।

६. स० पा०—विलमिव जाव आहारेइ ।

७. अणगारस्स पादाण (क, ख, ग, घ) ।

८. अ० ३।३१-५२ ।

९. स० पा०—सुपुण्णे सुकयत्ये कयलक्खणे ।

१०. सकयत्ये-(क); सकयत्ये (ख), कयत्ये (घ) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणं भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-
पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिस पाउवभूए,
तामेव दिस पडिगए ॥

धण्णस्स सव्वट्टसिद्ध-गमण-पद

५६ तए ण तस्स धण्णस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजाग-
रिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेणं ओरालेण^१ तवोकम्मणेण^२ धमणिसतए जाए ।
जहा खदओ^३ तहेव चित्ता । आपुच्छणं । थेरेहिं सद्धिं विउल पव्वय दुरुहइ ।
मासिया सलेहणा । नव मासा परियाओ जाव^४ कालमासे कालं किच्चा उड्ढ
चदिम^५—सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाण जाव^६ नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे
उड्ढ दूर वीईवइत्ता सव्वट्टसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । थेरा तहेव ओयरति
जाव^७ इमे से आयारभंडए ॥

६० भतेति ! भगव गोयमे तहेव आपुच्छति, जहा खदयस्स भगवं वागरेइ जाव^८
सव्वट्टसिद्धे विमाणे उववण्णे ॥

६१. धण्णस्स ण भते ! देवस्स केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

६२ से णं भते ! ताओ देवलोगाओ कहिं गच्छहिइ ? कहिं उववज्जहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ
सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

६३. एव खलु जवू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव^९ सपत्तेणं पढमस्स अज्झय-
णस्स अयमट्टे पण्णत्ते ॥

१,२. पू०—अ० ३।३० ।

३. भ० २।६६-६९ ।

४. अ० १।८ ।

५. स० पा०—चदिम जाव नवय^० ।

६. अ० १।८ ।

७. भ० २।७० ।

८. भ० २।७१ ।

९. अ० ३।७५ ।

वीयं अज्भयणं

सुणक्खत्ते

सुणक्खत्त-पद

६४. जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण तच्चस्स वग्गस्स पढमस्स अज्भय-
णस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भते । अज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
- ६५ एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण काकदी नयरी । जियसत्तू राया ॥
- ६६ तत्थ ण काकदीए नयरीए भद्दा नाम सत्थवाही परिवसइ—अड्ढा ॥
- ६७ तीसे ण भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते सुणक्खत्ते नाम दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-
पचेदियसरीरे जाव^१ सुरूवे पचधाइपरिक्खत्ते जहा धण्णो तहेव । वत्तीसओ
दाओ जाव^२ उप्पि पासायवडेसए विहरइ ॥
- ६८ तेणं कालेण तेण समएण समोसरण । जहा धण्णो तहा सुणक्खत्ते वि निग्गए ।
जहा थावच्चापुत्तस्स तहा निक्खमणं जाव^३ अणगारे जाए—डरियासमिए जाव^४
गुत्तवभयारी ॥
- ६९ तए ण से सुणक्खत्ते ज चेव दिवस समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे^५
•भवित्ता अगाराओ अणगारिय^६ पव्वइए त चेव दिवस अभिग्गह तहेव जाव^७
विलमिव पण्णगभूएण अप्पाणेण आहार आहारेइ, आहारेत्ता सजमेण^८ •तवसा
अप्पाण भावेमाणे^९ विहरइ ॥
- ७० सामी वहिया जणवयविहार विहरइ । एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, सजमेण
तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१ ओ० सू० १४३ ।

२ अ० ३।६९ ।

३. ना० १।५।२८-३५ ।

४. अ० ३।२१ ।

५ स० पा०—मुडे जाव पव्वइए ।

६. अ० ३।२२-२७ ।

७. स० पा०—सजमेण जाव विहरइ ।

७१. तए ण से सुणक्खत्ते अणगारं तेण ओरालेणं^१ तवोकम्मेणं^२ जहा खदओ^३ अईव-
अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥
७२. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ।
सामी समोसढे । परिसा निग्गया । राया निग्गओ । धम्मकहा । राया पडिगओ ।
परिसा पडिगया ॥
७३. तए ण तस्स सुणक्खत्तस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले
धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए
सकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खदयस्स । बहू वासा परियाओ । गोयमपुच्छा ।
तहेव कहेइ जाव^४ सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तेत्तीसं सागरोवमाइं
ठिई^५ । महाविदेहे वासे सिज्झिहइ ॥

३-१० अज्झयणाणि

इसिदासादि-पदं

७४. एव सुणक्खत्तगमेण सेसा वि अट्ठ अज्झयणा भाणियव्वा, नवर—आणुपुव्वीए
दोण्णि रायगिहे, दोण्णि साकेते, दोण्णि वाणियग्गामे, नवमो हत्थिणपुरे, दसमो
रायगिहे । नवण्ह भद्दाओ जणणीओ । नवण्ह वि वत्तीसओ दाओ । नवण्ह
निक्खमण थावच्चापुत्तस्स सरिस^६ । वेहल्लस्स पिया करेइ^७ । छम्मासा वेहल्लए ।
नव घण्णे । सेसाण बहू वासा । मासं सलेहणा । सव्वट्ठसिद्धे । सव्वे महाविदेहे
सिज्झिहस्सति ॥

निक्खेव-पदं

७५. एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेणं सहसंबुद्धेणं
लोगणाहेण लोगप्पदीवेणं लोगपज्जोयगरेण अमयदएणं सरणदएणं चक्खुदएणं
मग्गदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं^८ धम्मवरत्ताउरतचक्कवट्ठिणा अप्पडिहय-
वरणाणदसणघरेणं जिणेण जाणएण बुद्धेण बोहएण मुत्तेण मोयएण तिण्णेणं
तारएण सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामघेय
ठाण सपत्तेण अणुत्तरोववाइयदसाण तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

१,२. पू० ३।३० ।

३. म० २।६४ ।

४. म० २।६६-७१ ।

५. ठिई से ण भते (क, ख, ग, घ) ।

६. पू०—ना० १।५।२२-३३ ;

७. 'निक्खमण' इति शेषः ।

८. × (ख) ।

९. × (क) ।

परिसेसो

अणुत्तरोववाड्यदसाण एगो सुयखधो । तिण्णि वग्गा । तिसु चेव दिवसेसु
 उद्दिसिज्जति । तत्थ पढमे वग्गे दस उद्देसगा । विइए वग्गे तेरस उद्देसगा ।
 तइए वग्गे दस उद्देसगा । सेस जहा नायाधम्मकहाण तहा नेयव्व ॥

ग्रन्थ परिमाण

कुल अक्षर—६६५४

अनुष्टुप् श्लोक—३११ अ० २

पणहावागरणाई



पढमं अज्भयणं पढमं आसवदारं

उल्लेख-पदं

१. जंजू' !

इणमो^३ अण्हय-संवर-विणिच्छय^१ पवयणस्स निस्संदं ।
वोच्छामि णिच्छयत्थं, सुहासियत्थं महेसीहिं ॥१॥

१. वृत्तिकारेण पुस्तकान्तरवर्ती उपोद्घातग्रन्थ उल्लिखितः । तत्र 'जजू' इति पद युक्तमस्ति । किञ्च तस्मिन् प्रस्तुतसूत्रस्य प्रारम्भ सुवर्म-जम्बू-संवादपूर्वक. कृतोस्ति । किन्तु वृत्तिकृता स्वीकृते पाठे सुधर्मस्वामिनो नास्ति कोपि उल्लेख. । त विना केवल 'जजू' इति पद कथं युक्तं स्यात् ? इति सम्भाव्यते पुस्तकान्तरवर्त्युपोद्घातग्रन्थस्य सम्बन्धि 'जजू' पद प्रस्तुतवाचनायामपि प्रविष्टम् ।

२ पुस्तकान्तरेषु उपोद्घातग्रन्थ उपलभ्यते, यथा—

तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था । पुण्णभट्टे चेइए । वणमडे । अमोगवरपायवे । पुढविसिलापट्टए । तत्यण चपाए नयरीए कोणिए नामं राया होत्था । धारिणी देवी । तेण कालेण तेण समएण ममणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी

अज्जसुहम्मे नाम थेरे—जाइसपण्णे कुल-संपण्णे वलसपण्णे रुवमपण्णे विणयसपण्णे नाणसपण्णे दसणसपण्णे चरित्तसपण्णे लज्जासपण्णे लाघवसपण्णे ओयसी तेयमी वच्चसी जसमी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियनोभे जियनिहे जिड्दिए जियपरीसहे जीवियास-मरण-भय-विप्पमुवके तवप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निच्छयप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मट्ठवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे मतप्पहाणे वभप्पहाणे वेयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे चोद्दमपुव्वी चउनाणोवगए पचहिं अणगारसएहिं सट्ठि सपग्गिबुडे पुव्वा-णुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूडज्जमाणे जेणेव चपा नगरी तेणेव उवागच्छड जाव

पंचविहो पण्णत्तो, जिणेहिं इह अण्हओ अणादीओ ।
 हिंसा - मोसमदत्त', अक्खम - परिग्गहं चैव ॥२॥
 जारिसओ, जंनमा', जह य कओ जारिस फलं देति ।
 जेवि य करेति पावा, पाणवहं' तं निसामेह ॥३॥

पाणवहस्स सरूव-पदं

२. पाणवहो नाम एस निच्च जिणेहिं भणिओ—पावो चंडो रुद्धो खुद्धो साहसिओ^१
 अणारिओ निग्घणो निस्ससो मह्वभओ पइभओ अतिभओ वीहणओ तासणओ
 अणज्जो^२ उव्वेयणओ य निरवयक्खो निद्धम्मो निप्पिवासो निक्कलुणो निरय-

अहापडिरूव उग्गह उग्गिण्हित्ता सजमेण
 तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति । परिसा
 निग्गया । धम्मो कहियो । जामेव दिमि
 पाउव्भूया तामेव दिमि पडिगया ।

तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स
 थेरस्स अतेवासी अज्जजंजू नाम अणगारे
 कासव गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव संखित्त-
 विपुनतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स
 अदूरसामते उड्ढजाणू जाव सजमेण तवसा
 अप्पाण भावेमाणे विहरड ।

तए ण से अज्जजजू जायसड्ढे जायसए
 जायकोउहल्ले, उप्पणसड्ढे ३, संजायसड्ढे
 ३, समुप्पणमड्ढे ३, उट्टाए उट्टेड, उट्टेत्ता
 जेणेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणेव उवागच्छड,
 उवागच्छित्ता अज्जसुहम्म थेर तिक्खुत्तो
 आयाहिण-पयाहिण करेड, करेत्ता वंदइ
 नमसइ, नममित्ता नच्चासन्ने नाइदूरे विणएण
 पजलिपुडे पज्जुवासमाणे एव वयासी—जइ
 ण भते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव
 सपत्तेण णवमस्स अगस्स अणुत्तरोववाइय-
 दसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स ण अगस्स
 पण्हावागरणाणं समणेण जाव सपत्तेण के
 अट्ठ पण्णत्ते ?

जंजू ! दसमस्स अंगस्स ममणेण जाव
 सपत्तेणं दो मुयक्खवा पण्णत्ता अण्हयदारा
 य संवरदारा य । पढमस्स णं भते ! सुयक्ख-
 धस्स समणेण जाव सपत्तेण कइ अज्जयणा
 पण्णत्ता ?

जंजू ! पढमस्स ण मुयक्खधस्स समणेण
 जाव सपत्तेणं पंच अज्जयणा पण्णत्ता ।
 दोच्चस्स णं भते ! एव चैव । एएसि णं
 भते ! अण्हय-सवराण समणेणं जाव
 सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

तत्तेणं अज्जसुहम्मे थेरे जंजूनामेणं अणगारेणं
 एवं वुत्ते समाणे जव्वअणगारं एव वयासी—
 जंजू ! इणमो इत्यादि ॥ (वृ) ।

३. विणिच्छियं (घ) ।

१. मोसादत्तं (क) ।

२. जण्णामा (क) ।

३. पाणिवह (ग) ।

४. साहस्सिओ (ग) ।

५. व्याकरणदृष्ट्या 'अण्णज्जो' इति पदं युक्त
 स्यात् ।

वास-गमण-निघणो मोह-महवभय-पवड्डुओ^१ 'मरण वेमणंसो'^२ पठमं अघम्म-
दार ॥

पाणवहस्स तीसनाम-पदं

३ तस्स य नामाणि इमाणि^३ गोण्णाणि होति^४ तीसं, तं जहा—१, २ पाणवहुम्मू-
लणा^५ सरीराओ ३. अवीसभो ४. हिंसविहिंसा तथा ५ अकिच्च च ६. घायणा
७ मारणा य ८. वहणा ९ उद्ववणा^६ १०. तिवायणा^७ य ११ आरभ-समा-
रभो १२. 'आउयकम्मस्स उवद्ववो'^८ [भेय-णिट्ठवण-गालणा य सवट्टग-सखेवो^९]
१३ मच्चू १४ असजमो १५ कडग-मद्वण १६ वोरमण १७ परभव-सकाम-
कारओ १८ दुग्गतिप्पवाओ १९. पावकोवो य २० पावलोभो^{१०} २१ छविच्छेओ^{११}
२२ जीवियतकरणो २३. भयकरो २४ अणकरो^{१२} २५. वज्जो^{१३} २६. परिता-
वण-अण्हओ २७ विणासो २८ निज्जवणा^{१४} २९. लुपणा^{१५} ३०. गुणाण
विराहणत्ति ।

अवि य तस्स एवमादीणि^{१६} नामधेज्जाणि होति तीस पाणवहस्स कलुसस्स
कडुयफल-देसगाइ ॥

पाणवहस्स पगार-पदं

४ त च पुण करेति केई पावा असजया अविरया अणिहुय-परिणाम-दुप्पयोगी^{१७}

१. पयद्वओ (क, ग), पयट्टओ (क्व),
प्रकर्षक (वृ), वृत्तिकारेण 'प्रकर्षक
प्रवर्त्तक' इत्युल्लेख कृत । उत्तरवर्त्यादर्शेषु
'प्रवर्त्तक' पदस्याधारेण 'पयद्वओ' इति
पाठ प्रचलितोभूत् । पवड्डुओ (वृपा) ।

२. मरण वेमणसो (ख, ग), मरणावेमणस्सो
(वृ), वृत्तिकारेण असौ पाठ एकपदत्वेन
व्याख्यात, किन्तु अस्माभि. 'एस मारे'
(१।२४) इति आचाराङ्गसूत्रसन्दर्भेण
पृथक्पदत्वेन गृहीत ।

३. × (क) ।

४. × (क) ।

५. पाणवह उम्मूलणा (घ) ।

६. उद्ववण (क) ।

७. तिवायणा (क) ।

८ °कम्मस्सुवद्ववो (क, ख) ।

९. अत्र कोष्ठकवर्त्तीनि भेदादिपदानि 'उवद्वव'

पदस्य पर्यायवाचित्वेन निर्दिष्टानि सन्ति,

यथा—आउयकम्मस्स भेओ

” णिट्ठवण

” गालणा

” सवट्टगो

” सखेवो ।

वृत्तिकारेणापि लिखितमिदम्— एतेषा च
उपद्रवादीनामेकतरस्यैव गणनया नाम्ना
त्रिशत् पूरणीया ।

१० पावलो (वृ) ।

११ छविच्छेयकरो (वृ) ।

१२ अणकरो य (ग) ।

१३. सावज्जो (वृपा) ।

१४ निज्जवणो (ग) ।

१५. लुपणो (घ) ।

१६. एवमातीणि (ग) ।

१७ दुप्पओया (क) ।

पाणवह भयंकर^१ बहुविह^२ परदुक्खुप्पायणप्पसत्ता इमेहि तसथावरेहि जीवेहि पडिणिविट्ठा, 'कि ते'^३? —

५. पाठीण^४-तिमि^५-तिमिगिल-अणेगभस-विविहजातिमंदुक्क-दुविहकच्छभ-णक्क-मगर-दुविहगाह-दिलिवेढय-मदुय^६-सीमागार^७-पुलुय-सुंसुमार-बहुप्पगारा^८ जलयरविहाणाकते^९ य एवमादी ॥
६. कुरग-रुरु-सरभ-चमर-संवर-हुरवभ^{१०}-ससय-पसय-गोण-रोहिय^{११}-हय-गय-खर-करभ-खग्ग-वानर-गवय-विग-सियाल-कोल^{१२}-मज्जार-कोलसुणक^{१३}-सिरियंदलय-आवत्त^{१४}-कोकतिय-गोकण-मिय-महिस-वियग्घ-छगल-दीविय-साण-तरच्छ-अच्छ-भल्ल-सद्दूल-सीह-चिल्लला^{१५} चउप्पयविहाणाकए य एवमादी ॥
७. अयगर^{१६}-गोणस-वराहि-मउलि^{१७}-काओदर-दवभपुप्फ-आसालिय^{१८}-महोरगा उरगविहाणाकए^{१९} य एवमादी ॥
८. छीरल-सरंवं^{२०}-सेह-सल्लग^{२१}-गोघा-उंदुर^{२२}-णउल-सरड-जाहग-मुगुंस-खाडहिल-वाउप्पय^{२३}-घरोलिया^{२४} सिरीसिवगणे य एवमादी ॥
९. कादवंक^{२५}-वक-वलाका-सारस-आडासेतीय-कुलल-वंजुल-पारिप्पव-कीव^{२६}-सउण-दीविय^{२७}-हस-घत्तरट्ट^{२८}-भास-कुलीकोस^{२९}-कोच^{३०}-दगतुंड-ढेणियालगसूईमुह-कविल

- | | |
|--|---|
| १ बहुविहभयंकरं (वृ); भयंकरं (वृपा) । | १४. सिरिकदलगावत्त (ख); श्रीकन्दलका |
| २ बहुविहबहुप्पयारं (क, ख,); बहुविह | आवत्ताञ्च (वृ) । |
| बहुप्पगार (ग, घ) । | १५ चिल्लल (क, ख, ग, घ,); चित्तला (वृपा) । |
| ३ कथ तं प्राणवच्च कुर्वन्तीत्यर्थं. (वृ); तद्यथेति | १६. मयकर (क, ख, ग, घ) । |
| वा (वृपा) । | १७ माउलि (ख, ग, च) । |
| ४. पाठीण (क) । | १८. यासालिय (ख, घ, च) ; |
| ५ तिमि (क) । | १९. महोरगारगविहाणाकए (ख, ग, घ, च) । |
| ६ मदुय (क), मदुक (ख), मदुय (ग, घ) । | २०. सरग (ख, च) । |
| ७. सीमागार (क) । | २१. सेल्लग (ख, ग, घ, च) । |
| ८ बहुप्रकारञ्चेति कर्मधारयोऽस्तस्तान् घ्नतीति | २२. गोघुदर (क, ख, ग) । |
| वक्ष्यमाणेन योगः । इह च द्वितीयावहुवचने- | २३. वाउप्पिय (ख, घ) । |
| प्येकाराभाव छान्दमत्वात् (वृ) । | २४. घरोलिय (क, ख, ग), घरोलिय (घ) । |
| ९ जलचरविधानककृताश्च, इह च कशब्द- | २५ कादवकीवक (क) । |
| नोपेन विधानशब्दम्यान्तदीर्घत्वम् (वृ) । | २६. कीर (ग) । |
| १०. उरवभ (ग) । | २७. पिपिय (क); दीपिय (ग); पीपिय (वृ) । |
| ११. रोहिन (वृपा) । | २८. घत्तरिट्ट (ख) । |
| १२. कोक (वृपा) । | २९. कुलीकोस (ग) । |
| १३. ०मुणका (क, ख, ग, घ) । | ३०. कुच (ख, घ) । |

पिंगलक्खग^१ - कारडग^२ - चक्कवाग-उक्कोस- गरुल-पिंगुल^३-सुय-वरहिण^४- मयण-
साल-नदीमुह-नदमाणग-कोरग-भिगारग-कोणालग - जीवजीवक^५-तित्तिर-वट्टक-
लावक- कर्पिजलक^६ - कवोतग - पारेवग^७ - चिडिग- ढिक - कुक्कुड-वेसर^८-मयूरग-
चउरग-हरपोडरीय^९-सालग^{१०} - वीरल्ल-सेण- वायस- विहगभेणासि-चास-वगुलि-
चम्मट्टिल-विततपक्खी खहयरविहाणाकते य एवमादी ॥

१० जल-थल-खग-चारिणो उ^{११} पचिदिए पसुगणे विय-तिय-चउरिदिए य^{१२} विविहे
जीवे, पियजीविए, मरणदुक्खपडिकूले वराए हणति बहुसकिलिट्टकम्मा^{१३} ॥

पाणवहस्स कारण-पद

११. इमेहि विविहेहि कारणेहि, 'किं ते'^{१४} ?—

चम्म-वसा-मंस - मेय-सोणिय- जग- फिप्फिस - मत्थुलिग^{१५} - हियय^{१६}-अत - पित्त-
पोप्फस-दतट्टा, अट्टि-मिज-नह-नयण-कण्ण-ण्हारुणि-नक्क-धमणि-सिग-दाढि -
पिच्छ-विस-विसाण-वालहेउ^{१७} ॥

१२. हिंसति य भमर-मधुकरिगणे रसेसु गिद्धा, तहेव तेइदिए सरीरोवकरणट्टयाए,
किवणे वेइदिए^{१८} वहवे वत्थोहरपरिमडणट्टा, अण्णेहि य एवमाइएहि बहूहि
कारणसतेहि अबुहा इह हिंसति तसे पाणे ॥

१३. इमे य एगिदिए^{१९} वराए तसे य अण्णे तदस्सिए चेव तणुसरीरे समारभति—अत्ताणे
असरणे अणाहे अवंधवे कम्मनिगल^{२०}-वद्धे अकुसलपरिणाम-मदवुद्धिजण-दुव्वि-
जाणए, पुढविमए पुढविससिए, जलमए जलगए, अणलाणिल-तणवणस्सतिगण-
निस्सिए य 'तम्मय-तज्जिए'^{२१} चेव तदाहारे तप्परिणत-वण्ण-गध-रस-फास-
दोदिरूवे अचक्खुसे चक्खुसे य तसकाइए असखे ॥

- | | |
|--|---|
| १. पिंगलक्ख (क) । | १२. × (क, ख, घ) । |
| २. कारड (घ, च) । | १३. सत्त्वा इति गम्यते (वृ) । |
| ३. पगुल (ख, ग, घ, च) । | १४. किं तन् प्रयोजनम् ? तद्यथेति वा (वृ) । |
| ४. वरिहिण (ख, ग, घ, च) । | १५. मत्थुलुग (क, घ) । |
| ५. जीवक (क), जीवजीवक (क्व) । | १६. हितय (क, घ, च) । |
| ६. कर्पिजलक (क) । | १७. °हेउ (क, च) । 'हणति बहुसकिलिट्टकम्मा'
इति अध्याहर्तव्यमत्र । |
| ७. परिवयग (ख, घ, च) । | १८. विदिए (ख) । |
| ८. मसर (क), विसर (च), मेसर (ग, घ) । | १९. एगिदिए वहवे (घ, च) । |
| ९. हयपोडरीय (ख, ग, घ, च) , | २०. °नियल (क) । |
| १०. करकरल्लग (क); करकरग(ख, ग, घ, च),
करग (वृपा) । | २१. तन्मयजीवाश्चेति (वृपा) । |
| ११. य (ग, च) । | |

- १४ थावरकाए य सुहुम-वायर-पत्तेयसरीर-नाम-साधारणे अणते हणति अविजाणओ य परिजाणओ य जीवे इमेहि विविहेहि कारणेहि, 'किं ते' ? —
करिसण-पोक्खरणी^३-वावि-वप्पिण-कूव-सर-तलाग-चित्ति-वेदि^४-खातिय-आराम-विहार-थूभ-पागार-दार - गोउर^५ - अट्टालग - चरिय-सेतु-सकम^६-पासायविकप्प-भवण-घर-सरण-लेण-आवण - चेतिय - देवकुल - चित्तसभ-पव-आयतण-आवसह-भूमिघर-मडवाण य कए, भायण-भडोवगरणस्स विविहस्स य अट्टाए पुढविं हिसति मंदबुद्धिया ॥
- १५ जल च मज्जणय-पाण-भोयण-वत्थघोवण-सोयमादिएहि^७ ॥
- १६ पयण-पयावण-जलावण^८-विदसणेहि अगणि ॥
- १७ सुप्प-वियण-तालवट^९-पेहुण-मुह-करयल-सागपत्त वत्थमादिएहि अणिल ॥
१८. अगार-परियार-भक्ख - भोयण - सयण - आसण-फलग-मुसल - उक्खल-तत-वितत-आतोज्ज-वहण - वाहण-मडव-विविहभवण-तोरण-विडग^{१०}-देवकुल- जालय-अद्ध-चंद-निज्जूह^{११}-चंदसालिय-वेतिय^{१२} - गिस्सेणि-दोणि-चगेरि-खील-मेढक-सभ-प्पव-आवसह-गध-मल्ल - अणुलेवण-अवर-जुय- नगल-मइय^{१३}-कुलिय-सदण-सीया-रह-सगड-जाण-जोग्ग - अट्टालग - चरिअ^{१४} - दार-गोपुर- फलिह-जत-मूलिय^{१५}-लउड-मुसुढि^{१६}-सतग्घि-वहुपहरण-आवरण-उवक्खराण कते^{१७} । अण्णेहि य एवमादिएहि बहूहि कारणसतेहि हिसति ते^{१८} तरुण्णे, भणियाभणिए य एवमादी सत्ते सत्तपरिवज्जिया उवहणति दढमूढा दारुणमती ॥
१९. कोहा माणा माया लोभा 'हस्स रती अरती सोय'^{१९} वेदत्थ-'जीव-धम्म-अत्थ-कामहेउ'^{२०},
सवसा अवसा अट्टा अणट्टाए य तसपाणे थावरे य हिसति मंदबुद्धी ।
सवसा हणति, अवसा हणति, सवसा अवसा दुहओ हणति ।

१. किं तत् तद्यथेति वा (वृ) ।

२. पोक्खरिणी (क, ग) ।

३. वेति (क, ख) ।

४. गोपुर (क, ग) ।

५. सकमण (ख) ।

६. एतदादिभि कारणैरिति प्रक्रम (वृ) ।

७. जलण जलावण (ख, च) ।

८. तालवट (क, घ); तालवट (ख), तालविट (च) ।

९. विटग (ख) ।

१०. निज्जूहग (घ) ।

११. वेदिय (क्व) ।

१२. मलिय (क) ।

१३. चरित (क, ग) ।

१४. सूलय (क, ख, घ, वृपा), मूसलय (ग) ।

१५. मुसुढि (क, घ) ।

१६. कए (क, ग, घ) ।

१७. × (क, ग) ।

१८. इह पंचमीलोपो दृश्य. ।

१९. जीयकामत्थधम्महेउ (क, ख, घ, च) ।

अट्टा हणति, अणट्टा हणति, अट्टा अणट्टा दुहओ हणति ।
हस्सा हणति, वेरा हणति, रतीए^१ हणति 'हस्सा वेरा रतीए'^२ हणति ।
कुद्धा हणति, लुद्धा हणति, मुद्धा हणति, कुद्धा लुद्धा मुद्धा हणति ।
अत्था हणति, धम्मा हणति, कामा हणति, अत्था धम्मा कामा हणति ॥

पाणवहस्स कत्तार-पदं

- २० कयरे^१ ? जे ते सोयरिया मच्छवधा साउणिया वाहा कूरकम्मा^४ 'दीवित'^५-
वधप्पओग - तप्प- गल - जाल - वीरल्लग - आयसीदवभवग्गुरा - कूडछेलिहत्था^६
हरिएसा ऊणिया^७ य वीदसग-पासहत्था वणचरगा लुद्धगा य महुघात-पोतघाया
एणीयारा पएणीयारा सर-दह - दीहिअ - तलाग - पल्लल- परिगालण - मलण-
सोत्तवधण-सलिलासयसोसगा 'विस-गरलस्स य दायगा'^८ उत्तण-वल्लर-दवग्गि-
णिद्वय-पलीवका ॥
- २१ कूरकम्मकारी इमे य बहवे मिलक्खुया^९, के^{१०} ते ? —
सक जवण सवर वव्वर काय^{११} 'मुरुड उडु'^{१२} भडग निण्णग^{१३} पक्काणिय कुलक्ख
गोड^{१४} सीहल पारस कोच अघ दविल चिल्लल^{१५} पुलिंद आरोस डोव पोक्काण^{१६}
गघहारग वहलीय जल्ल रोम^{१७} मास^{१८} बउस मलया य चुचुया य चूलिय
कोक्काणगा^{१९} मेद^{२०} पल्हव^{२१} मालव मग्गर^{२२} आभासिया अणक्क चीण ल्हासिय खस

१ रती य (क, ख, ग, घ, च) ।

९. मिलक्खुजाती (क, ख, ग, घ, च) ।

२ हस्सवेरा रती य (क, ख, ग, घ, च), अत्र
एकारपरिवर्तनेन यकारो जात । अस्याला-
पकस्यानुपारेण 'हस्सा वेरा रतीए' एष पाठ
उपयुक्तोस्ति, किन्तु लिपिकरणे परिवर्तन
जातम्, तेन 'हस्सा' स्थाने 'हस्स' तथा
'रतीए' स्थाने 'रतीय' इति जातम् ।

१० किं (क, ख, ग, घ, च) ।

११ गाय (ख) ।

१२ मुरुडोद (ख, ग, घ, च), मुरु ड-उद (वृ) ।

१३ भित्तिय (ख, ग), तित्तिय (वृ) ।

१४. गोड (ख, ग, घ, च) ।

१५ °विल्लल (ख, ग, घ, च, वृ) ।

३ कयरे ते (क); घन्तीति प्रश्न. (वृ) ।

१६ पोक्काण (क, ख, ग, घ) ।

४. कूरकम्मा वाउरिया (ग, च, वृपा) ।

१७ राम (क, ख) ।

५ दीविय (क), देविय (वृपा) ।

१८ मोस (क्व) ।

६ अग्रमालापकः क्वचित् कथंचिद् दृश्यते (वृ);
°छेलियाहत्था (ग) ।

१९. कोक्काण (क) ।

२० मेत (क, ख, ग, घ, च) ।

७. कुणिका (क्व); साउणिया (वृपा) ।

२१ पल्लव (क, घ). पल्हव (ख, वृ) ।

८. विसगरदायगा (क), विसगरलदायगा (ख),
विसगरस्स ° (घ) ।

२२ महुर (च, वृ) ।

खासिय नेदर^१ मरहद्व^२ मुद्विय आरव डोंविलग कुहण केकय हूण रोमग रुह मरुगा^३ चिलायविसयवासी य पावमतिणो,
जलयर-थलयर-‘सणहपय-उरग’^४-खहचर-सडासतोड-जीवोवघायजीवी, सण्णी य असण्णिणो य पज्जत्ता असुभलेस्सपरिणामा^५ ॥

२२ एते अण्णे य एवमादी करेति पाणातिवाय-करण, पावा पावाभिगमा पावरुई^६ पाणवहकयरती पाणवहरूवाणुट्टाणा पाणवहकहासु अभिरमता तुट्टा पाव करेत्तु होति य बहुप्पगार ॥

पाणवहस्स फलविवाग-पदं

२३ ‘तस्स य पावस्स फलविवागं अयाणमाणा वड्ढेति—महव्भय अविस्साम-वेयण दीहकालवहुदुक्खसंकड’ नरय-तिरिक्ख-जोणि । इओ आउक्खए चुया^७ असुभकम्मवहुला उववज्जति नरएसु हुलित—महालएसु, वयरामय-कुडु-रुंद-निस्सधि - दारविरहियं - निम्मद्व^८ - भूमितल-खरामस्स^९-विसम-णिरयघर-चारएसु^{१०}, महोसिण-सयावतत्त^{११}-दुग्गध-विस्स-उव्वेयणगेसु^{१२} वीभच्छ^{१३}-दरिसणि-ज्जेसु, निच्चं हिमपडलसीयलेसु^{१४}, कालोभासेसु^{१५} य, भीम-गभीर-लोमहरिसणेसु, णिरभिरामेसु, निप्पडियार-वाहि-रोग-जरा-पीलिएसु^{१६}, अतीवनिच्चघकार-तिमिसेसु,^{१७} पतिभएसु, ववगय-गह-चद-सूर-णक्खत्त-जोइसेसु, मेयवसामंसपडल-पुच्चड-पूयरुहिरुक्कण-विलीण-चिक्कण-रसियावावण-कुहियचिक्खत्तलकदमेसु, कुकूलानल^{१८}-पलित्त- जाल - मुम्मुर- असिक्खुरकरवत्तधार-सुनिसितविच्छुयडक-

१. मेदर (ख, ग, च) ।

२. मढा (वृपा) ।

३. एतानि च प्रायोलुप्तप्रथमावहुवचनानि ।

४. सणहप्फतोरग (क, ख, ग), सणफतोरग (घ, च) ।

५. °परिणामे (क, ख, घ) ।

६. पावरुती (ख, घ, च) ।

७. °दुक्खवेयण (क) ।

८. ‘तस्म’ इति पदादारभ्य ‘चुया’ इति पदान्त. पाठ वृत्तिकारेण सर्वेषु आदर्शेषु नोपलब्ध, यथा—तस्मेत्यादि सूत्र च क्वचिदेव दृश्यते (वृ) ।

९. पार ° (क, घ); यार ° (ग), वार ° (च) ।

१०. निमद्व (ख, ग, घ, च) ।

११. खरामस (क, घ); खरामस (ग, च),

खरामरिस (क्व) ।

१२. °नारएसु (ख) ।

१३. सइयतत्त (क) ।

१४. उव्वेयजणगेसु (क्व) ।

१५. विभत्थ (ख, ग) ।

१६. °सीयलेसु य (क, ग, घ, च) ।

१७. काला ° (क) ।

१८. जलपीलिएसु (क); जरपोलिएसु (ग, घ) ।

१९. तिमिएसु (क) ।

२०. कुक्कुला ° (क) ।

निवातोवम्म^१-फरिस-अतिदुस्सहेसु, अत्ताणसरण-कंडुय^१दुक्खपरितावणेसु,
अणुवद्ध-निरतरवेयणेसु, जमपुरिससकुलेसु ॥

२४ तत्थ य अतोमुहुत्तलद्धि-भवपच्चएण निव्वत्तेति य^३ ते सरीर, हुंड वीभच्छ-
दरिसणिज्जं^३ वीहणग अट्टि-ण्हारु-णह-रोमवज्जिय 'असुभगघ-दुक्खविसह'^४ ॥

२५ ततो य पज्जत्तिमुवगया इदिएहि पचहि वेदेति असुभाए वेयणाए उज्जल-वल-
विउल^५-उवकड-खर-फरुस-पयड-घोर-वीहणग-दारुणाए, किं ते ? —

कदुमहाकुभियपयणपउलण-तवगतलणभट्टुभज्जणाणि य, लोहकडाहकठणाणि
य, कोट्ट^६-वलिकरण-कोट्टणाणि य, सामलितिक्खग्ग-लोहकंटक-अभिसरणाप-
सरणाणि^७ फालण-विदारणाणि^८ य, अवकोडकवधणाणि^९ य^{१०}, लट्टिसय-
तालणाणि य, गलगवलुल्लवणाणि य, सूलग्गभेयणाणि य, आएसपवचणाणि,
खिसणंविमाणणाणि य, विघुट्टपणिज्जणाणि, वज्जसयमातिकाणि य ॥

२६ एव ते पुव्वकम्मकयसचयोवतत्ता निरयग्गि-महग्गिसपलित्ता गाढदुक्ख महवभय
कक्कस असाय सारीर माणस च तिव्व दुविह वेदेति वेयण, पावकम्मकारी
वहूणि पलिओवम-सागरोवमाणि कलुण पालेति ते अहाउ^{११} जमकाइय^{१२}
तासिता य सट्ठं करेति भीया, किं ते ? —

अविभाव^{१३}-सामि-भाय-वप्प-ताय 'जियव'^{१४} मुय मे^{१५} मरामि दुव्वलो वाहि-
पीलिओह, किं दाणिज्जि ?

एव दारुणे णिह्ओ य मा देहि मे पहारे, उस्सासेत^{१६} मुहुत्तय मे देहि, पसाय
करेहि^{१७}, मा रूस, वीसमामि, गेविज्जं मच^{१८} मे मरामि, गाढ तण्हाइओ^{१९} अह
देहि पाणीय,

१. °डडक° (क, ख, ग, घ, च) ।

२. उ (ग, घ) ।

३. दुहरिमणिज्ज (ख, वृ) ।

४. असुभदुक्खविसह (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

५. तिउल (वृपा) ।

६. कोट्टकिरिया (वृपा) ।

७. अहिसरणोसारणाणि (क), °सारणाणि

(ख, ग, घ, च) ।

८. विदारणाणि (क, ग) ।

९. अवकोडग° (ग) ।

१०. × (ख, घ, च) ।

११. अहाउय (वृ) ।

१२. जमकातिय (क, ख, ग, घ, च) ।

१३. अविहाव (वृ) ।

१४. जितव (ग) ।

१५. जियवम्मय (ख, च) ।

१६. °न (ख) ।

१७. करेह (ख, ग, घ, च, वृ) ।

१८. मुयह (क, ख, ग, घ, च) ।

१९. तण्हातिओ (ख, घ) ।

ता हत' ! पिय इम जलं विमल सीयलं ति घेत्तूण य नरयपाला' तवियं तउयं से देति कलसेण अजलीसु, दट्ठूण य त पवेवियगमगा असुपगलतपप्पुयच्छा छिण्णा तण्हा' इयम्ह कलुणाणि' जपमाणा, विप्पेक्खता दिसोदिस', अत्ताणा असरणा अणाहा अबघवा बधुविप्पहूणा विपलायति य मिगा व वेगेण भयुव्विग्गा', घेत्तूण बला पलायमाणेण निरणुकपा मुह विहाडेत्तु लोहडडेहि कलकल' ण्ह वयणसि छुभति केइ जमकाइया हसंता ॥

२७ तेण य दड्ढा सता रसति य भीमाइ विस्सराइं, रुदति' य कलुणगाइं पारेवतगा' व, एव पलवित-विलाव-कलुणो कदिय-बहुरुन्न-रुदियसदो परिदेविय'°-रुद्ध-बद्धकारव-सकुलो णीसदो "रसिय-भणिय-कुविय-उक्कूइय-निरयपालतज्जिय-गेण्ह, ककम, पहर, छिंद, भिंद, उप्पाडेहि, उक्खणाहि", कत्ताहि, विकत्ताहि य, भज'°, हण, विहण, विच्छुभोच्छुभ'", 'आकट्ट, विकट्ट'°, कि ण जपसि'°? सराहि पावकम्माइ दुक्कयाइ"—एव वयणमहप्पगब्भो पडिसुयासद्-सकुलो तासओ'° सया निरयगोयराण महाणगर-डज्जमाण-सरिसो निग्घोसो सुच्चए'° अणिदो तहिय नेरइयाण जाइज्जताण जायणाहि, कि ते ?—

असिवणदब्भवणजतपत्थरसूइतलखारवाविकलकलेतवेयरणिकलववालुयाजलिय-गुहनिरुभण-उसिणोसिणकटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहपहगमणवाहणाणि ॥

२८. इमेहिं विविहेहिं आयुहेहिं'°, कि ते ?—

मोग्गर मुसुढि'° करकच सत्ति हल गय मुसल चक्क कोत तोमर सूल लउल भिडिमाल सव्वल'° पट्टिस चम्मेट्ट'° दुहण मुट्टिय असिखेडग खग्ग चाव नाराय

१. हता (क्व) ।

२. निरयवाला (क्व) ।

३. तण्ह (क, ख, घ, च) ।

४. वचनानीति गम्यते (वृ) ।

५. °दिसि (क, घ) ।

६. भउव्विग्गा (क) -

७. कलकल (ग, घ, च), त्रपुकमिति गम्यते ।

८. रुयति (क, ग), रुवति (घ), रोवंति (च) ।

९. °वयगा (क, ग) ।

१०. परिवेदिय (क, ख, घ); परिवेविय (वृपा) ।

११. उग्घाडेहुक्खणाहि (क), उप्पाडेहुक्खणाहि (ख, ग, घ, च) ।

१२. भुज्जो, भुज्जो (क); भुज्जो (ख, ग, घ,

च, वृ), अत्र वृत्ते. पाठान्तर मूलपाठत्वेन

स्वीकृतम् । 'भुज्जो' इति पदापेक्षया 'भज'

इति पद क्रियापदप्रयोगे प्रासङ्गिकमस्ति ।

१३. विच्छुभोच्छुभ (क), विच्छुभउच्छुभ (वृ); निच्छुभ° (वृपा) ।

१४. आकट्ट विकट्ट (ख ग, घ, च) ।

१५. जानासि (वृपा) ।

१६. विहणओ तासणओ पडिब्भओ अइब्भओ(वृपा)।

१७. सुव्वए (ख, ग, घ) ।

१८. आउहेहिं° (क, ग) ।

१९. मुसुढि (क) ।

२०. सद्दल (वृ) ।

२१. चम्मेट्ट (क, घ) ।

कणक कप्पणि वासि परसु टकतिक्ख निम्मल^१, अण्णेहि य एवमादिएहि असुभेहि वेउव्विएहि पहरणसतेहि अणुवद्धतिव्वेरा परोप्पर वेयण उदीरेति अभिहणता ॥

२६ तत्थ य मोगगरपहारचुण्णिय-मुसुढिसभग्गमहितदेहा जतोपीलण^२-फुरत-कप्पिया केइत्थ सचम्मका विगत्ता णिम्मूलुल्लूण^३-कण्णोट्टणासिका छिण्णहत्थपादा असि-करकय-तिक्खकोत-परसु-प्पहारफालिया^४ वासीसतच्छित्तगमगा कलकलखार-परिसित्त-गाढड्ढत्तगत्ता कुतग्गभिण्ण-जज्जरिय-सव्वदेहा विलोलति महीतले विसूणियंगमगा^५ ।

तत्थ य विग-सुणग-सियाल-काक-मज्जार - सरभ-दीविय-वियग्घ-सद्दूल-सीह-दप्पिय-खुहाभिभूतेहि णिच्चकालमणसिएहि घोरासमाणभीमरूवेहि अक्कमित्ता दढदाढागाढड्ढककड्डिय^६ - सुतिक्खनहफालियउद्धदेहा विच्छिप्पते समतओ विमुक्कसधिवघणा वियगिमगा ।

कक-कुरर-गिद्ध-घोरकट्टवायसगणेहि य पुणो खरथिरदढणक्ख-लोहतुडेहि ओवत्तित्ता पक्खाहय-‘तिक्खणक्खविक्खित्तजिब्भ-अच्छियनयण’^७-निद्दयोलुग्ग-विगतवयणा^८, उक्कोसता य, उप्पयता निपतता भमता पुव्वकम्मोदयोवगता पच्छणुसएण^९ ड्ढमाणा, णिदता पुरेकडाइ कम्माइ पावगाइ, तहि-तहि तारि-साणि^{१०} ओसण्णच्चिककणाइ दुक्खाइ अणुभित्ता, ततो य आउक्खएण उव्वट्टिया समाणा वहवे गच्छति तिरियवसहि—दुक्खुत्तार^{११} सुदारुण जम्मण-मरण-जरा-वाहि-परियट्टणारहट्ट जलथलखहचर-परोप्पर-विहिसणपवच ॥

३०. इम च जगपागड^{१२} वराका दुक्ख पावेति^{१३} दीहकाल, किं ते ?—

सीउण्हत्तण्हखुहवेयण-अप्पडीकारअडविजम्मण-णिच्चभउव्विग्गवास-जग्गणवध-वधण-तालणकण^{१४} - निवायण-अट्टिभंजण-नासाभेय^{१५} -प्पहार -दूमण-छविच्छेयण-अभिओगपावण - कसकुसार^{१६}-निवाय - दमणाणि वाहणाणि य, मायापिति-

१. ततस्तैरिति व्याख्येयम्, तृतीया बहुवचन-लोपदर्शनात् (वृ) ।

२. °पिलुण (ख, च) ।

३. °ल्लूय (क) ।

४. °फालिय (वृ), वृत्तिकारेण विभक्तिरहित पद लब्धम् । तेन अग्रिमपदेन सह समास सूचित ।

५. निग्गयग्गजीहा (वृपा) ।

६. दिढ (क) ।

७. °जिब्भच्छिय° (क, ख, ग, घ, च) ।

८. ओलुत्तविगयगत्ता (वृपा) ।

९. पच्छणुसएण (ख, ग, घ) ।

१०. तारिसाहि (क) ।

११. दुक्खुत्तार (ख) ।

१२. °पगड (ख, ग, च) ।

१३. पावति (क, ख, घ, च) ।

१४. ताडणकण (च) ।

१५. नासाभेद (ख, घ, च) ।

१६. कस + अकुश + आर ।

विष्पयोग - सोयपरिपीलणाणि य, सत्थग्गिविसाभिघाय^१ - गलगवलावलण-
मारणाणि य, गलजालुच्छिपणाणि^२ पउलण-विकप्पणाणि य, जावज्जीविग-
बधणाणि पजर-निरोहणाणि य, सज्जूह^३-निद्धाडणाणि घमणाणि दोहणाणि
य, कुडड^४-गलवधणाणि वाड^५-परिवारणाणि^६ य, पकजलनिमज्जणाणि वारिष्प-
वेसणाणि य, ओवायणिभग-विसमणिवडण^७-दवग्गिजाल-दहणाइयाइ ॥

- ३१ एव ते दुक्खसय-सपलित्ता नरगाओ आगया इह सावसेसकम्मा तिरिक्ख-
पचेदिएसु पावति पावकारी कम्माणि पमाद-राग-दोस-वहुसचियाडं अतीव-
अस्साय^८-कक्कसाइ ॥
- ३२ भमर-मसग-मच्छियाइएसु^९ य जाइ^{१०}-कुलकोडिसयसहस्सेहि नवहि चउरिदियाण
तहि-तहि चेव जम्मण^{११}-मरणाणि अणुभवता काल सखेज्जक भमति नेरइय-
समाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-घाण-चक्खुसहिया ॥
३३. तहेव तेइदिएसु—कुथु^{१२}-पिपीलिका-अवधिकादिकेसु^{१३} य जाती-कुलकोडिसय-
सहस्सेहि अट्टहि अणुणएहि तेइदियाण तहि-तहि चेव जम्मण-मरणाणि अणुभवता
काल सखेज्जक भमति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण^{१४}-घाण-संपउत्ता ॥
- ३४ 'तहेव वेइदिएसु'^{१५}-गडूलय^{१६}-जलुय^{१७}-किमिय-चदणगमादिएसु य जाती-कुलकोडि-
सयसहस्सेहि सत्तहि अणुणएहि वेइदियाण तहि-तहि चेव जम्मण-मरणाणि
अणुभवता काल सखेज्जक भमति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-
सपउत्ता ॥
३५. पत्ता एग्गिदियत्तण पि य—पुढवि-जल-जलण-मारुय-वणप्फति-सुहुम-वायर च
पज्जत्तमपज्जत्त पत्तेयसरीरणामसाहारणं च । पत्तेयसरीरजीविएसु य, तत्थवि
कालमसखेज्जगं भमति, अणतकाल च अणतकाए फासिदियभाव-सपउत्ता
दुक्खसमुदय इम अणिट्टु पावेति^{१८} पुणो-पुणो तहि-तहि चेव परभव-तरुणगहणे^{१९}

१. °विसघाय (क) ।

१०. जाइ (ग, च) ।

२. °लुच्छिपणाणि (क); °छुपणाणि (ग);
°छिपणाणि (च) ।

११. जणण (क) ।

१२. जतु (क) ।

३. सजूह (ग) ।

१३.- अवहिकाइकेसु (ख, घ, च) ।

४ कुडड (ख, ग, च) ।

१४. रस (क) ।

५. वाडग (ग, घ, च) ।

१५. × (क, ख, घ) ।

६. परियालणाणि (क) ।

१६. गडूल (क, ग, घ, च) ।

७. विसमपडण (क) ।

१७. जलूय (ग) ।

८. असाय (ग, च) ।

१८. पाविति (ग); पावति (च) ।

९. मच्छिमाइएसु (ख, घ); मच्छिगाइ ° (ग, च) ।

१९. तरुणगणे (वृ), तरुणगहणे (वृपा) ।

कोट्टालकुलियदालण-सलिलमलण-खुभण-रुभण-अणलाणिल-विविहसत्थघट्टण-परोप्पराभिहणण-मारणविराहणाणि य अकामकाइ परप्पओगोदीरणाहि' य कज्जप्पओयणेहि' य पेस्सपसु-निमित्त ओसहाहारमाइएहि उक्खणण-उक्कत्थण-पयण-कोट्टण-पीसण-पिट्टण-भज्जण-गालण-आमोडण-सडण-फुडण-भजण-छेयण-तच्छण-विलुचण-पत्तज्भोडण-अग्गिदहणाइयाति ॥

३६. एव ते भवपरपरादुक्खसमणुवद्धा अडति ससार-वीहणकरे जीवा पाणाइवाय-निरया अणतकाल ॥
- ३७ जेवि य इह माणुसत्तण आगया कहचि नरगाओ' उव्वट्टिया अधण्णा, ते वि य दीसति पायसो विकय-विगल-रूवा खुज्जा वडभा य वामणा य बहिरा काणा कुटा य पगुला 'विअला य मूका य' मम्मणा य अधिल्लग'-एगचक्खुविणिहय-सचिल्लया' वाहिरोगपीलिय-अप्पाउय - सत्थवज्भ-वाला कुलक्खणुक्किण्णदेह-दुव्वल-कुसंघयण-कुप्पमाण-कुसठिया कुरूवा किविणा य हीणा हीणसत्ता' निच्च सोक्खपरिवज्जिया असुह-दुक्खभागी णरगाओ उव्वट्टिया इह सावसेस-कम्मा ॥
- ३८ एव णरग-तिरिक्खजोणिं कुमाणुसत्त च हिंडमाणा पावति अणतकाइ दुक्खाइ पावकारी ॥
- ३९ एसो सो पाणवहस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महव्भओ वहरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चती', न य अवेदयित्ता' अत्थि हु मोक्खोत्ति'—एवमाहसु नायकुलनदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य पाणवहस्स फलविवाग ॥

निगमण-पदं

- ४० एसो सो पाणवहो' चडो रुद्धो खुद्धो अणारिओ निग्घणो निस्ससो महव्भओ वीहणओ' तासणओ' अणज्जो' उव्वेयणओ' य निरवयक्खो' निद्धम्मो

१. °पयोगो ° (ख, ग, च) ।

२. °यणाहि (क) ।

३. नरगा (ख, ग, घ, च) ।

४. अवि य जलमूया (वृपा) ।

५. अवेल्लग (क) ।

६. सपिसल्लया (वृपा) ।

७. दीणा निस्सत्ता (क) ।

८. तत प्राणीति शेष. (वृ) ।

९. तमिति शेष (वृ) ।

१०. अस्मादिति शेष (वृ) ।

११. पाणिवधो (ख, ग, घ, च) ।

१२. वीभणओ (क, ग); वीभाणओ (ख, घ) ।

१३. तासओ (क, ख, ग, घ) ।

१४. द्रष्टव्यम्—प० १।२ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१५. उव्वेयणओ (क, ख, ग, घ, च) ।

१६. णिरावक्खो (ख) ।

निष्पिवासो निक्कलुणो निरयवास-गमण-निघणो^१ मोह-महब्भय-पवड्डओ^२ मरण
वेमणंसो^३ । पढम अहम्मदार समत्त ।

—त्ति वेमि ॥

—

१. निवघणो (क) ।

२. पयट्टओ (क, ख), पयट्टओ (ग, घ)।

३. वेमणस्सो (ख, ग, घ, च), द्वितीयसूत्रवर्तीनि

एतानि विघेपणानि अत्र न सन्ति, वृत्तिकारं-
णापि न व्याख्यातानि—साहसिओ पइभओ
अत्तिभओ ।

वीञ्चं अञ्भयणं

वीञ्चं आसवदारं

उक्खेव-पदं

१ जवू । वितिय च' अलियवयण—लहुसगलहु-चवल-भणिय भयकर-दुहकर-अयसकर-वेरकरग अरतिरति-रागदोस-मणसकिलेस-वियरण अलिय-नियडि-साति-जोयवहुल नीयजण-निसेविय निसस' अप्पच्चयकारक परमसाहु-गरह-णिज्ज परपीलाकारक परमकण्हलेस्ससहिय' दुग्गइविणिवायवड्डुण' भव-पुणवभवकर चिरपरिचियमणुगत दुरत' । वितिय अधम्मदार ॥

अलियवयणस्स तीसनाम-पदं

२ तस्स य नग्माणि गोण्णाणि होति तीस, त जहा—१ अलिय २ सढ ३ अणज्ज ४ मायामोसो' ५. असतक ६ कूडकवडमवत्थु ७ निरत्थयमवत्थग च ८ विद्देसगरहणिज्ज ९ अणुज्जग' १० कक्कणा य ११. वचना य १२ मिच्छापच्छाकड च १३ साती १४. ओच्छन्त' १५ उक्कूल' च १६ अट्ट' १७ अन्भक्खाण च १८ किट्ठिस १९. वलय २० गहण च २१ मम्मण च २२ नूम २३ नियती' २४ अप्पच्चओ २५ असमओ २६ असच्चसघत्तण २७ विवक्खो २८ अवहीय' २९ उवहि-असुद्ध ३० अवलोवो त्ति ।

१ × (ख, ग) ।

२ निस्सस (ग) ।

३. °लेससहिय (क) ।

४. °पवड्डण (क) ।

५. दुरत कीत्तित (ख, ग, घ, च) ।

६. मायामोह (क) ।

७. अणज्जुग (च) ।

८ ओत्थत्तं (क, वृपा) ।

९. उक्कल (वृपा) ।

१० आट्टं (ख) ।

११. नियडी (ग, च) ।

१२. आणाइयं (वृपा) ।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होति तीस सावज्जस्स अलियस्स वड्जोगस्स अणेगाइ ॥

अलियवयणस्स पगार-पद

- ३ त च पुण वदति केई अलिय पावा अस्सजया अविरया कवडकुडिल-कडुय-चडुलभावा^१ कुद्धा लुद्धा 'भया य'^२ हस्सट्टिया^३ य सक्खी चोरा चारभडा खडरक्खा जियजूईकरा^४ य गहिय-गहणा कक्कगुरुग-कारगा कुलिगी उवहिया वाणियगा य कूडतुला^५ कूडमाणी कूडकाहावणोवजीवी पडकार-कलाय-कारुइज्जा वचणपरा चारिय-चडुयार^६-नगरगुत्तिय^७-परिचारग-दुट्टुवायि-सूयक-अणवलभणिया य पुव्वकालियवयण-दच्छा साहसिका लहुस्सगा असच्चा गारविया असच्चट्टावणाहिचित्ता उच्चच्छदा अणिग्गहा अणियता छदेण मुक्क-वायी भवंति अलियाहि जे अविरया ॥
- ४ अवरे नत्थिकवादिणो वामलोकवादी भणति—सुण्णति^८ । नत्थि जीवो । न जाइ इह 'परे वा'^९ लोए । न य किच्चिवि फुसति पुण्णपाव । नत्थि फल सुकय-दुक्क-याण । पचमहाभूतिय सरीर भासति ह^{१०} वातजोगजुत्त । पच य खधे भणति केई । मण च मणजीविका वदति । वाउजीवोत्ति एवमाहसु । सरीर सादिय सनिघणं इह भवे 'एगे भवे'^{११}, तस्स विप्पणासम्मि^{१२} सव्वनासोत्ति—एव जपति मुसावादी ॥
- ५ तम्हा दाणव्वय^{१३}-पोसहाण तव-सजम-वभचेर-कल्लाणमाइयाण नत्थि फल, नवि^{१४} पाणवह-अलियवयण, न चेव चोरिक्ककरण-परदारसेवण^{१५} वा सपरिग्गह-पावकम्मकरण पि नत्थि किच्चि^{१६}, न नेरइय-तिरिय-मणुयाण जोणी, न देवलो गो वत्थि, न य अत्थि सिद्धिगमण, अम्मापियरो वि नत्थि, नवि अत्थि पुरिसकारो,

१ चट्टुल० (ख, ग, घ, च) ।

२. अस्मिन्कृतृपदप्रकरणे वृत्तिकृता चतुर्थ्यन्त पञ्चम्यन्त वा व्याख्यात 'भया य' इति पद नैव सगच्छते । सम्भवत. 'भयट्टा' अथवा 'भयट्टा य' इति पद आसीत्, किन्तु लिपि-करणक्रमे परिवर्तितमिवाभाति ।

३. हस्सट्टि (क), हस्सट्टाय (वृषा) ।

४. ०जुयकरा (ख) ।

५. ०कुरुग (क), ०कुरग (ख, ग, च); ०कुरुग (घ) ।

६. कूडतुल (ग) ।

७. चाटुयार (ख), चटुयार (ग, च) ।

८. नगरगोत्तिय (ग) ।

९. जगदिति गम्यते (वृ) ।

१०. परेच्च (क, च); परिच्च (घ) ।

११. हे (वृ) ।

१२. × (ख, ग, च) ।

१३. विप्पणासे (क), विप्पणासंसि (च) ।

१४. दाणवत (क, च) ।

१५. नेवि (ख, च) ।

१६. परदारा ० (क) ।

१७. किपि (क, च) ।

- पच्चक्खाणमवि नत्थि, नवि अत्थि कालमच्चू, अरहंता चक्कवट्ठी बलदेव-
वासुदेवा नत्थि, नेवत्थि केइ रिसओ, धम्माधम्मफल च नवि अत्थि किञ्चि
वहुय च थोव' वा ।
- तम्हा एव विजाणिऊण^१ जहा सुबहु-इदियाणुकूलेसु सव्वविसएसु वट्टह । नत्थि
काइ किरिया वा अकिरिया वा—एव भणति नत्थिकवादिणो वामलोगवादी ॥
- ६ इम पि विडय कुदसण असव्भाववाइणो पण्णवेति मूढा—सभूतो अडकाओ
लोको । सयभुणा सय च निम्मिओ । एव एत अलिय, पयावइणा इस्सरेण य
कय ति केई' । एव विणहुमय कसिणमेव य जग ति केई ॥
- ७ एवमेके वदति मोस—एको आया अकारको वेदको य सुकयस्स दुक्कयस्स य
करणाणि कारणाणि सव्वहा सव्वहि च निच्चो य निक्किओ निग्गुणो य अणु-
वलेवओत्ति' वि य ॥
- ८ एवमाहसु असव्भाव—जपि इह किञ्चि जीवलोके दीसइ सुकय वा दुक्कय वा
एय जदिच्छाए वा, सहावेण वावि दइवतप्पभावओ वावि भवति, 'नत्थेत्थ
किञ्चि कयक तत्तं'^२ ।
- लक्खणं-विहाण नियती य कारिया—एव केइ जपति इड्डिरससातगारवपरा,
वहवे करणालसा परूवेति धम्मवीमसएण मोस ॥
- ९ अवरं अहम्माओ रायदुट्ट अवभक्खाणं भणंति अलिय—चोरोत्ति' अचोरिय
करेत, डामरिओत्ति वि य एमेव उदासीण, दुस्सीलोत्ति य परदार गच्छतित्ति
मडलित्ति सीलकलियं, अयंपि गुरुत्तप्पओत्ति, अण्णे एवमेव भणति उवहणता',
मित्तकलत्ताइ सेवति अयपि लुत्तघम्मो, इमो वि वीसभघायओ पावकम्मकारी
अकम्मकारी अगम्मगामी, अय दुरप्पा बहुएसु य पातगेसु^३ जुत्तोत्ति—एव
जपति' मच्छरी'^४ भट्ठके व'^५ गुण-कित्ति-नेह-परलोग-निप्पिवासा ॥
- १० एव ते अलियवयणदच्छा परदोसुप्पायणप्पसत्ता वेढेति अक्खडय-वीएण अप्पाण
कम्मवघणेण मुहरी असमिक्खयप्पलावी, निक्खेवे अवहरति परस्स अत्थमि
गढियगिद्धा, अभिजुजति य परं असतएहि'^६, लुद्धा य करेति कूडसक्खत्तणं,
असच्चा अत्थालिय च कन्नालिय च भोमालिय च तथा गवालिय च गरुय
भणति अहरगतिगमण ॥

१. थोवक (क) ।

२. जाणिऊण (ख, ग, घ, च) ।

३. केयि (ख, घ, च); केति (ग) ।

४. अण्णो अलेवओत्ति (वृषा) ।

५. नत्थि किञ्चि कय नत्त (वृषा) ।

६. चोरित्ति (क) ।

७. तद्घृत्तिकीर्त्यादिकमिति गम्यते (वृ) ।

८. पावगेसु (ग, च) ।

९. भणति (क) ।

१०. मच्छरीया (ग) ।

११. वा (ग, च) ।

१२. रूपणं. इति गम्यम् (वृ) ।

अलियवयणस्स फलविवागपदं

- १५ तस्स य अलियस्स फलविवाग अयाणमाणा वड्ढेति महवभय अविस्सामवेयणं दीहकाल बहुदुक्खसकड नरय-तिरिय-जोणिं । तेण य अलिण्ण समणुवद्धा आडद्धा पुणवभवघकारे भमति भीमे दुग्गतिवसहिमुवगया ॥
- १६ तेय दीसतिह दुग्गगा दुरता परव्वसा अत्थभोगपरिवज्जिया असुहिता 'फुडियच्छवी वीभच्छा विवन्ना'^१ खरफरुस-विरत्त-ज्झाम-ज्झुसिरा निच्छाया लल्ल-विफल-वाया असक्कतमसक्कया अगधा अचेयणा दुभगा अकता काकस्सरा हीणभिण्णघोसा विहिंसा जडवहिरंधया^२ य मम्मणा अकत-विकय^३-करणा णीया णीयजण-निसेविणो लोग-गरहणिज्जा भिच्चा असरिसजणस्स पेस्सा दुम्मेहा लोक-वेद-अज्झप्प-समयसुतिवज्जिया नरा घम्मवुद्धि-वियला ॥
- १७ अलिण्ण य 'ते डज्झमाणा'^४ असतएणं अवमाणण-पट्टिमंस-अहिक्खेव-पिसुणभेयण-गुरु-वधव-सयण-मित्तवक्खारणादियाड अढभक्खाणाइ बहुविहाडं पावेति अमणोरमाइ^५ हियय-मण-दूमकाइ जावज्जीव दुरुद्धराइ^६ अणिट्ठखरफरुसवयण-तज्जण-निव्वभच्छण-दीणवदणविमणा कुभोयणा कुवाससा कुवसहीसु किलिस्सता नेव सुहं नेव निव्वुइ उवलभति अच्चत-विपुल-दुक्खसय-सपलित्ता^७ ॥
१८. एसो सो अलियवयणस्स फलविवाओ इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महवभयो वहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चइ, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामघेज्जो, कहेसी य अलिय-वयणस्स फलविवाग ॥

निगमण-पद

- १९ एय त वित्थियपि अलियवयण लहुसगलहु-चवल-भणिय भयंकर-दुहकर-अयसकर-वेरकरग अरतिरति-रागदोस-मणसकिलेस-वियरण अलिय-नियडि-सादि-जोगवहुल नीयजण-निसेविय निस्संस अप्पच्चयकारक परमसाहु-गरहणिज्ज परपीलाकारक परमकण्हलेससहिय दुग्गतिविनिवायवड्डुण भव-पुणवभवकर चिरपरिचियमणुगय दुरत । वित्थिय अघम्मदार समत्त ।

—त्ति वेमि ॥

१ फुडियच्छवित्रीभच्छविवन्ना (ख, ग, घ, च, वृ) ।

२. जडवहिरसूका (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

३. विकत (ख, ग, च), अकृतानि विकृतानि च विरूपतयाकृतानि (वृपा) ।

४. तेण य डज्झमाणा (ग) ।

५. अणुवमाणि (वृ), अमणोरमाइ (वृपा) ।

६. दुद्धराइ (क) ।

७. सपउत्ता (ग) ।

तइयं अज्भयणं

तइयं आसवदारं

उक्खेव-पदं

१ जवू ! तइय च अदिण्णादाणं^१—हर-दह-मरण-भय-कलुस-तासण-परसत्तिगऽ-
भेज्जलोभमूल काल-विसम-ससिय अहोऽच्छिण्णतण्ह-पत्थाण-पत्थोइमइय
अकित्तिकरणं अणज्ज छिद्दमतरं^२-विधुर-वसण-मग्गण-उस्सव-मत्त-प्पमत्त-
पसुत्त-वचणाखिवणं^३-घायणपर-अणिहुयपरिणामतक्करजणवहुमय अकलुणं
रायपुरिसरक्खिय सया साहुगरहणिज्ज पियजण-मित्तजण-भेदविप्पीतिकारकं
रागदोसवहुल पुणो य उप्पूर-समर-सगाम-डमर-कलि-कलह-वेहकरण दुग्गति-
विणिवायवड्डुण भव-पुणब्भवकर चिरपरिचित्तमणुगय दुरत । तइय
अधम्मदारं ॥

अदिण्णादाणस्स तीसनाम-पदं

२ तस्स य णामाणि गोण्णाणि होति तीस, तजहा—१ चोरिक्क २ परहड
३ अदत्तं ४ कूरिकडं^५ ५. परलाभो^६ ६ असजमो ७ परघणम्मि गेही
८ लोलिक्का^९ ९ तक्करत्तण ति य १०. अवहारो ११. हत्थलहुत्तण^{१०}
१२ पावकम्मकरण १३ तेणिक्का^{११} १४ हरण-विप्पणासो १५. आदियणा
१६ लुपणा घणाणं १७ अप्पच्चओ १८ ओवीलो १९ अक्खेवो २०. खेवो

१ अदिन्निदाण (क, ख, घ) ।

टुककृत' द्श्यते (वृ) ।

२. वाचनान्तरे त्विदमेव पठ्यते—छिद्रविषम-
पापक च (वृ) ।

५ परलोभो (क, ख, ग, घ, च) ।

६. लोलिक्क (ग) ।

३ वचणक्खिवण (ग, च) ।

७ हत्थलत्तण (वृ), हत्थलहुत्तण (वृपा) ।

४. कूरिकर (क) कूरिकय (ख), क्वचित्तु 'कुरु-

८. तेणक्क (ग) ।

२१ विक्रवेवो २२ कूडया २३. कुलमसी य २४ कखा २५ लालप्पण-
पत्थणा य २६ 'आससणाय वसणं'^१ २७. इच्छा मुच्छा य २८. तण्हा गेही
२९. नियडिकम्म ३० अपरच्छ त्ति ।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होति तीस अदिण्णादाणस्स^२
पाव-कलिकलुस-कम्मवहुलस्स अणेगाइ ॥

चोरिय-चोरपगार-पदं

३. त च पुण करेति चोरिय तक्करा परदव्वहरा छेया कयकरण-लद्धलक्खा
साहसिया लहुस्सगा अतिमहिच्छ-लोभगत्था^३, ददर-ओवीलका य गेहिया
अहिमरा अणभजका^४ भग्गसधिया रायदुट्टकारी य विसयनिच्छूढा^५ लोकवज्झा,
उदहक^६-गामघाय-पुरघाय-पथघायग-आलीवग^७-तित्थमेया लहुहत्थ-सपउत्ता
जूईकरा^८ खडरक्ख-त्थीचोर-पुरिसचोर-सधिच्छेया य गथिभेदग-परघणहरण-
लोमावहार-अक्खेवी हडकारक^९-निम्मद्दग-गूढचोर-गोचोर-अस्सचोरग-
दासिचोरा य एकचोरा ओकडुक-संपदायक-उच्छिपक-सत्थघायक-विलकोली-
कारका य निग्गाह-विप्पलुपगा^{१०} बहुविहतेणिकहरणवुद्धी,^{११} एते अण्णेय
एवमादी परस्स दव्वाहि जे अविरया ॥

रण्णो परघणहरण-पदं

४. विपुलवल-परिग्गहा य बहवे रायाणो परघणम्मि गिद्धा^{१२} चउरग-समत्त^{१३}
वलसमग्गा निच्छिय-वरजोह-जुद्धसद्धिय-अहमहमिति^{१४} दप्पिएहि सेन्नेहि^{१५}
सपरिवुडा पउम-सगड-सूइ-चक्क-सागर-गरुलवूहाइएहि^{१६} अणिएहि उत्थरंता
अभिभूय हरति परघणाइ ॥

घणत्थं जुद्ध-पदं

५. अवरे रणसीसलद्धलक्खा सगामम्मि अतिवयति सण्णद्धवद्धपरियर-उप्पीलिय-

- | | |
|---|---|
| १. आसासणाय वसण (क, च), वसण (वृ);
आससणाय वसण (वृपा) । | ९ परघणलोमावहारअक्खेवहडकारगा (वृपा) । |
| २. अदिण्णदाणम्म (क, ग) । | १० विलुपका (ख, घ, च) । |
| ३. °घत्था (क) । | ११ बहुविहतहवहरणवुद्धी (वृपा) । |
| ४. अणभजक (ख, ग, घ, वृ) । | १२. गिद्धा सए दव्वे असतुट्टा परविसए अभिहणति
लुट्टो परघणस्स कज्जे (क, ख, ग, घ, च, वृपा) । |
| ५. °निच्छूढ (क, ग, घ) । | १३. विमत्त (वृ), समत्त (वृपा) । |
| ६ उदोहक (वृ), उदहक (वृपा) । | १४. भिच्चेहि (वृ), सेन्नेहि (वृपा) । |
| ७ आदीवक (स) । | १५. °वूहतिएहि (क, ग, घ, च); °वूहाहिएहि
(ख), वूहाचितेहि (वृ) । |
| ८ जूइकरा (क, घ), जूयिकगा (ख, च) । | |

चिघपट्ट-गहियाउहपहरणा माढि-गुड-वम्मगुडिया' आविद्धजालिका कवय^१-
 ककडइया^२ उरसिरमुह-वद्धकठतोन-माइयवरफलगरचित-पहकर-सरभस-
 खरचावकर-करछिय-सुनिसितसरवरिसचडकरक-मुयतघणचडवेग-धारानिवाय-
 मगो,^३ अणेगधणुमडलग-सधित-उच्छलियसत्तिकणग-वामकरगहियखेडग-
 निम्मलनिकिकट्टुखग्ग - पहरतकोत - तोमर - चक्क-गया-परसु-मुसल-लगल-सूल-
 लउल^४ - भिडिमाल - सव्वल - पट्टिस - चम्मेट्टु - दुघण-मोट्टिय^५-मोग्गर-वरफलह-
 जतपत्थर - दुहण-तोण - कुवेणी-पीढकलिए, ईली - पहरण-मिलिमिलिमिलत-
 खिप्पत-विज्जुज्जलविरचितसमप्पहणतले, फुडपहरणे, महारण-सख-भेरि-
 वरतूर-पउरपडुपडहाहय-णिणाय-गंभीरणदित-पक्खुभियविपुलघोसे, हय-गय-
 रह-जोह-तुरिय-पसरित-रउद्धत-तमघकारबहुले, कातरनर-णयणहियय-
 वाउलकरे, विलुलिय - उक्कडवर - मउड - तिरीड - कुडलोडुदामाडोविय-
 पागडपडाग-उसियज्भय^६-वेजयति-चामरचलत-छत्तधकारगभीरे, हयहेसिय-
 हत्थिगुलुगुलाइय-रहघणघणाइय - पाडक्कहरहराइय-अप्फोडियसीहनाय-छेलिय-
 विघुट्टुक्कुट्टु-कठकयसद्-भीमगज्जिए, सय राहहसत-रुसत-कलकलरवे,
 आसूणियवयण-रुद्भीम-दसणाघरोट्टु-गाढदट्टु-सप्पहारणुज्जयकरे, अमरिसवस-
 तिव्वरत्त-निद्धारितच्छे, वरदिट्टि-कुद्धचेट्टिय-तिवलीकुडिलभिउडि-कयनिलाडे,
 वधपरिणय-नरसहस्स-विक्कम-वियभियवले, वग्गततुरग-रहपहाविय-समरभडा-
 वडिय-छेय-लाघव-पहारसाधित - समूसवियवाहुजुयल-मुक्कट्टुहास-पुक्कत^७-वोल-
 बहुले, फुरफलगावरणगहिय^८-गयवरपत्थेत-दरियभडखल-परोप्परवलग्ग-
 जुद्धगव्विय - विउसितवरासिरोसतुरियअभिमुहपहरेत - छिन्नकरिकर-वियगित-
 करे^९, अवइद्ध-निसुद्धभिन्न-फालिय-पगलिय-रुहिरकय-भूमिकद्म-चिलिच्चिल-
 पहे, कुच्छिदालिय - गलत-निभेलितत-फुरुफुरत^{१०}-विगल-मम्माहय-विकय^{११}-
 गाढदिन्नपहारमुच्छित - रुलत - विव्भल^{१२} - विलावकलुणे हयजोह - भमततुरग-
 उद्दामत्तकुजर-परिसकितजण - निवुक्कच्छिन्नधय - भग्गरहवर - नट्टिसिरकरि-

१. माढिवरवम्मगुडिया(वृ), माढिगुडवम्मगुडिया
 (वृपा) ।

२. क्वया (ख, च) ।

३. ककडइया (क) ।

४. °निवायमते (वृपा) ।

५. लउड° (ख) ।

६. मुट्टि (क); मोट्टि (ख) ।

७. °वय (ख, च) ।

८. फुक्कत (ख, घ, च) ।

९. फनफलगा° (क, ग, घ), फडफलगा° (च) ।

१०. विभगितकरे (क, ख, ग, घ, च) ।

११. फुरफरेंत (क, घ) ।

१२. विहिय (ख, च) ।

१३. वेव्वल (ख, ग, घ, च) ।

कलेवराकिण्ण - पडिय - पहरणविकिण्णाभरणभूमिभागे^१, नच्चंतकवधपउर-
भयकरवायस-परिलेतगिद्धमडल-भमंतच्छायधकारगभीरे ।
वसु-वसुह-विकपितव्व पच्चक्खपिउवणं परमरुह-वीहणग दुप्पवेसतरंगं
अभिवडति^२ सगामसकड परघण महता ॥

लुटाक-पदं

६ अवरु पाइक्कचोरसघा सेणवई चोरवदपागड्डिका^३ य अडवीदेसदुग्गवासी काल-
हरित-रत्त-पीत-सुक्किल-अणेगसयच्चिधपट्ट-वद्धा परविसए अभिहणंति लुद्धा
घणस्स कज्जे ॥

सामुद्ध्यचोर-पदं

७. रयणागरसागर उम्मीसहस्समालाकुलाकुलविओयपोतकलकरेतकलियं,
पायालसहस्स-वायवसवेगसलिलउद्धम्ममाण-दगरययंघकार, वरफेणपउरधवल-
पुलपुलसमुद्ध्यट्टहासं, मारुयविच्छुब्भमाणपाणिय-जलमालुप्पील-‘हुलिय, अवि
य’ समतओ खुभिय-लुलिय-खोखुब्भमाण-पक्खलिय-चलियविपुलजलचक्कवाल-
महानईवेगतुरियआपूरमाण - गभीरविपुलआवत्तचवल-भममाणगुप्पमाणुच्छलंत-
पच्चोणियत्तपाणिय - पघावियखरफरुसपयडवाउलियसलिलफुट्टतवीचिकल्लोल-
सकुल, महामगर-मच्छ-कच्छभ-ओहार गाह-तिमि-सुसुमार-सावय-समाहय-
समुद्ध्यमाणक-पूरघोरपउर, कायरजण-हिययकपण, घोरमारसत महवभय
भयकर पतिभय उतासणग अणोरपार आगास चैव निरवलंव, उप्पाइयपवण-
घणियनोल्लिय-उवरुवरितरंगदरिय-अतिवेगवेग^४ चक्खुपहमुत्थरत, कत्थइ
गभीरविपुलगज्जिय-गुजिय-निग्घाय-गरुयनिवतित-सुदीहनीहारि-दूरसुव्वतगंभीर-
धुगुधुगेतसद्द, पडिपहरुभत-जक्खरक्खसकुहडपिसायरुसियतज्जायउवसग्ग-
सहस्ससकुल^५, वहुप्पाइयभूयं^६, विरचितवलिहोमधूवउवचार-दिन्नरुधिरच्चणा-
करणपयत - जोगपयय-चरिय, परियतजुगतकालकप्पोवम, दुरत, महानई-
नईवड - महाभीमदरिसणिज्जं, दुरणुचर^७ विसमप्पवेस दुक्खुत्तार दुरासय
लवणसलिलपुण्ण असिय-सिय-समूसियगेहिं दच्छतरेहिं वाहणेहिं अइवइत्ता
समुद्दमज्जे हणति गतूण जणस्स पोते ॥

१. °विणिकिण्णा ° (क) ।

२. अभिवदति (क), अभिवयति (ग), अति-
पतति (वृ) ।

३. °पागड्डिका (ख, च) ।

४. हुलियक पि य (क, ग), हुलिक त पि य
(ख, घ); हुलिय त पि य (च) ।

५. लुप्ततृतीयैकवचनदर्शनात् (वृ) ।

६. °पिसायपडिगज्जिय ° (वृ), °पिसायरुसि-
यतज्जाय ° (वृपा) ।

७. उवद्वाभिभूय (वृपा) ।

८. दुरणुचर (ग) ।

९. हत्यतरकेहिं (क, ख, ग, घ, च) ।

दारुणचौर-पदं

८ परदव्वहरणनिरणुकपा^१ निरवयक्खा गामांगर-नगर-खेड-कव्वड-मडव-दोणमुह-पट्टणासम-णिगम-जणवते य घणसमिद्धे हणति, थिरहियय-छिण्णलज्जा वदिग्गह-गोग्गहे य गेण्हति, दारुणमतो णिक्किवा णिय हणति, छिदति गेहसंधि, निक्खित्ताणि य हरति घणधन्नदव्वजायाणि जणवयकुलाण णिग्घणमती परस्स दव्वंहि जे अवरिया ॥

अदिण्णादाणस्स ५ लविवाग-पदं

९ तहेव केइं अदिण्णादाणं^२ गवेसमाणा कालाकालेसु सचरता चियका-पज्जलिय-सरस-दरदड्डु-कड्डिय-कलेवरे, रुहिरलित्तवयण-अक्खत^३-खातियपीत^४-डाइणि-भमतभयकर-जवुयखिखियते^५, घूयकय-घोरसद्दे, वेयालुट्टिय-निसुद्ध-कहकहत-पहसित-वीहणक-निरभिरामे, अतिदुग्घिभगघ^६-वीभच्छदरिसणिज्जे, सुसाणे वण-सुन्नघर - लेण - अतरावण - गिरिकंदर - विसमसावय - समाकुलासु वसहीसु किलिस्सता, सीतातव-सोसिय-सरीरा दड्डुच्छवी निरय-तिरिय-भवसकड-दुक्खसभार-वेयणिज्जाणि पावकम्माणि सच्चिणता, दुल्लहभक्खन्नपाणभोयणा पिवासिया भुभिया किलता मस-कुणिम-कद-मूल-जकिचिकयाहारा उव्विग्गा उप्पुया^७ असरणा अडवीवासं उवेति वालसत-सकणिज्ज ।

अयसकरा तक्करा भयकरा 'कास हरामो' त्ति अज्ज दव्व इति सामत्थ करेति गुज्झ । वहुयस्स जणस्स कज्जकरणेसु विग्घकरा मत्त-पमत्त-पसुत्त^८-वीसत्थ-छिट्ठघाती वसणव्भुदएसु हरणवुद्धी विगव्वं रुहिरमहिया परिंति नरवतिमज्जाय-मतिक्कता^९ सज्जणजणदुग्घिया^{१०} सकम्मेहि पावकम्मकारी असुभपरिणया य दुक्खभागी निच्चाविल^{११}-दुहमनिव्वुड्मणा इहलोके चेव किलिस्सता परदव्वहरा नरा वसणसयसमावण्णा ॥

१० तहेव केइं^{१२} परस्स दव्व गवेसमाणा गहिता य हया य वद्धरुद्धा य तरित^{१३} अति-

१ परदव्वहरो नरा निरणुकपा (क, ख, ग, ८ पासुत्त (क, च) ।

घ, च, वृपा) ।

९. वगव्व (क) ।

२. अदिण्णदाणं (क, ग, घं, च) ।

१०. °मतिक्कमता (क) ।

३. अदर (वृपा) ।

११. °दुग्घिया (ख, घ); °दुग्घिया (ग) ।

४ खतिय° (क, ख, घ) ।

१२. निच्चाइल (क, ग, घ), निच्चाउल

५ °खिक्खियते (क, ख, ग, घ, च) ।

(ख, वृपा) ।

६. दुरभिगघ (वृ) ।

१३ केयि (क, ख, घ) ।

७ अफुया (ख) ।

१४. तुरिय (ग), तुरित (च) ।

घाडिया पुरवरं समप्पिया चोरग्गाह-चारभड-चाडुकराण तेहि^१ य कप्पडप्पहार-
निद्वय-आरक्खिय-खर-फरुस-वयण-तज्जण-गलत्थल्ल-उत्थल्लणाहिं विमणा
चारगवसहिं पवेसिया निरयवसहिसरिस ॥

११. तत्थवि गोम्मिकप्पहार-दूमण-निठभच्छण-कडुयवयण-‘भेसणग-भयाभिभूया’^२
अक्खित्त-नियसणा मलिणदंडिखडवसणा उक्कोडा-लच-पास-मग्गण-परायणेहिं
गोम्मिकभडेहिं विविहेहिं वधणेहिं, किं ते ? - हडि-नियड^३-वालरज्जुय-कुदडग-
वरत्त^४-लोहसकल-हत्थदुय-वज्जभपट्ट-दामक-णिककोडणेहिं, अण्णेहिं य एवमादिएहिं
गोम्मिक^५-भडोवकरणेहिं दुक्खसमुदीरणेहिं संकोडण-मोडणाहिं^६ वज्जभक्ति
मदपुण्णा ॥
१२. सपुड-कवाड-लोहपजर-भूमिघर-निरोह-कूव-चारग-खीलग^७ - जुय^८-चक्क-वितत-
वधण-खभालण-उद्धचलणवधण-विहम्मणाहिं य विहेडयता, अक्कोडकगाढ-
उरसिरवद्ध-उद्धपूरित^९-फुरंतउरकडग^{१०} मोडणामेडणाहिं^{११} वद्धा य नीससता,
सीसावेढ - ऊरुयाल^{१२}-चप्पडगसधिवधण^{१३} - तत्तसलागसूइयाकोडणाणि तच्छण-
विमाणणाणि य खार-कडुय-तित्त-नावण-जायण-कारणसयाणि बहुयाणि पावि-
यता, उरखोडीदिन्नगाढपेल्लण-अट्टिकसभग्ग-सपसुलिगा^{१४}, गल-कालकलोहदंड-
उर-उदर-वत्थि-पट्टि-परिपीलिता, मच्छत^{१५}-हियय-सच्चुण्णियंगमंगा ॥
१३. आणत्तीकिकरेहिं केति अविराहिय-वेरिएहिं जमपुरिस-सन्निहेहिं पहया ते तत्थ
मदपुण्णा, चडवेला-वज्जभपट्ट-पाराइ-छिव-कस-लत-वरत्त-वेत्त-प्पहारसयतालि-
यगमगा, क्विणा^{१६} लवतचम्म-वण-वेयण-विमुहियमणा, घणकोट्टिम-नियल^{१७}-
जुयलसकोडिय-मोडिया य कीरति निरुच्चारो, एया अण्णा य एवमादीओ
वेयणाओ पावा ‘पावेति अर्दतिदिया’^{१८} वसट्टा बहुमोहमोहिया परवणम्मि लुद्धा

- | | |
|--|---|
| १. तेहिं (क) । | मोटनाअडेनाभ्यामित्येतदुत्तरत्र योज्यते |
| २. भेसणगाभिभूया (वृ); भेसणगभयाभिभूता
(वृषा) । | (वृ) । |
| ३. नियल (ख, घ, च) । | ११. मोडणाहिं (ख, ग, घ, च) । |
| ४. वरत्ता (ख) । | १२. गुरुयाल (क); ऊरुयावल (वृषा) । |
| ५. गोमिक (क) । | १३. चप्पडसधि ^० (ख, घ, च) । |
| ६. मोडणेहिं (ख, घ, च) । | १४. सपसुलिगा (क) । |
| ७. कीलग (च) । | १५. इह थकारस्य छकारादेशो छान्दसत्वात्
(वृ) । |
| ८. जूय (ग) । | १६. क्विणा (क) । |
| ९. उद्धपुरीय (क, वृषा) । | १७. नियड (ख) । |
| १०. इह प्रथमावहुवचनलोपो दृश्यस्तत्तश्च | १८. पावतदतिदिया (ख, घ) । |

फासिदियविसय-तिव्वगिद्धा, इत्थिगय-रूव-सद्-रस-ग घ-डट्ट-रति-महितभोग-
तण्हाडया य धणतोसगा गहिया य जे नरगणा ॥

१४ पुणरवि ते कम्मदुव्वियड्ढा उवणीया रायकिंकराण तेसिं वधसत्थगपाढयाण
विलउलीकारकाण लचसयगेण्हाण कूड-कवड-माया-नियडि-आयरण-पणिहि-
वचण-विसारयाण वहुविहअलियसयजपकाण परलोकपरम्मुहाण निरयगति-
गामियाण ॥

१५ तेहिं य आणत्त-जीयदडा तुरिय^१ उग्घाडिया पुरवरे सिघाडग-तिय-चउक्क-
चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वेत्त-दड-लउड-कट्ट-लेट्टु-पत्थर-पणालि-
पणोल्लि-मुट्टि-लया-पाद-पण्हि-जाणु-कोप्पर-पहारसभग्ग-महियगत्ता^२ अट्टारस-
कम्मकारणा^३ जाइयगमगा कलुणा सुक्कोट्टकठगलकतालुजिन्भा जायता
पाणीय विगयजीवियासा तण्हादिता^४ वरागा तपि य ण लभति वज्भपुरिसेहि
घाडियता ॥

१६ तत्थ य खरफरुसपडहघट्टित-कूडग्गह-गाढरुट्टनिसट्टपरामट्टा वज्भकरकुडिजुय-
नियत्था, सुरत्तकणवीर-गहिय-विमुक्कुल^५-कठेगुणवज्भदूत-आविद्ध-मल्लदामा
मरणभयुप्पण्णसेयमायतणेहुत्तुपियकिलिन्नगत्ता चुण्णगुडियसरीरा रयरेणुभरिय-
केसा कुसुभगोक्खिण्णमुद्धया^६ छिण्णजीवियासा घुण्णता वज्भपाणपीता^७ तिल-
तिल चेव छिज्जमाणा सरीरविक्कत्त^८-लोहिओलित्त-कागणिमसाणि खावियता
पावा खरकरसएहिं तालिज्जमाणदेहा वातिकनरनारिसपरिवुडा पेच्छिज्जता
य नागरजणेण, वज्भनेवत्थिया पणेज्जति नयरमज्भेण, किवणकलुणा अत्ताणा
असरणा अणाहा अवधवा वधुविप्पहीणा विपेक्खता दिसोदिसिं, मरणभयुव्विग्गा
आघायण-पडिदुवार-सपाविया अधण्णा सूलग्ग-विलग्ग-भिण्णदेहा ॥

१. तरिय (क, ग, घ) ।

२. मथित ° (क, ख) ।

३. चोर. चोरापको मन्त्री,

भेदज्ञ काणकक्रयी ।

अन्नद स्थानदश्चैव,

चोर सप्तविध स्मृत ॥१॥

भलन कुशल तर्जा,

राजभागोज्वलोकनम् ।

अमार्गदर्शन शय्या,

पदभङ्गस्तथैव च ॥२॥

विश्राम पादपतनं,

आसन गोपन तथा ।

खण्डस्य खादन चैव,

तथाऽन्यन्माहराजिकम् ॥३॥

पद्याऽन्युदकरज्जूना,

प्रदानं ज्ञानपूर्वकम् ।

एता प्रसूतयो ज्ञेया,

अष्टादश मनीषिभि ॥४॥ (वृ)

४. तण्हातिता (क, च) ।

५. विमुक्कल (ख, च) ।

६. कुसुभगोखिन्न ° (क), कुसुमगोखण्ण-

मुद्धया (क्व), कुसुभगोविकन्न ° (क्व) ।

७. वज्भयाणभीया (क, वृपा) ।

८. सरीरविक्कत्त (ख, ग), सरीरविक्कत्त
(घ, च) ।

- १७ ते य तत्थ कीरति परिकप्पियंगमगा, उल्लविज्जंति रुक्खसालेहि केई कलुणाइं विलवमाणा, अवरं चउरग-घणियवद्धा पव्वयकडगा पमुच्चते' दूरपात-बहुविसम-पत्थरसहा, अण्णे य गयचलण-मलण-निमद्धिया कीरति पावकारी, अट्टारस-खडिया य कीरति मुडपरसूहिं, केई उक्कत्तकण्णोट्टनासा' उप्पाडियनयणदसण-वसणा जिब्भच्छिय-छिण्णकण्णसिरा पणिज्जते', छिज्जते य असिणा, निव्विसया छिण्णहत्थपाया य पमुच्चते, जावज्जीवबंधणा' य कीरति केइ परदव्वहरणलुद्धा कारगलनियलजुयलरुद्धा चारगाए—हतसारा सयणविप्पमुक्का मित्तजण-निरक्कया' निरासा बहुजणधक्कारसद्दलज्जाविता अलज्जा' अणुवद्धखुहा-परद्धा' सीउण्हतण्हवेयणदुह्दुघट्टिय'-विवण्णमुह-विच्छवीया विहलमइलदुव्वला किलता कासता वाहिया य आमाभिभूयगत्ता परूढनहकेसमसुरोमा छग-मुत्तम्मि-णियगम्मि खुत्ता तत्थेव मया अकामका वंधिऊण पादेसु कड्डिया खाइयाए छूढा ॥
- १८ तत्थ य वग-सुणग-सियाल-कोल-मज्जारवद-सदसगतुड'-पक्खिगणविविहमुहसय-विलुत्तगत्ता कय-विहंगा ॥
- १९ केइ किमिणा य कुत्थितदेहा अणिट्टवयणेहि सप्पमाणा—सुट्ठुकय ज मउत्ति पावो, तुट्टेण जणेण हम्ममाणा' लज्जावणका य होत्ति सयणस्सवि दीहकालं मया सता ॥
२०. पुणो परलोगसमावण्णा नरगे गच्छति निरभिरामे अगारपलित्तककप्प-अच्चत्थ-सीतवेदण-अस्साओदिण्ण-सततदुक्खसयसमभिद्दुते ॥
२१. ततोवि उव्वट्टिया समाणा पुणोवि पवज्जति तिरियजोणि । तहिपि निरयोवम'^१ अणुभवति'^२ वेयण ते ॥
२२. अणतकालेण जति नाम कहिंच्चि मणुयभाव लभति'^३ णेगेहि णिरयगतिगमण-तिरियभव-सयसहस्स-परियट्टेहि'^४ । तत्थवि य भवत्तणारिया नीचकुलसमुप्पण्णा आरियजणेवि लोगवज्झा तिरिक्खभूता य अकुसला कामभोगतिसिया जहि

१. पमुच्चति (ख, घ) ।

२. उविक्खत्त° (ख), उविक्कत्त° (घ, च) ।

३. प्रणीयन्ते आघातस्थानमिति गम्यन्ते (वृ) ।

४. जावज्जीय° (क) ।

५. °निरिक्कया (क, ग) ।

६. अणज्जा (क) ।

७. °पारद्ध (ख, ग, वृ); °परद्ध (घ, वृपा) ।

८. °तण्हा° (क) ।

९. सडासत्तुड (क, घ, च) ।

१०. भण्णमाणा (क) ।

११. निरयोवम (ख) ।

१२. अणुभवति (क, घ) ।

१३. लहति (ख, घ, च) ।

१४. परियट्टेहि (ग) ।

निबंधति निरयवत्तिणि', भवप्पवचकरण-पणोल्लि', पुणोवि 'ससार-णेमे'^१
 धम्मसुत्ति-विवज्जिया अणज्जा कूरा मिच्छत्तसुत्ति-पवण्णा य होति एगतदडरुइणो,
 वेढेता कोसिकारकीडो व्व अप्पग अट्टकम्मततु-घणवधणेण ॥

२३. एव नरग-तिरिय-नर-अमर-गमणपेरतचक्कवाल जम्मणजरमरणकरण-
 गभीरदुक्ख-पखुभियपउरसलिल सजोगवियोगवीची'-चित्तापसगपसरिय-वह्वध-
 महल्लविपुलकल्लोल-कलुणविलवित-लोभकलकलितवोलवहुल अवमाणणफेण-
 तिव्वखिसण-पुलपुलप्पभूयरोगवेयण-पराभवविणिवात-फरुसधरिसणसमावडिय-
 कढिणकम्मपत्थर - तरगरगत - निच्चमच्चुभय - तोयपट्ट कसायपायाल-सकुल
 भवसयसहस्सजलसचय अणतं उव्वेयणंयं अणोरपार महवभय भयकर पइभय
 अपरिमियमहिच्छ-कलुसमतिवाउवेगउद्धम्ममाण-आसापिवासपायाल-कामरति-
 रागदोसवधण-वहुविहसकप्पविपुलदगरंययधकार, मोहमहावत्तभोगभममाण-
 गुप्पमाणुव्वलतवहुगवभवास - पच्चोणियत्तपाणिय - पधावितवसणसमावण्ण'-
 रुण्णचडमाख्यसमाहयाऽमणुण्णवीचोवाकुलित - भगफुट्टतऽनिट्टकल्लोलसकुलजल,
 पमायवहुचडट्टुसावयसमाहय'-उट्टायमाणगपूरघोरविद्धसणत्थवहुल, अण्णाण-
 भमतमच्छपरिहत्थ - अनिहुत्तिदियमहामगरतुरियचरियखौखुब्भमाण - सताव-
 निच्चय - चलतचवलचचल-अत्ताणाऽसरणपुव्वकयकम्मसचयोदिण्णवज्जवेइज्ज-
 माण'-दुहसयविपाकघुण्णतजलसमूह, इड्डिरससायगारवोहारगहियकम्मपडिवद्ध-
 सत्त' - कड्डिज्जमाणनिरयतलहुत्तसण्णविसण्णवहुल, अरइरइभयविसायसोग-
 मिच्छत्तसेलसकड, अणातिसताणकम्मबंधणकिलेसचिक्खल्लसुदुत्तार, अमरनर-
 तिरियनिरयगतिगमणकुडिलपरियत्तविपुलवेल, हिसालय - अदत्तादाण'^{१०}- मेहुण-
 परिग्गहारभ-करणकारावणाणुमोदण-अट्टाविहअणिट्टकम्मपडित-गुरुभारोवकत-
 दुग्गजलोघदूरणिवोलिज्जमाण'^{११}-उम्मग्गनिमग्गट्टेल्लभतल, सांरीरमणोमयाणि

१ °वत्तिणि (ख, ग, घ, च) ।

२. पणोल्लि—प्रणोदीनि, अत्र द्वितीयादहुवचन-
 लोपो इय. (वृ) ।

३. ससारणेममूले (क, ख, घ); ससारावत्त-
 णेममूले (ग, च). वृत्तिकृता 'नेम त्ति मूल'
 इति व्याख्यातम् । अनेन ज्ञायते मूलमिति
 पद व्याख्याङ्गमस्ति, न तु मूलपाठाङ्गम् ।
 उत्तरकालीनादर्शेषु अस्य पदस्य मूलपाठे
 समावेशो जातः । 'इह च मूलाइति वाच्ये
 मूल इत्युक्त प्राकृतत्वेन लिङ्गव्य-

त्ययादिति'—वृत्तिकृता विवरणमिद व्याख्या-
 गतमूलपदमाश्रित्य कृतम् ।

४. जम्मजरा ° (ग, च) ।

५. वीई (क), वीति (ख, घ) ।

६. पवाहिय ° (वृपा) ।

७. पव्वात ° (क), पम्मात ° (ख, ग, घ) ।

८. °वेज्जमाण (ख, वृ) ।

९. °गारवापहार ° (ख) ।

१०. अदत्तदाण (क, ख, ग, घ) ।

११. °पोलिज्जमाण (क, ग) ।

दुखाणि उप्पियता, सातस्सायपरितावणमय उव्वुडुनिवुडुय करेता, चउरत-
महतमणवयग्ग रुद्धं ससारसागरं अट्ठियअणालवणपतिठाणमप्पमेय, चुलसीति-
जोणिसयसहस्सगुविल, अणालोकमधकार, अणतकाल निच्चं उत्तत्थ-सुण्ण-भय-
सण्णसपउत्ता वसति उव्विग्गवासवसहिं ॥

२४ जहिं-जहि आउय^१ निवधति पावकारी वधवजण-सयण-मित्तपरिवज्जिया
अणिट्ठा भवतऽणादेज्ज - दुव्विणीया कुट्ठाणासण - कुसेज्ज-कुभोयणा असुइणो
कुसघयण-कुप्पमाण-कुसठिया कुरूवा बहुकोह-माण-माया-लोभा बहुमोहा
धम्मसण्ण - सम्मत्त - परिभट्टा^२ दारिद्वोवद्दवाभिभूया, निच्च परकम्मकारिणो
जीवणत्थरहिया किविणा^३ परपिंडतक्कका दुक्खलद्धाहारा अरस-विरस-तुच्छ-
कयकुच्छिपूरा, परस्स पेच्छता रिद्धिसक्कार-भोयणविसेस-समुदयविहि निंदंता
अप्पक कयत च, परिवयता इह य^४ पुरेकडाइ कम्माइ पावगाइ^५, विमणा
सोएण ड्ज्जमाणा परिभूया होति सत्तपरिवज्जिया य, छोभा सिप्प-कला-
समयसत्थ-परिवज्जिया जहाजायपसुभूया अचियत्ता णिच्चनीयकम्मोवजीविणो
लोककुच्छणिज्जा मोहमणोरह-निरासवहुला आसापासपडिवद्धपाणा अत्थो-
पायाण-कामसोक्खे य लोयसारे होति अपच्चतगा य सुट्ठुवि य उज्जमता,
तद्विसुज्जुत्त-कम्मकयदुक्ख-सठविय-सित्थपिंड-संचयपरा खीणदव्वसारा, निच्च
अधुवघण-घण्ण-कोस-परिभोग-विवज्जिया, रहिय-काम-भोग-परिभोग-सव्व-
सोक्खाणपरिसरिभोगोवभोगनिस्साण^६-मग्गणपरायणावरागा अकामिकाएविणेति
दुक्ख, णेव सुह णेव निव्वुत्ति उवलभति, अच्चतविपुलदुक्खसय-सपलित्ता
परस्स दव्वेहिं जे अविरया ॥

२५ एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो
मह्वभओ^७ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चति न य
अवेयइत्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहसु णायकुलणदणो महप्पा जिणो उ
वीरवरनामघेज्जो^८, कहेसी य अदिण्णादाणस्स^९ फलविवागं ॥

निगमण-पद

२६. एय त ततियपि अदिण्णादाणं^{१०} हर-दह-मरण-भय-कलुस-तासण-परसतिकऽभेज्ज-

१. आउग (क, ख, ग) ।

२. पमट्टा (ख, ग, घ) ।

३. किविणा (ख, ग, घ) ।

४. × (ख, घ, च) ।

५. पावकारिण. (वृषा)

६. °निसण्ण (ख, ग) ।

७. मह्वभयो (ख, च) ।

८. वरवीर° (ख, घ, च) ।

९. अदिण्णदाणस्स (क, ख, ग, घ) ।

१०. अदिण्णदाणं (क, ख, ग, घ, च) ।

लोभमूल^१ °काल - विसम - ससिय अहोऽच्छिण्णतण्ह - पत्थाण-पत्थोइमइयं
 अकित्तिकरण अणज्ज छिद्दमतर-विधुर-वसण-मग्गण-उस्सव-मत्त-प्पमत्त-पसुत्त-
 वचनाखिवण - घायणपर - अणिहुयपरिणाम - तक्करजणवहुमय अकलुण
 रायपुरिसरक्खिय सया साहुगरहणिज्ज पियजण-मित्तजण-भेदविप्पीतिकारक
 रागदोसवहुल पुणो य उप्पूर-समर-सगाम-डमर-कलि-कलह-वेहकरण दुग्गति-
 विणिवायवड्डुण भव-पुणवभवकर ° चिरपरिगतमणुगत दुरत । ततिय अहम्मदार
 समत्त ।

—त्ति वेमि ॥

१ °भिज्जणा ° (क, ग), °ऽभिज्ज ° २. स० पा०—एव जाव चिरपरिगत ° ।
 (ख, घ, च) ।

चउत्थं अउभयणं चउत्थं आसवदारं

उक्खेव-पद

१ जवू । अवभ च चउत्थ—सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पत्थणिज्ज, पक-पणग^१-पासजालभूय, थी-पुरिस-नपुसगवेद्विध तव-सजम-वभचेर-विग्घ भेदायण^२-वहुपमादमूल कायरकापुरिससेविय सुयणजणवज्जणिज्जं उड्ढ नरग-तिरिय-तिलोक्कपइट्ठाण, जरा-मरण-रोग-सोगवहुल वध-बंध-विधाय-दुव्विधाय दसण-चरित्तमोहस्स हेउभूय चिरपरिचियमणुगय^३ दुरत । चउत्थ अघम्मदार ॥

अवभस्स तीसनाम-पदं

२ तस्स य णामाणि गोण्णाणि इमाणि होति तीस, त जहा—१ अवभ २ मेहुण ३. चरत^४ ४ ससग्गि ५. सेवणाधिकारो ६. सकप्पो ७ वाहणा^५ पदाण ८ दप्पो ९ मोहो १० मणसंखोभो ११ अणिग्गहो १२ वुग्गहो^६ १३. विघाओ १४ विभगो १५. विव्वभमो १६. अघम्मो १७ असीलया १८ गामघम्मतत्ती १९. रती २० रागो^७ २१ कामभोग-मारो २२ वेर २३ रहस्स २४ गुज्ज २५. वहुमाणो २६ वभचेर-विग्घो २७. वावत्ति २८. विराहणा २९. पसगो ३० कामगुणो त्ति ।
अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होति तीस ॥

१. पणय (ग) ।

२. भेदायण (ख, ग, घ, च) ।

३. चिरपरिगय^० (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

४. चउत्थ (वृ), चरत (वृपा) ।

५. पाहणा (क) ।

६. विग्गहो (ख, च) ।

७. रागचित्ता (क, ख, ग, घ, च वृपा) ।

सुरगणस्स अत्रंभ-पदं

३ तं च पुण निसेवति सुरगणा सअच्छरा मोह-मोहिय-मती, असुर-भुयग^१-गरुल-विज्जु-जलण-दीव-उदहि-दिस^२-पवण-थणिया । अणवण्णिय-पणवण्णिय-डसि-वादिय-भुयवादियकदिय-महाकदिय-कूहड-पतगदेवा^३, पिसाय-भुय-जक्ख-रक्खस-किन्तर-किंपुरिस - महोरग - गधव्व - तिरिय- जोडस-विमाणवासि-मणुयगणा, जलयर-थलयर-खह्यरा य मोहपडिवद्धचित्ता अवितण्हा कामभोगतिसिया, तण्हाए वलवईए महईए समभिभूया गढिया य अतिमुच्छिया य, अबभे ओसण्णा, तामसेण भावेण अणुम्मुक्का^४, दसण-चरित्तमोहस्स पजर पिव करेति 'अण्णोण्ण सेवमाण'^५ ॥

चक्कवट्टिस्स अत्रंभ-पद

४ भुज्जो असुर-मुर-तिरिय-मणुय-भोगरति-विहार-सपउत्ता य चक्कवट्टी सुरनरवतिमक्कया सुरवरव्व देवलोए भरह^६-णग-णगर-णियम-जणवय-पुरवर-दीणमुह-खेड-कव्वड-मडव-सवाह-पट्टण-सहस्समडिय थिमिय-मेयणिय एगच्छत्त ससागर भुज्जिऊण वसुहं नरसीहा नरवई नरिदा नरवसभा मरुय-वसभकप्पा, अबभहिय रायतेय-लच्छीए दिप्पमाणा सोमा रायवस-तिलगा । रवि-ससि-सख-वरचक्क - सोत्थिय - पडाग-जव-मच्छ-कुम्म-रहवर-भग-भवण-विमाण-तुरय^७-तोरण-गोपुर-मणि-रयण-नदियावत्त-मुसल-णगल-सुरइयवरकप्प-रुक्ख-मिगवति-भद्दासण-सुरुचि^८ - थूभ-वरमउड-सरिय - कुडल-कुजर-वरवसभ-दीव-मदिर-गरुल-द्वय-इदकेउ - दप्पण - अट्टावय - चाव-वाण-नक्खत्त-मेह-मेहल-वीणा-जुग-छत्त-दाम-दामिणि-कमडलु-कमल-घटा-वरपोत-सुइ-सागर-कुमुदगार-मगर-हार-गागर-नेउर-णग-णगर-वइर- किन्तर - मयूर - वररायहस - सारस-चकोर-चक्कवागमिट्टण-वामर - खेडग -पव्वीसग-विपचि-वरतालियट-सिरिया-भिसेय-मेडणि-'खग्ग-अकुस'^९-विमलकलस - भिगार-वद्धमाणग-पसत्थ-उत्तमविभ-त्तवर-पुरिसलक्खणधरा ।

वत्तीस रायवरसहस्साणुजायमग्गा^{१०} चउसट्टिसहस्सपवरजुवतीण णयणकता

१. भुयग (क) ।

२. दिसि (ख, च) ।

३. पतग० (क, ख, ग, घ, च) ।

४. अणुमुक्का (क, ख, ग, घ, च); आदर्शोपु एतत् पद लभ्यते, किन्तु नैतत् शुद्धमस्ति । उन्मुक्तपदस्य प्राकृतरूप 'उम्मुक्क' इति जायते । न उम्मुक्का = अणुम्मुक्का ।

५. अण्णमण्ण० (च), अण्णोण्णस्स सेवणया (वृ), अण्णोण्ण सेवमाणा (वृपा) ।

६. भरघ (क, ग) ।

७. तुरत (क), तुरग (ख, घ, च) ।

८. सुह्वि (क, घ, च)

९. खग्गकुस (क, ख, ग, घ, च) ।

१०. वरराय० (क, ग) ।

रत्ताभा पउमपम्ह - कोरटगदाम - चपक-मुनवितवरकणकनिह्मवण्णा मुजाय-
 सव्वगसुदरगा महग्घ-वरपट्टणुग्गय - विचित्तराग-एणि - पेणि'-णिम्मिय'-दुगुल्ल-
 वरचीणपट्ट - कोसेज्ज-सोणीसुत्तक - विभूसियगा वरमुरभिग्गय - वरचुण्णवास-
 वरकुसुमभरिय-सिरया' रुप्पिय-छेयायरियमुक्कय-रउत्तमाल-कडगगय'-तुडिय-
 पवरभूसण-पिणद्धदेहा एकावलिकठमुरडयवच्छा पानवपलवमाणमुक्कयपड-
 उत्तरिज्जमुद्दियारिपिगलगुलिया उज्जल-नेवत्थ-रडय-चित्तलग-विरायमाणा तेएण
 दिवाकरोव्व दित्ता सारय'-नवथणिय-महुर-गभीर-निद्धघांसा उप्पण्णसमत्तरयण-
 चक्करयणप्पहाणा नवनिहिवइणो समिद्धकोसा चाउरता चाउराहि सेणाहि
 समणुजाडज्जमाणमग्गा तुरगवती गयवतो रहवती नरवती विपुलकुलविस्मु-
 यजसा सारयससिसकल-सोमवयणा सूरा तेलोक्क-निग्गय-पभावलद्धसद्दा
 समत्तभरहाहिवा नरिदा, ससेलवण-काणणं च हिमवत-सागरंत धीरा भुत्तूण
 भरहवास, जियसत्त पवररायसीहा पुव्वकडतवप्पभावा निविट्ठ-सचियसुहा'
 अणेगवाससयमायुवतो भज्जाहि य जणवयप्पहाणाहि लालियता अतुल-सद्द-
 फरिस-रस-रुव-गघे य अणुभवित्ता तेवि उवणमति मरणघम्म, 'अवित्तिता
 कामाण'^{१०} ॥

वलदेव-वासुदेवस्स अबभ-पद

५ भुज्जो^१ वलदेव-वासुदेवा य पवरपुरिसा महावलपरकम्मा महाधणुवियड्डुका
 महासत्तसागरा दुद्धरा घणुद्धरा नरवसभा रामकेसवा भायरो सपरिसा वसुदेव-
 समुद्दविजयमादियदसाराण, पज्जुण्ण - पयिव^२ - सव-अनिरुद्ध - निसह - उम्मुय-
 सारण-गय-सुमुह-दुम्मुहादीण जायवाण अद्धट्टणावि कुमारकोडीण हिययदयिया,
 देवीए रोहिणीए देवीए देवकीए य आणदहिययभावनदणकरा सोलस
 रायवरसहस्साणुजातमग्गा सोलसदेवीसहस्स-वरणयण-हिययदयिया^३ णाणामणि-
 कणग-रयण-मोत्तिय-पवाल-घण-धन्तसचय - रिद्धि - समिद्धकोसा, हय-गय-रह-
 सहस्ससामी गामागर - णगर-खेड - कव्वड - मडव - दोणमुह-पट्टणासम-सवाह-
 सहस्सथिमियनिव्वुयपमुदितजण - विविहसस्सनिप्फज्जमाणमेडणि^४ - सर-सरिय-
 तलाग-सेल-काणण-आरामुज्जाण-मणाभिरामपरिमडियस्स दाहिणड्डुवेयड्डुगिरि-
 विभत्तस्स लवणजलहिपरिगयस्स छिव्विहकालगुणकमजुत्तस्स^५ अद्धभरहस्स

१. पएणि (क, ख, घ, च) ।

२. खोमिय (वृषा)

३. सिरिया (क), सिरसा (च) ।

४. कुडलकडगगय (क), कुडलंगय (वृषा) ।

५. सागर (वृषा) ।

६. सचय^० (क, ख, घ) ।

७. अतित्ता कामभोगाण (क) ।

८. भुज्जो भुज्जो (ग) ।

९. पयव (ख, घ); पइव (ग) ।

१०. °सास° (क, ग, घ) ।

११. °कामजुत्तस्स (ख, ग, घ, च) ।

सामिका, धीरकित्तिपुरिसा ओहबला अइवला अनिहया अपराजियसत्तुमद्दणा रिपुसहस्स-माणमहणा साणुक्कोसा अमच्छरी अचवला अचडा मितमजुलपलावा 'हसिय-गभीर-महुरभणिया' अठभुवगयवच्छला सरणा लक्खण-वजण-गुणोववेया माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसु-दरगा ससि-सोमागार-कतपियदसणा अमरिसणा^१ पयडडडप्पयार-गभीर-दरिसणिज्जा तालद्वय-उव्विद्वगरुलकेऊ वलवग-गज्जत-दरित - दप्पित - मुट्ठियचाणूरमूरगा रिट्ठवसभघाती-केसरिमुह-विप्फाडगा^२ दरितनागदप्पमहणा जमलज्जुणभजगा महासउणि-पूतणरिऊ कसमउडमोडगा जरासघ-माणमहणा ।

तेहि य 'अविरल-सम-सहिय-चदमडलसमप्पभेहिं सूरमिरीयिकवय' विणिम्मु-यतेहिं'^३ सपतिदडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जतेहिं विरायता ।

ताहि य पवरगिरिगुहरविहरणसमुद्धियाहिं^४ निरुवहयचमर-पच्छिमसरीर-सजाताहिं अमइल - सियकमल - विमुकुलुज्जलित-रयतगिरिसिहर-विमलससि-किरणसरिस-कलहोय-निम्मलाहि पवणाहयचवलचलिय-'सललिय-पणच्चिय'^५-वीइपसरियं-खीरोदगपवरसागरूपूरचचलाहि माणससरपसर-परिचियावास-विसदवेसाहि कणगगिरिसिहर-ससिताहि ओवायुप्पाय चवलजयिणसिग्घवेगाहि हसवधूयाहिं चैव कलिया'^६, नाणामणिकणग-महरिहतवणिज्जुज्जलविचित्त-डडाहिं सललियाहिं नरवतिसिरिसमुदयप्पकासणकरीहिं^७ वरपट्टणुग्गयाहिं समिद्धरायकुल-सेवियाहिं कालागुरुपवर - कुदुरुक्क - तुरुक्क - धूववसवास-

१ महुरपरिपुण्णसच्चवयणा (वृषा) ।

२. अमसणा (क, ग, च) ।

३. केसिमुह ° (वृषा) ।

४ ° मरीयि ° (ख), सुचिमरीयि (वृषा) ।

५. वाचनान्तरे पुनरातपत्रवर्णक एव दृश्यते—

अवभपडलपिगलुज्जलेहिं अविरल-सम-सहिय-चदमडलसमप्पभेहिं मगनसयभक्ति-च्छेय-चित्तिर्याखिणि - मणि - हेमजाल - विरइय-परिगय-पेरत-कणय-घटिय-पयलिय-खिणिखि-णित-सुमहुर-सुइसुह-सदालसोहिंएहिं सपयरग-मुत्तदाम-लवतभूसणेहिं नरिद-वामप्पमाण-रुदपरिमडलेहिं सीयायव-वायवरिस-विस-दोसणासएहिं तमरय-मलबहुल-पडल-घाडण-पहाकरेहिं मुद्धसुहसिवच्छायसमणुवद्धेहिं वेरु-

लियदडसज्जिएहिं वयरामय-वत्थि णिउण-

जोइय - अट्टसहस्सवरकचणसलागनिम्मिएहिं

सुविमलरयय सुट्ठच्छडएहिं णिउणोविय-

मिसिमिसित-माण-रयण-सूर-मडल-वित्तिमिर-

कर-निग्गय-अडिहय-पुणरवि पच्चोदयतचचल-

मरीइकवय विणिम्मुयतेहिं (वृ) ।

६ ° कुहर ° (ख, ग, घ, च) । विहरण

विचरण गवामिति गम्यते (वृ) ।

७ आमलित (वृषा) ।

८ सललिय-पवत्त (वृ) ।

९ वीयि ° (क) ।

१०. वासुदेव-बलदेवा इति प्रक्रम (वृ) ।

११. ° प्पगासण ° (ग) ।

निगुरुव-निचिय-कुचिय-पयाहिणावत्त-मुद्धसिरया मुजात-सुविभत्त-सगयगा
 लक्खणवजणगुणोववेया पसत्थवत्तीसलक्खणधरा हसस्सरा कुचस्सरा दुदुभिस्सरा
 सीहस्सरा 'ओघस्सरा' मेघस्सरा^१ सुस्सरा सुस्सरनिग्घोसा^२ वज्जरिसहनाराय-
 सघयणा समचउरससठाणसठिया छायाउज्जोवियगमगा छवी^३ निरातंका
 ककगहणी कवोतपरिणामा सउणिपोस^४-पिट्ठतरोरुपरिणया पउमुप्पलसरिस-
 गधसास-सुरभिवयणा अणुलोमवाउवेगा अवदाय-निद्ध-काला 'विग्गहिय-उण्णय-
 कुच्छी' अमयरसफलाहारा तिगाउय-समूसिया तिपलिओवमट्ठितीका तिण्णि य
 पलिओवमाइ परमाउ पालयित्ता ते वि उवणमति मरणधम्म, अवितित्ता
 कामाण ॥

जुगलिणीणं लावण्णनिरुवणपुरस्सर अबंभ-पदं

८. पमया वि य तेसि होति—सोम्मा सुजाय-सव्वग-सुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहिं
 जुत्ता^१ अतिकत-विसप्पमाण-मउय-सुकुमाल-कुम्मसंठिय-सिलिट्ठचरणा उज्जु-
 मउय-पीवरसुसहतगुलीओ^२ अब्भुण्णत-रतिद-तलिण-तव-सुइ-णिद्वनक्खा रोम-
 रहिय-वट्ठसठिअ-अजहण्ण-पसत्थ-लक्खण-अकोप्प-जघजुयलामुणिम्मि-सुनिगूढ-
 जण्णू मसल-पसत्थ-सुवद्ध-सधी कयलीखभातिरेकसठिय-निव्वणसुकुमाल-मउय-
 कोमल-अविरल-सम-सहित-वट्ठ-पीवर-निरतरोरु अट्ठावयवीचिपट्ठसठियं^३-
 पसत्थविच्छिण्णपिहुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणिय-विसालमसलसुवद्धजहण-
 वरधारिणीओ^४ वज्जविराइय-पसत्थलक्खणनिरोदरीओ तिवलिवलित-तणु-
 नमियमज्झियाओ उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-निद्ध-आदेज्ज-लडह-
 सुकुमाल-मउय सुविभत्तरोमराई^५ गगावत्तग-पदाहिणावत्त-तरगभग-रविकिरण-
 तरुण-बोधितअकोसायतपउम-गभीरविगडनाभी अणुवभडपसत्थजातपीणकुच्छी
 सन्नतपासा सगतपासा सुदरपासा^६ सुजातपासा मियमायिय-पीणरइतपासा
 अकरडुय^७-कणगरुयगनिम्मल^८-सुजाय-निरुवह्यगायलट्ठी कचणकलसपमाण-सम-

१. उज्जम्मरा (ग) ।

२. मेघस्मरा ओघस्सरा (घ) ।

३. वाचनान्तरे मिहघोसादिकानि विशेषणानि पठ्यन्ते (वृ) ।

४. मुद्रितवृत्ती—पसत्थच्छवि, हस्तलिखितवृत्ती—
 छवित्ति प्रशस्तत्वच ।

५. सगुणि° (क) ।

६. विग्गहिनुण्णय° (ख, ग) ।

७. मजुत्ता (क) ।

८. मुसाहतंगुलीओ (क, ग, घ, च) ।

९. °पट्ठिमठिय (क), °पडिसठिय (ख, घ) ।

१०. °वरजहण° (क) ।

११. रोमराती (क), °रोमरातीओ (ग) ।

१२. × (क, ख, ग, घ, च), मन्नतपाड्वादि-
 विशेषणानि पूर्ववत् (वृ), वृत्तिसङ्केतानु-
 सारेणासी पाठ स्वीकृत ।

१३. अकरडुय (क, ख) ।

१४. °रुयि° (ख) °रुय° (घ) ।

सहिय-लट्टूचूचुयआमेलग-जमल-जुयल-वद्वियपओहराओ भुयंगअणुपुव्वतणुय-
गोपुच्छवट्ट-सम-सहिय-नमिय-आदेज्ज-लडहवाहा तवनहा मसलग्गहत्था कोमल-
पीवरवरगुलीया निद्धपाणिलेहा ससि-सूर-सख-चक्क-वरसोत्थिय-विभत्त-सुवि-
रइय-पाणिलेहा पीणुणयकक्खवत्थिप्पदेस-पडिपुण्णगलकवोला चउरगुल-
सुप्पमाण-कवुवरसरिसगीवा मसलसठियपसत्थहणुया दालिमपुप्फप्पगास-पीवर-
पलवकुचितवराधरा सुदरोत्तरोट्टा दवि-दगरय-‘कुद-चद’-वासतिमउल-अच्छि-
द्विमलदसणा रत्तुप्पल-रत्तपउमपत्त-सुकुमालतालुजीहा कणवीरमउलऽकुडि-
लऽभुण्णय-उज्जुतुगनासा सारदनवकमल-कुमुत-कुवलयदलनिगरसरिसलक्खण-
पसत्थ-अजिम्हकतनयणा^१ आनामियचावरुडल-किण्हवभराइसगय-सुजाय-तणु-
कसिण-निद्धभुमगा अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुस्सवणा पीणमट्ट^२-गडलेहा
चउरगुलविसाल - समनिडाला कोमुदिरयणिकरविमलपडिपुण्णसोमवदणा^३
छत्तुन्नय-उत्तिमगा अकविल-सुसिणिद्ध-दीहसिरया छत्त-ज्भय-जूव-थूभ-दामिणि-
कमडलु-कलस-वावि-सोत्थिय-पडाग-जव-मच्छ- कुम्म-रहवर - मकरज्भय-अक-
थाल-अकुस-अट्टावय-सुपइट्ट-अमर-सिरियाभिसेय-तोरण- मेइणि-उदधिवर-पवर-
भवण-गिरिवर-वरायस-सुललियगय^४-उसभ-सीह-चामर- पसत्थवत्तीसलक्खणध-
रीओ हंससरिच्छगतीओ^५ कोइल-महुयरि-गिराओ कता सव्वस्स अणुमयाओ^६
ववगयवलिपलितवग-दुव्वन्न-वाधि^७-दोहग्ग^८-सोयमुक्काओ^९, उच्चत्तेण य नराण
थोवूणमूसियाओ, सिंगारागारचारुवेसा सुदर-थण-जहण-वयण-कर-चरण^{१०}-
णयणा लावण्णरूवजोव्वणगुणोव्वेया नदणवणविवरचारिणीओ व्व अच्छराओ
उत्तरकुरुमाणुसच्छराओ अच्छेरगपेच्छणिज्जियाओ तिण्णि य पलिओवमाइं
परमाउ पालयित्ता ताऽवि^{११} उवणमति मरणघम्मं, अवितित्ता कामाण ।।

अबंभस्स फलविवाग-पदं

६ मेहुणसण्णासपगिद्धा य मोहभरिया सत्येहिं हणति एक्कमेक्क विसयविसउदीर-
एसु । अवरे परदारैहिं^{१२} हम्मति विसुणिया घणनास सयणविप्पणासं च पाउ-

१. चद-कुद (च) ।

२. अजिम्म^० (क, घ, च) ।

३. पीणमट्टसुद्ध (ख) ।

४. ^०वयणा (ख, घ, च) ।

५. ^०उत्तमगा (ग, च) ।

६. सललिय^० (क, ग, वृ) ।

७. सरिसगतीओ (च) ।

८. अणुगयाओ (ख) ।

९. वाहि (घ) ।

१०. दोभग्ग (घ, च) ।

११. ^०मुक्का (क, ख, घ) ।

१२. चलण (ख, च) ।

१३. ताओ (च) ।

१४. प्रवृत्ता इति गम्यते (वृ) ।

- णंति' । परस्स दाराओ जे अविरया मेहुणसण्णसंपगिद्धा य मोहभरिया अस्सा हत्थी गवा य महिसा मिगा य मारेति एक्कमेक्कं, मणुयगणा वानरा य पक्खी य विरुज्झति, मित्ताणि^३ खिप्प भवति सत्तू, समये घम्मे गणे य भिदति पार-दारी । घम्मगुणरया य वभयारी खणेण उल्लोट्टए^४ चरित्तओ^५, जसमतो सुव्वया य पावति अयसकिंति^६, रोगत्ता वाहिया य वड्ढेति रोयवाही, दुवे य लोया दुआराहगा भवति—इहलोए चैव परलोए—परस्स दाराओ जे अविरया ॥
- १० तहेव केइ परस्स दार गवेसमाणा गहिया हया य वद्धरुद्धा य एव जाव^७ नरगे गच्छति निरभिरामे विपुलमोहाभिभूयसण्णा ॥
- ११ मेहुणमूल च सुव्वए तत्थ-तत्थ वत्तपुव्वा^८ सगामा बहुजणक्खयकरा^९ सीयाए दोवतीए कए, रुप्पिणीए, पउमावईए, ताराए, कचणाए, रत्तमुभद्दाए, अहिल्लियाए^१, सुवण्णगुलियाए, किण्णरीए, सुखविज्जुमतीए, रोहणीए य ॥
- १२ अण्णेसु य एवमादिएसु वहवो^{१०} महिलाकएसु सुव्वति अइक्कता संगामा गाम-घम्ममूला ॥
- १३ 'इहलोए ताव नट्टा'^{११} 'परलोए वि'^{१२} य नट्टा महयामोहतिमिसघकारे घोरे, तसथावर-सुहुमवादरेसु पज्जत्तमपज्जत्तक-साहारणसरीर-पत्तेयसरीरेसु य, अडज-पोतज-जराउय-रसज-ससेइम-समुच्छिम-उव्विभय-उववाइएसु य, नरग-तिरिय-देव-माणुसेसु, जरा-मरण-रोग-सोग^{१३}-बहुले, पलिओवम-सागरोवमाइं अणादीय अणवंदग्ग दीहमद्ध चाउरतं ससारकतार अणुपरियट्टति जीवा मोहवस-सण्णिविट्ठां ॥
- १४ एसो सो अबभस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ य अप्पसुहो बहुदुक्खो-महवभओ वहरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चती, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहसु नायकुलनदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य अबभस्स फलविवाग ॥

निगमण-पद

१५ एय त अवभति चउत्थ सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स पत्थणिज्ज,^{१४} *पक-पणग-

- | | |
|-----------------------------------|--|
| १. राज्ञ. सकामादिति गम्यते (वृ) । | ६ अहित्तियाए (क, ख, ग, घ); अहित्तिका अप्रतीता (वृ) । |
| २. मित्ता (क, ग, घ) । | १०. वहुओ (क, ख) । |
| ३. उल्लोट्टए (क); उल्लोट्टए (ग) । | ११. × (क, ग, घ) । |
| ४. चरित्ताओ (ग, च) । | १२. परलोयम्मि (ख, घ) । |
| ५. अकिंति (वृ), अयसकिंति (वृपा) । | १३. × (क, ख, घ) । |
| ६. पण्हा० ३।१०-२० । | १४. स० पा०—पत्थणिज्ज एव चिरपरि० । |
| ७. वुत्तपुव्वा (ख) । | |
| ८. जणक्खयकरा (क, ख, ग, घ, च) । | |

पासजालभूय थी-पुरिस-नपुसगवेदचिघ तव-सजम-वभचेरविग्घ भेदाययण-
 बहुपमादमूल कायरकापुरिससेविय सुयणजणवज्जणिज्ज उड्ढ नरग-तिरिय-
 तिलोक्कपडट्टाण जरा-मरण-रोग-सोगवहुल वध-वध-विघाय-दुव्विघाय दसण-
 चरित्तमोहस्स हेउभूय० चिरपरिचियमणुगय' दुरत । चउत्थ अघम्मदार
 समत्त ।

—त्ति वेमि ॥

पंचमं अज्भयणं

पंचम आसवदारं

उक्खेव-पद

१ जवू । एत्तो^१ परिग्गहो पचमो उ नियमा—णाणामणि-कणग-रयण-महरिह-परिमल-सपुत्तदार-परिजण - दासी-दास - भयग-पेस-हय-गय-गो-महिस-उट्ट-खर-अय-गवेलग-सीया-सगड-रह-जाण-जुग्ग - मदण - सयणासण-वाहण-कुविय-धण-धण-पाण-भोयण - अच्छायण - गध-मल्ल-भायण-भवणविहिं चैव बहुविहीयं, भरह णग-णगर-णियम^२ -जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेड-कव्वड-मडव-सवाह-पट्टण-सहस्समंडिय थिमियमेइणीय, एगच्छत्तं ससागर भुजिऊण वसुह अपरिमिय-मणततण्हमणुगय-महिच्छसार-निरयमूलो, लोभकलिकसाय-महक्खघो^३, चिता-सयनिचिय^४-विपुलसालो, 'गारव-पविरल्लियग्गविडवो'^५, नियडि-तयापत्तपल्लव-धरो, पुप्फफल जस्स कामभोगा, आयासविसूरणाकलह-पकपियग्गसिहरो, नरवतिसपूजितो, बहुजणस्स हिययदइओ इमस्स मोक्खवर-मोत्तिमग्गस्स पलिहभूओ^६ । चरिम अहम्मदारं ॥

परिग्गहस्स तीसनाम-पद

२. तस्स य नामाणि^७ गोण्णाणि^८ होति तीसं, त जहा—१ परिग्गहो २ संचयो ३ 'चयो ४ उवचयो'^९ ५. नहाण ६. सभारो ७. सकरो ८. आयरो^{१०} ९. पिंडो

१. इत्तो (ग) ।

२. निगम (च) ।

३. महाखघो (ख, च) ।

४. चितायास^० (वृ), चितासय^० (वृपा) ।

५. गोरव-पविरेल्लि^० (घ, वृपा) ।

६. फलिह^० (ग, च) ।

७. नामाणि इमाणि (ख, च) ।

८. चओ उवचओ (क, ग) ।

९. आयारो (क, ख, घ, च) ।

१० दव्वसारो ११ तहा^१ महिच्छा १२ पडिवधो १३ लोहप्पा १४ महदी^२
१५ उवकरण १६. सरक्खणा य १७ भारो १८ सपायुप्पायको १९ कलिक-
रडो २० पवित्थरो २१ अणत्थो २२ सथवो २३ अगुत्ती २४ आयासो
२५ अविओगो २६ अमुत्ती २७ तण्हा २८ अणत्थको २९ आसत्ती
३० असतोसो त्ति ।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होत्ति तीस ॥

देवाणं परिग्गह-पद

३ तं च पुण परिग्गह ममायति लोभघत्था भवनवरविमाणवासिणो परिग्गहरुयी^३
परिग्गहे विविहकरणवुद्धी,

देवनिक्काया य—असुर-भुयग-गरुल-विज्जु-जलण-दीव-उदहि-दिसि^४ -पवण-
थणिय-अणवणिय-पणवणिय-इसिवाइय-भूतवाइय -कदिय-महाकदिय-कुहड-
पतगदेवा, पिसाय-भूय-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किपुरिस-महोरग-गधव्वा य
तिरियवासी ।

पचविहा जोइसिया य देवा,—बहस्सती-चद-सूर-सुक्क-सनिच्छरा, राहु-धूमकेउ-
वुधा य अगारका य तत्ततवणिज्जकणगवण्णा, जे य गहा जोइसम्मि^५ चार
चरत्ति, केऊ य गतिरतीया, अट्टावीसतिविहा य नक्खत्तदेवगणा,^६ नाणासठाण-
सठियाओ य तारगाओ, ठियलेस्सा चारिणो य अविस्साम-मडलगती उवरि-
चरा ।

उड्डुलोगवासी दुविहा वेमाणिया य देवा—सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिंद-
वभलोग-लतक-महासुक्क-सहस्सार-आणय - पाणय-आरणच्चुय-कप्पव रविमाण-
वासिणो सुरगणा गेवेज्जा अणुत्तरा य दुविहा कप्पातीया विमाणवासी महि-
ड्डुका उत्तमा सुरवरा ।

एव च ते चउव्विहा सपरिसा वि देवा ममायति भवण-वाहण-जाण-विमाण-
सयणासणाणि य नाणाविहवत्थभूसणाणि य पवरपहरणाणि य नाणामणिपच-
वण्णदिव्व च भायणविहि नाणाविह - कामरूव - वेउव्विय-अच्छरगणसघाते
दीवसमुद्दे दिसाओ^७ चेतियाणि वणसडे पव्वते गामनगराणि य आरामुज्जाण-
काणणाणि य कूव-सर-तलाग-वावि-दीहिय-देवकुल-सभ-प्पव-वसहिमाइयाइ

१ तह (क, च) ।

२. महंती (वृ०), महदी (वृपा) ।

३. °स्ती (क, ग) ।

४. दिस (क, ग, घ) ।

५ पत्त० (क), पतग० (च) ।

६ जोइसियम्मि (ख, घ) ।

७. देवतगणा (ख, घ, च) ।

८ दिसाओ विदिसाओ (ग, च) ।

बहुकाड कित्तणाणि य परिगेण्हत्ता परिग्गह विपुलदव्वसार देवावि सइंदगा न
तिरिंत्ति न तुट्ठि उवलभति अच्चत-विपुल-लोभाभिभूतसन्ता^१ ।

वासहर-इसुगार^२-वट्टपव्वय-कुडल-रुयगवर-माणुसुत्तर-कालोदधि-‘लवण-सलिल’^३
दहपति-रतिकर-अजणकसेल-दहिमुहओवातुप्पाय^४-कंचणक-चित्त^५-विचित्त-
जमक-वरसिहरि-कूडवासी ॥

मणुस्साण परिग्गह-पदं

४ वक्खार - अकम्मयभूमीसु, सुविभत्तभागदेसासु कम्मभूमिसु जेऽवि य नरा
चाउरतचक्कवट्ठी वामुदेवा वलदेवा मंडलीया इस्सरा तलवरा सेणावती इब्भा
सेट्ठी रट्ठिया पुरोहिया कुमारा दंडणायगा माडविया सत्थवाहा कोडुविया
अमच्चा एए अण्णे य एवमादी परिग्गह सच्चिणति अणतं असरण दुरंत अघुव-
मणिच्चं असासय पावकम्मनेम्मं अवकिरियव्वं^६ विणासमूल वहवघपरिकिलेस-
वहुल^७ अणतसकिलेसकरण^८ ते त धण-कणग-रयण-निचय पिंडिता^९ चेव लोभ-
घत्था ससार अतिवयति^{१०} सव्वदुक्ख-सनिलयण ॥

परिग्गहत्थं सिक्खा-पदं

५. परिग्गहस्सेव य अट्ठाए सिप्पसयं सिक्खए बहुजणो कलाओ य वावत्तिरि सुनि-
पुणाओ लेहाइयाओ सउणरुयावसाणाओ गणियप्पहाणाओ, चउसट्ठि च महिला-
गुणे रतिजणणे, सिप्पसेव, असि-मसि-किसी-वाणिज्ज, ववहार, अत्थसत्थ-
ईसत्थ-च्छरुप्पगय, विविहाओ य जोगजुजणाओ^{११} य, अण्णेषु एवमादिएसु
बहूसु कारणसएसु जावज्जीवं नडिज्जेए^{१२}, सच्चिणति मदवुट्ठी ॥

परिग्गहीणं पवित्ति-पदं

६. परिग्गहस्सेव य अट्ठाए करति पाणाण वहकरण अलिय-नियडि-साइ-सपओगे
परदव्व-अभिज्जा सपरदारगमणसेवणाए^{१३} आयास-विसूरण कलह-भडण-वेराणि
य अवमाण-विमाणणाओ इच्छ-महिच्छ-प्पिवास-सतततिसिया तण्ह-गेहि-लोभ-
घत्था अत्ताण-अणिग्गहिया करेति कोहमाणमायालोभे अकित्तणिज्जे ॥

१. °भूतसत्ता (च) ।

२. इक्खुगार (ख, घ, च) ।

३. लवणसमुद्द (क) ।

४. दहिमुहवातुप्पाय (क), °उवातुप्पाय (च) ।

५. × (क, ख, ग, घ) ।

६. अकिरियव्वं (क), अवकिरियव्व (घ) ।

७. मनत परि° (क) ।

८. मनसकिलेस° (क) ।

९. पिंडिता (ख) ।

१०. अविचयति (ख, घ) ।

११. परिग्रहाय शिक्षत इति प्रतीतम् (वृ) ।

१२. बहुवचनार्थत्वादेकवचनस्य (वृ) ।

१३. × (ख, घ); °अभिगमण° (ग) ।

- ७ परिग्गहे चैव ह्योति नियमा सल्ला दडा य गारवा य कसाय-सण्णा य कामगुण-अण्हगा य इंदियलेसाओ ।
 सयण-सपओगा सचित्ताचित्तमीसगाइ दव्वाइ अणतकाइ इच्छति परिघेत्तु ।
 सदेवमणुयासुरम्मि लोए लोभपरिग्गहो जिणवरेहि भणिओ, नत्थि एरिसो
 पासो पडिबधो^१ सव्वजीवाण सव्वलोए ॥

परिग्गहस्स फलविवाग-पद

८. परलोगम्मि य नट्ठा^२ तम पविट्ठा, महया मोहमोहियमती, तिमिसधकारे,
 तसथावर-सुहुमवादरेसु, पज्जत्तमपज्जत्तग-^३साहारणसरीर-पत्तेयसरीरेसु य,
 अडज-पोतज - जराउय-रसज-ससेइम-समुच्छिम-उव्भिय-उववाइएसु य, नरग-
 त्तिरिय-देव-माणुसेसु, जरा - मरण-रोग-सोग-वहुले, पलिओवम-सागरोवमाइ
 अणादीय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरंत ससारकतार अणु^०परियट्ठति जीवा
 मोहवससण्णिविट्ठा ॥
- ९ एसो सो परिग्गहस्स फलविवाओ इहलोइओ पारलोइओ^४ अप्पसुहो बहुदुक्खो
 महब्भओ वहरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चई, न य
 अवेदयित्ता^५ अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहसु नायकुलनदणो महप्पा जिणो उ
 वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य परिग्गहस्स फलविवाग ॥

निगमण-पदं

- १० एसो सो परिग्गहो पचमो उ नियमा—नाणामणि-कणग-रयण-महरिह^६परि-
 मल-सपुत्तदार-परिजण-दासी - दास-भयग-पेस-हय-गय-गो-महिस-उट्ट-खर-अय-
 गवेलग - सीया-सगड-रह-जाण-जुग्ग-सदण-सयणासण-वाहण-कुविय-धण-धण-
 पाण-भोयण-अच्छायण-गध-मल्ल-भायण-भवणविहि चैव बहुविहीय, भरह
 णग-णगर-णियम-जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेड-कव्वड-मडव-सवाह-पट्टणसहस्स-
 मडिय थिमियमेइणीय, एगच्छत्त ससागर भुजिऊण वसुह अपरिमियमणततण्ह-
 मणुगय-महिच्छसार-निरयमूलो, लोभकलिकसाय-महक्खधो, चित्तासयनिचिय-
 विपुलसालो, गारव-पविरल्लियग्गविडवो, नियडि-तयापत्तपल्लवधरो, पुप्फफल
 जस्स कामभोगा, आयासविसूरणाकलह-पकपियग्गसिहरो, नरवतिसपूजितो,
 बहुजणस्स हिययदइओ^० इमस्स मोक्खवर-मोत्तिमग्गस्स फलिहभूयो । चरिम
 अधम्मदार समत्त ।

१. पडिबधो अत्थि (ख, ग, घ, च) ।

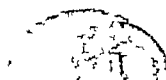
२. ४।१३ सूत्रे अतः प्राग् 'इहलोए ताव नट्ठा'
 पाठो विद्यते, अत्र तु स न दृश्यते ।

३. सं० पा०—एव जाव परियट्ठति ।

४. परलोइओ (ख, ग, घ, च) ।

५. अवेत्तिता (ग) ।

६. सं० पा०—एव जाव इमस्स ।



एएहिं पंचहिं असवरेहिं रयमादिणित्तु^१ अणुसमयं ।
 चउव्विहगतिपेरत, अणुपरियट्ठति ससारं ॥१॥
 सव्वगई - पक्खदे, काहेति अणंतए अकयपुण्णा ।
 जे य ण सुणति धम्म, सोऊण य जे पमायति ॥२॥
 अणुसिट्ठपि^२ वहुविह, मिच्छदिट्ठी णरा अवुद्धीया ।
 बद्धनिकाइयकम्मा, सुणेति धम्म न य करंति ॥३॥
 कि सक्का काउ जे, ज णेच्छह ओसह मुहा पाउं ।
 जिणवयणं गुणमहुर, विरेयण सव्वदुक्खाणं ॥४॥
 पचेव^३ उज्झिऊण, पचेव य रक्खिऊण भावेण ।
 कम्मरय - विप्पमुक्का, सिद्धिवरमणुत्तर जति ॥५॥

— — —

१. °अचिणित्तु (वृ) ।

२. अणुसट्ठ (क, ग, घ); अणुसिट्ठा (वृ) ।

३. पचेव य (च) ।

छट्ठं अज्जयणं

पढमं सवरदारं

उक्खेव-पदं

१. जवू !

एत्तो सवरदाराइ, पच वोच्छामि आणुपुव्वीए ।
जह भणियाणि भगवया, सव्वदुहविमोक्खणट्ठाए ॥१॥
पढमं होइ अहिंसा, वितिय सच्चवयणति पणत्त ।
दत्तमणुण्णायसवरो, य वभचेरमपरिग्गहत्तं च ॥२॥
तत्थ पढम अहिंसा, तसथावरसव्वभूयखेमकरी ।
तीसे सभावणाए, किंचि वोच्छ गुणुद्देस ॥३॥

२. ताणि उ इमाणि सुव्वय-महव्वयाइ 'लोकहिय-सव्वयाइ' सुयसागर-देसियाइ तव-सजम-महव्वयाइ सीलगुणवरव्वयाइ सच्चज्जवव्वयाइ नरग-तिरिय-मणुय-देवगति-विवज्जकाइ^१ सव्वजिणसासणगाइ कम्मरयविदारगाइ भवसयविणा-सणकाइ दुहसयविमोयणकाइ सुहसयपवत्तणकाइ कापुरिसदुरुत्तराइ सप्पुरिस-निसेवियाइ^३ निव्वाणगमणमग्ग-सग्गपणायगाइ^४ सवरदाराइ पच कहियाणि उ भगवया ॥

अहिंसा-पज्जवनाम-पदं

३. तत्थ पढम अहिंसा, जा सा सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स भवति—

-
- १ लोए घिइअव्वयाइ (वृ); लोयहियसव्वयाइ ग, च) ।
(वृपा) । ३ सप्पुरिसतीरियाइ (वृपा) ।
२. विवज्जयकाइ (क); विवज्जयकाइ (ख, ४ पयाणगाइ (वृपा) ।

दीवो ताण सरण गती पइट्टा
 निव्वाण^१ निव्वुई^२ समाही
 सत्ती कित्ती कती
 रती य विरती य सुयग तित्ती
 दया विमुत्ती खती समत्ताराहणा
 महती वोही वुद्धी धिती
 समिद्धी रिद्धी विद्धी
 ठिती पुट्टी नदा भद्दा
 विमुद्धी लद्धी विसिट्ठदिट्ठी
 कल्लाण मगल पमोओ विभूती रक्खा
 सिद्धावासो अणासवो
 केवलीण ठाणं
 सिव-समिई-सील-मजमो त्ति य
 सीलपरिघरो^३ संवरो य गुत्ती ववसाओ
 उस्सओ^४ य जणो, आयतण जयणमप्पमाओ ।
 आसासो वीसासो, अभओ सवूस्स वि अमाघाओ ।
 चोक्खपवित्ता^५ सुती पूया विमल-पभासा य निम्मलतर त्ति ।
 एवमादीणि निययगुण-निम्मियाइ पज्जवणामाणि होति अहिंसाए भगवतीए ॥

अहिंसा-थुइ-पद

४ एसा सा भगवती अहिंसा, जा सा—

भीयाण पिव सरणं, पक्खीण पिव गयण^६ ।
 तिसियाण पिव सलिल, खुहियाण पिव असण ।
 समुद्धमज्जे व पोतवहण, चउप्पयाण व आसमपयं ।
 दुहट्टियाणं^७ व ओसहिवल, अडवीमज्जे व सत्थगमण ॥

५ एत्तो विसिट्ठतरिका अहिंसा, जा सा—

पुढवि-जल-अगणि - माख्य - वणप्फड-वीज-हरित-जलचर-थलचर-खहचर-तस-
 थावर-सव्वभूय-खेमकरी ॥

१ नेव्वाण (क) ।

२. नेव्वुई (क, ख) ।

३. सीलायारो (क), सीलघरो (ख, घ, च) ।

४ उस्मतो (क) ।

५ चोक्खा पवित्ती (क) ।

६ गमण (क, ग, व) ।

७ दुहट्टियाण (च, ग) ।

अहिंसा-माहप्प-पदं

६ एसा भगवती अहिंसा, जा सा —

अपरिमियनाणदसणधरेहिं सीलगुण-विणय-तव-सजमनायकेहिं तित्थकरेहिं सव्वजगवच्छलेहिं^१ तिलोगमहिंएहिं जिणचदेहिं सुट्ठुदिट्ठा, ओहिजिणेहिं विण्णाया, उज्जुमतीहिं विदिट्ठा, विपुलमतीहिं विदिता^२, पुव्वधरेहिं अधीता, वेउव्वीहिं पतिण्णा ।

आभिणिवोहियनाणीहिं सुयनाणीहिं मणपज्जवनाणीहिं केवलनाणीहिं आमोसहि-पत्तेहिं खेलोसहिपत्तेहिं जल्लोसहिपत्तेहिं विप्पोसहिपत्तेहिं सव्वोसहिपत्तेहिं वीजवुद्धीहिं कोट्टुवुद्धीहिं पदानुसारीहिं सभिण्णसोतेहिं सुयधरेहिं मणवलिएहिं वयिवलिएहिं कायवलिएहिं नाणवलिएहिं दसणवलिएहिं चरित्तवलिएहिं खीरासवेहिं महुआसवेहिं सप्पिआसवेहिं^३ अक्खीणमहाणसिएहिं चारणेहिं विज्जाहरेहिं चउत्थभत्तिएहिं 'छट्टुभत्तिएहिं अट्टमभत्तिएहिं एव-दसम-दुवालस-चोदस-सोलस - अद्धमास - मास - दोमास-चउमास-पचमास'^४-छम्मासभत्तिएहिं उक्खित्तचरएहिं निक्खित्तचरएहिं अतचरएहिं पतचरएहिं लूहचरएहिं समुदाण-चरएहिं अण्णडलाएहिं मोणचरएहिं ससट्ठकप्पिएहिं तज्जायससट्ठकप्पिएहिं उवनि-हिंएहिं सुद्धेसणिएहिं सखादत्तिएहिं दिट्ठलाभिएहिं अदिट्ठलाभिएहिं पुट्टलाभिएहिं आशविलिएहिं पुरिमड्डिएहिं एक्कासणिएहिं निव्वित्तिएहिं भिण्णपिडवाइएहिं परिमियपिडवाइएहिं अताहारेहिं पताहारेहिं अरसाहारेहिं विरसाहारेहिं लूहाहा-रेहिं तुच्छाहारेहिं अतजीवीहिं पतजीवीहिं लूहजीवीहिं तुच्छजीवीहिं उवसत-जीवीहिं पसतजीविहिं विवित्तजीवीहिं अक्खीरमहुसप्पिएहिं^५ अमज्जमसासिएहिं ठाणाइएहिं पडिमट्टाईहिं^६ ठाणुककडिएहिं^७ वीरासणिएहिं णेसज्जिएहिं डडाइएहिं लगडसाईहिं एगपासगेहिं आयावएहिं अप्पाउएहिं अणिट्ठुभएहिं अकडूयएहिं घुतकेसमसु-लोमनखेहिं सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्केहिं समणुच्चिण्णा ।

सुयधरविदित्तथकायवुद्धीहिं^८ । धीरमतिवुद्धिणो य जे ते आसीविस-उग्गतेयकप्पा निच्छय-ववसाय-पज्जत्तकयमतीया^९ णिच्च सज्झायज्झाण-अणुवद्धधम्मज्झाणा पचमहव्वयचरित्तजुत्ता समिता समितीसु समितपावा छव्विहजगवच्छला^{१०} निच्चमप्पमत्ता, एएहिं^{११} अण्णेहिं य जा सा अणुपालिया भगवती ॥

१ सव्वजगजीव ° (क) ।

२ विविदिना (घ) ।

३ सप्पियासवेहिं (ख, ग, घ, च) ।

४ एवं जाव (क, ख, ग, घ) ।

५ अक्खित्त ° (क) ।

६ पडिमट्टाइएहिं (ग, घ, च) ।

७ ठाणुककुडुएहिं (क) ।

८ समनुपालितेति सम्बन्ध (वृ) ।

९ मिच्छत्तकयमतीया (ख, घ); विणीयपज्जत्त-कयमतीया (वृपा) ।

१०. छव्विहजगजीववच्छला (क) ।

११. एएहिं य (घ, च) ।

उछगवेसणा-पद

७ इम च पुढवि-दग-अगणि-माह्य-तरुगण-तस-थावर-सव्वभूय-संजमदयट्टयाए सुद्धं उछ गवेसियव्व अकतमकारितमणाहूयमणुद्धिट्ट, अकीयकड, नवहिय कोडीहि सुपरिसुद्ध, दसहि य दोसेहि विप्पमुक्क, उगमउप्पायणेसणासुद्ध, ववगय-चुय-चइय^१-चत्तदेह च, फासुय च ।

न निसज्जकहापओयणक्खासुओवणीय, न तिगिच्छा-मंत-मूल-भेसज्जहेउ^३, न लक्खणुप्पाय-सुमिण-जोइस-निमित्त-कह-कुहकप्पउत्तं ॥

८ नवि डंभणाए, नवि रक्खणाते, नवि सासणाते, नवि डभण-रक्खण-सासणाते भिक्ख गवेसियव्व ॥

९ नवि वदणाते, नवि माणणाते, नवि पूयणाते, नवि वंदण-माणण-पूयणाते भिक्ख गवेसियव्वं ॥

१० नवि हीलणाते, नवि निंदणाते, नवि गरहणाते, नवि हीलण-निंदण-गरहणाते भिक्ख गवेसियव्वं ॥

११. नवि भेसणाते, नवि तज्जणाते, नवि तालणाते, नवि भेसण-तज्जण-तालणाते भिक्ख गवेसियव्व ॥

१२ नवि गारवेण, नवि कुहणयाते, नवि वणीमयाते, नवि गारव-कुहण-वणीमयाते भिक्ख गवेसियव्वं ॥

१३ नवि मित्तयाए, नवि पत्थणाए, नवि सेवणाए, नवि मित्तत-पत्थण-सेवणाते भिक्ख गवेसियव्व ॥

१४ अण्णाए अगढिए अदुट्टे अदीणे^३ अविमणे अकलुणे अविसाठी अपरित्तजोगी जयण-घडण-करण-चरिय-विणय-गुण-जोगसंपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाते निरते ॥

१५. इम च सव्वजगजीव-रक्खणदयट्टाए पावयण भगवया सुकहिय अत्तहियं पेच्चाभाविय आगमेसिभद् सुद्ध नेयाउय अकुडिल अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण विओसमण ॥

अहिंसाए पंचभावणा-पदं

१६ तस्स इमा पच भावणाओ पढमस्स वयस्स होति पाणातिवायवेरमण-परिरक्खणट्टयाए ॥

१७. पढम—ठाणगमणगुणजोगजुजण-जुगतरनिवातियाए दिट्ठीए इरियव्वं कीड-

१. चयिय (क); चाविय (क्व) ।

३. अदीणे (वृ) ।

२. भेमज्जकज्जहेउ (क, ख, ग, घ, च) ।

पयग-तस-थावर-दयावरेण, निच्च पुप्फ-फल-तय-पवाल-कद-मूल-दगमट्टिय-
वीज-हरिय-परिवज्जएण^१ सम्म^२ ।

एव खु^३ सव्वपाणा न हीलियव्वा, न निंदियव्वा, न गरहियव्वा, न हिंसियव्वा,
न छिंदियव्वा, न भिंदियव्वा, न वहेयव्वा, न भय दुक्ख च किंचि लब्भा
पावेउ जे ।

एव डरियासमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, असवलमसकिलिट्ट-निव्वण-
चरित्तभावणाए अहिंसए सजए सुसाहू ॥

१८ वित्तिय च—मणेण पावएण पावग अहम्मिय दारुण निस्सस^४ वह-वध-
परिकिलेसवहुल भय-मरण-परिकिलेससकिलिट्ट न कयावि मणेण पावएण^५
पावगं किंचि वि भायव्व ।

एव मणसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, असवलमसकिलिट्ट-निव्वण-
चरित्तभावणाए अहिंसए सजए सुसाहू ॥

१९ ततिय च—वतीते पावियाते पावग न किंचि वि भासियव्व ।

एव वतिसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, असवलमसकिलिट्ट-निव्वण-
चरित्तभावणाए अहिंसओ सजओ सुसाहू ॥

२० चउत्थ—आहारएसणाए^६ सुद्ध उच्च गवेसियव्व अण्णाए 'अगट्टिए अदुट्टे'^७ अदीणे^८
अविमणे^९ अकलुणे अविसादी^{१०}, अपरिततजोगी जयण-घडण-करण-चरिय-विणय-
गुण-जोगसपउत्ते^{११} भिक्खू भिक्खेसणाए जुत्ते समुदाणेऊण भिक्खचरिय उच्च
घेत्तूण आगते गुरुजणस्स पास, गमणागमणातिचार-पडिक्कमण-पडिक्कते,
आलोयण-दायण च दाऊण गुरुजणस्स जहोवएस निरइयार च अप्पमत्तो
पुणरवि अणेसणाए पयतो^{१२} पडिक्कमित्ता पसतआसीण-सुहनिसण्णे^{१३}, मुहुत्तमेत्त
च भाण-सुहजोग-नाण-सज्भाय-गोवियमणे धम्ममणे अविमणे सुहमणे
अविग्गहमणे समाहिमणे सद्धासवेगनिज्जरमणे पवयणवच्छल्लभावियमणे
उट्टेऊण य पहट्टुट्टे जहराइणिय^{१४} निमतइत्ता य साहवे भावओ य, विइण्णे^{१५} य

१ परिवज्जिएण (क) ।

२ सम (ग, घ) ।

३ खलु (क, ग) ।

४ निससं (ख, घ) ।

५ पावतेण (ख) ।

६. आहार एसणाए (क, ग, घ, च) ।

७. अकहिए असिट्टे (क, ख, ग, घ, च, वृ),

एते पदे वृत्तेर्वाचनान्तरस्य तथा अस्यैवाध्यय-

नस्य चतुर्दशसूत्रस्याधारेण स्वीकृते ।

८. 'अदीणे' त्यादि तु पूर्ववत् (वृ) ।

९. × (क, ख, ग, घ, च) ।

१०. अविमाती (ख, घ, च) ।

११. °सपओगजुत्ते (क, ख, ग, घ, च) ।

१२. पयत्तो (क, ख, घ, च) ।

१३. मुनिसण्णा (घ) ।

१४. जहरायणिय (क, ग) ।

१५. विइण्णे (क, ख, घ, च) ।

गुरुजणेणं, उपविट्टे सपमज्जिऊण ससोसं काय तहा करतलं, अमुच्छिंए अगिद्धे अगद्धिं अग्ररहिं अणज्भोववण्णे अणाइले अलुद्धे अणत्तट्टित्ते असुरसुरं अचवचव अद्दुयमविलवियं अपरिसाडिं आलोयभायणे जय पयत्तेण ववगय-सजोगमणिगाल च विगयधूम अक्खोवजण-वणाणुलेवणभूय सजमजायामाया-निमित्तं^१ सजयभारवहणट्टयाए भुजेज्जा पाणधारणट्टयाए^२ सजए ण समिय । एव आहारसमितिजोगेण भाविओ भवति अतरप्पा, असवलमसकिलिट्ट-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए सजए सुसाहू ॥

२१. पचमग — पीढ-फलग-सिज्जा-संथारग-वत्थ-पत्त-कवल-दडग-रयहरण-चोलपट्टग-मुहपोत्तिग-पायपुच्छणादी । एयपि संजमस्स उवबूहणट्टयाए^३ वातातव-दसमसग-सोय-परिरक्खणट्टयाए उवगरण रागदोसरहिय परिहरित्तव्व संजतेण^४ णिच्च पडिलेहण-पप्फोडण-पमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ समयं निक्खिवियव्व च गिण्हियव्व च भायणं-भडोवहि-उवगरण । एव आयाणभडनिकखेवणासमितिजोगेण भाविओ भवति अतरप्पा, असवलमस-किलिट्ट-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए सजते सुसाहू ॥

निगमण-पद

२२. एवमिण सवरस्स दार सम्म सवरिय होति सुप्पणिहिय इमेहिं पचहि वि कारणेहि मण-वयण-काय-परिरक्खएहि ॥
२३. णिच्च आमरणत च एस जोगो णेयव्वो धित्तमया मत्तिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्धो अपरिसावी असकिलिट्टो सुद्धो सव्वजिणमणुणातो ॥
२४. एव पढम सवरदार फासिय पालिय सोहिय तीरिय किट्टिय आराहिय आणाते अणुपालिय भवति ॥
२५. एव नायमुणिणा भगवया पण्णविय परूविय पसिद्ध सिद्ध सिद्धवरसासणमिण आघवित्त सुदेसित्त पसत्थ । पढम संवरदार समत्तं ।

—त्ति वेमि ॥

१ अद्दुयं (च) ।

२. मायनिमित्तं (क, ख, ग, घ) ।

३. °रक्खणट्टयाए (क) ।

४. उवगहणट्टयाए (क, ख, च) ।

५. सजमेण (ग) ।

सत्तमं अज्भयणं वीयं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१ जवू । वितिय च सच्चवयण—सुद्धं सुइयं सिव सुजाय सुभासिय सुव्वयं सुकहिय सुदिट्ठ सुपत्तिट्ठिय सुपत्तिट्ठियजस सुसजमियवयणवुइय सुरवर-नरवसभ-पवर-वलवग-सुविहियजण-वहुमय परमसाहुधम्मचरण तव-नियम-परिग्गहिय सुगति-पह्देसग च लोगुत्तम वयमिण विज्जाहरगणगमणविज्जाण साहक सग्गमग्ग-सिद्धिपह्देसक अवितह, त सच्च उज्जुय अकुडिल भूयत्थ, अत्थतो विसुद्ध उज्जोयकर पभासक भवति सव्वभावाण जीवलोगे अविसवादि जहत्थमधुरं पच्चक्ख दइवय^१ व ज त अच्छेरकारकं अवत्थतरेसु वहुएसु माणुसाणं ॥

सच्चस्स माहप्प-पदं

- २ सच्चेण महासमुद्दमज्भे चिट्ठति, न निमज्जति मूढाणिया वि पोया ॥
- ३ सच्चेण य उदगसभममि वि^३ न वुज्भइ^३, न य मरति, थाह च ते लभति ॥
- ४ सच्चेण य अगणिसभमंमि वि^४ न डज्भति उज्जुगा^४ मणूसा ॥
५. सच्चेण य तत्ततेल्ल-तउय-लोह-सीसकाइ छिवति घरेत्ति^५, न य डज्भति मणूसा ॥
- ६ पव्वयकडकाहिं मुच्चते, न य मरति सच्चेण य परिग्गहिया ॥
- ७ असिपजरगया^७ समराओ वि णिइति अणहा य सच्चवादी ॥

१. दरियव (ख, ग); देवय (च) ।

२ × (क, ख, ग, घ, च) ।

३. वचनपरिणामान्नोह्यन्ते (वृ) ।

४ × (क) ।

५. उज्जगा (क, ख, घ) ।

६ अजलिभिरिति गम्यते (वृ) ।

७ असिपजरसत्तिपजरगया (क, च) ।

- ८ वहवघभियोगवेरघोरेहि पमुच्चति य, अमित्तमज्झाहि निइति^१ अणहा य सच्चवादी ॥
- ९ सादेव्वाणि य देवयाओ करेति सच्चवयणे रताण ॥

सच्चस्स थुइ-पदं

- १० त सच्च^२ भगव तित्थगरसुभासिय दसविह चोइसपुव्वीहि पाहुडत्थविदित्त 'महरिसीण य समयप्पदिण्ण'^३ देविट्ठ-नरिंद-भासियत्थ वेमाणियसाहिय महत्थ मतोसहिंविज्जसाहणट्ट चारणगण-समण-सिद्धविज्ज मणुयगणाण च वंदणिज्ज 'अमरगणाण च अच्चणिज्ज असुरगणाण च पूयणिज्ज',^४
- अणेगपासड-परिग्गहियं, ज त लोकम्मि सारभूय ।
गभीरतर महासमुद्दाओ, थिरतरग मेरुपव्वयाओ ।
सोमतर चदमडलाओ, दित्ततर सूरमंडलाओ ।
विमलतर सरयनहयलाओ, सुरभितर गघमादणाओ ॥
- ११ जे वि य लोगम्मि अपरिसेसा मता जोगा जवा य विज्जा य जभका य अत्थाणि य सत्थाणि य सिक्खाओ य आगमा य सव्वाणि^५ वि ताइ सच्चे पइट्ठियाइ ॥

सावज्जसच्च-पदं

१२. सच्चपि य सजमस्स उवरोहकारक^६ किंचि न वत्तव्व—हिंसा-सावज्जसपउत्त भेय-विकहकारक अणत्थवाय-कलहकारक अणज्ज अववाय-विवायसपउत्त वेलव ओजघेज्जबहुल निल्लज्ज लोयगरहणिज्ज दुट्ठिदुट्ठ दुस्सुय दुम्मणिय^७ ॥
- १३ अप्पणो थवणा, परेसु निंदा—

नसि^८ मेहावी, न तसि घण्णो ।
नसि पियघम्मो, न त कुलीणो ।
नसि दाणपती, न तंसि सूरु ।
नसि पडिरूवो, न तसि लट्ठो ।
न पडिओ, न वहुस्सुओ, न वि य त तवस्सी ।

१. नइति (क) ।

२. भगवत (क, ख, ग, घ, च) ।

३. °प्पडण्ण (वृ), महरिमिसमयपडण्णच्चिण्ण (वृपा) ।

४. × (क) ।

५. सव्वाइ (ख, च) ।

६. अवरोहकारक (ख) ।

७. अमुणियं (ख, ग, घ, च) ।

८. त्वमिति गम्यते (वृ) ।

न यावि परलोगणिच्छियमतीऽसि सव्वकाल, जाति-कुल-रुव-वाहि-रोगेण वा वि जं होइ वज्जणिज्ज दुहिल' उवयारमतिकतं—एवविह सच्चपि न वत्तव्व ॥

अणवज्जसच्च-पद

१४ अह केरिसक पुणाइ सच्च तु भासियव्व ? ज त दव्वेहि पज्जवेहि य गुणेहि कम्मोहि सिप्पेहि आगमेहि य नामक्खाय-निवाओवसग्ग-तद्धिय-समास-सधि-पद-हेउ-जोगिय-उणादि-किरियाविहाण-धातु-मर^३-विभत्ति-वण्णजुत्त तिकल्ल दसविह पि सच्च जह भणिय तह य कम्मणा होइ ।

दुवालसविहा होइ भासा, वयणपि य होइ सोलसविह ।

एव अरहतमणुणाय समिक्खिय सजएण कालम्मि य वत्तव्व ॥

१५ इम च अनिय-पिसुण-फरुस-कडुय-चवल-वयण-परिरक्खणट्ठयाए^१ पावयण भगवया सुकहिय अत्तहिय पेच्चाभाविक आगमेसिभद् सुद्ध नेयाउय अकुडिल अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण विओसमण ॥

सच्चस्स पचभावणा-पद

१६ तस्स इमा पच भावणाओ वितियस्स वयस्स अलियवयणवेरमण^२-परिरक्खणट्ठयाए ॥

१७ पढम—सोऊण संवरट्ठ परमट्ठ, सुट्ठु जाणिऊण न वेगिय^४ न तुरिय न चवल न कडुय न फरुस न साहस न य परस्स पीलाकर सावज्ज, सच्च च हिय च मिय च 'गाहक च'^५ सुद्ध सगयमकाहल च समिक्खित सजतेण कालम्मि य वत्तव्व ।

एवं अणुवीइसमितिजोगेण^६ भाविओ भवति अतरप्पा, सजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरु सच्चज्जवसपण्णो ॥

१८ वितिय—कोहो^७ ण सेवियव्वो । कुद्धो चडिक्किओ मणूसो अलिय भणेज्ज, पिसुण भणेज्ज, फरुसं भणेज्ज, अनिय पिसुण फरुम भणेज्ज ।

कलह करेज्ज, वेर करेज्ज, विकह करेज्ज, कलह वेर विकह करेज्ज ।

सच्च हणेज्ज, सील हणेज्ज, विणय हणेज्ज, सच्च सील विणय हणेज्ज ।

वेसो भवेज्ज, वत्थु भवेज्ज, गम्मो भवेज्ज, वेसो वत्थु गम्मो भवेज्ज ।

१ दुहओ (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

२ रम (वृपा) ।

३ परिरक्खणट्ठयाए (क) ।

४ अलियवयणस्स ° (क, ख, ग, घ, च), एतद् विहाय सर्वेष्वपि संवरद्वारेषु समस्त पदमुपलभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते । असमस्त-

पदम्यार्थो भ्रान्ति जनयति ।

५ वेतित (क), वेइय (ख, ग, च) ।

६ गाहण (क) ।

७ अणुवीति ° (क), अणुवीयि ° (ख, घ); अणुवीय ° (च) ।

८ कोघो (ख, घ) ।

एय अण्ण च एवमादियं भणेज्ज कोह्मिग-सपलित्तो, तम्हा कोहो न सेवियव्वो ।
एव खतीए^१ भाविओ भवति अंतरप्पा, सजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरु
सच्चज्जवसपण्णो ॥

१६ ततिय—लोभो न सेवियव्वो ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय खेत्तस्स व वत्थुस्स व कतेण ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय कितीए व लोभस्स व कएण ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय इड्डीए व सोक्खस्स व कएण ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय भत्तस्स व पाणस्स व कएण ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय पीढस्स व फलगस्स व कएण ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय सेज्जाए व सथारकस्स^२ व कएण ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय वत्थस्स व पत्तस्स व कएण ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय कवलस्स व पायपुच्छणस्स व कएण ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय सीसस्स व सिस्सिणीए व कएण ।

अण्णेसु^३ य एवमादिएसु बहुसु कारणसतेसु लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, तम्हा
लोभो न सेवियव्वो ।

एव मुत्तीए^४ भाविओ भवति अंतरप्पा, सजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरु
सच्चज्जवसपण्णो ॥

२० चउत्थ—न भाइयव्व । भीतं खु भया अइति लहुय, भीतो अवितिज्जओ
मणूसो, भातो भूतेहि व घेपेज्जा, भीतो अण्ण पि हु भेसेज्जा, भीतो तव-सजम
पि हु मुएज्जा, भीतो य भर न नित्थरेज्जा, सप्पुरिसनिसेविय च मग्ग भीतो
न समत्थो अणुचरिउ । तम्हा न भाइयव्व^५ भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स वा
जराए वा मच्चुस्स वा अण्णस्स व एवमादियस्स^६ ।

एव धेज्जेण भाविओ भवति अंतरप्पा, सजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरु
सच्चज्जवसपण्णो ॥

२१. पचमक—हास न सेवियव्व । अलियाइ असंतकाइ जपति हासइत्ता । परपरि-
भवकारण च हास, परपरिवायप्पिय च हास, परपीलाकारग च हास, भेदवि-
मुत्तिकारक च हास, अण्णोण्णजणिय च होज्ज हास, अण्णोण्णगमण च होज्ज
मम्म, अण्णोण्णगमण च होज्ज कम्मं, कदप्पाभिओगगमण च होज्ज हास,
आसुरिय किव्विसत्तं च जणेज्ज हास, तम्हा हास न सेवियव्व ।

१ खतीय (ख), खतीय (ग, घ, च) ।

२ सथारम्म (क) ।

३ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलिय अण्णेसु (क, ख,
ग, घ, च) ।

४. मुत्तीय (ख, घ) ।

५. भावितव्व (क); भातियव्व (ग) ।

६ एगस्स (वृ); एवमादियस्स (वृपा) ।

एव मोणेण भाविओ भवइ अतरप्पा, सजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरु
सच्चज्जवसंपण्णो ॥

निगमण-पदं

- २२ एवमिणं सवरस्स दारं सम्म सवरिय होइ सुप्पणिहिय इमेहिं पचहि वि कारणेहिं
मण-वयण-काय-परिरक्खिएहि ॥
- २३ निच्च आमरणत च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो
अच्छिद्दो अपरिस्सावी असकिलिट्ठो सुद्धो^१ सव्वजिणमणुण्णाओ ॥
- २४ एव वित्तिय सवरदार फासिय पालिय सोहिय तीरिय किट्टिय 'आराहिय
आणाए अणुपालिय'^२ भवति ॥
- २५ एव नायमुणिणा भगवया पण्णविय परूविय पसिद्ध सिद्धवरसासणमिण आघवित्त
सुदेसित्त पसत्थ । वित्तिय सवरदार समत्त ।

— त्ति वेमि ॥

१. × (क, ख, ग, घ) ।

२. अणुपालिय आणाए आराहिय (क, ख, ग, घ, च) ।

अट्ठमं अज्झयणं तइयं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१ जवू । दत्ताणुण्णायसवरो' नाम होति ततिय—सुव्वत' महव्वत गुणव्वत परदव्व-हरणपडिविरइकरणजुत्त अपरिमियमणततण्हामणुगय-महिच्छ-मणवयणकलुस-आयाणसुनिग्गहिय सुसजमियमण-हत्थ-पायनिहुय निग्गथ णेट्टिक निरुत्त निरासव निव्वभय विमुत्त उत्तमनरवसभ-पवरवलवग-सुविहियजणसंसतं परम-साहुधम्मचरण ॥

अदत्तस्स अग्गहण-पदं

२ जत्थ य गामागर-नगर-निगम-खेड-कव्वड'-मडव-दोणमुह-सवाह-पट्टणासमगय च किञ्चि दव्व मणि-मुत्त-सिल-प्पवाल-कस-दूस-रयय-वरकणग-रयणमादि पडिय पम्हुट्ट विप्पणट्ट न कप्पति कस्सति' कहेउ वा गेण्हिउ वा । अहिरण्ण-मुवण्णिकेण समलेट्टुकचणेण अपरिग्गहसवुडेण लोगमि विहरियव्व ॥

३ ज पि य होज्जा हि दव्वजात 'खलगतं खेत्तगत रण्णमतरगत व' किञ्चि पुप्फ-फल-तय-प्पवाल-कद-मूल-तण-कट्ट-सक्कराइ अप्प व वहु व अणु व थूलग वा न कप्पति ओग्गहे अदिण्णमि गिण्हिउ जे ॥

१. दत्तमणुण्णाय ० (क), दत्तमणुण्णाय ०
(ख, ग, घ, च) ।

२ सुव्वत (क, ख, ग, घ, च); वृत्तिकारेण
'सुव्वय' इति पाठो लब्धः, तेन 'हे सुव्वत'
इति मम्बोधनत्वेन व्याख्यातः । वस्तुतोऽत्र
'सुव्वय महव्वय गुणव्वय' एतानि त्रीण्यपि

पदानि एकरूपाणि सन्ति । एकस्मिन्
क्वचित्प्रयुक्तादर्शे 'सुव्वय' इति पाठोपि
लब्धः । तेनासौ पाठ स्वीकृतः ।

३. खव्वड (क)

४ कासती (क, घ) ।

५. वाचनान्तरे—जलयलयय खेत्तमतरगय(वू) ।

४ हृणिहृणि ओग्गह अणुणविय गेण्हियवं । वज्जेयव्वो य सव्वकाल अचियत्त-
घरप्पवेसो, अचियत्तभत्तपाण अचियत्तपीढ-फलग-सेज्जा-सथारग-वत्थ-पत्त-
कवल-दडग-रयहरण-निसेज्ज-चोलपट्टग-मुहपोत्तिय-पायपुच्छणाइ-भायण - भडो-
वहि-उवकरण परपरिवाओ परस्स दोसो परववएसेण ज च गेण्हइ, परस्स
नासेइ ज च सुकय, दाणस्स य अतरातिय, दाणविप्पणासो, पेसुण्ण चैव
मच्छरित्त च ॥

अदत्तादाणवेरमणस्स अजोग्गता-पदं

५ जे वि य पीढ-फलग-सेज्जा-सथारग-वत्थ-पाय^१-कवल-रओहरण^२-निसेज्ज-
चोलपट्टग-मुहपोत्तिय-पायपुच्छणादि-भायण-भडोवहि-उवकरण^३ असविभागी,
असगहसई,
'तव-वइतेणे'^४ य रूवतेणे य, आयारे चैव भावतेणे य,
सहकरे भभकरे कलहकरे वेरकरे विकहकरे असमाहिकारके, सया अप्पमाण-
भोई^५ सततं अणुवद्धवेरे य निच्चरोसी, से तारिसए नाराहए वयमिण ॥

अदत्तादाणवेरमणस्स जोग्गता-पदं

६. अह केरिसए पुणाइ आराहए वयमिण ?
जे से उवहि-भत्तपाण-'दाण-संगहण'^६-कुसले अच्चतवाल-दुव्वल-गिलाण-वुड्ड-
खमके पवत्ति-आयरिय-उवज्झाए सेहे साहम्मिए तवस्सी-कुल-गण-सघ-चेइयट्टे
य निज्जरट्टी वेयावच्च अणिस्सिय दसविह बहुविह करेति, न य अचियत्तस्स
घर^७ पविसइ, न य अचियत्तस्स 'गेण्हइ भत्तपाण'^८, न य अचियत्तस्स सेवइ
पीढ-फलग-सेज्जा सथारग-वत्थ-पाय-कवल-दडग-रओहरण- निसेज्ज-चोलपट्टय-
मुहपोत्तिय-पायपुच्छणाइ-भायण-भडोवहि-उवकरण, न य परिवाय परस्स जपति,
ण यावि दोसे परस्स गेण्हति, परववएसेणवि न किञ्चि गेण्हति, न य विपरि-
णामेति कच्चि^९ जण, न यावि णासेति दिण्ण-सुकय, दाऊण य काऊण य न होइ
पच्छाताविए, सविभागसीले सगहोवग्गहकुसले, से तारिसए आराहए वयमिण ॥

७. इम च परदव्वहरणवेरमण-परिरक्खणट्टयाए पावयण भगवया सुकहिय अत्तहिय
पेच्चाभाविक आगमेसिभद् सुद्ध नेयाउय अकुडिल अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण
विओसमण^{१०} ॥

१ पत्त (च) ।

२. रयोहरण (ख, ग, घ,) ।

३ प्रतीत्येति गम्यते (वृ) ।

४. तव तेणे य वइ^० (क, ख, ग, घ) ।

५. ^० भोती (क, ग) ।

६. सगहणदाण (क, ग, च) ।

७ गिह (क, ग) ।

८. भत्तपाणं गेण्हइ (ख, घ, च) ।

९ किञ्चि (क) ।

१०. विओवसमण (क, ख, ग, घ, च) ।

अदत्तादाणवेरमणस्स पंचभावणा-पदं

८. तस्स इमा पंच भावणा ततियस्स वतस्स होति परदव्वहरणवेरमण-परि-
रक्खणट्टयाए ॥
९. पढम—देवकुल-सभ-प्पवा-आवसह^१-रुक्खमूल-आराम-कदरा - आगर-गिरिगुह^२-
'कम्म-उज्जाण'^३-जाणसाल-कुवितसाल-मडव - सुण्णघर - सुसाण-लेण^४-आवणे,
अण्णमि य एवमादियमि दगमट्टिय^५-वीज-हरित-तसपाण-अससत्ते अहाकडे
फासुए विवित्ते पसत्थे उवस्सए होइ विहरियव्व ।
आहाकम्म-बहुले य जे से आसित्त-समज्जिओसित्त-सोहिय-छायण-दुमण-लिपण-
अणुलिपण-जलण-भडचालण^६, अतो वहि च असंजमो जत्थ वट्टती^७, संजयाण
अट्टा 'वज्जेयव्वे हु उवस्सए'^८ से तारिसए सुत्तपडिकुट्टे ।
एव विवित्तवासवसहिसमित्तियोगेण भावितो भवति अतरप्पा, निच्च अहिकरण-
करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय^९-ओग्गहरुई^{१०} ॥
१०. वितियं—आरामुज्जाण-काणण-वणप्पदेसभागे ज किंचि डक्कडं व कढिणग व
जतुगं व 'परा-मेरा'^{११} - कुच्च - कुस - डव्वभ - पलाल - मूयग - वल्लय^{१२}-पुप्प- फल-
तय-प्पवाल-कद-मूल-तण-कट्ट-सक्कराइ गेण्हइ सेज्जोवहिस्स अट्टा, न कप्पए
ओग्गहे अदिण्णमि गेण्हउ जे । हणिहणि ओग्गह अणुण्णविय गेण्हियव्वं ।
एव ओग्गहसमित्तियोगेण भावितो भवति अतरप्पा, निच्च अहिकरण-करण-
कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुई ॥
११. ततिय—पीढ-फलग-सेज्जा-सथारगट्टयाए रुक्खा न छिंदियव्वा, न य छेदणेण^{१३}
भेयणेण य सेज्जा कारेयव्वा ।
जस्मेव उवस्सए वसेज्ज सेज्ज तत्थेव गवेसेज्जा, न य विसमं सम करेज्जा, न
निवाय^{१४}—पवाय-उस्सुकत्त, न डसमसगेसु खुभियव्व, अग्गी धूमो य न कायव्वो ।
एव सजमवहुले सवरवहुले सबुडवहुले समाहिवहुले धीरे काएण फासयते सययं
अज्भप्पज्भाणजुत्ते समिए एगे चरेज्ज धम्म ।

१. वसहि (क, ख, घ) ।

२. गिरिगुहा (च) ।

३. कम्मतुज्जाण (क, ग, घ), कम्म उज्जाण
(ख, च) ।

४. लयण (ख) ।

५. °मट्टिया (ख, घ) ।

६. एतेषा समाहारद्वन्द्व विभक्तिलोपश्च दृश्य
(वृ) ।

७. वट्टति (च) ।

८. वज्जेयव्वो हु उवस्सओ (ग) ।

९. दत्तमणुण्णाय (क, ख, ग, घ, च), सर्वत्र ।

१०. °स्ती (क, ग) ।

११. परमेर (क), परमेरा (ख), परमेरा (घ) ।

१२. पव्वय (ख, घ), वल्लज तृणविशेष (वृ) ।

१३. छेदण (ख, ग, घ, च) ।

१४. निव्वाय (ख) ।

एव सेज्जासमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, निच्च अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुई ॥

१२ चउत्थ—साहारणपिडपातलाभे भोत्तव्व सजएण समिय, न सायसूयाहिक, न खद्ध, न वेइय, न तुरिय, न चवलं, न साहस, न य परस्स पीलाकर सावञ्ज, तह भोत्तव्व जह से ततियवय न सीदति ।

साहारणपिडवायलाभे सुहुम 'अदिण्णादाणवय-नियम-वेरमण'^१ ।

एव साहारणपिडवायलाभ समितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, निच्च अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुती ॥

१३ पचमग—साहम्मिएसु विणओ पउजियव्वो, उवकारण-पारणासु विणओ पउजियव्वो, वायण-परियट्टणासु विणओ पउजियव्वो, दाण-गहण-पुच्छणासु विणओ पउजियव्वो, निक्खमण-पवेसणासु विणओ पउजियव्वो, अण्णेसु य एवमाइएसु वहुसु कारणसएसु विणओ पउजियव्वो । विणओ वि तवो तवो वि धम्मो, तम्हा विणओ पउजियव्वो गुरुसु साहसु तवस्सीसु य ।

एव विणएण भाविओ भवति अतरप्पा, निच्च अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुई ॥

निगमण-पदं

१४. एवमिण सवरस्स दार सम्म सवरिय होइ सुपणिहिय 'इमेहि पचहि वि कारणेहि मण-वयण-काय-परिरक्खिएहि ॥

१५. निच्च आमरणत च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिट्ठो अपरिस्सावी असकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ ॥

१६. 'एव ततिय सवरदार फासिय पालिय सोहिय तीरिय किट्टिय 'आराहिय आणाए अणुपालिय'^३ भवति ।

१७. एव नायमुणिणा भगवया पण्णविय परुविय पसिद्ध सिद्धवरसासणमिणं आघविय'^४ सुदेसिय पसत्थ । ततिय सवरदार समत्त ।

—त्ति वेमि ॥

१. वेतित्त (क) ।

२. अदिण्णादाणविरमणवयनियमण (वृ),
अदिण्णादाणवयनियमवेरमण (वृपा) ।

३. अणुपालिय आणाए आराहिय (च) ।

४. एव जाव आघविय (क, ख, ग, घ) ।

नवमं अज्भयणं

चउत्थं संवरदारं

उक्खेव-पद

१ जवू । एत्तो य वभचेर—उत्तम-तव-नियम-णाण-दसण-चरित्त-सम्मत्त-विणयमूल
जम'-नियम-गुणप्पहाणजुत्त हिमवत-महत-तेयमत पसत्थ-गभीर-थिमित-मज्झ
अज्जवसाहुजणाचरित मोक्खमग्ग विसुद्ध-सिद्धिगति-निलय 'सासयमव्वावाहम-
पुणवभव पसत्थ सोम सुभ सिवमचलमक्खयकर'^२ जतिवर-सारक्खय' सुचरिय
सुसाहिय' नवरि मुणिवरेहि महापुरिस-धीर'-सूर-घम्मिय-धित्तिमत्ताण य सया
विसुद्ध भव्व भव्वजणाणुच्चिण्ण' निस्सकिय' निवभय नित्तुस निरायास निरुवलेव
निव्वुत्तिघर नियम-निप्पकंप तवसंजममूलदलिय-णेम्म पचमहव्वयसुरक्खयं
समित्तिगुत्तिगुत्त भाणवरकवाडसुकय' अज्भप्पदिण्णफलिह संणद्धोत्थइय-
दुग्गइपह' मुगत्तिपहदेसग'^३ लोगुत्तमं च वयमिण पउमसरतलागपालिभूय
महासगडअरगतुवभूय महाविडिमरुक्खक्खधभूय महानगरपागारकवाडफलिहभूय
रज्जुपिणद्धो व इंदकेतू विसुद्धणेगगुणसपिणद्ध ॥

वंभचेरमाहप्प-पदं

२ जमि य भग्गंमि होइ सहसा सव्व संभग्ग-मथिय-चुण्णिय-कुसल्लिय-पल्लट्ट-

१. यम (ग, घ) ।

२. नासयमपुणवभव पसत्थ सोम सुह सिवमक्ख-
यकर (वृ), सासयमव्वावाहमपुणवमवं पसत्थ
सोम सुह सिवमचलमक्खयकर (वृपा) ।

३. सरक्खिय (स) ।

४. नुभासिय (ग) ।

५. वीर (क, ख, घ) ।

६. भव्वजणसमुच्चिण्ण (क, ख) ।

७. नीसक (ख) ।

८. °सुकयरक्खण (च) ।

९. सण्णद्धवद्धोच्छइय °(च) ।

१०. °देसग च (क, ख, ग, घ, च) ।

पडिय-खडिय-परिसडिय-विणासिय विणयसीलतवनियमगुणसमूहं, त वभं
भगवत—

गह्गण-नक्खत्त-तारगाणं वा जहा उडुपती^१,

मणि-मुत्त-सिल-प्पवाल-रत्तरयणागराण च जहा समुद्धो,

वेरुलिओ चैव जह मणीण,

जह^२ मउडो चैव भूसणाण,

वत्थाण चैव खोमजुयल,

अरविद चैव पुप्फजेट्टु,

गोसीस चैव चदणाण,

हिमवतो चैव ओसहीण,

सीतोदा चैव निन्नगाण,

उदहीसु जहा सयभुरमणो,

रुयगवरे चैव मडलिकपव्वयाण पवरे,

एरावण इव कुजराण,

सीहो व्व जहा मिगाण पवरो,

पवकाण चैव वेणुदेवे,

घरणो जह पण्णगड्दराया^३,

कप्पाण चैव वभलोए,

सभामु य जहा भवे सुहम्मा,

ठितिसु लवसत्तम व्व पवरा,

दाणाण चैव अभयदाण,

किमिराओ चैव कवलाण,

संघयणे चैव वज्जरिसभे,

सठाणे चैव समचउरसे,

भाणेषु य परमसुक्कज्जाणं,

णाणेषु य परमकेवल तु सिद्धं,

लेसासु य परमसुक्कलेस्सा,

तित्थकरो चैव जह मुणीण,

वासेसु जहा महाविदेहे,

गिरिराया चैव मदरवरे,

१. उडुपती (क), उडुपती (ग, घ) ।

२. जहा (ख, ग) ।

३. पण्णइदराया (क, घ, च) ।

वणेसु जह नदणवण पवर,
दुमेसु जह जवू सुदसणा वीसुयजसा—जीसे नामेण य अय दीवो,
तुरगवती गयवती रहवती नरवती जह वीसुए चैव राया,
रहिए चैव जहा महारहगते ।

एवमणेगा गुणा अहीणा भवति एकमि वभचेरे ॥

३ जमि य आराहियमि आराहिय वयमिण सव्व ।

सील तवो य विणओ य, सजमो य खती गुत्ती मुत्ती ।

तहेव इहलोइय-पारलोइय-जसो य कित्ती य पच्चओ य ।

तम्हा निहुएण वभचेर चरियव्व सव्वओ विसुद्ध जावज्जीवाए जाव सेयट्ठि-
सजओत्ति—एव भणिय वय भगवया ।

त च इम—

पचमहव्वय-सुव्वयमूल, समणमणाइलसाहुसुचिण्ण ।

वेरविरामण-पज्जवसाण, सव्वसमुद्द-महोदधितित्थ ॥१॥

तित्थकरेहि सुदेसियमग्ग, नरयतिरिच्छविवज्जियमग्ग ।

सव्वपवित्त-सुनिम्मियसार, सिद्धिविमाण-अवंगुयदार ॥२॥

देवर्नरिदनमसियपूय, सव्वजगुत्तममगलमग्ग ।

दुद्धरिस गुणनायगमेक्क, मोक्खपहस्स वडिसकभूयं ॥३॥

जेण सुद्धचरिएण भवइ सुवभणो सुसमणो सुसाहू । स इसी स मुणी स सजए
स एव भिक्खू, जो सुद्धं चरति वभचेर ॥

वभचेरथिरीकरण-पदं

४. इम च रति-राग-दोस-मोह^१-पवड्डणकर किमज्झ-पमायदोस-पासत्थसीलकरण
अट्ठमणणाणि य तेल्लमज्जणाणि य अभिक्खण कक्खसीसकरचरणवदणघोवण-
सवाहण-नायकम्म-परिमदण-अणुलेवण-चुण्णवास-धूवण - सरीरपरिमडण-वाउ-
सिक-हसिय-भणिय-नट्टगीयवाइयनडनट्टकजल्लमल्लपेच्छण-वेलवक^२ जाणि य
सिगारागाराणि य अण्णाणि य एवमादियाणि तव-सजम-वंभचेर-घातोवघाति-
याइ अणुचरमाणेण वभचेरं वज्जेयव्वाइ सव्वकाल । भावेयव्वो भवइ य
अतरप्पा इमेहि तव-नियम-सील-जोगेहिं निच्चकाल, किं ते ?—
अण्हाणक-उदतघोवण^३ - सेयमलजल्लघारण - मूणवय-कैसलोय-खम-दम-अचेलग-
खुप्पिवास - लाघव - सितोसिण-कट्टसेज्ज-भूमिनिसेज्ज-परघरपवेस-लद्धावलद्ध-

१. नमोह (क, च) ।

वर्जयितव्या इति योगः (वृ) ।

२. छान्दसत्वाच्च प्रथमावहुवचनलोपो ह्य, ३. उदतघोवण (च) ।

माणावमाण-निंदण-दंसमसगफास-नियम-तवगुणविणयमादिएहिं जहा मे थिर-तरग होइ वभचेर ॥

- ५ इम च अवंभचेरविरमण^१-परिरक्खणट्टयाए पावयण भगवया सुकहिय अत्तहित पेच्चाभाविक आगमेसिभद् सुद्ध नेयाउय अकुडिलं अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण विअोसवण ॥

वभचेरस्स पंचभावणा-पदं

- ६ तस्स इमा पच भावणाओ चउत्थवयस्स होति अवभचेरवेरमण-परिरक्खणट्टयाए ॥
- ७ पढम—सयणासण - घरदुवारअगण - आगास - गवक्ख - साल - अभिलोयण-पच्छवत्थुक-पसाहणकणहाणिकावकासा, अवकासा जे य वेसियाणं, अच्छति य जत्थ इत्थिकाओ अभिक्खण मोह-दोस-रति-रागवड्डणीओ, कर्हिति य कहाओ वहुविहाओ, ते हु वज्जणिज्जा । इत्थिसंसत्त-सकिलिट्टा, अण्णे वि य एवमादी अवकासा ते हु वज्जणिज्जा जत्थ मणोविब्भमो 'वा भगो वा'^२ भसणा वा अट्ट रुद् च होज्ज भाण त त वज्जेज्ज वज्जभीरू अणायतण अतपतवासी । एवमससत्तवासवसहीसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेदिए वभचेरगुत्ते ॥
- ८ वितिय—नारीजणस्स मज्जे न कहेयव्वा कहा—विचित्ता विव्वोय-विलास-सपउत्ता हास-सिगार-लोइयकह व्व मोहजणणी, न आवाह-विवाह-वरकहा,^३ इत्थीण वा सुभग-दुवभग^४-कहा, चउसट्ठि^५ च महिला गुणा, न वण्ण-देस-जाति-कुल-रूव-नाम-नेवत्थ-परिजणकहव्व इत्थियाणं, अण्णा वि य एवमादियाओ कहाओ सिगार-कलुणाओ तव-सजम-वभचेर-घातोवघातियाओ अणुचरमाणेण वभचेर न कहेयव्वा, न मुणेयव्वा, न चित्तेयव्वा । एव इत्थीकह्विरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेदिए वभचेरगुत्ते ॥
- ९ ततिय—नारीण हसिय - भणिय - चेट्ठिय - विप्पेक्खिय-गइ - विलास-कीलिय, विव्वोइय-नट्ट-गीत-वाइय-सरीरसठाण- वण्ण - कर - चरण - नयण - लावण्ण-रूव-जोवण्ण-पयोहर-अधर-वत्थ-अलकार-भूसणाणि य, गुज्झोकासियाइ^६, अण्णाणि य एवमादियाइ तव-सजम-वभचेर-घातोवघातियाइ अणुचरमाणेण वंभचेर न चक्खुसा न मणसा न वयसा पत्थेयव्वाइ पावकम्माइ ।

१. वभचेर^० (क, ग, घ), वभविरमण (ख) ।

२. व्व भंगो व्व (क) ।

३. ^०कहाविव (क, ख, ग, घ, च) ।

४. दुभग (ख, ग, घ) ।

५. चोयट्ठि (ख, ग, घ) ।

६. गुज्झोवकासियाइ (क, ख, ग, घ, च) ।

एव इत्थीरुवविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेदिए वंभचेरगुत्ते ॥

१०. चउत्थ—पुव्वरय-पुव्वकीलिय-पुव्वसगय^१-गय-सथुया जे ते आवाह-विवाह-चोल्लकेसु य तिथिमु जण्णेसु उस्सवेसु य सिंगारागार-चारुवेसाहिं इत्थीहिं^२ हाव-भाव-पललिय - विक्खेव^३ - विलास-सालिणीहिं अणुकूलपेम्मिकाहिं^४ सद्धि अणुभूया सयण-सपओगा, उदुसुह-वरकुमुम-मुरभिचदण-सुगधिवर^५-वास-धूव-सुहफरिस-वत्थ-भूसणगुणोववेया, रमणिज्जाओज्ज-गेज्ज^६-पउरनड-नट्टक-जल्ल-मल्ल-मृट्टिक-वेलवग - कहग - पवग - लासग - आइक्खग - लख - मंख-तूणडल्ल-तुववीणिय-तालायर-पकरणाणि य वहुणि महुरसर-गोत-सुस्सराइ, अण्णाणि य एवमाइयाड तव-सजम-वभचेर-घातोवघातियाड अणुचरमाणेण वंभचेर न ताइ समणेण लव्भा दट्ठ न कहेउं नवि सुमरिउ जे ।

एव पुव्वरयपुव्वकीलियविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, आरयमण-विरतगामधम्मे जिइदिए वंभचेरगुत्ते ॥

११. पचमग—आहारपणीय-निद्धभोयण-विवज्जए सजते सुसाहू ववगयखीर-दहि-सप्पि-नवनीय-तेल्ल-गुल खड-मच्छडिक-महु-मज्ज-मस-खज्जक-विगति-परिचत्त-कयाहारे न दप्पण^७ न बहुसो न नितिक न सायसूपाहिक न खद्ध, तथा भोत्तव्व जहू से जायामाता य भवति, न य भवति विव्वमो भसणा य धम्मस्स ।

एव पणीयाहारविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अतरप्पा, आरयमण-विरतगामधम्मे जिइदिए वंभचेरगुत्ते ॥

निगमण-पदं

१२. एवमिण सवरस्स दार सम्म सवरिय होइ सुप्पणिहित इमेहिं पचहिं वि कारणेहिं मण-वयण-काय-परिरक्खएहिं ॥
१३. णिच्चं आमरणत्त च एस^८ जोगो णेयव्वो^९ धितिमता मतिमता अणासवो अकलुसो अच्छिट्ठो अपरिस्सावी^{१०} असकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ ॥

१. °सगय (ख, ग, घ, च) ।

६. गेय (ग) ।

२. × (ख, ग, घ, च), स्त्रीभिगिति गम्यते (वृ) ।

७. आहार भुजीतेतिशेष (वृ) ।

३. विच्छेव (क, व, घ, च) ।

८. एसो (क, ख, ग, घ) ।

४. °पेम्मकाहिं (क) ।

९. णायव्वो (ख, घ) ।

५. मुगध^० (क, ख, ग, घ, च) ।

१०. अपरिस्सादी (क); अपरिस्साती (ख, घ, च) ।

- १४ एव' चउत्थं सवरदारं फासित पालित सोहित तीरित किट्टित आराहित
आणाए अणुपालित भवति ॥
- १५ एव नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परुविय पसिद्ध सिद्धवरसासणमिण
आघविय सुदेसित पसत्थ । चउत्थ सवरदार समत्त ।

—त्ति वेमि ॥

दसमं अञ्भयणं

पंचमं संवरदारं

उक्खेव-पद

- १ जवू । अपरिग्गहो' सवुडे य समणे आरभ-परिग्गहातो विरते, विरते कोहमाणमायालोभा ।
एगे असजमे । दो चेव राग-दोसा । तिण्णि य दडा, गारवा य, गुत्तीओ, तिण्णि^१ य विराहणाओ । चत्तारि कसाया, भाणा, सण्णा, विकहा तथा य हुति चउरो । पच य किरियाओ, समिति-इदिय-महव्वयाइं च । छज्जीवनिकाया, छच्च लेसाओ । सत्त भया । अट्ट य मया । नव चेव य वभचेरगुत्ती । दसप्पकारे य-समणधम्मे । एक्कारस य उवासगाण^२ । वारस य भिक्खुपडिमा । किरियठाणा य । भूयगामा । परमाधम्मिया । गाहासोलसया । असजम-अवभ-णाय-असमाहिठाणा । सवला । परिसहा । सूयगडज्भयण-देव-भावण-उद्देस-गुण-पकप्प-पावसुत-मोहणिज्जे । सिद्धातिगुणा य । जोगसगहे, 'सुरिदा । तेत्तीसा आसातणा'^३ । [आदि^४ एक्काइय करेत्ता एक्कुत्तरियाए^५ वड्ढिएसु तीसातो जाव उं भवे तिकाहिका^६]

१ अपरिग्गह (क, ग, घ, च) ।

२ तिन्नि तिन्नि (क, ग, घ, च) ।

३. प्रतिमा भवन्तीति गम्यम् (वृ) ।

४ तेत्तीसा आसातणा सुरिदा (क, ख, ग, घ, च); आदर्शेषु यद्यपि 'तेत्तीसा आसातणा सुरिदा' एवं पाठो दृश्यते, किन्तु अर्थमीमांसया नैव सङ्गच्छते । 'जोगसगहे सुरिदा' एष क्रम म्यात् तदार्थसङ्गतिर्जायते । यथा—'तिण्णि य दडा गारवा य गुत्तीओ, तिण्णि य विराहणाओ' एव एकस्या सख्यायामनेकेषा विप-

याणामुल्लेखोस्ति तथा द्वात्रिंशत्सख्यायामपि द्वयोर्विषयोऽल्लेखोस्ति, द्रष्टव्यमिह 'समवायो' (३२।१,२) यथा—'वत्तीस जोगसगहा पण्णत्ता' तथा 'वत्तीस देविदा पण्णत्ता' । अत्र 'देविदा' इति पदस्य स्थाने 'सुरिदा' इति पद प्रयुक्तमस्ति ।

५ एएसु त्ति वाक्यशेष (वृ) ।

६ वृद्ध्या इति गम्यते (वृ) ।

७ असौ पाठो व्याख्याज्ञ. प्रतीयते ।

विरती-पणिहोसु अविरतीसु य, एवमादिसु बहूसु ठाणेषु जिणपसत्थेसु अवितहेसु सासयभावेसु अवट्टिएसु संक कंखं निराकरेत्ता सदहते सासणं भगवतो अणियाणे अगारवे अलुद्धे अमूढमण-वयण-कायगुत्ते ॥

२. जो सो वीरवरवयणविरतिपवित्थर-बहुविहप्पकारो सम्मत्तविसुद्धमूलो धितिकदो विणयवेइओ निग्गततिलोककविपुलजसनिचियपीणपीवरसुजातखधो पचमहव्वयविसालसालो भावणतयंत^१ - ज्झाण-सुभजोग -नाण-पल्लववरकुरधरो बहुगुणकुसुमसमिद्धो सीलसुगंधो अण्हयफलो^२ पुणो य मोक्खवरबीजसारो मंदरगिरि-सिहरचूलिका इव इमस्स मोक्खवर-भोत्तिमग्गस्स सिहरभूओ सवरवरपायवो । चरिम सवरदार ॥

अकप्पदव्वजाय-पदं

- ३ जत्थ न कप्पइ गामागर-नगर-खेड-कव्वड-मडव-दोणमुह-पट्टणासमगय च किच्चि अप्प व बहु व अणु व थूल व तस-थावरकाय-दव्वजाय मणसा वि परिघेत्तु ।^३ न हिरण्ण-सुवण्ण-खेत्त-वत्थु, न दासी-दास-भयक-पेस-हय-गय-नावेलग व, न जाण-जुग्ग-सयणासणाइं, न छत्तक न कुडिया^४ 'न पाणहा' न पेहुण-वीयण-तालियटका^५ ॥
- ४ न यावि अय-तउय-तव - सीसक-कंस - रयत - जातरूव-मणि - मुत्ताधारपुडक-^६ संख-दत्तमणि-सिंग-सेल^७-काय-वइर^८-चेल-चम्म-पत्ताइ महारिहाइं परस्स अज्झो-ववायलोभजणणाइ परियड्डिउ गुणवओ^९ ॥
- ५ न यावि पुप्फ-फल-कद-मूलादियाइ, सणसत्तरसाइं सव्वघण्णाइ तिहिं वि जोगेहिं परिघेत्तु ओसहभेसज्जभोयणट्टयाए सजएण । कि कारण ?—
अपरिमितणाणदसणधरेहिं सील-गुण-विणय-तव-सजमनायकेहिं तित्थयरेहिं

१ भावणतय (घ, वृ), °तयत (वृपा) ।

२. अण्हव ° (वृ) ।

३. परिघेत्तू (क, ख, ग, घ) ।

४ कोडिका (ख, घ) ।

५. नोवाहणा (ख), न वाहणा (ग, च),
नोपाणहा (क्व) ।

६ न कल्पते परिग्रहीतुमिति शेष. ।

७. °हारपुलक (क) ।

८. लेस (वृपा) ।

९. वर (क, ख, ग, घ, च, वृ), एतत् पद १०. गुणवयाइ (क) ।
वृत्तिरचनात् पूर्वमेव विपर्यस्त जातम् ।

वृत्तिकृत्ता 'वर' इति पद लब्धम्, तेन 'काचवरः प्रधानकाच' इति व्याख्यातम् । वस्तुतोत्र 'वइर' इति पदमासीत् । लिपि-दोषेण तद् विपर्ययो जात. । निसीहज्झयणस्स एकादशोद्देशे प्रथमे सूत्रे 'कायपायाणि वा' वइरपायाणि वा' इति पदद्वयं सुस्पष्टमस्ति । अत्रापि पात्रप्रकरणे तथैव युज्यते । आचारचूलाया पात्रैषणाध्ययने 'वइर' पदस्य उल्लेखो नास्ति ।

सव्वजग-जीव-वच्छलेहि तिलोयमहिएहि जिणवरिदेहि एस जोणी जगाणं दिट्ठा न कप्पते' जोणिसमुच्छेदोत्ति, तेण वज्जति समणसीहा ॥

असण्णिहि-पदं

६. जपि य ओदण-कुम्मास गज-तप्पण-मंथु-भुज्जिय-पलल-मूप-सक्कुलि-वेडिम-वर-सरक'-चुण्णकोसग - पिंड - सिहरिणि - वट्ट-मोयग-खीर-दहि-सप्पि-नवनीत-तेल्ल-गुड'-खड-मच्छडिय-मधु-मज्ज-मस-खज्जक वजणविधिमाटिक पणीयं उवस्सए परघरे व रण्णे न कप्पति तपि सण्णिहि काऊण' सुविहियाण ॥

अकप्पभोयण-पदं

७ जपि य उद्दिट्ठ-ठविय-रचित्तग-पज्जवजात-पक्किण्ण-पाउकरण-पामिच्च, मीसक-कीयकड-पाहुड वा, दाणट्ट-पुण्णपगड, समण-वणीमगट्टयाए व कय, पच्छाकम्म पुरेकम्म नित्तिक मक्खियं अतिरित्त मोहरं चेव सयगाहमाहड' मट्टिओवलित्त, अच्छेज्ज चेव अणीसट्ट, ज त तिहीसु' जण्णेमु ऊसवेसु य अतो व्व वहि व होज्ज समणट्टयाए ठविय, हिंसा-सावज्ज-संपउत्त न कप्पति तपि य परिघेत्तु ॥

कप्पभोयण-पदं

८ अह केरिसय पुणाइ कप्पति ?

जं त एक्कारसपिंडवायसुद्ध किण्ण-हण्ण-पयण-कयकारियाणुमोयण-नव-कोडीहि सुपरिसुद्ध, दसहि य दोसेहि विप्पमुक्क, उग्गम-उप्पायणेसणासुद्ध, ववगय-चुय-चइय'-चत्तदेह च फासुय च ववगयसजोगमणिगालं, विगयधूम, छट्ठाण-निमित्त, छक्कायपरिरक्खणट्टा हणिहणि' फामुकेण भिक्खेण वट्टियव्वं ॥

रोगायंकेवि असण्णिहि-पद

९ जपि य समणस्स सुविहियस्स उ रोगायके बहुप्पकारमि समुप्पण्णे, वाताहिक-पित्तसिंभाडरित्तकुविय-तहसण्णिवायजाते', उदयपत्ते उज्जल-वल-विउल-तिउल-कक्खड-पगाढ-दुक्खे, असुभ कडुय-फरुस-चडफलविवागे महवभये जीवियतकरणे सव्वसरीर-परितावणकरे न कप्पति' तारिसे वि तह अप्पणो परस्स वा ओसह-भेसज्ज भत्त-पाण च तपि सण्णिहिकय ॥

१ कप्पती (क, ग, घ, च) ।

२. विसारक (क) ।

३ गुल (ग, घ, च) ।

४ काउ (ग) ।

५ सयगाह ° (घ, च) ।

६ तिहिसु (क, च) ।

७. चयिय (क); चविय (घ) ।

८ हणि-हणि (क, ग, घ) ।

९ °जाते व्व (क, ग, घ, च) ।

१० कप्पती (क) ।

उवगरणधारणविहि-पदं

१० जपि य समणस्स सुविहियस्स तु पडिग्गहधारिस्स भवति भायण-भडोवहि-उवगरणं पडिग्गहो पायवधण पायकेसरिया पायठवण च पडलाइ तिण्णेव, रयत्ताण च गोच्छओ, तिण्णेव य पच्छाका, रओहरण-चोलपट्टक-मुहणंतकमादीय । एय पि य सजमस्स उववूहणट्टयाए वायायव-दस-मसग-सीय-परिरक्खण-ट्टयाए उवगरण रागदोसरहिय परिहरियव्वं सजएण णिच्च, पडिलेहण-पप्फो-डण-पमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ सतत निक्खिवियव्व च गिण्हियव्व च भायण-भडोवहि-उवगरण ॥

समणस्स सरुवनिरुवण-पदं

११. एव से सजते विमुत्ते निस्सगे निप्परिग्गहरुई निम्ममे निन्नेह-वधणे सव्वपाव-विरते वासीचदण-समाणकप्पे सम-तिण^१-मणि-मुत्त^२-लेट्ठु-कचण-समे समे य माणावमाणणाए समियरए समित्त-रागदोसे, समिए समितीसु, सम्मदिट्ठी, समे य जे सव्वपाणभूतेसु, से हु समणे, सुयधारते उज्जुए^३ सजते सुसाहू, सरण सव्वभूयाण, सव्वजगवच्छले सच्चभासके य, ससारते ठिते य, ससारसमुच्छिण्णे सतत मरणाणुपारए, पारगे^४ य सव्वेसि ससयाणं, पवयणमायाहिं अट्ठहिं अट्ठकम्मगठीविमोयके, अट्ठमयमहणे ससमयकुसले य भवति सुह-दुक्ख-निव्वि-सेसे, अग्गिभतर-वाहिरमि सया तवोवहाणमि य सुट्ठुज्जुत्ते, खते दते य हिय-निरते^५, ईरियासमिते भासासमिते एसणासमिते आयाण-भड-मत्त-निक्खेवणा-समिते उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणजल्ल-परिट्ठावणियासमिते मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्तिदिए गुत्तवभयारि चार्डि^६ लज्जू घन्ने तवस्सी खतिखमे जिंतिदिए सोधिए^७ अणियाणे अवहिल्लेस्से अममे अकिंचणे छिण्णगथे^८ निरुवलेवे,

सुविमल-वरकंसभायणं व^९ मुक्कतोए,
सखे विव निरगणे विगय-राग-दोस-मोहे,
कुम्मो व^{१०} इदिएसु गुत्ते,
जच्चकंचण^{११} व जायरुवे, ॐ
पुक्खरपत्त व निरुवलेवे,

१. तण (क) ।

२. मुत्ते (ख) ।

३. उज्जते (क्व); उद्यतो वा (वृ) ।

४. पारके (क, ख, घ, च) ।

५. विइनिरते (वृपा) ।

६. चागी (ख, घ, च) ।

७. सोधिके (क, ख, घ, च) ।

८. छिण्णसोए (वृपा) ।

९. चेव (क, ख, ग, घ, च) ।

१०. इव (क, ग) ।

११. ०कचणग (क, ग, घ) ।

चदो इव सोमभावयाए^१,
 सूरुो व्व दित्ततेए,
 अचले जह मदरे गिरिवरे,
 अक्खोभे सागरो व्व थिमिए,
 पुढवीव^२ सव्वफाससहे,
 तवसावि^३ य भासरासिच्छन्ने व्व जाततेए,
 जलियहुयासणो विव तेयसा जलते,
 गोसीसच्चदण पिव सीयले सुगधे य,
 हरयो^४ विव समियभावे,
 उग्घसिय सुनिम्मल व आयसमडलतल पागडभावेण सुद्धभावे,
 सोडीरे कुजरे^५ व्व,
 वसभे व्व जायथामे,
 'सीहे वा'^६ जहा मिगाहिवे होति दुप्पघरिसे,
 सारयसलिल व सुद्धहियए,
 भारडे चेव अप्पमत्ते,
 खग्गिविसाण व एगजाते,
 खाणु चेव उड्डुकाए,
 सुन्नागारे व्व अप्पडिकम्मे,
 सुन्नागारावणस्सतो निवायसरणप्पदीवज्झाणमिव निप्पकपे,
 जहा खुरो चेव एगघारे,
 जहा अही चेव एगदिट्ठी,
 आगास चेव निरालवे,
 विहगे^७ विव सव्वओ विप्पमुक्के,
 कय-परनिलये जहा चेव उरए,
 अपडिवद्धे अनिलो व्व,
 जीवो व्व अप्पडिहयगती,

८

१. सोमताए (वृ), सोमभावयाए (वृपा),
 ओवाइयसुत्ते (सू० २७) 'चदो इव सोमलेसा'
 तथा कप्पसुत्ते 'चदो इव सोमलेमे' आयारो
 तह आयारचूला परिशिष्ट ३, पृ० १६
 तथा जवुदीवपण्णत्तीए 'चदो इव सोमदसणे'
 इति पाठो विद्यते, आयारो तह आयारचूला
 परिशिष्ट ३, पृ० १७ ।

२. पुढवी विव (घ, च) ।

३. °इ (ख, ग, घ, च) ।

४. हरतो (ख, घ, च) ।

५. कुजरो (ग, च) ।

६. सीहे व्व (क), सीहो वा (ख, घ) सीहो
 व्व (च) ।

७. विहगे (ख, च) ।

गामे-गामे एगराय, नगरे-नगरे य पचराय दूइज्जते य, जिर्तिदिए जितपरीसहे निव्भए^१ विऊ^२ सच्चित्ताचित्तमीसकेहिं दव्वेहिं विराय गते, सचयतो विरए, मुत्ते लहुके निरवकंखे जीवियमरणासविप्पमुक्के, निस्सधि निव्वण चरित्त धीरे काएण फासयते, सतत अञ्जप्पभाणजुत्ते निहुए^३ एगे चरेज्ज घम्मं ॥

१२. इम च परिग्गह्वेरमण-परिरक्खणट्टयाए पावयण भगवया सुकहिय अत्तहिय पेच्चाभाविकं आगमेसिभद् सुद्ध नेयाउय अकुडिल अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण विओसमण ॥

अपरिग्गहस्स पंचभावणा-पदं

१३ तस्स इमा पचभावणाओ चरिमस्स वयस्स होति परिग्गह्वेरमण-रक्खणट्टयाए ॥

१४ पढम—सोइदिएण सोच्चा सद्दाइ मणुण्ण-भद्दाइ, किं ते ?—

वरमुरय-मुइग-पणव-दद्दुर-कच्छभि- वीणा-विपची - वल्लिय-वद्धीसक-सुघोस- नदि-सूसरपरिवादिणी-वस- तूणक-पव्वक-तती - तल-ताल-तुडियनिग्घोस-गीय- वाइयाइ, नडनट्टक-जल्ल-मल्ल-मुट्टिक-वेलवक-कहक-पवक-लासग-आइवखक- लख-मख-तूणइल्ल-तुववीणिय-तालायर-पकरणाणि य, वहूणि महुरसर-गीत- सुस्सराइं, कची-मेहला^४- कलाव - पतरक- पहेरक-पायजालग-घटिय-खिखिणि- रयणोरुजालय-छुट्टिय - नेउर-चलणमालिय - कणर्गनयल- जालग-भूसणसद्दाणि, लीलचकम्ममाणाणुदीरियाइ, तरुणीजणहसिय भणिय-क्खरिभित्त-मजुलाइ, गुणवयणाणि य वहूणि महुरजणभासियाइ, अण्णेसु य एवमादिएसु सद्देसु मणुण्ण-भद्दाएसु न तेसु समणेण सज्जियव्व न रज्जियव्व न गिज्जियव्व न मुज्जियव्व न विणिग्घाय आवज्जियव्व न लुभियव्व न तुसियव्व न हसियव्व न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि सोइदिएण सोच्चा सद्दाइ अमणुण्ण-पावकाइ, किं ते ?—

अक्कोस-फरुस - खिसण- अरमाणण - तज्जण - निव्वभच्छण - दित्तवयण-तासण- उक्कूजिय-रुण्ण-रडिय - कदिय - निग्घुट्टुरसिय-कलुणविलवियाइ^५, अण्णेसु य एवमादिएसु सद्देसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण रूसियव्व न हीलियव्व न निदियव्व न खिसियव्व न छिदियव्व न भिदियव्व न वहेयव्व न दुगुछावत्तिया व लब्भा उप्पाएउ ।

एव सोत्तिदियभावणाभावित्तो भवति अतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुव्विभ-दुव्विभ- रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे पणिर्हिदिए चरेज्ज घम्म ॥

१ निव्वभओ (ग) ।

४ मेहल (क, ग, घ, च) ।

२ विउसे (च), विसुद्ध (वृषा) ।

५ करुण^० (क) ।

३ निहुते (क), निहुके (ख, घ, च) ।

१५. वितियं—चक्खुइंदिएण पासिय रूवाणि मणुण्णाइ भद्दकाइ, सच्चित्ताऽचित्त-मीसकाइ—कट्टे पोत्थे य चित्तकम्मे लेप्पकम्मे सेले य दत्तकम्मे य, पच्चहि वण्णेहि अण्णेगसंठाण-सठियाइ, गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमाणि य मल्लाइ बहुविहाणि य अहिय नयण-मणसुहकराइ, वणसडे पव्वते य गामागरनगराणि य खुदिय-पुक्खरणि-वावी-दीहिय-गुजालिय-सरसरपंतिय-सागर-विलपतिय-खातिय^१-नदि-सर-तलाग-वप्पिणी-फुल्लुप्पल-पउम^२-परिमंडियाभिरामे, अण्णेग-सउणगण - मिहुणविचरिए, वरमडव - विविहभवण - तोरण-चेतिय-देवकुल-सभ-प्पवावसह-सुकयसयणासण-सीय-रह-सगड-जाण-जुग-संदण-नरनारिगणे - य सोमपडिरूवदरिसणिज्जे, अलकियविभूसिए, पुव्वकयतवप्पभावसोहग्गसंपउत्ते, नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्टिय-वेलवग-कहक-पवग - लासग-आइक्खग - लख-मख-तूणइल्ल-तुववीणिय-तालायर-पकरणाणि य वट्टाणि सुकरणाणि, अण्णेसु य एवमादिएसु रूवेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्व न रज्जियव्व न गिज्जियव्व न मुज्जियव्व न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं न सइ^३ च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि चक्खिदिएण पासिय रूवाइं अमणुण्ण-पावकाइ, किं ते ?—

गंडि-कोढिक-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल-पइल्ल-कुज्ज - पगुल-वामण-अंधिल्लग - एग-चक्खुविणिहय-सप्पिसल्लग-वाहिरोगपीलियं, विगयाणि य मयककलेवराणि^४, सकिमिणकुहिय च दव्वरासिं, अण्णेसु य एवमादिएसु अमणुण्ण-पावतेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं^५ •न हीलियव्वं न निदियव्वं न खिसियव्वं न छिदियव्वं न भिदियव्वं न वहेयव्वं^६ न दुगुच्छावत्तिया व लव्भा उप्पातेउ ।

एव चक्खिदियभावणाभावितो भवति अतरप्पा^६, •मणुण्णाऽमणुण्ण-सुव्वि-दुव्वि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते सवुडे पणिहिंतिदिए^७ चरेज्ज घम्मं ॥

१६. ततिय—घाणिदिएण अग्घाइय गघातिं मणुण्ण-भद्दगाइं, किं ते ?—

जलय-थलय-सरसपुप्फफलपाणभोयण-कोट्टु^८-तगर-पत्त-चोय-दमणक-मरुय - एला-रस-पिक्कमसिं^९-गोसीस-सरसचदण-कप्पूर - लवग-अगरु-कुकुम - कक्कोल -उसीर-सेयचदण-सुगघसारगजुत्तिवरधूववासे उउय^९-पिंडिम-णिहारिम-गघिएसु, अण्णेसु

१. खादिय (क, ग) ।

२. पउमसड (ख, घ) ।

३. रज्जियव्व जाव न सइ (क, ख, ग, घ) ।

४. मतक^० (ख, घ, च) ।

५. स० पा०—रूसियव्व जाव न ।

६. स० पा०—अतरप्पा जाव चरेज्ज ।

७. कुट्टु (क, ग) ।

८. पक्कमंसि (ख) विक्कमंसि (च) ।

९. उउय (क, घ) ।

य एवमादिएसु गधेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं •न रज्जियव्वं न गिज्जियव्वं न मुज्जियव्वं न विणिग्घाय आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं ° न सति च मइ च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि घाणिदिएण अग्घाडय गघाणि अमणुण्ण-पावकाइ, किं ते ? —

अहिमड-अस्समड-हत्थिमडगोमड-विग-मुणग-सियाल-मणुय-मज्जार-सीह-दीविय-मयकुहियविणट्टुकिविण-वहुदुरभिगघेसु, अण्णेसु य एवमादिएसु गधेसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण हसियव्वं न हीलियव्वं •न निदियव्वं न खिसियव्वं न छिदियव्वं न भिदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुछावत्तिया व लव्भा उप्पाएउ ।

एव घाणिदियभावणाभावितो भवति अतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुविभ-दुविभ-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते सवुडे ° पणिहिएदिए^१ चरेज्ज घम्म ॥

१७ चउत्थं—जिठ्ठिदिएण साडय रसाणि उ मणुण्ण-भद्दकाइ, किं ते ? —

उग्गाहिम-विविहपाण-भोयण-गुलकय-खडकय-तेल्लघयकय-भक्खेसु बहुविहेसु लवणरससजुत्तेसु महु-मंस-वहुप्पगारमज्जिय-निट्टाणग-दालियव-सेहव-दुद्ध-दहि-सरय-मज्ज-वरवारुणी-सीहु-काविसायणक-साकट्टारस-वहुप्पगारेसु भोयणेसु य मणुण्णवण्ण-गध-रस-फास-वहुदव्वसभितेसु, अण्णेसु य एवमादिएसु रसेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं •न रज्जियव्वं न गिज्जियव्वं न मुज्जियव्वं न विणिग्घाय आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं ° न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि जिठ्ठिदिएण सायिय रसाति अमणुण्ण-पावगाइ, किं ते ? —

अरस-विरस-सीय-लुक्ख-णिज्जप्प^४-पाण-भोयणाइ दोसीण-वावण्ण-कुहिय-पूइय-अमणुण्ण-विणट्टु-पमूय-वहुदुविभगघियाड तित्त-कडुय-कसाय-अविल-रस-लिडनीर-साइ, अण्णेसु य एवमाइएसु रसेसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण हसियव्वं •न हीलियव्वं न निदियव्वं न खिसियव्वं न छिदियव्वं न भिदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुछावत्तिया व लव्भा उप्पाएउ ।

एव जिठ्ठिदियभावणाभावितो भवति अतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुविभ-दुविभ-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते सवुडे पणिहित्तिए^० चरेज्ज घम्म ॥

१८. पचमग—फासिदिएण फासिय फासाइ मणुण्ण-भद्दकाइ, किं ते ? —

१. स० पा०—सज्जियव्वं जाव न सति ।

२. म० पा०—हीलियव्वं जाव पणिहिएदिए ।

३. पिहियपचेंदिए (ख) ।

४. स० पा०—सज्जियव्वं जाव न सइ ।

५. णिज्जंप (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—हसियव्वं जाव चरेज्ज ।

दगमडव-हार-सेयचदण- सीयलविमलजल - विविहकुसुमसत्थर-ओसीर - मुत्तिय-
मुणाल-दोसिणा पेहुणउक्खेवग-तालियंट-वीयणग-जणियसुहसीयले य पवणे
गिम्हकाले, सुहफासाणि य बहूणि सयणाणि आसणाणि य, पाउरणगुणे य
सिसिरकाले अंगार-पतावणा य आयव-निद्ध-मउय-सीय-उसिण-लहुया य जे
उदुसुहफासा अंगसुह-निव्वुइकरा ते', अण्णेषु य एवमादिएसु फासेसु मणुण्ण-
भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्व न रज्जियव्व न गिज्जियव्वं न मुज्जियव्वं
न विणिरघाय आवज्जियव्व न लुभियव्वं न अज्जियव्वं न तुसियव्वं न
हसियव्वं न सतिं च मतिं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि फासिदिएण फासिय फासाति अमणुण्ण-पावकाड, किं ते ? —

अणेगवध-वह-तालणकण-अतिभारारोहणए, अगभजण-सूर्दनखप्पवेस-गाय-
पच्छणण^१-लक्खारस-खारतेल्ल-कलकलतउ-सीसक^२-काललोहसिचण - हडिबंधण-
रज्जु-निगल-सकल-हत्थदुय^३ - कुभिपाक-दहण - सीहपुच्छण - उव्वंधण - सुलभेय-
गयचलणमलण - करचरणकण्णनासोद्वसीसच्छेयण^४-जिठभच्छण - वसणनयणहिययत-
दतभंजण^५-जोत्तलयकसप्पहार - पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय - पीलण - कविकच्छु-
अगणि-विच्छुयडक्क-वायातवदंसमसकनिवाते, 'दुट्टुणिसेज्जा दुनिसीहिया'^६
कक्कड^७-गुरु-सीय-उसिण-लुक्खेसु बहुविहेसु, अण्णेषु य एवमाइएसु फासेसु
अमणुण्ण-पावकेसु न तेसु समणेण रुसियव्व न हीलियव्वं न निदियव्वं न
गरहियव्व न खिसियव्वं न छिदियव्व न भिदियव्व न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तियं
च लब्भा उप्पाएउं ।

एव फासिदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, मणुण्णामणुण्ण-सुब्धि-दुब्धि-
रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते सवुडे पणिहिंतिदिए चरेज्ज
धम्मं ॥

निगमण-पदं

१६. एवमिणं सवरस्स दार सम्मं सवरियं होइ सुप्पणिहिय इमेहिं पचहिवि कारणेहिं
मण-वयण-काय-परिरक्खिएहिं ॥
२०. निच्चं आमरणतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणावसो अकलुसो

१. तान् स्पृष्ट्वा इति प्रकृतम् (वृ) ।

५. हत्थदुय (ख, ग) ।

२. पूर्ववर्तिषु १४-१७ सूत्रेषु एतत् पद नास्ति ।
तत्र लिपिकाले त्रुटितमथवात्र अतिरिक्त-
मस्ति ।

६. कण्णनासोद्व ° (क, ग, घ) ।

७. ° हिययदत्त ° (क, ग); ° हियएदत्त ° (घ) ।

३. ° पच्छण (क, घ) ।

८. दुट्टुणिसेज्जदुनिसीहिय (क, ख, ग, घ, च) ।

४. सिसक (क, ख, ग, घ, च) ।

९. कक्कड (क) ।

अच्छिद्दो अपरिस्सावी असकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णातो ॥

२१. एव पचम सवरदार फासिय पालिय सोहिय तीरिय किट्टियं आराहिय 'आणाए अणुपालिय'^१ भवति ॥

२२. एव नायमुणिणा भगवया पण्णविय परूविय पसिद्ध सिद्ध सिद्धवरसासणमिण आघविय सुदेसिय पसत्थ—पचम सवरदार समत्त ।

—त्ति वेमि ॥

२३ 'एयाइ वयाति'^२ पचवि सुव्वय-महव्वयाइ हेउसय-विवित्त-पुक्कलाइ कहिया अरहंतसासणे पंच समासेण सवरा, वित्थरेण उ पणवीसतिं । समिय-सहिय-संवुडे सया जयण-घडण-सुविसुद्ध-दसणे एए अणुचरिय सजते चरमसरीरघरे भविस्सतीति'^३ ।

परिसेसो

पण्हावागरणाणं एगो सुयक्खधो, दस अज्भयणगा एककसरगा, दससु चेव दिवसेसु उट्टिसिज्जति, एगतरेसु आयबिलेसु निरुद्धेसु आउत्तभत्तपाणएण । अग जहा आयारस्स ॥

पण्हावागरण दसम अंग सुत्तओ समत्त ।

ग्रन्थ परिमाण

कुल अक्षर—४१३३८

अनुष्टुप् श्लोक—१२६१ अ० १६

१ अणुपालिय आणाए आराहियं (क, ख, ग, घ, च) ।

२ वताइ (ख) ।

३ वाचनान्तरे पुननिगमनमन्यथाऽभिधीयते यदुत एतानि पचापि सुव्रत । महाव्रतानि लोकधृतिद्व्रतानि श्रुतसागरदशितानि तप-संयमव्रतानि शीलगुणधरव्रतानि सत्यार्जव-

व्रतानि नरकतिर्यङ्मनुजदेवगतिविवर्जकानि सर्वजिनशासनकानि कर्मरजोविदारकाणि भवशतविमोचकानि दुःखशतविनाशकानि सुखशतप्रवर्त्तकानि कापुरुषदुरुत्तराणि सत्पुरुषतीरितानि निर्वाणगमनस्वर्गप्रयाण-कानि पचापि सवरद्वाराणि समाप्तानीति ब्रवीमि (वृ) ।

विवागसुयं

पढमो सुयक्खंधो

पढमं अज्जभयणं

मियापुत्ते

उक्खेव-पदं

१. तेण कालेणं तेण समएण चंपा नाम^१ नयरी होत्था—वण्णओ^२ । पुण्णभद्दे चेइए^३ ॥
२. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्जसुहम्ममे नाम अणगारे जाइसपण्णे वण्णओ^४, चउद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पचहिं अणगार-सएहिं सद्धिं सपरिवुडे पुव्वानुपुव्वि^५ •चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहंसुहेण विहरमाणे जेणेव चपा नयरी^६ जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव^७ •ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे^८ विहरइ । परिसा निग्गया । धम्म सोच्चा निसम्म जामेव दिस पाउव्वभूया तामेव दिस पडिगया ॥
३. तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अतेवासी अज्जजबू नाम अणगारे सत्तुस्सेहे जहा गोयमसामी तहा जाव^९ भाणकोट्टोवगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१. नाम (क, ख) ।

२. ओ० सू० १ ।

३. चेतिते (क), चेईए (ग), चेइए तथा वण्णओ (घ) ।

४. ना० १।१।४ ।

५. ०पुव्वी (क, ख), स० पा०—पुव्वानुपुव्वि जाव जेणेव ।

६. स० पा०—अहापडिरूव जाव विहरइ ।

७. ओ० सू० ८२ ।

- ४ तए ण अज्जजवू नामे' अणगारे जायसड्ढे जाव' जेणेव अज्जमुहम्मे अणगारे तेणेव उवागए तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदड नमंसड, वदित्ता नमसित्ता जाव' पज्जुवासमाणे' एवं वयासी—जड णं भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण दसमस्स अगस्स पण्हावागरणाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, एक्कारसमस्स ण भते ! अंगस्स विवागसुयस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- ५ तए ण अज्जसुहम्मे अणगारे जवू-अणगार एव वयासी—एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेणं एक्कारसमस्स अगस्स विवाग-सुयस्स दो सुयक्खधा पण्णत्ता, तं जहा—दुहविवागा य मुहविवागा य ॥
६. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेण एक्कारसमस्स अगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खधा पण्णत्ता, त जहा—दुहविवागा य सुहविवागा य । पढमस्स ण भते ! सुयक्खधस्स दुहविवागाण समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- ७ तए णं अज्जसुहम्मे' अणगारे जवू-अणगार एव वयासी—एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण दुहविवागाणं दस अज्जयणा पण्णत्ता, त जहा—

संगहणी-गाहा

१ 'मियउत्ते' य २ उज्जिभयए, ३ अभग्ग" ४.सगडे" ५. वहस्सई ६. नदी ।

७. उवर द सोरियदत्ते य, ८. देवदत्ता य १० अजू य" ॥१॥

८. जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव" सपत्तेण दुहविवागाण दस

१. नाम (ग)

९. ना० १११७ ।

२. ओ० सू० ८३ ।

१०. मियापुत्ते (ख, घ) ।

३. ओ० सू० ८३ ।

११. अमग्गे (ख) ।

४. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ) । एताइस्से प्रसंगे प्रायेण 'पज्जुवासमाणे' इति पाठो लभ्यते, लिपिदोषात् 'पज्जुवासइ' इति जात-सभाव्यते ।

१२. सगते (ग) ।

१३. ठाण (१०।१११) सूत्रे विपाकाध्ययननामसु विपर्ययो दृश्यते, तद्यथा—

५, ६. ना० १११७ ।

मियापुत्ते य गोत्तासे, अडे सगडेति यावरे ।

७. ना० १११७

माहणे णदिसेणे, सोरिए य उदुवरे ॥

८. ०सुघम्म (क) ।

सहसुदाहे आमलए, कुमारे लेच्छई इति ।

१४. ना० १११७ ।

अज्मयणा पण्णत्ता, त जहा—मियउत्ते जाव' अजू य । पढमस्स ण भते !
अज्मयणस्स दुहविवागाण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं के अट्टे
पण्णत्ते ?

मियापुत्त-वण्णग-पदं

- ६ तए ण से मुहम्मसे अणगारे जंबू-अणगारं एव वयासी—एव खलु जवू । तेण
कालेण तेणं समएण मियग्गामे नाम नयरे होत्था—वण्णओ^३ ॥
१०. तस्स णं मियग्गामस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए चदणपायवे
नाम उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे—वण्णओ^३ ॥
- ११ तत्थ ण सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था—चिराइए जहा पुण्णभट्ठे^६ ॥
१२. तत्थ ण मियग्गामे नयरे विजए नामं खत्तिए राया परिवसइ— वण्णओ^३ ॥
- १३ तस्स ण विजयस्स खत्तियस्स मिया नामं देवी होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-
पच्चिदियसरीरा—वण्णओ^३ ॥
१४. तस्स ण विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते^७ नाम दारए
होत्था—जातिअधे जातिमूए जातिवहिरे जातिपगुले हुडे य वायव्वे^८ । नत्थ ण
तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा । केवल से
तेसि अंगोवगाण आगिती आगितिमेत्ते ॥
- १५ तए ण सा मियादेवी त मियापुत्त दारग रहस्सियसि भूमिघरसि रहस्सिएण
भत्तपाणेण पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

गोयमस्स जाइअंधपुरिसविसए पुच्छा-पदं

- १६ तत्थ ण मियग्गामे नयरे एगे जाइअधे पुरिसे परिवसइ । से णं एगेण सच्चक्खुएणं
पुरिसेण पुरओ दंडएण^९ 'पकड्डिज्जमाणे-पकड्डिज्जमाणे'^{१०} फूट्ट-हडाहड-सीसे
मच्छिया-चडगर-पहकरेण अण्णिज्जमाणमगे मियग्गामे नयरे गेहे-गेहे कोलुण-
वडियाए वित्ति कप्पेमाणे विहरइ ॥
१७. तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे^{११} •पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे

१. वि० १।१।७ ।

२ ओ० सू० १ ।

३ ना० १।३।३ ।

४ ओ० सू० २ ।

५ ओ० सू० १४ ।

६ ओ० सू० १५ ।

७. मियपुत्ते (क) ।

८. वायवे (क, घ) ।

९ डंडएण (क, ग) ।

१०. पगड्डिज्जमाणे २ (ख); , पगड्डिज्जमाणे २
(घ) ।

११ स० पा०—महावीरे जाव समोसरिए ।

गामाणुगाम द्रुइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे मियग्गामे नयरे चदणपायवे उज्जाणे ° समोसरिए । परिसा निग्गया ॥

१८. तए ण से विजए खत्तिए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जहा कूणिए तहा निग्गए जाव^१ पज्जुवासइ ॥
- १९ तए ण से जाइअघे पुरिसे त महयाजणसद्द च^२ ° जणवूह ए जणवोल च जणकलकल च ° सुणेत्ता त पुरिसं एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इदमहे इ वा^३ ° खदमहे इ वा^४ उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा, जअो ण वहवे उग्गा भोगा^५ एगदिसि एगाभिमुहा ° निग्गच्छति ?
- २० तए ण से पुरिसे त जाइअघ पुरिसं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इदमहे इ वा^६ ° खदमहे इ वा^७ उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा, जअो ण वहवे उग्गा भोगा^८ एगदिसि एगाभिमुहा ° निग्गच्छति । एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे ° भगव महावीरे आइगरे तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसठे इह चेव मियग्गामे नयरे चदणपायवे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे ° विहरइ । तए ण एए जाव^९° निग्गच्छति ॥
- २१ तए ण से अघे पुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी—गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! अम्हे वि समण भगव^{१०} ° महावीर वदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मगल देवयं चेइय ° पज्जुवासामो ॥
- २२ तए ण से जाइअघे पुरिसे तेण पुरअो दंडएणं पुरिसेण पकड्डिज्जमाणे-पकड्डिज्जमाणे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव 'उवागच्छइ, उवागच्छित्ता'^{११} तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, वदइ नमसइ जाव^{१२} पज्जुवासइ ॥
२३. तए ण समणे भगव महावीरे विजयस्स रण्णो तीसे य^{१३} ° महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्त ° धम्ममाइक्खइ^{१४} । परिसा^{१५} पडिगया विजए वि गए ॥

१ ओ० सू० ५४-६६ ।

२. सं० पा०—जणसद्द च जाव सुणेत्ता ।

३. सं० पा०—इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ।

४. पू०—ना० १।१।६६ ।

५. पू०—ना० १।१।६६ ।

६. सं० पा०—इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ।

७. सं० पा०—ना० १।१।६६ ।

८. सं० पा०—समणे जाव विहरइ ।

१०. वि० १।१।१६ ।

११. सं० पा०—भगव जाव पज्जुवासामो ।

१२. उवागए २ (ख, ग) ।

१३. ना० १।१।६६ ।

१४. सं० पा०—तीसे य ° ।

१५. धम्म परिकहेइ (ख) ।

१६. परिसा जाव (क, घ) ।

- २४ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इदभूई नाम अणगारे जाव^१ सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
- २५ तए ण से भगव गोयमे त जाइअव पुरिस पासइ, पासित्ता जायसड्ढे^२ •जाय-संसए जायकोउहल्ले, उप्पणसड्ढे उप्पणससए उप्पणकोउहल्ले, संजायसड्ढे संजायससए सजायकोऊहल्ले, समुप्पणसड्ढे समुप्पणससए समुप्पणकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सुसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडे पज्जुवासमाणे ° एव वयासी—अत्थि ण भते । केइ पुरिसे जाइअवे जायअधारूवे^३ ?
- हता अत्थि ॥

भगवया मियापुत्तरूव-निरूवण-पदं

- २६ कह ण भते । से पुरिसे जाइअवे जायअधारूवे ?
- एव खलु गोयमा । इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए मियापुत्ते नाम दारए जाइअवे जायअधारूवे । नत्थि ण तस्स दारगस्स^४ •हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा केवल से तेसि अगोवगाण आगिती ° आगितिमेत्ते ।
- तए ण सा मियादेवी^५ •त मियापुत्त दारग रहस्सियसि भूमिघरसि रहस्सिएण भत्तपाणेण ° पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

गोयमस्स मियापुत्तदंसण-पद

- २७ तए ण से भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते । अह तुव्भेहिं अब्भणुणाए समाणे मियापुत्त दारग पासित्तए ।
- अहासुह देवाणुप्पिया ।
- २८ तए ण से भगवं गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुणाए^६ समाण हट्ठुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरिय^७ •मच्चलमसभते जुगतएपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय ° सोहेमाणे-

१. ओ० सू० ८२ ।

२. सं० पा०—जायसड्ढे जाव एव ।

३. जाइअधारूवे (घ) ।

४. सं० पा०—दारगस्स जाव आगितिमेत्ते ।

५. सं० पा०—मियादेवी जाव पडिजागरमाणी ।

६. अब्भणुणाते (क) ।

७. सं० पा०—अतुरिय जाव सोहेमाणे ।

सोहेमाणे जेणेव मियग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियग्गाम नयर मज्झंमज्झेण जेणेव मियादेवीए गिहे तेणेव उवागच्छइ ॥

२६. तए ण सा मियादेवी भगव गोयमं एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्टुट्टु^१ चित्त-
माणदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण^० हियया आसणाओ
अव्भुट्टेइ, अव्भुट्टेत्ता सत्तट्टुपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-
पयाहिण करेइ, वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सदिसतु णं
देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयण ?
३०. तए ण से भगव गोयमे मियं देवि एव वयासी—अहं ण देवाणुप्पिए ! तव पुत्तं
पासिउ हव्वमागए ॥
३१. तए ण सा मियादेवी मियापुत्तस्स दारगस्स अणुमग्गजायए चत्तारि पुत्ते
सव्वालकारविभूसिए करेइ, करेत्ता भगवओ गोयमस्स पाएसु पाडेइ, पाडेत्ता
एव वयासी—एए ण भते ! मम पुत्ते पासह ॥
३२. तए ण से भगव गोयमे मिय देवि एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिए ! अह एए
तव पुत्ते पासिउ हव्वमागए । तत्थ ण जे से तव जेट्ठे पुत्ते मियापुत्ते दारए जाइ-
अथे जायअंधारूवे, ज ण तुमं रहस्सियसि भूमिघरसि रहस्सिएणं भत्तपाणेण
पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरसि, तं णं अहं पासिउं हव्वमागए ॥
३३. तए णं सा मियादेवी भगव गोयम एव वयासी—से के ण गोयमा ! से तहारूवे
नाणी वा तवस्सी वा, जेण^० एसमट्ठे मम ताव रहस्सीकए^१ तुव्भं हव्वमक्खाए,
जओ ण तुव्भे जाणह ?
३४. तए ण भगव गोयमे मिय देवि एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! मम धम्माय-
रिए समणे भगव^२ •महावीरे तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेण एसमट्ठे तव
ताव रहस्सीकए मम हव्वमक्खाते^०, जओ णं अहं जाणामि । जावं च णं
मियादेवी भगवया गोयमेण सद्धि एयमट्ठं सलवइ, ताव च णं मियापुत्तस्स
दारगस्स भत्तवेला जाया यावि होत्था ॥
३५. तए ण सा मियादेवी भगव गोयम एव वयासी—तुव्भे ण भते ! 'इह चेव'^३
चिट्ठह, जा ण अह तुव्भ मियापुत्त दारग उवदसेमि त्ति कट्ठु जेणेव भत्तघरए^४
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वत्थपरियट्ठय^० करेइ, करेत्ता कट्ठसगडियं^५

१. म० पा०—हट्टुट्टुहियया ।

२. जेण तव (क, ख, ग, घ), प्रतिप्र एतत् पद
त्रिषिदोपात् समुल्लिखित प्रतिभाति । अत्रे
तुव्भ इति पाठदर्शनात् ।

३. रहम्मरुटे (क) ।

४. म० पा०—मगवं जाव जओ ण [र, ग];

भगव जओ ण (क); महावीरे जाव ततेण
(घ) ।

५. इहच्चेव (क) ।

६. भत्तपाणघरए (घ) ।

७. ^०परियट्ठ (वृ) ।

८. कट्ठसगडि (ग) ।

गिण्हइ, गिण्हित्ता विउलस्स असण-पाण-खाइम-साइमस्स भरेइ, भरेत्ता त कट्टसगडिय अणुकड्डुमाणी-अणुकड्डुमाणी जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगव गोयम एव वयासी—एह ण 'भते । तुब्भे मए सद्धि'^१ अणुगच्छह, जा ण अह तुब्भ मियापुत्त दारग उवदसेमि ॥

३६ तए ण से भगव गोयमे मिय देवि पिट्टओ समणुगच्छइ ॥

३७ तए ण सा मियादेवां त कट्टसगडिय अणुकड्डुमाणी-अणुकड्डुमाणी जेणेव भूमिघरए^२ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चउप्पुडंण^३ वत्थेण मुह वधमाणी भगव गोयम एव वयासी—तुब्भे वि ण भते । मुहपोत्तियाए मुह वधह ॥

३८ तए ण से भगव गोयमे मियादेवीए एव वुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुह वधेइ ॥

३९ तए ण सा मियादेवी परमुही भूमिघरस्स द्वुवार विहाडेइ । तए ण गधे निगच्छइ, से जहानामए—'अहिमडे इ वा'^४ गोमडे इ वा सुणहमडे इ वा मज्जारमडे इ वा मणुस्समडे इ वा महिसमडे इ वा मूसगमडे इ वा आसमडे इ वा हत्थिमडे इ वा सीहमडे इ वा वग्घमडे इ वा विगमडे इ वा दीविगमडे इ वा मय-कुहिय-विणट्ट-दुरभिवावण्ण-दुब्भिगधे किमिजालाउलससत्ते असुइ-विलीण-विगय-त्रीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ?

नो इणट्टे समट्टे । एत्तो अणिट्टतराए चेव अकततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव^० गधे पण्णत्ते ॥

४० तए ण से मियापुत्ते दारए तस्स विउलस्स असण-पाण-खाइम-साइमस्स गधेण अभिभूए समाणे तसि विउलसि असण-पाण-खाइम-साइमसि मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्भोववण्णे त विउल असण-पाण-खाइम-साइम आसएण आहारेइ, आहारेत्ता खिप्पामेव विद्धसेइ, विद्धसेत्ता तओ पच्छा पूयत्ताए य सोणियत्ताए य पारिणामेइ, त पि य ण पूय च सोणिय च आहारेइ ॥

गोयमेण मियापुत्तस्स पुब्बभवपुच्छा-पदं

४१ तए ण भगवओ गोयमस्स त मियापुत्त दारग पासित्ता अयमेयारूवे अज्भत्थिए चित्तिए कप्पिए^५ पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे दारए पुरा पोरणाण दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण 'पावग फलवित्तिविसेस'^६ पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया

१ तुब्भे भते मम (ख, ग, घ) ।

२ भूमिघरे (ख, घ) ।

३ चउप्पालेण (ग) ।

४ अहिमडे इ वा सप्पकडेवरे इ वा (वृ), स०

पा०—अहिमडे इ वा जाव ततो वि अणिट्ट-

तराए चेव जाव गधे ।

५. × (क, ख, ग) ।

६. पावफलविवाग (ग) ।

वा । पचक्ख खलु अय पुरिसे निरयपडिख्विय वेयण वेदिति' त्ति कट्टु मिय देवि आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मियाए देवीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्ख-मित्ता मियग्गाम नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—एवं खलु अह तुब्भेहि अठ्ठभणुण्णाए समाणे मियग्गामं नयरं मज्झं-मज्झेण अणुप्पविसामि, जेणेव मियाए देवीए गिहे तेणेव उवागए । तए ण सा मियादेवी मम एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठा, त चेव सव्व जाव' पूयं च सोणिय च आहारेइ । तए ण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे दारए पुरा' •पोराणाण दुच्चि-ण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणे ° विहरइ ॥

४२ से ण भते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसि ? किं नामए वा किं गोत्ते' वा ? 'कयरसि गामसि वा नयरसि वा' ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा' •पोराणाण दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे ° विहरइ ?

मियापुत्तस्स एक्काइभव-वण्णग-पदं

- ४३ गोयमाइ ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जवुद्धीवे दीवे भारहे वासे सयदुवारे नाम नयरे होत्था - रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ" ॥
४४. तत्थ ण सयदुवारे नयरे धणवई नाम राया होत्था—वण्णओ" ॥
४५. तस्स ण सयदुवारस्स नयरस्स अदूरसामते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए विजय-वद्धमाणे नाम खेडे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
- ४६ तस्स ण विजयवद्धमाणस्स' खेडस्स पच गामसयाइ आभोए यावि होत्था ॥
- ४७ तत्थ ण विजयवद्धमाणे खेडे एक्काई" नाम रट्टुकूडे होत्था—अहम्मिए" •अधम्मा-

१. वेत्ति (ख), वेयह (घ) ।

२. वि० १।१।२६-४० ।

३. स० पा०—पुरा जाव विहरइ ।

४ गोए (घ) ।

५. कयर गाम (क); कयर गाम कि कए (ख) ।

६. स० पा०—पुरा जाव विहरइ ।

७ ओ० सू० १ ।

८. ओ० सू० १४ ।

९. °वद्धमाणस्स (क, ख, ग) सर्वत्र ।

१०. एकायि (क, ग) ।

११. स० पा०—अहम्मिए जाव दुप्पडियाणदे ।

णुए अघम्मिट्ठे अघम्मक्खाई अघम्मपलोई अघम्मपलज्जणे अघम्मसमुदाचारे अघम्मेण चैव वित्ति कप्पेमाणे दुस्सीले दुव्वए^० दुप्पडियाणदे ॥

४८. से णं एक्काई रट्टुकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पचण्ह गामसयाण 'आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पाले-माणे' विहरइ ॥

४९. तए ण से एक्काई रट्टुकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पच गामसयाइ वहुँहि करेहि य भरेहि य विद्धीहि^१ य उक्कोडाहि य पराभवेहि^२ य देज्जेहि^३ य भेज्जेहि य कुत्तेहि^४ य लच्छपोसेहि य आलीवणेहि य पथकोट्टेहि य ओवीलेमाणे-ओवीलेमाणे विहम्मेमाणे-विहम्मेमाणे तज्जेमाणे-तज्जेमाणे तालेमाणे-तालेमाणे निद्धणे करेमाणे-करेमाणे विहरइ ॥

५०. तए णं से एक्काई रट्टुकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स वहुण राईसर^५-^०तलवर-माडविय-कोडुविय-डवभ-सेट्ठि-सेणावइ^० सत्थवाहाण, अण्णेसि च वहुण गामेल्लग-पुरिसाण वहुसु 'कज्जेसु य कारणेसु य मतेसु य गुज्ज्जएसु य निच्छएसु य'^० ववहारेसु य सुणमाणे भणइ 'न सुणेमि,' असुणमाणे भणइ 'सुणेमि,' ^०'पस्समाणे भणइ 'न पासेमि,' अपस्समाणे भणइ 'पासेमि,' भासमाणे भणइ 'न भासेमि ।' अभासमाणे भणइ 'भासेमि,' गिण्हमाणे भणइ 'न गिण्हेमि,' अगिण्हमाणे भणइ 'गिण्हेमि,' जाणमाणे भणइ 'न जाणेमि,' अजाणमाणे भणइ 'जाणेमि'^० ॥

५१. तए ण से एक्काई रट्टुकूडे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहु 'पाव कम्म'^६ कलिकलुसं समज्जिणमाणे विहरइ ॥

५२. तए ण तस्स एक्काइस्स^० रट्टुकूडस्स अण्णया कयाड सरीरगसि जमगसमगमेव सोलस रोगायका^७ पाउवभूया, [त जहा—

सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले^८ भगदले^९ ।

अरिसा^{१०} अजीरणे दिट्ठी-मुद्धसूले^{११} अकारए ।

अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कडू^{१२} उदरे^{१३} कोढे ॥१॥]^{१४}

१. आहेवच्च जाव पालेमाणे (क, ख, ग) ।

२. वित्तिहि (वृपा) ।

३. परामएहि (क, ग) ।

४. देज्जए (क) ।

५. कुत्तेहि (क, घ) ।

६. स० पा०—राईसर जाव सत्थवाहाण ।

७. कज्जेसु कारणेसु मतेसु गुज्ज्जएसु निच्छएसु (क), ^०गुज्ज्जएसु^० (घ) ।

८. सं० पा०—एव पस्समाणे भासमाणे गिण्ह-माणे जाणमाणे ।

९. पावकम्म (ग) ।

१०. एगाइयस्स (क, ख, ग, घ)

११. रोयायका (क), रोयातका (ख) ।

१२. जोणिसूले (ग), 'जोणिसूले' त्ति अपपाठ. 'कुच्छिसूले' इत्यस्यान्यत्र दर्शनात् (वृ) ।

१३. भगदरे (ख, ग, घ) ।

१४. अरसा (ख) ।

१५. मुहसूले (क, ग) ।

१६. कडू (ख) ।

१७. दओदरे (क) ।

१८. असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते ।

५३ तए ण से एक्काई रट्टकूडे सोलसहि रोगायकेहि अभिभूए समाणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । विजयवद्धमाणे खेडे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयह—इह खलु देवाणुप्पिया । एक्काइस्स^१ रट्टकूडस्स सरीरगसि सोलस रोगायका पाउब्भूया, [त जहा—सासे जाव कोढे]^२, त जो ण इच्छइ देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा 'जाणुओ वा जाणुयपुत्तो'^३ वा तेगिच्छओ वा तेगिच्छयपुत्तो वा एक्काइस्स रट्टकूडस्स तेसि सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए^४, तस्स णं एक्काई रट्टकूडे विउल अत्थसपयाण दलयइ । दोच्च पि तच्च पि उग्घोसेह, उग्घोसेत्ता एयमा-णत्तिय पच्चप्पिणह ॥

५४. तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव^५ तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ॥

५५ तए ण विजयवद्धमाणे खेडे इम एयारूव उग्घोसण सोच्चा निसम्म वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छया य तेगिच्छयपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया 'सएहि-सएहि'^६ गिहेहितो^७ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता विजयवद्धमाणस्स खेडस्स मज्झमज्झेण जेणेव एक्काई-रट्टकूडस्स गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता एक्काई-रट्टकूडस्स सरीरग परामुसति, परामुसित्ता तेसि रोगायकाण निदाण पुच्छति, पुच्छिता एक्काई-रट्टकूडस्स बहूहि अक्ख-गेहि य उव्वट्टणाहि^८ य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि^९ य अवद्दणाहि^{१०} य अवण्हाणेहि य अणुवासणाहि य वत्थिकम्मेहि य निरुहेहि^{११} य सिरावेहेहि य तच्छणेहि य पच्छणेहि य सिरवत्थीहि^{१२} य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य बल्लीहि य^{१३} मूलेहि य कदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य वीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छति तेसि सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायक उवसामित्तए, नो चेव ण संचाएति उवसामित्तए ॥

१. एक्काइयस्स (घ) ।

६. रोगाण (ख, ग, घ) ।

२. असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते ।

१०. उवट्टणेहि (ख) ।

३. जाणओ वा जाणुपुत्तो (ख, ग, घ) ।

११. सेयणाहि (क), सेवणेहि (ख) ।

४. उवसमित्तए (क) ।

१२. अवद्दणाहि (क, ख, ग); अवण्हाणेहि (घ) ।

५. वि० १।१।५३ ।

१३. निरुभेहि (ग), निरुहेहि (घ) ।

६. सएहितो (क्व) ।

१४. सिरोवत्थीहि (घ) ।

७. गेहेहितो (क) ।

१५. × (ख, ग, घ) ।

८. एगाती (क) ।

- ५६ तए ण ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छया य तेगिच्छयपुत्ता य जाहे नो सचाएति तेसि सोलसण्ह रोगायकाण एगमवि रोगायकं उवसामित्ताए, ताहे सता तता परितता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥
- ५७ तए ण एक्काई रट्टुकूडे वेज्ज-पडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निव्विण्णोसह-भेसज्जे^१ सोलसरोगायकेहिं अभिभूए समाणे रज्जे य रट्टे य^२ •कोसे य कोट्टागारे य वले य वाहणे य, पुरे य^३ अतउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्भोववण्णे रज्ज च रट्ट च^४ •कोस च कोट्टागार च वल च वाहण च पुर च अतेउर च^५ आसा-एमाणे^६ पत्येमाणे पीहेमाणे^७ अभिलसमाणे अट्टदुहट्टवसट्टे अड्डाडज्जाइ वाससयाइ परमाउ पालडत्ता कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्को-सेण सागरोवमट्टिइएमु नेरइएसु^८ नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

मियापुत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

५८. से ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स^९ खत्तियस्स मियाए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥
- ५९ तए ण तीसे मियाए देवीए सरीरे वेयणा पाउब्भूया उज्जला^{१०} •विउला कक्कसा पगाढा चडा दुक्खा तिक्का^{११} दुरहियासा^{१२} जप्पभिइ च ण मियापुत्ते दारए मियाए देवीए कुच्छिसि गवभत्ताए^{१३} उववण्णे, तप्पभिइ च ण मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स अणिट्टा अकता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था ॥
६०. तए ण तीसे मियाए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुवजागरियाए^{१४} जागरमाणीए इमे एयारूवे अज्भत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पण्णे^{१५}—एव खलु अह विजयस्स खत्तियस्स पुव्वि इट्टा कता पिया मणुण्णा मणामा धेज्जा वेसासिया अणुमया आसि । जप्पभिइ च ण मम इमे गवभे कुच्छिसि गवभत्ताए उववण्णे, तप्पभिइ च ण अह विजयस्स खत्तियस्स अणिट्टा अकता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था । नेच्छइ णं विजए खत्तिए मम नाम वा गोय वा गिण्हत्ताए^{१६}, किमग पुण दसण वा परिभोग वा ? त सेय खलु मम एय गवभ वहूहि गवभसाडणाहि य

१. निवट्टोसह ° (क्व) ।

२. स० पा०—रट्टे य जाव अतेउरे ।

३. स० पा०—रट्ट च ।

४. आसयमाणे (क), आसायमाणे (ख, घ) ।

५. वीहेमाणे (घ) ।

६. नरएसु (ग) ।

७. स० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

८. जलता (क, ग, घ) ।

९. पुत्तत्ताए (क) ।

१०. कुडुवजागरिय (क) ।

११. समुप्पज्जित्था (घ) ।

१२. गिण्हत्ताए वा (क) ।

पाडणाहि य गालणाहि य मारणाहि य साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता वहूणि खाराणि य कडुयाणि य तूवराणि य गवभसाडणाणि य पाडणाणि य गालणाणि य मारणाणि य खायमाणी य पियमाणी^१ य इच्छइ त गवभ साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा, नो चेव ण से गवभे सडइ वा पडइ वा गलइ वा मरइ वा ॥

- ६१ तए ण सा मियादेवी जाहे नो सचाएइ त गवभं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा ताहे सता तता परितता अकामिया असयंवसा तं गवभ दुहदुहेण परिवहइ ॥
- ६२ तस्स ण दारगस्स गवभगयस्स चेव अट्ट नालीओ अविभतरप्पवहाओ,^२ अट्ट नालीओ वाहिरप्पवहाओ, अट्ट पूयप्पवहाओ, अट्ट सोणियप्पवहाओ, दुवे दुवे कण्णतरेसु, दुवे दुवे अच्छिअतरेसु, दुवे दुवे नक्कतरेसु, दुवे दुवे धमणिअतरेसु अभिक्खण-अभिक्खण पूय च सोणिय च 'परिसवमाणीओ-परिसवमाणीओ'^३ चेव^४ चिट्ठति ॥
६३. तस्स ण दारगस्स गवभगयस्स चेव अग्गिए नाम वाही पाउव्भूए । जे^५ ण से दारए आहारेइ, से ण खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ^६, पूयत्ताए य सोणियत्ताए य परिणमइ, त पि य से पूय च सोणिय च आहारेइ ॥
६४. तए णं सा मियादेवी अण्णया कयाइ नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया—जातिअधे^७ जातिमूए जातिवहिरे जातिपगुले हुडे य वायन्वे । नत्थि ण तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा । केवल से तेसि अगोवंगाण आगिती^८ आगितिमेत्ते ॥
- ६५ तए ण सा मियादेवी त दारग हुंड अधारूव पासइ, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सजायभया अम्मघाइ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी— गच्छह ण देवाणुप्पिया ! तुम एय दारग एगते उक्कुरुडियाए उज्झाहि ॥
- ६६ तए ण सा अम्मघाई मियादेवीए तहत्ति एयमट्टं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव विजए खत्तिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अर्जलि कट्टु एव वयासी—एव खलु सामी ! मियादेवी नवण्ह मासाण^९ •बहुपडिपुण्णाण दारग पयाया—जातिअधे जातिमूए जातिवहिरे जातिपगुले

१. पीयमाणी (ख, ग, घ) ।

२. गवभतर^० (क, ग), अवभतर^० (ख) ।

३. परिस्सवमाणीओ (क) ।

४. × (क, घ) ।

५. ज (क) ।

६. विद्धसेति (घ) ।

७. स० पा०—जातिअधे जाव आगितिमेत्ते ।

८. स० पा०—मासाण जाव आगितिमेत्ते ।

हुडे य वायव्वे । नत्थि ण तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा । केवलं से तेसि अंगोवगाण आगिती ° आगितिमेत्ते ।

तए णं सा मियादेवी त दारगं हुड अंधारूव पासइ, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विगा सजायभया ममं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! एय दारग एगते उक्कुरुडियाए^१ उज्झाहि । त सदिसह ण सामी ! त दारग अह एगते उज्झामि उदाहु मा ॥

६७. तए णं से विजए खत्तिए तीसे अम्मधाईए अतिए एयमट्ट सोच्चा तहेव सभते उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव मियादेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिय देवि एव वयासी—देवाणुप्पिए ! तुव्वभ 'पढमे गव्वे'^२ । त जइ ण तुम एयं एगते उक्कुरुडियाए उज्झसि, तो ण तुव्वभ पया नो थिरा भविस्सइ, तो ण तुम एय दारग रहस्सियगंसि भूमिघरसि रहस्सिएण भत्तपाणेण पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहराहि, तो णं तुव्वभ पया 'थिरा भविस्सइ'^३ ॥

६८ तए णं सा मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स तह त्ति एयमट्ट विणएण पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता त दारग रहस्सियसि भूमिघरंसि रहस्सिएण भत्तपाणेण पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

६९ एव खलु गोयमा ! मियापुत्ते दारए पुरा पोरणाणं^४ •दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्क-ताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस ° पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

मियापुत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

७०. मियापुत्ते ण भते ! दारए इअो कालमासे काल किच्चा कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! मियापुत्ते दारए छव्वीस वासाइ परमाअं पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इहेव^५ जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्डुगिरिपायमूले सीहकुलंसि सीहत्ताए पच्चायाहिइ^६ ।

से ण तत्थ सीहे भविस्सइ—अहम्मिए^७ •वहुनगरनिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी ° साहसिए सुवहु पाव^८ •कम्म कलिकलुस ° समज्जिणइ, समज्जिणित्ता कालमासे

१. उक्कुरुडियाए (घ) ।

२. पढमगव्वे (क, ख, ग), पढम गव्वे (क्व) ।

३. नो अथिरा भविस्सति (क, ख) ।

४. स० पा०—पोरणाणं जाव पच्चणुभव-माणे ।

५. इह (क) ।

६. पयाहिति (क) ।

७. स० पा०—अहम्मिए । जाव साहसिए । सिहवर्णनत्वात् 'अहम्मिट्टे अहम्मवखाई' इत्यादिनि विशेषणानि अन्यत्रोक्तान्यपि इह न घटन्ते ।

८. स० पा०—पाव जाव समज्जिणइ ।

काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्टिइएसु^१ •नेरइएसु
नेरइयत्ताए^० उववज्जिहिइ ।

से ण तत्रो अणतरं उव्वट्टित्ता सिरोसवेसु उववज्जिहिइ । तत्थ णं काल किच्चा
दोच्चाए पुढवीए उक्कोसेण तिण्णि सागरोवम^२•ट्टिइएसु नेरइएसु नेरइत्ताए
उववज्जिहिइ^० ।

से ण तत्रो अणतर उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिइ । तत्थ वि काल किच्चा
तच्चाए पुढवीए सत्त सागरोवम^३•ट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए
उववज्जिहिइ^० ।

से ण तत्रो सीहेसु, तयाणतर चोत्थीए, उरगो, पंचमीए, इत्थीओ, छट्ठीए,
मणुओ, अहेसत्तमाए । तत्रो अणतर उव्वट्टित्ता से जाइं इमाइ जलयरपचि-
दियतिरिक्खजोणियाण मच्छ - कच्छभ-गाह-मगर-सुसुमारार्इणं अड्डतेरस
जाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्साइ, तत्थ णं एगमेगसि जोणिविहाणसि
अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ ।
से ण तत्रो अणंतर उव्वट्टित्ता चउपएसु उरपरिसप्पेसु भुयपरिसप्पेसु खहयरेसु
चउरिदिएसु तेइदिएसु वेइंदिएसु वणप्फइ-कडुयख्वेसु कडुयदुद्धिएसु वाउ-तेउ-
आउ-पुढवीसु^४ अणेगसयसहस्सखुत्तो^५ •उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो
पच्चायाइस्सइ^० ।

से णं तत्रो अणतर उव्वट्टित्ता सुपइट्टपुरे नयरे गोणत्ताए पच्चायाहिइ ।

से णं तत्थ उम्मुक्कवालभावे अणया कयाइ पढमपाउसंसि गगाए महानईए
खलीणमट्टिय खंणमाणे तडीए^६ पेल्लिए समाणे कालगए तत्थेव सुपइट्टपुरे नयरे
सेट्टिकुलंसि पुत्तत्ताए^७ पच्चायाइस्सइ ॥

से णं तत्थ उम्मुक्क^८•वालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते^० जोव्वणगमणुप्पत्ते
तहारूवाण थेराण अतिए घम्मं सोच्चा निसम्म मुडे भवित्ता अगाराआ
अणगारियं पव्वइस्सइ ।

से ण तत्थ अणगारे भविस्सइ—इरियासमिए^९ •भासासमिए एसणासमिए
आयाण-भड-मत्त-निक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-
पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त^० वभयारी ।

१. म० पा०—^० ट्टिइएसु जाव उववज्जिहिइ ।

२. स० पा०—सागरोवम^० ।

३. स० पा० सागरोवम^० ।

४. पुढवी (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—^० खुत्तो^० ।

६. तडीए पडोए (घ) ।

७. पुमत्ताए (ख) ।

८. स० पा०—उम्मुक्क जाव जोव्वणग^० ।

९. रियासमिते (क); स० पा०—इरिया समिए
जाव वभयारी ।

से ण तत्थ वहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता आलोइय-पडिक्कंते
समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उव्ववज्जिहिइ ।
से णं तत्रो अणतर चय चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइ भवंति—अड्ढाइ^१
अपरिभूयाइ तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिति । जहा दढपइण्णे^२ जाव^३
सिज्जिभहिइ वुज्जिभहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

७१ एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव^३ सपत्तेण दुहविवागाण
पढमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

--त्ति वेमि ॥

१. पू०—ओ० सू० १४१ ।

३. ओ० सू० १४२-१५४ ।

२. दढपइल्ले सच्चेव वत्तव्वया कलाओ

४ ना० १।१।७ ।

जाव (क, ख, ग, घ)

वीर्यं अज्भयणं उज्भयणं

उक्त्वेव-पदं

१. जइ ण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव^१ सपत्तेण दुहविवागाण पढमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स ण भते ! अज्भयणस्स^२ समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए ण से सुहम्मि अणगारे जवू-अणगार एव वयासी—एव खलु जवू ! तेण कालेण तेणं समएण वाणियगामे^३ नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे^४ ॥
३. तस्स ण वाणियगामस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए दूइपलासे नाम उज्जाणे होत्था ॥
४. तत्थ ण दूइपलासे सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था ॥
५. तत्थ ण वाणियगामे नयरे^५ मित्ते नाम राया होत्था—वण्णओ^६ ॥
६. तस्स ण मित्तस्स रण्णो सिरी नाम देवी होत्था—वण्णओ^७ ॥
७. तत्थ णं वाणियगामे कामज्भया नाम गणिया होत्था—अहीण^८—पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरा लक्खण-वज्जण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुदरगी ससिसोमाकार-कत्त-पिय-दसणा^९सुरूवा वावत्तरिकलापडिया^{१०}

१. ना० १।१।७ ।

२. अज्भयणस्स दुहविवागाणं (ख, ग, घ) ।

३. वाणियगामे (ख, ग, घ) ।

४. पू०—ओ० सू० १ ।

५. × (ख, घ) ।

६. ओ० सू० १४ ।

७. ओ० सू० १५ ।

८. स० पा०—अहीण जाव सुरूवा ।

९. चउसट्ठीकलापडिया (ना० १।३।८), 'वावत्तरीकलापडिय'त्ति लेखाद्या शकुनिरुत्त-पर्यन्ता गणितप्रधानाः कला-प्राय पुरुषाणा-मेव अभ्यासयोग्याः । स्त्रीणा तु विज्ञेया एव प्रायः (वृ) ।

चउसट्टिगणियागुणोववेया एगूणतीसविसेसे रममाणी एक्कवीसरइगुणप्पहाणा वत्तीसपुरिसोवयारकुसला नवगसुत्तपडिवोहिया अट्टारसदेसीभासाविसारया सिंगारागारचारुवेसा गीयरडगघव्वणट्टकुसला सगय-गय^१-^२भणिय हसिय-विहिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला ° सुदरथण^३-^४जहण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण-विलासकलिया ° ऊसियज्भया सहस्सलंभा विदिण्णच्छत्त-चामर-वालवीयणीया कणीरहप्पयाया यावि होत्था । वहूण गणियासहस्साण आहेवच्च^५ °पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत आणा-ईसर-सेणावच्च कारे-माणी पालेमाणी ° विहरइ ॥

८. तत्थ ण वाणियगामे विजयमित्ते नाम सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे^६ ॥
 ९ तस्स ण विजयमित्तस्स सुभद्दा नाम भारिया होत्था^७ ॥
 १० तस्स ण विजयमित्तस्स पुत्ते सुभद्दाए भारियाए अत्तए उज्भयए नाम दारए होत्था—अहीण^८-^९पडिपुण्ण-पच्चिदिय-सरीरे लक्खण-वजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरंगे ससिसोमाकारे कते पियदसणे ° सुख्खे ॥
 ११ तेण कालेणं तेणं समएण समणे भगव महावीरे समोसडे^{१०} परिसा निग्गया । राया निग्गओ, जहा कूणिओ^{११} निग्गओ । धम्मो कहिओ । परिसा पडिगया राया य गओ ॥

गोयमेण उज्भययस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१२. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई नामअणगारे गोयमगोत्तेण जाव^{१२} सखित्तविउलतेयलेसे छट्ठछट्ठेण^{१३} °अणिक्खत्तेण तवोकम्मेण सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
 १३ तए ण भगव गोयमे छट्ठक्खमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, वीयाए पोरिसीए भाण भियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभते मुहपोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइ पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइ पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइ उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता

१. सं० पा०—सगयगय, पू०—ना० १।३।८
 पादटिप्पणमपि ।

२. सं० पा०—सुदरथण ° ।

३. सं० पा०—आहेवच्च जाव विहरइ ।

४ पू०—ओ० सू० १४१ ।

५ होत्था । अहीण (घ) ।

६. सं० पा०—अहीण जाव सुख्खे ।

७ समोसरिए (क), समोसरण (ग) ।

८. ओ० सू० ५२-६६ ।

९ ओ० सू० ८२ ।

१०. सं० पा०—छट्ठछट्ठेण जहा पण्णत्तीए पढम जाव जेणेव ।

नमंसित्ता एव वयासो—इच्छामि ण भंते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे
छट्ठक्खमणपारणगसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घर-
समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवघ ॥

१४ तएण भगव गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स
भगवओ महावीरस्स अतियाओ दूइपलासाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ,
पडिनिक्खमित्ता अतुरियमच्चवलमसभते जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय
सोहेमाणे-सोहेमाणे^० जेणेव वाणियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए
अडमाणे जेणेव रायमग्गे तेणेव ओगाढे ।

तत्थ ण बहवे हत्थो पासइ—सण्णद्ध-बद्धवम्मिय-गुडिए उप्पोलियकच्छे उद्दामिय-
घटे नाणामणिरयण-विविह-गेवेज्जउत्तरकचुइज्जे पडिकप्पिए भयपडागवर-
पचामेल-आरूढहत्थारोहे गहियाउहप्पहरणे ।

अण्णे य तत्थ बहवे आसे पासइ—सण्णद्ध-बद्धवम्मिय-गुडिए आविद्धगुडे
ओसारियपक्खरे उत्तरकचुइय-ओचूलामुहचडाधर^१-चामर-थासग-परिमडिय-
कडीए आरूढअस्सारोहे गहियाउहप्पहरणे ।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ-सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टीए
पिणद्धगेवेज्जे^२ विमलवरबद्ध-च्चिघपट्टे गहियाउहप्पहरणे ।

तेसि च ण पुरिसाण मज्झगय एग पुरिस पासइ अवओडयबधण उक्खित्त-
कण्णनास नेहतुप्पियगत्त वज्झ^३-करकडि-जुयनियच्छ कठेगुणरत्त-मल्लदाम
चुण्णगुडियगात चुण्णय वज्झपाणपीय तिल-तिल चेव छिज्जमाण कागणिमसाइ
खावियत पाव खक्खरसएहि^४ हम्ममाण अणेगनर-नारी-सपरिवुड चच्चरे-
चच्चरे खडपडहएण उग्घोसिज्जमाण इम च णं एयारूव उग्घोसण सुणेइ^५—नो
खलु देवाणुप्पिया ! उज्झियगस्स दारगस्स केइ^६ राया वा रायपुत्तो वा
अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइ कम्माइ अवरज्झति ॥

१५ तए ण भगवओ गोयमस्स त पुरिस पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए
कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था अहो ण इमे पुरिसे^७ पुरा
पोराणाण दुच्चिण्णाण दुप्पडिककताणं असुभाण पावाण कडाण कम्माण

१ चूला^० (ख) ।

२ पिणद्ध^० (क, ख, ग) ।

३ उक्खत्त (क, ख, ग), उक्कत्त (घ) ।

४ बद्ध (क, ख) ।

५. कक्खरग^० (क, ग), कक्कर^० (ख, घ) ।

६. पडिसुणेइ (क्व) ।

७. केयी (क, घ) ।

८. स० पा०—पुरिसे जाव निरयपडिरुविय ।

पावग फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरडया वा । पच्चक्ख खलु अय पुरिसे^० निरयपडिरुविय वेयण वेएइ त्ति कट्टु वाणिय-गामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइ अडमाणे अहापज्जत्त समुदाण गिण्हइ, गिण्हत्ता वाणियगामे नयरे मज्झमज्झेण^१ •पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमस-भत्ते जुगतपरलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव दूइपलासए उज्जाणे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसण-मणेसण आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाण^० पडिदसेइ, पडिदसेत्ता समण भगव महा-वीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी —एव खलु अह भते ! तुब्भेहि अठ्ठगुण्णाए समाणे वाणियगामे नयरे जाव^३ तहेव सव्व निवेएइ^३ ॥

१६. से णं भते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसि^५ ? •कि नामए वा किं गोत्ते वा ? कयरसि गामसि वा नयरसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, -केसि वा पुरा पोरणाण दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस^० पच्चणुभवमाणे विहरइ ?

उज्झययस्स गोत्तासभव-वण्णग-पदं

- १७ एव^४ खलु गोयमा ! तेण कालेणं तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे^६ वासे हत्थिणाउरे नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे^७ ॥
- १८ तत्थ ण हत्थिणाउरे नयरे सुनदे नाम राया होत्था—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिदसारे^८ ॥
१९. तत्थ ण हत्थिणाउरे नयरे बहुमज्झदेसभाए, एत्थ ण मह एगे गोमडवे होत्था—अणेगखभसयसनिविट्ठे पासार्इए दरिसणिज्जे अभिरुवे पडिरुवे ॥
- २० तत्थ ण वहुवे नगरगोरुवा सणाहा य अणाहा य 'नगरगावीओ य नगरवलीवद्दा य नगरपडियाओ य नगरवसभा य'^९ पउरतण-पाणिया निब्भया निरुव्विग्गा मुहसुहेण परिवसति ॥
- २१ तत्थ ण हत्थिणाउरे नयरे भीमे नाम कूडग्गाहे होत्था—अहम्मिए जाव^{१०} दुप्पडियाणदे ॥

१. सं० पा०—मज्झमज्झेणं जाव पडिदसेइ ।

७ पू०—ओ० सू० १ ।

२ वि० १।२।१३-१५ ।

८ पू०—ओ० सू० १४ ।

३ वेएइ (क, ख, ग) ।

९. नगरवलद्दा य नगरपडियाओ य महिसिओ य

४ सं० पा०—आसि जाव पच्चणुभवमाणे ।

य वसभाण (ग) ।

५ पू०—वि० १।१।४३ ।

१०. वि० १।१।४७ ।

६. भरहे (क) ।

- २२ तस्स ण भीमस्स कूडग्गाहस्स उप्पला नाम भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरा' ॥
- २३ तए ण सा उप्पला कूडग्गाहिणी अण्णदा कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था ॥
- २४ तए ण तीसे उप्पलाए कूडग्गाहिणीए तिण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउव्भूए - घण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ', •संपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ ण ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे ण तारिं माणुस्सए जम्मजीवियफले °, जाओ ण वहुणं नगरगोरूवाण सणाहाण य' °अणाहाण य नगरगावियाण य नगरवलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगर°-वसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि' य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्टेहि य कवलेहि य सोल्लेहि' य तलिएहि य भज्जेहि' य परिसुक्केहि य लावणेहि' य सुरं च महु च मेरगं च जाइं च सीघु' च पसण्ण च आसाएमाणीओ वीसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुजेमाणीओ दोहल विणेत्ति । त जइ णं अहमवि वहुणं नगर' •गोरूवाण सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरवलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगरवसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्टेहि य कवलेहि य सोल्लेहि' य तलिएहि य भज्जेहि' य परिसुक्केहि य लावणेहि' य सुर च महुं च मेरगं च जाइ च सीघु च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजेमाणी दोहल ° विणिज्जामि त्ति कट्टु तसि दोहलसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा' पडुल्लइयमुही' ओमंथिय-नयणवदणकमला जहोइय पुप्फ-वत्थ-गघ-मल्लालकाराहार अपरिभुजमाणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहय' •मणसकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया ° भियाइ ॥

१. पू०—वि० १।२।७ ।

८ सिघु (ख) ।

२. स० पा०—अम्मयाओ जाव सुलद्धे जाओ ।

९ सं० पा०—नगर जाव विणिज्जामि ।

३. स० पा०—सणाहाण य जाव वसभाण ।

१०. दीणविमणहीणा (वृ), दीपविमणवयणा (वृपा) ।

४ ककुहेहि (क) ।

५. सोल्लिएहि (वृ) ।

११ °मुहा (घ) ।

६ भज्जेहि (ग) ।

१२ स० पा०—ओहय जाव भियाइ ।

७ लावणिएहि (क, ग) ।

२५. इमं च णं भीमे कूडग्गाहे जेणेव उप्पला कूडग्गाहिणी^१ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता [उप्पल कूडग्गाहिणि ?] ओहय^२•मणसकप्प करतलपल्हत्थमुहि अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीय भियायमाणि^३ पासइ, पासित्ता एव वयासी— किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहय^३•मणसकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया^३ भियासि ?

२६ तए णं सा उप्पला भारिया भीम कूडग्गाह एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मम तिण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण दोहले पाउवभूए—धण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, सपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे ण तासि माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ ण व्हूण^४ •नगरगोरूवाण सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरवलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगरवसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिव्भाहि य ओट्टेहि य कवलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य^५ लावणेहि य सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणीओ वीसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुजेमाणीओ दोहल विणेति ।

तए ण अहं देवाणुप्पिया ! तसि दोहलसि अविणिज्जमाणसि^६ सुक्का भुक्खा निम्मसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पडुल्लइयमुही ओमथिय-नयणवदणकमला जहोइय पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकाराहार अपरिभुजमाणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहयमणसकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया^३ भियामि ॥

२७ तए णं से भीमे कूडग्गाहे उप्पल भारिय एव वयासी—मा णं तुम देवाणुप्पिया ! ओहय^२•मणसकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया^३ भियाहि । अह णं तहा करिस्सामि^७ जहा णं तव दोहलस्स सपत्ती भविस्सइ— ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि वग्गूहि समासासेइ ॥

२८ तए णं से भीमे कूडग्गाहे अद्धरत्तकालसमयसि^८ एगे अवीए^९ सण्णद्ध^{१०} •वद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टीए पिणद्धगेवेज्जे विमलवरवद्ध-चिघपट्टे गहिया-

१. कूडग्गाही (क, ख) ।

२. स० पा०—ओहय जाव पासइ ।

३. स० पा०—ओहय जाव भियासि ।

४. सं० पा०—व्हूण गोरूवाण ऊहे जाव लावणेहि ।

५. सं० पा०—अविणिज्जमाणसि जाव भियामि ।

६. सं० पा०—ओहय^३ ।

७. करीहामि (क) ।

८. अद्ध^३ (क, ग) ।

९. अव्वितीए (ग) ।

१०. सं० पा०—मण्णद्ध जाव पहरणे ।

- उह°प्पहरणे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता 'हत्थिणाउरं नयर' मज्झमज्जेण जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागए व्हूणं नगरगोरूवाण° •सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरवलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगर°-वसभाण य -अप्पेगइयाण ऊहे छिदइ°, •अप्पेगइयाण थणे छिदइ, अप्पेगइयाण वसणे छिदइ, अप्पेगइयाण छेप्पा छिदइ, अप्पेगइयाण ककुहे छिदइ, अप्पेगइयाण वेहे छिदइ, अप्पेगइयाण कण्णे छिदइ, अप्पेगइयाण नासा छिदइ, अप्पेगइयाण जिब्भा छिदइ, अप्पेगइयाण ओट्टे छिदइ°, अप्पेगइयाण कंवलए छिदइ, अप्पेगइयाण अण्णमण्णाइ अणोवगाइ वियगेइ°, वियंगेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उप्पलाए कूडग्गाहिणीए उवणेइ ॥
- २९ तए ण सा उप्पला भारिया तेहिं व्हूहि गोमसेहि सोल्लेहि ये तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुर च महु च मेरग च जाइं च सीघु च पसण्ण च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजेमाणी तं दोहलं विणेइ ॥
- ३० तए ण सा उप्पला कूडग्गाहिणी सपुण्णदोहला समाणियदोहला विणीयदोहला विच्छिण्णदोहला° सपण्णदोहला तं गव्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥
- ३१ तए ण सा उप्पला कूडग्गाहिणी अण्णया केयाइ नवण्हं मासाणं बहुपड्डिपुण्णाणं दारग पयाया ॥
३२. तए ण तेणं दारएण जायमेत्तेणं चेव महया-महया [चिच्ची ?] सद्देणं विघुट्टे° विस्सरे° आरसिए ॥
३३. तए ण तस्स दारगस्स आरसियसद्द सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे नयरे व्हवे नगरगोरूवा° •सणाहा य अणाहा य नगरगावीओ य नगरवलीवद्दा य नगरपड्डियाओ य नगर°वसभा य भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समता विपलाइत्था° ॥
३४. तए ण तेस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूव नामधेज्जं करेति—जम्हा णं अम्ह इमेण दारएण जायमेत्तेणं चेव महया-महया चिच्चीसद्देणं विघुट्टे विस्सरे आरसिए, तए ण एयस्स° दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे

१ हत्थिणाउरे नयरे (क्व) ।

७ वुट्टे (ख), विट्टे (ग) ।

२. स० पा०—नगरगोरूवाण जाव वसभाण ।

८. वीमरेणं (ख); चिच्चीसरे (ग), विस्सरे (घ) ।

३ मं० पा—छिदइ जाव अप्पेगइयाण ।

४. विगत्तेत्ति (क) ।

९ स० पा०—नगरगोरूवा जाव वसभा ।

५. वोच्छिन्न° (ख, घ) ।

१०. विपलाइत्था (क, घ) ।

६. ३४ सूत्रे पुनरावर्त्तने 'चिच्चीसद्देण' इति ११ तस्स (क) ।

पदमस्ति । तदत्र कथं न स्यात् ?

नयरे वहवे नगरगोरूवा' •सणाहा य अणाहा 'य नगरगावीओ य नगरबलीवद्वा'
य नगरपड्डियाओ य नगरवसभा य० भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सजायभया
सव्वओ समता विपलाइत्था, तम्हा ण होउ अम्ह दारए गोत्तासे नामेण ॥

३५. तए ण से गोत्तासे दारए उम्मुक्कवालभावे जाए यावि होत्था ॥
३६ तए ण से भीमे कूडग्गाहे अण्णया कयाइ कालधम्मुणा सजुत्ते ॥
३७ तए ण से गोत्तासे दारए बहूण मित्त-नाइ-नियग-सयण सबधि-परियणेण सिद्धि
सपरिवुद्धे रोयमाणे कदमाणे विलवमाणे भीमस्स कूडग्गाहस्स नीहरण करेइ,
करेत्ता बहूइ लोइयमयकिच्चाइ करेइ ॥
३८ तए ण से सुनदे राया गोत्तास दारय अण्णया कयाइ सयमेव कूडग्गाहत्ताए
ठवेइ ॥
३९ तए ण से गोत्तासे दारए कूडग्गाहे जाए यावि होत्था—अहम्मिए जाव'
दुप्पड्डियाणदे ॥
४० तए ण से गोत्तासे' कूडग्गाहे' कल्लाकल्लि अद्धरत्तकालसमयसि एगे अबीए
सण्णद्ध-वद्धवम्मियकवए जाव' गहियाउहप्पहरणे साओ गिहाओ 'निज्जाइ,
निज्जाइत्ता' जेणेव गोमडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूण नगरगोरू-
वाण सणाहाण य अणाहाण य जाव' वियगेइ, वियगेत्ता जेणेव सए गेहे तेणेव
उवागए ॥
४१. तए ण से गोत्तासे कूडग्गाहे तेहि बहूहि गोमसेहि सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जि-
एहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च
पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ ॥
४२ तए ण से गोत्तासे कूडग्गाहे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहु
पावकम्म समज्जिणित्ता पचवाससयाइ परमाउ पालइत्ता अट्टदुहट्टोवगए'
कालमासे काल किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोस तिसागरोवमठिइएसु नेरइएसु
नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

उज्भययस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पद

४३ तए ण सा विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा नाम भारिया जायनिदुया' यावि
होत्था—जाया-जाया दारगा विणिहायमावज्जति" ॥

१. स० पा०—नगरगोरूवा भीया ।

२ वि० १।१।४७ ।

३ गोत्तासे दारए (क, ख, ग, घ) ।

४ × (क) ।

५ वि० १।२।१४ ।

६ निग्गच्छइ २ (घ) ।

७ वि० १।२।२८ ।

८ अट्टदुहट्टवसट्टे (घ) ।

९. °निहुया (क, घ), निड्डुया (ग),

नश्यत्प्रसूतिका निदु (अभिधान चिन्तामणि
३।१६३) ।

१० तस्या इति गम्यम् (वृ) ।

४४. तए णं से गोत्तासे कूडग्गाहे दोच्चाए पुढवीए अणतरं उव्वट्टित्ता इहेव वाणिय-
गामे नयरे विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दाए भारियाए कुञ्छिसि पुत्तत्ताए
उववण्णे ॥
४५. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण
दारग पयाया ॥
४६. तए ण सा सुभद्दा सत्थवाही त दारगं जायमेत्तयं चेव एगते उक्कुरुडियाए'
उज्झावेइ, उज्झावेत्ता दोच्च पि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अणुपुव्वेण सारक्खमाणी
सगोवेमाणी सवड्ढेइ' ॥
४७. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठिइवडिय' च चदसूरदंसण' च जागरियं
च महया इड्डीसक्कारसमुदएण करेति ॥
४८. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे निव्वत्ते संपत्ते वारसाहे
अयमेयारूव' गोण्ण गुणनिप्फण्णं नामधेज्ज करेति—जम्हा ण अम्ह इमे दारए
जायमेत्तए चेव एगते उक्कुरुडियाए उज्झिअए, तम्हा ण होउ अम्ह दारए
उज्झिअए नामेण ॥
४९. तए ण से उज्झिअए दारए पंचघाईपरिग्गहिअए, [त जहा—खीरघाईए मज्जण-
घाईए मडणघाईए कीलावणघाईए अकघाईए]' जहा दढपइण्णे जाव' निव्वाय-
निव्वाघाय-गिरिकदरमल्लीणे व्व चपगपायवे सुहसुहेणं विहरइ ॥
५०. तए ण से विजयमित्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ गणिम च धरिम च मेज्ज च
पारिच्छेज्ज च—चउव्विह भड' गहाय लवणसमुद्द पोयवहणेण उवागए ॥
५१. तए णं से विजयमित्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निव्वुडुभंडसारं अत्ताणे
असरणे कालघम्मुणा संजुत्ते ॥
५२. तए णं त विजयमित्त सत्थवाहं जे जहा बहवे ईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-
इव्वभ-सेट्ठि-सत्थवाहा लवणसमुद्दपोयविवत्तिय' निव्वुडुभंडसारं कालघम्मुणा
सजुत्त सुणेति, ते तहा हत्थनिकखेव च बाहिरभंडसारं च गहाय एगंतं
अवक्कमति ॥
५३. तए ण सा सुभद्दा सत्थवाही विजयमित्त सत्थवाह लवणसमुद्दपोयविवत्तिय
निव्वुडुभंडसारं कालघम्मुणा सजुत्त सुणेइ, सुणेत्ता महया पइसोएण अप्फुण्णा

१. उक्कुरुडियाए (ग) ।

२. सवड्ढेमाणीति (क) ।

३. ठियपडिय (क); ठियपडिकम्मं (घ) ।

४. चदसूरपासणियं (वृ) ।

५. इमेयारूव (घ) ।

६. असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्यांश प्रतीयते ।

७. ओ० सू० १४४, वाचनान्तर पृ० १५१,
१५२ ।

८. भडग (घ) ।

९. लवणसमुद्दे पोय० (क, ख, ग, घ) ।

समाणो परसुनियत्ता इव' चंपगलया घस त्ति धरणीयलसि सव्वगेहिं सन्निवडिया ॥

५४. तए ण सा सुभद्दा सत्थवाही मुहुत्ततरेण आसत्था समाणी व्हूर्हिं मित्त^१-नाइ-नियग-सयण-सव्वधि-परियणेहिं सद्धिं^२ परिवुडा रोयमाणी कदमाणी विलव-माणी विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स लोडयाइ मयकिच्चाइ करेइ ॥
५५. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ लवणसमुद्दोत्तरण च सत्थविणास च पोयविणासं च पइमरण च अणुचितेमाणी-अणुचितेमाणी कालधम्मणा संजुत्ता ॥
५६. तए णं ते नगरगुत्तिया सुभद्दं सत्थवाहि कालगय जाणित्ता उज्भयण दारण साओ गिहाओ निच्छुभेत्ति, निच्छुभेत्ता त गिह अण्णस्स दलयति ॥
- ५७ तए ण से उज्भयण दारण साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे वाणियगामे नगरे सिघाडग^३ - •तिग - चउक्क - चच्चर - चउम्मुह-महापह^४ पहेसु जूयखलएसु^५ वेसधरएसु^६ पाणागारेसु य सुहसुहेण परिवुड्डइ ॥
५८. तए ण से उज्भयण दारण अणोहट्टिए^७ अणिवारिए सच्छदमई सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी 'चोर-जूय'^८-वेस-दारप्पसंगी जाए यावि होत्था ॥
- ५९ तए ण से उज्भयण अण्णया कयाइ कामज्भयाण गणियाण सद्धिं सपलग्गे जाए यावि होत्था, कामज्भयाण गणियाण सद्धिं उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥
- ६० तए ण तस्स मित्तस्स रण्णो अण्णया कयाइ सिरीए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था, नो सचाएइ मित्ते राया सिरीए देवीए सद्धिं उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ॥
- ६१ तए ण से मित्ते राया अण्णया कयाइ 'उज्भयण दारण'^९ कामज्भयाण गणियाण गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता कामज्भय गणिय अण्भितरिय^{१०} ठवेइ ठवेत्ता कामज्भयाण गणियाण सद्धिं उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥
६२. तए ण से उज्भयण दारण कामज्भयाण गणियाण गिहाओ निच्छुभेमाणे^{१०}

१. विव (क्व) ।

२. स० पा०—मित्त जाव परिवुडा ।

३. स० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

४. जूयखंधएसु (क) ।

५. वेसियाधरएसु (घ) ।

६. अणोहट्टिए (क, ख) ।

७. वृत्तौ 'चोर-जूय' इति पदे व्याख्याते नरुस्त. ।

८. उज्भयणदारण (क, घ), अत्र विभक्ति-व्यत्ययो दृश्यते, अन्यथा व्याकरणदृष्ट्या 'उज्भयण दारण' इति पाठो युक्त स्यात् ।

९. अण्भितरय (ख, घ) ।

१०. निच्छुभमाणे समाणे (क), निच्छुभे समाणे (घ) ।

कामज्भयाए गणियाए मुच्छिण गिद्धे गढिए अज्भोववण्णे अण्णत्थ-कत्थइ सुडं च रइ च धिइ च अविदमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्भवसाणे तदट्टोवउत्ते तयप्पियकरणे तवभावणाभाविए कामज्भयाए गणियाए वहूणि अतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥

६३. तए ण से उज्झियए दारए अण्णया कयाइ 'कामज्भयाए गणियाए'^१ अंतर^२ लभेइ, लभेत्ता कामज्भयाए गणियाए गिह रहसिय अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता काम-ज्भयाए गणियाए सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥
६४. इम च ण मित्ते राया ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकारविभूसिए मणुस्सवग्गुरापखित्ते जेणेव कामज्भयाए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ ण 'उज्झियग दारग'^३ कामज्भयाए गणियाए सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइं भुजमाणं^४ पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुद्धे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु उज्झियग दारग पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्टि-मुट्टि-जाणु-कोप्परपहार-सभगं^५-महियगत्त करेइ, करेत्ता अवओडग-बधणं करेइ, करेत्ता एएण विहाणेण वज्झं आणवेइ ॥
६५. एव खलु गोयमा ! उज्झियए दारए पुरा^६ •पोराणाण दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्क-ताण असुभाण पावाण कडाण कम्माणं पावग फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे^७ विहरइ ॥

उज्झिययस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

६६. उज्झियए ण भंते ! दारए इओ कालमासे काल किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! उज्झियए दारए पणुवीस^८ वासाइ परमाउ पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सुलभिण्णे कए समाणे कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ॥
६७. से ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयडुगिरिपायमूले वाणरकुलसि वाणरत्ताए उववज्जिहिइ ॥
६८. से ण तत्थ उम्मुक्कवालभावे तिरियभोगेसु मुच्छिण गिद्धे गढिए अज्भोववण्णे

१. कामज्झयागणिय (घ) ।

५ भग (क) ।

२ अतराणि (ख) ।

६ स० पा०—पुरा जाव विहरइ ।

३. उज्झियए दारए (क, ख, ग, घ) ।

७. पणवीस (ग) ।

४. विहरमाण (क, ख, ग) ।

जाए-जाए वाणरपेल्लए वहेइ । तं एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे^१
कालमासे काल किच्चा इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे इदपुरे नयरे गणिया-
कुलसि पुत्तत्ताए^२ पच्चायाहिइ ॥

६९. तए ण त दारय अम्मापियरो जायमेत्तक वद्धेहि^३, नपुसगकम्म
सिक्खावेहि^३ ॥

७०. तए ण तस्स दारयस्स अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहस्स इम एयारूव नामधेज्ज
करेहि^३—होउ ण अम्ह इमे दारए पियसेणे नाम नपुसए ॥

७१. तए ण से पियसेणे नपुसए उम्मुक्कवालभावे विण्णयपरिणमेत्ते जोव्वणगमणु-
प्पत्ते रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठे उक्किट्ठसरीरे भविस्सइ ॥

७२. तए ण से पियसेणे नपुसए इदपुरे नयरे बह्वे राईसर^४-^५तलवर-माडविय-
कोडुविय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावड-सत्थवाह^०पभियओ बहूहि य विज्जापओगेहि य
मतपओगेहि य चुण्णपओगेहि य हियउड्डावणेहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि
य वसीकरणेहि य आभिओगिएहि आभिओगित्ता उरालाइ माणुस्सगाइ
भोगभोगाइ भुजमाणे विहरिस्सइ ॥

७३. तए ण से पियसेणे नपुसए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहु
पावकम्म समज्जिणित्ता एककवीस वाससय परमाउ पालइत्ता कालमासे
काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ।
ततो सिरीसिवेसु, ससारो तहेव जहा पढमे जाव^६ •वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु
अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्तातथेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ ।^०
से ण तओ अणतर उव्वट्ठित्ता इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे चपाए नयरीए
महिसत्ताए पच्चायाहिइ ।

से ण-तत्थ अणया कयाइ गोट्टिल्लएहि जीवियाओ ववरोविए समाणे तथेव
चपाए नयरीए सेट्ठिकुलसि पुत्तत्ताए^२ पच्चायाहिइ ।

से ण तत्थ उम्मुक्कवालभावे तहारूवाण थेराण-अतिए केवल वोहि बुज्जिहइ,
अणगारे भविस्सइ, सोहम्मे कप्पे, जहा पढमे जाव^६ अत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

७४ “एव खलु जवू । समणेण-भगवया-महावीरेण जाव^६ सपत्तेण दुहविवागाण
विइयस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । —त्ति वेमि^० ॥

१ एयसमुदाचारे (वृ) ।

६ पुमत्ताए (क, ग) ।

२ पुमत्ताए (क, ग) ।

७ वि० १।१।७० ।

३ वड्ढेहि^३ (क) ।

८ स० पा०—निक्खेवो ।

४ स० पा०—राईसर जाव पभियओ ।

९ ना० १।१।७ ।

५ वि० १।१।७०, स० पा०—जाव पुढवी ।

तइयं अज्भयणं अभग्गसेणे

उक्खेव-पदं

१. 'जइ ण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^३ संपत्तेणं दुहविवागाणं दोच्चस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से मुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी^०—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेण समएणं पुरिमताले नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे^१ ॥
३. तस्स ण पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं अमोहदंसी उज्जाणे ॥
४. तत्थ णं अमोहदसिस्स जक्खस्स आययणे होत्था ॥
५. तत्थ णं पुरिमताले नयरे महव्वले नाम राया होत्था ॥
६. तस्स ण पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देसपंपते अडवि-संसिया, एत्थ ण सालाडवी नामं चोरपल्ली होत्था—विसमगिरिकंदर-कोलंव-संनिविट्ठा वंसीकलंक-पागारपरिक्खत्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय-फरिहोवगूढा अम्भितर-पाणीया सुदुल्लभजलपेरंता अणेगखंडी विदियजणदिन्न-निग्गमप्पवेसा सुवहुस्स^४ वि कुवियजणस्स दुप्पहंसा यावि होत्था ॥
७. तत्थ ण सालाडवीए चोरपल्लीए विजए नामं चोरसेणावई परिवसइ—अहम्मिए^५
 •अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अघम्माणुए अघम्मपलोइ अघम्मपलज्जणे अघम्मसील-समुदायारे अघम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणे विहरइ—हण-च्छिद-भिद-वियत्तए^०

१. स० पा०—तच्चस्स उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. पू०—ओ० सू० १ ।

४. सुवहुयस्स (क) ।

५. सं० पा०—अहम्मिए जाव लोहियपाणी ।

लोहियपाणी बहुनयरनिग्गयजसे सूरे दढप्पहारे साहसिए सद्देही असि-लट्टि-पढममल्ले । से ण तत्थ सालाडवीए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाणं आहेवच्च^१ *पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पाले-माणे ० विहरइ ॥

८. तए ण से विजए चोरसेणावई वहुण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण^२ य संधिच्छेयगाण^३ य खडपट्टाण^४ य, अण्णेसि च वहुण छिण्ण-भिण्ण-वाहिराहि-याण कुडंगे यावि होत्था ॥

९. तए ण से विजए चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमिल्ल जणवय वहुहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य वदिग्गहणेहि य पथकोट्टेहि य खत्तखणणेहि य 'ओवीलेमाणे-ओवीलेमाणे'^५ 'विहम्ममाणे-विहम्ममाणे'^६ तज्जेमाणे-तज्जेमाणे तालेमाणे-तालेमाणे नित्थाणे निद्धणे निक्कणे^७ करेमाणे विहरइ, महव्वलस्स रण्णो अभिक्खण-अभिक्खण कप्पाय गेण्हइ ॥

१०. तस्स ण विजयस्स चोरसेणावइस्स खदसिरी नाम भारिया होत्था—अहीणपडि-पुण्ण-पच्चिदियसरीरा^८ ॥

११. तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स पुत्ते खदसिरीए भारियाए अत्तए अभग्गसेणे नाम दारए होत्था—अहीणपडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरे^९ ॥

१२. तेण कालेणं तेण समएण समणे भगव महावीरे पुरिमताले नयरे समोसढे । परिसा निग्गया । राया निग्गओ । घम्मो कहिओ । परिसा राया य गओ ॥

गोयसेण अभग्गसेणस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१३. तेण कालेण तेणं समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी गोयमे जाव^{१०} 'रायमग्गसि ओगाढे'^{११}, तत्थ ण वहवे हत्थी पासइ^{१२}, अण्णे य तत्थ वहवे आसे पासइ^{१३}, अण्णे य तत्थ वहवे पुरिसे पासइ — सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए^{१४} । तेसि च^{१५} ण पुरिसाणं मज्झगय एग पुरिस पासइ—अवओडय^{१६} *बधण उक्खित्त-कण्ण-नास नेहत्तुप्पियगत्त वज्झकरकडि-जुयनियच्छ कठेगुणरत्त-मल्लदाम चुण्णगुडिय-

१. स० पा०—आहेवच्च जाव विहरइ ।

२. गठिभेयाण (क, ख, ग, घ) ।

३. संधिच्छेयाण (क, ख, ग, घ) ।

४. खडपाडियाण (वृषा) ।

५. उवीलेमाणे २ (घ, वृ) ।

६. विद्धसेमाणे २ अत्थापहारेहि (ख), अत्था-पहारेहि य विद्धसेमाणे २ (घ) ।

७. × (क, वृ) ।

८. पू०—ओ० सू० १५ ।

९. पू०—वि० १।२।१० ।

१०. वि० १।२।१२-१४ ।

११. रायमग्ग समवगाढे (ख, घ); रायमग्ग समोसढे (ग) ।

१२, १३, १४, पू०—वि० १।२।१४ ।

१५. × (क, ख, ग, घ) ।

१६. सं०पा०—अवओडय जाव उग्घोसिज्जमाण ।

गातं चुण्णय वज्झपाणपीय तिलं-तिल चेव छिज्जमाण कागणिमंसाइं खावियतं पावं खक्खरसएहिं हम्ममाण अणेगनर-नारी-सपरिवुड चच्चरे-चच्चरे खडपड-हएणं० उग्घोसिज्जमाण [इम च ण एयारूवं उग्घोसण सुणेइ—नो खलु देवाणुप्पिया ! अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति' ?] ॥

१४ तए ण त पुरिस रायपुरिसा पढमसि चच्चरंसि निसियावेति, निसियावेत्ता अट्ट चुलप्पिउए अग्गओ घाएति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं 'तासेमाणा-तासेमाणा'^२ कलुणं काकणिमसाइ खावेति, रुहिरपाणं च पाएति ।

तयाणतर च ण दोच्चसि चच्चरसि अट्ट चुल्लमाउयाओ अग्गओ घाएति,^१ •घाएत्ता कसप्पहारेहिं तासेमाणा-तासेमाणा कलुणं काकणिमसाइ खावेति, रुहिरपाण च पाएति० ।

एव तच्चे चच्चरे अट्ट महापिउए, चउत्ये अट्ट महामाउयाओ, पचमे पुत्ते, छट्ठे सुण्हाओ, सत्तमे जामाउया, अट्ठमे धूयाओ, नवमे नत्तुया, दसमे नत्तुइओ, एक्कारसमे नत्तुयावई, वारसमे नत्तुइणीओ, तेरसमे पिउस्सियपइया, चोइसमे पिउस्सियाओ, पण्णरसमे माउस्सियापइया, सोलसमे माउस्सियाओ, सत्तरसमे मामियाओ, अट्टारसमे अवसेस [स्स ?]^४ मित्त-नाइ-नियग-सयणसर्वधि-परियण [स्स ?] अग्गओ घाएति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं तासेमाणा-तासेमाणा कलुणं काकणिमंसाइं खावेति, रुहिरपाणं च पाएति ॥

१५ तए ण 'भगवओ गोयमस्स तं पुरिस पासित्ता'^५ अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे^६—•अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोरणाणं दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाणं पावाण कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति-विसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा । पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिरुविय वेयण वेएइ त्ति कट्टु पुरिमताले नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइ अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाण गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरिम-ताले नयरे मज्झमज्झेण पडिनिक्खमंइ जाव^७ समणं भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता० एव वयासी—एवं खलु अह भत्ते ! •तुब्भेहिं अठ्ठणुण्णाए समाणे पुरिमताले नयरे जाव^८ तहेव सव्व निवेएइ० ॥

१. द्रष्टव्यम्—वि० १।२।१४-सूत्रम् ।

सारेण अय पाठो-लिखित. ।

२. तालेमाणा २ (घ) ।

६. सं० पा०—समुप्पण्णे जाव तहेव निग्गए ।

३. सं० पा०—घाएति २ ।

७. वि० १।२।१५ ।

४. पूर्वक्रमेण अत्रापि षष्ठी विभक्तिर्युज्यते ।

८. सं० पा०—त चेव जाव से ण ।

५. से भगव गोयमे त पुरिस पासइ । (क, ख; ग, घ) । १।१।४१ तथा १।२।१५ सूत्रानु-

६. वि० १।३।१३-१५ ।

१६. से णं भंते । पुरिसे पुव्वभवे के आसी' ? •किं नामए वा किं गोत्ते वा ? कयरंसि गामसि वा नयरसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा पौराणाण दुच्चिण्णाण दुप्पडिकताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणे° विहरइ ?

अभग्गसेणस्स निन्नयभव-वण्णग-पदं

- १७ एव खलु गोयमा । तेण कालेण तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे पुरिमताले नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
- १८ तत्थ णं पुरिमताले नयरे उदिओदिए नाम राया होत्था—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिंदसारे ॥
- १९ तत्थ ण पुरिमताले निन्नए नामं अडय^१-वाणियए होत्था—अड्ढे जाव' अपरि-भूए, अहम्मिए° •अधम्माणुए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मपल-ज्जणे अधम्मसमुदाचारे अधम्मेण चैव वित्ति कप्पेमाणे दुस्सीले दुव्वए° दुप्पडियाणदे ॥
- २० तस्स ण निन्नयस्स अडय-वाणियस्स वहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्ला-कल्लि कुट्ठालियाओ य पत्थियपिडए^२ य गिण्हत्तिं, गिण्हत्ता पुरिमतालस्स नयरस्स परिपेरतेसु वहवे काइअडए य घूइअडए य पारेवइअडए य टिट्ठिभि-अडए य वगिअडए य मयूरिअडए य कुक्कुडिअडए य, अण्णेसिं च वहूण जलयर-थलयर-खहयरमाईण अडाइ^३ गेण्हत्ति, गेण्हत्ता पत्थियपिडगाई भरेति, भरेत्ता जेणेव निन्नए अडवाणियए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता निन्नयस्स अडवाणियस्स उवणेति ॥
- २१ तए णं तस्स निन्नयस्स अडवाणियगस्स वहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा वहवे काइअडए य जाव' कुक्कुडिअडए य, अण्णेसिं च वहूण जलयर-थलयर-खहयरमाईण अडए^४ तवएसु य कवल्लीसु य कडुसु^५ य भज्जणएसु य इगालेसु य तलेति भज्जेति सोल्लेति, तलेत्ता भज्जेत्ता सोल्लेत्ता य रायमग्गे अतरावणसि अंडयपणिएण वित्ति कप्पेमाणा विहरति ।
- अप्पणा वि णं से निन्नयए अडवाणियए तेहिं वहूहिं काइअडएहि य- जाव कुक्कुडिअडएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुर च महु, च मेरग

१. स० पा०—आसी जाव विहरइ ।

२. अंड (क, ग) ।

३. ओ० सू० १४१ ।

४. स० पा०—अहम्मिए जाव दुप्पडियाणदे ।

५. पत्थियापडिए (क, ख, ग, घ) ।

६. अडयाइ (क); ।

७. वि० १।३।२० ।

८. अंडयाइ (क) ।

९. कडुसु-(क); कंडूएसु (ग) ।

- च जाइं च सीधु च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजे-
माणे विहरइ ॥
२२. तए ण से निन्तए अंडवाणियए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहुं
पावकम्म समज्जिणित्ता एगं वाससहस्सं परमाउं पालइत्ता कालमासे काल
किच्चा तच्चाए पुढवीए उक्कोसेण^१ सत्तसागरोवमठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए
उववण्णे ॥

अभगसेणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

२३. से ण तओ अणतरं उव्वट्टित्ता इहेव सालाडवीए चोरपल्लीए विजयस्स चोर-
सेणावइस्स खंदसिरीए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥
२४. तए ण तीसे खदसिरीए भारियाए अण्णया कयाइ तिण्ह मासाणं बहुपडिपुण्णाण
इमे एयारूवे दोह्ले पाउव्भूए—घण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ^२ 'जाओ णं'^३ बहूहि
मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणमहिलाहि, अण्णाहि य चोरमहिलाहि
सद्धि सपरिवुडा ण्हाया^४ •कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल^०-पायच्छित्ता
सव्वालंकारविभूसिया विउल असणं पाण खाइमं साइमं सुरं च महु च मेरगं च
जाइं च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजे-
माणी विहरति । जिमियभुत्तुरागया^५ पुरिसनेवत्था^६ सण्णद्ध-वद्ध^७ •वम्मियकवइया
उप्पीलियसरासणपट्टीया पिणद्धगेवेज्जा विमलवरवद्ध-चिघपट्टा गहियाउह^० प्प-
हरणावरणा भरिएहि, फलएहि निक्कट्टाहि^८ असीहि, अंसागएहितोणेहि, सज्जीवेहि
असागएहि घणूहि, समुक्खित्तेहि सरेहि, समुल्लालियाहि^९ दामाहि^{१०}, ओसारि-
याहि^{११} ऊरुघटाहि, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं^{१२} महया उक्किट्टि^{१३}—•सीहणाय-बोल-
कलकल-रवेण पक्खुभियमहा^० समुद्धरवभूय पिव करेमाणीओ सालाडवीए
चोरपल्लीए सव्वओ समंता ओलोएमाणीओ-ओलोएमाणीओ आहिडमाणीओ-
आहिडमाणीओ दोहलं विणेति । तं जइ अहं पि जाव दोहलं विणिएज्जामि^{१४}

१. उक्कोस (क); उक्कोसे (ख, ग, घ) ।

२. पू०—वि० १।२।२४ ।

३. जाण (क, ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

५. ० गयाओ (ख, ग, घ) ।

६. ० नेवत्तिया (क, ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—सण्णद्धवद्ध जाव प्पहरणा^० ।

८. निक्किट्टाहि (ख) ।

९. समुल्लासियाहि (वृ) ।

१०. दामाहि दाहाहि (ख); दाहाहि (वृपा) ।

११. लदियाहि (क, ग) ।

१२. वज्जमाणेणं २ (ख, ग, घ) ।

१३. सं० पा०—उक्किट्टि जाव समुद्ध^०, उक्किट्ट
(ग) ।

१४. विणेज्जामि (क), विणीज्जामि (ख, ग, घ) ।

त्ति कट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणसि सुक्का भुक्खा जाव' अट्टज्जाणीव-
गया भूमिगयदिट्ठीया भियाड ॥

२५. तए णं से विजए चोरसेणावई खदसिरिभारियं ओहयमणसकप्प जाव' भियाय-
माणि पासइ, पासित्ता एव वयासी—किं ण तुम देवाणुप्पिए ! ओहयमणसकप्पा
जाव भूमिगयदिट्ठीया भियासि ?
२६. तए ण सा खदसिरी विजय चोरसेणावइ एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया !
मम तिण्हं मासाण बहुपडिपुण्णाण दोहले पाउव्भूए जाव' भूमिगयदिट्ठीया
भियामि ॥
२७. तए ण से विजए चोरसेणावई खदसिरीए भारियाए अतिए एयमट्ट सोच्चा
निसम्म खदसिरिभारियं एव वयासी—अहासुह देवाणुप्पिए ! त्ति एयमट्ट
पडिसुणेइ ॥
२८. तए णं सा खदसिरिभारिया विजएण चोरसेणावइणा अब्भणुण्णाया समाणी
हट्टुट्टा व्हहिं मित्त'-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणमहिलाहिं^०, अण्णाहि
य व्हहिं चोरमहिलाहिं सद्धि सपरिवुडा ण्हाया जाव' विभूसिया विउल असण
पाण खाइम साइम सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधु च पसण च आसाए-
माणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजेमाणी विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागया
पुरिसनेवत्था सण्णद्ध-वद्धवम्मियकवइया जाव' आहिडमाणी दोहल विणेइ ॥
२९. तए ण सा खदसिरिभारिया संपुण्णदोहला समाणियदोहला विणीयदोहला
विच्छिण्णदोहला^० सपण्णदोहला त गव्भ सुहसुहेण परिवहइ ॥
३०. तए ण खंदसिरी चोरसेणावइणी नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण दारग पयाया ॥
३१. तए ण से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स महया इड्डीसक्कारसमुदएण
दसरत्त ठिइवडियं करेइ ॥
३२. तए ण से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स एक्कारसमे दिवसे विउल असण
पाण खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-
परियण आमतेइ, आमतेत्ता जाव' तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-
परियणस्स पुरओ एव वयासी—जम्हा ण अम्ह इमसि दारगसि गव्भगयसि
समाणसि इमे एयारुवे दोहले पाउव्भूए, तम्हा ण होउ अम्ह दारए अब्भगसेणे
नामेण ।

१. वि० १।२।२४ ।

२. वि० १।२।२५ ।

३. वि० १।३।२४ ।

४. स० पा०—मित्त जाव अण्णाहि ।

५. वि० १।३।२४ ।

६. वि० १।३।२४ ।

७. वोच्छिण्ण० (क, ख, घ) ।

८. ठित्तिपडित्त (क, वृ) ।

९. ना० १।७।६ ।

- ३३ तए ण से अमग्गसेणे कुमारे पचघाईपरिग्गहिए जाव' परिवड्डइ ॥
३४. तए ण से अमग्गसेणे कुमारे उम्मुक्कवालभावे यावि होत्था । 'अट्ट दारियाओ जाव अट्टओ दाओ । उप्पि भुंजइ'^१ ॥
- ३५ तए ण से विजए चोरसेणावई अण्णया कयाइ कालधम्मणा सजुत्ते ॥
- ३६ तए ण से अमग्गसेणे कुमारे पचहिं चोरसएहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कदमाणे विलवमाणे विजयस्स चोरसेणावइस्स महया इड्डीसक्कारसमुदएण नीहरण करेइ, करेत्ता वहुइ लोइयाइं मयकिच्चाइ करेइ, करेत्ता केणइ' कालेण अप्पसोए जाए यावि होत्था ॥
३७. तए ण ताइ पच्चं चोरसयाइ अण्णया कयाइ अमग्गसेणे कुमारं सोलाडवीए चोरपल्लीए महया-महया चोरसेणावइत्ताए अभिसिचति ॥
- ३८ तए ण से अमग्गसेणे कुमारे चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव' महव्वलस्स रण्णो अभिक्खण-अभिक्खण कप्पाय गिण्हइ ॥
३९. तए ण ते जाणवया पुरिसा अमग्गसेणेण चोरसेणावइणा बहुगामघायणाहिं ताविया' समाणा अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । अमग्गसेणे चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरिल्ल जणवय बहुहिं गामघाएहिं जाव' निद्धण करेमाणे विहरइ । त सेय खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महव्वलस्स रण्णो एयमट्ट विण्णवित्तए' ॥
- ४० तए ण ते जाणवया पुरिसा एयमट्टं अण्णमण्णेण' पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता महत्थ महग्घ मह्रिहं रायारिह पाहुडं गिण्हति, गिण्हित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे तेणेव उवागया'^{१०} महव्वलस्स रण्णो तं महत्थ जाव पाहुडं उवणेत्ति,

१. वि० १।२।४६ ।

२ 'अट्टदारियाओ' त्ति, अस्यायमर्थं—'तए ण तस्स अमग्गसेणस्स कुमारस्स अम्मपियरो अमग्गसेण कुमारं सोहणसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि अट्टहिं दारियाहिं सद्धिं एगदिवमेण पाणिं गिण्हाविसु' त्ति, यावत्करणादिद इश्यं—'तए ण तस्स अमग्गसेणस्स कुमारस्स अम्मपियरो इमं एयारूव पीईदाण दलयति' त्ति 'अट्टओ दाओ' त्ति अण्टपरिमाणमस्येति अण्टको दायो—दान वाच्य इति शेष, स चैवम्—'अट्ट हिरण्णकोडीओ अट्ट सुवण्णकोडीओ' इत्यादि यावत् 'अट्ट पेसणकारियाओ अण्ण च विपुलघणकणगरयणमणिमोत्तियसख-सिलप्पवालरत्तरयणमाइय सतसारसावएज्ज'

मिति, 'उप्पि भुंजइ' त्ति अस्यायमर्थं.—'तए ण से अमग्गसेणे कुमारे उप्पि पासाय-वरगए फुट्टमाणेहिं मुयगमत्थएहिं वरतरुण-सपउत्तेहिं वत्तीसइवद्धेहिं नाडएहिं उवगिज्ज-माणे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुवभव-माणे विहरइ' त्ति (वृ) ।

३. × (क) ।

४. वि० १।३।७-९ ।

५. °घायावणाहिं (ख, ग, घ) ।

६. तासिता (क) ।

७. वि० १।३।९ ।

८. निवेयित्तए (क); निवेएत्तए (ग) ।

९. अण्णोण्णं (ग) ।

१०. उवागया जेणेव महव्वले राया तेणेव उवागया (ख, ग, घ) ।

- उवणेत्ता करयलं^१परिगहिय सिरसावत्त मत्थए^२ अंजलि कट्टु महब्बलं राय
 एव वयासी—एव खलु सामी ! सालाडवीए चोरपल्लीए अभगसेणे चोरसेणावई
 अम्हे वहूहि गामघाएहि य जाव^३ निद्धणे करेमाणे विहरइ । त इच्छामि ण
 सामी ! तुज्झ वाहुच्छायापरिगहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिव-
 सित्तए त्ति कट्टु पायवडिया पंजलिउडा^४ महब्बलं रायं एयमट्टं विण्णवेति ॥
- ४१ तए णं से महब्बले राया तेसिं जाणवयाणं^५ पुरिसाणं अंतिए एयमट्टु सोच्चा
 निसम्म आसुरुत्ते^६ •रुट्टे कुविए चंडिकिए^७ मिसिमिसेमाणे^८ तिवलियं भिउडि
 निडाले साहट्टु दड सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया !
 सालाडवि चोरपल्लि विलुपाहि, विलुपित्ता अभगसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं
 गेण्हाहि, गेण्हत्ता ममं उवणेहि^९ ॥
- ४२ तए णं से दडे तह त्ति एयमट्टं पडिसुणेइ ॥
- ४३ तए णं से दंडे वहूहि पुरिसेहिं^{१०} सण्णद्ध-वद्धवम्मियकवएहिं जाव^{११} गहियाउह-
 पहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे मगइएहिं^{१२} फलएहिं^{१३}, •निक्कट्टाहिं असीहिं,
 असागएहिं तोणेहिं, सज्जीवेहिं अंसागएहिं घणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं,
 समुल्लालियाहिं दामाहिं, ओसारियाहिं ऊरुघटाहिं^{१४}, छिप्पतूरेण वज्जमाणेण
 महया उक्किट्टि^{१५}—•सीहणाय-बोल-कलकल-रवेण पक्खुभियमहासमुद्धरवभूय
 पिव^{१६} • करेमाणे पुरिमताल नयरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव
 सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पाहारेत्थ^{१७} गमणाए ॥
४४. तए ण तस्स अभगसेणस्स चोरसेणावइस्स चारपुरिसा इमीसे कहाए लद्धट्टा
 समाणा जेणेव सालाडवी चोरपल्ली, जेणेव अभगसेणे चोरसेणावई तेणेव
 उवागया करयलं^{१८}परिगहिय सिरसावत्त मत्थए अंजलि कट्टु अभगसेण
 चोरसेणावइं^{१९} एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । पुरिमताले नयरे
 महब्बलेण रण्णा महयाभडचडगरेण दडे आणत्ते—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ।

१ स० पा०—करयलं ।

२ वि० १।३।६ ।

३ पजलियडा (क) ।

४ जाणवदाण (क) ।

५ स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे,
 आसुरुत्ते (ग, घ) ।

६ मिसिमिसेमाणे (ख) ।

७ उवणेहिति (क), उवणेहिं (ख, ग, घ) ।

८ पुरिसेहिं सद्धिं (क, ग घ) ।

९ वि० १।२।१४ ।

१०. वि० १।३।२४ अस्य स्थाने 'भरिएहिं' इति
 पाठ । शब्दभेदेपि अनयो वृत्तिकारेण
 एक एव अर्थः कृतः—'भरिएहिं' इति हस्त-
 पाशितै, 'मगइएहिं' ति हस्तपाशितै ।

११. स० पा०—फलएहिं जाव छिप्पतूरेण ।

१२ उक्किट्ट (ख, ग, घ), स० पा०—उक्किट्टि
 जाव करेमाणे ।

१३ पाहारेत्थ (क) ।

१४ स० पा०—करयल जाव एव ।

सालाडविं चोरपल्लि विलुपाहि, अभग्गसेण चोरसेणावइं जीवग्गाहं गेण्हाहि, गेण्हत्ता मम उवणेहि । तए णं से दडे महयाभडचडगरेण जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४५ तए ण से अभग्गसेणे चोरसेणावई तेसि चारपुरिसाण अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म पच्च चोरसयाइ सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । पुरिमताले नयरे महव्वलेण रण्णा महयाभडचडगरेणं दडे आणत्ते जाव' तेणेव पहारेत्थ गमणाए' । त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह त दड सालाडविं चोरपल्लि असपत्त अतरा चेव पडिसेहित्तए ॥

४६ तए ण ताइ पच्च चोरसयाइ अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तहत्ति' •एयमट्ट° पडिसुणेति ॥

४७ तए ण से अभग्गसेणे चोरसेणावई विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता पच्चहि चोरसएहिं सद्धि ण्हाए' •कयवलिकम्मे कयकोउय-मगल°-पायच्छित्ते भोयणमडवसि तं विउल असणं पाणं खाइम साइम सुर च महु च मेरग च जाइ च सीघु च पसण्ण च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागए वि य ण समाणे आयते चोक्खे परमसुडभूए पच्चहिं चोरसएहिं सद्धि अल्ल चम्म दुरुहइ, दुरुहित्ता सण्णद्ध-वद्ध'•वम्मियकवएहिं उप्पीलियसरासणपट्टीएहिं पिणद्धगेवेज्जेहिं विमलवरवद्ध-चिधपट्टेहिं गहियाउह°पहरणेहिं' मगइएहिं जाव° उक्किट्टि-सीहनाय-वोल-कलकलरवेण' पच्चावरण्हकालसमयसि सालाडवीओ चोरपल्लीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणिए त दडं पडिवालेमाणे-पडिवालेमाणे चिट्ठइ ॥

४८ तए ण से दडे जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभग्गसेणेण चोरसेणावइणा सद्धि संपलग्गे यावि होत्था ॥

४९ तए ण से अभग्गसेणे चोरसेणावई त दडं खिप्पामेव हय-महिय'-•पवरवीर-घाइय-विवडियचिधधयपडागं दिसोदिसि° पडिसेहेति' ॥

५०. तए ण से दडे अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा हय-''•महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिधधयपडागे दिसोदिसि° पडिसेहिए समाणे अथामे अबले अवीरिए

१. वि० १।३।४४ ।

२. आगते ततेण अभग्गसेणे ताइ पच्चोरसयाइं एव वयासी (क, ख, ग), गमणाए आगते ततेण से अभग्गसेणे ताइ पच्चोरसयाइ एव वयासी (घ) ।

३. स० पा०—तहत्ति जाव पडिसुणेति ।

४ स० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

५ स० पा०—सण्णद्धवद्ध जाव पहरणेहि ।

६. पहरणे (क, घ) ।

७. वि० १।३।४३ ।

८ पू०—१।३।४३ ।

९ स० पा०—महिय जाव पडिसेहेति ।

१०. विप्पडिसेहेइ (वृ) ।

११. स० पा०—हय जाव पडिसेहिए ।

अपुरिसक्कारपरक्कमे अघारणिज्जमिति कट्टु जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महब्बले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल^१ परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु महब्बलं राय^० एव वयासी—एव खलु सामी ! अभगसेणे चोरसेणावई विसमदुग्गहण ठिए गहियभत्तपाणिए, नो खलु से सक्का केणवि^२ सुवहुएणवि आसवलेण वा हत्थिवलेण वा जोहबलेण वा 'रह्वलेण वा चाउरगेण पि'^३ [सेणवलेण ?] उरउरेण गिण्हित्तए । ताहे सामेण यं^४ भेएण यं^५ उवप्पयाणेण यं^६ विस्सम्भमाणेउ पवत्ते^७ यावि होत्था । जे वि य से अंभितरगा सीसगभमा^८, मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियण च विउलेण-धण-कणग-रयण-सतसार-सावएज्जेण^९ भिदइ, अभगसेणस्स यं^{१०} चोरसेणावइस्स अभिक्खण-अभिक्खण महत्थाइ महग्घाइ महरिहाइ रायारिहाइ पाहुडाइ पेसेइ, अभगसेण चोरसेणावइ वीसम्भमाणेइ ॥

५१ तए ण से महब्बले राया अणया कयाइ पुरिमताले नयरे एग मह महइमहालिय कूडागारसालं कारेइ^{११}—अणेगखभसयसन्निविट्टु पासाईय दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूव ॥

५२. तए ण से महब्बले राया अणया कयाइ पुरिमताले नयरे उस्सुक्क^{१२} उक्कर अभडप्पवेस अदडिमकुदडिम अधरिमं अघारणिज्ज अणुद्धयमुइग अमिलाय-मल्लदाम गणियावरनाडइज्जकलिय अणेगतालाचराणुचरिय पमुइयपक्कीलिया-भिरामं जहारिह^{१३} दसरत्त पमोय उग्घोसावेइ, उग्घोसावेत्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सालाडवीए चोरपल्लीए । तत्थ ण तुब्भे अभगसेण चोरसेणावइ करयल^{१४} परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु^{१५} एव वयह^{१६}—एव खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रणो उस्सुक्के जाव दसरत्ते पमोए उग्घोसिए । त किं ण देवाणुप्पिया ! विउल असणं पाण खाइम साइम पुप्फ-वत्थ-गघ-मल्लालकारे य इह ह्ववमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था^{१७} ?

१ सं पा०—करयल^० ।

२. केणइ (ख, ग, घ) ।

३. × (क) ।

४, ५, ६. वा (ग) ।

७. पयत्ते (क) ।

८. सीसगसमा (घ), तान् इति शेषः (वृ) ।

९. सावएजेण (क, ग) ।

१०. × (क, ग) ।

११. करेइ (क, ख, घ) ।

१२. सं पा०—उस्सुक्क जाव दसरत्त, उस्सुकं (क) सर्वत्र ।

१३ सं पा०—करयल जाव एवं ।

१४. वदाह (क) ।

१५ गच्छित्ता (क, ख, ग, घ); मुद्रितवृत्ती

- ५३ तए ण ते कोडुवियपुरिसा महव्वलस्स रण्णो करयल'•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अजलिं कट्टु एव सामि । त्ति आणाए विणएण वयण° पडिसुणेनि, पडिसुणेत्ता पुरिमतालाओ नयरओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता नाइविकिट्ठेहिं अद्धानेहि सुहेहिं वसहिपायरामेहि जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अभग्गसेण चोरसेणावड करयल'•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महव्वलस्स रण्णो उस्सुक्के जाव' दसरत्ते पमोए उग्घोसिए । त किं ण देवाणुप्पिया ! विउल असणं पाण खाडम साइम पुप्फ-वत्थ-गव-मल्लालकारे य इह हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था ?
- ५४ तए ण से अभग्गसेणे चोरसेणावई तं कोडुवियपुरिसे एव वयासी—अहं ण देवाणुप्पिया ! पुरिमताल नयर सयमेव गच्छामि । ते कोडुवियपुरिसे सक्कारेड सम्माणेइ पडिविसज्जेइ ॥
- ५५ तए ण से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्त'•नाड-नियग-सयण-सवंधि-परियणेहिं सद्धि° परिवुडे ण्हाए' •कयवलिकम्मे कयकोउय-मगल°-पायच्छित्ते सव्वालकारविभूसिए सालाडवीओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महव्वले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'•परिग्गहिय सिरसावत्तं मत्थए अजलिं कट्टु° महव्वल राय जएण विजएण वद्धावेड, वद्धावेत्ता महत्थं' •महग्घ महरिहं रायारिहं° पाहुड उवणेइ ॥
५६. तए ण से महव्वले राया अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तं महत्थं' •महग्घ महरिहं रायारिहं पाहुड° पडिच्छइ, अभग्गसेणं चोरसेणावइं सक्कारेड सम्माणेइ विसज्जेइ, कूडागारसालं च से आवसहिं° दलयइ ॥
- ५७ तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई महव्वलेण रण्णा विसज्जिए समाणे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ ॥
- ५८ तए ण से महव्वले राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

'उदाहु सयमेव गच्छित्ता उताहो स्वयमेव गमिष्यसि' । हस्तलिखितवृत्ती—'गच्छित्था स्वयमेव गमिष्यथ' इत्यस्ति ।

१. स० पा०—करयल जाव पडिसुणेनि ।
 २. नातिविक° (ख), नाइविग° (वृ) ।
 ३. स० पा०—करयल जाव एव ।
 ४. वि० १।३।५२ ।

५. स० पा०—मित्त जाव परिवुडे ।
 ६. स० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।
 ७. स० पा०—करयल° ।
 ८. स० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
 ९. स० पा०—महत्थं जाव पडिच्छइ ।
 १०. वसहिं (क) ।

- गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाण खाइम साइम उवक्खडावेह, उवक्खडावेत्ता त विउल असणं पाण खाइमं साइम सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च सुवहु पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकार च अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स कूडागारसालाए उवणेह ॥
- ५६ तए णं ते कोडुवियपुरिसा करयल^१ परिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अज्जलिं कट्ठु^२ जाव^३ उवणेति ॥
- ६० तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई वहुहिं मित्त^४-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणेहि^५ सद्धि सपरिवुडे ण्हाए जाव^६ सव्वालकारविभूसिए तं विउल असण पाण खाइम साइमं सुर च महु च मेरगं च जाइ च सीधु च पसण्ण च आसाए-माणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे पमत्ते विहरइ ॥
- ६१ तए ण से महव्वले राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे^७ देवाणुप्पिया ! पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइ पिहेह, पिहेत्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइ जीवग्गाह गिण्हह, गिण्हत्ता मम उवणेह ॥
- ६२ तए णं ते कोडुवियपुरिसा करयल^१ परिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अज्जलिं कट्ठु एव सामि ! त्ति आणाए विणएण वयण^८ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइ पिहेति, अभग्गसेण चोरसेणावइ जीवग्गाह गिण्हति, गिण्हत्ता महव्वलस्स रण्णो उवणेति ॥
- ६३ तए ण से महव्वले राया अभग्गसेण चोरसेणावइ एएण विहाणेणं वज्ज आणवेइ ॥
- ६४ एव खलु गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरा पोरणाण^९ दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाणं पावाण कडाण कम्माणं पावग फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे^{१०} विहरइ ॥

अभग्गसेणस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

६५. अभग्गसेणे ण भते ! चोरसेणावई कालमासे काल किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई सत्ततीस वासाइ परमाउ पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे कए समणे कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोस^१ सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए^२ उववज्जिहिइ ।

१. सं० पा०—करयल^० ।

२. वि० १।३।५८ ।

३. सं० पा०—मित्त^० ।

४. वि० १।३।५५ ।

५. तुम (ग) ।

६. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेति ।

७. सं० पा०—पोरणाण जाव विहरइ ।

८. सं० पा०—उक्कोस नेरइएसु ।

से ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता, एव ससारो जहा पढमे जाव^१ •वाउ-तेउ-आउ-
पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उदाइत्ता-उदाइत्ता तत्येव भुज्जो-भुज्जो पच्चा-
याइस्सइ । °

तओ उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए सूयरत्ताए पच्चायाहिइ । से ण तत्य
सोयरिएहि जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्येव वाणारसीए नयरीए सेट्टिकुलंसि
पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । से णं तत्य उम्मुक्कवालभावो, एव जहा पढमे जाव^२
अत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

६६ १•एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव^३ सपत्तेण दुहविवागाण
तइयस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति वेमि ॥ °

—

१. वि० १।१।७०, स० पा०—जाव पुढवी ।

२. वि० १।१।७० ।

३. स० पा०—निक्खेवओ ।

४. ना० १।१।७ ।

चउत्थं अज्भयणं

सगडे

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भते^१ । •समणेण भगवया महावीरेण जाव^२ सपत्तेण दुहविवागाण तच्चस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स ण भते । अज्भयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तेण ण से सुहम्मे अणगारे जव्व-अणगार एव वयासी^३—एव खलु जव्व । तेणं कालेण तेण समएण साहजणी नाम नयरी होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धा ॥
३. तीसे ण साहजणीए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देवरमणे नाम उज्जाणे होत्था ॥
४. तत्थ ण अमोहस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था—पोराणे ॥
५. तत्थ ण साहजणीए नयरीए महचदे नाम राया होत्था—महयाहिमवत-महंत-मलय-मदर-महिदसारे ॥
६. तस्स ण महचदस्स रण्णो सुसेणे नाम अमच्चे होत्था—साम-भेय-दड-उवप्पयाण-नीति-सुप्पउत्त-नयविहण्ण^४ ॥
७. तत्थ ण साहजणीए नयरीए सुदरिसणा नाम गणिया होत्था—वण्णओ^५ ॥
८. तत्थ ण साहजणीए नयरीए सुभद्दे नाम सत्थवाहे होत्था—अड्ढे ॥
९. तस्स ण सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा नाम भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरा ॥
१०. तस्स ण सुभद्दस्स सत्थवाहस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सगडे नाम दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरे ॥

१ स० पा०—चउत्थस्स उक्खेवओ ।

२. ना० १।१।७ ।

३. पू०—ना० १।१।१६ ।

४ वि० १।२।७ ।

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए^१ । परिसा राया य निग्गए । घम्मो कहिओ । परिसा गया ॥ -

सगडस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव^२ रायमग्गं^३ ओगाढे । तत्थ णं हत्थी, आसे, अण्णे य वहवे पुरिसे पासड^४ । तेसि च ण पुरिसाणं मज्झगय पासइ एग सइत्थियं पुरिस अवओडयवंघणं उक्खित्तं^५-कण्णनास जाव^६ खडपडहेण उग्घोसिज्जमाणं^७ •इम च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेड—तो खलु देवाणुप्पिया ! सगडस्स दारगस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति ॥

सगडस्स छन्नियभव-अण्णग-पदं

१३. तए णं भगवओ गोयमस्स^० चिंता तहेव जाव^१ भगवं वागरेइ—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेण तेणं समएणं इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे छगलपुरे नाम नयरे होत्था ॥

१४. तत्थ ण सीहगिरी नाम राया होत्था—महयाहिमवत-महंत-मलय-मदर-महिंदसारे ॥

१५. तत्थ णं छगलपुरे नयरे छन्निए नामं छागलिए परिवसइ—अड्ढे जाव^२ अपरिभूए, अहम्मिए जाव^३ दुप्पडियाणदे ॥

१६. तस्स ण छन्नियस्स छागलियस्स वहवे [वहूणि ?] अयाण य एलयाण^४ य रोज्झाण य 'वसभाण य'^५ ससयाण य सूयराण य 'पसयाण य सिहाण य'^६ हरिणाण य मयूराण य महिसाण य सयवद्धाणि सहस्सवद्धाणि य जूहाणि वाडगसि सनिरुद्धाइ^७ चिट्ठति ।

१. समोसरणं (क, ख, घ) ।

८ वि० १।२।१५, १६ ।

२. वि० १।२।१२-१४ ।

९. ओ० सू० १४१ ।

३. रायमग्गे (ख, घ) ।

१०. वि० १।१।४७ ।

४. पू०—वि० १।२।१४ ।

११. एलाण (क, ख, ग, घ) ।

५. उक्खत्त (ख), उक्कड (ग); उक्खित्त (घ) ।

१२. पसयाण य (क), × (ख, ग) ।

६. वि० १।२।१४ ।

१३. सिहाण य (क); × (ख, ग); पसुयाण^० (घ) ।

७. स० पा०—उग्घोसिज्जमाणं जाव चिंता ।

१४. निरुद्धाइ (क), निरुद्धा (ख, ग) ।

अण्णे य तत्थ वह्वे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा वह्वे अए य जाव महिसे य सारक्खमाणा संगोवेमाणा^१ चिट्ठति^२ ।

अण्णे य से वह्वे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा वह्वे अए य जाव महिसे य जीवियाओ ववरोवेति, ववरोवेत्ता मसाइ कप्पणीकप्पियाइ^३ करेति, करेत्ता छन्नियस्स छागलियस्स उवणेति ।

अण्णे य से वह्वे पुरिसा ताइ वहुयाइ अयमसाइ जाव महिसमसाइ य तवएसु य कवल्लीसु य कडुसु^४ य भज्जणेसु य इगालेसु य तलेति य भज्जेति य सोल्लेति य, तलेत्ता य भज्जेत्ता य सोल्लेत्ता य तओ रायमग्गसि वित्ति कप्पेमाणा विहरंति ।

अप्पणा वि य^५ ण से छन्निए छागलिए तेहिं वहीहिं अयमसेहि य जाव महिस-मसेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुर च महु च मेरग च जाइ च सीघु च पसणं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ ॥

१७. तए ण से छन्निए छागलिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहु पावकम्म कलिकलुस समज्जिणित्ता सत्त वाससयाइ परमाउ पालइत्ता कालमासे काल किच्चा चोत्थीए पुढवीए उक्कोसेण दससागरोवमठिडएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

सगडस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१८ तए ण सा सुभदस्स सत्थवाहस्स भद्दा भारिया जार्यानिंदुया यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणिहायमावज्जति ॥

१९ तए णं से छन्निए छागलिए चोत्थीए पुढवीए अणतर उव्वट्ठित्ता इहेव साहजणीए नयरीए सुभदस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुञ्चिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

२० तए णं सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण दारग पयाया ॥

२१ तए ण त दारग अम्मापियरो जायमेत्त चेव सगडस्स हेट्ठओ ठवेति, दोच्च पि गिण्हावेति, अणुपुव्वेण सारक्खति सगोवेति सवड्ढेति, जहा उज्जिभयए जाव^६

१ सगोयमाणा (क) ।

३ कप्पणी ° (ख) ।

२ चिट्ठति । अण्णे य से वह्वे पुरिसा अयाण य जाव गिहसि सनिरुद्धा चिट्ठति (क, ग, घ), असौ पाठ. नावश्यक प्रतिभाति ।

४. कडुसु (ख, ग) ।

५ × (क) ।

६. वि० १।२।४७,४८ ।

अस्यार्थं. पूर्वपाठे समागतोस्ति ।

जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्तए चेव सगडस्स हेट्टुओ ठविए, तम्हा ण होउ अम्ह दारए सगडे नामेण । सेस जहा' उज्झियए । सुभट्टं लवणसमुद्धे कालगए, माया वि कालगया । से वि साओ गिहाओ निच्छूडे ॥

२२. तए ण से सगडे दारए साओ गिहाओ निच्छूडे समाणे^१ •साहंजणीए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु जूयखलएसु वेसघरएसु पाणागारेसु य सुहसुहेणं परिवड्डइ ॥
२३. तए णं से सगडे दारए अणोहट्टए अणिवारिए सच्छदमई सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी चोर-जूय-वेस-दारप्पसगी जाए यावि होत्था ॥
२४. तए णं से सगडे अण्णया कयाइ^० सुदरिसणाए गणियाए सद्धि संपलगे यावि होत्था ॥
२५. तए ण से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारगं अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता सुदरिसणं गणिय अग्गिभतरिय ठवेइ,^१ ठवेत्ता सुदरिसणाए गणियाए सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥
२६. तए ण से सगडे दारए सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे^० •सुदरिसणाए गणियाए मुच्छिए गिट्ठे गट्ठिए अज्झोववण्णे अण्णत्थ कत्थइ सुइं च रइ च धिइ च अलभमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसाणे तदट्ठो-वउत्ते तयप्पियकरणे तवभावणाभाविए सुदरिसणाए गणियाए वहूणि अतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥
२७. तए ण से सगडे दारए अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए अतर लभेइ, लभेत्ता सुदरिसणाए गणियाए गिहं रहसियं^० अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुदरिसणाए सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥
२८. इमं च ण सुसेणे अमच्चे ण्हाए जाव^१ विभूसिए मणुस्सवग्गुरापारिक्खित्ते^१ जेणेव सुदरिसणाए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडं दारयं सुदरिसणाए गणियाए सद्धि उरालाइ भोगभोगाइ भुजमाण पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते जाव^१ मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु सगडं दारय पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि^० •मुट्ठि-जाणु-कोप्पर-पहारसभग्गं^०

१. वि० १।२।४६-५६ ।

सुदरिसणाए गिहं ।

२. सं० पा०—समाणे सिंघाडग तहेव जाव

५. वि० १।२।६४ ।

सुदरिसणाए ।

६. मणुस्सवग्गुराए (ख, ग, घ) ।

३. ठवेइ (क) ।

७. वि० १।२।६४ ।

४. सं० पा०—निच्छुभेमाणे अण्णत्थ कत्थइ

८. सं० पा०—अट्ठि जाव महियगत्तं ।

सुइं वा अलभ अण्णया कयाइ रहस्सियं

महियगतं करेइ, करेत्ता अवओडयवधण करेइ, करेत्ता जेणेव महचदे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता करयल^१ परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु महचद रायं^२ एव वयासी—एव खलु सामी ! सगडे दारए मम अतेउरसि^३ अवरद्धे ॥

- २९ तए ण से महचदे राया सुसेणं अमच्च एवं वयासी—तुम चेव ण देवाणुप्पिया ! सगडस्स दारगस्स दड वत्तेहि^४ ॥
३०. तए ण से सुसेणे अमच्चे महचदेण रण्णा अब्भणुण्णाए समाणे सगड दारय सुदरिसण च गणिय एएण विहाणेण वज्ज आणवेइ ॥
- ३१ त एव खलु गोयमा ! सगडे दारए पुरा पोरणाणं^५ दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाण पावाणं कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणे^६ विहरइ ॥

सगडस्स आगामिभाव-वण्णग-पद

- ३२ सगडे ण भते ! दारए कालगए कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! सगडे ण दारए सत्तावण्ण वासाइ परमाउ पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे एगं मह अयोमय तत्त समजोइभूय इत्थिपडिम अवतासाविए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ॥
३३. से णं तओ अणंतर उव्वट्टिता रायगिहे नयरे मातगकुलसि जमलत्ताए^७ पच्चायाहिइ^८ ॥
३४. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहस्स^९ इमं एयारूव नामधेज्ज करिस्सति—तं होउ णं दारए सगडे नामेण, होउ णं दारिया सुदरिसणा नामेण ॥
३५. तए ण से सगडे दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते^{१०} भविस्सइ ॥
३६. तए ण सा सुदरिसणावि दारिया उम्मुक्कवालभावा विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ-सरीरा भविस्सइ ॥

१. स० पा०—करयल जाव एवं ।

२. अतेपुरियंसि (क, घ) ।

३. वत्तेहि (क, घ) ।

४. स० पा०—पोरणाण जाव विहरइ ।

५. जुगलत्ताए (घ) ।

६. पयायाहिति (ग) ।

७. निव्वत्तवारसगस्स (क, ख, ग, घ) ।

८. ०प्पत्ते अल भोगसमत्ये यावि (वृ) ।

- ३७ तए ण से सगडे दारए सुदरिसणाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य मुच्छिए गिद्धे गडिए अज्भोववण्णे सुदरिसणाए भइणीए^१ सद्धि उरालाईं माणुस्सगाड भोगभोगाइ भुजमाणे विहरिस्सइ ॥
३८. तए ण से सगडे दारए अण्णया कयाइ सयमेव कूडगाहत्तं उवसपज्जित्ता णं विहरिस्सइ ॥
- ३९ तए ण से सगडे दारए कूडगाहे भविस्सइ—अहम्मिए जाव^२ दुप्पडियाणदे, एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहु पावकम्म समज्जित्ता कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ^३, ससारो तहेव जाव^४ •वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्स-खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ^० ।
से ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिइ ।
से ण तत्थ मच्छवघिएहि वहिए तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्टिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । बोहिं, पव्वज्जा, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्जिभहिइ ॥

निक्खेव-पदं

- ४० “एवं खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव^५ सपत्तेणं दुहविवागाण चउत्थस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि^० ॥

१. भारियाए (क, ख); × (ग) ।

२. वि० १।१।४७ ।

३. उववन्ने (क, ख, ग, घ); अशुद्ध प्रतिभाति ।

४. वि० १।१।७०, स० पा०—जाव पुढवी ।

५. स० पा०—निक्खेवो ।

६. ना० १।१।७ ।

पंचमं अज्भयणं

बहस्सइदत्ते

उक्खेव-पदं

- १ '●जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^१ संपत्तेण दुह्विवागाण चउत्थस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पचमस्स ण भते ! अज्भयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए ण से सुहम्मे अणगारे जवू-अणगारं एव वयासी °—एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण कोसवी नाम नयरी होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धा । वार्हि चंदोतरणे उज्जाणे । सेयभट्ठे जक्खे ॥
३. तत्थ ण कोसंवीए नयरीए सयाणिए नामं राया होत्था—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिदसारे^२ । मियावई देवी ॥
४. तस्स णं सयाणियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए उदयणे नाम कुमारे होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरे^३ जुवराया ॥
५. तस्स ण उदयणस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था ॥
६. तस्स ण सयाणियस्स सोमदत्ते नामं पुरोहिए होत्था—रिउव्वेय-यज्जुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुसले ॥
७. तस्स णं सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ता नामं भारिया होत्था ॥
८. तस्स ण सोमदत्तस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए बहस्सइदत्ते नाम दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरे^४ ॥
९. तेण कालेण तेण समएणं समणे भगव महावीरे समोसडे^५ ॥

१. स० पा०—पचमस्स अज्भयणस्स उक्खेवओ । ५. पू०—वि० १।२।१० ।

२. ना० १।१।७ ।

६. समवसरण (क, ख, ग, घ), वि० १।२।११

३. पू०—ओ० सू० १४ ।

सूत्राघारेण असौ पाठ स्वीकृत ।

४. पू०—वि० १।२।१० ।

गोयमेण बहस्सइदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१० तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव जाव' रायमग्गमोगाढे तहेव पासइ हत्थी, आसे, पुरिसमज्जे' पुरिस । चित्ता । तहेव' पुच्छइ पुव्वभव । भगवं वागरेइ—

बहस्सइदत्तस्स महेसरदत्तभव-वण्णग-पदं

- ११ एवं खलु गोयमा । तेण कालेणं तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहेवासे सव्वओभद्दे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे' ॥
- १२ तत्थ ण सव्वओभद्दे नयरे जियसत्तू नाम राया होत्था ॥
- १३ तस्स ण जियसत्तुस्स रण्णो महेसरदत्ते' नामं पुरोहिए होत्था—रिउव्वेय'-यज्जुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुसले यावि होत्था ॥
१४. तए ण से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तुस्स रण्णो रज्जवलविवड्डुणट्टयाए कल्ला-कल्लि' एगमेग माहणदारय, एगमेग खत्तियदारय, एगमेग वइस्सदारय, एगमेगं सुद्धदारयं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसि जीवतगाण चेव हिययउंडए गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो सतिहोम करेइ ॥
१५. तए ण से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमीचाउद्दसीसु दुवे-दुवे माहण-खत्तिय-वइस्स-सुद्धे, चउण्ह मासाणं चत्तारि-चत्तारि, छण्ह मासाण अट्ठ-अट्ठ, सवच्छरस्स सोलस-सोलस ।
- जाहे-जाहे वि य ण जियसत्तू राया परवलेणं अभिजुज्जइ', ताहे-ताहे वि य ण से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसय माहणदारगाण, अट्ठसय खत्तियदारगाण, अट्ठसयं वइस्सदारगाण, अट्ठसय सुद्धदारगाण पुरिसेहि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसि जीवतगाण' चेव हिययउडियाओ गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो सतिहोम करेइ । तए ण से परवले खिप्पामेव विद्धसेइ' वा पडिसेहिज्जइ वा ॥
१६. तए ण से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे' एयसमायारे सुवहुं पावकम्म समज्जिणित्ता तीस वाससयाइ परमाउ पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा पचमाए' पुढवीए उक्कोसेण सत्तरससागरोवमट्ठिइए नरगे उववण्णे ॥

१. वि० १।२।१२-१४ ।

२. × (घ) ।

३. पू०—वि० १।२।१४-१६ ।

४. पू०—ओ० सू० १ ।

५. महिस्सर० (क) ।

६. रिच्चेद (क) ।

७. कल्लंकल्लं (क); कल्लाकल्लं (ग) ।

८. अभिजुज्जइ (ख, ग) ।

९. जीवतकाण (क); जीवताण (ख) ।

१०. विद्धसइ (ख, ग), विद्धसिज्जइ (क्व) ।

११. पचमीए (ग) ।

बहस्सइदत्तेस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

- १७ से ण तओ अणतर उवट्टिता इहेव कोसवोए नयरीए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ताए भारियाए पुत्तत्ताए उववण्णे ॥
- १८ तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहस्स 'इम एयाख्व' नाम-घेज्जं करेति—जम्हा ण अम्ह इमे दारए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए, तम्हा ण होउ अम्ह दारए वहस्सइदत्ते नामेण ॥
- १९ तए ण से वहस्सइदत्ते दारए पचधाईपरिग्गहिए जाव^१ परिवड्ढइ ॥
- २० तए ण से वहस्सइदत्ते दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणु-प्पत्ते होत्था । से ण उदयणस्स कुमारस्स पियवालवयस्सए यावि होत्था सहजायए सहवड्ढियए सहपसुकीलियए ॥
२१. तए ण से सयाणिए राया अण्णया कयाड कालधम्मणा सजुत्ते ॥
२२. तए ण से उदयणे कुमारे बहूहि राईसर^१-•तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्टि-सेणावइ^०-सत्थवाहप्पभिर्डीहिं सद्धिं सपरिवुडे रोयमाणे कदमाणे विलवमाणे सयाणियस्स रण्णो महया इड्ढीसक्कारसमुदएण नीहरण करेइ, करेत्ता बहूइ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेइ ॥
२३. तए ण ते वहवे राईसर^१-•तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्टि-सेणावइ^०-सत्थवाहप्पभित्तओ उदयण कुमारं महया-महया रायाभिसेएण अभिसिच्चति ॥
- २४ तए ण से उदयणे कुमारे राया जाए—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिंदसारे^४ ॥
२५. तए ण से वहस्सइदत्ते दारए उदयणस्स रण्णो पुरोहियकम्म करेमाणे सव्वट्टाणेषु सव्वभूमियासु अतेउरे य दिण्णवियारे जाए यावि होत्था ॥
२६. तए ण से वहस्सइदत्ते पुरोहिए उदयणस्स रण्णो अतेउर वेलासु य अवेलासु य कालेसु य अकालेसु य राओ य विआले य पविसमाणे अण्णया कयाइ पउमा-वईए देवीए सद्धिं सपलगे यावि होत्था । पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥
- २७ इमं च ण उदयणे राया ण्हाए जाव^१ विभूसिए जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वहस्सइदत्त पुरोहिय पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाण पासइ, पासित्ता आसुस्ते तिवलिय भिउडिं निडाले साहट्टु वहस्सइदत्त पुरोहिय पुरिसेहि गिण्हावेइ^५, •गिण्हावेत्ता

१. एमेयाख्व (घ) ।

२. वि० १।२।४९ ।

३. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह^० ।

४. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह^० ।

५. पू०—ओ० सू० १४ ।

६. वि० १।२।६४ ।

७. सं० पा०—गिण्हावेइ जाव एएण ।

अट्टि-मुट्टि-जाणु-कोप्परपहार-संभग्ग-महियगत्तं करेइ, करेत्ता अवओडगवघणं करेइ, करेत्ता ° एएणं विहाणेण वज्झ आणवेइ ॥

२८ एव खलु गोयमा ! वहस्सइदत्ते पुरोहिए पुरा पोरणाणं ° दुच्चिण्णाणं दुप्प-डिक्कताणं असुभाणं पावाणं कडाण कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणु-भवमाणे ° विहरइ ॥

वहस्सइदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पद

२९ वहस्सइदत्ते ण भत्ते ! पुरोहिए इओ कालगए समाणे कहिं गच्छहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! वहस्सइदत्ते णं पुरोहिए चोसट्टि वासाइं परमाउ पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे कए समाणे कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ° उक्कोससागरोवमट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ।

से णं तओ अणतरं उव्वट्टित्ता, एव संसारो जहा पढमे जाव वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उदाइत्ता-उदाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ ° ।

तओ हत्थिणाउरे नयरे मियत्ताए पच्चायाइस्सइ । से णं तत्थ वाउरिएहिं वहिए समाणे तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्टिकुलसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । वोहि, सोहम्मे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३०. ° एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तणं दुहविवागाणं पचमस्स अज्झयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ° ॥

—

१. सं० पा०—पोरणाण जाव विहरइ ।

५. वि० १।१।७० ।

२. दारए (क, ख, ग, घ) ।

६. पुमत्ताए (क) ।

३. नूलिभिण्णे (घ) ।

७ सं० पा०—निक्खेवो ।

४. म० पा०—पुढवीए मसारो तहेव पुढवी ।

८. ना० १।१।७ ।

छट्ठं अज्झयणं नंदिवद्धणे

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भते । ^१समणेण भगवया महावीरेण जाव^२ सपत्तेण दुह्विवागाण पचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स ण भते । अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ तए ण से सुहम्मि अणगारे जव्व-अणगार एव वयासी^३—एव खलु जव्व तेण कालेण तेणं समएण महुरा नाम नयरी । भडीरे उज्जाणे । सुदरिसणे^४ जक्खे । सिरिदामे राया । वधुसिरी भारिया । पुत्ते नदिवद्धणे कुमारे—अहीण^५-पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरे^६ जुवराया^७ ॥
- ३ तस्स सिरिदामस्स सुवधू नाम अमच्च्वे होत्था—‘साम-दड-भेय-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नयविहण्णू^८’ ॥
४. तस्स ण सुवधुस्स अमच्च्वस्स वहुमित्तपुत्ते नाम दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण पच्चिदियसरीरे^९ ॥
५. तस्स ण सिरिदामस्स रण्णो चित्ते नाम अलकारिए^{१०} होत्था—सिरिदामस्स रण्णो चित्त वहुविहं अलकारियकम्म^{१०} करेमाणे सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अतेउरे य दिण्णवियारे यावि होत्था ॥

१. स० पा०—छट्ठस्स उक्खेवओ ।

२ ना० १।१।७ ।

३ सुदरमणे (ख, ग), सुदसणे (क्व) ।

४. स० पा०—अहीण जाव जुवराया ।

५. जुगराया (क) ।

६. सामदंड (क, ख, ग, घ), पू०—ना० १।१।१६ ।

७ पू०—वि० १।२।१० ।

८. अलकारए (क, ख, ग) ।

९. × (क) ।

१०. अलकारिय कम्म (क) ।

६ तेण कालेण तेण समएणं सामी समोसढे । परिसा निग्गया, राया निग्गओ जाव'
परिसा पडिगया ॥

गोयमेण नंदिवद्धणस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

७. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी जाव'
रायमग्गमोगाढे । तहेव हत्थो, आसे, पुरिसे पासइ । तेसि च ण पुरिसाण मज्झ-
गय एग पुरिस पासइ जाव' नर-नारीसपरिवुड ॥

८ तए ण त पुरिस रायपुरिसा चच्चरसि तत्तसि अयोमयसि समजोइभूयसि
सीहासणसि निवेसावेति ।

तयाणतर च ण पुरिसाण मज्झगयं वहुहिं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइभूएहिं,
अप्पेगइया तवभरिएहिं, अप्पेगइया तउयभरिएहिं, अप्पेगइया सीसगभरिएहिं,
अप्पेगइया कलकलभरिएहिं, अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं महया-महया
रायाभिसेएण अभिसिचति ।

तयाणंतर च तत्त अयोमय समजोइभूय अयोमय सडासग गहाय हारं पिणद्धति ।
तयाणतर च ण अद्धहारं •पिणद्धति तिसरियं पिणद्धति पालवं पिणद्धति
कडिसुत्तय पिणद्धति पट्ट पिणद्धति मउड पिणद्धति° । चित्ता तहेव जाव'
वागरेइ—

नंदिवद्धणस्स दुज्जोहणभव-वण्णग-पद

९ एव खलु गोयमा ! तेणं कालेण तेणं समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे
सीहपुरे नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे' ॥

१० तत्थ ण सीहपुरे नयरे सीहरहे नाम राया होत्था ॥

११. तस्स ण सीहरहस्स रण्णो दुज्जोहणे नाम चारगपाले' होत्था—अहम्मिए जाव'
दुप्पडियाणदे ॥

१२. तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स इमेयारूवे चारगभंडे होत्था—

१३. तस्स ण दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहुवे अयकुडीओ—अप्पेगइयाओ तव-
भरियाओ, अप्पेगइयाओ तउयभरियाओ, अप्पेगइयाओ सीसगभरियाओ, अप्पे-
गइयाओ कलकलभरियाओ, अप्पेगइयाओ खारतेल्लभरियाओ—अगणिकायसि
अद्दहियाओ चिट्ठति ॥

१ वि० १।२।११ ।

२. वि० १।२।१२-१४ ।

३. वि० १।२।१४ ।

४. सं० पा०—अद्धहारं जाव पट्ट मउड ।

५ वि० १।२।१५, १६ ।

६. पू०—ओ० सू० १ ।

७. चारगपाले (घ) ।

८. वि० १।१।४७ ।

- १४ तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे उट्टियाओ—अप्पेगइयाओ आसमुत्त-
भरियाओ, अप्पेगइयाओ हत्थिमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ उट्टमुत्तभरियाओ,
अप्पेगइयाओ गोमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ महिसमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ
अयमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ एलमुत्तभरियाओ—वहुपडिपुण्णाओ चिट्ठति ॥
१५. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे हत्थडुयाण य पायडुयाण य हडीण^१
य नियलाण य सकलाण य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता^२ चिट्ठति ॥
- १६ तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे वेणुलयाण^३ य वेत्तलयाण^४ य चिंचाल-
याण य छियाण य कसाण य वायरासीण^५ य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता
चिट्ठति ॥
- १७ तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे सिलाण य लउडाण^६ य मोगराण य
कणगराण^७ य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ॥
- १८ तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे ततीण^८ य वरत्ताण य वागरज्जुण य
वालसुत्तरज्जुण य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ॥
- १९ तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे असिपत्ताण य करपत्ताण य खुरपत्ताण
य कलवचीरपत्ताण य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ॥
२०. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे लोहखीलाण य कडसक्कराण य
चम्मपट्टाण य अलीपट्टाण^९ य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ॥
- २१ तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे सूईण य डभणाण य कोट्टिल्लाण^{१०} य
पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ॥
- २२ तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स वहवे सत्थाण^{११} य पिप्पलाण य कुहाडाण^{१२}
य नहच्छेयणाण य दब्भणाण^{१३} य पुजा य निगरा य सनिक्खित्ता चिट्ठति ॥
२३. तए णं से दुज्जोहणे चारगपाले सीहरहस्स रण्णो वहवे चोरे य पारदारिए य
गठिभेए य रायावकारी य अणहारए^{१४} य वालघायए य विस्सभघायए य जूइगरे^{१५}

१. हडीण (क) ।

२. सनिक्किट्ठा (क) ।

३. वेणुलयाओ (ग) ।

४. वेत्तलयाओ (ग) ।

५. पादरासीण (क) ।

६. लउलाण (वृ) ।

७. कणगराण (ख, ग, घ), काणगराण (वृषा) ।

८. तताण (ख) ।

९. अलाण (क), अलपडाण (ग), अल्लपल्लाण
(मुद्रित वृ), अलीण (हस्त० वृ), अली-

घटाण (हस्त० वृ) ।

१०. कोडिल्लाण (ख) ।

११. एकस्या हस्तलिखितवृत्तो 'पच्छाण' इति
विद्यते ।

१२. कुठाराण (ग) ।

१३. दब्भणाण (ख); डब्भणाण (ग); दब्भ-
तिणाण (घ) ।

१४. अणघारए (क, घ) ।

१५. जूयिकरे (क), जूयगरे (ख, ग) ।

य संडपट्टे^१ य पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता उताणए पाडेइ, लोहदंडेण मुह विहाडेइ, विहाडेत्ता अप्पेगइए तत्ततव पज्जेइ, अप्पेगइए तउय पज्जेइ, अप्पेगइए सीसगं पज्जेइ, अप्पेगइए कलकल पज्जेइ, अप्पेगइए खारतेल्ल पज्जेइ, अप्पेगइयाण तेणं चैव अभिसेगं करेइ ।

अप्पेगइए उताणए पाडेइ, पाडेत्ता आसमुत्त पज्जेइ, अप्पेगइए हत्थिमुत्त पज्जेइ^२,
•अप्पेगइए उट्टमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए गोमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए महिसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए अयमुत्त पज्जेइ, अप्पेगइए ° एलमुत्त पज्जेइ ।

अप्पेगइए हेट्टामुहए पाडेइ छडछडस्स^३ वम्मावेइ, वम्मावेत्ता अप्पेगइए तेण चैव ओवील दलयइ । अप्पेगइए हत्थडुयाइ^४ वंधावेइ, अप्पेगइए पायंडुए वंधावेइ, अप्पेगइए हडिवधण करेइ, अप्पेगइए नियलवधण करेइ, अप्पेगइए संकोडिय-मोडियए^५ करेइ, अप्पेगइए सकलवधण करेइ, अप्पेगइए हत्थच्छिण्णए करेइ^६,
•अप्पेगइए पायच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए नक्कच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए उट्टच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए जिठ्ठच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए सीसच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए ° सत्थोवाडियए करेइ ।

अप्पेगइए वेणुलयाहि य^७, •अप्पेगइए वेत्तलयाहि य, अप्पेगइए चिंचालयाहि य, अप्पेगइए छियाहि य, अप्पेगइए कसाहि य, अप्पेगइए ° वायरासीहि य हणावेइ ।

अप्पेगइए उताणए कारवेइ, कारवेत्ता उरे सिलं^८ दलावेइ, दलावेत्ता तओ लउडं^९ छुहावेइ, छुहावेत्ता पुरिसेहिं उक्कंपावेइ^{१०} ।

अप्पेगइए ततीहि य^{११}, •अप्पेगइए वरत्ताहि य, अप्पेगइए वागरज्जूहि य, अप्पेगइए वालय ° सुत्तरज्जूहि य हत्थेसु य पाएसु य वंधावेइ, अगडंसि 'ओचूल वोलग'^{१२} पज्जेइ^{१३} ।

अप्पेगइए असिपत्तेहि य^{१४}, •अप्पेगइए करपत्तेहि य, अप्पेगइए खुरपत्तेहि य अप्पेगइए ° कलवचीरपत्तेहि य पच्छावेइ, पच्छावेत्ता खारतेल्लेण अब्भगावेइ ।

१. खडपट्टे (क, ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—पज्जेइ जाव एलमुत्त ।

३. थलथलस्स (क, घ) ।

४. हत्थुडु° (ख), हत्थडु° (ख), हत्थिय (घ) ।

५. मोडिए (वृ) ।

६. सं० पा०—करेइ जाव सत्थोवाडियए ।

७. सं० पा०—वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि ।

८. सिर (क) ।

९. लउल (क, घ), नउल (ख) ।

१०. ओकपावेइ (क) ।

११. सं० पा०—ततीहि य जाव सुत्तरज्जूहि ।

१२. ओलवालग (क), उचूलपालग (ख); उचूलवालग (ग) उचूलपाणग (घ), ओचूल-वालग (ह० वृ) ।

१३. पाययति खादयतीत्यादि लौकिकीभाषा कारयतीति तु भावार्थ. (वृ) ।

१४. सं० पा०—असिपत्तेहि य जाव कलवचीर-पत्तेहि ।

अप्पेगइयाणं निलाडेसु य अक्कसु य कोप्परेसु य जाणूसु य खलुएसु य लोहकीलए
य कडसक्कराओ य दवावेइ^१ अलिए^२ भजावेइ ।

अप्पेगइए सूईओ य डभणाणि^३ य हत्थगुलियासु य पायगुलियासु य कोट्टिल्लएहिं
आउडावेइ, आउडावेत्ता भूमि कडुयावेइ^४ ।

अप्पेगइए सत्येहि य^५ •अप्पेगइए पिप्पलेहि य अप्पेगइए कुहाडेहि य अप्पेगइए^६
नहच्छेयणेहि य अग पच्छावेइ, दव्भेहि य कुसेहि य उल्लवद्धेहि^७ य वेढावेइ,
आयवंसि दलयइ, दलइत्ता सुक्के समाणे चडचडस्स उप्पाडेइ ॥

२४. तए णं से दुज्जोहणे चारगपाले एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे
सुवहु पावकम्मं^८ समज्जिणित्ता एगतीस वाससयाइ परमाउ पालइत्ता कालमासे
कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण वावीससागरोवमठिइएसु नेरइएसु
नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

नदिवद्धणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

२५. से ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता इहेव महुराए नयरीए सिरिदामस्स रण्णो वधु-
सिरीए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए^९ उववण्णे ॥

२६ तए ण वधुसिरी नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाणं जाव^{१०} दारग पयाया ॥

२७ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहे इम एयारूव नामधेज्ज
करेत्ति—होउ ण अम्ह दारगे नदिवद्धणे^{११} नामेण ॥

१. दलावेइ (क) ।

२ अल (क), अलए (घ) ।

३ दभणाणि (क, घ) ।

४ कडुयावेइ (ख, ग) ।

५ स० पा०—सत्येहि य जाव नहच्छेयणेहि ।

६ उल्लवद्धेहि (क), उल्लदव्भेहि (ख);
उलदज्जेहि (घ), ओल्लवद्धेहि (क्व) ।

७ पाव (क) ।

८ पुमत्ताए (क) ।

९ ओ० सू० १४३ ।

१०. नदिसेणे (क, ख, ग, घ), प्रस्तुतागमम्य
प्रथमाध्ययनस्य सप्तमे सूत्रे 'नदी' इति
पदमस्ति । वृत्तिकृतात्र 'नदिवद्धन' इति नाम
सूचितम्—'नदी' त्ति सूत्रत्वादेव नदिवद्धनो
राजकुमार. (वृ) । प्रस्तुताध्ययनस्य द्वितीये

सूत्रे 'पुत्ते नदिवद्धणे कुमारै' इति पाठोस्ति ।
अध्ययनपरिसमाप्ती च वृत्तिकृता पुनरस्यैव
नाम्न उल्लेखः कृतोस्ति—पष्ठाध्ययनविवरणं
नदिवद्धनस्याधिकारो हि समाप्त (वृ) ।
किंतु अस्याध्ययनस्य सप्तविंशतितमसूत्रादारभ्य
मूलपाठे सर्वत्र 'नदिसेण' नाम्न उल्लेखोस्ति ।
स्थानाङ्गसूत्रे (१०।१।१) 'नदिमेण' नाम्न.
उल्लेखोस्ति । द्वयोरप्यागमयोर्वृत्तिकार
अभयदेवमूरिरस्ति । वृत्तिकारस्याभिमतेन
प्रस्तुतसूत्रे 'नदिवद्धन' इति नामैवास्ति—
'नदिसेणे य' त्ति मथुराया श्रीदामराजसुतो
नदिसेणो युवराजो विपाकश्रुते च नदिवद्धन
श्रूयते (स्थानाङ्गवृत्ति) स्थानाङ्गप्रसिद्धस्य
'नदिसेण' नाम्न प्रस्तुतसूत्रे समावेशो जात ।
अतएव नाम्नोर्मिश्रणमत्र परिलक्ष्यते ।

२८. तए ण से नदिवद्धणे^१ कुमारे पचघाईपरिवुडे जाव^२ परिवड्ढइ ॥
२९. तए ण से नदिवद्धणे^१ कुमारे उम्मुकवालभावे^३ •विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वण-गमणुप्पत्ते^४ विहरइ जाव जुवराया जाए यावि होत्था ॥
३०. तए णं से नदिवद्धणे^१ कुमारे रज्जे य जाव^५ अतेउरे य मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ सिरिदाम राय जीवियाओ ववरोवेत्ता सयमेव रज्जसिरि कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ॥
३१. तए ण से नदिवद्धणे^१ कुमारे सिरिदामस्स रण्णे वहूणि अतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे विहरइ ॥
३२. तए ण से नदिवद्धणे^६ कुमारे सिरिदामस्स रण्णे अतरं अलभमाणे अण्णया कयाइ चित्त अलकारिय सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुम ण देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णे सव्वट्टाणेषु य सव्वभूमियासु य अतेउरे य दिण्णवियारे सिरिदामस्स रण्णे अभिक्खण-अभिक्खणं अलकारिय कम्म करेमाणे विहरसि, त ण तुमं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णे अलकारिय कम्म करेमाणे गीवाए खुर निवेसेहि । तो ण अह तुम अद्धरज्जिय करिस्सामि । तुम अम्हेहिं सद्धि उरालाइ भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्ससि ॥
३३. तए ण से चित्ते अलंकारिए नदिवद्धणस्स^७ कुमारस्स वयण एयमट्ट पडिसुणेइ ॥
३४. तए णं तस्स चित्तस्स अलकारियस्स इमेयारूवे^८ •अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^९ समुप्पज्जित्था जइ णं मम सिरिदामे राया एयमट्ट आगमेइ, तए ण मम न नज्जइ केणइ असुभेणं कु-मारेण मारिस्सइ त्ति कट्टु भीए तत्थे तसिए उव्विगे सजायभए जेणेव सिरिदामे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिदाम-राय रहस्सियगं करयल^{१०} •परिग्गहिय सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु^{११} एव वयासी—एवं खलु सामी ! नदिवद्धणे^{१२} कुमारे रज्जे य जाव^{१३} अतेउरे मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ तुब्भे जीवियाओ ववरोवित्ता सयमेव रज्जसिरि कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ॥
३५. तए ण से सिरिदामे राया चित्तस्स अलंकारियस्स अंतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म

१. नदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

२. वि० १।२।४९ ।

३. नदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

४. स० पा०—उम्मुकवालभावे जाव विहरइ ।

५. नदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

६. वि० १।१।५७ ।

७,८. नदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

९. ता (ख, घ); त (ग) ।

१०. नदिसेणस्स (क, ख, ग घ) ।

११. स० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

१२. स० पा०—करयल जाव एव ।

१३. नदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

१४. वि० १।१।५७ ।

आसुरुत्ते' •रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवर्लि भिउडिड निडाले °
साहट्टु नदिवद्धण' कुमार पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता एएण विहाणेण
वज्भं आणवेइ ॥

३६ त एव खलु गोयमा ! नदिवद्धणे' कुमारे' •पुरा पोरणाण दुच्चिण्णाण दुप्प-
डिक्कताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभव-
माणे ° विहरइ ॥

नदिवद्धणस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३७ नदिवद्धणे' कुमारे इओ चुए कालमासे काल किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं
उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! नदिवद्धणे' कुमारे सट्टिं वासाइ परमाउं पालइत्ता कालमासे काल
किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्टिइएसु नेरइएसु नेरइय-
त्ताए उववज्जिहिइ । ससारो तहेव° । तओ हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए
उववज्जिहिइ ।

से ण तत्थ मच्छिएहिं वहिए समाणे तत्थेव सेट्टिकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ ।
बोहिं, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परि-
निव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अत करेहिइ ॥

निक्खेव-पद

३८ "एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण दुहविवागाण
छट्टस्स अज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ° ॥

१ स० पा०—आसुरुत्ते जाव साहट्टु ।

२. नदिसेण (क, ख, ग, घ) ।

३. नदिमेणे (क, ख, ग, घ) ।

४ पुत्ते (क); स० पा०—कुमारे जाव विहरइ ।

५, ६. नदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

७ पू०—वि० १११६६ ।

८ स० पा०—निक्खेवो ।

९. ना० १११७ ।

सत्तमं अज्भयणं

उंवरदत्तो

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भते^१ । २समणेणं भगवया महावीरेण जाव^२ संपत्तेणं दुह्विवागाणं छट्टस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ तए ण से सुहम्मि अणगारे जवू-अणगार एवं वयासी^०—एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण पाडलिसडे नयरे । 'वणसडे उज्जाणे'^३ । 'उंवरदत्ते जक्खे'^४ ॥
- ३ तत्थ ण पाडलिसंडे नयरे सिद्धत्थे राया ॥
४. तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सागरदत्ते सत्थवाहे होत्था—अड्ढे । गगदत्ता भारिया ॥
५. तस्स ण सागरदत्तस्स पुत्ते गगदत्ताए भारियाए अत्तए उंवरदत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरे^५ ॥
६. तेण कालेण तेण समएणं समोसरण जाव^६ परिसा पडिगया ॥

गोयमेण उंवरदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

- ७ तेण कालेणं तेणं समएणं भगव गोयमे तहेव^७ जेणेव पाडलिसडे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पाडलिसडं नयर पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेण अणुप्प-

१. स० पा०—सत्तमस्स उक्खेवओ ।
२. ना० १।१।७ ।
३. वणसडं उज्जाण (क, ख, ग) ।
४. उंवरदत्तो जक्खो (क) ।

५. पू०—ओ० सू० १४३ ।
६. वि०—१।२।११ ।
७. पू०—वि० १।२।१२-१४ ।

विसइ, अणुप्पविसित्ता तत्थ ण पासइ एगं पुरिसं—कच्छुल्ल कोढियं दाओयरियं^१ भगदलियं^२ अरिसिल्ल कासिल्ल सासिल्ल सोगिल 'सूयमुह सूयहत्थ'^३ सूयपायं सडियहत्थगुलिय सडियपायगुलिय सडियकण्णनासियं^४ रसियाए य पूएण य थिविथिवितं^५ वणमुहकिमिउत्तुयत-पगलंतपूयरुहिर लालापगलतकण्णनासं अभिक्खण-अभिक्खण पूयकवले य रुहिरकवले य किमियक्कवले य वममाण कट्टाइ कलुणाइ वीसराइ कूवमाणं^६ मच्छियाचडगरपहकरेण अण्णिज्जमाणमग्ग फुट्टहडाहडसीसं^७ दडिखडवसण खडमल्लखडघडहत्थगय गेहे-गेहे देहवलियाए विंत्ति कप्पेमाण पासइ । तथा भगव गोयमे । उच्च-नीयं-^८मज्झिम-कुलाइ अडमाणे^९ अहापज्जत्त समुदाण गिण्हइ पाडलिसडाओ नयरओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाण आलोएइ, भत्तपाण पडिदसेइ, समणेण भगवया महावीरेण अब्भ-णुण्णाए^{१०} समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगिद्धिए अणज्झोववण्णे^{११} विलमिव पण्णगभूते^{१२} अप्पाणेण आहारमाहारइ, सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

८. तए ण से भगव गोयमे दोच्चं पि छट्टक्खमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ जाव^{१३} पाडलिसइ नयर दाहिणिल्लेण दुवारेण अणुप्पविसइ, तं चेव पुरिसं पासइ—कच्छुल्ल तहेव जाव^{१४} सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

९. तए णं से भगव गोयमे तच्चं पि छट्टक्खमणपारणगसि तहेव जाव^{१५} पाडलिसंड नयर पच्चत्थिमिल्लेण दुवारेणं अणुपविसमाणे तं चेव पुरिसं पासइ—कच्छुल्ल^{१६} ॥

१०. ^{१७}तए ण से भगवं गोयमे चउत्थं पि छट्टक्खमणपारणगंसि तहेव जाव^{१८} पाडलिसंड नयर उत्तरेण दुवारेण अणुपविसमाणे तं चेव पुरिस पासइ —कच्छुल्ल^{१९} ॥

१ उवरिय (वृ), मुद्रितवृत्तौ दोउयरिय, दोउरिय (क्व) ।

२ भगंदरिय (ग, घ) ।

३ सुयमुह सुयहत्थं (घ) ।

४. °नासेय (क) ।

५. थिविथिवेत (क) ।

६. कूयमाण (ह० वृ) ।

७. फुड० (क) ।

८ स० पा०—नीय जाव अडइ ।

९. स० पा०—अब्भणुण्णाए जाव विलमिव ।

१०. °भूतेण (क्व) ।

११. वि० १।२।१३, १४ ।

१२. वि० १।७।७ ।

१३. वि० १।७।८ ।

१४. पू०—वि० १।७।७ ।

१५. स० पा०—चउत्थ छट्ट उत्तरेण इमेयाख्वे ।

१६. वि० १।७।८ ।

१७. पू०—वि० १।७।७ ।

- ११ तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिस पासित्ता ° इमेयारूवे अज्भत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पण्णे—अहो ण इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं^१ •दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाणं पावाण कडाणं कम्माण पावगं फलवित्ति-विसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा । पच्चक्ख खलु अय पुरिसे निरयपडिक्खवियं वेयण वेएइ त्ति कट्ठु जाव^२ समण भगवं महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता ° एव वयासी—एव खलु अह भंते ! छट्ठक्खमणपारणगसि जाव^३ रियते जेणेव पाडलिसडे नयरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयर पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेण अणुपविट्ठे । तत्थ णं एग पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव^४ देहंवलियाए वित्ति कप्पेमाण । 'तए ण'^५ अह दोच्चछट्ठक्खमणपारणगसि दाहिणिल्लेण दुवारेण तहेव । तच्चछट्ठक्खमणपारणगसि पच्चत्थिमिल्लेण दुवारेण तहेव । तए णं अहं चोत्थ-छट्ठक्खमणपारणगसि उत्तरदुवारेण अणुप्पविसामि, त चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्ल जाव देहंवलियाए वित्ति कप्पेमाण^६ । चित्ता मम ॥
- १२ °से ण भते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसि ? कि नामए वा कि गोत्ते वा ? कयरसि गामसि वा नयरसि वा ? कि वा दच्चा कि वा भोच्चा कि वा समायरित्ता, केसि वा पुरा पोराणाण दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाणं पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणे विहरइ ?

उंबरदत्तस्स घण्णंतरिभव-वण्णग-पदं

१३. गोयमाइ ! समणे भगव महावीरे भगव गोयमं एवं वयासी °—एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे विजयपुरे नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
- १४ तत्थ णं विजयपुरे नयरे कणगरहे नामं राया होत्था ॥
१५. तस्स ण कणगरहस्स रण्णो घण्णतरी नामं वेज्जे होत्था—अट्ठंगाउव्वेयपाढए [तं जहा—१. कुमारभिच्चं २ सालागे ३. सल्लहत्ते ४. कायतिगिच्छा ५ जगोले ६ भूयविज्जे ७. रसायणे ८ वाजीकरणे]^७ सिवहत्थे सुहहत्थे लहुहत्थे ॥
- १६ तए ण से घण्णंतरी वेज्जे विजयपुरे नयरे कणगरहस्स रण्णो अंतउरे य, अण्णेसि च वहूणं राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इवभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं, अण्णेसि च वहूण दुव्वलाण य गिलाणाण य वाहियाण य रोगियाण य सणाहाण

१. स० पा०—पोराणाणं जाव एव ।

२ वि० १।२।१५ ।

३ वि० १।२।१३, १४ ।

४ वि० १।७।७ ।

५. तं (क, घ) ।

६. कप्पेमाणे विहरइ (क, ख, ग, घ) ।

७ सं० पा०—पुव्वभवपुच्छा वागरेइ ।

८. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश. प्रतीयते ।

य अणाहाण य समणाण य माहणाण य भिक्खुगाण' य करोडियाण य कप्पडि-
याण य आउराण य—अप्पेगइयाण मच्छमसाइ उवदिसइ', अप्पेगइयाण कच्छभ-
मसाइं, अप्पेगइयाणं गाहमसाइं, अप्पेगइयाणं मगरमसाइ, अप्पेगइयाण
सुसुमारमंसाइ, अप्पेगइयाण अयमसाइ, एव—एलय'-रोज्झ-सूयर-मिग-ससय-गो-
महिसमंसाइं उवदिसइ, अप्पेगइयाणं तित्तिरमसाइ उवदिसइ, अप्पेगइयाण
वट्टक-लावक-कवोय-कुक्कुड-मयूरमंसाइं उवदिसइ, अण्णेसिं च बहूण जलयर-थल
-यर-खहयरमाईण मसाइ उवदिसइ । अप्पणा वि ण से घण्णतरी वेज्जे तेहिं वहूहि
मच्छमंसेहि य जाव मयूरमसेहि य, अण्णेहि य वहूहिं जलयर-थलयर-खहयर-
मंसेहि य, मच्छरसएहि य जाव मयूररसएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य
भज्जिएहि य सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणे
वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ ॥

१७. तए ण से घण्णतरी वेज्जे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहु
पाव कम्म समज्जिणित्ता वत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे काल
किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं वावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए
उववण्णे ॥

उंवरदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

- १८ तए णं सा गगदत्ता भारिया जायनिंदुया यावि होत्था—जाया-जाया दारगा
विणिघायमावज्जति ॥
१९. तए ण तीसे गगदत्ताए सत्थवाहीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि
कुडुवजागरिय जागरमाणीए अयं अज्झत्थिए चित्थिए कप्पिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं सागरदत्तेण सत्थवाहेण सद्धि वहूइ वासाइ उरा-
लाइं माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरामि, नो चेव णं अह दारग वा
दारिय वा पयामि । त घण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ ण ताओ अम्म-
याओ, कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयल-
क्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ ण ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे ण
.तासिं अम्मयाण माणुस्सए जम्मजीवियफले, जासिं मण्णे नियगकुच्छिसंभूयगाइं
थणदुद्धलुद्धयाइ महुरसमुल्लावगाइ मम्मणपजंपियाइ थणमूला' कक्खदेसभागं
अभिसरमाणयाइ' मुद्धयाइ पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हळ्ळण
उच्छंगे निवेसियाइं देति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मजुलप्पभणिए ।

१ भिक्खुयाण (क, ख), भिक्खुणाण (ग);

भिक्खाचरे (घ) ।

२. उवदसेइ (घ) ।

३. एला (क, घ), वि० १।४।१६ सूत्रे कतिचन

पदानि अधिकानि दृश्यन्ते ।

४. थणमूल (क, ख, घ) ।

५. अतिसर० (क, ख, ग, घ) ।

अह ण अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगतरमवि न पत्ता । त सेय खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव^१ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सागरदत्त सत्थवाह आपुच्छित्ता सुवहु पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकार गहाय वहूहि मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणमहिलाहि सद्धि पाडलिसडाओ नयराओ पडिनिक्खमित्ता वहिया जेणेव उवरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छित्ता, तत्थ ण उंवरदत्तस्स जक्खस्स महरिह पुप्फच्चण करेत्ता जाणुपायपडियाए ओयाइत्तए^२—जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारग वा दारियं वा पयामि, तो ण अह तुव्भ जाय च दाय च भाय च अक्खयनिहि च अणुवड्ढिस्सामि त्ति कट्टु ओवाइय ओवाडणित्तए—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाह एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! तुव्भेहि सद्धि वहूइ वासाइं उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणी जाव एत्तो एगमवि न पत्ता । त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! तुव्भेहिं अ्वभणुण्णाया जाव ओवाइणित्तए ॥

२० तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे गगदत्त भारिय एव वयासी—मम पि णं देवाणुप्पिए ! एस चेव मणोरहे कह ण तुमं दारग वा दारिय वा पयाएज्जासि ? गगदत्ताए भारियाए एयमट्ठ अणुजाणइ ॥

२१ तए णं सा गगदत्ता भारिया सागरदत्तसत्थवाहेण एयमट्ठ अ्वभणुण्णाया समाणी सुवहु पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकार गहाय वहूहि मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणमहिलाहि सद्धि सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पाडलिसंड नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी^३ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुवहु पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकारं ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणि ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जलमज्जण करेइ, करेत्ता जलकिडु करेइ, करेत्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता उल्लपडसाडिया पुक्खरिणीओ^४ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता त पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकार गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव उवरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उवरदत्तस्स जक्खस्स आलोए पणाम करेइ, करेत्ता लोमहत्थय परामुसइ, परामुसित्ता उवरदत्त जक्ख लोमहत्थएण पमज्जइ, पमज्जित्ता दगघाराए अ्वभुक्खेइ, अ्वभुक्खेत्ता पम्हल^५—सुकुमाल-गंघक्रासाइयाए ०

१ ना० १।१।२४ ।

२. उव्वाएत्तए (ग), ओवायइत्तए (क्व) ।

३. पुक्खरिणी (क), पुक्खरणी (ग) ।

४. पुक्खरिणि (क, ग), पुक्खरणीए (ख) ।

५. स० पा०—पम्हल ० ।

गायलट्टी ओलूहइ, ओलूहिता सेयाइं वत्थाइ परिहेइ, परिहेत्ता महरिह पुप्फा-
रुहण मल्लारुहण गधारुहण चुण्णारुहणं करेइ, करेत्ता धूव डहइ, डहिता
जण्णुपायवडिया एव वयइ—जइ ण अह देवाणुप्पिया ! दारग वा दारिय वा
पयामि, तो ण' •अहं तुव्भ जाय च दाय च भाय च अक्खयनिहि च अणुवड्ढि-
स्सामि त्ति कट्ठु ओवाइय° ओवाइणइ, ओवाइणित्ता जामेव दिस पाउव्भूया
तामेव दिसं पडिगया ॥

२२ तए ण से घण्णतरी वेज्जे तओ नरयाओ अणंतर उव्वट्टित्ता इहेव जब्बुहीवे दीवे
पाडलिसंडे नयरे गगदत्ताए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

२३ तए णं तीसे गगदत्ताए भारियाए तिण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अयमेयारूवे
दोहले पाउव्भूए—घण्णाओ ण ताओ' •अम्मयाओ, सपुण्णाओ ण ताओ
अम्मयाओ, कयत्थाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ,
कयलक्खणाओ ण ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ ण ताओ अम्मयाओ,
सुलद्धे ण तासि अम्मयाण माणुस्सए जम्मजीविय°फले, जाओ णं विउल
असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता बहूहि मित्त'•नाइ-
नियग-सयण-सबधि-परियणमहिलाहिं सर्द्धि° परिवुडाओ त विउल असण
पाण खाइम साइम सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च पुप्फ'•वत्थ
गध-मल्लालकार° गहाय पाडलिसड नयर मज्झमज्झेण पडिनिक्खमति,
पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पुक्खरिणी
ओगाहेति, ओगाहेत्ता ण्हायाओ' •कयवलिकम्माओ कयकोउय-मगल°-
पायच्छित्ताओ त विउल असण पाण खाइम साइमं बहूहि मित्त'•नाइ-नियग-
सयण-सबधि-परियणमहिलाहिं° सर्द्धि आसाएति वीसाएति परिभाएति
परिभुजेति, दोहल विणेति—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए
जाव° उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव सागरदत्ते
सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्त सत्थवाह एव वयासी—
घण्णाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव दोहल विणेति, त इच्छामि ण देवाणुप्पिया !
तुव्भेहिं अब्भणुण्णाया जाव दोहल विणित्तए ॥

२४ तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ट अणुजाणइ ॥

२५. तए ण सा गगदत्ता सागरदत्तेण सत्थवाहेण अब्भणुण्णाया समाणी विउलं

१. स० पा०—तो ण जाव ओयाइणइ ।

२. स० पा०—ताओ जाव फले ।

३. स० पा०—मित्त जाव परिवुडाओ ।

४. स० पा०—पुप्फ जाव गहाय ।

५. स० पा०—ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ ।

६. स० पा०—मित्त जाव सर्द्धि ।

७ ना० १।१।२४ ।

असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता त विउल असणं पाण
खाइम साइम सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च सुवहु पुप्फ-
वत्थ-गध-मल्लालकारं परिगेण्हावेइ, परिगेण्हावेत्ता बहूहिं' •मिच्च-नाइ-
नियग-संयण-सवधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं° ण्हाया कयबलिकम्मा
कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता' जेणेव उवरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव
उवागच्छइ जाव' धूव डहेइ, डहेत्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ ॥

२६ तए ण ताओ मिच्च'-•नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण° महिलाओ गगदत्त
सत्थवाहिं सव्वालकारविभूसिय करेति ॥

२७ तए ण सा गगदत्ता भारिया ताहिं मिच्च'-•नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण-
महिलाहिं,° अण्णाहिं य बहूहिं नगरमहिलाहिं सद्धिं त विउलं असण पाण
खाइम साइम सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणी
वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुजेमाणी दोहल विणेइ, विणेत्ता जामेव दिस
पाउवभूया तामेव दिस पडिगया ॥

२८ तए ण सा गगदत्ता सत्थवाही सपुण्णदोहला° त गव्व सुहसुहेण परिवहइ ॥

२९ तए ण सा गगदत्ता भारिया नवण्हं मासाण' •बहुपडिपुण्णाण दारग°
पयाया । ठिइवडिया जाव' जम्हा णं अम्ह इमे दारए उवरदत्तस्स जक्खस्स
ओवाइयलद्धए त होउ णं दारए उवरदत्ते नामेण ॥

३० तए ण से उवरदत्ते पचधाईपरिग्गहिंए परिवड्डुए ॥

३१ तए ण से सागरदत्ते सत्थवाहे'°•अण्णया कयाइ गणिम च धरिम च मेज्जं च
पारिच्छेज्ज च—चउव्विह भंड गहाय लवणसमुद्द पोयवहणेण उवागए ॥

३२ तए ण से सागरदत्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निब्बुड्डुभडसारे अत्ताणे
असरणे कालधम्मणा सजुत्ते''° ॥

३३ ''•तए ण सा गगदत्ता सत्थवाही अण्णया कयाइ लवणसमुद्दोत्तरणं च
सत्थविणास च पोयविणास च पइमरण च अणुचितेमाणी-अणुचितेमाणी
कालधम्मणा सजुत्ता ॥°

१. सं० पा०—बहूहिं जाव ण्हाया ।

२,३. पू०—वि० १।७।२१ ।

४ वि० १।७।२१ ।

५ सं० पा०—मिच्च जाव महिलाओ ।

६. सं० पा०—मिच्च° ।

७. पू०—वि० १।२।३०, पसत्थदोहला ५ १२ सं० पा०—गगदत्ता वि ।

(क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—मासाण जाव पयाया ।

९. वि० १।३।३१, ३२ ।

१०. सं० पा०—जहा विजयमित्ते जाव कालमासे
काल किच्चा ।

११ पू०—वि० १।२।५३, ५४ ।

१२ सं० पा०—गगदत्ता वि ।

- ३४ 'तए ण ते नगरगुत्तिया गगदत्त सत्थवाहिं कालगय जाणित्ता उवरदत्त दारग साओ गिहाओ निच्छुभेति, निच्छुभत्ता त गिह अण्णस्स दलयंति ॥
३५. तए ण तस्स उवरदत्तस्स दारगस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायका पाउब्भूया, [त जहा—सासे कासे जाव^३ कोढे]' ॥
३६. तए णं से उवरदत्ते दारए सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे 'कच्छुल्ले जाव^३ देहवलियाए वित्ति कप्पेमाणे विहरइ'^४ ॥
- ३७ एव खलु गोयमा ! उवरदत्ते दारए पुरा पोरणाण^५ •दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणे^६ विहरइ ॥

उवरदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पद

- ३८ 'उवरदत्ते ण भंते ! दारए'^७ कालमासे काल किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
- गोयमा ! उवरदत्ते दारए वावत्तरिं वासाइ परमाउ पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ^८ । संसारो तहेव^९ ।
- तओ हत्थिणाउरे नयरे कुक्कुडत्ताए पच्चायाहिइ । 'से ण गोट्टिल्लएहि व्हिए'^{१०} तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्टिकुलंसि उववज्जिहिइ । वोही । सोहम्मे कप्पे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३९. 'एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव^{११} संपत्तेण दुहविवागाण सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि० ॥

१. सं० पा०—उवरदत्ते निच्छुभे जहा दारए (घ), प्राक्तनाध्ययनक्रमेणाय पाठो उज्झयए । गृहीत ।
२. वि० १।१।५२ । ८ उववण्णे (क, ख, ग, घ) । भाविप्रश्नप्रसङ्ग-त्वेन असौ पाठ असङ्गत प्रतिभाति ।
- ३ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश प्रतीयते । ९ तहेव जाव पुढवी (ख, ग, घ), पू०—वि०
४. वि० १।७।७ । १० १।१।७० ।
- ५ सडियहत्य जाव विहरइ (क, ख, ग, घ) । १०. जायमत्ते चेव गोट्टिव्हिए (घ) ।
- ६ स० पा०—पोरणाण जाव विहरइ । ११ स० पा०—निक्खेवो ।
- ७ तए ण उवरदत्ते दारए (क, ख); से ण उवरदत्ते दारए (ग); तए ण से उवरदत्ते १२ ना० १।१।७ ।

अट्टमं अज्भयणं

सोरियदत्ते

उक्खेव-पदं

१. जइ ण भंते ! 'समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेण दुह्विवागाणं सत्तमस्स अज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते, अट्टमस्स ण भंते ! अज्भयणस्स समणेण भगवया महावीरेणं के अट्टे पण्णत्ते ?
२. तए ण से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगार एव वयासी^०—एव खलु जवू ! तेणं कालेण तेण समएण सोरियपुरं नयरं । सोरियवडेसगं उज्जाणं । सोरिओ जक्खो । सोरियदत्ते राया ॥
३. तस्स ण सोरियपुरस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थे ण एगे मच्छघपाडए^३ होत्था ॥
४. तत्थ णं समुद्दत्ते नाम मच्छघे परिवसइ—अहम्मिए जाव^५ दुप्पडियाणदे ॥
५. तस्स णं समुद्दत्तस्स समुद्दत्ता नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा^६ ॥
६. तस्स णं समुद्दत्तस्स मच्छघस्स पुत्ते समुद्दत्ताए भारियाए अत्तए सोरियदत्ते नाम दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे^६ ॥
७. तेण कालेणं तेण समएण सामी समोसढे जाव^७ परिसा पडिगया ॥

१. स० पा०—अट्टमस्स उक्खेवओ ।

५. पू०—ओ० सू० १५ ।

२. ना० १।१।७ ।

६. पू०—वि० १।२।१० ।

३. मच्छघे पाडए (ख); मच्छघपाडए (घ) ।

७. वि० १।४।११ ।

४. वि० १।१।४७ ।

सोरियदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

८ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे सीसे जाव' सोरिय-पुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइ [अडमाणे ?] अहापज्जत्तं समुदाण गहाय सोरियपुराओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तस्स मच्छध-पाडगस्स अदूरसामतेण वीईवयमाणे महइमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगय पासइ एग पुरिस—सुक्क भुक्ख निम्मस अट्टिचम्मावणद्ध किडिकिडियाभूय नीलसाडगनियत्थ मच्छकटएण गलए अणुलग्गेणं कट्टाइ कलुणाइ वीसराइ उक्कूवमाणं' अभिक्खण-अभिक्खण पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले' य वममाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्भत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो ण इमे पुरिसे पुरा पोरणाण^{१०} दुप्पच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताण असुभाणं पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणे^{११} विहरइ—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ । पुव्वभवपुच्छा जाव' वागरण ॥

सोरियदत्तस्स सिरीयभव-वण्णग-पदं

९ एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे नदिपुरे नाम नयरे होत्था । मित्ते राया ॥

१०. तस्स ण मित्तस्स रण्णो सिरीए नाम महाणसिए होत्था—अहम्मिए जाव' दुप्पडियाणदे ॥

११ तस्स ण सिरीयस्स महाणसियस्स वहवे मच्छिया य वागुरिया य साउणिया^{१२} य दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्लाकल्लि^{१३} वहवे सण्हमच्छा य जाव' पडागाइपडागे य, अए य जाव'^{१४} महिसे य, तित्तिरे य जाव'^{१५} मयूरे य जीवियाओ ववरोवेति, ववरोवेत्ता सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेति, अण्णे य से वहवे तित्तिरा य जाव मयूरा य पजरसि सनिरुद्धा चिट्ठति, अण्णे य वहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा ते वहवे तित्तिरे य जाव मयूरे य जीवतए^{१६} चेव 'निप्पक्खेति, निप्प-क्खेत्ता'^{१७} सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेति ॥

१ वि० १।२।१२-१४ ।

२ कूवमाण (घ) ।

३ किमिकवले (ख) ।

४ स० पा०—पोरणाण जाव विहरइ ।

५ वि० १।२।१५, १६ ।

६ वि० १।१।४७ ।

७. सोउरिया (ख) ।

८. कल्लकल्ल (क, ग) ।

९ पण्ण० पद १ ।

१०. वि० १।७।१६ ।

११. वि० १।७।१६ ।

१२ जीवियए (ख) ।

१३ निप्पेखति २ (क), निप्पेखेइ २ (घ) ।

- १२ तए ण से सिरीए महाणसिए व्हूण जलयर-थलयर-खह्यराण मसाठ कप्पणी-कप्पियाड करेड, न जहा—सण्हखडियाणि य 'वट्टखडियाणि य दीह्वडियाणि'^१ य रहस्सखडियाणि य, हिमपक्काणि य जम्मपक्काणि य घम्मपक्काणि^२ य माह्यपक्काणि य कालाणि य हेरगाणि^३ य महिट्ठाणि य ग्रामन्नरसियाणि य मुट्ठियारसियाणि य कविट्ठुरमियाणि य दालिमरसियाणि य मच्छरसियाणि य तलियाणि य भज्जियाणि य सोल्लियाणि य 'उवक्खडावेत्ति, उवक्खडावेत्ता'^४ अण्णे य व्हवे मच्छरसए य एणेज्जरसए य तित्तिररमए य जाव^५ मयूररमए य, अण्ण च विउल हरियसाग उवक्खडावेत्ति, उवक्खडावेत्ता मित्तस्स रण्णे भोयणमडवसि भोयणवेलाए उवणेत्ति । अण्णया वि णं से सिरीए महाणसिए तेसिं च व्हूहिं जलयर-थलयर-खह्यरमसेहिं च रसिएहिं य हरियसागेहिं य सोल्लेहिं य तलिएहिं य भज्जिएहिं य मुरं च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ ॥
- १३ तए ण से सिरीए महाणसिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहु^६ •पाव कम्म कलिकलुस^७ समज्जिणित्ता तेत्तीस वाससयाइं परमाडं पालइत्ता कालमासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उववण्णे ॥

सोरियदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पद

१४. तए ण सा समुद्दत्ता भारिया निंदू यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणि-घायमावज्जंति । जहा गगदत्ताए चित्ता, आपुच्छणा, ओवाइय^८, दोहलो जाव^९ दारग पयाया जाव^{१०} जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोरियस्स जक्खस्स ओवाइय-लद्धए, तम्हा ण होउ अम्ह दारए सोरियदत्ते नामेण ॥
- १५ तए ण से सोरियदत्ते दारए पचघाईपरिगहिए जाव^{११} उम्मुक्कवालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते यावि होत्था ॥
- १६ तए ण से समुद्दत्ते अण्णया कयाइ कालधम्मणा संजुत्ते ॥
- १७ तए णं से सोरियदत्ते दारए व्हूहिं मित्त^{१२} •नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणेहिं सद्धि सपरिवुडे^{१३} रोयमाणे कदमाणे विलवमाणे समुद्दत्तस्स नीहरणं करेइ, करेत्ता व्हूइ लोडयाइ मयकिच्चाइ करेइ, अण्णया कयाइ सयमेव मच्छघमह-त्तरगत्त उवसपज्जित्ता ण विहरइ ॥

१. दीह्वडियाण वट्टखडियाण (क) ।

६. स० पा०—सुवहु जाव समज्जिणित्ता ।

२. थेमपक्काणि(क,ख,ह०वृ),थेवपक्काणि (ग),

७ ओवालिय (क) ।

घमपक्काणी(घ,ह०वृ),वेगपक्काणि (मु०वृ) ।

८. वि० १।७।१६-२६ ।

३. हेराणि (घ) ।

९. वि० १।७।२६ ।

४. उवक्खडावेत्ता (क, घ) ।

१०. वि० १।३।३३, ३४ ।

५. वि० १।७।१६ ।

११ स० पा०—मित्त^{१२} ।

१८. तए ण से सोरियदत्ते दारए मच्छवे जाए अहम्मिए जाव' दुप्पडियाणदे ।
- १९ तए ण तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स वहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्लाकल्लि^१ एगट्टियाहिं जउण महाणइ ओगाहेति, ओगाहेत्ता वहूहिं दहगलणेहि य दहमलणेहि य दहमद्वणेहि य दहमहणेहि य दहवहणेहि य दहपवहणेहि य मच्छंधुलेहि य^२ 'पयंचुलेहि य'^३ 'पचपुलेहि य जभाहि य'^४ 'तिसराहि य भिसराहि य'^५ 'धिसराहि य विसराहि य हिल्लिरीहि य 'भिल्लिरीहि य गिल्लिरीहि य'^६ 'भिल्लिरीहि य जालेहि य गलेहि य कूडपासेहि य 'वक्कवघेहि य सुत्तवघेहि य'^७ 'वालवघेहि य वहवे सण्हमच्छे जाव' पडागाइपडागे य गेण्हति एगट्टियाओ'^८ भरेति, भरेत्ता कूलं गाहेति, गाहेत्ता मच्छखलए'^९ करेति, करेत्ता आयवसि दलयति । अण्णे य से वहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा आयव-त्तएहिं मच्छेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य रायमग्गसि वित्ति कप्पेमाणा विहरति । अण्णणा वि ण से सोरियदत्ते वहूहिं सण्हमच्छेहि य जाव पडागाइपडागेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुर च महु च मेरग च जाइ च सीधु च पसण्ण च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ ॥
- २० तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छधस्स^{१०} अण्णया कयाइ ते मच्छे सोल्ले य तलिए य भज्जिए य आहारेमाणस्स मच्छकटए गले लगे यावि होत्था ॥
- २१ तए ण से सोरियदत्ते मच्छवे महयाए वेयणाए अभिभूए समाणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । सोरियपुरे नयरे सिंघाडग'^{११}—'तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्महु-महापह^{१२} पहेसु य महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एव वयह—एव खलु देवाणुप्पिया ! सोरियदत्तस्स मच्छकटए गले लगे । त जो ण इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा सोरियदत्तस्स मच्छियस्स

१. वि० १।१।४७ ।

२. कल्लकल्ल (घ) ।

३. × (क, ख, ग) ।

४. पयघुलेहि य (ख), × (ग) ।

५. पचपुलेहि य वम्भारिएहि य (क), पचपुलेहि

य जम्भाहि य (ख), पचन्नेलेहि य वम्भाहि

य (ग), प्रपचपुलादय मत्स्यवघनविशेषा

(मु० वृ); प्रपचुलादय.० (ह० वृ);

वघुलादय ० (ह० वृ) ।

६. तिसराहि य भिसराहि य (ग) ।

७. × (क, ख, घ) ।

८. णक्खवघेहि य (ग), णक्खवघेहि य वक्कवघेहि य वालवघेहि य (घ) ।

९. पण्ण ० पद ० १ ।

१०. एगट्टिय (क, ख, ग) ।

११. मच्छक्खलए (क, ख) ।

१२. मच्छधियस्स (क, ख, ग, घ) ।

१३. स० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

मच्छकटय गलाओ नीहरित्तए, तस्स णं सोरियदत्ते विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ ॥

२२. तए ण ते कोडुंविद्यपुरिसा जाव' उग्घोसति ॥

२३. तए णं ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य इमं एयारूव उग्घोसणं^१ निसामेति, निसामेत्ता जेणेव सोरियदत्तस्स गेहे जेणेव सोरियदत्ते मच्छवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वहूहि उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य वुद्धीहि परिणामेमाणा-परिणामेमाणा वमणेहि य छडुणेहि य ओवीलणेहि य कवलगाहेहि य सल्लुद्धरणेहि य विसल्लकरणेहि य इच्छंति सोरियदत्तस्स मच्छधस्स मच्छकटयं गलाओ नीहरित्तए, नो संचाएंति नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा ॥

२४. तए ण ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएति सोरियदत्तस्स मच्छंघस्स मच्छकटय गलाओ नीहरित्तए, ताहे सता तता परितंता जामेव दिस पाउव्भूया तामेव दिस पडिगया^२ ।

२५. तए णं से सोरियदत्ते मच्छंघे वेज्जपडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निव्विण्णोसहभेसज्जे तेणं दुक्खेण अभिभूए समणे सुक्के भुक्खे जाव' किमियकवले य वममाणे विहरइ ॥

२६. एव खलु गोयमा ! सोरियदत्ते पुरा पोरणाण^३ •दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कताणं असुभाण पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणे^४ विहरइ ॥

सोरियदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

२७. सोरियदत्ते णं भते ! मच्छंघे इओ कालमासे कालं किच्चा कंहि गच्छहिइ ? कंहि उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! सत्तरि वासाइ परमाउं पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इमीमे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ । ससारो तहेव^५ । हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ^६ । से णं तओ मच्छिएहि जीवियाओ

१ वि० १।८।२१ ।

२. उग्घोसण उग्घोमेज्जतं (ख, घ) ।

३. मच्छवे (क, ख, ग, घ) ।

४. पडिगया (क) ।

५. वि० १।८।८ ।

६ स० पा०—पोरणाण जाव विहरइ ।

७ वि० १।१।७० । तहेव जाव पुढवी (क) ।

८. उववण्णे (क, ख, ग, घ) । भाविप्रश्न-प्रसगत्वेन असौ पाठ असंगप्रति; प्रतिभाति ।

ववरोविए तत्येव सेट्टिकुलसि उववज्जिहिइ । बोही । सोहम्मे कप्पे । महाविदेहे
वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२८ 'एव खलु जवू । समणेणं भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण दुहविवागाण
अट्टमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ० ॥

—

-

नवमं अज्भयणं

देवदत्ता

उक्त्वेव-पदं

१. जइ णं भत्ते । 'समणेणं भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेणं दुहविवागाणं अट्टमस्स अज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते, नवमस्स णं भत्ते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेण के अट्टे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मि अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी०—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रोहीडए' नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे । पुढवीवडेसए उज्जाणे । घरणो जक्खो । वेसमणदत्ते' राया । सिरी देवी । पूसनंदी कुमारे जुवराया ॥
३. तत्थ णं रोहीडए नयरे दत्ते नामं गाहावर्ड परिवसइ—अड्ढे । कण्हसिरी भारिया ॥
४. तस्स णं दत्तस्स घूया कण्हसिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा' ॥
५. तेणं कालेण तेण समएणं सामी समोसडे जाव' परिसा पडिगया ॥

देवदत्ताए पुव्वभवपुच्छा-पदं

६. तेण कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी छट्ठ-क्वमणपारणगसि तहेव जाव' रायमग्गमोगाडे हत्थी आसे पुरिसे पासइ । तेसि

१. सं० पा०—उक्त्वेवओ नवमस्स ।

इति पाठोस्ति । वि० १।४।१० तथा

२. ना० १।१।७ ।

१।४।३६ सूत्रानुसारेण पाठद्वयोमिश्रण

३. रोहीतके (क, ग) सर्वत्र ।

सभाव्यते । अस्माभिरत्र एको गृहीतः ।

४. वेसमणदत्तो (ख, घ) ।

६. वि० १।४।११ ।

५. सर्वानु प्रतिपु 'अहीण जाव उक्किट्टसरीरा'

७. वि० १।२।१३, १४ ।

पुरिसाण मज्झयण पासइ एग इत्थियं—अवओडयवधण उक्खित्तं^१—कण्णनासं नेहतुप्पियगत वज्झ-करकडि-जुयनियच्छं कठेगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुडियगात चुण्णय वज्झपाणपीय^० सूले भिज्जमाण पासइ, पासित्ता भगवओ गोयमस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए चित्थिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था, तहेव निग्गए जाव^२ एव वयासी—एस ण भते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसि^३ ?

देवदत्ताए सीहसेणभव-वण्णग-पदं

- ७ एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जब्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुपइट्ठे नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे । महासेणे^४ राया ॥
८. तस्स ण महासेणस्स रण्णो धारिणीपामोक्ख देवीसहस्स ओरोहे^५ यावि होत्था ॥
९. तस्स ण महासेणस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए सीहसेणे नामं कुमारे होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पच्चिदियसरीरे जुवराया ॥
१०. तए ण तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अण्णया कयाइ पच पासायवडे-सयसयाइं करेति—अव्भुग्गयमूसियाइ^६ ॥
११. तए ण तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अण्णया कयाइ सामापामो-क्खाण^७ पचण्हं रायवरकन्तगसयाण एग दिवसे पाणिं गिण्हावेसु । पचसओ^८ दाओ ॥
१२. तए ण से सीहसेणे कुमारे सामापामोक्खेहिं पचहिं देवीसएहिं सद्धि उप्पि पासायवरगए जाव^९ विहरइ ॥
१३. तए ण से महासेणे राया अण्णया कयाइ कालधम्मणा सजुत्ते । नीहरण । राया जाए^{१०} ॥
१४. तए ण से सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गडिए अज्भोववण्णे अवसेसाओ देवीओ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ ॥
१५. तए ण तासि एगूणगाण पचण्ह देवीसयाण एगूणाइ पचमाइसयाइ इमीसे कहाए लद्धट्टाइ सवणयाए^{११}—एव खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे

१. सं० पा०—उक्खित्त जाव सूले ।

२. वि० १।२।१५ ।

३. पू०—वि० १।२।१६ ।

४. महमेणे (क) ।

५. ओरोवे (क) ।

६. पू०—ना० १।१।८६ ।

७. सम्मा० (क) सर्वत्र ।

८. पचसयओ (वृ) ।

९. ना० १।१।६३ ।

१०. जाए महया (घ) ।

११. समणयाए (ख), समाणाइ (घ) ।

गढिए अज्भोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ । तं सेयं खलु अम्हं सामं देवि अगियओगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए—एव संपेहेति, सपेहेत्ता सामाए देवीए अतराणि य छिद्दाणि य विवराणि^१ य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरति ॥

- १६ तए ण सा सामा देवी इमीसे कहाए लद्धट्टा सवणयाए^२—“एव खलु मम [एगूणगाणं ?] पचण्ह सवत्तीसयाण [एगूणाइं ?] पचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्टाइं सवणयाए अण्णमण्ण एवं वयासी—एव खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए जाव^३ पडिजागरमाणीओ विहरति” त न नज्जइ णं मम केणइ कु-मारेण मारिस्संती ति कट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सजायभया जेणेव कोवघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओह्य^४ मणसंकप्पा करतलपल्हत्थ-मुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया^० भियाइ ॥
१७. तए ण से सीहसेणे राया इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे जेणेव कोवघराए, जेणेव सामा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामं देवि ओह्य^५ मणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहि अट्टज्झाणोवगयं भूमिगयदिट्ठीय भियायमाणि^० पासइ, पासित्ता एव वयासी—किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओह्य^६ मणसंकप्पा करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया^० भियासि ?
- १८ तए ण सा सामा देवी सीहसेणेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा उप्फेणउप्फेणिय^७ सीहसेण राय एव वयासी—एव खलु सामी ! ममं एगूणगाण पच सवत्तीसयाण एगूणाइ पंच माइसयाइ इमीसे कहाए लद्धट्टाइ सवणयाए^८ अण्णमण्ण सदावेत्ता^९ एव वयासी—“एव खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्भोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाइ नो परिजाणइ जाव^{१०} अतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति ।” त न नज्जइ णं सामी ! ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्सती ति कट्टु भीया जाव^{११} भियामि ॥

१. विरहाणि (क, ग, घ) ।

२. सवणयाए एवं वयासी (क, ग, घ); समाणी एव वयासी (ख); अत्र श्रवणप्रसङ्गोऽस्ति, न तु कथनस्य । तेन ‘एव वयासी’ इति पाठ प्रकृतो नास्ति, सम्भवतो लिपिदोषेण जात ।

३. वि० १।६।१५ ।

४. स० पा०—ओह्य जाव भियाइ ।

५. सं० पा०—ओह्य जाव पासइ ।

६. स० पा०—ओह्य जाव भियासि ।

७ उप्फेणाउप्फेणिय (क) ।

८. समाणाइ (ख, ग), समाणाइ सवणयाए (घ) ।

९ सदावेत्ति २ (क, ख, ग, घ) ।

१०. वि० १।६।१५ ।

११. वि० १।६।१६ ।

- १६ तए ण से सीहसेणे राया साम देवि एव वयासी—मा णं तुम देवाणुप्पिया ! ओहयमणसकप्पा जाव' भियाहि । अह ण 'तह घत्तिहामि'^१ जहा ण तव नत्थि कत्तो वि' सरीरस्स आवाहे वा पवाहे वा भविस्सइ त्ति कट्ठु ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि वग्गुहि समासासेइ, समासासेत्ता तओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी— गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया । सुपइट्ठस्स नयरस्स वहिया एग मह कूडागारसाल'^२—अणेगक्खभसयसनिविट्ठु पासादीय दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूवं करेह 'मम एयमाणत्तिय'^३ पच्चप्पिणह ॥
२०. तए ण से कोडुवियपुरिसा करयल'^४परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्ठु एव सामि । त्ति आणाए विणएण वयण ° पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता सुपइट्ठनयरस्स'^५ वहिया पच्चत्थिमे दिसीभाए एग महं कूडागारसाल'^६—अणेगक्खभसयस-निविट्ठु पासादीय दरिसणिज्ज अभिरूव पडिरूव करेति, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ॥
- २१ तए ण से सीहसेणे राया अण्णया कयाइ एगूणगाण पचण्ह देवीसयाण एगूणाइ पच माइसयाइ आमतेइ ॥
- २२ तए ण तासि एगूणगाण पच देवीसयाण एगूणाइ पच माइसयाइ सीहसेणेण रण्णा आमतियाइ समाणाइ सव्वालकारविभूसियाइ जहाविभवेण जेणेव सुपइट्ठे नयरे, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवेति' ॥
- २३ तए ण से सीहसेणे राया एगूणपचण्ह देवीसयाण एगूणगाण पचण्ह माइसयाण कूडागारसाल आवास'^७ दलयइ ॥
- २४ तए ण से सीहसेणे राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी— गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । विउल असण पाण खाइम साइम उवणेह, सुवहु पुप्फ-वत्थ-गघ-मल्लालकार च कूडागारसालं साहरह ॥
२५. तए ण ते कोडुवियपुरिसा तहेव जाव'^८ साहरति ॥

१ वि० १।६।१६ ।

२ तह घत्तीहामि (क), तहा पत्तिहामि (ग), तहा वत्तीहामि (घ), तहा जत्तिहामि (क्व), °जत्तीहामि (ह० वृ) °यत्ती-हामि (ह० वृ) ।

३ इ (,ख ग) ।

४ °साल करेह (क, ख, ग, घ) ।

५ एयमट्ट (क, ख, ग) ।

६. स० पा०—करयल जाव पडिसुणेति ।

७ सुपइट्ठिय° (क, ख, ग, घ) ।

८ °साल जाव करेति (क, ख, ग, घ) ।

९. उवणेति (क), उवागच्छति (घ) ।

१० आवसह (क, ख), आवह (ग) ।

११. वि० १।६।२४ ।

२६. तए ण तासि एगूणगाणं पचण्हं देवीसयाणं 'एगूणाइ पच माइसयाइ'^१ सव्वालंकारविभूसियाइं त विउल असणं पाण खाइम साइम सुर च महु च मेरग च जाइं च सीघु च पसण्ण च आसाएमाणाइ वीसाएमाणाइ परिभाएमाणाइं परिभुजेमाणाइं गधव्वेहि य नाडएहि य उवगीयमाणाइ - उवगीयमाणाइं विहरति ॥
- २७ तए ण से सीहसेणे राया अद्धरत्तकालसमयसि बहूहिं पुरिसेहिं सद्धि सपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता कूडागारसालाए दुवाराइ पिहेइ, पिहेत्ता कूडागारसालाए सव्वओ समंता अगणिकायं दलयइ ॥
- २८ तए ण तासि एगूणगाणं पचण्हं देवीसयाणं एगूणगाइ पंच माइसयाइ सीहसेणेण रण्णा आलीवियाइं समाणाइ रोयमाणाइं कदमाणाइ विलवमाणाइ अत्ताणाइं असरणाइ कालधम्मणा संजुत्ताइ ॥
- २९ तए ण से सीहसेणे राया एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुवहु^२ °पाव कम्म कलिकलुसं ° समज्जिणित्ता चोत्तीस वाससयाइ परमाउं पालइत्ता कालमासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण वावीससागरोवमट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

देवत्ताए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

- ३० से ण तओ अणतरं उव्वट्टित्ता इहेव रोहीडए^३ नयरे दत्तस्स सत्थवाहस्स कण्हसिरीए भारियाए कुञ्चिसि दारियत्ताए उववण्णे ॥
३१. तए ण सा कण्हसिरी नवण्ह मासाणं °बहुपडिपुण्णाण ° दारिय पयाया—सूमाल सुख ॥
- ३२ तए ण तीसे दारियाए अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहियाए विउल असणं पाण खाइम साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता जाव^४ मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणस्स पुरओ नामधेज्ज करेति—होउ णं दारिया देवदत्ता नामेण ॥
- ३३ तए ण सा देवदत्ता दारिया पचघाईपरिग्गहिया जाव^४ परिवड्डइ ॥
३४. तए ण सा देवदत्ता दारिया उम्मुक्कवालभावा^५ °विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वण-गमणुप्पत्ता रूवेण जोव्वणेण लावण्णेण य ° अईव-अईव उक्किट्टा उक्किट्टसरीरा जाया यावि होत्था ॥

१ पच माइसयाइं जाव (क, ख, ग, घ) ।

२. स० पा०—सुवहु जाव समज्जिणित्ता ।

३. रोहीतए (क, ख, ग) ।

४. स० पा०—मासाण जाव दारिय ।

५ वि० १।३।३२ ।

६. वि० १।२।४६ ।

७. स० पा०—उम्मुक्कवालभावा जोव्वणेण रूवेण लावण्णेण य जाव अईव ।

३५. तए ण सा देवदत्ता दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया जाव^१ विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव^२ परिक्खत्ता उप्पि आगासतलगसि^३ कणगतिदूसएण कीलमाणी विहरइ ॥
- ३६ इम च ण वेसमणदत्ते राया ण्हाए जाव^४ विभूसिए आस 'दुसुहति, दुसुहिता'^५ बहूहिं पुरिसेहिं सद्धि सपरिवुडे आसवाहणियाए^६ निज्जायमाणे दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीईवयइ ॥
- ३७ तए ण से वेसमणे राया^७ दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामतेण^८ वीईवयमाणे देवदत्तं दारिय उप्पि आगासतलगसि कणगतिदूसएण कीलमाणि पासइ, पासित्ता देवदत्ताए दारियाए 'रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य'^९ जायविम्हए कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—कस्स ण देवाणुप्पिया ! एसा दारिया ? कि चं नामधेज्जेण ?
३८. तए ण ते कोडुवियपुरिसा वेसमणरायं करयल^{१०} परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु^{११} एव वयासी—एस ण सामी ! दत्तस्स सत्थवाहस्स धूया कण्हसिरीए भारियाए अत्तया देवदत्ता नाम^{१२} दारिया रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्टुसरीरा ॥
- ३९ तए णं से वेसमणे राया आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अग्गिभतरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! दत्तस्स धूय कण्हसिरीए भारियाए अत्तयं देवदत्त दारिय पूसनदिस्स जुवरण्णो भारियत्ताए वरेह, जइ वि य सा सयरज्जसुका^{१३} ॥
- ४० तए ण ते अग्गिभतरठाणिज्जा पुरिसा वेसमणेण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्टुट्टु करयल^{१४} परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव सामि ! त्ति आणाए विणएण वयण^{१५} पडिसुणेंति, पडिसुणेंत्ता ण्हाया जाव^{१६} सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइं पवर परिहिया सपरिवुडा जेणेव दत्तस्स गिहे तेणेव उवागया ॥
४१. तए ण से दत्ते सत्थवाहे ते अग्गिभतरठाणिज्जे पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्टुट्टु आसणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टेत्ता सत्तट्टु पयाइ पच्चुग्गए^{१७} आसणेण

१. वि० १।२।६४ ।

२. ओ० सू० ७० ।

३. °तलसि (क) ।

४. वि० १।२।६४ ।

५. द्रुहति (क) ।

६. आसवाहणियाए (ग) ।

७. स० पा०—राया जाव वीईवयमाणे ।

८. रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य (ग, घ) ।

९. वा (घ) ।

१०. स० पा०—करयल^० ।

११. नामेण (क) ।

१२. सयं० (ख, घ) ।

१३. स० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति ।

१४. ओ० सू० २०, पू०—ना० १।१६।१३४ ।

१५. अब्भुग्गए (ख, ग) ।

- उवनिमतेइ, उवनिमतेत्ता ते पुरिसे आसत्ये वीमत्ये मुहामणवरगण एव वयासी—
सदिसतु ण देवाणुप्पिया । किं आगमणप्पओयण ?
- ४२ तए ण ते रायपुरिसा दत्त सत्यवाह एव वयासी—अम्हे ण देवाणुप्पिया !
तव धूय कण्हसिरीए अत्तय देवदत्तं दारियं पूसनदिम्म जुवरणो भारियत्ताए
वरेमो । त जइ ण जाणसि देवाणुप्पिया ! जुत्त वा पत्तं वा सत्ताहणिज्जं वा,
सरिसो वा सजोगो, दिज्जउ ण देवदत्ता दारिया पूसनदिस्स जुवरणो । भण
देवाणुप्पिया । किं दलयामो सुक' ?
- ४३ तए ण से दत्ते ते अट्ठिभतरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—एव चैव णं देवाणु-
प्पिया । मम सुक ज ण वेसमणे राया मम दारियानिमित्तेणं अणुगिण्हइ । ते
अट्ठिभतरठाणिज्जे पुरिसे विउलेण पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ
सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
- ४४ तए ण ते अट्ठिभतरठाणिज्जा पुरिसा जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छंति,
वेसमणस्स रण्णो एयमट्ठु निवेदेति ॥
- ४५ तए ण से दत्ते गाहावई अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-
मुहुत्तसि विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-
नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण आमतेइ, ण्हाए' •कयवलिकम्मे कयकोउय-
मगल °-पायच्छित्ते सुहासणवरगएणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणेण
सद्धि सपरिवुडे त विउल असण पाण खाइम साइम आसाएमाणे वीसाएमाणे
परिभाएमाण परिभुजेमाणे एव च ण विहरइ । जिमियभुत्तुरागए वि य णं
आयते चोक्खे परमसुइभूए त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणं 'विउलेण
पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालंकारेण' सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता
देवदत्तं दारिय ण्हाय जाव' सव्वालकारविभूसियसरीर पुरिससहस्सवाहिणि'
सीय दुरुहेइ, दुरुहेत्ता मुवहुमित्त'-•नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणेण ° सद्धि
सपरिवुडे सव्विड्डीए जाव' दुदुहिनिग्घोस-नाइयरवेण रोहीडय नयरं मज्झ-
मज्झेण जेणेव वेसमणरण्णो गिहे, जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता करयल'•परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्ठु वेसमण
राय जएण विजएणं ° वद्धावेइ, वद्धावेत्ता वेसमणस्स रण्णो देवदत्त दारियं
उवणेइ ॥

१ सुक्क (ख, ग, घ) ।

२. स० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

३. विउलगधपुप्फ जाव अलकारेण (क, ख, ग, घ) ।

४. वि० १।२।६४ ।

५ °वाहिणी (ख, ग) ।

६. स० पा०—मित्त जाव सद्धि ।

७ ओ० सू० ६७ ।

८. स० पा०—करयल जाव वद्धावेइ ।

- ४६ तए ण से वेसमणे राया देवदत्त दारिय उवणीय पासइ, पासित्ता हट्टुट्टे विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियण आमतेइ जाव' सक्कारेइ सम्माणेइ, 'सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पूसनदि कुमार देवदत्तं च' दारिय पट्टय दुरुहेइ', दुरुहेत्ता सेयापीएहिं' कलसेहि मज्जावेइ, मज्जावेत्ता वरनेवत्थाइ करेइ, करेत्ता अग्गिहोम करेइ', करेत्ता पूसनदि कुमार देवदत्ताए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ॥
- ४७ तए ण से वेसमणदत्ते राया पूसनदिकुमारस्स देवदत्त दारिय सव्विड्डीए जाव' दूदुहिनिग्घोस-नाइयरवेण महया इड्डीसक्कारसमुदएण पाणिग्गहण कारेइ', कारेत्ता देवदत्ताए दारियाए अम्मापियरो मित्त'-नाइ-नियग-सयण-सबधि'-परियण च विउलेण' असण-पाण-खाइम-साइमेण पुप्फ-वत्थ-गघ-मल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
४८. तए ण से पूसनदी कुमारे देवदत्ताए भारियाए' सद्धि उप्पि पासायवरगए फुट्ट-माणेहिं मुइगमत्थएहिं वत्तीसइबद्धनाडएहिं उवगिज्जमाणे''-उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे इट्टे सट्ट-फरिस-रस-रूव-गघे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे ० विहरइ ॥
४९. तए ण से वेसमणे राया अण्णया कयाइ कालघम्मणा सजुत्ते । नीहरण जाव'^१ राया जाए पूसनदी ॥
- ५० तए ण से पूसनदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते यावि होत्था । कल्लाकल्लि जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए पायवडण करेइ, करेत्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भगावेइ, अट्टिसुहाए मंससुहाए तथासुहाए'^२ रोमसुहाए—चउव्विहाए संवाहणाए सवाहावेइ, सवाहावेत्ता सुरभिणा गघट्टएण'^३ उव्वट्टावेइ'^४, उव्वट्टावेत्ता तिहिं उदएहि मज्जावेइ,

१ वि० १।६।४५ ।

२. X (क, घ) ।

३. द्रुहेति (क), द्रुहति (ख); दुरहेति (ग), दुरुहेत्ति (घ) ।

४ सेयापीतएहिं (क) ।

५. कारेइ (क) ।

६ ओ० सू० ६७ ।

७. करेइ (क, ख, ग, घ) ।

८. स० पा०—मित्त जाव परियण ।

९ विउल (क, ख, ग, घ) ।

१०. दारियाए (क, ख) ।

११. स० पा०—उवगिज्जमाणे जाव विहरइ ।

१२. वि० १।५।२२-२४ ।

१३. चम्मसुहाए (ख) ।

१४. गघट्टएण (क); गघवट्टएण (ख, ग, घ);

ठाणेपि ३।८७ सूत्रे 'गघट्टएण' इति पाठोस्ति ।

१५. उव्वट्टेइ (ग) ।

[त जहा—उसिणोदएणं 'सीओदएण गंधोदएण'^१] विउल असणं पाण खाडमं साइम भोयावेड, भोयावेत्ता सिरीए देवीए ण्हायाए^२ • कयवन्निकम्माए कयकोउय-मगल^३-पायच्छित्ताए जिमियभुत्तुत्तरागयाए तओ पच्छा ण्हाइ वा भुंजइ वा, उरालाइ माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरइ ॥

५१. तए ण तीसे देवदत्ताए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुवजागरिय जागरमाणोए डमेयाद्धवे अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु पूसनंवे राया सिरीए देवीए माइभत्ते जाव^४ विहरइ । त एएण वक्खेवेण नो सच्चाएमि अहं पूसनदिणा रण्णा सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुंजमाणी विहरित्तए । तं मेय खलु ममं सिरिदेवि^५ अग्गिपओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवेत्ता पूसनदिणा रण्णा सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइं भुजमाणीए विहरित्तए—एव सपेहेड, सपेहेत्ता सिरीए देवीए अतराणि य छिट्ठाणि य विवराणि य पडिजागरमाणी^६ विहरइ ॥

५२. तए णं सा सिरी देवी अण्णया कयाइ मज्जाइया^७ विरहियसयणिज्जंसि मुहपसुत्ता जाया यावि होत्था ॥

५३. इमं च णं देवदत्ता देवी जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरि देवि मज्जाइयं विरहियसयणिज्जंसि मुहपमुत्त पासड, पासित्ता दिसालोय करेड, करेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोहदंडं परामुसड, परामुसित्ता लोहदंडं तावेइ, तत्त^८ समजोइभूय फुल्लकिमुयसमाणं सडासएणं गहाय जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए अवाणसि पक्खिवड^९ ॥

५४. तए ण सा सिरी देवी महया-महया सद्देणं आरसित्ता कालघम्मुणा संजुत्ता ॥

५५. तए ण तीसे सिरीए देवीए दासचेडीओ आरसियसद् सोच्चा निसम्म जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्त देवि तओ अत्रक्कममाणि पासति, पासित्ता जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिरि देवि निप्पाणं निच्चेट्ठ जीवियविप्पजड पासति, पासित्ता हा हा ! अहो ! अकज्ज-

१. गवोदएण सीओदएण (क, ग); कोष्ठकवर्ती

पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

२. सं० पा०—ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए ।

३. वि० १।६।५० ।

४. सिरिदेवी (क, ख, ग, घ) ।

५. वा मतपओगेण वा (घ) ।

६. पडिजागरमाणा (क, ग) ।

७. मज्जातीता (क); मज्जावोता (घ) ।

८. तए ण त (क, ख) ।

९. पुप्फकिमुय^० (ग) ।

१०. पक्खिवेड (ख, ग) ।

मिति कट्टु रोयमाणीओ कदमाणीओ विलवमाणीओ जेणेव पूसनदी राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता पूसनदि राय एव वयासी—एव खलु सामी । सिरी देवी देवदत्ताए देवीए अकाले चैव जीवियाओ ववरोविया ॥

५६ तए ण से पूसनदी राया तासि दासचेडीण अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म महया माइसोएण अप्फुण्णे^१ समाणे परसुनियत्ते विव चपगवरपायवे धस त्ति धरणीय-लसि सव्वगेहिं सनिवडिए ॥

५७ तए णं से पूसनदी राया मुहुत्ततरेण आसत्थे समाणे वहुहिं राईसर^२-^३तलवर-माडविय-कोडुविय-इठभ-सेट्टि-सेणावइ^४-सत्थवाहेहिं मित्त^५-^६नाइ-नियग-सयण-सवधि^७-परियणेण य सद्धिं रोयमाणे कदमाणे विलवमाणे सिरीए देवीए महया इड्डीए नीहरण करेइ, करेत्ता आसुरुत्ते रुट्टे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे देवदत्त देविं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, एएण^८ विहाणेण वज्झ आणवेइ ॥

५८ त एव खलु गोयमा । देवदत्ता देवी पुरा पोरणाण^९ दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्क-ताणं असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणी^{१०} विहरइ ॥

देवदत्ताए आगामिभव-वण्णग-पदं

५९ देवदत्ता ण भते । देवी इओ कालमासे काल किच्चा कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा । असीइ वासाइं परमाउ पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ^१ । ससारो [तहेव जाव^२ ?] वणस्सई ।

तओ अणतर उववट्टित्ता गगपुरे नयरे हसत्ताए पच्चायाहिइ ।

से ण तत्थ साउणिएहिं वहिए समाणे तत्थेव गगपुरे नयरे सेट्टिकुलसि उववज्जि , हिइ । बोही । सोहम्मे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

६०. “एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव^३ सपत्तेण दुह्विवागाण नवमस्स अज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥^४

१ अप्पुण्णे ण (क) ।

६ उववण्णे (क, ख, ग, घ) ।

२. सं पा०—राईसर जाव सत्थवाहेहिं ।

७. वि० १।१।७० ।

३ सं पा०—मित्त जाव परियणेण ।

८ सं पा०—निक्खेवो ।

४. ततेणं (ख, घ), तेण (क्व) ।

९. ना० १।१।७ ।

५ सं पा०—पोरणाण जाव विहरइ ।

दसमं अज्भयणं

अंजु

उक्खेव-पदं

- १ जइ ण भते^१ ! •समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^२ संपत्तेणं दुहविवागाणं नवमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
- २ तए ण से सुहम्मे अणगारे जंवू-अणगारं एव वयासी^३ —एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वड्डमाणपुरे नामं नयरे होत्था । विजयवड्डमाणे उज्जाणे । माणिभट्ठे जक्खे । विजयमित्ते राया ॥
३. तत्थ ण घणदेवे नाम सत्थवाहे होत्था—अड्ढे । पियंगू नामं भारिया । अंजु दारिया जाव^४ उक्किट्ठसरीरा । समोसरण परिसा जाव^५ गया ॥

अंजूए पुव्वभवपुच्छा-पदं

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव^६ अडमाणे विजयमित्तस्स रण्णो गिहस्स असोगवणियाए अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे पासइ एगं इत्थियं—सुक्कं भुक्खं निम्मंसं किडिकिडियाभूयं अट्ठिच्चम्मावणट्ठं नीलसाडगनियत्थ^७ कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं^८ कूवमाणं पासइ, पासित्ता चित्ता तहेव जाव^९ एव वयासी—सा ण भते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसिं ? वागरणं ॥

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ ।

२. ना० १।१।७ ।

३. वि० १।४।३६ ।

४. वि० १।४।११ ।

५. वि० १।२।१२-१४ ।

६. °नियच्छ (ख) ।

७. विस्सराड (ख, घ); विसराड (ग);

८. वि० १।२।१५ ।

९. पू०—वि० १।२।१६ ।

अंजूए पुढविसिरीभव-वण्णग-पदं

- ५ एवं खलु गोयमा । तेण कालेण तेण समएणं इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे इदपुरे नाम नयरे होत्था ॥
- ६ तथ ण इददत्ते राया । पुढविसिरी' नाम गणिया होत्था—वण्णओ' ॥
- ७ तए ण सा पुढविसिरी गणिया इदपुरे नयरे वहवे राईसर'-•तलवर-माडविय-कोडुविय-इवभ-सेट्टि-सेणावई-सत्यवाह°प्पभियओ वहीहि' •य विज्जापओगेहि य मतपओगेहि य चुण्णप्पओगेहि य हियउड्ढावणेहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि य वसीकरणेहि य आभिओगिएहि° आभिओगित्ता' उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ ॥
- ८ तए ण सा पुढविसिरी गणिया एयकम्मा एयप्पहाणा एयविज्जा एयसमायारा सुवहु' •पाव कम्म कलिकलुस° समज्जिणित्ता पणतीसं वाससयाइ परमाउ पालइत्ता कालमासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण वावीस सागरोवम-ट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ॥

अंजूए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

९. सा णं तओ अणतर उव्वट्टित्ता इहेव वड्ढमाणपुरे नयरे घणदेवस्स सत्यवाहस्स पियगुभारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए उववण्णा ॥
- १० तए ण सा पियंगुभारिया नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण दारिय पयाया । नामं अजू' । सेस जहा देवदत्ताए' ॥
- ११ तए ण से विजए राया आसवाहणियाए निज्जायमाणे जहा वेसमणदत्ते' तहा अंजु पासड, नवर—अप्पणो अट्टाए वरेइ जहा तेयली जाव'° अजूए भारियाए सद्धि उप्पि पासायवरगए जाव'° विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥
- १२ तए ण तीसे अजूए देवीए अण्णया कयाइ जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था ॥
- १३ तए ण से विजए राया कोडुवियपुरिसे सदावेड, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह

१. पुह्वि° (क, ग) ।

२ वि० १।२।७ ।

३ सं० पा०—राईसर जाव प्पभियओ ।

४ सं० पा०—वहीहि चुण्णप्पओगेहि जाव आभि-ओगित्ता । द्रष्टव्यम्—वि० १।२।७२ ।

५ अह्मिओगेत्ता (ग) ।

६. सं० पा०—सुवहु जाव समज्जिणित्ता ।

७ अजूसिरी (घ) ।

८ वि० १।६।३२-३५ ।

९ वि० १।६।३६-४६ ।

१०. ना० १।१४।१६, २० ।

११. वि० १।६।४८ ।

णं तुम देवाणुप्पिया ! वड्डमाणपुरे नयरे सिंघाडग^१-^०तिग-चउक्क-चच्चर-
चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा^० एव
वयह—एव खलु देवाणुप्पिया ! विजयस्स रण्णो अज्जूए देवीए जोणिसूले
पाउब्भूए । त जो ण इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओवा जाणुयपुत्तो
वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा^२ •अज्जूए देवीए जोणीसूले उवसामित्तए
तस्स ण वेसमणदत्ते राया विउल अत्थसंपयाण दलयइ ॥

१४ तए ण ते कोडुवियपुरिसा^० जाव^३ उग्घोसेति ॥

१५ तए ण ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया
य तेगिच्छियपुत्ता य इम एयारुव उग्घोसणं सोच्चा निसम्म जेणेव विजए
राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता उप्पत्तियाहिं^४ वेणइयाहिं कम्मियाहिं
पारिणामियाहिं वुद्धीहिं परिणामेमाणा इच्छति अज्जूए देवीए जोणिसूल
उवसामित्तए, नो सचाएति उवसामित्तए ॥

१६. तए ण ते वहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य
तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो सचाएति अज्जूए देवीए जोणिसूल उवसामित्तए,
ताहे सता तता परितता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

१७. तए ण सा अज्जू देवी ताए वेयणाए अभिभूया समाणी सुक्का भुक्खा निम्मसा
कट्टाइ कलुणाइ वीसराइ विलवइ ॥

१८. एव खलु गोयमा ! अज्जू देवी पुरा पोरणाण^५ •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कताण
असुभाण पावाण कडाण कम्माण पावग फलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणी^०
विहरइ ॥

अज्जूए आगामिभव-वण्णग-पदं

१९. अज्जू ण भते ! देवी इओ कालमासे काल किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं
उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! अज्जू ण देवी नउइ वासाइ परमाउ पालइत्ता कालमासे काल किच्चा
इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ^६ । एव ससारा
जहा पढमे तहा नेयव्व जाव^३ वणस्सई ।

सा ण तओ अणतर उव्वट्टित्ता सव्वओभद्दे नयरे मयूरत्ताए पच्चायाहिइ ।

१. स० पा०—सिंघाडग जाव एव ।

२. स० पा०—तेगिच्छियपुत्तो वा जाव उग्घो-
सेति ।

३. वि० १।१०।१३ ।

४ अज्जूए देवीए वहवे उप्पत्तियाहिं (क, ख, ग, घ) ।

५ स० पा०—पोरणाण जाव विहरइ ।

६. उववण्णा (क, ख, ग, घ) ।

७. वि० १।१।७० ।

से ण तत्थ साउणिएहि व्हिए समाणे तत्थेव सव्वओभद्दे नयरे सेट्टिकुलसि पुत्तत्ताए^१ पच्चायाहिइ ।

से ण तत्थ उम्मुक्कवालभावे तहारूवाण थेराण अतिए पव्वइस्सइ । केवल बोहिं बुज्जिभ्हिइ । पव्वज्जा । सोहम्मे ।

से ण तओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा । महाविदेहे वासे जहा पढमे जाव^२ सिज्जिभ्हिइ बुज्जिभ्हिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२० एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव^३ सपत्तेण दुह्विवागाण दसमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । 'सेव भते । सेव भते'^४ !

—त्ति वेमि ॥

१ पुमत्ताए (क) ।

२. वि० १।१।७० ।

३. ना० १।१।७ ।

४ मेण भते (ख), सेय भते (ग) ।

वीओ सुयखंधो

पढमं अज्भयणं

सुवाहू

उक्खेव-पदं

- १ तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए । सुहम्मे समोसढे । जंवू जाव' पज्जुवासमाणे' एव वयासी—जड णं भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण दुहविवागाण अयमट्टे पण्णत्ते, मुहविवागाणं भते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं के अट्टे पण्णत्ते ?
- २ तए णं से सुहम्मे अणगारे जवू-अणगारं एवं वयासी—एव खलु जंवू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव' सपत्तेण सुहविवागाणं दस अज्भयणा पण्णत्ता, त जहा—

सुवाहू भद्दंदी य, मुजाए य मुवासवे ।
तहेव जिणदासे य, धणवई य महव्वले ॥
भद्दंदी महच्चदे, वरदत्ते 'तहेव य" ॥ १॥

- ३ जड णं भते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव' संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्भयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्भयणस्स मुहविवागाण समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पण्णत्ते ?

१. वि० १।१।३,४ ।

२. पज्जुवामइ (क, ख, ग, घ) ।

३ ना० १।१।७ ।

४. ना० १।१।७ ।

५. × (क, ख, ग, घ), मुद्रितप्रत्यनुसार
गृहीतोयं पाठ ।

६ ना० १।१।७ ।

सुवाहुकुमार-पदं

४. तए ण से सुहम्मे जवू-अणगार एवं वयासी—एवं खलु जवू^१ । तेणं कालेणं तेणं समएण हत्थिसीसे नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
५. तस्स^२ ण हत्थिसीसस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं पुप्फकरंडं नाम उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे ॥
६. तत्थ ण कयवणमालपियस्स जक्खस्स^३ जक्खाययणे होत्था—दिव्वे ॥
७. तत्थ णं हत्थिसीसे^३ नयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिंदसारे ॥
८. तस्स ण अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामोक्ख देवीसहस्स ओरोहे यावि होत्था ॥
९. तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तसि तारिसगसि वासभवणसि^४ सीह सुमिणे पासइ, जहा मेहस्स जम्मण तहा^५ भाणियव्व ॥
१०. •तए ण मे सुवाहुकुमारे वावत्तरिकलापडिंए जाव^६ अलभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥
११. तए ण तं सुवाहुकुमार अम्मापियरो वावत्तरिकलापडिय जाव^७ अलंभोग-समत्थ वा^८ जाणत्ति, जाणित्ता अम्मापियरो पच पासायवडेसगसयाइ कारेति^९—अव्वभुग्गयमूसियपहसियाइ^{१०} । एग च ण मह भवणं कारेति एव जहा महव्वलस्स रण्णो, नवर—पुप्फचूलापामोक्खाण पचण्ह रायवरकन्नगसयाण^{११} एगदिव्वमेणं पाणिं गिण्हावेत्ति^{१२} । तहेव पचसइओ दाओ जाव^{१३} उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि^{१४} •मुइगमत्थएहि वरतरुणिसपउत्तेहि वत्तीसइव्वएहि नाडएहि उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे इट्ठे सइ-फरिस-रस-रुव-गधे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे^{१५} विहरइ ॥

१. तत्थ (क) ।

२. जहस्स (क) ।

३. °सीसए (क, घ) ।

४. वासघरसि (क्व) ।

५. ना० १।१।१८-३२, ७२-८७, नवर अकाल-मेघदोहदवक्तव्यता नास्ति (वृ) ।

६. स० पा०—सुवाहुकुमारे जाव अलभोगस-मत्थ ।

७. ओ० सू० १४८ ।

८. ओ० सू० १४६ ।

९. वा वि (क, ख, ग) ।

१०. करेति (क, ख), करेति (ग), करावेत्ति (घ) ।

११. पू०—ना० १।१।८६ ।

१२. °कन्नासयाण (घ) ।

१३. गिण्हावेसु (क, ग) ।

१४. भ० १।१।५८-१६१ ।

१५. स० पा०—फुट्टमाणेहि जाव विहरइ ।

१२. तेणं कालेण तेण समएणं समणे भगव महावीरे समोसढे^१ । परिसा निग्गया । अदीणसत्तू जहा कूणिए^२ तथा निग्गए । सुवाहू वि जहा जमाली तथा रहेणं निग्गए जाव^३ धम्मो कहिओ । राया परिसा गया ॥
१३. तए ण से सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टुट्टे उट्टाए उट्टेइ जाव^४ एवं वयासी—सट्टहामि ण भते ! निग्गथं पावयणं । जहा ण देवाणुप्पियाणं अतिए वह्वे राईसर^५—तलवर-माडविय-कोडुविय-इव्वभ-सेट्ठि-भेणावड-सत्थवाहप्पभियओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयति ° नो खलु अह तथा सचाएमि पव्वइत्तए, अह ण देवाणुप्पियाण अतिए पंचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जामि । अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवंधं करेह ॥
१४. तए ण से सुवाहू समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता तमेव चाउग्घट आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिस पाउव्वभूए तामेव दिसं पडिगए ॥

सुवाहुस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१५. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई जाव^६ एव वयासी—अहो ण भते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कते कतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदसणे सुरूवे ।
वहुजणस्स वि य णं भते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कते कतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदसणे सुरूवे ।
साहुजणस्स वि य ण भते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे^७ कते कतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदसणे ° सुरूवे ।
सुवाहुणा भते ! कुमारेण इमा^८ एयारूवा उराला माणुसिड्डी^९ किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमण्णागया ? के वा एस आसि पुव्वभवे^{१०} ? •किं

१. समोमरण (क, ख, ग, घ) ।

२. ओ० सू० ५५-६६ ।

३. म० ६।१५८-१६३ ।

४. ना० १।१।१०१ ।

५. पू०—गय० सू० ६६५ ।

६. स० पा०—राईसर जाव नो खलु अह ।

७. वि० १।१।२४, २५ ।

८. स० पा०—इट्ठरूवे जाव सुरूवे ।

९. इमे (क, ख) ।

१०. माणुस्सिड्डी (ख), माणुस्सरिड्डी (घ) ।

११. स० पा०—पुव्वभवे जाव असिसमण्णागया ।

नामए वा कि वा गोएण ? कयरसि वा गार्मसि वा सण्णिवेससि वा ? कि वा दच्चा कि वा भोच्चा कि वा समायरित्ता, कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आयरिय सुवयण सोच्चा निसम्म सुवाहुणा कुमारेण इमा एयारूवा उराला माणुस्सिड्डी लद्धा पत्ता^० अभिसमण्णागया ?

सुवाहुस्स सुमुहभव-वण्णग-पदं

- १६ 'गोयमाइ ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम आमतेत्ता एव वयासी'^१—
- १७ एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नाम नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
१८. तत्थ ण हत्थिणाउरे नयरे सुमुहे नाम गाहावई परिवसइ—अड्ढे ॥
- १९ तेण कालेण तेण समएण धम्मघोसा नाम थेरा जाइसपण्णा जाव^२ पचहिं समणसएहिं सद्धि सपरिवुडा पुव्वाणुपुविं चरमाणा गामाणुगाम दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति^३, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओगह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावे-माणा विहरति ॥
- २० तेण कालेण तेण समएण धम्मघोसाण थेराण अतेवासी सुदत्ते नाम अणगारे ओराले^४ •घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवभचेरवासी उच्छूढसरीरे सक्खित्त-विउल^० त्तैयलेस्से मासमासेण खममाणे^५ विहरइ ॥
- २१ तए ण से सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, जहा गोयमसामी तहेव 'धम्मघोसे थेरे'^६ आपुच्छइ जाव^७ अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहे अणुप्पविट्ठे ॥
- २२ तए ण से सुमुहे गाहावई सुदत्त अणगार एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्टुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायवीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडिय उत्तरासग करेइ, करेत्ता सुदत्त अणगार सत्तट्ठ पयाइ पच्चुगच्छइ^८, पच्चुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता 'जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयहत्थेण'^९ विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेस्सा-मीति तुट्ठे पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे पडिलाभिए वि तुट्ठे ॥

१. × (क, ख, ग) ।

२ ना० १।१।४ ।

३ उवागया (ग) ।

४ स० पा० — उराले जाव लेस्से ।

५ खवमाणे (क) ।

६ सुहम्मे थेरे (क), मुदत्ते थेरे धम्मघोसे

(ख), 'सुहम्मे थेरे' त्ति धर्मघोपस्थविरा-
नित्यर्थ, धर्मशब्दसाम्याच्छब्दद्वयस्याप्ये-
कार्यत्वात् (वृ) ।

७ वि० १।२।१३, १४ ।

८ अणुगच्छइ (घ) ।

९. × (क, ख, ग) ।

- २३ तए ण तस्स सुमुहस्स' गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेणं 'गाहगसुद्धेण दायगसुद्धेणं' ति विहेण तिकरणसुद्धेण सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे ससारे परिक्कीए', मणुस्साउए निवद्धे, गेहसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउवभूयाइ, [त जहा— वसुहारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिते', चेलुकखेवे कए, आहयाओ देवदुट्टु-भीओ, अतरा वि य ण आगाससि 'अहो दाणे अहो दाणे' घुट्टे य'।] हत्थिणाउरे सिघाडग'—० तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह ० पहेसु बहुजणो अणमणस्स एव आइक्खइ एव भासेइ एव पणवेइ एव परूवेइ—घण्णे ण देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई ० पुण्णे ण देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई एव—कयत्थे णं कयलक्खणे ण सुलद्धे ण सुमुहस्स गाहावइस्स जम्मजीवियफले, जस्स णं इमा एयारूवा उराला माणुस्सिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ० ॥
- त घण्णे ण देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई पुण्णे ण देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई एव—कयत्थे ण कयलक्खणे ण सुलद्धे ण सुमुहस्स गाहावइस्स जम्म-जीवियफले, जस्स ण इमा एयारूवा उराला माणुस्सिद्धी लद्धा पत्ता अभि-समण्णागया ॥
- २४ तए ण से सुमुहे गाहावई वहूइ वाससयाइ आउय पालेइ, पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इहेव हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥
- २५ तए ण सा धारिणी देवी सयणिज्जसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी तहेव सीह पासइ, सेस त चेव जाव' उप्पि पासाए विहरइ । त एवं खलु गोयमा ! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुसिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥
- २६ पभू ण भते ! सुबाहुकुमारं देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्ताए ?
- हता पभू ॥
- २७ तए ण से भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
- २८ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ हत्थिसीसाओ नयराओ पुप्फकरडयउज्जाणाओ कयवणमालपियजक्खाययणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

१ 'तस्स सुमुहस्स' ति विभक्तिपरिणामात्

'तेन सुमुहेने' ति द्रष्टव्यम् (वृ) ।

२ दायगसुद्धेण पडिगासुद्धेण (घ) ।

३. परिक्कीए (घ) ।

४. निवाडिए (क्व) ।

५. अहोदाण २ (घ) ।

६. कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश. प्रतीयते ।

७ स० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

८ स० पा०—गाहावई जाव त घण्णे ।

९. वि० २।१।६-११ ।

२९. तए ण से सुवाहुकुमारे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' पडिलाभेमाणे विहरइ ॥
३०. तए ण से सुवाहुकुमारे अण्णया कयाइ चाउद्दसट्टमुद्दिट्टपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसथार सथरइ, सथरित्ता दब्भसथार दुरूहइ, दुरूहित्ता अट्टमभत्त पगिण्हइ', पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्टमभत्तिए पोसह पडिजागरमाणे विहरइ ॥

सुवाहुकुमारस्स पवज्जा-पदं

३१. तए ण तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि' धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—धण्णा ण ते गामागर'•णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडव-पट्टणासम-सवाह'•-सण्णिवेसा, जत्थ ण समणे भगव महावीरे विहरइ ।

धण्णा ण ते राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभियओ, जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडा' •भवित्ता अगाराओ अणगारिय ° पव्वयति ।

धण्णा ण ते राईसर - तलवर - माडविय-कोडुविय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ, जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुव्वइय' •सत्तसिक्खावइय—दुवालसविह'• गिहिधम्म पडिवज्जति ।

धण्णा ण ते राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभियओ, जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सुणेति ।

त जइ ण समणे भगव महावीरे पुव्व्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा' •इह समोसरेज्जा इहेव हत्थीसीसस्स नयरस्स वहिया पुप्फकरडयउज्जाणे कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे ° विहरेज्जा, तए ण अह समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडे भवित्ता' •अगाराओ अणगारिय ° पव्वएज्जा ॥

३२. तए ण समणे भगव महावीरे सुवाहुस्स कुमारस्स इम एयारूव

१ ओ० सू० १६२ ।

२. पडिगिण्हइ (क) ।

३. °वरत्तकाले (क, ख) ।

४. स० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसा ।

५ स० पा०—मुडा जाव पव्वयति ।

६ स० पा०—पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म ।

७ स० पा०—इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा ।

८ स० पा०—भवित्ता जाव पव्वएज्जा ।

अज्भक्तियं जाव' वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्वि' •चरमाणे गामाणुगामं°
दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे नयरे जेणेव पुप्फकरंडयउज्जाणे जेणेव कयवण-
मालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिक्खं
ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ । परिसा राया
निग्गए ॥

३३ तए ण तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स त महया'•जणसद् वा जाव' जणसण्णिवाय
वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्भक्तिये चित्तिए कप्पिए
पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव जहा जमाली तथा° निग्गओ ।
धम्मो कहिओ । परिसा राया पडिगया ॥

३४. तए ण से सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा
निसम्म हट्ठतुट्ठे जहा मेहो तथा अम्मापियरो आपुच्छइ । निक्खमणाभिसेओ
तहेव जाव' अणगारे जाए इरियासमिए' जाव' गुत्तवभयारी ॥

सुवाहुकुमारस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३५. तए ण से सुवाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण
अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वहूहि चउत्थ-
छट्ठमत्वोवहाणेहि अप्पाण' भावेत्ता, वहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता,
मासियाए सलेहणाए अप्पाण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेएत्ता
आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए
उववण्णे ॥

३६. से ण तओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता
माणुस्स विग्गह लभिहिइ, केवलं वोहि बुज्जिभहिइ, तहारूवाणं थेराण अतिए
मुडे भवित्तां •अगराओ अणगारिय° पव्वइस्सइ ।

से ण तत्थ वहूइ वासाइ सामण्ण पाउणिहिइ । आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते
कालगए सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ'° ।

से णं ताओ माणुस्स, पव्वज्जा, वभलोए । माणुस्स, महासुक्के । माणुस्स,
आणए । माणुस्स, आरणे । माणुस्स सव्वट्ठसिद्धे ।

से ण तओ अणतर उव्वट्ठित्ता महाविदेहे वासे जाइ कुलाइं भवति अड्ढाइ

१. वि० २।१।३१ ।

२. स० पा०—पुव्वाणुपुव्वि जाव दूइज्जमाणे ।

३. स० पा०—त महया जहा पढम तथा ।

४. भ० ६।१५६ ।

५. ना० १।१।१०१-१५१ ।

६. रियासमिए (क) ।

७. वि० १।१।७० ।

८. अत्ताण (ख) ।

९. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वइस्सइ ।

१०. उववण्णे (क, ख, ग, घ) ।

जहा दढपइण्णे^१ सिज्झिह्हिइ बुज्झिह्हिइ मुच्चिह्हिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खा-
णमत काहिइ ॥

निकखेव-पदं

३७. एवं खलु जंवू । समणेण भगवया महावीरेणं जाव^२ सपत्तेण सुहविवागाण
पढमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वीर्यं अज्भयणं

भद्रनदी

- १ वितियस्स उक्खेवओ ।
एव खलु जवू । तेण कालेण तेण समएण उसभपुरे नयरे । थूभकरंडग
उज्जाण । घण्णो जक्खो । घणावहो राया । सरस्सई देवी ।
सुमिणदसण कहणा, जम्म वालत्तण कलाओ य ।
जोव्वण पाणिग्गहण, दाओ पासाय भोगा य ॥१॥
जहा सुवाहुस्स, नवर—भद्रनदी कुमारे । सिरिदेवीपामोक्खा ण पंचसया ।
सामीसमोसरण । सावगधम्म । पुव्वभवपुच्छा । महाविदेहे वासे पुडरीगिणी'
नयरी । विजए कुमारे । जुगवाहू तित्थयरे' पडिलाभिए । मणुस्साउए निवद्धे ।
इह उप्पण्णे । सेस जहा सुवाहुस्स जाव' महाविदेहे वासे सिज्झिह्हिइ
वुज्झिह्हिइ मुच्चिह्हिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ।
निक्खेवओ ॥

तच्चं अज्भयणं

सुजाए

१. तच्चस्स उक्खेवओ ।
वीरपुरं नयरं । मणोरमं उज्जाण । वीरकण्हमित्ते' राया । सिरि देवी । सुजाए
कुमारे । वलसिरीपामोक्खा पंचसया । सामीसमोसरणं । पुव्वभवपुच्छा ।
उसुयारे नयरे । उसभदत्ते गाहावई । पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए ।
मणुस्साउए निवद्धे । इह उप्पण्णे जाव' महाविदेहे-वासे सिज्झिह्हिइ
वुज्झिह्हिइ मुच्चिह्हिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ।
निक्खेवओ ॥

१. पुडरिगिणी (क), पुडरिगिणी (घ) ।

२. तित्थकरे (ख) ।

३. वि० २।१।६-३६ ।

४. वीरकण्ह० (क) ।

५. वि० २।१।६-३६ ।

चउत्थं अज्भयणं

सुवासवे

१ चउत्थस्स उक्खेवओ ।

विजयपुरं नयर । नदणवण उज्जाण । असोगो जक्खो । वासवदत्ते राया ।
कण्हा देवी । सुवासवे कुमारे । भद्दापामोक्खाण पचसया जाव पुव्वभवे । कोसवी
नयरी । धणपाले राया । वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए । इह जाव' सिद्धे ॥

पंचमं अज्भयणं

जिणदासे

१ पचमस्स उक्खेवओ ।

सोगधिया नयरी । नीलासोग उज्जाणं । सुकालो' जक्खो । अप्पडिहओ राया ।
सुकण्णा देवी । महचदे कुमारे । तस्स अरहदत्ता भारिया । जिणदासो पुत्तो ।
तित्थयरागमण । जिणदासो पुव्वभवो । मज्झमिया नयरी । मेहरहे राया ।
सुघम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

छट्ठं अज्भयणं

धणवई

१. छट्ठस्स उक्खेवओ ।

कणगपुर नयरं । सेयासोर्यं उज्जाण । वीरभद्दो जक्खो । पियचदो राया ।
सुभद्दा देवी । वेसमणे कुमारे जुवराया । सिरिदेवीपामोक्खा पचसया । तित्थ-
यरागमण । धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवो । मणिवइया' नयरी । मित्तो
राया । सभूतिविजए अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

१. वि० २।१।९-३६ ।

२. सुकोसलो (ग) ।

३. वि० २।१।९-३६ ।

४. मणिवया (घ) ।

५. वि० २।१।९-३६ ।

सत्तमं अज्भयणं

महव्वले

१ सत्तमस्स उक्खेवओ ।

महापुर नयर । रत्तासोग उज्जाणं । रत्तपाओ जक्खो । वले राया । मुभट्टा देवी । महव्वले कुमारे । रत्तवईपामोक्खा पंचसया । तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो । मणिपुर नयर । नागदत्ते गाहावई । इदपुत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव^१ सिद्धे ॥

अट्ठमं अज्भयणं

मह्नंदी

१ अट्ठमस्स उक्खेवओ ।

मुघोस नयर । देवरमण उज्जाणं । वीरसेणो^२ जक्खो । अज्जुणो राया । तत्तवई देवी । मह्नंदी कुमारे । सिरिदेवीपामोक्खा पचसया जाव पुव्वभवे । महाघोसे नयरे । घम्मघोसे गाहावई । घम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव^१ सिद्धे ॥

नवमं अज्भयणं

महच्चंदे

१. नवमस्स उक्खेवओ ।

चपा नयरी । पुण्णभट्टे उज्जाणे । पुण्णभट्टे जक्खे । दत्ते राया । रत्तवती देवी । महच्चंदे कुमारे जुवराया । सिरिकंतापामोक्खा णं पचसया जाव पुव्वभवो । तिगिंछी नयरी । जियसत्तू राया । घम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव^१ सिद्धे ॥

१. वि० २।१।६-३३ ।

२. वेरसेणो (क) ।

३. वि० २।१।६-३६ ।

४. वि० २।१।६-३६ ।

दसमं अञ्भयणं

वरदत्ते

१. दसमस्स उक्खेवओ ।

तेण कालेण तेण समएण साएय नामं नयरं होत्था । उत्तरकुरुउज्जाणे । पासा-
मिओ जक्खो । मित्तनदी राया । सिरिकता देवी । वरदत्ते कुमारे । वरसेणा-
पामोक्खा पच्च देवीसया । तित्थयरागमण । सावगधम्म । पुव्वभवपुच्छा ।
सयदुवारे नयरे । विमलवाहणे राया । धम्मरुई अणगारे पाडिलाभिए । मणुस्सा-
उए निवद्धे । इह उप्पण्णे । सेस जहा सुवाहुस्स कुमारस्स । चिंता जाव
पव्वज्जा । कप्पतरित्ते जाव' सव्वट्टसिद्धे । तओ महाविदेहे जहा दढपइण्णे जाव'
सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमत काहिइ ॥

२ एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव' सपत्तेण सुहविवागाण
दसमस्स अञ्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।
सेव भते ! सेव भते !

परिसेसो

विवागसुयस्स दो सुयक्खघा दुहविवागो सुहविवागो य । तत्थ दुहविवागे दस
अञ्भयणा एकसरगा दससु चेव दिवसेसु उट्टिसिज्जति । एव सुहविवागे वि ।
सेस जहा आयारस्स ॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर ५६७१८,

अनुष्टुप्-श्लोक १७७२ अक्षर १४,

१ वि० २।१।६-३६ ।

३. ना० १।१।७ ।

२. ओ० सू० १४१-१५४ ।



परिशिष्ट

परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

नायाधम्मकहात्रो

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतिए जाव पव्वयामि	२।१।२५	१।१।१०१
अतेउरे य जाव अज्झोववण्णे	१।१।१।४१	१।१।१।२८
अगढे वा जाव सागरे	१।८।१।५४	१।८।१।५४
अग्गिसामण्णे जाव मच्चुमामण्णे	१।१।१।११	१।१।१।११
अग्घेण जाव आमणेण	१।१।६।१।६७	१।१।६।१।८६
अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	१।२।७।६	ओ० सू० २
अज्जग जाव परिभाएत्तए	१।६।५	१।१।१।१०
अज्जाओ तहेव भणति तहेव साविया जाया		
तहेव चिंता तहेव मागरदत्ता आपुच्छति	१।१।६।६८-१०४	१।१।४।४४-५०
अज्झत्थिए०	१।८।७।६	१।१।४।८
अज्झत्थिए किमण्णे जाव वियभड	१।१।६।२।७।२	१।१।६।२।७।२
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	१।१।५।३,५।६,१।५।४,१।५।५,१।६।६,२।०।४,२।०।५, १।२।१।२,७।१,१।५।१।१।८,१।२।४,१।७।२।५, १।१।६।१।१।८,२।८।५;२।१।३।८	१।१।४।८
अज्झत्थिय जाव जाणित्ता	१।१।६।२।८।६	१।१।४।८
अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए जाव रयणि	१।१।१।५।५	१।१।१।५।४
अट्टमस्स उक्खेवओ एव खलु जवू		
जाव चत्तारि	२।८।१।२	२।२।१।२
अट्टाइ जाव नो वागरेड	१।५।६।६	१।५।६।६
अट्टाई जाव वागरेइ	१।५।६।६	१।५।६।६
अट्टाहिय महानदीसर जाभेव		
दिस पाउ जाव पडिगए	१।८।२।२।६	१।८।२।२।४
अट्टा जाव अपरिभूया	१।५।७	ओ० सू० १४१
अट्टा जाव भत्तपाणा	१।३।८	ओ० सू० १४१

अणते जाव समुप्पण्णे	१।८।२२५	वृत्ति
अणते णाणे समुप्पण्णे जाव सिद्धा	१।१६।३२४	१।५।८४
अणगारवण्णओ भाणियच्चो	१।१।१६४	ओ० सू० १६४
अणगारे जाव इहमागए	१।५।६८	ओ० सू० ५२
अणगारे जाव पज्जवासमाणे	२।१।४	१।१।७
अणिट्ठतराए चेव जाव गंघेणं	१।१२।३	१।८।४२
अणिट्ठा जाव अमणामा	१।१६।६७	१।१।४६
अणिट्ठा जाव दसण	१।१४।४३	१।१४।३६
अणिट्ठा जाव परिभोग	१।१४।५०	१।१४।३६
अणुत्तरे पुणरवि त चेव जाव तओ		
पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ		
जाव पव्वडम्ससि	१।१।११३	१।१।११२
अण्ण च त विउल	१।८।२०७	१।८।२०५
अण्णमण्ण जाव समणे	१।१३।३८	१।५।५३
अत्यत्थिया जाव ताहि इट्ठाहि जाव अणवरयं	१।१।१४३	ओ० सू० ६८
अत्यामा जाव अघारणिज्ज०	१।१६।२५३	१।१६।२१
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	१।८।१२८	१।५।१२२
अपत्थियपत्थिए जाव वज्जिए	१।५।१२२	उवा०।२।२२
अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया	१।८।७४	१।५।१२२
अपुण्णाए जाव निवोलियाए	१।१६।२५	१।१६।८
अठ्ठणुण्णाए जाव पव्वइत्तए	१।१२।३६	१।१।१०४
अठ्ठुज्जएण जाव विहरित्तए	१।५।११८; १।१६।२८	१।५।१२४
अठ्ठुट्ठेसि जाव वदसि	१।५।६७	१।५।६६
अभिसिचड जाव पडिगए	१।१६।२८०	१।१।१६१
अभिसिचइ जाव राया जाए विहरइ	१।५।६३-६५	१।१।११७-११६
अमच्चे जाव तुसिणीए	१।१२।१५	१।१२।७
अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए	१।१।१०६	१।१।१०७
अम्मयाओ जाव मुलद्धे	१।१।१२	१।१।३३
अयमेयात्त्वे जाव समुप्पज्जित्या	१।५।६५	१।१।४८
अरहण्णग जाव वाणियगाणं	१।८।६७	१।८।६४
अरहण्णग सज्जत्तगा	१।८।८४	१।८।६६
अरिट्ठनेमि जाव गमित्तए	१।१६।३२०	१।१६।३३४
अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	१।५।२०	१।१।१०६
अवगुणेड जाव पडिगए	१।१६।६५	१।१६।६१

अवरकका जाव सण्णिवाडिया	११६१२७६	११६१२६२
अवमेस तहेव जाव सामाड्यमाइयाइ	११५१६६-१०१	११५१३४-३८
अवहरड जाव तालेइ	१११८१२	१११८१८
अवहिया जाव अवक्खित्ता	११६१२२०	११६१२१६
अवीरिए जाव अघारणिज्ज °	११८१६६	११६१२१
असक्कारिय जाव निच्छूढे	११६१२४६	११६१२४५
असक्कारिया जाव निच्छूढा	११८१७२	११८१५६
असण जाव अणुवड्ढेमि	११२११२	११२११२
असण जाव द्वावेमाणी	११४१३६	११४१३८
असण जाव परिभुजेमाणी	११२१२०	११२११४
असण जाव परिवेमेइ	११२१५२,५३	११२१३७,३८
असण जाव विहरड	१११२१४	११२११४
असण मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाण		
कुलघर जाव सम्माणित्ता	११७१२२	११७१६
असण जाव पसन्न	११६११५२	११६११५१
असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा एत्तो		
अणिट्ठतराए चेव	११६१५२	वृत्ति
असोगवणिया जाव कडरीय	११६१३४	११६१३३
अह जाव अणेगभूयभावभविए	११५१७६	११५१७६
अह जाव सुया	११५१७६	११५१७६
अह रज्ज च जाव ओसन्न जाव उउवद्ध		
पीढ० विहरामि	११५१२४	११५११७,११८
अहम्मिए जाव अहम्मकेऊ	१११८१६	वृत्ति
अहम्मिए जाव विहरइ	१११८१६	१११८१६
अहाकप्प जाव किट्ठेत्ता	१११२०१	११११६८
अहापडिरूव जाव विहरड (त्ति)	१११६७,११६१११	१११४
अहापवत्तेहि जाव मज्जपाणएण	११५११६	११५११५
अहासुत्त जाव सम्म	१११२०१	११११६८
अहिमडे इ वा जाव अणिट्ठतराए		
अमणामतराए	११८१४२	वृत्ति
अहीण जाव मुरूवे	११११६	ओ० सू० १५
अहो ण त चेव	११२११६	११२११३
आइगरे जाव विहरड	२११२०	१११६५
आइण्ण वेढो	११७११४	वृत्ति

आएहि य जाव परिणामेमाणा	१।८।१०४	१।८।१६८
आउकखएण जाव चइत्ता	१।१६।१२३	१।१।२१२
आढति जाव पज्जुवासति	१।१६।१८८	१।१६।१८६
आढाइ जाव तुसिणीए	१।१२।७, १।१६।१५	१।८।१७०
आढाइ जाव तुसिणीया	२।१।३६	१।८।१७०
आढाइ जाव नो पज्जुवासड	१।१६।१६०	१।१६।१८६
आढाइ जाव भोग	१।१४।६१	१।१४।६०
आढाइ जाव सच्चिट्ठ	१।१६।३०	१।८।१७०
आढायति °	१।१।१५५	१।१।१५४
आढायति जाव सलवेँति	१।१।१५४	१।१।१५४
आपुच्छइ जाव पडिगए	१।१६।२००	१।१।१६१
आपुच्छणिज्ज जाव वड्ढावियं	१।७।४२	१।७।६
आपुच्छामि जाव पन्वयामि	१।१२।३८	१।१।१०१
आपुच्छामि तएण जाव पन्वयामि	१।१६।१२	१।१।१०१
आरोगगतुट्ठी जाव दिट्ठे	१।१।२६	१।१।२०
आलवे वा जाव भविस्सइ	१।१६।३१२	१।८।१८६
आलिघरएसु य जाव कुसुमघरएसु	१।३।१६	वृत्ति
आलोएहि जाव पड्विज्जाहि	१।१६।११५	वृत्ति
आसयति वा जाव तुयट्ठति	१।१७।२२	१।१७।२२
आसाएइ जाव अणुपरियट्ठिस्सइ	१।१६।४२	१।६।४४
आसाएमाणीओ जाव परिभुजेमाणीओ	१।२।१७	१।१।८१
आसाएमाणी जाव विहरइ	१।२।१४	१।१।८१
आसाएमाणे जाव विहरइ	१।१२।२२	१।१।८१
आसायणिज्ज जाव सन्विदिय०	१।१२।२०	१।१२।४
आसायणिज्जे जाव सन्विदिय०	१।१२।१६	१।१२।४
आसिय जाव गधवट्ठिभूय	१।५।६७	१।१।३३
आसिय जाव परिणीयं	१।१।७६	वृत्ति
आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा	१।१६।२८	१।१।१६१
आसुरुत्ते जाव तिवलिय	५।८।१५६	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव तिवलिय एव	१।१६।२८६	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव पउमनाभ	१।१६।२८०	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	१।५।१२२	१।१।१६१
आहारे वा जाव पन्वयामो	१।८।१३	१।५।६०
आहेवच्च जाव अभिरमेत्या	१।१।१६७	१।१।१५७
आहेवच्च जाव पालेमाणे	१।५।६	१।१।११८

आहेवच्चं जाव विहरइ	११३।८	१११११८
आहेवच्च जाव विहरइ	१११८।२०	११५।६
आहेवच्च जाव विहरसि	११११५७	११५।६
इट्टा जाव मणामा	१११६।७०	१११।४६
इट्टा त चेव	१११६।४८	१११६।४७
इट्टाहि जाव आसासेइ	१११६।१३१	१११।४६
इट्टाहि जाव एवं	११।२०३	१११।४६
इट्टाहि जाव वग्गुहि	११।६७	१११।४८
इट्टाहि जाव समासासेइ	१११।५०	१११।४६
इट्ठे जाव से ण	११५।२०	१११।१४५
इड्ढी जाव परक्कमे	११।७६, १११६।२६५	उवा० २।४०
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्या	११।७६, २।११२	१११।४८
इरियासमियाओ जाव गुत्तवभचारिणीओ	११४।४०	१११।१६४
इहमागए जाव विहरइ	११५।५३	१११।६७, ११५।५२
ईसर जाव नीहरण	११४।५६	११५।६, १।२।३४
ईसर जाव पभित्तीण	१।७।६	११५।६
ईहामिय जाव भत्तिचित्त	११।८६; १।८।४६	१११।२५
उक्किट्ट जाव समुद्धरवभूय	१११।८।४०	१।८।६७
उक्किट्टाए जाव देवगईए	१११६।२०४, २०६	राय० सू० १०
उक्किट्टाए जाए विज्जाहरगईए	१११६।१६०	१।४।२१
उक्किट्टाए प्फ कुम्मगईए	१।४।२१	वृत्ति
उक्खेवओ तइयवग्गस्स	२।३।१	२।२।१
उक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२।५।३	२।२।३
उज्जलजाव दुरहियास	१११।१६३	१११।१६२
उज्जला जाव दाहवक्कतीए	१११।१८७	१११।१६२
उज्जला जाव दुरहियासा	११५।१०६, १११६।२०, १११६।४५	१११।१६२
उज्जाणे जाव विहरइ	१११६।३२१	१११६।३१६
उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए त्तिदडय जाव		
घाउरत्ताओ	११५।८०	भ० २।५२, १।५।५२
उत्तरिज्जेहि जाव चिट्टामो	१।८।१७६	१।८।१७७
उत्तरिज्जेहि जाव परम्महा	१।८।१७८	१।८।१७७
उदगपरिफोसिया जाव भिसियाए	१।८।१५१	१।८।१४१
उप्पलाइ जाव सहस्मपत्ताइ	१।२।१४	राय० सू० ६७
उम्मुक्कवालभावा जाव उक्किट्टसरीरा	१११६।१२८	१११६।३७
उम्मुक्कवालभावा जाव रूवेण	१।८।३८; १११६।३७	वि० १।४।३६

उम्मुक्कवालभावे जाव जोव्वणग०	११४१२२	१११२०
उरालस्स क सि व म जाव सुमिणस्स	११११६	११११६
उरालाड जाव भुजमाणा	११२१४०	११६१२२३
उगलाड जाव विहरइ	११४१२०	११२१४०
उरालाड जाव विहरिज्जामि	११६१११३	११६१११३
उरालाड जाव विहरिन्सइ	११६१२०४	११६१११३
उराले जाव तेयलेस्से	११६११२	१११६
उरालेण तहेव जाव भास	१११२०४	१११२०२
उव्वेए जाव फामेण	११२१४	११२१३
उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे	११३१२२	११३१२१
उव्वत्तेड जाव टिट्टियावेड	११३१२६	११३१२१
उव्वेत्तेति जाव दत्तेहि निव्वुडेति जाव करेत्तए	११४११६	११४१११
उव्वेत्तेति जाव नो चेव ण सचाएति करेत्तए	११४११२	११४१११
एगर्दिसि जाव वाणियगा	११८१६७	११८१६२
एगयओ जहा अरहन्ने जाव लवणसमुद्द	१११७५	११८१६६
एज्जमाणि जाव निवेसेह	११८१७१	१११४८, ११६११३१
एव अत्थेण दारेण दासेहि पेमेहि परियणेणं	११४१७७	११४१७७
एव कुलत्या वि भाणियव्वा । नवरं इम नाणत्त—इत्तिकुलत्या य धन्नकुलत्या य । इत्तिकुलत्या तिविहा पणत्ता, त जहा— कुलवहुयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधुयाइ या		
धन्नकुलत्या तहेव	११५१७४	११५१७३
एव जहा मल्लिणाए	११६१२००	११८१५४
एव जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स	११६१३१, ३२	११६१२०, २२
एव जहा सुरियाभस्स जाव एव	२१११५	राय० सू० ६६८
एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव		
समोसढाओ तहेव मघाडओ जाव अणुपविट्टे		
तहेव जाव सूमालिया	११६१६४-६७	११४१४०-४३
एव जहेव राई तहेव रयणी वि	२११५७-६०	२११४७-५०
एवं जाव घोसस्स	२१३१११	ठाण २१३५६-३६२
एव जाव सागरदत्तस्स	११६१८८-६१	११६१६३-६६
एव पत्तियामि ण रोएमि णं	११११०१	११११०१
एव पाएहि सीसे पोट्टे कायसि	११११५३	११११५३
एव पायगुलियाओ पायगुट्टे वि		
कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाई	११४१२१	११४१२१

एव पासत्ये कुसीले पमत्ते	१५।११७	१५।११७
एव मासा वि । नवर इम नाणत्त—मासा तिविहा पणत्ता, त जहा—कालमासा य अत्यमासा य घन्नमासा य । तत्य ण जे ते कालमासा ते ण दुवालस त जहा—सावणे जाव आसाढे । तेणं अभक्खेया । अत्यमासा दुविहा हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य तेण अभक्खेया । वन्नमासा तहेव	१५।७५	१५।७३, भ० १८।२१५-२१६
एवं वट्टए आढोलियाओ तिंदूसए पोच्चुल्लए साडोल्लए	११८।८	११८।८
एव सेसाओ वि	२।७।६	२।७।२
एवं सेसाओ वि	२।८।६	२।८।२
ओरोह जाव विहरइ	११६।२२५	११६।१६५
ओसन्ने जाव सथारए	१५।१२५	१५।११७
ओह्य जाव भियायह	१।८।१७१	१।१।३४
ओह्यमण जाव भियायइ	१।३।२३	१।१।३४
ओह्यमणसकप्प जाव भियायमार्णि	१।१४।३८, १।१६।२०८	१।१।३४
ओह्यमणसकप्पा०	१।१४।३८	१।१।३४
ओह्यमणसकप्पा जाव भियाइ	१।१।३४	वृत्ति
ओह्यमणसकप्पा जाव भियायइ	१।१४।३७, १।१६।६२, ८७, २०७	१।१।३४
ओह्यमणसकप्पा जाव भियायति	१।६।१५	१।१।३४
ओह्यमणसकप्पा जाव भियायह	१।८।१७३	१।१।३४
ओह्यमणसकप्पा जाव भियायामि	१।१६।६५	१।१।३४
ओह्यमणसकप्पा जाव भियाहि	१।१६।६४, ६२, २०८	१।१।३४
ओह्यमणसकप्पे जाव भियामि	१।१७।१०	१।१।३४
ओह्यमणसकप्पे जाव भियायइ	१।८।१६८, १।१४।७७, १।१७।८	१।१।३४
ओह्यमणसकप्पे जाव भियायमाणे	१।१६।३२	१।१।३४
ओह्यमणसकप्पे जाव भियायसि	१।१७।६	१।१।३४
कडरीए उट्टाए उट्टेइ उठेत्ता जाव से जहेय	१।१६।१२	१।१।१०१
कत्ता जाव भवेज्जामि	१।१६।६७	१।१।४४३
कते जाव जीवियऊसासए	१।१।१४५	१।१।१०६
कक्खडा जाव दुरहियासा	१।१।१६२	वृत्ति
कज्जेसु य जाव रहस्सेसु	१।७।४२	१।५।६०
कट्टु जाव पडिसहेइ	१।१६।२५५	१।१६।२५१, २५२
कट्टुस य जाव भरेत्ति	१।१७।२८	१।१७।२२

कणग जाव दलयइ	११६१६८	१११६१
कणग जाव पडिमाए	११८१८०	११८४१
कणग जाव सावएज्ज	११८१८८	१११६१
कणग जाव सिलप्पवाले	११८१८३	१११६१
कयकोउय जाव सव्वालकारविभूमिया	१११८१	११२२६
कयत्ये जाव जम्म०	११३१२५	११३१२५
कयवलिकम्म जाव सव्वालकारविभूमिय	११६१७३	१११८१
कयवलिकम्मा जाव पायच्छित्ता	१११२७	१११३३
कयवलिकम्मा जाव विपुलाइ जाव विहरइ	१११३२	११२६६
कयवलिकम्मे जाव रायगिह	११२५८	१११८१
कयवलिकम्मे जाव सरीरे	१११६६	१११२७
कयवलिकम्मे जाव सव्वालकार०	१११४७	१११८१
करयल०	११५६८, १२३, ११८७३, ८१, ६८, १५८, १६०, ११६३१; ११४३१, ५०	११११६
करयल०	११८२०३, २०४, ११६१३७, १६१, २१६, २६४, ११७११	१११२६
करयल०	११६१२४६	१११३६
करयल अर्जलि	१११५८, ६०	११११६
करयल जाव एव	१११३०, ११६१७०, २६२; ११६१३, ४६; २११२०	१११२६
करयल जाव एव	११६१७; ११४२७, २८; ११६१४३	१११२१
करयल जाव कट्टु	१११११८, ११६१३३; २११११	१११२६
करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरह	११६१४२	११६१३२
करयल जाव कण्ह	११६१३८	११६१३७
करयल जाव पच्चप्पिणंति	११८१६६	११८१६५
करयल जाव पडिसुणेइ	११८१६५	१११२६
करयल जाव वद्धावेइ	११५११८	१११४८
करयल जाव वद्धावेति	११६१२३६	१११४८
करयल जाव वद्धावेति	११७१२६	१११३६
करयल जाव वद्धावेत्ता	११८१३१; ११६१२४४	१११४८
करयल जाव वद्धावेहि	११८१०७	१११४८
करयल त चेव जाव समासोरह	११६१३४	११६१३२
करयल तहत्ति जेणेव	११४१३३	११५१३३
करयलपरिग्गहिय जाव अंजलि	१११२१	११११६

करयलपरिग्गहिय जाव कट्टु	१११३६	१११२६
करयलपरिग्गहिय जाव वद्धावेत्ता	११५१२६	१११४८
करयल वद्धावेइ	११५१२०	१११४८
करयल वद्धावेत्ता	११५१०५	१११४८
करयल वद्धावेत्ता	११६११५७	१११३६
करेइ जाव अडमाणीओ	११४१४१,४२	वृत्ति
करेंति जाव पच्चुत्तरति	११६११५	११२१४
करेत्ता जाव विगयसोया	१११८२७	११६४८
करेमो त चेव जाव णूमेमो	११६१२८८	११६१२८२
करेह करेत्ता जाव पच्चप्पिणह	२१११२	राय० सू० ६
करेह जाव पच्चप्पिणति	११८४०	११८५१
कल्ल	११८५१	१११२४
कल्लं जाव विहरइ	११५१२४	११५१२४
कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा	११२१३३	११२१३३
कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए	११२१६७	११२१३३
कसप्पहारेहि य जाव लयाप्पहारेहि	११२४५	११२१३३
कारणेषु य जाव तथा	११५१६०	११११६
कालगए जाव प्पहीणे	११६१३२२	११५१८४
कालोभासे जाव वेयण	११२१६७	वृत्ति
कासे जोणिसूले जाव कोढे	११६१३०	११३१२८
किण्हाण य जाव सुक्किलाण	११७१२२	११७१२३
किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि	११३१२०	११७१२३
किण्होभासा जाव निउरवभूया	११७११३	ओ० सू० ४
कुभए एव त चेव जाव पवेसेइ रोहासज्जे	११८१७४	११८१७३
कुडवा जाव एगदेससि	११७११७,१८	११७११५,१६
के जाव गमणाए	११११११	११११०७
कोट्टुपुडाण य जाव अण्णेसिं	११७१२२	वृत्ति
कोट्टागारसि सकम्म स	११७१२५	११७१७
कोडुंविद्य जाव खिप्पामेव लहुकरणजुत्त		
जाव जुत्तामेव उवट्टुवेंति	११८५२	उवा० ११४७, ११८५१
कोडुवियपुरिसा जाव एव	११५१७	११५१६
कोडुवियपुरिसा जाव ते वि तहेव	१११११७	१११११६
कोडुवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणति	११११६२	१११२३
खड जाव एडेह	११६१७८	११६१७४

खतीए जाव वभचेरवासेणं	१११०५	१११०३
खिज्जणाहि य जाव एयमट्टु	१११८१४	१११८१०
खीरघाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा	१११६३६	आयारचूना १५११४
गघ जाव उस्सुकक	११८८४	१११३०
गघ जाव पडिविसज्जेइ	१११६१६६	११८१६०
गघ जाव सक्कारेत्ता	११७१६	१११३०
गघव्वेहि य जाव विहरति	१११६१५२	१११६१५०
गज्जिय जाव थणियसद्दे	११६१६	११८७१
गणनायग जाव आमत्तेति	१११८१	१११२४
गणिमस्स जाव चउव्विहभडगस्स	११८६६	११८६६
गब्भस्स जाव विणेंति	११२१७	११२१७
गय०	११८६३	१११६७
गवलगुलिय जाव खुरघारेण	११६१६	उवा० २१२२
गवल जाव एडेमि	११६३७	११६१६
गहाय जाव पडिगए	१११८३६	१११८३८
गामघा२ वा जाव पथकोट्टि	१११८२४	१११८२२
गामागर जाव अणुपविससि	१११६२२६	११८५८
गामागर जाव आहिडह	१११४४३, ११७१७	११८५८
गिण्हामि जाव मग्गणगवेसण	११२२६	११२२७, २६
गुणे० किं चालेइ जाव नो परिच्चयइ	११८७६	११८७४
घडएसु जाव सवसावेइ	१११२१६	१११२१६
चउत्थ जाव भावेमाणे	११८१६	११११६५
चउत्थ जाव विहरइ	११५१०१; २११३३	११११६५
चउत्थ जाव विहरति	११८१७, २५	११११६५
चउत्थस्स उक्खेवओ	२१४१	२१२१
चपगपायवे०	१११८४६	११११०५
चच्चर जाव महापहपहेसु	१११६७	१११३३
चरगा वा जाव पच्चप्पिणति	१११५७	१११५६
चरमाणा जाव जेणेव	११२६६	१११४
चरमाणे जाव जेणेव	११५१०	१११४
चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव		
विहरइ	११५१०८	१११४
चवल० नहेहि	११४१७	११४१४
चारगसोहणं जाव ठिइपडिय	१११४३३, ३४	१११७६-७६

चारुवेसा जाव पडिरुवा	११२।८	११११७
चालित्तए जाव विप्परिणामित्तए	१।८।७६	१।८।७६
चिट्टुड जाव उट्टाए	१।१।१५१	१।१।१५०
चिट्टुड जाव सजमेण	१।१।१६३	१।१।१५१
चित्तेह जाव पच्चप्पिणह	१।८।११७	१।१।२३
चेइए जाव अहापडिरुव	१।२।६६	१।१।४
चेइए जाव विहरड	१।१।६४	१।१।४
चेइए जाव सजमेण	२।१।३	१।१।४
चोक्खा जाव सुहासणवरगया	१।१।६।१५२	१।२।१४
चोरनायगं जाव कुडगे	१।१।८।३०	१।१।८।२१
चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए	१।१।८।२८	१।१।८।२५
छट्टुछट्टेण जाव विहरड	१।१।३।३६	१।१।३।३६
छट्टुछट्टेण जाव विहरड	१।१।६।१०८	१।१।६।१०६
छट्टुछट्टेण जाव विहरित्तए	१।१।६।१०७	१।१।६।१०६
छट्टुछट्टम जाव विहरड	१।१।६।१०५	१।१।१।६५
जणवय जाव नित्याण	१।१।८।३२	१।१।८।२२
जहा पोड्डिला जाव परिभाएमाणी	१।१।६।६२	१।१।४।३८
जहा मडुए सेलगस्स जाव वलिय सरीरे जाए	१।१।६।२४-२६	१।५।१।१४-१।१६
जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा	१।१।७।११	१।८।७२
जहा महव्वले जाव परिवड्डिया	१।८।३७	राय० सू० ८०४
जहा मागदियदारगाण जाव कालियवाए	१।१।७।६	१।६।६
जहा वद्धमाणसामी नवर नवहत्थुस्सेहे०	२।१।१६	ओ० सू० १६, वाचनान्तर पृ० १४०
जहा सूरियाओ जाव भासमणपज्जत्तीए	२।१।४०	राय० सू० ७६७
जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कतीए	१।१।६।२०	१।५।१०६
जाय च जाव अणुवड्डेमि	१।२।१४	१।२।१२
जाया जाव पडिलाभेमाणी	१।१।४।४६	१।५।४७
जाव एव चेव पल्हायणिज्जे	१।१।२।२३	१।१।२।२२
जाव जहा	१।४।२२	१।२।७६
जाव पज्जुवासड	१।५।१७	१।१।६६
जाव सणियं	१।४।१६	१।४।१३
जाव समणोवासए जाए अभिगयजीवा- जीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५।६३, ६४	राय० सू० ६६३, १।५।४७
जाव हावभाव	१।८।१२१	१।८।११७

जिमिय जाव सूइभूया	१।२।१४	१।१।८१
जिमियभुत्तुत्तरागय जाव सुहासण०	१।१६।२१६	१।२।१४
जोव्वणेण य जाव नो खलु	१।८।१५४	१।८।६०
भोडा जाव मिलायमाणा	१।११।४	१।११।२
ठवेति जाव चिट्ठति	१।१७।२२	१।१७।२२
डिभएहि य जाव कुमारियाहि	१।२।२७	१।२।२५
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।१४।६४	१।१।२७
ण्हाए जाव सरण उवेइ २ करयल एव व	१।१६।२६५	१।१६।२६४
ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइ	१।२।७१	१।१।१२४
ण्हाय जाव पुरिससहस्सवाहिणीय	१।१४।५३	१।१४।१८
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।२।६६; १।८।१७६	१।१।२७
ण्हाया जाव वहुहि	१।८।१६८	१।८।१७६
ण्हाया जाव सरीरा	१।३।११	१।१।२७
ण्हायाण जाव सुहासण०	१।१६।८	१।७।६
तइयज्जभयणस्स उक्खेवओ	२।१।५६	२।१।४६
तइयवगस्स निक्खेवओ	२।३।१२	२।१।६३
तएण से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे		
नवर भेरी नत्थि जाव जेणेव	१।१६।१४३, १४४	१।१६।१३४-१४१
त इक्खामि ण जाव पव्वइत्तए	१।१।१११	१।१।१०४
तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स		
जाव पठवइस्ससि	१।१।१०७	१।१।१०६
त चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स	१।१।८।५२	१।१।८।५१
त रयणिं च ण चोदस महासुमिणा		
वण्णओ	१।८।२६	कल्पसूत्र ४
तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी	१।२।३३	१।२।११
तच्च दूय चप नयरिं । तत्थ ण तुम		
कण्ण अंगरायं सल्लं नदिराय करयल		
तहेव जाव समोसरह । चउत्थं दूय		
सोत्तिमइं नयरिं । तत्थ ण तुमं सिमु-		
पाल दमघोससुय पचभाइसय-सपरिवुड		
करयल तहेव जाव समोसरह । पचमं		
दूय हत्थिसीस नयरिं । तत्थ ण तुमं		
दमदतरायं करयल जाव समोसरह ।		
छट्ठं दूय महुर नयरिं । तत्थ ण तुमं		

धरं रावं करयल जाव नमोसरह ।
 नत्तम दूयं रायगिह नयर । तत्य ण
 तुमं नहदेवं जरासंघमुय करयल जाव
 नमोसरह । अट्टमं दूय कोडिण्णं नयर ।
 तत्य णं तुम रुप्पि भेमगनुय करयल
 तहेव जाव नमोनरह । नवमं दूय
 विराटं नयरि । तत्य ण तुम कीयग
 भाउसयममग्ग करयल जाव नमोस-
 रह । दनम दूय अवमेमेनु गामागर-
 नगरेनु अणेगाइ रायहन्माड जाव नमो-
 सरह । तए ण मे दूए तहेव निग्गच्छड
 जेणेव गामागर तहेव जाव नमोनरह ।

१।१६।१४५

१।१६।१३२-१३४

तच्च पि जाव मच्चिट्ठ

१।१६।३५

१।१६।३५

तच्चा जाव मब्भूया

१।१२।३१

१।१२।१६

तणकूडे०

१।१४।७७

१।१४।७६

तत्ये जाव सजायभए

१।११।६८

१।११।६०

तयावर ईहापूह जाव सण्णिजाइसरणे

१।८।१८१

१।११।६०

तनवर जाव पभित्तौ

१।१४।६५

१।५।६

तनवर जाव मत्यवाह

१।५।६

ओ० सू० ५२

तहत्ति जाव पडिमुणेंति

१।५।१३

१।१२।६

तहारूवेहि जाव विपुल

१।१२।१५

१।१२।०६

तहेव जाव पहारेत्य

१।८।१३६,१३७

१।८।६६,१००

तहेव सरीरवाउसिया त चेव सव्व

जाव अत

२।१।५१-५४

२।१।३२-४४

तहेव सेयापीएहि कलमेहि ण्हावेड

जाव अरहश्रो अरिट्टनेमिस्स छत्ताड-

छत्त पडागाडपडाग पासइ २ त्ता

विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता

१।५।२८,२९

१।१।१२६,१४४,६६

ताओ जाव विदेहे वामे जाव अत

१।१६।३२६

१।१।२१२

तिक्खुत्तो जाव एव

१।१६।३४

१।१६।२६

तिग जाव पहेसु

१।५।२६

१।१।३३

तिग जाव वहुजणस्स

१।१६।२६

१।५।५३

तित्तेसु जाव विमुक्कवघणे

१।६।४

१।६।४

तुट्ठी वा जाव आणदो

१।२।६४

१।२।६३

तुवमण्ण जाव पव्वयामि

१।१२।४३

१।१।१०४

तुरियं जाव वेइय

१।८।१६६

१।४।१४

तुरुक्क जाव गधवट्टिभूय	११६।१५५	१११२२
तेसि जाव वहूणि	११७।६	१।५।७।१
थलय०	१।५।४।६	१।५।३।०
थलय जाव दसद्धवण	१।५।३।१	१।५।३।०
थलय जाव मल्लेण	१।५।३।२	१।५।३।०
थावच्चापुत्ते जाव मुडे	१।५।५।०	१।५।३।४
थेरागमण इदकुभे उज्जाणे समोसढा	१।५।५	१।५।१।२
थेरा जाव आलित्ते	११६।३।१५	१११।१।४।६
दडणाणि जाव अणुपरियट्टइ	१।४।१।५	सूय० २।२।७।५
दडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ	१।३।२।४	१।३।२।४
दसमस्स उक्खेवओ एव खलु जंवू जाव अट्ट	२।१।०।१।२	२।२।१।२
दाणघम्म च जाव विहरइ	१।५।१।४।१ १५२	१।५।१।४।०
दारिय जाव भियायमाणि	११६।६।४	११६।६।२
दासचेडियार्हि जाव गरहिज्जमाणी	१।५।१।४।७	१।५।१।४।६
दाहिणद्धुभरहस्स जाव दिस	११६।२।६।६	११६।२।६।७
दिट्ठे जाव आरोग्ग	१११।२।०	१११।२।०
दित्ते जाव विउलभत्तपाणे	१।२।७	वृत्ति
दीहमद्ध जाव वीईवइस्सइ	१।२।७।६	१।२।६।७
दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेइ	१।५।१।२।६	१।५।१।१।६
दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ	११७।१।३	१११।१।०।२
दुरुहति जाव काल	११६।३।२।३	११६।३।२।३
दुरूढा जाव पाउवभवति	१।५।१।४	१।५।६।१
दुइज्जमाणा जाव जेणेव	११६।३।२।१	१।१।४
दुइज्जमाणे जाव विहरइ	११६।३।२।०	१।१।४, ११६।३।१।६
देवकन्ना	१।५।१।५।४	१।५।५।६
देवकन्ना वा जाव जारिसिया	१।५।५।६, १११	वृत्ति
देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए	१।५।१।२।५	१।५।१।२।६
देवलोगाओ जाव महाविदेहे	११६।२।४	१११।२।१।२
देवाणुप्पिया जाव कालगए	११६।३।२।३	११६।३।२।२
देवाणुप्पिया जाव जीवियफले	१।५।७।६	उवा० २।४।०
देवाणुप्पिया जाव नाइ	११६।२।६।५	१।५।१।२।३
देवाणुप्पिया जाव पव्वत्तिए	११६।३।४	११६।२।६
देवाणुप्पिया जाव साहराहि	११६।२।४।२	११६।२।४।०
देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे	११६।२।६	११६।२।६
देवी जाव पंडुस्स	११६।३।०।१	११६।२।६।२

देवी जाव पडमनाम०	११६१२३६	११६१२३३
देवी जाव नाहिया	११६१२४०	११६१२०८
देवेण वा जाव निग्गयाओ	११८१७५	उवा० २१४५
देवेण वा जाव मन्चीए	११८१३५	११८१७५
दोच्चन्स वग्गन्स उक्खेवयो	२१२११	२११६
घण कणम जाव परिभाएउ	१११६२	१११६१
घण जाव मावएज्जम्म	११७१३४	१११६१
घण जाव मावएज्जे	१११६६	१११६१
घण्णा णं ने जाव ईसरपभियओ	१११३१५	१११३३
घम्म नोच्चा ज नवर	११५१८७	११११०१
घम्मं नोच्चा जत्ता ण देवाणुप्पियाण अंतिए वहवे उग्गा भोगा जाव चउत्ता हिरण्ण जाव पव्वडया तथा ण अह णो नचाएमि पव्वडए	११५१४५	राय० सू० ६६५
घम्मकहा भाणियव्वा	११५१७८	११५१६३
घम्मोत्ति वा जाव विजयस्स	११२१७५	११२१६४
घोवमि जाव आमयसि	२११३५	२११३४
घोवेड जाव आमयड	२११३८	२११३४
घोवेइ जाव चेएड	१११६११६	१११६११४
घोवेमि जाव चेएसि	१११६११५	१११६११४
नदीमरे अट्टाहिय करेति जाव पट्टिमया	११८१२२४	जवू० वक्ष० ५
नगरगिहाणि	११८१६७	११८१५८
नगर जाव मण्णिवेसाण आहेवच्च जाव विहराहि	१११११८	ओ० सू० ६८
नच्चामन्ने जाव पज्जुवामड	१११४१८५	१११६६
नट्टा य जाव दिन्न०	१११३१०	ओ० सू० १
नट्टमईए जाव अवहिए	१११७१०	१११७८
नयरि अणुपविसह	१११६१२१६	१११६१२८
नवमस्स उक्खेवओ एव खलु जवू जाव अट्ट	२१६११,२	२१२११,२
नवर तस्स	११७१२८,२६	११७१८,२५,२६
नाड० ११५१२६, ११७१६, ६, २२, २६, ४२, ११५१११, १११६१५०, ५४, १११८, ५१, ५६		१११८१
नाड०	१११४१८, १११५१६	११५१२०

नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि	१७२५	१७६
नाइ जाव आमतेइ	११४५३	१७६
नाइ जाव नगरमहिलाओ	१२१९	१२१२
नाइ जाव परियण	११४१९	११५१
नाइ जाव परियणेण	१६४८	११५१
नाइ जाव परिवुडे	११६५०	१५२०
नाइ जाव सपरिवुडे	११३१५, ११४५३	१५२०
नाम वा जाव परिभोग	११६६७	११४३६
नाम जाव परिभोग	११४३७	११४३६
नासानीसासवायवोज्झ जाव		
हसलक्खण	१११२८	आयारचूला १५२८
निक्खेवओ	२४६	२१४५
निक्खेवओ अज्झयणस्स	२२५	२१४५
निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स	२४६	२१६३
निक्खेवओ दसमवग्गस्स	२१०७	२१६३
निक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२३५	२१४५
निक्खेवओ विइयवग्गस्स	२२१०	२१६३
निग्गथा जाव पडिसुणेंति	११६२३	११२६
निग्गथाण जाव विहरित्तए	१५१२४	१५११४
निग्गथी वा	११८६१	१२६८
निग्गथी वा जाव पव्वइए	१७२७; ११०३, १११३, ५	१२६८
निग्गथे वा जाव पव्वइए	१२७६	१२६८
निग्गथो वा	११७२५, ३६	१२६८
निग्गथी वा जाव पचसु	११५१४	१३२४
निग्गथो वा २ जाव विहरिस्सइ	१५१२६	१२७६
निट्ठिय जाव विज्झायं	१११८४	१११८३
निप्पाणे जाव जीवविप्पजढे	११८५४	१२३२
नियग०	१७६	११५१
निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चाउदते	१११६७	१११५६
निव्वाघायसि जाव परिवड्डइ	११६३६	राय० सू० ८०४
निसते जाव अब्भणुण्णाया	११४५०	१११०४
निसम्म ज नवर महव्वल कुमार		
रज्जे ठावेमि	१८५	१५८७
निसीयइ जाव कुसलोदत	११६१९८	११६१९८

निस्संचार जाव चिट्ठति	१।८।१७२	१।८।१६७
नीलुप्पल०	१।१।८।४६	१।१।१६
नीलुप्पल जाव अमि	१।१।४।७३	१।१।१६
नीलुप्पल जाव खघनि	१।१।४।७७	१।१।४।७३
पउमनाहे जाव नो पडिमेहिए	१।१।६।२८७	१।१।६।२८५
पचअणगारमया दहूणि वामाणि मामण्ण- परियाग पाउणिता जेगेव पडुगीए पव्वए तेणेव उवागच्छति जहेव पावच्चापुत्ते तहेव मिद्धा०	१।५।१२७,१२८	१।५।८३,८४
पचमवग्गम्म उक्खेवओ एव खलु जयू जाव वत्तीम	२।५।१,२	२।२।१,२
पचमे जाव भवियव्व	१।७।३३	१।७।२५,६
पचयण्ण जाव पूरिय	१।१।६।२७६	१।१।६।२७५
पचाणुव्वडय जाव नगणोवामए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाण पढवा०	१।५।४५-४७ १।१।६।३१३	वृत्ति, ओ० सू० १२०,१६२ १।१।११६
पशएण जाव विहरड	१।५।१२६	१।५।१२४
पगडभट्टए जाव विणीए	१।१।२०६,१।१।६।२४	ओ०सू० ११६
पच्चक्खाए जाव आलोडय०	१।१।६।४६	१।१।२०६
पच्चक्खाए जाव थूनए	१।१।३।४२	१।१।२०६
पज्जग जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे पव्वइम्मसि	१।१।१११	१।१।११०
पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणति	१।१।७७	१।१।२३
पट्टिया जाव गहियाउहपहरणा	१।२।३२	राय०सू० ६६४
पडागे जाव दिमोदिमि	१।१।६।२५२	वृत्ति
पडिवुद्धा जाव विहाडिय	१।१।६।६५	१।१।६।६२
पडिवुद्धि जाव जियमत्तु	१।८।३६	१।८।२७
पडिवुद्धी० करयल०	१।८।४७	१।१।३६
पडिलाभेमाणे जाव विहरड	१।५।५६	१।५।५२
पडिमुणेति जाव उवसपज्जित्ता	१।१।६।२३	१।५।११३
पढमज्जयणस्स उक्खेवओ	२।७।३, २।८।३, २।९।३	२।२।३
पढमस्स उक्खेवओ	२।१०।३	२।२।३
पणामेत्ता जाव कूव	१।१।६।२४४	१।१।६।२४३
पणत्ते जाव सग्ग	१।५।६०	१।५।५५

पतिवया जाव अपासमाणी	११६।६२	११६।५६
पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए	११७।१५	११७।१४
पत्तिया जाव चिट्ठति	१११।२	१११।२
पत्तेय जाव पहारेत्थ	११६।१७१	११६।१४६
पमाएयव्वं जाव जामेव	१५।३३	११।१४८
परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवडस्सइ	११५।१४	१२।७६
परिग्गहिए जाव परिवसित्तए	११।१३१	११।१०७
परिणमति त चेव	११२।१७	११२।६
परिणममाणा जाव ववरोवेत्ति	११५।१५	११५।११
परिणामेण जाव जाईमरणे	११३।३५	११।६०
परिणामेण जाव तयावरणिज्जाण	११४।८३	११।१६०
परितता जाव पडिगया	११३।३१	१४।१६
परिपेरतेण जाव चिट्ठति	११७।२२	११७।२२
परियागए जाव पासित्ता	१३।१६	१।३।५
परियाणह जाव मत्थयसि	११।४८	११।४८
पल्लसि जाव विहरति	१।७।२०	१।७।१६
पवर जाव पडिमेहित्या	११६।२५६	११।१६५
पवर जाव भीए	११८।४४	११८।४२
पवरविवडिय जाव पडिसेहिया	११६।२५३	११।१६५
पव्वए जाव सिद्धे	१५।१०४, १०५	१५।८३, ८४
पव्वावेइ जाव उवसपज्जित्ता	२।१।३०, ३१	१।१।१५०, १५१
पव्वावेड जाव जायामायाउत्तिय	१।१।१६२	१।१।१५०
पमन्थदोहला जाव विहरइ	१।८।३३	१।१।६८, ६९
पाणाइवाएण जाव मिच्छदसणसल्लेणं	१।६।४	१।१।२०६
पाणाणुकपयाए जाव अतरा	१।१।१८६	१।१।१८१
पाणाणुकपयाए जाव सत्ताणुकपयाए	१।१।१८२	१।१।१८१
° पामोक्खा जाव वाणियगा	१।८।८१	१।८।६६
° पामोक्खे जाव वाणियगे	१।८।८३	१।८।६६
पायसघट्टाणाणि य जाव रयरेणुगुडणाणि	१।१।१८६	१।१।१५३
पावयणं जाव पव्वइए	१।२।७३	१।१।१०१, १०२, १५०, १५१
पावयण जाव से जहेयं	१।१।२।३५	१।१।१०१
पासाईए जाव पडिरुवे	१।१।८६	१।१।८६
पासित्ता जाव नो वदसि	१।५।६७	१।५।६६
पिय जाव विविहा	१।१।२०६	१०।२।५२

पीइदाण जाव पडिविसज्जेइ	११३१३१	१११३०
पीइमणा जाव हियया	२११११	११११६
पीढ	११५११७	११५११०
पुच्छणाए जाव एमहालियं	११११५४,१५५	११११५३
पुढवि जाव पाओवगमण	११५१८३	१११२०६
पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स	११२१५६,६४	११२४०
पुफ्फ जाव मल्लालकार	११२११४	११२११२
पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा	११३११६	११११२
पुरापोराण जाव पच्चणुम्भवमाणी	११६१६२	वृत्ति
पुरापोराण जाव विहरड	११६११३३	११६१६२
पुव्वभवपुच्छा एव	२११५०	२१११५
पोक्खरिणीओ जाव मरमरपतियाओ	११३११५	राय०सू० १७४
पोसहसाल जाव पुव्वमंगडय	११६१२०१-२०३	११६१२३७-२३६
पोमहसालाए जाव विहरड	११३११४	१११५३
फलिया जाव उवसोभेमाणा	१११११४	११११२
फामुएसणिज्जेण जाव तेगिच्छ	११५१११४	११५१११०
फामुय पीढ जाव विहरड	११५१११३	११५१११०
ववित्ता जाव रज्जू	११४१७७	११४१७३
वहिया जाव खणावेत्तए	११३११५	११३११५
वहिया जाव विहरंति	११५१११८	११११६६
वहिया जाव विहरित्तए	११५१११७	११११६६
वहुनायाओ एव जहा पोट्टिना जाव उव्वलद्धे	११६१६७	११४१४३
वहूड जाव पडिगयाड	११६११८२	११८१६१
वहूणि गामाणि जाव गिहाइ	११६११६६	११८१५८
वहूहि जाव चउत्थ विहरड	११५१३८	११११६५
वहूसु जाव विहरेज्जाह	११६१२०	११६१२०
वारवडं एव जहा पंहु तहा घोसण घोसावेइ		
जाव पच्चप्पिणत्ति पडुस्स जहा	११६१२२३,२२४	११६१२१३,२१४
वावत्तरि कलाओ जाव अलभोगसमत्थे	११६१३०८,३०६	१११८४,८५
वासट्ठि जाव उत्तरइ	११६१२८७	११६१२८५
वासट्ठि जाव उत्तिण्णा	११६१२८७	११६१२८५
विइयज्भयणस्स निक्खेवओ	२११५५	२११४५
वुज्झिहिइ जाव अत	११३१४४	१११२१२

भगवओ जाव पव्वडत्तए	११११३	११११०४
भड०	११८६४	११८५७
भवणवड० तित्थयर०	११८३६	कल्पसूत्र महावीरजन्म प्रकरण
भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइ	११४८२	१५८०
भवित्ता जाव पव्वडत्तए	११८२०४, २११२७	११११०४
भवित्ता जाव पव्वइस्सामो	११२१४०	११११०१
भवित्ता जाव पव्वयामो	११८१८६, ११६३१०	११११०१
भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स	२४८	ठाण० २३५५-३६२
भारहाओ जाव हत्थिणाउर	११६२४०	११६२५४
भाव जाव चित्तेउ	११८११८	११८११७
भासासमिए जाव विहरड	११५३५-३७	वृत्ति
भीए जाव इच्छामि	११२१३६	११५२१
भीए जाव सजायभए	११४१६६	११११६०
भीया जाव सजायभया	११६२५, २७	११११६०
भीया वा	११८७६	११८७३
भीया सजायभया	११८७२	११११६०
भुजावेति जाव आपुच्छति	११८६६	११८६६
० भुत्तुरागए जाव सुइभूए	११२१४	११२१४
भेसज्जेहि जाव तेगिच्छ	११६२२	११५११०
भोगभोगाइ जाव विहरइ	१११६६	११११७
भोगभोगाइ जाव विहरति	११६१८३	१११३२
भोगभोगाइ जाव विहराहि	११६२०८	१११३२
मइविकप्पणाहि जाव उवणेति	११६२४७	ओ० सू० ५७
मज्झमज्जेण जाव सय	११६१६६	११६२१८
मट्टियाए जाव अविग्घेण	११८१४३	११५६०
मट्टियालेवे जाव उप्पत्तिता	११६४	११६४
मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे	११२१८	११२१४
मत्थयच्छिड्डाए जाव पडिमाए	११८४१, ४२	११८४१
मयूरपोयग जाव नदुल्लग	११३२८	११३२७
महत्थ०	११८८१	११८८१
महत्थ जाव उवणेति	११८८४	११८८१
महत्थ जाव तित्थयराभिसेय	११८२०५	१११११६
महत्थ जाव निक्खमणाभिसेय	११५६८	१११११६
महत्थ जाव पडिच्छइ	११७११७	११८८२

महत्थ जाव पाहुडं	११७।१६	१५।२०
महत्थ जाव पाहुड रायारिह	११३।१५	१५।२०
महत्थ जाव रायाभिसेय	१५।६२, ११६।३७	११।११६
महव्वले जाव महया	१।८।१६	१५।३४
महयाहय जाव विहरइ	२।१।१०	राय० सू० ८
महालिय जाव वधित्ता अत्याह जाव उदगसि	११४।७७	११४।७५
महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।११०	१।१।१०६
महिद्धीए जाव महासोक्खे	१।१।५३	सूय० २।२।७३
महुरालाउय जाव नेहावागाढ	१।१६।८	१।१६।८
माणुम्सगाइ जाव विहरइ	१।१५।१६	१।१।६७
माया इ वा जाव सुण्हा	१।१४।७१	सूय० २।२।७
मासाण जाव दारिय	१।१६।१२४	१।२।२०
माहण जाव वणीमगाण	१।१४।३८	आयारचूला १।१६
माहणी जाव निसिरइ	१।१६।२४	१।१६।१४
मित्त	१।७।२२	१।१।८१
मित्त जाव चउत्थ	१।७।१०	१।७।६
मित्त जाव वहवे	१।७।३८	१।७।२५, ११
मित्त जाव सपरिवुडा	१।५।२०	१।२।१२
मित्त नाड गणनायग जाव सद्धि	१।१।८१	१।१।८१
मित्तपक्ख जाव भरहो	१।१।११८	वृत्ति
मुडाविय जाव सयमेव	१।१।१६१	१।१।१४६
मुडे जाव पव्वयाहि	१।१६।१४	१।१।१०१
मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे	१।१६।२६	१।१६।२८
मेहे जाव सवणाए	१।१।१५४	१।१।१०६
य ण जाव परमसुइभूए	१।१।२।२२	१।१।८१
रज्जइ जाव नो विप्पडिघाय०	१।१६।४६	१।१७।२५
रज्ज च जाव अतेउर	१।१६।२६	१।१।१६
रज्जे जाव अतेउरे	१।१४।६०	१।१४।२१
रज्जे य जाव अतेउरे	१।८।१५१, १।१६।१८७, १।१६।२६	१।१।१६
रज्जे य जाव वियगेड जाव अगमगाइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रज्जे य जाव वियत्तेइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रण्णो जाव तहत्ति	१।१६।३०३	१।८।१०४
रण्णो वा जाव एरिसए	१।८।१५३	१।८।६७
रयण जाव आभागी	१।१८।५६	१।१।६१, १।१८।५१

रहमहया	११६१४७	११८५७
राईसर जाव गिहाइ	११४१४३	११८५८
राईसर जाव विहरइ	११८१४६	११८१४०
रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा	११४१५६	११४१५६
रिउन्वेय जाव परिणिट्टिया	११८१३६	ओ० सू० ६७
रुट्टा जाव मिसिमिसेमाणी	११२५७	११११६१
रूवेण य जाव उक्किट्टुसरीरा	११६१२००	११८६०
रूवेण य जाव लावण्णेण	११६११६०	११८३८
रूवेण य जाव सरीरा	११४१११	११८६०
रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण	११८११३	११८६६
रोयमाणि जाव नावयक्खसि	११६१४०	११६१४०
रोयमाणे जाव विलवमाणे	११२३४	११२२६
रोयमाणे जाव विलवमाणे	११६१४७	११६१४०
लद्धमईए जाव अमूढदिसाभाए	११७११३	११७११२
लवण जाव ओगाहित्तए	११६१६	११६१४
लवण जाव ओगाहेह	११६१५	११६१४
लवणसमुट्टे जाव एडेमि	११६१२०	११६११६
लोइयाइ जाव विगयसोए	११८१५७	११६१४८
वदामो जाव पज्जुवासामो	११३३३८	ओ० सू० ५२
वदित्तए जाव पज्जवासित्तए	२१११२	राय० सू० ६ वृत्ति
वण्णहेड वा जाव आहारेइ	११८१४८	११८६१
वण्णेण जाव अहिए	१११०१४	१११०१२
वण्णेण जाव फासेण	११२२३	११२२१२
वत्थ जाव पडिविसज्जेइ	११४११६	११८१६०
वत्थ जाव सम्माणेत्ता	११६१५४	११७१६
वत्थस्स जाव सुट्टेण	११५१६१	११५१६१
वत्थे जाव तिसक्क	११७१३३	११७१६
वयासी जाव के अन्ने आहारे जाव पन्वयामि	११२१४५	११५१६०
वयासी जाव तुसिणीए	११६११६, १७	११६११४, १५
वरतरुणी जाव सुरूवा	११११३७	११११३४
ववरोवेह जाव आभागी	११८१५३	११८१५२
वाइय जाव रवेण	११८२०२	१११११८
वाणियगाण जाव परियणा	११८१६७	११८१६६
वावाह वा जाव छविच्छेय	११४१२०	११४१११

वायणाए जाव वम्माणुओगर्चिताए	११११८६	११११५३
वाराओ त चेव जाव नियघर	११६१४	११६१४
वावीसु य जाव विहरेज्जाह	११६१२०	११६१२०
वासाड जाव देति	११२११२	११२११२
वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए	१११६१७७	१११६१७६
वासुदेवे घणु परामुसड वेढो	१११६१२५	वृत्ति
वासे जाव असीइ च सयसहस्सा दलडत्तए	११८११६४	११८११६४
विउला पगाढा जाव दुरहियासा	१११६१४०	१११११६२
विगोवइत्ता जाव पव्वइए	१११६१२६	ओ० सू० ५२
विजया जाव अवक्कमामो	११२१४७	११२१४४
विणिम्मयमाणी २ एव	११५१३३	१११११४८
वेज्जा य जाव कुसलपुत्ता	१११३१३०	१११३१२६
सइ वा जाव अलभमाणा	११६१२२,२४	११६१२१
सइ वा जाव जेणेव	११६१२३	११६१२१
सकामेत्ता जाव महत्थ पाहुड	११८१८४	११८१८१
सकिए जाव कलुससमावण्णे	११३१२४	११३१२१
सगयगयहसिय०	११३१८	१११११३४
सचाएइ जाव विहरित्तए	११५१११८	११५१११७
सचाएत्ति० करेत्तए ताहे दोच्च पि अवक्कमति	११४११४,१५	११४१११,१२
सजत्तगाण जाव पडिच्छइ	११८१८२	११८१८१
सता जाव भावा	१११२१३२	१११२१३१
सताण जाव सवभूयाण	१११२१२६	१११२११६
सते जाव निविण्णे	११८१७६	११४११२
सते जाव भावे	१११२१२६	१११२११६
सपरिवुडे एव जाव विहरइ	११८११४७	१११६१७८
सभग्ग जाव पासित्ता	१११६१२६३	१११६१२६२
सभग्ग जाव सण्णिवइया	१११६१२७८	१११६१२६२
सभग्ग तोरण जाव पासइ	१११६१२७८	१११६१२६२
ससारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए	१११४१५३	१११११४५
ससारभउव्विग्गे जाव पव्वयामि	११५१८६	१११११४५
सकोरेंट जाव सेयवर०	११८१५७	११११६६
सकोरेंटमल्लदाम जाव मेयवरचामराहि महया	११८११६१	११८१५७
सकोरेंट० मेयचामर ह्यगयरहमहया-		
भडचडगरेण जाव परिक्खित्ता	१११६११५३	११८१५७

सकोरेट ह्यगय	११६१५७	११६५७
मक्का जाव नन्तत्य	११५२५	११५२४
सखिखिणियाड जाव वत्याड	११६२०३	११६७६
सगज्जिया जाव पाउमसिरी	११६६४	११६५६
सज्जड जाव अणुपरियट्टिम्सइ	११५११६	११३२४
सण्णद्ध०	११६१२४८	११२३२
सण्णद्ध जाव गहिया	११६१३३४, ११६१३५	११२३२
सण्णद्ध जाव पहरणा	११६१२५१	११२३२
सण्णद्धवद्ध जाव गहियाउह०	११६१२३६	११२३२
सत्तट्टु जाव उप्पयड	११६३७	११६३६
सत्तट्टुतलाड जाव अरहन्तग	११६७७	११६७३
सत्तमस्स वग्गम्स उक्खेवओ एव खलु		
जवू जाव चत्तारि	२७११,२	२२२१,२
सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स	१११६	ओ० सू० ८२
सत्यवज्झा जाव कालमामे	११६१३१	११६३१
सद्द जाव गवाण	४११७२	११७२२
सद्दफरिसरसरुवगघे जाव भुजमाणे	११५१६	ओ० सू० १५
सद्दहति जाव रोएति	११५११३	११११०१
सद्दावेइ जाव जेणेव	११६६६, १००	११६६२, ६३
सद्दावेइ जाव त	१७११०	१७१६, ७, ६
सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्य	११६११२, ११३	११६६६, १००
सद्दावेइ जाव पहारेत्य	११६१५५, १५६	११६६६, १००
सद्दावेह जाव सद्दावेति	११११३६	११११३८
सद्देण जाव अम्हे	११३१६	११३१८
समणस्स जाव पव्वडत्तए	११११०७	११११०४
समणस्स जाव पव्वडस्ससि	११११०८, ११२	११११०६
समणाउसो जाव पच्च	१७१३५, ४३	१७१२७
समणाउसो जाव पव्वइए	११०१५, ११६१४८, ११६१४२, ४७	११३२४
समणाउसो जाव माणुस्सए	११६५३	११६४४
समणाण जाव पमत्ताण	११५११८	११५११७
समणाण जाव वीईवइस्सइ	११३३४	११२७६
समणाण जाव सावियाण	११७१३६	११२७६
समणाण य जाव परिवेसिज्जड	११६२००	११६१६६, १६७
समत्तजालाकुलाभिरामे जाव अजणगिरि०	११६१४०	ओ० सू० ६३

समाणा जाव चिट्टति	११५११०	११५१६
समाणी जाव विहरित्तए	११२१७	११२१७
समोवडए जाव निसीडत्ता	११६१२२७,२२८	११६११६७,११८८
समोसरण	११५१८५	११११४
सम्मज्जिओवलित्त जाव सुगववरगघिय	१११३३	१११२२
सम्मज्जिओवलित्त सुगव जाव कलिय	११३१६	१११२२
सम्मणेड जाव पडिविसज्जेड	११६१३००	११४११६
सयमेव० आयार जाव घम्ममाडक्खइ	११११५०	११११४६
सरिसग जाव गुणोववेय	११८१२०	११८१४१
सरिसियाओ जाव ममणस्म पव्वइस्ससि	११११०६	११११०८
सव्वओ जाव करेमाणा	११६१२३	११६१२३
सव्व त चेव आभरण	११५१३०-३२	११११४५-१४७
सव्वज्जुईए जाव निग्घोसनाडयरवेण	१११३३	ओ० सू० ६७
सव्वट्टाणेमु जाव रज्जघुराचित्तए	११४१५६	११४१५६, ११११६
सहड जाव अहियासंड	११११३	११११५
सहजायया जाव समेच्चा	११८११०, ११	११३१६, ७
सहियाण जाव पुव्वरत्ता०	११५१११८	११३१७
साइम जाव परिभाएमाणी	११६१६३	११६१६२
सामदड०	११८१४५, ११४१४	११११६
सालडएण जाव नेहावगाढेण	११६१२५, २६	११६१८
सालइय जाव आहारेमि	११६११६	११६११६
सालइय जाव गोवेड	११६१८	११६१८
सालइय जाव नेहावगाढ	११६११६, १६, २०	११६१८
सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स	११६१२२	११६१८
सालइयस्स जाव एगमि	११६११६	११६११६
साहरह जाव ओलयति	११८१६२	११८१८
सिगारा जाव कुसला	११११३६	११११३४
सिगारागारचात्त्वेसाओ जाव कुसलाओ	११११३५	११११३४
सिघाडग०	११५१५३	१११३३
सिघाडग जाव पहेमु	११३३३, ११३३२६, ११६११५३, ११८११६	१११३३
सिघाडग जाव बहुजणो	११७१४१; ११८१२००, ११३३२६	११५१५३
सिघाडग जाव महया	११११६५	ओ० नू० ५२
सिक्खावडए जाव पडिवण्ण	११३३३६	उवा० ११४५
सिग्गिभहिड जाव मत	११५१२१	१११२६२

सिञ्जिभहिइ जाव सव्वदुक्खाण०	१११६१४६	१११२१२
सिद्धे जाव प्पहीणे	११५१८४	ठाण ११२४६
सीलव्वय जाव न परिच्चयसि	११८१७४	११८१७४
सीलव्व तहेव जाव घम्मज्झाणोवगए	११८१७७,७८	११८१७४,७५
सीहनाय जाव रवेण	११८१६७	ओ०सू० ५२
सीहनाय जाव समुद्दरवभूय	१११८१३५	११८१६७
सुइ वा०	११६१३७	११२१२६
सुइ वा जाव अलभमाणे	१११६१२१५	१११६१२१२
सुइ वा जाव लभामि	१११६१२२१	१११६१२१२
सुई वा जाव उवलद्धा	१११६१२२६	१११६१२१२
सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे	११५१८	ओ०सू० १४३
सुभरूवत्ताए	१११५११३	१११५१११
सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ	११८१२६	११११३२
सुमिणा जाव भुज्जो २ अणुव्वहति	११११३१	१११२६
सुर च जाव पसन्न	१११८१३३	१११६११४६
सुरट्टाजणवए जाव विहरइ	१११६१३१६	१११६१३१८
सुरूवा जाव त्रामहत्थेण	१११६११६३	वृत्ति
सूमाल निव्वत्तवारसाहस्स डम एयारूव	१११६१३०५,३०६	१११६१३३,३४
सूमालिया जाव गए	१११६१८७	१११६१६२
से घम्मे अभिरुइए तए ण देवा पव्वइत्तए	१११६११३	११११०४
सेयवर ह्ययगय महया भडचडगरपहकरेण	१११६१२३७	११८१५७
सेस जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ	१११६१८१-८६	१११६१५६-६१
सोणियासवस्स जाव अवस्स०	१११८१६१	११११०६
सोणियासवस्स जाव विद्धसणघम्मस्स	१११८१४८	११११०६
हए जाव पडिसेहिए	१११६१२५७	११८१६५
हट्ट जाव हियया	२११२०,२१,२४,२५	१११११६
हट्टतुट्ट जाव पच्चप्पिणति	१११२३	११११६,२२
हट्टतुट्ट जाव मत्थए	११५११३	१११२६
हट्टतुट्ट जाव हियए	१११२०,११६११३५	११११६
हत्थाओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि	११७१६	११७१६
हत्थिखध जाव परिवुडे	१११६११४६	१११६११४६
हत्थिखधवरगए जाव सेयवरचामराहि	११८१६३	११८१५७
हत्थिणाउरे जाव सरीरा	१११६१२०३	१११६१२००
हत्थी जाव छुहाए	११११८५	११११५७

हत्थीहि य जाव कलभियाहि	११११६८	११११५७
हत्थीहि य जाव सपरिवुडे	११११५८	११११५७
हयगय०	११६१२४८	११८५७
हयगय जाव पच्चप्पिणति	११६१३६	ओ०सू० ५६
हयगय जाव परिवुडा	११६१५६	११८५७
हयगय जाव रवेण	१११६६	१११६७
हयगय जाव हत्थिणाउराओ	११६१३०३	११८५७
हयगय सपरिवुडे	११६११७४	११८५७
हयगया जाव अप्पेगइया	११६१३८	११५१५
हय जाव सेण	११८१६२	११८५७
हयमहिय जाव नो पडिसेहिए	११६१२८५	११८१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिए	११८१६६, ११६१२५६	११८१६५
हयमहिय जाव पडिसेहित्ता	११६१२८६	११८१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिया	११८१४२	११८१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेइ	११८१२४	११८१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेति	११८१४१	११८१६५
हरिसवस०	११११६१	वृत्ति
हियए जाव पडिसुणेइ	११११२६	ओ०सू० ५६
हियाए जाव आणुगामियत्ताए	११३१३८	ओ०सू० ५२
हिरण्ण जाव वइर	११७११६	११७११६
हिरण्णागरे य जाव वहवे	११७११८	११७११४
हीलणिज्जे०	११४११८	११३१२४
हीलणिज्जे ससारो भाणियव्वो	११५१२५	११३१२४
हीलिज्जमाणीए जाव निवारिज्जमाणीए	११६१११८	११६११७
हीलेति जाव परिभवति	११६१११७	११३१२४
होत्था जाव सेणियस्स रण्णो		
इट्ठा जाव विहरइ	११११७	वृत्ति

उवासगदसाओ

अतलिक्खपडिवण्णे एव वयासी	७११७	७११०
अतिय जाव अंसि	५१२,२१	३१२०,२१

अग्निमित्ताए वा जाव विहरड	७२६	७२६
अज्ज जाव ववरोविज्जसि	३४४	२२२
अज्जसाणेण जाव खओवसमेण	८३७	१६६
अट्टेहि य जाव वागरणेहि	७४८	६२८
अट्टेहि य जाव निप्पट्टुं	६२८	६२८
अड्ढे चत्तारि	६३,४,१०३,४	२३,४
अड्ढे जहा आणदो नवर अट्टहिरण्णको- डीओ सकसाओ निहाणपउत्ताओ अट्टहि वड्ढि अट्टहि सकसाओ पवि अट्टवया		
दस गो साहस्सिएण वएण	८३-५	१११-१३
अड्ढे जाव अपरिभूए	१११	ओ०सू० १४१
अणारिए जहा चुलणीपिया तथा चित्तेइ जाव कणीयम जाव आइचइ	५४२	३४२
अणारिए जाव समाचरति	३४४,४४२	३४२
अणुट्टाणेण जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं	६२१,२२,२३,७२३,२४	६२०
अण्णदा कदाइ वहिया जाव विहरड	१५४	ना० १११६६
अपच्छिम जाव अणवकखमाणे	१७२	१६५
अपच्छिम जाव भत्तपाण	८४६	१६५
अपच्छिम जाव भूमियस्स	८४६	१६५
अपच्छिम जाव वागरित्तए	८४६	८४६
अड्ढणुण्णाए त चेव सब्ब कहेइ जाव	१७६	१७१-७८
अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे	१५५	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवाजीवे जाव विहरड	८१६	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवेजी ण जाव अणडक्कमणिज्जेण	१३१	ओ० सू० १६२
अभीए जाव विहरड	२२६,३५; ३२२	२२३
अभीय जाव वम्मज्जाणोवगय	२२४	२२३
अभीय जाव पासड	२४०; ३२३	२२४
अभीय जाव विहरमाण	२२८,३०	२२४
अवहरड वा जाव परिट्टवेइ	७२६	७२५
अस्सिणी भारिया । सामी सामासडे जहा आणदो तहेव गिहिवम्म पडिवज्जइ । सामी वहिया विहरइ	६५-१५	२५-१५
असोगवणिया जाव विहरसि	७१७	७८
अहीण जाव सुरूवा	११४	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवाओ	८६	ओ० सू० १५

आओसेसि वा जाव ववरोवेसि	७।२६	७।२५
आपुच्छिता जेणेव पोमहसाला तेणेव		१।६०
उवागच्छड, २ ता जहा आणदो जाव समणस्स	२।१६	
आनोइज्जइ जाव तवोकम्म	१।७८	ठा० ३।३४८
आनोइज्जइ जाव पडिवज्जिज्जइ	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएड जाव जहारिह	८।५०	वृत्ति अ० ३
आलोएड जाव पडिवज्जइ	३।४६	वृत्ति अ० ३
आनोएयव्व जाव पडिवज्जेयव्व	१।८०	वृत्ति अ० ३
आलोएह जाव पडिवज्जेह	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव अहारिह	८।४६	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव तवोकम्म	१।७७	वृत्ति अ० ३
आनोएहि जाव पडिवज्जाहि	१।१८, ३।४५, ८।४६	वृत्ति अ० ३
इट्ठे जाव पचविहे	१।१४	ओ० सू० १५
इट्ठी जाव अभिसमण्णागए	२।४०	२।४०
इमेण जाव धमणिसतए	१।६५	१।६४
इमेयारुवे जाव समुप्पज्जित्था	३।४२	१।७३
उक्खेवो	३।१, ४।१, ५।१, ६।१, ७।१, ८।१, ९।१, १०।१	२।१
उज्जल जाव अहियासेइ	२।३३, ३६, ३।२६	वृत्ति
उज्जल जाव अहियासेमि	३।४४	वृत्ति
उज्जल जाव दुरहियाम	२।२७	वृत्ति
उट्ठाणे इ वा जाव अणियता	६।२१, २३	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव नियता	६।२१, २३, ७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे	६।२०, २३, ७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार०	७।२४	६।२०
उट्ठाणेण जाव परक्कमेण	६।२३	६।२०
उट्ठाणेण जाव पुरिसक्कारपरक्कमेण	६।२१, ७।२३	६।२०
उद्वाविए जहा चुलणीपिया तहेव सव्व		
भाणियव्व । नवर अग्गिमित्ता भारिया		
कोलाहल मुणित्ता भणइ । सेस जहा		
चुलणीपिया वत्तव्वया सव्वा नवर अरुणच्चए		
विमाणे उववातो जाव महाविदेहे	७।७८-८८	३।४२-५२
उद्वाविए जहा सुरादेवो । तहेव भारिया		
पुच्छड, तहेव कहेइ । सेस जहा चुलणीपियस्स		
जाव सोहम्मे	५।४२-५२	३।४२-५२

उप्पण्णणाणदसणवरे जाव तच्चकम्मसपया	७।११,१८	७।१०
उप्पण्णनाणदसणवरे जाव महियपूडए		-
जाव तच्च०	७।४५	७।१०
उरालाड जाव भुजमाणे	८।२७	८।१६
उरालाड जाव विहरित्तए	८।१८	८।१८
उरालेण जहा कामदेवे जाव मोहम्मे	३।५०-५२	३।५३-५५
उरालेण जाव किसे	८।३५	१।६४
उरालेण तवोकम्मिण जहा आणदो		
तहेव अपच्छिम०	८।३६	१।६५
एक्कारसम जाव आराहेड	१।६३	१।६२
एव एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव		
सोहम्मि कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव		
अत काहिड	६।३५-४१	२।५०-५६
एव तहेव उच्चारेयव्व सव्व जाव कणीयस		
जाव आइचड । अह त उज्जल जाव		
अहियामेमि	३।४४	३।२७-३८
एव दक्खिणेण पच्चत्थिमेणं च	१।६६,८।३७	१।६६
एव देवो दोच्च पि तच्च पि भणइ जाव		
ववरोविज्जसि	४।४१	४।३६
एव मज्झिमय, कणीयस, एक्केक्के पच		
सोल्लया । तहेव करेड, जहा चुलणी-		
पियस्स, नवर एक्केक्के पच सोल्लया	४।२२-३८	३।२२-३८
एव वण्णगरहिया तिण्णि वि उवमग्गा तहेव		
पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगओ	२।४५	२।२४-४०
ओहयमणसकप्पा जाव भियाड	८।४२	रा० सू० ७६५
कज्जेसु य आपुच्छउ	१।५६	१।१३
कदाड जहा कामदेवो तहा जेडुपुत्त ठवेत्ता		
तहा पोसहमालाए जाव धम्मपण्णत्ति	६।३३,३४	२।१८,१६
करएहि य जाव उट्टियाहि	७।७	७।७
करगा य जाव उट्टियाओ	७।२२	७।७
करेड । मेस जहा चुलणीपियस्स तहा		
भद्दा भणइ । एव सेस जहा चुलणीपियस्स		
निस्वमेम जाव सोहम्मि	४।४५-५२	३।४५-५२
कल्ल जाव जलते	१।५७;७।१२	ओ० सू० २२

जाया जाव पडिलाभेमाणी	११५६	११५५
जाव पज्जुवासड	७११४	१११६
जुगव जाव निउणसिप्पोवगए	७१५०	राय० सू० १२
जेट्टपुत्त जाव कणीयस जाव आडचड	४१४२	३१४२
ठावेत्ता जाव विहरित्तए ।	११५७	११५७
णमसड जाव पज्जुवासड	११२	ओ० सू० ५२
णमसित्ता जाव पज्जुवासड	७११५	ओ० सू० ५२
णाइदूरे जाव पज्जलियडा	७१३५	११२०
ण्हाए जाव अप्पमहग्घा०	११५७	ओ० सू० २०
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	७११५	ओ० सू० २०
ण्हाए सुद्धप्पावेस अप्प०	११२०	ओ० सू० २०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	७१३५	ओ० सू० २०
त मित्त जाव विउलेण पुप्फ ५ सक्कारेड		
सम्माणेइ, २ त्ता तम्सेव मित्त जाव पुरओ	११५७	११५७
तच्च पि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि	५१४१	५१४०
तत्थ ण वाणारसीए चुलणीपिया नाम		
गाहावई परिवसई अड्ढे सामा भारिया		
अट्ट हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ		
अट्ट वड्ढिप० अट्टपवित्थरप० । अट्ट वया		
दसगोसाहस्सिएण वएण जहा आणदो		
ईमर जाव मव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था	३१३-६	२१३-६
तव जाव कणीयस	३१४५	३१४४
तिक्खुत्तो जाव वदड	७१३५	११२०
तीसे य जाव घम्मकहा सम्मत्ता	२१४४	२१११
तुम जाव ववरोविज्जसि	३१४४	२१२२
डुहट्ट जाव ववरोविज्जसि	७१७५	२१२२
देवराया जाव सक्कसि	२१४०	वृत्ति
देवाणुप्पिए समणे भगव महावीरे		
जाव समोमढे त	७१३१	११४५
देवाणुप्पिया जाव महागोवे	७१४६	७१४४
घम्मायरिएण जाव महावीरेण	७१५०	७१५०
घम्मायरियस्स जाव महावीरस्स	७१५१	७१५०
नाममुद्दग च तहेव जाव पडिगए	६१२८	६१२०-२४

निकेवो	२।५७;३।५३,४।५३,५।५४, ६।४१;७।८६;८।५४,९।२७	१।८५
निकेवो पटगम्भ	१।८५	वृत्ति
नीणेमि एव जहा चुलणीपिय, नवर एवकेमे मन मगसोन्नया जाव कणीयम जाव आइचामि	५।२१-३७	३।२१-३७
नीनुप्पल एव जहा चुलणीपियम्म तहेव देवो उवसग्ग करेइ जाव कणीयम		
घाएइ, २ ता जाव आइचइ	७।५७-७३	३।२१-३८
नीनुप्पल जाव अमि	२।४५,३।२१,४४,४२१	२।२२
नीनुप्पल जाव अमिणा	२।२२,२६	२।२२
पच्चजोयणसयाइ जाव नीलुयच्चुय	१।७६	१।६६
पढम अहामुत्त जाव एक्कारस वि	८।३३,३४	१।६२,६३
पढम उवामगपडिम अहामुत्त ४ जहा आणंदो जाव एक्कारस वि	३।४८,४९	१।६२-६३
पाउणिता जाव मोहम्मे	१।५३	१।८४
पाडिहारिण जाव उवनिमतिस्सामि	७।११	१।४५
पावयण जाव जहेय	७।३७	१।२३
पीढ जाव ओगिण्हत्ता	७।५२	१।४५
पीढ जाव सथारएण	७।५१	१।४५
पीढ जाव मथारय	७।१८	१।४५
पीढ-फलग जाव उवनिमतेत्तए	७।१८	१।४५
पुण्णे कयत्ये कयलक्खणे मुल द्वे	२।४०	२।४०
पुत्त जाव आइचइ	७।७८	३।४२
पुरिमे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया वन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयम	४।४४	३।४४
पुव्वरत्ता जाव धम्मजागरिय	१।६५	१।५७
पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोमहसालाए समणस्स पोसहिणं	७।५४	२।१८
	१।६०	ना० १।१।५३
फग्गुणी भारिया । सामी समोसढे जहा आणदो तहेव गिहिधम्म पडिवज्जइ जहा कामदेवो तहा जेट्टपुत्त ठवेत्ता पोमहसालाए । समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णात्ति उवसपज्जिता ण		

विहरइ । नवर निरुवसगो एक्कारस्स वि		
उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ एव		
कामदेवगमेण नेयव्व जाव सोहम्मि	१०।५-२५	२।५-१६,५०-५५
फलग जाव ओगिण्हित्ता	७।५१	१।४५
फलग जाव सथारय	७।१६	१।४५
वभयारी जाव दब्भसथारोवगए	२।४०	१।६०
वभयारी समणस्स	३।१६	१।६०
बहूहि जाव भावेत्ता	२।५५	१।८४
बहूण राईसर जहा चित्तिप्र जाव विहरित्तए	१।५७	१।५७
बहूहि जाव भावेमाणस्स	६।३३	२।१८
भवित्ता जाव अह	७।३७	१।२३
भारिया जाव सम०	७।७८	७।७५
भोगा जाव पव्वइया	७।३७	ओ० सू० ५२
मसमुच्छ्रया जाव अज्झोववण्णा	८।२०	वृत्ति
मत्ता जाव उत्तरिज्जय	८।३८	८।२७
मत्ता जाव विकड्डुमाणी	८।४६	८।२७
महड जाव धम्मकहा समत्ता	७।१६	२।११
महावीरे जाव विहरइ	२।४२	१।१७
महावीरे जाव विहरइ	२।४३,७।१५	१।२०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१७,७।१२	ओ० सू० १६-२२
महासतय तहेव भणइ जाव दोच्च पि		
तच्च पि एव वयासी—हंभो तहेव	८।३८-४०	८।२७-२६
मारणतिय जाव काल	१।६५	१।६५
मित्त जाव जेट्ठपुत्त	१।५७	१।५७
मित्त जाव पुरओ	१।५६	१।५७
मुडे जाव पव्वइत्तए	१।२३,५३	ओ० सू० ५२
मोहुम्माय जाव एव वयासी तहेव जाव		
दोच्च पि	८।४६	८।२७-२६
राईसर जाव सत्यवाहाण	१।१३	१।२३
राईसर जाव सयम्स	१।५७	१।१३
लद्धट्टे जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ		
जाव पज्जुवासड । धम्मकहा ।	६।२६,२७	२।४३,४४
वदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	७।१०	ओ० सू० २
वदामि जाव पज्जुवासामि	७।१५	ओ० सू० ५२

वदाहि जाव पञ्जुवासाहि	११४५;७१३१	ओ० सू० ५२
वदिस्सामि जाव पञ्जुवासिस्सामि	७१११	ओ० सू० ५२
वदेज्जाहि जाव पञ्जुवासेज्जाहि	७११०	ओ० सू० ५२
वयासी जाव उववज्जिहिसि	८१४६	८१४१
वाताहत वा जाव परिट्टवेइ	७१२६	७१२५
विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे	७१४७,४६	७१४६
विहरइ । तए ण	२१५१-५४	११६२-६५
वीइक्कताइं तहेव जेट्टपुत्त ठवेइ ।		
घम्मपण्णत्ति । वीस वासाइ परियाग नाणत्त		
अरुणगवे विमाणे उववाओ महाविदेहे		
वासे सिञ्जिभ्हिड	६११८-२६ ^१	२११८,१९,५०-५६
वीइक्कता एव तहेव जेट्टपुत्त ठवेइ		
जाव पोसहसालाए घम्मपण्णत्ति	८१२५,२६	२११८,१९
सचाएइ जाव सणिय	२१३४	२१२८
सताण जाव भावाण	११७८	११७८
सत्तेहि जाव वागरित्तए	८१४६	८१४६
सत्तेहि जाव वागरिया	८१४६	८१४६
सत्तिखिणियाड जाव परिहिए	७११०	२१४०
सद्धामि ण जाव से जहेय	११२३	रा० सू० ६६५
सद्दालपुत्ता त चेव सव्व जाव पञ्जुवासिस्सामि	७११७	७११०,११
समएण अज्जसुहम्ममे समोसरिए जाव		
जव्व पञ्जुवासमाणे	११३-५	रा० सू० ६८६, ओ० सू० ८२,८३
समणे जाव विहरइ त महाफल		
गच्छामि ण जाव पञ्जुवासामि	११२०	ओ० सू० ५२
समणोवामए जाव अहियामेइ	५१३८	२१२७
समणोवामए जाव विहरइ	४१४०,५१३८	३१२२
समणोवासया । अप्पत्थियपत्थिया		
जाव न भजेसि	३१४४,७१७५	२१२२
समणोवासया । जहा कामदेवो जाव न भजेसि	३१२१	२१२२
समणोवासया । जाव न भजेसि	२१३४,५१२१,३६	२१२२
समणोवासया । त चेव भणइ	७१७७	७१७४
समणोवासया । त चेव भणइ सो		
जाव विहरइ	३१२३,२४	३१२१,२२
समणोवासया । तहेव जाव गाय आइचइ	३१४४	३१२३-२५

समणोवासया । तहेव जाव ववरोविज्जसि	३।४१	३।३६
समणोवासया । तहेव भण्ड जाव न भजेसि	२।२८	२।२२
समुप्पज्जित्या एव जहा चुलणीपिया तहेव चित्तेड	७।७८	३।४२
समोसरण जहा आणदो तहा निग्गओ । तहेव सावयधम्म पडिवज्जइ ।		
साचेव वत्तव्वया जाव जेट्टपुत्त	२।७-१६	१।१७-२३, ५४-६०
सहइ जाव अहियासेइ	२।२७	वृत्ति
सहति जाव अहियासेति	२।४६	२।२७
सहित्तए जाव अहियासित्तए	२।४६	२।२७
साइम जहा पूरणो जाव जेट्टपुत्त	१।५७	भ० ३।१०२
सामी समोसडे । चुलणीपिया वि जहा आणदो तहा निग्गओ । तहेव गिहिधम्म पडिवज्जइ । गोयम पुच्छा । तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव पोसहसालाए	३।७-१६	२।७-१६
सामी समोसडे जहा आणदो तहा गिहिधम्म पडिवज्जइ । सेम जहा कामदेवो जाव धम्मपण्णत्ति	५।७-१६	२।७-१६
सामी समोसडे जहा कामदेवो तहा सावयधम्म पडिवज्जइ । सा सव्वेव वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ	६।७-१७	२।७-१७
साहस्मीण जाव अण्णेसि	२।४०	वृत्ति
सिंघाडग जाव पहेसु	५।३६	ओ० सू० ५२
सिंघाडग जाव विप्पडरित्तए	५।४२	५।३६
सीलव्वय-गुणेहि जाव भावेत्ता	८।५३	१।८४
सील जाव भावेमाणस्स	७।५४	१।५७
सीलव्वय जाव भावेमाणस्स	८।२५	१।५७
सीलाइ जाव न भजेसि	४।२१	२।२२
सीलाइ जाव पोसहोववासाइ	२।२२	२।२२
सीलाइ वयाइ न छुडेसि तो जीवियाओ	२।२४	२।२२
सुक्के जाव किसे	१।६४	भ० २।६४
सुद्धप्पावेसाइ जाव अप्पमहग्घा	७।१५, ३५	१।४६
सुरादेवे गाहावइ अड्ढे छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दस गोसाहस्सिएण वएण		

तस्स घन्नाभारिया । सामी समोसढो जहा

आणदो तहेव पडिवज्जइ गिहिघम्म

जहा कामदेवो जाव समणस्स

४।३-१६

१।११-१४, २।७-१६

सो वि दोच्च पि तच्च पि भणइ,

कामदेवो वि जाव विहरइ

२।३६, ३७

२।३४, ३५

हंभो । त चेव भणइ सो वि तहेव

जाव अणाढायमाणे

८।२६, ३०

८।२७, २८

हट्टतुट्ट जाव एव वयासी

१।२३

ओ० सू० ८०

हट्टतुट्ट जाव गिहिघम्म

१।५१, ५२

१।२३, २४

हट्टतुट्ट जाव समण

२।४८

१।२३

हट्टतुट्ट जाव हियए

१।७४, ८।४८

१।२३

हट्टतुट्ट जाव हियए जहा आणदो तहा

गिहिघम्म पडिवज्जइ, नवर एगा-

हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा-

हिरण्णकोडी वड्ढिपउत्ता एगाहिरण्ण-

कोडी पवित्थरपउत्ता एगे वए

दमगोसाहस्सिएण जाव समण

७।३०, ३१

१।२३, २४

हट्टतुट्टा कोडुवियपुरिसे सट्टावेइ, २ ता

एव वयासी खिप्पामेव लहुकरण

जाव पज्जुवासइ

१।४६-४६

ओ० सू० ८०,

भ० ६।१४१-१४३,

उवा० ७।३३

हट्टतुट्टा समण

७।३७

१।५१

हणेसि वा जाव अकाले

७।२६

७।२५

हारविराइयवच्छ जाव दसदिसाओ

२।४०

ओ० सू० ४७

हेऊहि य जाव वागरणेहि

७।५०

६।२८

अंतगडदसाओ

अतिए जाव पव्वइत्तए

३।७६

३।२०

अज्जा जाव इच्छामि

८।२०

८।७

अणगारे जाए जाव विहरइ

६।५२

ना० १।५।३५

अणुत्तरे जाव केवले०	३।६२	वृत्ति
अतुरिय जाव अडति	३।२३	भ० २।१०८
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	३।८६	उवा० २।२२
अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए	३।१०२	३।८६
अरहओ मुडे जाव पव्वाहि	३।७४	३।७०
अरिट्टनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	५।११	३।७६
अहासुत्त जाव आराहिया	८।८	ठा० ७।१३
आघवणार्हा०	६।६५	नाम १।१।१।१४
आपुच्छामि देवाणुप्पियाण	१।१६	ना० १।५।८७
आसुहत्ते जाव सिद्धे	३।१०१	३।८६-६२
आहेवच्च जाव विहरड	१।१४	ना० १।५।६
इच्छामि ण जाव उवसपज्जित्ता	३।१०१	३।८७,८८
ईसर जाव सत्यवाहाण	१।१४	ना० १।५।६
उच्च जाव अडइ	६।७६	भ० २।१०८
उच्च जाव अडमाणं	६।५५	भ० २।१०६
उच्च जाव अडमाणा	३।२६,३०	३।२४
उच्च जाव अडमाणे	६।७८	२।२४
उच्च जाव अडामो	६।८०	३।२३
उच्च जाव पडिलाभेइ	३।२८,२६	३।२४,२५
उज्जाणे जाव पज्जुवासइ	३।६१	ना० १।१।६६
उज्जला जाव दुरहियासा	३।६०	ना० १।१।१६२
उत्तर०	६।५२	५।२६
उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते	३।५०	ना० १।१।२०
उरालेण जाव घमणिसंतया	८।१३	भ० २।६४
उवागए जाव पडिदसेइ	६।८७	६।५७
उवागच्छित्ता जाव वदइ	३।६८	३।६१
ओह्य जाव भियाइ	५।१७	३।४३
ओह्य जाव भियायइ	३।४३	ना० १।१।३४
करयल०	५।२२,६।३५,४१	ना० १।१।२६
करेइ जहा गोयमसामी जाव अडइ	६।५४	भ० २।१०७,१०८
काएणं जाव दो वि पाए	३।८८	वृत्ति
कामा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा	३।७६	ना० १।१।१०६
कुमारस्स	१।१६	राय० सू० ६८८
चउत्थ जाव अप्पाण	८।६	५।३१

चउत्थ जाव भावेमाणी	८३३	५३१
चउत्थ जाव भावेमाणे	१२१	५३१
चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवओ	४७	१२५
छट्टुछट्टेण जाव विहरति	३२१	३२०
जइ उक्खेवओ अट्टमस्स	३१७	३३
जइ छट्टुस्स उक्खेवओ नवर सोलस	६१,२	१५,६
जइ ण भते अट्टमस्स वग्गस्स उक्खेवओ		
जाव दस	८१७,१८	१५,६
जइ ण भते तेरस	७३	१७
जइ ण भते सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ		
जाव तेरस	७१,२	१५,६
जइ तच्चस्स उक्खेवओ	३१	१५
जइ दस	८१६	१७
जइ दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२१,२	१५,६
जहा अभओ नवर हरिणेगमेसिस्स		
अट्टमभत्त पणेण्हड जाव अंजलि	३४७-४६	ना० ११५३-५८
जहा गोयम सामी तथा पडिदसेइ	६५७	भ० २११०
जहा गोयमो जाव डच्छामो	३२२	भ० २१०७
जावज्जीवाए जाव विहरइ	६५३	६५३
जाव सलेहणाकाल	८३६	८१५
ण्हाए जाव विभूसिए	३४४	ओ० सू० ७०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	३३६	ओ० सू० २०
त महा जहा गोयमे तथा	३१३	११६,२०
तीसे य धम्मकहा	३६२	राय० सू० ६६३
तीसे य धम्मकहा	६५०,८८	ना० १११००
देह जाव किलत	३६५	वृत्ति
धारिणी सीह सुमिणे	३११६	११७
नमसामि जाव पज्जुवासामि	६३५	ओ० सू० ५२
नयरीए जाव अडित्तए	३२२	भ० २१०७
नवमस्स उक्खेवओ	३११२	३३
निग्गया जाव पडिगया	१२	ना० १११५
निक्खमणं जहा महव्वलस्स जाव		
तमाणाए तथा जाव सजमड	३७८-८५	भ० १११६८, ना० ११११५-१५१

नेरइय जाव उववज्जति	६।६४	६।६४
पउमावईए य धम्मकहा	५।८	राय०मू० ६६३
पव्वावेइ जाव सजमियव्व	५।२८	ना० १।१।१५०
पारेइ जाव आराहिया	८।६	८।८
पावयण जाव अब्भुट्टेमि	६।५१	ना० १।१।१०१
पुरिस पाससि जाव अणुपवेसिए	३।१०४	३।६५
पोरिसीए जाव अडमाणा	३।३०	३।२२,२३
वहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए	३।७७	ना० १।१।११४
वारवईए उच्च जाव पडिविसज्जेइ	३।२६,२७	३।२४,२५
भगव जाव समोसढे विहरइ	६।३३	ना० १।१।६४
भूत जाव पव्वडस्सति	५।१४	५।१२
भूत वा जाव पव्वडस्सति	५।१३	५।१२
मालागारे जाव घाएमाणे	६।३६	६।२८
मासियाए सलेहणाए वारस वासाइ		
परियाए जाव सिद्धे	१।२४	ना० १।५।८४
मुडा जाव पव्वइया	३।३०,५।११	३।२०
मुंडा जाव पव्वयामि	५।२१,२२	३।२०
मुडे जाव पव्वइए	६।५३	३।२०
मुडे जाव पव्वइत्तए	५।१६	३।२०
मुडे जाव पव्वइस्सइ	३।५०	३।२०
रज्जे य जाव अतेउरे	५।११	ना० १।१।१६
रूवेण जाव लावण्णेण	३।५७	३।६०
लहुकरणजाणपवर जाव उवट्टुवेत्ति	३।३१	ना० १।१।६।१३३
विण्णवणाहिं जाव परूवेत्तए	६।४५	६।४५
सजमेणं जाव भावेमाणे	६।८४	६।३३
सलेहणा जाव विहरित्तए	८।१४	८।१४
सलेहणाए जाव सिद्धे	३।१३	१।२४
समणेण जाव छट्टुस्स	६।१०२	४।७
समाणा जाव अहासुह	३।३०	३।२०
समोसढे सिरिवणे उज्जाणे अहा जाव विहरइ	३।१२	ना० १।५।१०
सरिसया जाव नलक्वरसमाणा	३।३०	३।१६
सरिसियाण जाव वत्तीसाए	३।१०	ना० १।१।६०
सिघाडग जाव उग्घोसेमाणा	५।१६	ना० १।५।२६

सिंघाडग जाव महापहपहेसु	६१२८	५११६
सिद्धे जाव प्पहीणे	३१६२	वृत्ति
सिरिवणे विहरइ	६१७५	६१३३
सुद्धप्पावेसाइ जाव सरीरे	६१३६	ओ० सू० ५३
सोन्चा	१११६	ना० १११६६
सोन्चा ज नवर अम्मापियरो आपुच्छामि		
जहा मेहो महेलियावज्ज जाव वड्डियकुले	३१६३-७३	ना० ११११०१-१०७, ११०-११३
हट्ट	६१५१	ना० ११११०१
हट्ट जाव हियया	३१२५	ओ०सू०२०
हट्टतुट्ट जाव हियया	३१४२	३१२५

अणुत्तरोववाइयदसाओ

अवगठिया इ वा एवामेव	३१४५	३१३१, वृत्ति
अमुच्छिए जाव अणज्जोववण्णे	३१२७	अ० ६१५७
आयदिल नो अणायदिल जाव नावकखति	३१२४	३१२२
इमांसि जाव साहस्सीण	३१५६	३१५५
इ वा जाव नो सोणियत्ताए	३१३३	३१३१
इ वा जाव मोणियत्ताए	३१३६	३१३१
उच्च जाव अडमाणे	३१२४	भ० २११०६
उण्हे जाव चिट्ठइ	३१३५	३१३४
उरालेण जहा खदओ जाव सुहुय चिट्ठइ	३१३०	भ० २१६४
ऊरू जाव सोणियत्ताए	३१३५	३१३१
एव जाव सोणियत्ताए	३१३४	३१३१
एवामेव०	३१३६-४४, ४६, ४७, ४९, ५०	३१३१
गोयमे जाव एव	१११०	भ० २१७१
चदिम जाव नवय०	३१५६	११८
जहा खघओ तथा जाव हुयासणे	३१५२	भ० २१६४, ना० १११२०२
जहा जमाली तथा निग्गओ । नवर पायचारेण ।		
जाव ज नवर अम्मय भद् सत्यवाहि आपुच्छामि ।		
तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिए पव्वयामि ।		

जाव जहा जमाली तहा आपुच्छड । मुच्छिया ।
 वुत्तपडिवुत्तया जहा महच्चले जाव जाहे नो
 सचाएड जहा थावच्चापुत्तम्म जियसत्तु
 आपुच्चड । छत्तचामराओ । सयमेव जियसत्तु
 निक्खमण करेति जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो
 जाव पव्वडए अणगारे जाए—डरियासमिए

जाव गुत्तवभयारी	३११-२१	म० ६।३३,११,११; ना० १।१,१।५
जाव उप्पि पासा विहरड	१।७	ना० १।१।६३
तरुणए जाव चिट्ठड	३।५१	३।४३
तरुणिया एवामेव	३।४८	३।४३
विलमिव जाव आहारेड	३।५७	३।२७
मुडावली ड वा	३।३८	३।३१
मुडे जाव पव्वडए	३।६६	३।२२
सजमेण जाव विहरड	३।६६	३।२७
सजमेण जाव विहरामि	३।५७	३।२७
सुवक०	३।३७	३।३१
सुक्काओ जाव सोणियत्ताए	३।३२	३।३१
सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे	३।५८	३।५८
सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए	१।८	ना० १।१।२११

पण्हावागरणाइं

अतरप्पा जाव चरेज्ज	१०।१५	१०।१४
एव जाव इमस्स	५।१०	५।१
एव जाव चिरपरिगत०	३।२६	३।१
एव जाव परियट्ठति	५।८	४।१३
पत्थणिज्ज एव चिरपरि०	४।१५	४।१
रुसियव्व जाव चरेज्ज	१०।१७	१०।१४
रुसियव्व जाव न	१०।१५	१०।१४
सज्जियव्व जाव न सइ	१०।१७	१०।१४
सज्जियव्व जाव न सत्ति	१०।१६	१०।१४
हीलियव्व जाव परिहिदिए	१०।१६	१०।१४

विवागसुयं

अट्टमस्स उक्खेवओ	११८१,२	११२१,२
अट्टि जाव महियगतं	११४१८	११२१६४
अतुरिय जाव सोहेमाणे	१११२८	वृत्ति
अट्टहार जाव पट्ट मउड	११६१८	वृत्ति
अब्भणुण्णाए जाव विलमिव	११७१७	अ० ६१५७
अम्मयाओ जाव सुलद्धे जाओ	११२१२४	ना० १११३३
अवओडय जाव उग्घोसिज्जमाण	११३११३	११२११४
अविणिज्जमाणंसि जाव भियामि	११२१२६	११२१२४
असिपत्तेहि य जाव कलवचीरपत्तेहि	११६१२३	११६११६
अहम्मिए जाव दुप्पडियाणदे	१११४७, ११३११६	वृत्ति
अहम्मिए जाव लोहियपाणी	११३१७	वृत्ति
अहम्मिए जाव साहस्सिए	११११७०	वृत्ति
अहापडिरूव जाव विहरइ	११११२	ओ० सू० २२
अहिमडे इ वा जाव ततो वि अणिट्टतराए		
चेव जाव गवे	१११३६	ना० ११८४२
अहीण जाव जुवराया	११६१२	११५१४
अहीण जाव सुरूवा	११२१७	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवे	११२११०	ओ० सू० १४३
आसि जाव पच्चणुभवमाणे	११२११६	१११४२
आसी जाव विहरइ	११३११६	१११४२
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	११३१४१	११२१६४
आसुरुत्ते जाव साहट्टु	११६१३५	११२१६४
आहेवच्च जाव विहरइ	११२१७, ११३१७	वृत्ति
इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति	१११११६	ना० ११११६६
इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति	११११२०	ना० ११११६७
इट्टरूवे जाव सुरूवे	२११११५	२११११५
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्या	११६१३४	१११४१
इरियासमिए जाव वभयारी	११११७०	ओ० सू० २७
इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा	२११३१	ओ०सू० २१
उ वरदत्ते निच्छूहे जहा उज्जिभयए	११७१३४	११२१५६
उक्किट्टि जाव करेमाणे	११३१४३	११३१२४
उक्किट्टि जाव समुद्द०	११३१२४	ओ०सू० ५२

उक्कोस नेरइएसु	१।३।६५	१।१।७०
उक्खित्त जाव सूले०	१।६।६	१।२।१४
उक्खेवओ नवमस्स	१।६।१,२	१।२।१,२
उक्खेवओ सत्तमस्स	१।७।१,२	१।२।१,२
उग्घोसिज्जमाण जाव चिंता	१।४।१२,१३	१।२।१४,१५
उज्जला जाव दुरहियासा	१।१।५.६	वृत्ति
उम्मुक्क जाव जोव्वणग०	१।१।७०	वृत्ति
उम्मुक्कवालभावा जोव्वणेण रूवेण		
लावण्णेण य जाव अईव	१।६।३४	१।४।३६
उम्मुक्कवालभावे जाव विहरइ	१।६।२६	१।४।३५
उराले जाव लेस्से	२।१।२०	ओ० सू० ८२
उवगिज्जमाणे जाव विहरइ	१।६।४८	ना० १।१।६३
उस्सुक्क जाव दसरत्त	१।३।५२	वृत्ति
एव पस्समाणे भासमाणे गेण्हमाणे जाणमाणे	१।१।५०	१।१।५०
ओहय०	१।२।२७	१।२।२४
ओहय जाव भियाड	१।२।२४; १।६।१६	वृत्ति
ओहय जाव भियासि	१।२।२५, १।६।१७	१।२।२४
ओहय जाव पासड	१।२।२५, १।६।१७	१।२।२४
करयल०	१।३।४०, ५५, ५६, १।६।३८	१।१।६६
करयल०	१।३।५०	१।३।४०
करयल जाव एवं	१।३।४४, १।४।२८	१।३।४०
करयल जाव एव	१।३।५२, ५३, १।६।३४	१।१।६६
करयल जाव पडिसुणेंति	१।३।५३, ६२, १।६।३४, १।६।२०, ४०	ओ० सू० ५६
करयल जाव वद्धावेड	१।६।४५	१।३।५५
करेड जाव सत्थोवाडिए	१।६।२३	वृत्ति
कुमारे जाव विहरइ	१।६।३६	१।१।६६
०खुत्तो०	१।१।७०	१।१।७०
गगदत्ता वि	१।७।३३	१।२।५५
गामागर जाव सण्णिवेसा	२।१।३१	ओ० सू० ८६
गाहावई जाव त घण्णे	२।१।२३	वृत्ति
गिण्हावेइ जाव एएण	१।५।२७	१।२।६४
घाएत्ति २	१।३।१४	१।३।१४
चउत्थ छट्ट उत्तरेण इमेयारूवे	१।७।१०, ११	१।७।६; १।२।१५
चउत्थस्स उक्खेवओ	१।४।१, २	१।२।१, २

छट्टुंछट्टेण जहा पण्णत्तीए पढम जाव जेणेव	११२१२-१४	म० २११०६-१०८
छट्टुस्स उक्खेवओ	११६११,२	११२११,२
छिट्ठइ जाव अप्पेगडयाण	११२१२८	११२१२४
जणसद्दं च जाव मुणेत्ता	११११९६	ओ० सू० ५२
जहा विजयमित्ते जाव कालमामे काल किच्चा	११७१३१,३२	११२१५०,५१
जातिअवे जाव आगितिमित्ते	११११६४	१११११४
जायसड्ढे जाव एवं	११११२५	ओ० सू० ८३
जाव पुढवी	११३१६५, ११४१३६	११११७०
•ट्टिइएमु जावं उववज्जिहिइ	११११७०	११११५७
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	११३१४७, ५५, ११६१४५	११२१६४
ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए	११६१५०	११२१६४
ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ	११७१२०	११२१६४
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	११३१२४	११२१६४
त चेव जाव से णं	११३११५	११२११५
ततीहि य जाव सुत्तंरुज्जुहि	११६१२३	११६११८
त महया जहा पढमं तथा	२१११३२	२१११२, म० ६१५८
तच्चम्मस्स उक्खेवओ	११३११,२	११२११,२
तह त्ति जाव पडिसुणेंति	११३१४६	११११६६
ताओ जाव फले	११७१२३	११८११६
तीमे य०	११११२३	ना० ११११००
तेगिच्छियपुत्तो वा जाव उग्घोसेंति	१११०१३, १४	११८१२१, २२
तो ण जाव ओवाडणइ	११७१२१	११७११६
दममस्स उक्खेवओ	१११०११, २	११२११, २
दारगमस्स जाव आगितिमित्ते	११११२६	१११११८
नगरगोस्सुवा जाव भीया	११२१३४	११२१३३
नगरगोस्सुवा जाव वमभा	११२१३३	११२१३४
नगरगोस्सुवाण जाव वमभाण	११२१२८	११२१२८
नगर जाव विणिज्जामि	११२१२४	११२१२६
निक्खेवओ	११३१६६	११११७१
निक्खेवो	११२१७४, ११४१४०, ११५१३०; ११६१३८, ११८१३६, ११८१२८, ११६१६०	११११७१
निच्छुभेणाणे अन्नत्थ कत्थइ नुड वा अन्नम		
अण्णया कयाइ रट्ठमिय मुदग्गिणाण निह	११४१२६, २७	११८१६२, ६३
नीय जाव अउउ	११७११७	११८११४
पन्नमस्स जग्गभरणम उक्खेवओ	११५११, २	११२११, २
पन्नाणुव्वइय जाव निहियम्म	२१११३१	२१११३१
पग्गे जाव एवमुत्त	११६१२३	११६१३६

पम्हल०	१।७।२१	वृत्ति
पाव जाव समज्जिणइ!	१।१।७०	१।१।५१
पुढवीए ससारो तहेव पुढवी	१।५।२६	१।३।६५
पुप्फ जाव गहाय	१।७।२३	१।७।२१
पुरा जाव विहरइ	१।१।४१, ४२; १।२।६५	१।१।४१
पुरिमे जाव निरयपडिरुविय	१।२।१५	१।१।४१
पुव्वभवपुच्छा वागरेइ	१।७।१२, १३	१।१।४२, ४३
पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया	२।१।१५	वृत्ति
पुव्वाणुपुव्वि जाव जेणेव	१।१।२	ना० १।१।४
पुव्वाणुपुव्वि जाव दूइज्जमाणे	२।१।३२	२।१।३१
पोराणाण जाव एव	१।७।११	१।२।१५
पोराणाण जाव पच्चणुभवमाणे	१।१।६६	१।१।४१
पोराणाण जाव विहरइ	१।३।६४।१।४।६१, १।५।२८, १।७।३७, १।८।८, २६; १।९।५८;	
	१।१०।१८	१।१।४१
फलएहि जाव छिप्पतूरेण	१।३।४३	१।३।२४
फुट्टमाणेहि जाव विहरइ	२।१।११	ना० १।१।६३
वहूण गोरूवाण ऊहे जाव लावणेहि	१।२।२६	१।२।२४
वहूहि चुण्णप्पओगेहि य जाव आभिओगित्ता	१।१०।७	१।२।७२
वहूहि जाव ण्हाया	१।७।२५	१।७।२३
भगव जाव जओ ण	१।१।३४	१।१।३३
भगव जाव पज्जुवासामो	१।१।२१	ओ०सू० ५२
भवित्ता जाव पव्वइस्सड	२।१।३५	२।१।३३
भवित्ता जाव पव्वएज्जा	२।१।३१	२।१।३३
मज्झमज्झेण जाव पडिदसेइ	१।२।१५	भ० २।१।१०
महत्य जाव पडिच्छइ	१।३।५६	१।३।४०
महत्य जाव पाहुड	१।३।५५	१।३।४०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१।१७	वृत्ति
महिय जाव पडिसेहेति	१।३।४६	वृत्ति
मासाण जाव आगितिमेत्ते	१।१।६६	१।१।६४
मासाण जाव दारिय	१।९।३१	१।२।३१
मासाण जाव पयाया	१।७।२६	१।२।३१
मित्त०	१।३।६०, १।८।१७	१।२।३७
मित्त०	१।७।२७	१।७।१६
मित्त जाव अण्णाहि	१।३।२८	१।३।२४
मित्त जाव परियण	१।९।४७	१।२।३७
मित्त जाव परियणेण	१।९।५७	१।२।३७

मित्त जाव परिवुडा	११२५४	११२३७
मित्त जाव परिवुडाओ	११७२३	११७१६
मित्त जाव परिवुडे	११३५५	११२३७
मित्त जाव महिलाओ	११७२६	११७१६
मित्त जाव सद्धि	११७२३	११७१६
मित्त जाव सद्धि	११६४५	११२३७
मियादेवी जाव पडिजागरमाणी	१११२६	११११५
मुडा जाव पव्वयति	२११३१	२१११३
रट्ट च	१११५७	१११५७
रट्टे य जाव अंतेउरे	१११५७	वृत्ति
राईसर जाव नो खलु अह	२१११३	वृत्ति
राईसर जाव पभियओ	११२१७२	१११५०
राईसर जाव प्पभियओ	१११०१७	१११५०
राईसर जाव सत्यवाह०	११५१२२,२३	१११५०
राईसर जाव सत्यवाहाण	१११५०	ओ०सू० ५२
राईसर जाव सत्यवाहेहि	११६५७	१११५०
राया जाव धीईवयमाणे	११६३७	११६३६
वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि	११६१२३	११६१६
सगयगय०	११२१७	वृत्ति
सणाहाण य जाव वसभाण	११२१४	११२१०
सण्णद्ध जाव पहरणे	११२१८	११२१४
सण्णद्धवद्ध जाव पहरणेहि	११३१४७	११२१४
सण्णद्धवद्ध जाव प्पहरणा०	११३१२४	११२१४
सत्येहि य जाव नहच्छेयणेहि	११६१२३	११६१२२
समाणे जाव विहरइ	१११२०	ना० १११६७
समाणे सिंघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए	११४१२२-२४	११२१५७-५६
समुप्पण्णे जाव तहेव निग्गए	११३११५	११२१५७
सागरोवम०	११११७०	१११५७
सिंघाडग जाव एव	१११०१३	१११५३
सिंघाडग जाव पहेसु	११२१५७, ११८१२१, १११२३	१११५३
सुदरयण	११२१७	वृत्ति
सुवहु जाव समज्जिणित्ता	११८११३, ११६१२६, १११०८	१११५१
सुवाहुकुमारे जाव अलभोगसमत्य	२१११०, ११	ओ०सू० १४८, १४६
हट्टुत्तुद्धियया	१११२६	ओ०सू० २०
हय जाव पडिसेहिए	११३१५०	११३१६

शुद्धि-पत्र

मूलपाठ

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२०	० मणुप्पत्ते	० मणुप्पत्ते
५७	१२	जहेमु	जूहेसु
६०	२२	हीत्य	हत्थी
१७७	३	कट्ट	कट्टु
२०६	१०	विप्पडर-माण	विप्पडरमाण
३०६	१६	संकाणि	संकामणि
४२६	१६	वेरमणाइ	वेरमणाइं
४५५	१५	पज्जुवासणयाए	पज्जुवासणाए
४६१	७	देवदेसंस	देवसेस
५१६	१६	तुम	तुमं
५५१	७	ताइ	ताइं
५७५	१६	० समुदएण	० समुदएण
५६८	१२	सस्सिरीएण	सस्सिरीएणं
६१६	६	दस	दस
७३०	२०	खणमाणे	खणमाणे
७३८	७	अप्पेगइयाण	अप्पेगइयाण
७३६	१२	दुप्पडियाणदे	दुप्पडियाणदे

पाठान्तर

१६	पा० ६	पट्टसि	पट्टसि
४८	पा० ४	पिणद्धति	पिणद्धेति
५२२	पा० २	आसुरुत्ते	आसुरुत्ते

परिशिष्ट

२८	२४	अग्निगयजीवेजी णं	अग्निगयजीवाजीवेणं
----	----	------------------	-------------------

